॥ श्रीः ॥

खानखाना नामा।

दो भागोंमें।

जोधपुर निवासी

मुन्शी देवीप्रसाद लिखित।

अमृतलाल चक्रवर्त्ती द्वारा भारतमित्र प्रेसमे

मुद्रित और प्रकाशित।

नं० ९७, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,

कलकत्ता।

संवत् १९६६।

कई वर्ष हुए मैंने खानखानांनामाके नामसे एक उर्दू किताब छपायी थी जिसमें अकबर बादशाहके वजीर और सिपहसालार (सेनापति) नव्वाब अबदुलरहीमखां खानखानाकी जिन्दगीका कुछ हाल था। उसको हिन्दीमें लिखकर छापनेके लिये जबलपुरकी नागरी साहित्यप्रचारिणी सभाके मंत्री पंडित सूर्यनारायणजीने मुझसे इजाजत मांगी तो मैंनेही उसको हिन्दीमें लिखकर उनके पास भेज दिया। उन्होंने देखकर लिखा—"खानखाना बडे नामी और विद्वान सरदार हो गये है जिनका नाम आज तक मशहूर है और हमने उनके बनाये हुए दोहोंका संग्रह रहीमशतकके नामसे छपवाया है। इसलिये इनका जीवनचरित्र जितना कुछ हो सके विस्तार पूर्वक लिखना चाहिये।" तब फिर तवारीखोंको देखकर जहांतक मिल सका पूरा हाल मैंने भाषामें लिखा और अपने मित्र उदयपुरके बारहट कृष्णसिंहजी और पंडित गौरीशंकरजी "लाइब्रेरियन, विक्टोरिया हाल, उदयपुरसे" शुद्ध कराकर पंडित सूर्यनारायणजीके पास भेज दिया। उन्होंने फिरसे उसके शुद्ध करनेमें बहुत परता लगा दिया और फिर भी पूरा शुद्ध(१) न हुआ था कि डुमराव राज्यके प्रसिद्ध कवि पंडित नकछेदीजी तिवारीने उन्हीं खानखानाके जीवन चरित्र तैयार करनेको मुझे लिखा तब मैंने जबलपुरसे वही ग्रंथ मंगाकर फिर उसको गौरसे देखा और कुछ हाल और बढाकर तिवारीजीकी सेवामें भेज दिया। तिवारीजीने इसके दूषण निकाल देने और दूषणोंकी जगह भूषण भरनेके लिये

(१) यह शुद्ध करना वृथा था पत्थरोंको [illegible]।

बहुतसे सवाल लिखकर भेजे और उनके जवाब मुझसे मंगाये। इन जवाबोंमें उन्होंने उन सब बादशाहों, शाहजादों, अमीरों, सरदारों, तथा दूसरे लोगों के पूरे पूरे पते और परिचय मांगे जिनके नाम इस ग्रंथमें आये थे। इसलिये मुझको पहलेसे ज़ियादा तवारीखें देखनी पडीं जो इसी दिनके वास्ते जमा की गयी थी और इस तीसरी बारके निचोडमें उसका खूब निखार हो गया। तिवारीजी जो बातें चाहते थे वे सब प्रायः इसमें आ गयी है।

हम यहां यह भी कह देते हैं कि किन किन तवारिखोंमे कौन कौन अंग प्रत्यंग जोड कर खानखाना जीवनीकी यह मूर्त्ति खडी की गयी है।

खानखाना अब्दुल रहीमखां अकबर बादशाहके समयमें जन्मे और जहांगीर बादशाहके राज्यकालमें मरे थे इनके बाप खानखानां(१) बैरमखां हुमायूं बादशाहके राज्यमें उदय और अकबर बादशाहके समयमें अस्त हुए थे। इन तीनों बादशाहोंकी तवारीख—"अकबरनामा" "तुजुक् जहांगीरी" वगैरहमें जो कुछ हाल उन दोनों बाप बेटोंका लिखा था वह सब हमने अपने इस ग्रंथमें खेंच लिया है पर यह हाल जियादातर बादशाही खिदमतोंसे इलाका रखता है। उनके घर, घराने और पीढियों वगैरहका पता इन तवारीखोंमें कुछ नहीं है। किसी किसीका कुछ है भी तो बहुत थोडा, मगर इसके वास्ते भी खास खास तवारीखें "मुआसिर-उल-उमरा" "तजकरेखवानीन" वगैरह हैं जिनमें अजीब किताब मुआसिरउलउमरा ३ जिल्दोंमें है जो बाबरसे लेकर मुहम्मद शाह तक १० पीढियोंके बादशाही अमीरोंका पूरा-पूरा हाल बताती या उसका पता देती है। इसीसे ढूढने वाला आगे पता लगा सकता है। खानखानांके खानदान और उनके दादा पर-दादाके नामोंका पता हमको इसी मुआसिरउलउमरासे लगा है और इसीकी मददसे हम इस लायक हुए हैं कि उनका वह पुराना

(१) बैरामके माने तुर्की बोलीमें उत्सवके हैं।

हाल लिख सके जिसका कुछ बयान बाबर, हुमायूँ, अकबर और जहांगीर जैसे शाहनशाहोंकी तवारीखोंमें नहीं है। खानखानाके दादे परदादे तो दूर रहे उनके बाप बैरामखांका नाम भी अकबरनामे जैसी बडी तवारीखमें सन ९४१ स० १५९१—९२ से पहले नहीं मिलता।

अकबरनामेके पहले खण्डमें जो तवारीख हुमायूं बादशाहकी है उसमें बैरामखांका नाम पहले पहल चांपानेरकी चढाईमें आया है। इससे पेश्तर उनका कुछ हाल नहीं लिखा है।

हम खानखानाके खानदान और उनके पुराने हालकी तवारीख "नीजेतुलनका" और "हबीबउलसियर"से शुरू करेंगे, उनके बाप दादोंके नाम और हत्तांत "तुजुकबाबरी" और "मुआसिरउलउमरा"से लिखेंगे, फिर अकबरनामे और तुजकजहांगीरीसे कुल हाल इन दोनों बाप बेटोंका खींचकर इस सांचेमें ढालेंगे तब कहीं सांगोपांग मूर्ति इनके जीवन चरित्रकी तय्यार होगी।



खानखानानामा।

पहला भाग।

खानखानां बैरामखां।

नव्वाव अबदुलरहीमखां खानखानांका जीवन चरित्र शुरू करनेसे पहले उनके बाप बैरामखां खानखानांका हाल लिखना जरूरी है और यह भी मानो इस पुस्तककी पूर्व पीठिका है।

तवारीख लिखनेके कायदोंमेंसे पहला यह है कि जिस किसीकी तवारीख लिखी जाय पहिले उसके खानदान (वंश) खिताव कुरसीनामे और समयका पता दिया जाय। फिर जन्मसे लेकर मरने तकका हाल जितना कुछ सही सही मिल सके पुरानी तवारीखों या दूसरे वसीलोंकी सनद और प्रमाणसे लिखा जाय जिससे पढनेवालोंको कोई शक न रहे। इसलिये हम पहले खानखानाके खानदानका कुछ हाल लिखते हैं, फिर खानखानांके लफ्ज (शब्द) पर कुछ लिखेंगे पीछे उनका हाल शुरू करेंगे।

खानदान।

मआसिर-उल-उमरामें खानखानाकी जाति तुर्कमान और खानदानका नाम कराकूयलू लिखा है। इससे जाना जाता है कि खानखाना असलमें तुर्कमान जातिके थे और तुर्कमानोंके बहुतसे खानदानोंमेंसे उनका घराना कराकूयलू था। तुर्कमानके माने हैं तुर्कोंकी मानिन्द; क्योंकि मानके माने फारसी जबानमें मानिन्द है जैसे इस जमानेमें हिन्दुस्थानमें जन्मे हुए योरोपियनको योरेशियन कहते हैं वैसेही ईरानमें

खानखानानामा।

पहला भाग।

खानखानां बैरामखां।

नव्वाब अबदुलरहीमखां खानखानांका जीवन चरित्र शुरू करनेसे पहले उनके बाप बैरामखां खानखानांका हाल लिखना जरूरी है और यह भी मानो इस पुस्तककी पूर्व पीठिका है।

तवारीख लिखनेके कायदोंमेंसे पहला यह है कि जिस किसीकी तवारीख लिखी जाय पहिले उसके खानदान (वंश) खिताब कुरसीनामे और समयका पता दिया जाय। फिर जन्मसे लेकर मरने तकका हाल जितना कुछ सही सही मिल सके पुरानी तवारीखों या दूसरे वसीलोंकी सनद और प्रमाणसे लिखा जाय जिससे पढ़नेवालोंको कोई शक न रहे। इसलिये हम पहले खानखानाके खानदानका कुछ हाल लिखते हैं; फिर खानखानाके लफ्ज (शब्द) पर कुछ लिखेंगे पीछे उनका हाल शुरू करेंगे।

खानदान।

मआसिर-उल-उमरामें खानखानाकी जाति तुर्कमान और खानदानका नाम कराकूयलू लिखा है। इससे जाना जाता है कि खानखाना असलमें तुर्कमान जातिके थे और तुर्कमानोंके बहुतसे खानदानोंमेंसे उनका घराना कराकूयलू था। तुर्कमानके माने हैं तुर्कोंकी मानिन्द; क्योंकि मानके माने फारसी जबानमें मानिन्द है जैसे इस जमानेमें हिन्दुस्थानमें जन्मे हुए योरोपियनको योरेशियन कहते हैं वैसेही ईरानमें

जन्मे हुए तुर्कोंको तुर्कमान कहते थे अर्थात् जो तुर्क(१) अपने देश तुर्किस्तान(२)से आकर कबीलों सहित ईरानमें बस गये थे और वहां उनकी जो औलाद हुई थी वह तुर्कमान कहलायी।

फिर तुर्कमानोंकी नस्ल (सतति) बढ़नेसे उनमें कई खानदान हो गये, जिनके नाम लिखनेकी जरूरत नहीं, क्योंकि यह तुर्कमानोंकी तवारीख नहीं है, केवल उनकी १ शाखा कराकूयनुके २ न.सौ आदमियोंकी कुछ हकीकत है।

"कराकूयनु"के मा.ने काली बकरीवालेके है। ये लोग पहले काली बकरियां रखा करते थे और इनके भाई जो सफेद बकरियां रखते थे वे आककूयनू कहलाते थे। तुरकी बोलीमें कराके मा.ने काले और आकके सफेद तथा कूयके बकरी और लूके वाले है।

ये लोग आ.जरबायजानमें रहते थे जो ईरानका १ सूबा रूस और रूमकी सरहदसे मिला हुआ है जिसको अब आरमीनिया कहते हैं। जब वहां ईलकानी जातिके बादशाहोंका राज्य हुआ तो सुलतान हुसेन ईलकानीने सन् ७७७ सं० १४३२ में तुर्कमानों पर चढ़ाई करके वे किले और शहर छुड़ा लिये जो उनके सरदारों बैरामख्वाजा और करामुहम्मदने दबा लिये थे और हर साल

(१) तुर्क बहुत पुरानी जाति है। मुसलमान तुर्कोंके मूल पुरुष तुर्कको नूह पैगम्बरका पोता बताया जाता है और संस्कृत रूप तुर्क शब्दका तुरुष्क है। हिन्दू ग्रन्थोंमें तुर्क चन्द्रवंशी राजा ययातिके बेटे तुरुके वंशज माने जाते हैं—तुर्ककी छठी पीढ़ीमें मुगलखां हुआ जिसकी सन्तान मुगल कहलायी। मुगलखांकी बहुतसी पीढ़ियोंके पीछे तैमूरनाम हुआ। उसकी १२वीं पीढ़ीमें बरतान बहादुर और काचूली बहादुर दोभाई हुए। बरतानका पोता चंगेजखां था और काचूलीकी नवीं पीढ़ीमें अमीर तैमूर हुआ। इन दोनोंकी औलादमें बड़े बड़े बादशाह ईरान, तूरान और हिन्दुस्तानमें हुए हैं।

(२) मध्य एशिया—तूरान।

२०००० बकरियां देनेका कार भी उनसे ठहरा लिया था। सुलतान हुसेनके बेटे सुलतान अहमदजलायरने कारामुहम्मदके ५००० तुर्कमानोंकी मददसे अपने भाई शेखअलीको भगाकर बगदाद राजधानीमें अमल कर लिया।

फिर अमीरतैमूरने सन् ७९५के शव्वाल महीने भादों-कुआर संवत १४५० में बगदाद पर चढाई करके सुलतान अहमदको भगा दिया जिसने सन् ७९७ यानी संवत १४५१—५२में अमीरतैमूरका तुरानमें होना सुनकर बगदाद फिर ले लिया, मगर जब सन ८०२ यानी संवत १४५६-५७ में अमीर तैमूर फिर ईरान आया तब सुलतान अहमद कारायूसुफ तुर्कमानको अपनी मदद पर लाया, तब भी फिर वे दोनोंही तैमूरके डरसे रूमको भाग गये और जब तैमूरने रूम भी फतह कर लिया तब वे मिस्रदेशमें चले गये और सन ८०७ यानी संवत १४६१ में तैमूरके मरनेकी खबर सुनकर ईरानको लौटे। मिस्रमें यह बात ठहरी थी कि बगदाद(१)को तो सुलतान अहमद ले ले और तबरेज(२)मेंजो आजरबायजानकी राजधानी है उस पर कारायूसुफ अमल करे। सो इसके मुवाफिक दोनोंने दोनो मुल्क तैमूरके हाकिमोंसे छीन लिये, मगर सन ८१३ यानी संवत १४६७में सुलतान अहमदने अपने वचनसे फिरकर तबरेज पर चढाई की तो कारायूसुफने लडाईमें उसको मारकर बगदाद भी ले लिया। इस वक्तसे कारा कूयलू तुर्कमानोंमें बादशाही आयी और कारायूसुफ इस घरानेका पहला बादशाह हुआ।

तैमूरके बेटे पोते उससे और उसके जानशीनोंसे बराबर लडते रहे तौभी तुर्कमानोंकी सल्तनत ६५ वर्ष तक बढती चली गयी और सन ८७३ यानी सवत १५२५में "आककूयलू" घरानेके अमीर, हसनबेगके हाथसे खतम हुई।

काराकूयलूकी शाखाओंमेंसे १ शाखा बहारलू भी थी जिसके अमीर अलीशकरबेगको करायूसुफने हमदान, देनूर, और गुर्दिस्तानके इलाके जागीरमें दिये थे जो तुर्कमानोंका राज्य चले जानेके पीछे तक भी अलीशकरको विलायत कहलाते(१) रहे।

यह अलीशकरबेगही खानखानांका मूल पुरुष था। इसलिये इसकी, करायूसुफकी और तैमूरकी पीढिया नीचे लिखते हैं जिससे पाठकोंको इन तीनों घरानोंके परस्पर सबधका पूरा हाल मालूम हो जायगा।

न० मुगल		न० काराकूयलू		न० बहारलू	
१	तैमूर	१	करायूसुफ	१	अलीशकरबेग
२	शाहरुख	२	करासिकदर	२	पीरअली
३	मुहम्मद मिरजा	३	कैकुबाद	३	यारबेग
४	सुलतानअबूसईद	४	जहांशाह न०१ काबेटा	४	सैफअली
५	उमरशेख	५	हसनअली	५	बैरामखा
६	बाबर			६	अबदुलरहीमखा
७	हुमायू				
८	अकबर				
९	जहांगीर				

शाहरुख अपने बाप तैमूरकी तरफसे ईरानका हाकिम था। वह सन ८१० यानी सवत १४६४ में करायूसुफके मुकाबिलेमें मारा गया। जब करायूसुफके बेटे जहांशाहको सन ८७२ यानी सवत १५२८में हसनबेग आककूयलूने लडाईमें मारकर तबरेज लेना चाहा तब उसके बेटे हसनअलीने शाहरुखके पोते सुलतान अबूसईदको अपनी मदद पर बुलाया। हसनबेगने उसको भी धोखा दिया और

(१) ये जिले अब ईरान राज्यमें है।

उसने गफलतमें हमला करके १६ रज्जब सन ८७३ यानी फागुन बदी ३ संवत १५२५ में उसे पकड़ लिया और मरवा डाला। हसनअली इस तरह अपने दुश्मनोंका जोर देखकर आत्मघात करके मरगया और अलीशकरके बेटे जो तुर्कमानोंके चार पांच हजार घरोंसे सुलतान अबूसईदके नौकर होगये थे वे उसकी पकड़े जानेके पीछे तूरानमें आ गये और सुलतान अबूसईदके बेटे महम्मद मिरजा(१)-ने उनकी बहन पशा बेगमसे शादी की जिससे एक लड़का बायसहर मिरजा और ३ लड़कियां पैदा हुईं। इस प्रसंगसे बहारलू जातिका मुगल बादशाहोंसे पूरा संबंध हो गया और वे उनके निज अमीरोंमें मिलकर रहने लगे।

पीरअली।

अलीशकरबेगके बेटोंमेंसे पीरअली कुछ बहादुर और हिम्मत वाला था। वह पहले तो हिसारशादमां(२ में महमूद मिरजाके पास रहा फिर फारस(३) देशमें चला गया जहां समय पाकर अपना राज्य जमानेके लिये शीराजके हाकिमसे लड़ा, मगर हारकर खुरासानमें भाग आया जो उस वक्त सुलतानहुसैन(४) मिरजाके

(१) महमूद मिरजा उमरशेखका बड़ा भाई और तूरानका बाद शाह था तथा उमरशेख फरगानेका जो १ जिला तूरानका है वह अब रूसके अमलमें है।

(२) हिसारशादमां १ किला तूरानका है जहां अब अमीर काबुल-का अमलदारी है।

(३) फारस ईरानका १ जिला है और शीराज फारसका सदर मुकाम है।

(४) सुलतानहुसैन मिरजा मीरानशाहके बड़े भाई उमरशेख मिरजा-की चौथी पीढ़ीमें था और सन ८७३ संवत १५२५ में खुरासा-नका बादशाह हुआ था। तवारीख रोजतुलसफा इसके राज्यमें बनी है।

तैमूरके बेटे पोते उससे और उसके जानशीनोंसे बराबर लडते रहे तौभी तुर्कमानोंकी सल्तनत ६५ वर्ष तक बढती चली गयी और सन ८७३ यानी संवत १५२५में "आककूयलू" घरानेके अमीर, हसनबेगके हाथसे खतम हुई।

काराकूयलूकी शाखाओंमेंसे १ शाखा बहारलू भी थी जिसके अमीर अलीशकरबेगको करायूसुफने हमदान, देनूर, और कुर्दिस्तानके इलाके जागीरमें दिये थे जो तुर्कमानोंका राज्य चले जानेके पीछे तक भी अलीशकरकी विलायत कहलाते(१) रहे।

यह अलीशकरबेगही खानखानाका मूल पुरुष था। इसलिये इसकी, करायूसुफकी और तैमूरकी पीढिया नीचे लिखते है जिससे पाठकोंको इन तीनों घरानोंकि परस्पर संबंधका पूरा हाल मालूम हो जायगा।

न०	मुगल	नं०	काराकूयलू	न०	बहारलू
१	तैमूर	१	करायूसुफ	१	अलीशकरबेग
२	मीरांशाह	२	करासिकंदर	२	पीरअली
३	मुहम्मद मिरजा	३	कैकुबाद	३	यारबेग
४	सुलतानअबूसईद	४	जहांशाहन०१कावेटा	४	सैफअली
५	उमरशेख	५	हसनअली	५	बैरामखां
६	बाबर			६	अबदुलरहीमखां
७	हुमायूं				
८	अकबर				
९	जहांगीर				

मीरांशाह अपने बाप तैमूरकी तरफसे ईरानका हाकिम था। वह सन ८१० यानी संवत १४६४ में करायूसुफके मुकाबिलेमें मारा गया। जब करायूसुफके बेटे जहांशाहको सन ८७२ यानी संवत १५२४में हुसैनबेग आककूयलूने लडाईमें मारकर तबरेज लेना चाहा तब उसके बेटे हसनअलीने मीरांशाहके पोते सुलतान अबूसईदको अपनी मदद पर बुलाया। हसनबेगने उसको भी धोखा दिया और

(१) ये जिले अब ईरान राज्यमें हैं।

पीरअली।

अलीशकरबेगके बेटोंमेंसे पीरअली कुछ बहादुर और हिम्मत वाला था। वह पहले तो हिसारशादमा(२) में महमूद मिरजाके पास रहा फिर फारस(३) देशमें चला गया जहां समय पाकर अपना राज्य जमानेके लिये शीराजके हाकिमसे लड़ा, मगर हारकर खुरासानमें भाग आया जो उस वक्त सुलतानहुसेन(४) मिरजाके

---

(१) महमूद मिरजा उमरशेखका बड़ा भाई और तूरानका बादशाह था तथा उमरशेख फरगानेका जो १ जिला तूरानका है वह अब रूसके अमलमें है।

(२) हिसारशादमा १ जिला तूरानका है जहां अब अमीर काबुलका अमलदारी है।

(३) फारस ईरानका १ जिला है और शीराज फारसका सदर मुकाम है।

(४) सुलतानहुसेन मिरजा मीरांशाहके बड़े भाई उमरशेख मिरजाकी चौथी पीढ़ीमें था और सन ८७३ संवत १५२५ में खुरासानका बादशाह हुआ था। तवारीख रोजतुलसफा इसके राज्यमें बनी है।

तैमूरके बेटे पोते उससे और उसके जानशीनोंसे बराबर लडते रहे तोभी तुर्कमानोंकी सल्तनत ६५ वर्ष तक बढती चली गयी और सन ८७३ यानी संवत १५२५में "आककूयलू" घरानेके अमीर, हसनबेगके हाथसे खतम हुई।

कराकूयलूकी शाखाओंमेंसे १ शाखा बहारलू भी थी जिसके अमीर अलीशकरबेगको करायूसुफने हमदान, देनूर, और कुर्दिस्तानके इलाके जागीरमें दिये थे जो तुर्कमानोंका राज्य चले जानेके पीछे तक भी अलीशकरकी विलायत कहलाते(१) रहे।

यह अलीशकरबेगही खानखानांका मूल पुरुष था। इसलिये इसकी, करायूसुफकी और तैमूरकी पीढिया नीचे लिखते हैं जिससे पाठकोंको इन तीनों घरानोंके परस्पर संबंधका पूरा हाल मालूम हो जायगा।

न०	मुगल	न०	कराकूयलू	न०	बहारलू
१	तैमूर	१	करायूसुफ	१	अलीशकरबेग
२	मीराशाह	२	करासिकंदर	२	पीरअली
३	मुहम्मद मिरजा	३	कैकुबाद	३	यारबेग
४	सुलतानअबूसईद	४	जहांशाह न०१काबेटा	४	सैफअली
५	उमरशेख	५	हसनअली	५	बैरामखां
६	बाबर			६	अबदुलरहीमखां
७	हुमायूं				
८	अकबर				
९	जहांगीर				

मीराशाह अपने बाप तैमूरकी तरफसे ईरानका हाकिम था। वह सन ८१० यानी संवत १४६४ में करायूसुफके मुकाबिलेमें मारा गया। जब करायूसुफके बेटे जहांशाहको सन ८७२ यानी संवत १५२४में हसनबेग आककूयलूने लडाईमें मारकर तबरेज लेना चाहा तब उसके बेटे हसनअलीने मीरांशाहके पोते सुलतान अबूसईदको अपनी मदद पर बुलाया। हसनबेगने उसको भी धोखा दिया और

१) ये जिले अब ईरान राज्यमें हैं।

हाथी लूटमें आये। धन मालकी कुछ गिनती नहीं थी। ५००० आद-मी खेत पड़े और बहुतसे भागते हुए भी मारे गये।

बादशाह उसी दिन करनालसे चलकर पानीपतसे ५ कोस पर ठहरेही थे कि वहां हेमूके आने और लड़ाई शुरू हो जानेकी खबर पहुंची। उसी वक्त 'लशकर' सजाकर वे चल दिये। बैराम खां आगे होकर फौजोंकी देखभाल करते और बहादुरोंका दिल बढ़ाते जाते थे। जब पानीपतके पास पहुंचे तब फतहकी खबरें आने लगी और शाह कुली महरम हेमूको पकड़ कर हुजूरमें लाया।

बादशाहने हेमूसे बहुतसा जवाब पूछा। मगर वह तो कुछ नहीं बोला। तब बैरामखांने अर्ज की कि हजरत इस फसादीको(१) अपने हाथसे मारकर गजाका(२) 'सवाब' (काफरोंके मारने-पुण्य(३) हासिल करें।"

बादशाह छोटी उमरमें थे, तौभी बड़ी समझदारीसे कहने लगे कि हमारी हिम्मत एक बन्धे हुए कैदीको मारनेकी रुखसत नहीं देती और खुदाकी दरगाहमें भी ऐसे कामोंका कुछ स्वाब नहीं मिलता होगा। मैं तो इसको उसी दिन टुकड़े टुकड़े कर चुका हूं कि जिस दिन बड़े हजरतके किताबखानेमें एक ऐसे आ-दमीकी सब अङ्ग अलग अलग करके तसवीर बनायी थी। बड़े

(१) दूसरे तवारीख लिखने वालोंने फसादीकी जगह काफिर लिखा है, मगर हिन्दूके वास्ते काफिर शब्द अकबरनामेमें कहीं नहीं आया है। यह सिहरबानी मुसलमान ग्रन्थकारोंके खिलाफ न जाने कैसे शेख अबुलफजलसे बन आयी है। बादशाहकी मरजीसे या अपनी भलमनसीसे।

(२) काफरोंसे लड़ाई लड़नेको मुसलमान गजा कहते हैं।

(३) मुसलमानी मतमें काफरोंके मारने या उनके हाथसे मारे जानेका बहुत पुण्य लिखा है। जो मुसलमान न हो उसको मुसलमान लोग काफर कहते हैं।

नीचे आ गया था। मिरजाके अमीरोंने पीरअलीको वीर और उद्योगी देखकर मार डाला।

यारबेग।

पीरअलीका बेटा यारबेग ईरानमें रहता था। जब वह मुल्क हसनबेग आककूयलू के पोतोंसे सन ९०६ यानी सवत १५५७ में शाहइसमाईल सफवी(५)ने छीनकर वहां अपना राज्य जमाया तब यारअली ईरान छोडकर बदखशां(६)में चला आया और वहांसे कुदुज(७)में जाकर अमीर खुसरो शाहके पास रहने लगा। जब मुहम्मदखांशैवानी(८) उजबक(९)ने तूरानका मुल्क अमीरतैमूरके पोतोंसे छीन लिया और बाबर बादशाह भी फरगाने(१०)में रहना मुशकिल देखकर सन ९१० यानी सवत

(५) शाह ईसामाई कौमका सैयद और शेख सफीकी औलादमें था। इसलिये सफवी कहलाता था। तवारीख हबीबुलसियर इसके राजमें सन ९२९ सवत १५७९।८० में बनी है।

(६) बदखशां १ जिला तूरानका है जो अब अमीर काबुलके कबजेमें है।

(७) कुदुज बदखशांका १ शहर है।

(८) मुहम्मदखां शैबानी चंगेजखांके पोते और जूजीखांके बेटे शबानकी औलादमें था। इसलिये शैबानी कहलाता था।

(९) उजबकखां जूजीखांसे ७ वीं पीढीमें मगूलिस्तान यानी मगोलियाका बादशाह था। उसकी औलादका नाम उजबक हुआ। उसके बहुत बढ जानेसे जूजीखांकी बहुतसी औलाद भी उजबक कहलाने लगी थी। जैसे शैबानी वगैरह।

(१०) फरगाना भी १ जिला तूरानका काशगर समरकंद बदखशांके बीचमें था और १ हद उसकी मगोलियासे मिली हुई थी। अब मगोलिया और काशगर चीनके, समरकंद फरगाना और बुखारा रूसके तथा बलख बदखशां अमीर काबुलके ताबेमें हैं। चंगेजखां और अमीर तैमूरकी औलादके पास अब कोई मुल्क नहीं है।

१५६१ में बदख्शांमें आये तो हुमायूंबादशाहने (जो १ नामी मशहूर उनके दादा सुलतान अबूसईदका था और सुलतानके पीछे तूरानमें उनके बेटोंकी आपाधापीमें मैदान खाली पाकर बदख्शांका मालिक बन बैठा था) बदख्शांका सूबा उनको सौंप दिया तब यार बेग भी अपने बेटे सैफअली समेत बाबर बादशाहका नौकर हो गया ।

सैफअली ।

यह बाबर बादशाहका नौकर होकर बदख्शांमें रहा । वहां उसके घरमें एक लड़का पैदा (१) हुआ जिसका नाम बैरमबेग रखा यही पीछे भाग्यबलसे बैरामखां खानखाना कहलाया ।

बैरमबेग तथा बैरामखां ।

बैरमबेगने बदख्शांसे बलखमें जाकर विद्या पढ़ी और १६ वर्षकी अवस्थामें हुमायूं(२) बादशाहकी खिदमतमें पहुंचकर नौकरी की जिसमें बढते बढते मुसाहबी और अमीरोंके दर्जे तक तरक्की पायी ।

यह सब अहवाल यहां तक तवारीख रोजेतुलसफा, हबीबुस् सियर, तुजुकबाबर, और मुआसिरुलउमरासे लिखा है । अब अकबरनामेसे लिखते हैं ।

अकबरनामेमें इनका नाम कहीं बैरामखां, कहीं बैरामबेग और कहीं खानखाना लिखा है । उससे यह भी नहीं मालूम होता कि इनको खानखानांका खिताब कब मिला । खांका खिताब तो ईरानके बादशाहने संवत १६०१ में दिया था जबकि ये

(१) पैदा होनेका साल संवत किसी तवारीखमें नहीं मिला और न हुमायूं बादशाहके पास आने और नौकर होनेका, पर आगे एक नोट उनकी अवस्था पर लिखा गया है । उससे कुछ अनुमान उनके जन्म कालका हो सकता है ।

(२) उस समय हुमायूं तख्त पर नहीं बैठे थे, उनके बाप बाबर बादशाह विद्यमान थे ऐसा जाना जाता है ।

हुमायू बादशाहके साथ वहां गये थे। खानखानांका खिताब हुमायू बादशाहने ईरानसे आकर कंधार काबुल या हिन्दुस्थान लेनेके पीछे संवत १६०२ से संवत १६१२ तक किसी वर्षमें दिया होगा; ऐसा जाना जाता है। अकबरनामा बैरामखांके बहुत पीछे बना है। बैरामखां तो संवत १६१७में ही मर गये थे अबुलफज्ल जो अकबरनामेका रचयिता है संवत १६३१के लगभग बादशाही नौकर हुआ था जिसके १८ वर्ष पीछे ७ उर्दी-बहिश्त सन४१ इलाही, २७ शाबान सन १००४ बैशाख वदी १४ संवत १६५३ को उसने अकबरनामेका दूसरा दफतर खतम किया था। इस सबबसे उसने बैरामबेगको उन वर्षों में भी बैरा-मखां और खानखाना लिख दिया है कि जिनमें ये खिताब उनको मिले भी नहीं थे, पर वे उस समयमें जब अकबरनामा लिखा गया है खानखानाके नामसे प्रसिद्ध हो चुके थे। इसलिये अबुल-फज्लसे यथार्थ समयमें यथार्थ नाम लिखनेका यथार्थ प्रबन्ध न हो सका।

बेग, खान, और खानखानांका अर्थ।

तुर्की भाषामें बेगके माने सरदार और खानके माने बाद-शाहके है। तुर्क और मुगल बादशाह सब खान कहलाते थे। सरदा-रोंको वे और बेग कहते थे ऐसेही बादशाही और सरदारोंकी औरतें खानम और बेगम कहलाती थीं। बाबरने तो अपने परदादा तैमूरको भी तैमूर बेगही लिखा है।

तैमूर और उसके बाप दादे काचूली बहादुर तक खान नहीं कहलाते थे क्योंकि वे चंगेजखांके बाप दादोंके सेनापति थे और चंगेजखांके पीछे तक उसके बेटे चगताईखांकी औलादके भी रहे थे।

तैमूर अपने खानदानमें पहला बादशाह हुआ, पर उसके बेटे पोते बाबर तक बादशाह नहीं कहलाते थे, वे मिरजा(१) कहलाते

(१) मिरजा असलमें अमीरजा शब्द है। इसका अर्थ है अमीरका

है। बाबरने अपनेको बादशाह कहलाना शुरू किया। तबसे बादशाहका खिताब उन्हींकी औलादमें भी जारी हुआ और अमीरोंको खानके खिताब मिलने लगे। बड़े बड़े अमीरोंको खानखानाका खिताब मिलता था, जिसका अर्थ है सब खानोंका खान। मुगलोंकी बादशाहीमें पहला खानखाना दिलावरखां लोदी था। इसका बाप दौलतखां लोदी दिल्लीके सुलतान सिकन्दर लोदीकी तरफसे पंजाबका सूबेदार था। मगर सिकन्दरके मरनेके पीछे इसने बाबर बादशाहसे जब वे काबुलमें थे मेल करके उनका अमल पंजाबमें करा दिया था। इस खैरख्वाहीसे बाबर बादशाहने उसके मरने पर उसके बेटे दिलावरखांको पंजाबका सूबा और खानखानाका खिताब दिया था।

दूसरे खानखाना बैरामखां तीसरे, मुनइमखां और चौथे अबदुल रहीमखां (२) हुए।

बैरामखां अकबरनामेमें।
हुमायूं बादशाहका समय।

अकबरनामेके पहले दफ्तरमें (खण्डमें) जो हुमायूं बादशाहकी तवारीख लिखी है उसमें बैरामखांका नाम पहले पहल गुजरातकी चढ़ाईमें आता है, इसके पूर्व नहीं आता जिससे ठीक समय इनके बादशाहके पास आने और नौकर होनेका मालूम हो।

बेटा। तैमूरका खिताब अमीर था जिससे उसके बेटे अमीरजा, मीरजा और मिरजा कहलाते थे। जब बाबरने बादशाहका खिताब अपने लिये तजवीज किया तब दो पीढी पीछे अकबरके समयमें उनके बेटे शाहजादे, शाह और सुलतान कहलाने लगे और मिरजाका खिताब बड़े बड़े अमीरोंके लिये छोड़ दिया गया। खानखाना अबदुल रहीमखां भी बहुत वर्षों तक मिरजा और मिरजाखां कहलाते थे।

(२) इनके पीछे पांचवें खानखाना जहांगीर और शाहजहांके राजमें महाबतखां हुए। इस तरह औरंगजेबके बेटे शाहआलम बहादुरशाह तक कई खानखाना हुए। आखिरी खानखानाका नाम भी मुनइमखां था जो सन ११२२ संवत १७६८ में मरे थे।

और इसका यही कारण है कि वे पहले साधारण अवस्थामें थे और कोई बड़ा काम उनसे नहीं हुआ था कि जिससे उनका नाम लिखा जाता।

बाबर बादशाहको तवारीखमें भी अलीगवारके पीछेका कुछ हाल नहीं है।

बाबरका हाल हम सन ९१० यानी सवत १५६१ तक लिख आये हैं। फिर उन्होंने इसी सालमें काबुल, सन ९१३ सवत १५६४ में कधार और सन ९३२ यानी सवत १५८२।८३में हिन्दुस्थान फतह किया। सन ९३७ सवत १५८७।८८में उनके गुजर जाने पर हुमायूं बादशाह तख्त पर बैठे। सन ९४१ सवत १५९१। ९२में गुजरात जीतनेको गये। सन ९४२ सवत १५९२।९३में वहांके बादशाह सुलतान बहादुरको(१) भगाकर किले चापाने-रको ४ महीने तक घेरे रहे। निदान एक दिन किलेके आसपास फिरते फिरते एक जगह ६०।७० गज ऊंची भीत देखकर एक एक गजकी छेटीसे उसमें लोहेकी खूटियां गड़वायीं और अपने सिपा-हियोंको उन परसे ऊपर चढ़नेका हुक्म दिया। जब ३९ जवान चढ़ चुके तब बादशाह चढ़ने लगे। बैरामखाने अर्ज की कि हज-रत जरा ठहरें। जब वे लोग रास्तेसे चले जायें तब पधारें। बैरा-मखां यह कहकर आगे हो गये, बादशाह पीछे चढ़े। इस तरहसे ३०० जवानोंने कोट पर चढ़कर वह मजबूत किला फतह कर लिया।

जब बादशाह गुजरात फतह करके आगरेमें आये तब बिहार और बगालसे शेरखां पठानके उन दोनों सूबोंमें अमल कर लेनेकी

---

(१) गुजरातका सूबेदार सुलतान मुहम्मद तुगलकके समयमें जफरखां था। वह सुलतानके पीछे दिल्लीकी बादशाही कमजोर होने पर खुदमुख्तार हो गया था। यह सुलतान बहादुर उसीके उत्तराधिकारियोंमेंसे था। गुजरातके बादशाह सन ७९३से सन ९८० सवत १४४७ से १६२९ तक कायम थे। फिर अकबर बाद-शाहने गुजरातको दिल्लीमें मिला लिया।

खबर पायी और कुछ दिनों पीछे बंगालका बादशाह नसीबशाह (१) भी शेरखांसे हारकर बाबरसे आया।

शेरखां अर्थात् शेरशाहका जीवनचरित्र हम छपा चुके हैं। यहां प्रसङ्गवशसे कुछ हाल उसका लिखते हैं। शेरखांका असली नाम फरीद, बापका हसन और दादाका इब्राहीम था। इब्राहीम जिले मेवात परगने नारनोल गांव शिमले-में रहता था और घोड़ोंकी सौदागरी करता था। हसन सौदा-गरी छोड़कर सिपाही बना और बहुत मुद्दत तक रायमाल शेखा-वतका नोकर रहा जो आमेरके राज्यका एक बड़ा जागीरदार था। फिर सहसराम जिले बिहारमें जाकर सुलतान सिकंदर लोदीके अमीर नसीरखां लोहानीका नौकर हुआ। उस वक्त फरीद अपने बापसे रूठकर बाबर बादशाहके अमीर सुलतान जुनेदको नौकरी करने लगा। एक दिन बाबरने उसको देखकर जुनेदसे कहा कि इस पठानकी आंखोंमें बदमाशी पायी जाती है। इसको कैद रखना चाहिये। फरीद यह सुनकर भाग गया और बापके मरने पर उसके मालका मालिक होकर सहसराम और रुहतासके बीचमें लूट मार करने लगा। सुलतान बहादुर गुजरातीने खर्च भेजकर उसे बुलाया। उसने खर्च तो ले लिया और कुछ बहाना करके उसके पास नहीं गया। इतनेहीमें बिहारका हाकिम मर गया और शेरखां मकान खाली देखकर वहांका मालिक बन बैठा। फिर एक वर्ष तक बंगालके बादशाह नसीबशाहसे बराबर लड़ता रहा। उन दिनों हुमायूं बादशाह मालवा(२) और गुजरात फतह करनेमें लगे हुए थे जिससे उसको खूब मौका मिल गया था।

(१) बंगाल सन ७३९ संवत १३९५से खुदमुख्तार हो गया था और नसीबशाह सन ९२७ संवत १५७७ में बादशाह हुआ था। बंगालकी बादशाही सन ९८३ संवत १६३२ तक दिल्लीसे अलग रही। फिर अकबर बादशाहने फतह कर ली।

(२) मालवेमें भी अलग बादशाहत सन ८०४ संवत १४५८ से सन ९७० संवत १६१९ तक थी। फिर अकबर बादशाहने ।८ मिला ली। मालवेके बादशाह गोरी और खिलजी जाति

निदान बादशाह सन ९४५ संवत १५९५में बंगालेको रवाना हुए। बैरामखां भी साथ थे और इस समय इनका नाम अमीरोंमें लिखा गया है जिससे जाना जाता है कि यह दरजा इनको चांपानेरकी फतहके पीछे मिल गया था।

शेरखां उस समय बिहार देशके प्रसिद्ध गढ चिनारमें (१) था मगर बादशाहके पहुंचने पर बंगालको चल दिया और अपने बेटे जलालखांको गढीमें(२) छोड गया जो उस समय बंगालका दरवाजा माना जाता था।

बादशाहने बिहारमें पहुंचकर भागलपुरसे बैरमबेग वगैरह कई अमीरोंको ५।६ हजार आदमियोंके साथ गढी फतह करनेको भेजा मगर वहां हार हुई। बैरमखां कई बार पीछे फिर फिर कर जलालखांसे लडे और उसकी सेनाका मुह भी फेर दिया परन्तु मदद न पहुंचनेसे कुछ बन न पडा।

फिर हुमायू बादशाह भी ९ सफर सन९४६ आषाढ सुदी ११ संवत १५९६ को परगने भोजपुरके गाव भईयामें शेरखांसे लडाई हारकर आगरेमें आये। दूसरी लडाई १० मोहर्रम ९४७ जेठ सुदी १२ संवत १५९७ को कन्नौजमें हुई। वहा भी शेरखा जीता और बादशाह शिकस्त खाकर दिल्लीको चल दिये।

बैरामखां इस लडाईमें भी बहादुरी करके हार होनेके पीछे सम्भलकी तरफ चले गये और कसबे लखनोरमें जाकर राजा मित्रसेनके शामिल हुए जो उस जिलेके नामी जमींदारोंमेंसे था। जब यह खबर शेरखांको पहुंची तब उसने अपना आदमी

(१) सही नाम चुनार है। यह बहुत पुराना गढ है। इसका सविस्तर हतात इसी स्थानके रईस बाबू हनुमानप्रसादजीने सन् १८८० ई०में लिखकर छपवाया था। उसमें लिखा है कि यह किला सन् १५३० ई० संवत १६८में हुमायूके और सन् १५३७ ईसवी संवत १६८४ में शेरशाहके दखलमें आया था।

(२) गढी बङ्गालकी सीमा पर एक प्रसिद्ध जगह थी।

भेजकर वैरामखांको राजासे मांगा। राजाने लाचारीसे उसको उसके पास भेज दिया। वैरामखां मालदेवके [illegible] शेरशाहसे मिले। वह पहले मजलिसमें उठकर मिला और उसका मन मनानेके लिये चिकनी चुपडी बातें करने लगा जिसमें यह भी कह गया कि "जो इखलास (भक्ति) रखता है वह खता नहीं करता।" इस पर इन्होंने भी कहा कि हां जो इखलास रखेगा वह खता नहीं करेगा। फिर बुरहानपुरके पासमें [illegible] हाकिम अबुलकासिम(फु१) साथ गुजरातको भागे। इतनेमें शेरखांका वकील गुजरातसे आता था उसने खबर पाकर आदमी भेजे और अबुलकासिमको जो चेहरे मुहरेसे दीदारू जवान था पकड लिया। वैरामखांने नेकजातीसे (सज्जनतासे) हठ करके कहा कि मैं वैरामखां हूं। मगर अबुलकासिमने भलमनसीसे कहा कि यह तो मेरा नौकर है और चाहता है कि मेरे वास्ते अपनेको कुरबान करे। तुम इसको जाने दो।

इस तरह वैरामखां बचकर गुजरातके सुलतान महमूदके पास पहुंचे और अबुल कासिमको जब शेरखांके पास ले गये तो उसने वेसमझीसे ऐसे सज्जन पुरुषको मरवा डाला।

शेरखां कहा करता था कि जब वैरामखांने उस मजलिसमें यह कहा था—"जो इखलास रखता है। खता नहीं करता है।" तो मैंने समझ लिया था कि यह हमसे मेल नहीं करेगा।

गुजरातके सुलतान महमूदने २) भी वैरामखांको अपने पास रखनेके वास्ते बहुत कहा। मगर वैरामखांने कबूल नहीं किया और मक्के जानेकी छुट्टी लेकर सूरत बन्दरमें आये।

---

(१) यह हुमायूंकी तर्फसे ग्वालियरका हाकिम था। जब शेरशाह हुमायू पर फतह पाकर ग्वालियर पर गया तब इसने कुछ दिनों तक लडकर किला सौंप दिया और आप उसके साथ हो गया।

(२) बहादुरके पीछे यह सुलतान महमूद सन् ९४४ सवत १५९४ में गुजरातका वादशाह हुआ था।

वहांसे मारवाड होकर कासवे जूनमें ७ मोहर्रम सन् ९५० यानी १वैशाख सुदी ९ संवत १६००को अपने मालिक हुमायूं बादशाहके पास जा पहुंचे।

बादशाह दिल्लीसे पंजाब और पंजाबसे सिंध २८ रमजान सन् ९४७ माघ बदी ३ संवत १५९१को पहुंच कर कासवे लाहरीमें उतरे थे। दूसरे वर्ष सन् ९४८ यानी संवत १५९८ में हमीदा बानू बेगमसे निकाह करके वहांसे ठट्टेको गये। रास्ते में कुछ दिनों तक सेवान किलेसे लडे, परन्तु लडाईसे लाभ न देखकर जोधपुरके राव मालदेवके बुलानेसे मारवाडको चले गये। वहांसे भी निराश होकर जेसलमेर होते हुए १० जमादिउलअव्वल यानी भादों सुदी १२ संवत १५९९ को उमरकोटमें लौट आये और बेगमको वहीं छोडकर फिर सिंधमें गये। १५ दिन पीछे ५ रज्जब रविवार कार्तिक सुदी ६ संवत १५९९ को रातको उमरकोटमें शाहजादेका जन्म हुआ। बादशाहने कासवे जून इलाके भक्करमें यह बधाई सुनकर शाहजादेका नाम मिरजा अकबर रखा और सिंधियोंसे लडाई शुरू की जो भक्करके सुलतान महमूदकी तरफसे उनके मुकाबिलेको आये थे। यह सुलतान महमूद ठट्ठेके शाह हुसेनबेगके अधीन था। शाहहुसेन मिरजाशाहबेग अरगूका बेटा था। जब बाबर बादशाहने इसके भाई मुहम्मद मुकीमसे काबुल लिया उसके दो तीन वर्ष पीछे इसको भी कंधारसे निकाल दिया था तब यह सिंधमें आकर इस मुल्कका मालिक बन गया। इसके पीछे हुसेनबेग ठट्ठका सुलतान हुआ। इसीके आश्रित सुलतान महमूदसे यह लडाई हो रही थी।

बैरामखां जिस वक्त वहां पहुंचे उस वक्त भी लडाई हो रही थी और वे सीधे रणस्थलमें जाकर शत्रुओंसे लडने लगे। बादशाहकी फौजको बडी हैरत हुई कि क्या यह कोई लशकरगैब (दैव माया) है? पर जब मालूम हुआ कि वे बैरामखां हैं तब सब खिल उठे और बादशाहको भी बहुत खुशी हुई।

बादशाहके पांव निधमें भी नहीं जमे। निदान वे सुलतान महमूदसे सुलह करके ७ रबीउलअव्वल सन् ९५० हि० जेठ सुदी ८ संवत १६००को सेवीके(१) रास्तेसे कंधारको रवाने हुए, उनका इरादा ईरान जानेका था। मगर उनके छोटे भाई मिरजाअसकरीने जो कंधारका हाकिम था सभाले भाई मिरजा कामरां हाकिम काबुलकी सलाहसे उनके पकड़नेका इरादा किया। बादशाह यह खबर पाकर कंधारके पाससे मस्तगकी(२) ओट आये। मिरजा असकरी इनके ईरान जानेमें अपना बहुतसा नुकसान देखकर रास्ता रोकनेके लिये कंधारसे निकला जिसकी खबर जी बहादुर(३) नाम एक भले आदमीने आकर बैरामखांको दी। बैरामखां उसको बादशाहके पास ले गये बादशाहने वहांसे निकल जानेके लिये तरदीबेग(४) वगैरह अमीरोंसे घोड़े मगाये और जब उन्होंने नहीं दिये तब वे उनको दंड देनेके लिये लगे, बैरामखांने कहा कि वक्त तंग होगया है पर इतनी फुरसत नहीं रही है। इन नमकहरामोंको गजबइलाहीके (ईश्वर कोपके) हवाले करके यहांसे चल देना चाहिये।

बादशाह उनका कहना मानकर तथा काबुल और कंधारका इरादा छोड़कर मक्के(५) जानेके विचारसे ईरानको रवाने हुए

(१) सेवी बलूचिस्तानमें है जहां अब अंगरेजी अमलदारी है।

(२) मस्तग कंधारके पास है।

(३) जी बहादुर मिरजा असकरीका नौकर था पहले बादशाहके पास भी रह चुका था।

(४) तरदी बेग बादशाहके बड़े अमीरोंमें खानखानासे दूसरे दरजे पर था।

(५) मक्का अरब देशमें मुसलमानोंका बड़ा पुनीत धाम है जो वहां हो आता है उसको हाजी कहते हैं। हाजीके माने यात्रीके हैं मक्केकी यात्राका नाम हज है।

और ख्वजा मुअज्जम(१) वगैरहसे कह आये कि शाहजादे और बेगमको लेकर पीछेसे जल्दी आजावें। कुछ दूर गये होंगे कि रात हो गयी। तब बैरामखांने बादशाहसे अर्ज की कि हजरतको मालूम है कि मिरजा असकरी कितना लालची है और वह इस वक्त दो तीन मुशिर्योंके साथ बैठा हुआ हजरतके डेरेके माल असबाबकी फर्द देखता होगा। इस वास्ते अभी अकस्मात् वहां पहुंच कर उसका काम तमाम कर देवें। जब मिरजा न रहेगा तब उसके नौकरोंको जो सब आपके नमकसे पले हैं आपकी खिदमतमें आनाही पडेगा।

बादशाहने इस सलाहकी तारीफ तो बहुत की मगर वैसा करना मुनासिब न समझा और आगेको कूच कर दिया। तरदू,-दीबेग वगैरह तमाम नौकर मिरजा असकरीके पास चले गये मगर बैरामखां बादशाहके साथ रहे।

बैरामखांने अपनी दानाईसे जैसा समझकर कहा था वैसाही हुआ। मिरजाअसकरी रातको मस्तगमें आकर अपने डेरेमें बादशाहके माल असबाबकी याददाश्त (सूची) लिखने लगा। जो उसके पास लाया गया था और फिर शाहजादे अकबरको लेकर कंधारमें आया और शाहजादेकी मा हमीदा बानूबेगम बादशाहके पास चली आई।

बादशाहने विलायत गर्मसेरमें(२) पहुंच कर १ शव्वाल सन् ९५० पौष सुदी ३ संवत १६०० का ईरानके बादशाह तुहमास्प सफवीके नाम खत भेजा जिसमें लिखा था कि तकदीरसे कुछ ऐसी बात बन आयी है कि आपका मिलाप जल्दी हो। पीछे अपनी ईरानकी अमलदारीके जिले सीसतां(३) वगैरह

(१) मरयममकानी अर्थात् हमीदा बानूबेगमका भाई जो मोअज्जम सुलतान भी कहलाता था।

(२) कंधार और सीस्तानके बीचका मुल्क।

(३) सीस्तान अब ईरानके, और कंधार काबुलके नीचे है।

बादशाह जब इस तरहसे शाह ईरानके मेहमान होकर रास्तेमें ईरानी अमीरों और शाहजादोंकी नज़रें और ज़ियाफतें लेते हुए हिरातसे(२) कज़वीनमें(३) पहुंचे तब बैरामखांको शहर सुलतानियेमें(४) लेजाकर शाहको अपने आनेकी खबर भेजी।

बैरामखां शाहतुहमास्पको बादशाहका सलाम देकर लौट आये और शाह तुहमास्पने बड़ी धूम धामसे पेशवाई करके जमादिउलअव्वल सन् ८५१ भादों संवत १६०१ में हुमायूं बादशाहसे मुलाकात की तथा बड़े आदर सत्कारसे सुलतानियेमें ले जाकर ठहराया। कई दिन तक राग रंग होता रहा और शिकारकी भी ऐसी भारी तैयारी हुई कि शाही फौज १० दिनके रास्तेसे जानवरोंको घेरकर लायी। दोनों बादशाह घोड़ेपर सवार होकर

---

(१) यह शाह इसमाईलका बेटा था और सन् ८३० सं० १५८१ में तख्त पर बैठा था।

(२) हिरात अब अमीर काबुलकी कबज़ेमें है।

(३) कज़वीन ईरानका एक शहर है और उन दिनों वहां राजधानी थी।

(४) कज़वीनके पास एक शहर है जहां ईरानके सफवी बादशाह गर्मियोंमें रहा करते थे।

गये और शिकार मारे। फिर शाहके भाई बहरामसिरजा और सामसिरजाने आज्ञा पाकर शिकार खेला। उनके पीछे बैरा-खां वगैरह बादशाहके अमीरोंको भी शिकार करनेका हुक्म हुआ।

इसके पीछे फिर एक और ऐसाही बड़ा शिकार हुआ जिसमें दोनों बादशाहोंने चौगानबाजी और कबकअन्दाजी की अर्थात् घोड़े दौड़ा कर गेंद खेले और निशाने उड़ाये। इसी दिन बैरामबेगको खानका(१) और हाजी मुहम्मद कूकीको(२) सुलतानका खिताब मिला। फिर शाहने १२००० सवार अपने बेटे मिरजा मुरादके साथ मददके वास्ते तैयार करके उनका तूमार (दफतर) बादशाहको दिखाया और सफरका सब सामान कर दिया। तीसरी बार फिर वैसाही शिकार होकर दोनों बादशाहोंकी सवारी तथा मुलाकात हुई और शाह बादशाहके डेरे पर आये और दोनों बादशाह एक दूसरेसे बिदा हुए।

आते समय बादशाह तबरेज होकर कंधारको लौटे। इस रास्तेमें भी उनकी वैसीही पेशवाई और मेहमानदारी हुई।

जो लोग इस सफरमें बादशाहके साथ थे अकबरनामेमें उन सबका नाम और थोड़ा थोड़ा परिचय भी लिखा है जिनमें सबसे पहला नाम बैरामखांका है कि "सब साथ देने वालोंमें शिरोमणि, जो इस विषयमें हमेशा नेकनीयतीसे बादशाहके साथ रहा वह बैरामखां"।

बादशाहने ७ मुहर्रम सन् ९५२ चैत सुदी ८ संवत १६०२ को कंधार पहुंचकर मोरचे लगाये और मिरजाकामराके डेरेका

(१) बैरामबेग बैरामखां तो पहलेसे कहे जाने लगे थे जैसा कि शाहके फरमानमें भी बैरामखां लिखा है परन्तु राज रीतिसे उनको खानका खिताब अब मिला था।

(२) हाजी मुहम्मदखां भी इसका नाम था।

(घासाई) "रफीम"का कलीनटावरमें(१) मौजूद, होना जानकर द गामखांको उसके ऊपर भेजा यह गये और फतह करके लोगोंको पकड़ लाये।

फिर बादशाहने मिरजा कामराके नाम फरमान लिखकर बैरामखांके हाथ काबुलमें भेजा। इस फरमानके साथ शाह तुहमास्पका भी फरमान था जिसमें उन्होंने मिरजाको आपसमें मेल रखनेका उपदेश लिखा था।

बैरामखां जब काबुल पहुंचे तब काबुस(२) वगैरह बहुतसे आदमी पेशवाई करके उनको ले गये। मिरजा कामराने चारबागमें दरबार करके बैरामखांको बुलाया। इन्होंने सोचा कि ये दोनों फरमान मिरजाको बैठे हुए देना तो ठीक नहीं है और मिरजा उठकर ले ऐसी उससे उम्मेद भी नहीं। इसलिये वे भेट करनेके लिये एक कुरान साथ ले गये। जब मिरजा कुरानकी ताजीमको खड़ा हुआ तब वे दोनों फरमान भी उसको दे दिये। इस तरह हालाईसे उन दोनों फरमानोंकी ताजीम कराई। फिर दोनों बादशाहोंकी भेजी हुई सौगातें मिरजाको दीं और मिरजाके पास बैठकर मेल मिलापकी बातें कीं। जब दरबार हो चुका तब मिरजासे इजाजत लेकर शाहजादे अकबर, मिरजा हिन्दाल, मिरजा सुलेमान(३), मिरजा इब्राहीम, यादगार(४) नासिर मिरजा और उलग(५) मिरजा वगैरहसे अलग अलग मिले और सबको बादशाहके भेजे हुए खत और खिलअत दिये तथा मिहर-

(१) कंधारके पास एक कसबा।

(२) मिरजा कामराका एक अमीर।

(३) मिरजा सुलेमान और इब्राहीम दोनों बाप बेटे बादशाहके छुट भाइयोंमेंसे थे। बाबर बादशाहने मिरजा सुलेमानको बदख्शांका मुल्क दे रखा था।

(४) यह बादशाहका चाचा था।

(५) उलग मिरजा भी बादशाहका छुट भाई था।

ताजीके सदेमे कहे। मिरजा कासमको वेरामग्गाको पास सहीना ठहरा कर बिदा किया और अपनी फूफी शाहजादा बेगमको मिरजा-असकरीके समझानेके वास्ते कंधार भेजा जिनकी सिफारिशसे बादशाहने मिरजाके कसूर मुआफ कर दिये। गुरुवार २५ जमादिउस्सानी कातिक बदी १२ को दीवान खानेमें बड़ा भारी दरबार किया जिसमें चगताई(१) और कजलबाश(२) अमीर अपने अपने दरजेसे परा बांधकर खड़े हुए और बेरामखां हुक्मके मुवाफिक मिरजा असकरीको-गर्दनमें तलवार डालकर लाये। बादशाहने सेवकयानोंसे तलवार निकलवा दी और जब मिरजा आदाब बजा ला चुका तब उसको बैठनेका हुक्म दिया और कंधारको दखल करके मुहम्मद मुरादमिरजाको सौंप दिया जो शाह तुहमास्पका बेटा था और मददके लिये ईरानी फौजके साथ आया था। उसने अपनी तरफसे शाह बदागखांको(३) कंधारका हाकिम किया।

शाहजादा मुराद मर गया तब बादशाहने कंधारका किला बेगमोंको रखनेके वास्ते शाह बदागखांसे मांगा। उसने देनेसे इनकार किया, तब मिरजा असकरीको(४) कैद रखनेके वास्ते उसके पास किलेमें भेजनेका बहाना करके अपने अमीरोंको रातके वक्त किलेके पास पास बैठा दिया जो सुबह होतेही अंदर घुस

(१) मुगल।

(२) ईरानी लाल टोपी वाले, क्योंकि कजल बाशके माने तुर्की बोलीमें लाल टोपीके हैं, जो सफवी बादशाहोंके नौकर दिया करते थे।

(३) शाह बदागखां शाह ईरानका नौकर और शाहजादे मुरादका अतालीक था।

(४) मिरजा असकरीको बादशाहने सवत १६०९ में मिरजा सुलैमानके पास भेजकर कहला दिया कि बलखकी राहसे इसको मक्के भेज दे। मिरजा सुलैमानने ऐसाही किया और असकरी वहां पहुंचकर सवत १६१५ में मर गया।

गये। किलेवाले उनसे लड़ने लगे मगर बैरामखांने दूसरे दरवाजेसे जाकर किला फतह कर लिया। शाह बदागखांने बादशाहके पास हाजिर होकर माफी मांगी। बादशाहने उसको राजी करके बिदा किया और वह किला बैरामखांको सौंपकर शाह ईरानको लिख दिया कि शाह बदागखाने हुक्म नहीं माना था इसलिये हमने कंधार उससे लेकर बैरामखांको दे दिया है।

फिर बादशाहने बैरामखांको कंधारमें छोड़कर काबुल पर चढ़ाई की। १२ रमजान सन् ९५२ अगहन सुदी १४ संवत १६०२ बुधको रातको काबुल भी फतह होगया और मिरजा कामरां गजनीन होकर सिंधको भाग गया। सन् ९५३ के लगतेही बादशाह काबुलसे बदख्शां फतह करनेको गये जो मिरजा कामराने मिरजा सुलेमा-नसे छीन लिया था। पीछेसे मिरजा कामराने सिंधसे आकर गजनी-नको घेर लिया। बादशाहने खबर पाकर बैरामखांको लिखा। बैरामखांने यादगारनासिर मिरजा और उलग(१) मिरजाको मिरजा कामरांके ऊपर भेजा। मिरजा उस समय तो सिंधको चला-गया मगर फिर वहांसे फौज लेकर आया और कंधार लेनेका इरादा किया। पर काबू न पाकर काबुलको चला गया क्योंकि बैरामखां ने कंधारको खूब मजबूत कर रक्खा था।

मिरजा कामराने पहले गजनीन लिया, फिर काबुल फतह किया। मगर बादशाहने बदख्शांसे आकर फिर मिरजाको निकाल दिया। मिरजा भागकर बलखमें पीर मुहम्मदखां(२) उजबकके पास पहुंचा और उसको साथ लेकर बदख्शां पर गया।

---

(१) उलग मिरजा इस समय जमीन दावरका हाकिम था।

(२) पीर मुहम्मदखां तूरानका बादशाह मुहम्मदखां शैबानीकी औलादमें था। मुहम्मदखां सन् ९१६ स० १५६७ में ईरानके शाह इसमाईल सफवीके मुकाबिलेमें मारा गया था। उसके पीछे इतने बादशाह समरकन्द और बुखाराके तख्त पर बैठे थे—
१—कोंजमखां सन ९१६ (१५६७)में २—अबूसईदखां सन् ९३६

बादशाहने यह सुनकर सोमवार ५ जमादिउलग्रव्वल सन् ९५५, आषाढ सुदी ७ संवत १६०५ को फिर बदख्शांको कूच किया। वहां मिरजा कामरांसे मिलाप होगया और सब भाई मिलकर सन् ९५६ के लगतेही अपने बाप दादाका राज्य लेनेके लिये बलखके ऊपर गये; मगर आपसमें फूट पड जानेसे बादशाह काबुलको लौट आये। मिरजा कामरां बदख्शांको चला गया और वहांसे फिर काबुल पर आया। बादशाह काबुलसे जाकर उससे लडे। मगर शिकस्त खाकर बदख्शाको चले गये और मिरजा कामरां फिर काबुलके तख्त पर आ बैठा। बादशाहने बदख्शासे आकर फिर मिरज़ाको लडाईमें जीता और काबुल फतह किया।

मिरजा भागकर अफगानिस्तानमें गया और अफगानोंको लेकर जलालाबाद पर आया। बादशाहने गजनीनके हाकिम हाजी मुहम्मदको बुलाया, मगर वह इधर तो न आया और मिरजा कामरांका रस्ता देखने लगा, जिसको उसने गजनीन देनेका इकरार कर लिया था।

इतनेमें बैरामखां बादशाहकी खिदमतमें हाजिर होनेके लिये काबुलको जाते हुए गजनीनमें आ निकले। हाजी मुहम्मदने पेशवाई करके मुलाकात की और जियाफतके बहानेसे कैद करनेके लिये किलेमें ले जाना चाहा, मगर १ आदमीने इशारेसे मना किया, जिससे बैरामखां दगा समझ कर किलेमें नहीं गये और हाजी मुहम्मदखांको लल्लो पत्तोसे राजी करके काबुलमें ले आये। लेकिन वहांके हाकिमने उसको शहरमें जाने नहीं दिया। क्योंकि बादशाह मिरजा कामरांके पीछे गये हुये थे और हाकिमसे कह गये थे कि कोई शहरमें न आने पावे। हाजी मुहम्मद दगा समझकर शिकारके

(१५८६।८७) ३—उबैदुल्लाहखां ९३९ (१५८९) ४—अबदुल्लहखां और ५—अबदुल्लातीफखां सन् ८४६। (१५९६) ६—बराकखां और ७—बुरहानखां ९४९ (१५९९) ८—पीरमुहम्मदखां ९५२ (१६०२) में।

वहांसे गजनीनको चला गया। फिर मिरजा कासरां भी खानखाना और क़ाजी मुहम्मदका आना सुनकर भाग निकला। जब बादशाह काबुलको लौटे तब बैरामखां लगमियाकसें(१) जाकर आदाब बजा लाये। बादशाहने उनको क़ाजी मुहम्मदके ऊपर भेजा, पर वे जाकर फिर उसको संग लाये और बादशाहसे कसूर मुआफ करा दिये।

बादशाह मिरजा कासरांके ऊपर फिर जलालाबादको गये और मिरजा फिर पहाड़ोंमें भागा। बादशाहने बैरामखांको उसके पीछे भेजा। वे गये और जब मिरजा काबुलको सरहदमें निकलकर नीलाब(२)की तरफ चला गया तब वे दर्क़(३)से बादशाहके पास लौट आये।

बादशाहने काबुलमें वापस आकर बैरामखांको कंधार जानेके लिये विदा किया। वे वहां पहुंचकर अपना काम करने लगे।

मिरजा कासरां फिर अफगानोंको लेकर काबुलके इलाकेमें आया। बादशाह उसके रोकनेको सुरखाबमें(४) आये। २१ ज़ीक़ाद सन् ९५८ इतवार मगसर बदी ८ संवत १६०८ को रातको मिरजाने गाव चरयारमें(५) बादशाही लश्कर पर छापा मारा, जिसमें बादशाहको फतह तो हुई मगर मिरजा हिंदाल मारा गया; जिसको बादशाहने मुहम्मदको(६) जगह गजनीनका हाकिम बनाया था और वह इस वक्त बादशाहके साथ था।

(१) यह स्थान काबुलके पास है।
(२) अटक अर्थात् सिन्धु नदी।
(३) काबुल और जलालाबादके बीचमें एक गांव है।
(४) नीलाब और काबुलके बीचमें एक नदी है।
(५) यह गाव काबुलके परगने नेकनिहारमें था।
(६) वही बाबाकशका जिसे सुलतानकी पदवी मिली थी। यद्यपि इसके अपराध, खानखानांने क्षमा करा दिये थे तो भी फिर बदख्वाही (बुराचेतना) करने लगा था। इसलिये बादशाहने इसको और इसके भाई शाह मुहम्मदको कैद करके हुक्म दिया कि इन्हों-

फिर बादशाहने अफगानोंके ऊपर चढाई करके मिरजा कामरांको हिन्दुस्तानकी तरफ भगा दिया।

मिरजा कामरा पंजाबमें जाकर शेरखांके बेटे सलोमखांसे मिला जो उस वक्त हिन्दुस्तानका बादशाह था। मगर फिर उससे मदद मिलनेकी उम्मेद न देखकर पंजाबके पहाडी राज्योंमें फिरता फिरता आदम गक्कड(१) के पास पहुंचा। उसने मिरजाके आनेकी खबर देकर बादशाहको बुलाया। बादशाह गक्कडोंके मुल्कमेंसे जो सिंध और भट नदियोके बीचमें था हिन्दुस्तानके ऊपर चढाई करनेका मौका देखकर काबुलसे बंगशमें(२) आये। फिर सन् ९६० संवत १६०९। १० में आगे बढकर सिंध नदीसे उतरे। सुलतान आदम मिरजा कामरांको लेकर आया।

बादशाहने उसको जान तो बख्श दी मगर आंखोंमें सलाई फिराकर मक्केको भेज दिया, जहां वह ४ वर्ष पीछे ११ जिलहज्ज ९६४ कुआर सुदी १२ संवत १६१४ को मर गया।

फिर बादशाह पेशावरमें अमल करके सन् ९६१ सं० १६१० के लगतेही काबुलमें लौट आये। उनका विचार जाडेमें हिन्दुस्तान पर चढाई करनेका था। मगर कुछ चुगलखोरोंने खानखानाकी तरफसे ऐसी बातें बनायीं कि बादशाह हिन्दुस्तान जानेसे कंधार

ने जो खिदमत खुशी या नाखुशीसे की हो उसको तो ये लिखें और एक बादशाही मुंशी इनके अपराधोंको लिखे वह इनसाफकी तराजूमें तुलकर दुनियाको इनका हाल मालूम हो जावे। उनके अच्छे काम तो कुछ भी नहीं निकले और बडे बडे जुर्म १९२ तक थे जिनकी सजामें वे मारे गये और गजनीकी हुकूमत बहादुरखांको दी गयी। उसके पीछे मिरजा हिन्दाल हाकिम हुआ था।

(१) गक्कड १ जातिका नाम है जो पहले हिन्दू थी फिर मुसलमान हो गयी वह भट और झेलम नदियोंके आसपास रहती है।

(२) बङ्गश एक पहाडी इलाका अफगानिस्तानमें है जहांके रहने वाले पठान भी बङ्गश कहलाते हैं।

जाना जरूरी समझकर उधर ही गये। खानखानां तो नेकबख्-तोका जामा पहने हुए हैं। बादशाहका आना सुनकर बहुत शुक्रगुजार हुए और बड़े अदबसे ३ कोस तक पेशवाईको आये तथा जमीन चूमकर आदाब बजा लाये। जिससे बादशाहको यकीन हो गया कि जो कुछ उनकी बाबत कहा गया है सब मिथ्या है।

फिर बादशाह एक अच्छा मुहूर्त देखकर कंधार पधारे और जाड़े भर वहीं मौज उड़ाते रहे। बैरामखानें खिदमतमें कुछ कसर नहीं रखी। बादशाही सरकारमें जिस चीजकी जरूरत हुई निछोरे करके दी और साथके सब छोटे बड़े बन्दोंको अपने नौक-रोंके घरोंमें उतारा और उनकी खातिर तवाजअ करना भी उन्हीं लोगोंके जिम्मे कर दिया।

बड़े आदमियोंमेंसे शाह अबुलमुआली, मुनअमखां, खिजर-ख्वाजा, मुहबअली और मीरखलीफा वगेरह थे।

जब बैरामखांकी नमकहलाली साबित हो गयी और सब लोगोंने जान लिया कि वह पूरा तावेदार है तब बादशाह कन्धार उन्हींके जिम्मे छोड़कर हिन्दुस्तान जानेके वास्ते काबुलमें आ गये और बैरामखांसे कह आये कि इस चढ़ाईका सामान करके जल्दीसे लशकरमें आ जावे।

बैरामखां २ शव्वाल भादों सुदी ३ संवत १६११ को काबुल पहुंचकर बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गये। यह रोजा ईदका दूसरा दिन था तो भी बादशाहने अति आनन्द और मेहरबानीसे जो बैरामखांके ऊपर थी उस दिन भी ईदकीसी खुशी मनाकर ऐसी बड़ी सभा सजायी जो ईदकी सभासे जियादा सुन्दर और सुहावनी थी। उसी दिन पहले पहल शाहजादे अकबरने निशाना उड़ाया अर्थात् चांदीकी गेंदको तीरमें पिरो लिया। बैराम-खांने इस "कबकअंदाजी"की तारीफमें एक उमदा कसीदा (काव्य) बनाया और भरे दरबारमें सुनाया।

इन्ही दिनों हिन्दुस्तानसे सलीमखांके मरनेकी खबर आयी और वहां जो बादशाहके चाहने वाले थे उन्होंने बादशाहको बुलानेके वास्ते अर्जियां भेजी।

हिन्दुस्तानका कुछ हाल और हुमायूं बादशाहका फिर आकर दिल्लीके तख्त पर बैठना।

बादशाहको हिन्दुस्तान छोडे १५ वर्ष हो गये थे। इस मुद्दतमें शेरखां (शेरशाह) ५ वर्ष २ महीने १३ दिन बादशाही करके ११ रबीउल-अव्वल सन् ९५२ यानी जेठ सुदी १३ संवत १६०२ को मर गया था—फिर उसका बेटा सलीमखां (सलीमशाह) तख्त पर बैठा। वह ८ वर्ष २ महीने ८ दिन अपना हुक्म चलाकर २२ जीकाद सन् ९६० यानी मगसर वदी ९ संवत १६१० को फौत हुआ। उसने अपने बापके अधूरे छोडे हुए रुहतासके किलेको पूरा किया और सवालख पहाडोंमें मानकोटका किला मुगलोंको रोकके लिये बनाया।

सलीमखांके पीछे उसका बालक बेटा और सलीमखांका साला मुबारजखां उसको मारकर आप बादशाह होगया। उसने अपना नाम मुहम्मदशाह अदली रखा और हेमूं ढूसरको अपना वकील (बडा वजीर) बनाया। यह रेवाडीका(१) रहनेवाला था और लशकरमें नमक बेचते बेचते सलीमखांके मोदियोंमें दाखिल होकर बादशाही नौकर हो गया था तथा सलीमखांके मुंह लगकर मुल्क और मालके कामोंमें दखल देने लगा था। अब जो वकील हुआ तो सब राज काजका करता धरताही होगया। पहले बसन्तरायका खिताब पाया था परन्तु अब राजा विक्रमाजित कहलाने लगा। इस वक्त पंजाबमें अहमदखां, बङ्गालमें मुहम्मदखां, मालवेमें सजावलखां और बयानेमें गाजीखां सूर हाकिम थे। मगर फिरोजखांको मारकर तख्त छीन लेनेसे ये सब अदलीके

(१) रेवाडी अलवर और दिल्लीके बीचमें राजपूताना मालवा रेलवे लाइन पर दिल्लीकी कमिश्नरीमें है।

दुश्मन हो गये थे। अहमदखां सूर अपना नाम सिकन्दर रखकर पंजाबसे, इबराहीम सूबे बयानेसे आगरे पर आये, तब अदली तो हेमूको सलाहसे पूरबको चल दिया और आगरेके पास इब्राहीम और सिकन्दरकी (जो अदलीके दोनों बहनोई थे) लड़ाई हुई। इब्राहीम हारा और सिकन्दर जीता। जिससे सिन्ध और गङ्गाके बीचका तमाम मुल्क उसके कबजेमें आ गया। वह अदली और मुहम्मदखांसे लड़नेके लिये पूर्वकी ओर जानेके विचारमें था, मगर हुमायूं बादशाहका आना सुनकर ठहर गया और तातारखां तथा हबीबखां वगैरहको पंजाबकी रखवाली पर भेज दिया।

उधर मुहम्मदखांने बङ्गालसे अदली पर चढ़ाई की जो चुनारगढ़में था और हेमूसे लड़ाईमें हारकर जानसे जाता रहा। शेरखां और सलीमखांके खजाने हेमूके हाथ आये। फिर हेमूमें और इब्राहीमसे कई लड़ाइयां हुई जिनमें सब जगह हेमूकी जीत रही। हेमू अब सिकन्दरको निकालनेके लिये आगरेमें जाने वाला था परन्तु बङ्गालमें मुहम्मदखांके बेटे खिजरखांके बादशाह बन बैठनेकी खबर सुनकर उधर अदलीके पास चला गया।

हुमायूं बादशाह काबुलमें ये खबरें सुनकर सन ९६१ के जिलहज्ज यानी संवत १६११ के कातिक या मगसरमें हिन्दुस्तानको रवाने हुए और शाहजादे अकबरको भी कि जिसकी उमर १२ वर्ष ८ महीनेकी हो गयी थी साथ लेते आये। बैरामखां बाजे बादशाही कामों और अपनी जगी तैयारीके लिये छुट्टी लेकर काबुलमें रह गये।

बादशाह ३० मुहर्रम सन् ९६२ फागुन सुदी २ को बिक्राम (पेशावर) में पहुंचे और ५ सफरको नीलाब (सिंध) नदी उतरकर ३ दिन तक ठहरे। यहां बैरामखां भी आ मिले। तातारखां जो बहुतसी फौजसे रुहतासके किलेमें था बादशाहका आना सुनकर भाग गया।

बादशाहने कलानूरसे(१) बैरामखांको तो नसीबखां पचभइयेके ऊपर भेजा और आप लाहोरमें जा विराजे।

बैरामखां जब परगने हरहानेके(२) पास पहुंचे तब नसीबखां थोडासा मुकाबिला करके भाग गया। मुगलोंको बहुत लूट मिली और पठानोंके जोरू बच्चे भी सब पकडे गये।

बैरामखांने बादशाहसे सुना था कि अब जो हिन्दुस्तान फतह होगा तो किसी खुदाके बन्देको बन्दी(३) नहीं बनावेंगे इसलिये वे खुद सवार होकर गये और पठानोंके जोरू बच्चोंको इकट्ठे करके अपने भलेआदमियोंके साथ नसीबखांके पास भेजवा दिये तथा लूटका सब माल बादशाहके पास भेजकर आगे बढे। जब जालन्धरके पास पहुंचे तब पठान वहांसे भी भाग निकले और बादशाही लश्करमें झगड़ा होता देखकर अपना सब माल असबाब भी ले गये।

वह झगडा यह था कि तरदीबेगखां तो भागे हुए पठानों पर जाना चाहता था और बैरामखां इस बातको ठीक न समझ कर इजाजत नहीं देता था। तरदीबेगखांने बालतूखांको बैरामखांके पास भेजा कि जैसे हो सके इस बातकी परवानगी ले आवे। जब बालतू आया तब ख्वाजा मुअज्जमसे और उससे बातों बातोंमें विगाड हो गया और ख्वाजाने उसके हाथ पर तलवार मार दी। बादशाहको जब यह खबर पहुंची तब उन्होंने अफजलखांको वहां भेजकर अमीरोंमें सुलह करा दी।

फिर बैरामखां खुद तो जालन्धरमें ठहर गये और अपने साथी अमीरोंको अलग अलग आस पासके परगनोंमें भेजा। सिकन्दरखां माछीवाडे(१) पर विदा हुआ था, जब वह आ पहुंचा तो मैदान खाली

(१) गुरदासपुर (पञ्जाब)के जिलेमें है।

(२) जिले हुशयारपुरमें है।

(३) गुलाम, कैदी।

(१) जलन्धर और सहरन्दके बीचमें सतलज नदी के पास।

देखकर और आगे बढ़ गया तथा सहरन्दको (२) अपने कब्जेमें ले आया, जहां बहुतसी लूट उसके हाथ आयी। जब तातारखां, हबीबखां, नसीबखां, मुबारकखां और बहुतसे पठान सरदार दिल्लीसे चढ़कर आये तब सिकन्दरखां सहरन्दमें रहना मुनासिब न देखकर जालन्धरमें चला आया। बैरामखाने खफा होकर उससे कहा कि तू सहरन्दमें जमा रहता और हमको खबर देता।

बैरामखां जालन्धरसे चलकर जब माछीवाड़ेमें आये तब तरदीबेगखां वगैरः उनके साथके अमीर बरसातका ख्याल करके सतलजसे उतरनेको सलाह नहीं देते थे; मगर बैरामखां तो समय वृथा खोना ठीक न समझ कर नदीसे उतरही गये। तब तो उन लोगोंको भी उतारना पड़ा।

पठान बहुतसी फौज लेकर लड़नेको आये। लड़ाई शामसे शुरू हुई और पिछली रात तक होती रही। आखिर पठान हारकर भाग गये। बैरामखांने इस फतहकी लूट भी हाथियों समेत बादशाहके पास लाहोरमें भेजी।

सिकन्दरसूरने जब इस हारका हाल सुना तब ८०००० सवारोंसे सहित बैरामखांके मुकाबलेको आया। बैरामखांने दानाईसे सहरन्द जाकर किला सजाया और जल्द पधारनेके वास्ते बादशाहकी खिदमतमें अर्जियां भेजीं। बादशाह पन्द्रहवें दिनही ७ रज्जब (ज्येष्ठ सुदी ८ संवत् १६१२) की रातको सहरन्द आ पहुंचे और लश्करको चार भाग करके, पहले भागमें तो आप रहे, दूसरेमें शाहजादेको, तीसरेमें शाह अबुलमआलीको और चौथेमें बैरामखांको रखा।

चालीस दिन तक लड़ाई होती रही। २ शाबान सन् ९६२ (अषाढ़ सुदी ३) को शाहजादेके लड़नेकी बारी थी उस दिन बहुत घमासान लड़ाई होकर बादशाहकी फतह हो गयी। बहुतसे पठान मारे गये और सिकन्दर भागकर पञ्जाबके पहाड़ोंमें चला गया।

---

(२) जलन्धरसे आगे अम्बाले और जलन्धरके बीचमें एक पुराना शहर, पटियालेकी रियासतमें है जिसको सरहिन्द भी कहते हैं।

बादशाहने कलानूरसे(१) बैरामखांको तो नसीबखां पचभइयेके ऊपर भेजा और आप लाहोरमें जा विराजे।

बैरामखां जब परगने हरहानेके(२) पास पहुंचे तब नसीबखा थोडासा मुकाबिला करके भाग गया। मुगलोंको बहुत लूट मिली और पठानोंकि जोरू बच्चे भी सब पकडे गये।

बैरामखांने बादशाहसे सुना था कि अब जो हिन्दुस्तान फतह होगा तो किसी खुदाके बन्देको बन्दी(३) नही बनावेंगे इसलिये वे खुद सवार, होकर गये और पठानोंके जोरू बच्चोंको इकट्ठे करके अपने भलेआदमियोंके साथ नसीबखांके पास भेजवा दिये तथा लूटका सब माल बादशहके पास भेजकर आगे बढे। जब जालन्धरके पास पहुचे तब पठान वहांसे भो भाग निकले और बादशाही लश्करमें झगडा होता देखकर अपना सब माल असबाब भी ले गये।

वह झगडा यह था कि तरुद्दीवेगखां तो भागे हुए पठानो पर जाना चाहता था और बैरामखा इस बातको ठीक न समझ कर इजाजत नही देता था। तरुद्दीवेगखांने बालतूखाको बैरामखाके पास भेजा कि जैसे हो सके इस बातको परवानगी ले आवे। जब बालतू आया तब ख्वाजा मुअज्जमसे और उससे बातों बातोंमें बिगाड हो गया और ख्वाजाने उसके हाथ पर तलवार मार दी। बादशाहको जब यह खबर पहुंची तब उन्होंने अफजखांको वहा भेजकर अमीरोंमें सुलह करा दी।

फिर बैरामखां खुद तो जालन्धरमें ठहर गये और अपने साथी अमीरोंको अलग अलग आस पासके परगनोंमें भेजा। सिकन्दरखां माछीवाडे(१) पर बिदा हुआ था, जब वह आ पहुचा तो मैदान खाली

(१) गुरदासपुर (पञ्जाब)के जिलेमें है।

(२) जिले हुशयारपुरमें है।

(३) गुलाम, कैदी।

(१) जलन्धर और सहरन्दके बीचमें सतलज नदी के पास।

देखकर और आगे बढ़ गया तथा सहरन्दको (१) अपने कब्जेमें ले आया, जहां बहुतसी लूट उसके हाथ आयी। जब तातारखां, हबीबखां, नसीबखां, मुबारकखां और बहुतसे पठान सरदार दिल्लीसे चढ़कर आये तब सिकन्दरखां सहरन्दमें रहना मुनासिब न देखकर जालन्धरमें चला आया। बैरामखांने खफा होकर उससे कहा कि तू सहरन्दमें जमा रहता और हमको खबर देता।

बैरामखां जालन्धरसे चलकर जब माछीवाडेमें आये तब तरदीबेगखां वगैरः उनके साथके अमीर बरसातका ख्याल करके सतलजसे उतरनेकी सलाह नहीं देते थे, मगर बैरामखां तो समय वृथा खोना ठीक न समझ कर नदीसे उतरही गये। तब तो उन लोगोंको भी उतारना पड़ा।

पठान बहुतसी फौज लेकर लड़नेको आये। लड़ाई शामसे शुरू हुई और पिछली रात तक होती रही। आखिर पठान हारकर भाग गये। बैरामखांने इस फतहकी लूट भी हाथियों समेत बादशाहके पास लाहोरमें भेजी।

सिकन्दरसूरने जब इस हारका हाल सुना तब ८०००० सवारोंसे सहित बैरामखांके मुकाबलेको आया। बैरामखांने दानाईसे सहरन्द जाकर किला सजाया और जल्द पधारनेके वास्ते बादशाहकी खिदमतमें अर्जियां भेजीं। बादशाह पन्द्रहवें दिनही ७ रज्जब (ज्येष्ठ सुदी ८ संवत् १६१२) की रातको सहरन्द आ पहुंचे और लश्करको चार भाग करके, पहले भागमें तो आप रहे, दूसरेमें शाहजादेको, तीसरेमें शाह अबुलमुआलीको और चौथेमें बैरामखांको रखा।

चालीस दिन तक लड़ाई होती रही। २ शाबान सन् ९६२ (अषाढ सुदी ३) को शाहजादेके लड़नेकी बारी थी उस दिन बहुत घमासान लड़ाई होकर बादशाहकी फतह हो गयी। बहुतसे पठान मारे गये और सिकन्दर भागकर पञ्जाबके पहाड़ोंमें चला गया।

(१) जलन्धरसे आगे अम्बाले और जलन्धरके बीचमें एक पुराना शहर, पटियालेकी रियासतमें है जिसको सरहिन्द भी कहते हैं।

फतहके पीछे बडी आन्धी आई और मेंह भी बहुत बरसा जिससे भागनेवालोंको निहायत तकलीफ हुई और बहुत लोग उनमेंसे मर भी गये।

बादशाहने खुशीका दरबार करके मुसाहिबोंसे पूछा कि यह फतह किसके नाम लिखी जावे? अबुलमुआली अपने नाम और बैरामखां अपने नाम लिखाया चाहते थे; मगर बादशाहने शाहजादेके नाम लिखवायी।

फिर बादशाह सहरन्दका बन्दोबस्त करके समानेकी राहसे दिल्लीको रवाना हुए और १(१) रमजान सावन सुदी ३ जुमेरातको सलीमगढमें जो दिल्लीसे उत्तरको जमुना किनारे है, पहुंचे और ४ (सावन सुदी ५ सवत् १६१२)को दिल्लीमें दाखिल हुए।

बादशाहने दुबारा तख्त पर बैठकर नौकरोंको जागीरें बख्शी। शाहजादे अकबरको हिसारकी सरकार दी। सहरन्द और दूसरे फुटकर पगरने बैरामखांको दिये। तरदीबेगको मेवातमें भेजा। सिकन्दरखांको आगरे, अलीकुलीखांको सम्भल और हैदर मुहम्मद खांको बयानेकी तरफ बिदा किया। इतनीही दूरमें सिकन्दरका अमल रह गया था, आगे अदलीका था।

बादशाह लाहोरमें शाह अबुलमुआलीको छोड़ आये थे। वह लोगों पर जुल्म करने लगा और सिकन्दर सूर पहाडसे बाहर निकल आया था। बादशाहने यह खबरें सुनकर शाहजादे अकबरको सन्

(१) १ रमजानको जुमरात नहीं रविवार था। जुमेरात अकबरनामेमें भूलसे लिखी है क्योंकि आगे २५ रमजान बुधको शाहजादेके अमीरोंका उनकी जागीर "हिसार"में पहुंचना लिखा है। जो रमजानकी १ तारीख गुरुवार (जुमेरात)को हुई होती तो २५ कभी बुधको नहीं होती। बुधको २१वीं होती। बुधको २५वीं होनेसे साफ जाना जाता जाता है कि रमजानकी १ ता० जुमेरातको नही किन्तु रविवारकोही हुई थी। जैसा कि हमने ऊपर पञ्चाङ्गमें देखकर लिखा है।

९६३ के शुरूमें पञ्जाबको भेजा और बैरामखांको उसका अतालीक (उस्ताद) बनाया। सहरन्दमें शाहजादेके नौकर चाकर भी हिसार फिरोजेसे आकर लश्करमें शामिल हो गये और सिकन्दर पहाड़ोंमें चला गया।

बादशाह १ (१) रबीउल अव्वल सन् ९६३ से जुमेके दिन (माह सुदी १३ सवत् १६१२) पिछले दिनसे शुक्रके तारेको (२) देखनेके लिये किताबखानेकी छत पर चढे जिसके उगनेका अरस शामको ही था। मगर बैठते वक्त पाव फिसल जानेसे नीचे गिर पडे और मर गये। वजीरोंने इस बातको १७ दिन तक छुपाकर आसपासके अमीरोंको बुलाया, जब वे सब दिल्लीमें आ गये तब, २८ रबीउल अव्वल (फाल्गुण वदी १४ चन्द्रवार)को शाहजादेके नामका खुतबा (३) पढवाया और तरदीबेगने बादशाहीका सब सामान शाहजादेके पास भेज दिया।

शाहजादे और बैरामखां सिकन्दर सूरका मानकोटमें होना सुनकर उसके ऊपर जा रहे थे। रास्ते हरहानेसे एक कासिद दौडा हुआ आया और उसने बैरामखांको बादशाहके मरनेकी खबर दी। बैरामखां आगे जाना मुनासिब न समझ कर शाहजादेको कला-

(१) कलकत्तेके छपे हुए अकबरनामेके पहले दफतरको पृष्ठ १६३में तारीख नहीं लिखी है परन्तु पञ्चाङ्गसे ११ होती है वही हमने ऊपर लिख दी है।

(२) हुमायूं बादशाह बडे ज्योतिषी थे वह सारे काम मूहूर्त्तसे करते थे। उन्होंने बहुतसी बातें ग्रहोंके अनुसार अपने राज्य और दरबारमें चलायी थी। जिनका पूरा विवरण हुमायूंनामेसे लिखा है और कुछ अकबरनामेमें भी है। उन्होंने कई काम शुक्रके उदय होने पर रख छोडे थे। इसी लिये उसके देखनेको छतपर चढे थे।

(३) यह एक मुसलमानी मतकी बात है कि जुमेकी एक नमाज पढनेके पीछे बादशाहके वास्ते दुआ मांगी जाती है। इसको खुतबा कहते हैं। नये बादशाहके नामका खुतबा सब मुसल-

नूरमें हो आये। और वहां उनको यह खबर सुनाई और रबीउल-सानी सन् ९६३ (फाल्गुन सुदी ४)को दरबार करके उन्हें तख़्त पर बैठाया।

अकबर बादशाहका समय।

अकबर बादशाहकी अवस्था उस समय केवल १२ वर्षकी थी। और बैरामखां पहलेसे राज्यके करता धरता थे। इसलिये वे ही सब काम बादशाहोंका करने लगे और बादशाहको कलानूरसे फिर सवालक पहाड़ोंकी तरफ चढ़ा ले गये। मगर बरसात आ जानेसे जालन्धरमें लौट आये।

इधर हेमू जो अबतक २२ लड़ाइयां जीत चुका था हुमायूं बादशाहका मरना सुनकर चुनारगढ़से दिल्लीको रवाना हुआ और १ जिलहज्ज कार्तिक सुदी ३ संवत् १६१३ मङ्गलवारको वहां पहुंचा। तरदीबेग वगैरह अमीर दूसरे दिन उससे लड़े और हारकर पंजाबको भागे। हेमूने दिल्लीमें अमल कर लिया।

८ जिलहज कार्तिक सुदी १० को जालन्धरमें यह खबर बादशाहके पास पहुंची तो वे १८ शुक्रवार मगसर बदी ५ को सहरन्दमें आये। वहां तरदीबेग भी आ गया था। बैरामखांने उसको डेरे पर बुलाकर दगासे मरवा डाला क्योंकि वह भी उसकी बराबरीका था आपसमें ईर्षा थी।

बादशाह उस वक्त सहरन्दके जङ्गलमें शिकार खेल रहे थे। वहीं यह बात उन्होंने सुनी। बुरी तो बहुत लगी मगर अख्तियार (१) न होनेसे चुप हो रहे। शामको जब दौलतखानेमें आये तो बैरामखांने मौलाना पीर मुहम्मद (२) शिरवानीको भेजकर अरज़ कराई कि तरदी बेग लड़ाईमें जान बूझकर कपटसे भाग

मानोंको हाजिरीमें पढ़ा जाता है। मानो यह उसके राज्याभिषेकका पहला विधान है।

(१) कुल बातें बैरामखांके अख्तियारमें थीं।

(२) यह खानखानाका मन्त्री था।

आया था और उसकी बदअहदीको आदिसे अन्त तक सब लोग जानते हैं। मगर ऐसे वक्तोंमें जानानाओंकी की जाती तो बड़े बड़े काम की कसरत किया चाहते हैं नहीं तो रहते थे, इसलिये मैंने बादशाहकी खैरख्वाहीसे यह काम बिना पूछे किया है। इसने बहुत गुस्ताखियां कीं और नहीं पूछनेका यह कारण था कि हजरत आ-मान्, दयासिन्धु और क्षमानिधान हैं, उनके मारनेसे राजी नहीं होते, सजा कर देने पर इस कामके करनेमें इससे जियादा देरी होती और इस मामलेमें सुस्ती और तनज्जुलमें बहुत खलल और फसाद पड़ता। इसलिये माफी दी जावे और यह बात मंजूर कर ली जावे जिससे सब मक्कार कपटी लोगोंको डर हो जावे।

बादशाहने मौलानाके ऊपर मेहरबानी करके खानखानाका उजर मान लिया और उसको तसल्ली देकर हेमूके फसाद मिटा-नेका विचार किया।

फिर बादशाहने सरायकरोंदेमें(१) डेरा करके १००० सवार अली कुली खां शैबानीको अपसरोंमें आगे रवाने किये। बैरामखांने भी अपने नौकरोंमेंसे वली बेगके बेटे हुसैनकुलीबेग, शाह कुली महरम, और मुहम्मद अमीन दीवाना, सैयद महमूद बारहे और औजा-न बहादुर वगैरह खास किये हुए बहादुरोंको उनके साथ किया।

इन दिनों हिन्दुस्थानमें बड़ा भारी अकाल पड रहा था। दि-ल्लीमें तो यह हाल था कि रुपया मिल जाता था, मगर अनाज नहीं मिलता था। आदमी आदमीको खाने लगा था। कई लोग मिलकर अकेले दुकेले आदमीको ले भागते और मार कर खा जाते थे, उसपर यह आफत लड़ाईकी थी।

हेमूने बादशाही लश्करका आना सुनकर अपना भारी तोप-खाना मुबारकखां और बहादुरखांके(२) साथ पानीपतको भेज दिया

(१) यह स्थान सरहन्द और करनालके बीचमें है।

(२) ये दोनों पठान हेमूके बड़े अमीरोंमेंसे थे।

जो दिल्लीसे ३० कोस है, मगर अलीकुलीखां वगैरह व दगाही अफसरोंने पनीपतसे आगे बढ़कर वह तोपखाना उनसे छीन लिया।

हेमूं इस खबरके सुनतेही दिल्लीसे चढ़ा। उसके साथ ५०० जंगी हाथी और ३०००० लड़ाके पठान और राजपूत सवार थे जो बहुतसी लड़ाइयोंमें जीत पा चुके थे। हाथी भी हथियारोंसे सजे हुए थे। इन सवारों और हाथियोंकी ३ फौजें थीं। बीचकी फौजमें तो हेमू आप था। दहिने हाथकी फौजमें शादीखां काकड़ और और बायें हाथकी फौजमें हेमूका भानजा रमिया(१) था जो बड़ा बहादुर और वीर था।

२ मुहर्रम सन् ९६४ मगसर सुदी ३को हेमू पानीपत पहुंचा। अली कुलीखां वगैरह बादशाहके पास खबर भेजकर उससे लड़नेको तैयार हुए। हेमू बादशाहको दूर देखकर इन लोगों पर टूट पड़ा कि जलदीसे हराकर आगे बढ़े।

बादशाही फौजकी दाहिनी और बायी अनी तो हेमूसे शिकस्त खाकर भाग निकली जिसके अफसर सिकन्दरखां और अबुलाखा थे। मगर खानखानाके अमीर मुहम्मद कासिम नेशापुरी, हुसेन कुली, शाह कुली महरम और लालखां बदखशी जो बीचकी फौजमें अली कुलीखांके पास थे घोड़ोंसे उतरे और तलवारें निकालकर पैदलही दुशमनोंपर दौड़ पड़े। हेमू हवाई नामक हाथी पर सवार था। कहींसे एक तीर आकर उसकी आंखमें लगा और सिरसे पार निकल गया। यह देखकर उसकी फौज भागने लगी। उस वक्त शाह कुलीखां महरम कई आदमियोंके साथ हेमूके हाथीके पास आ निकला और हाथी लेनेके वास्ते महावतको मारने लगा। उसने जान बचानेको अपने मालिकका पता बता दिया। शाहकुली खुश होकर उसी दम उस हाथीको अलग ले गया।

यह फतह बादशाहके भाग्यबलसे सहजमें हो गयी। डेढ़ हजार

(१) किसी किसी प्रतिमें इसको रसिया भी लिखा है।

हाथी लूटमें आये। धन मालकी कुछ गिनती नहीं थी। ५००० आद-मी खेत पड़े और बहुतसे भागते हुए भी मारे गये।

बादशाह उसी दिन करनालसे चलकर पानीपतसे ५ कोस पर ठहरेही थे कि वहां हेमूके आने और लड़ाई शुरू हो जानेकी खबर पहुंची। उसी वक्त 'लशकर' सजाकर वे चल दिये। बैराम खां आगे होकर फौजोंकी देख भाल करते और बहादुरोंका दिल बढ़ाते जाते थे। जब पानीपतके पास पहुंचे तब फतहकी खबरें आने लगीं और शाह कुली महरम हेमूको पकड़ कर हुजूरमें लाया।

बादशाहने हेमूसे बहुतसा जवाब पूछा। मगर वह तो कुछ नहीं बोला। तब बैरामखांने अर्ज की कि हजरत इस फसादीको(१) अपने हाथसे मारकर गजाका(२) 'सवाब' (काफरोंके मारने-पुण्य(३) हासिल करें।"

बादशाह छोटी उमरमें थे, तोभी बड़ी समझदारीसे कहने लगे कि हमारी हिम्मत एक बन्धे हुए कैदीको मारनेकी रुखसत नहीं देती और खुदाकी दरगाहमें भी ऐसे कामोंका कुछ सवाब नहीं मिलता होगा। मैं तो इसको उसी दिन टुकड़े टुकड़े कर चुका हूं कि जिस दिन बड़े हजरतके किताबखानेमें एक ऐसे आदमीकी सब अङ्ग अलग अलग करके तसवीर बनायी थी। बड़े

(१) दूसरे तवारीख लिखने वालोंने फसादीकी जगह काफिर लिखा है, मगर हिन्दूके वास्ते काफिर शब्द अकबरनामेमें कहीं नहीं आया है। यह सिहरवानी मुसलमान ग्रन्थकारोंके खिलाफ न जाने कैसे शेख अबुलफजलसे बन आयी है। बादशाहकी मरजीसे या अपनी भलमनसीसे।

(२) काफरोंसे लड़ाई लड़नेको मुसलमान गजा कहते हैं।

(३) मुसलमानी मतमें काफरोंके मारने या उनके हाथसे मारे जानेका बहुत पुण्य लिखा है। जो मुसलमान न हो उसको मुसलमान लोग काफर कहते हैं।

हजरतके पास रहने वालोंमेंसे एक शख्सके पूछने पर मेरी जबानसे यह भी निकल गया था कि यह तसवीर(१) हेमूकी है।

निदान बादशाहकी राजी न होने पर बैरामखां खानखाना नेही वह फरजो सवाब कमानेके लिये हेमूको तलवारसे मार डाला। उसका सिर काबुलको और धड़ दिल्लीको भेजकर लोगोंको डरानेके लिये सूलीपर चढ़ाया गया।

अगर बादशाह खुलकर काम करते होते या कोई होसिले वाला अमीर उस दरगाहमें होता और हेमूको कैद रखकर बादशाहकी बन्दगीमें लगाता तो बेशक वह बहुत अच्छा नौकर होता। हिम्मत वाला तो था ही और फिर जब उसे बादशाहकी तालीम पाता तो कौन बड़े काम होते जो उससे बन नहीं पड़ते।

हेमू बड़ा भाग्य शाली था २२लड़ाइयां जीत चुका था। उसके इतने अधिक सिपाही थे जितने और किसीके नहीं थे,ऐसा बड़ा तोपखाना था, कि जिसके बराबर रूमके सिवाय और कहीं नहीं रहा होगा औरइतने अधिक हाथी थे जो उस वक्तके किसी बादशाहको भी मयस्सर नहीं थे। मौलाना शरफुद्दीन(२)यज़दीने बड़ी शेखीसे जफरनामेमें लिखा है कि अमीर तैमूरको हिन्दुस्थानकी बड़ी लड़ाईमें १२० हाथी हाथ लगे थे। इससे होशयार तवारीख जानने वाले जान सकते हैं कि उस जमानेमें जो हिन्दुस्थानका बादशाह था उससे यह हेमू कितना बढ़ा हुआ था कि जिसके १५०० हाथी बादशाही नौकरोंके हाथ आये थे, दूसरे धन मालका तो क्या

(१) हुमायूं बादशाह जब सिकन्दरसूर पर फतह पाकर दिल्लीमें आये थे तब उनके हुक्मसे अकबर बादशाह तसवीर खानेमें नाबार उस्ताद मीर सय्यद अली और ख्वाजा अबदुस्समदसे तसवीर बनाना सीखा करते थे। उन्हीं दिनोंमें उन्होंने यह तसवीर बनायी थी।

(२) यह ईरानके शहर यज़्दका रहने वाला था। इसने अमीर तैमूरकी तवारीख लिखी है जिसका नाम जफरनामा है।

अख़ार हो।

बादशाहने इस फतहकी ख़ुशीमें अलीकुलीख़ांको ख़ानजमांका, सिकन्दरखांको ख़ान आलमका, अबुलकासिमको इब्राहीमका, अब्दुल्लाखांको शुजाअतख़ांका और मौलाना पीर मुहम्मदको नासिरुल्मुल्कका ख़िताब दिया।

उस वक्त शेरखांका गुलाम हाजीख़ां अलवरमें था और हेमूकी औरत(१) हेमूका बाप और उसका सब माल असबाब भी उसी सरकारमें (ज़िलेमें) था। बादशाह और ख़ानख़ानाने नासिरुलमुल्कको हाजीख़ा पर भेजा। हाजीख़ा पहलेही डरकर भाग गया था। इससे बादशाही फौज अलवर और तमाम मेवातमें अमल करने देवती माचेडीको(२) गयी जहां हेमूका घर था।

यह मज़बूत जगह बहुत बडी लडाईके पीछे हाथ आयी। हेमूका बाप पकडा जाकर नासिरुलमुल्कके पास लाया गया। उससे मुसलमान होनेको कहा गया तो उस बुड्ढे ने जवाब दिया कि मैं ८० वर्षसे इस धर्ममें हूं और अपने खुदाको पूजता हूं। अब कैसे अपना धर्म छोड दूं और सिर्फ जानके डरसे बिना समझे तुम्हारे मतमें आ जाऊं। मौलाना पीर मुहम्मदने उसको इस बातका जवाब तलवारकी ज़बानसे दिया अर्थात् उसको मार डाला। आगे बहुतसी लूट और ५० हाथी लेकर बादशाहके पास आया।

बादशाह अदेली वग़ैरा पठानोंके ऊपर पूर्वको जाना चाहते थे कि सिकन्दर सूरके लाहौर पर आनेकी ख़बर सुनकर ४ सफ़र सोमवार पौष सुदी ५को दिल्लीसे पञ्जाबकी तरफ़ रवाने हुए।

---

(१) यह रानी कहलाती थी। लडाईमें साथ थी। फिर अपने घर आ गयी। मुन्तख़िबउत्तवारीख़में लिखा है कि हेमूकी रानी ख़जानेके हाथी लेकर बीजवाडेके पहाडमें चली गयी। वहां वर्षों तक मुसाफ़िरोंको रास्तेमें मोहरें और सोनेकी ईंटें मिला करती थीं। बीजवाडा अलवरके राज्यमें है।

(२) देवती माचेडी भी अलवरके राज्यमें दो गांव हैं।

रास्तेमें लाहौरसे खबर आयी कि दो महीनेका छठा और सफरकी १४ वीं गुरुवार माघ वदी १ (१) संवत १६१२को खानखानाके घरमें जमालखां(२) मेवातीकी बेटीसे लड़का हुआ है। बादशाहने उसका नाम अब्दुर्रहीम रखा और इस खुशीकी खबरसे अपनी फतहका शकुन लिया। बैरामखांने बड़ी मजलिस की और ज्योतिषियोंने जन्मपत्रीका शुभ फल लिखकर भेजा।

हुमायूं बादशाह दिल्लीमें आनेके पीछे जमींदारोंको तसल्लीके लिये उनकी लड़कियोंकी शादी अपने अमीरोंसे करते(३) थे। इसन-

(१) परन्तु अबदुल रहीमखां खानखानाकी जन्मपत्रीमें जो आगे लिखी जावेगी उनकी जन्म तिथि मगसर सुदी १४ संवत १६१३ सोमवार है। न जाने क्यों दोनोंमें २० दिनका अन्तर है। दोनों तिथियोंके साथ दिन भी हैं और पचाङ्गसे दोनोंही सही हैं। पर जन्म तो दो बेर नहीं हो सकता। इसलिये कौन तिथि सही है और कौन सही नहीं है इसकी व्यवस्था हम आगे करेंगे।

(२) जमालखां, हसनखां मेवातीके भाई अलावलखांका बेटा था। हसनखांका राज्य कई पीढ़ियोंसे अलवरमें था। वह १०००० सवारोंसे महाराना सांगाजीके साथ होकर बाबर बादशाहसे लड़ा था और उस लड़ाईमें काम आया था। ये लोग असलमें यादव राजपूत थे और मुसलमान होनेके पीछे खानजादे कहलाने लगे थे। अब भी बहुत लोग इस घरानेके अलवर राज्यमें हैं।

(३) मआसिरुलउमरामें लिखा है कि जब हुमायूं बादशाह ईरानमें गये थे तब वहांके शाह तहमास्प सफवीने उनसे कहा था कि आपने हिन्दुस्थानके जमींदारोंसे रिश्तेदारी नहीं की और अजनबीसे बने रहे हैं जिससे पैर नहीं जमे। अब जो फिर वहांकी बादशाही तुम्हारे हाथ आ जावे तो दो काम जरूर करना, एक तो पठानोंको जहांतक बने हुकूमतसे अलग करके व्योपारमें लगाना और दूसरे वहांके राजाओं और जमींदारोंसे रिश्तेदारी करना कि जिससे तुम्हारा राज्य बना रहे।

खां मेवाती हिन्दुस्थानके बडे जागीरदारोंमेंसे था। उसके चचेरे भाई जमालखांकी २ लडकियां थीं। बडीसे तो बादशाहने निकाह (विवाह) किया था और छोटीसे बैरामखांका करा दिया था। बैरामखां जब बादशाहके साथ ईरानसे लडनेको आये थे तब बेगमको लाहोरमें छोड आये थे।

बादशाह जब जालन्धरमें पहुंचे तब सिकन्दर फिर सवालक पहाडमें चला गया। बादशाह भी उधर कूच करके दामने धमरीमें(१) पहुंचे और वहांसे भी आगे बढकर सिकन्दरको मानकोट किलेमें(२) जा घेरा।

कन्धारमें खानखानाकी तरफसे शाह मुहम्मद कंधारी रहता था और जमीन दावर बहादुरखांको सौंपा हुआ था। उसने कंधारके लालचसे शाह मुहम्मद पर चढाई की। शाह मुहम्मदने किला सजाया और हिन्दुस्थानको दूर देखकर शाह ईरानको अर्जी लिखी कि हुमायूं बादशाहने यह बात ठहरायी थी कि जब हिन्दुस्थान फतह हो जायगा तब कन्धार शाह ईरानके नौकरोंको सौंप दिया जायगा। अब आप कुछ फौज भेजें तो वह इस नमकहरामको भी सजा दे और कन्धार भी मुझसे ले ले। शाहने ५ हजार तुर्कमान सीस्तां, फराह, और गर्मसीरके जागीरदारोंमेंसे भेजे। उन्होंने अचानक बहादुरखां पर हमला किया। बडी लडाई हुई और बहादुरखां जमीन दावरको छोड भागा, मगर शाह मुहम्मदने तुर्कमानोंको कन्धार सौंपा और जियाफत दे दिलाकर बातोंही बातोंमें सूखा टाला दिया।

बहादुरखां इस तरह जमीन दावर खोकर बादशाहके पास

(१) धमरीका नाम पीछेसे जहांगीर बादशाहने नूरपुर रख दिया था और यह जालन्धरके जिलेमें कांगडेके पास है। जहांका राजा अब गगनसिंह है।

(२) मानकोटका किला सवालक पहाडमें सलीमशाहने बनाया था जब कि गक्खडोंके ऊपर चढकर वह गया था।

आया और बादशाहने मुलतानको उसको जागीरमें देकर मानकोटके ऐन मोरचे पर रख दिया।

इसी सन ९६४में बैरामखानने बादशाहकी शादी मिरजा अबदुल्ल' मुगलकी बेटीसे की। पहले तो वे इस बातमें राजी नहीं थे, क्योंकि मिरजा अबदुल्लाकी बहन मिरजाकामराके घरमें थी और इसलिये उसको कामराके तरफदारोंमेंसे समझते थे। मगर फिर नासिर-उलमुल्कके समझाने पर आगे होकर बडी धूमधामसे शादी करादी।

बङ्गालका हाकिम मुहम्मदखां पहले अदलीके हाथसे मारा गया था। अब उसके बेटे जलालउद्दीनने अदली पर चढाई की। अदली ४ वर्षसे कुछ ऊपर हुकूमत करनेके पीछे उसके मुकाबिलेमें मारा गया। सिकन्दर सूरने जब यह बात सुनी तब उधर जानेके वास्ते बहुतसा रुपया और माल खानखानाके वकील नासिर-उलमुल्कसे भेजा। खानखानाने बादशाहसे उसकी सिफारिश की। बादशाहने खानखानाकी खातिरसे उसके कसूर माफ करके विहार जानेका रास्ता दे दिया। तब वह २७ रमजान शनिवार सन ९६४ सावन बदी १४ सम्बत१६१४को मानकोटकी कुंजिया और हाथियोंकी भेट बादशाहके पास भेजकर विहारको चला गया और बादशाह ६ महीने पीछे २ सव्वाल सावन सुदी ४को सवालक पहाडसे लाहोर रवाने हुए।

खानखाना मानकोटके घेरेमें बीमार हो गये थे और कुछ फोडे भी निकलआये थे जिससे घोडे पर सवार नहीं हो सकते थे और बादशाह उन दिनोंमें हाथी ज्यादा लडाया करते थे। एक दिन दो बादशाही हाथी लडते लडते खानखानाके डेरे तक चले आये। उनके पीछे तमाशाई लोगोंकी भीड और चीख पुकार होती आती थी। उस पर खानखानाके दिलमें यह वहम खडा हो गया कि यह बादशाहके हुक्मसे हुआ है और कुछ बदमाशोंने इसमें हाथी मिला दी। तब खानखानाने अपने भेद जानने वाले एक आदमीको

बादशाहकी धाय, माहम अनगाके पास भेजकर कहलाया कि मैं अपना कुछ कसूर तो नहीं जानता हूं और खैरख्वाहोंके खिलाफ कोई काम भी नहीं करता हूं। फिर कैसे चुगलखोरोंने मुझे गुनहगार करके बादशाहको इतनी बडी नाराज़गी दिला दी है कि सख्त हथी मेरी चादर (कनात) पर छोडे जाते हैं। माहम अनगाने तसल्लीकी बातें कहलाकर खानखानाको दिलजमई कर दी।

जब बादशाह ११ सव्वाल सावन सुदी १२को लाहोरमें पहुंचे तब खानखाना शमसुद्दीन मुहम्मदखां अतकासे(१) (जीजी(२) अनगाके खावंद) गिला करके कहने लगे कि मैं कभी कभी बादशाहको तुम्हारी चुगली और चाटीसे खिचा हुआ पाता हूं। मैंने क्या किया है और तुम क्यों मेरे खूनके प्यासे होकर बादशाहका मिजाज मुझसे फिराते हो और मेरे प्राण लेना चाहते हो।

अतका इसबातसे डरकर कई आदमियों और अपने भाई बेटोंको खानखानाके पास लेगया और कौल कसम करके उसकी तसल्ली कर आया।

फिर बैरामखांने बादशाही हाथी अपने भरोसेके अमीरोंको बांट दिये और बादशाहके कुछ खासा हाथी भी इसी तरह आदमियोंको सौंपनेके बहानेसे अलग कर डाले। बादशाह चुपचाप देखते रहे।

सहाका(३) जमींदार तख्तमल हुमायूं बादशाहके मरने पर सिकन्दर सूरसे जा मिला था। और जब मानकोटमें सिकन्दरका काम बिगडता देखा तब जमींदारोंकेसे हीले बहाने करके बादशाहके लशकरमें आ गया था। बैरामखांने उसको मारकर उसके भाई तख्तमलको जो खैरख्वाहोंमें हाजिर था उसकी जगह बैठा

(१) (धाज) धाय पति।

(२) इसने भी अकबर बादशाहको दूध पिलाया था।

(३) धमेरीके पासका एक परगना कांगडेकी तलहटीमें।

दिया। यह बात भी बादशाहके दिलमें बुरी लगी, क्योंकि जब यह खुद आ गया था और चाहे कैसेही आया हो तब इस सजाके लायक नहीं था।

बादशाह ४ महीने १४ दिन लाहोरमें रहकर १५ सफर मङ्गलवार सन् ९६५पौष वदी २ को दिल्लीकी तरफ रवाने हुए, जब जालन्धरमें पहुंचे तब खानखानाकी शादी सलीमा(१) सुलतानासे हुई। हुमायूं बादशाहने यह अपनी भानजी बैरामखांको देनी करके हिन्दुस्थान फतह होनेके पीछे निकाह कर देनेका इकरार किया था। सो अब बैरामखाने बादशाहसे अर्ज करायी। बेगमोंने भी सिफारिश की। आखिर माहम अगाकी कोशिशसे विवाह और गौना एक सप्ताहमें हो गया।

सलीमा सुलताना बेगमके बापका नाम मिरजा नूरुद्दीन था। उसका बाप अलाउद्दीन और दादा ख्वाजाहसन तूरान देशके पूज्य पुरुषोंमेंसे था। इसको तूरानके बादशाह सुलतान महमूद(२) मिरजाकी बेटी दी गयी थी जो बैरामखाके परदादा अली शकरबेगकी लडकी यशा बेगमसे हुई थी। और इसी सम्बन्धसे बाबर बादशाहने भी अपनी बेटी गुलबर्ग बेगमकी शादी ख्वाजा हसनके पोते नूरुद्दीनसे की थी। सलीमा सुलताना गुलबर्ग बेगमकी बेटी थी। वह पुरानी रिश्तेदारी जो यशा बेगमके ब्याहे जानेसे बैरामखाके और बादशाहके बुजर्गोंमें हुई थी वह अब यहां सलीमा सुलतानके साथ विवाह होनेमें खानखानाके काम आयी।

बादशाह लुधियानेसे हिसारमें आये। खानखानाभी साथ थे। यहां नासिरउल्मुल्क और शेखगदाईमें कुछ झगडा हो गया। बैराम-

(१) सलीमा सुलताना बहुत सुन्दर सुघड और लिखी पढी थी। काव्य रचना भी खूब करती थी। बैरामखांके पीछे बादशाहने उससे निकाह कर लिया।

(२) बाबर बादशाहका काका था।

खाने शेखकी तरफदारी की जिससे नासिरउलमुल्क बुरा मान कर कई दिनों तक दरबारमें नहीं आया। कुछ दिनों पीछे कई भले आदमियोंने बीचमें पडकर मेल करा दिया(१)।

५ उरदी बहिश्त २५ जमादिउस्सानी शुक्रवार सन ९६५ वैशाख वदी १२ संवत १६१५को बादशाह दिल्लीमें दाखिल हुए।

नासिरउलमुल्क कुल मुखतार था। मुल्क और मालके सब काम उसके ऊपर छोडे हुए थे। वह खैरख्वाहीसे काम करनेमें वैरामखांका भी मुलाहिजा नहीं रखता था। वैरामखां उससे दिलमें कुढते तो बहुत थे; लेकिन मौका देखते थे।

बुर्जअली(२) और मुसाहिबवेग(३) दो बडे बदमाश थे

(१) ये दोनों वैरामखांके मुसाहिब थे। नासिरउलमुल्कको नाराज करना मानो वैरामखांकी बुद्धि विपरीत होनेका एक चिन्ह था, क्योंकि उनकी तरफसे सारा काम बादशाहीका वही करता था और अब वह बादशाहके पक्षमें हो गया। (मुन्तखिबउल तवारीख)।

(२) बुर्जअली अवधके हाकिम अलीकुलीखांका नोकर था। नासिरउल मुल्क अलीकुलीखां पर फौज भेजा चाहता था, क्योंकि उसका चाल चलन ठीक नहीं था, वैरामखां अलीकुलीखांको खा-तिरसे टालते थे। इसीलिये अलीकुलीखाने बुर्जअलीको वैरामखांके पास भेजा था। वह एक दिन नासिरउलमुल्कको बुरा भला कहने लगा जिसपर दिल्लीके किलेपरसे गिराकर मार दिया गया।

(३) मुसाहिबवेग पहले तो हुमायूं बादशाहकी सेवामें रहता था। फिर अलीकुलीखांके पास रहने लगा। इस वक्त दिल्लीमें आ गया था। इसका भी चलन ठीक नहीं था, इसलिये वैरामखाने कैद करके मक्केको भेज दिया, मगर नासिरउलमुल्कने खानखानासे २ चिठियां लिखाकर उलवायी एकमें मारने और दूसरेमें छोडनेका हुक्म था। मारनेकी चिट्ठी निकली और नासिरउलमुल्कके आदमियोंने जाकर उसको दिल्लीसे कुछ दूर रास्तेमें मार डाला।

जिनको नासिरउलमुल्कने बैरामखांको मरजीके खिलाफ मरवा डाला था।

इधर बैरामखां और मुनअम(१)खांने मिलकर बगावतके अदेसे जलालुद्दीन महमूदको(२) जो इन लोगोंकी खुशामद नहीं करता था कतल करा दिया। इससे भी बादशाहका दिल बहुत जला, मगर गुस्से को पी गये।

१७ शाबान सन ३ इलाही १७ मुहर्रम सन ८६६ इतवार मगसर बदी ४ संवत १६१५को बादशाह दिल्लीसे आगरेमें आये। यहां शाह मुहम्मद जो बैरामखांकी तरफसे कन्धारमें हाकिम था कन्धारका किला शाह ईरानको सौंपकर बादशाहके पास हाजिर हुआ।

यह पहले लिखा जा चुका है कि शाह मुहम्मदने इकरार करके भी कन्धार शाह ईरानको नही सौंपा था। इसलिये शाहने अपने भतीजे सुलतान हुसेन मिरजाके(३) साथ कन्धार पर फौज भेजी। वह शाह मुहम्मदसे हारकर भाग गयी। तब दूसरी फौज आयी। शाह मुहम्मदने बादशाहको अर्जी भेजी। बादशाहने उसको हुक्म लिखा कि बडे हजरत फरमाया करते थे कि जब हिन्दुस्थान फतह हो जायगा तब कन्धार शाहको दे देंगे। यह अच्छी बात न हुई कि उसने उन लोगोंसे लडकर यहांतक बात

(१) मुनअमखां काबुलका हाकिम था।

(२) जलालुद्दीन महमूद गजनीनका हाकिम था। उससे मुनअमखां और बैरामखां दोनों अदावत रखते थे। इस वास्ते वह अपने बचावके लिये हिन्दुस्थानको आता था। मगर मुनअम खांने पकडवा मंगाया। इधरसे बैरामखांने भी उसके मारनेका फरमान भेज दिया। इस तरह वह अपने भाई मसऊद समेत काबुलमें मारा गया।

(३) सुलतान हुसेन मिरजा शाह तुहमास्पके भाई बहराम मिरजाका बेटा था।

बढ़ायी; मगर मुनासिब है कि वह जिला उनकी नौकरोंको सौंप कर और माफी मांग कर दरगाहमें आ जावे।

इस हुक्मके पहुंचते ही शाह मुहम्मद सुलतान हुसैन सिरजाको जिला सौंपकर चला आया।

कुछ दिनों पीछे नासिरुलमुल्क बीमार हुआ और खान-खाना उसके देखनेको गये तो दरबानने बेअदबीसे कहा कि खबर करता हूं। इसपर बैरामखां बहुत झुंझलाये, नासिरुलमुल्क खबर पाकर दौड़ा आया और बहुत मिन्नतें करके खानखानाको अन्दर ले गया तो भी उसके साथ थोड़े से ही आदमी जाने पाये जिससे वे नाक भौं चढ़ाये हुए बाहर आये, फिर शेख गदाई (१) वगैरहने और उनको भड़काया तो उन्होंने दो तीन दिन पीछे ख्वाजा अमीनुद्दीन वगैरह अपने नौकरोंको नासिरुलमुल्कके पास भेजकर कहलाया कि तू जब कन्धारमें हमारे पास आया था तो एक गरीब विद्यार्थी था, हमने तुझको बढ़ाकर बड़े दरजेपर पहुंचाया। मुल्लासे अमीर बनाया, मगर तू थोड़े पेटका आदमी था, जल्दीसे अफर गया और इसे तुझसे ऐसे ऐसे फसाद होनेका डर है कि जिनका इलाज हम मुशकिलसे कर सकेंगे। इसलिये यह बेहतर है कि तू कुछ दिनोंके लिये अपने कदमोंमें पांव समेटकर बैठ जा और नक्कारा निशान वगैरः अपनी असामी और बसकके सामान सौंप दे तथा अपना मिजाज दुरुस्त कर ले जिसमें तेरा और दुनियाका फायदा है। फिर जैसा हम तेरे वास्ते अच्छा समझेंगे करेंगे।

१। शेख गदाई शेख जमालीका बेटा दिल्लीका रहनेवाला था। जब बैरामखां गुजरातमें गये थे तो यह वहां था और इसने बैरामखांके साथ अच्छा सलूक किया था जिसके पलटेमें बैरामखांने इसको सदर (दानाध्यक्ष) का ओहदा सन् ९६१ संवत १६१२ में दिया था।

नासिरुलमुल्क खुशीसे सरदारीका सब सामान उनको सौंपकर घरमें बैठ रहा तो भी खानखानाने चुगलखोरोंके कहनेसे कुछ आदमियोंके साथ उसको बयानेके (१) किलेमें भेज दिया जहांसे वह मक्के जानेकी इजाजत लेकर गुजरातको गया। जब राधनपुरमें(२) पहुंचा तो फतह खां बलोचने उसको बड़े आदर सत्कारसे कुछ दिनोंके लिये अपने पास रख लिया।

इतनेमें मिरजा शर्फुद्दीन (३) हुसैन और अदहमखांकी चिट्ठियां नासिरुलमुल्कको पहुंचीं जिनमें लिखा था कि जहां पहुंचा हो वहीं ठहर जावे और देखता रहे कि क्या होता है।

नासिरुलमुल्क, राधनपुरसे लौटकर रणथम्भोरके (४) पास आयनके घाटेमें आ रहा।

१। बयाना अब भरतपुरके राज्यमें है।

२। राधनपुर गुजरातमें है। उस वक्त तो गुजरातके बादशाहका यहां अमल था फिर संवत १६२८में अकबर बादशाहका हुआ। संवत १७७३में नवाब मुहम्मद शेरको जागीरमें मिला जबसे उसकी औलादके कबजेमें है और पालनपुरमें एजण्टीके नीचे है।

३। सन् ९६२ में जब बादशाह जालन्धरमें थे तब यह मिरजा शर्फुद्दीनहुसैन काशगरके बादशाह अबदुर्रशीदखांका खत लेकर आया था। इसकी मा तूरानके बादशाह सुलतान अबूसईदकी नवासी थी जिससे बादशाहने उसको बहुत खातिर और इज्जतसे अपने पास रख लिया था।

४। रणथम्भोर वही किला है जहां हम्मीर चौहान हुआ है जिसका हम्मीरहठ मशहूर है। उससे संवत् १३५८ में अलाउद्दीन खिलजीने लिया। फिर संवत् १५७२ तक मालवेके बादशाहोंके पास रहा। सुलतान महमूद मालवीसे चित्तौड़के राणा सांगाने संवत् १५७२में छीना। उनकी तरफसे बूंदीके राव

बैरामखांने यह सुनकर शाहकुलीखां महरम, और खुर्रमखांको हाजिमहम्मदखाके पकडनेके लिये भेजा। जब ये वहां पहुंचे तो वह दिन भर तो इनसे लडा और रातको थोडे आदमियों सहित निकल गया।

इस तरह बैरामखांने बेपरवाई और चुगल खोरोंके कहनेसे अपने ऐसे कामके आदमीको दूर करके अपने पांव पर आप कुल्हाडा मारा।

बादशाह बैरामखांके इस कामका बदला भी खुदाके ऊपर छोडकर कुछ नहीं बोले क्योंकि वे सब कारखाना सलतनतका बैरामखांको सौंपकर तमाशा देखते थे।

बैरामखांने अब हाजीमुहम्मदखां सीसतानीको अपना वकील बनाया, मगर असलमें वकील शेख गदाई था; क्योंकि बैरामखां कोई काम बगैर उसकी सलाहसे नहीं करते थे।

बादशाहके दिलमें खानखानाकी ये जबरदस्तियां खटकती तो बहुत थीं, लेकिन वे मुलाहिजेके मारे कुछ नहीं बोलते थे। क्योंकि हुमायूं बादशाह उनको अतालीक कहकर अकसर खान बाबाके नामसे पुकारते थे और वही लिहाज बादशाहको भी था। वे शेर शिकारमें लगे हुए चुपचाप सब बातोंको देखा करते थे। उधर बलीबेग, जुलकदर और शेखगदाई वगैरह बैरमखांको बहकाते थे और इधर माहम अङ्गा अदहमखां (१) और मिरजा शर्फुद्दीन, बादशाहको बैरमखां और उनके खुशामदी मुसाहिबोंको सजा देनेकी सलाह देते थे।

सुरजन हाडाके पास था। सुरजनसे अकबर बादशाहने संवत् १६२६ में लिया। सं० १८१५ में दिल्लीकी बादशाही कमजोर होने पर किलेदारोंने जयपुरके महाराजा माधोसिंहको सौंप दिया जबसे अबतक जयपुरवालोंके कबजेमें है।

१। माहम अङ्गाका बेटा।

आखिर जब बादशाहने इतनी क्षमा करते करते और खान बाबा कहते कहते भी खानखानाकी रस्ते पर आते न देखा तो शिकारके बहानेसे बयानेमें जाकर उनके दबावसे निकल जानेकी सलाह की माहमअनगाने यह भेद छिपकर हाकिम शहाबउद्दीन खांको लिख भेजा।

बादशाह ८ फरवरदीन सन ४ तारीख २० जमादिउल अव्वल सोमवार सन् ९६६ (चैत बदी ७ संवत् १६१६) को शिकारके वास्ते कोलकी तरफ जानेका नाम लेकर यमुनासे उतरे और मिरजा कामराके बेटे मिरजा अबुल कासिमको (१) भी इस शिकारमें शामिल रखनेके लिये बुलवा लिया जो बैरामखांके पास रहता था। यह सावधानी इस मतलबसे की गयी थी कि उस आंखके अन्धे और गांठके पूरेके हाथमें यह लकड़ी भी न रहे।

सिकन्दरेमें पहुंचकर माहम अनगाने यह भेद अपने बेटे अदहमखांके ससुर (२) मुहम्मद बाकीसे कहा। मगर वह बैरामखांके डरसे साथ भी न हुआ और बैरामखांको इस हालकी खबर भी कर दी। बैरामखां ऐसी बातें पहले भी सुन चुके थे। इस लिये उन्होंने कुछ परवा न की।

बादशाह शिकार खेलते हुए कोलमें (३) पहुंचे वहांसे अपनी माको कुशल पूछनेके लिये जो उन दिनों कुछ बीमार थी

१। इस शाहजादेको बैरामखां हमेशा अपने पास रखते थे और बहुत लिहाज करते थे।

२। यह मिरजा हिन्दालका परवानची [दूत] था और इसकी बेटीसे बादशाहने पिछले साल ही अदहमखांकी शादी करा दी थी।

३। कोलको अब अलीगढ कहते हैं।

हो, दिल्लीको चल दिये। खुरजेमें (१) शहाबुद्दीन अहमदखां अपने सब भाई बन्दोंके साथ पेशवाईके लिये हाजिर था। बादशाह उस पर मेहरबान होकर १७ फरवरदीन २८ जमादि उस्सानी मङ्गलवार (चैत बदी ३०) को दिल्लीमें दाखिल हुए और सब जगह फरमान लिख भेजे कि बैरामखां उलटा चलने लगा है जिससे हम उसको अपनी नजरोंसे गिराकर दिल्लीमें चले आये हैं। जो अपना भला चाहता हो वह यहां हाजिर हो जावे।

उस वक्त शमशुद्दीनखां "अतका" दहीरेमें (२) और मुनअम खां काबुलमें था। इन दोनोंके नाम भी हाजिर होनेके हुक्म पहुंचे।

जब शमशुद्दीनखां आया तो बैरामखांका नक्कारा निशान और तुमन तोग उसको इनायत हुआ और पंजाबकी सूबेदारी भी दी गयी।

शहाबुद्दीनखांने दिल्लीका किला सजाया और बादशाहकी सल्तनतमें शामिल हुआ।

बैरामखांसे बादशाहका मिजाज बदल जानेकी खबर थोडे दिनोंमें सब जगह फैल गयी। चोर लोग बैरमखांको छोड छोड़ कर बादशाहके पास आने लगे। सबसे पहले कयाखां गग आया था जो बैरामखांके बडे अमीरोंमेंसे था।

जो आता था उसको साहम अंगा और शहाबुद्दीन अहमद खांकी सलाहसे जागीर मनसब और खिताब दिया जाता था।

बैरामखां पहले तो अपने जोर और दबावके घमण्डमें भूला कर इस बातको खेल ही समझते रहे। पर जब बादशाहके फरमानोंके पहुंचने पर अपने निज आदमियोंको भी पाससे खिसकते

१। दिल्ली और अलीगढ़के बीचका एक शहर।

२। पंजाबका एक शहर जो लाहोरके परे है।

हुए देखा तो आंखें खुलीं और मिरजा अवुलकासिमको ढूढा तो नहीं पाया। तब तो बहुत घबराये और तरसून मुहम्मदखां हाजी मुहम्मद खां और ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद [ख्वाजाजहां] को बादशाहकी खिदमतमें माफी मांगनेके लिये भेजा, मगर बादशाहने उनको भी समझाकर रख लिया और पीछे नहीं जाने दिया।

बैरामखांने यह सुन कर कभी तो यह विचार किया कि अभी बादशाहके पास बहुत भीड नहीं हुई है, जल्दीसे पहुंच कर बन्दोबस्त कर लूं और कभी इसको बेअदबी समझकर माफी मांगनेके वास्ते जाना मुनासिब समझा और आखिर इसी मनशासे जानेकी तय्यारी की; मगर बादशाहके सलाहकारों (मन्त्रियों) को उनका आना भी मंजूर नहीं था। कुछ लोगोंने कहा कि जब वह दिल्लीमें आवे तो हजरत लाहोरको चले जावें और जब लाहोरमें आवे तो काबुलको सिधारें। उससे न मिलें।

बहुतोंने कहा कि कहीं नहीं जाना चाहिये। अगर वह लडना चाहे तो यहीं रह कर उससे लडें। बादशाहने भी इसी बातको पसन्द करके लडनेके लिये वहीं पांव जमाये और तरसून मुहम्मद खां और हबीबुल्लाहको यह कह कर भेजा कि बैरामखांको किसी तरह न आने देना। हम अभी उसे नहीं देखेंगे।

बैरामखांने जब इस तरह दिल्ली जानेका रास्ता बन्द पाया और लडाईके विचारसे जाना उचित न देखा तो उनको बडा चिन्ता हुई कि अब क्या करना चाहिये। वलीबेग और शेख गदाई तो कहते थे कि अभी बादशाहके पास अधिक सेना नहीं है, जल्दीसे चल कर अपना काम कर लें परन्तु खानखाना इस कुकर्मको अपना धर्म्म नहीं समझकर कभी तो कहते थे कि मेरे बिना बादशाहका काम नहीं चलेगा, इसलिये नम्रतापूर्वक बादशाहको मना लेनेका उपाय करना चाहिये। कभी यह विचार करते थे कि अभी तो बहादुर खां गौर उसके लश्करसे जा मिलूं जो मालवे पर जा रहा है और मालवा फतह करके वहां रहजाऊं। फिर

जैसा अवसर देखूं वैसा करूं। कभी यह सोचते थे कि आगरा छोड़ कर संभलके [१] रास्तेसे अलीकुलीखांके पास होकर पठानोंके देशमें चला जाऊं और कुछ दिन वहां रह कर अपने हितका साधन करूं। कभी यह सूझती थी कि विरक्त होकर मक्के जानेका जो विचार किया करता था सो अब उसका समय आ गया है क्योंकि बादशाह अपना काम आप करने लगे हैं। इसलिये बादशाहसे हज करनेकी आज्ञा मांगू। इसमें यह भी आशा थी कि कदाचित् वे दयालुतासे अपने पास बुला लेंगे।

निदान यही विचार स्थिर करके बहादुरखांको (२) सीपरीसे वापस बुला लिया और बादशाहकी खिदमतमें रवाना कर दिया, इस तरहसे अपने आदमियोंके वहांसे भेजनेमें यह बात सोची थी कि जो मेरे हितू हों तो ऐसे लोगोंका बादशाही लशकरमें रहना अच्छा है और जो ये भी जाना चाहते हों तो इनको साथ रखनेमें फायदा नहीं, विदा कर देनेमें नेकनामी भी है।

फिर मक्के जानेका विचार प्रकट करके सिकन्दर पठानके बेटे और गाजीखां तवरको बादशाही मुल्कोंमें फसाद करनेके लिये भेजा और इसी मतलबकी पोशीदा लिखावटें भी इधर उधर रवाना करके अलवरको कूच किया कि जिससे वहांसे बालबच्चोंको लेकर पंजाबमें चले जावें।

बादशाहको जब यह हाल मालूम हुआ तो [ख्वाजा] खानखानाको लिखा कि तुम उन लोगोंके बहकानेसे कि जो इस काण्डके कारण हुए हैं परिणाम न सोचकर देशोंको विध्वंस करनेके वास्ते

१। रुहेलखण्डका एक पुराना शहर जो मुरादाबादके पास है और जिसका नाम शास्त्रमें शंभलग्राम लिखा है। कहते हैं कि कल्की अवतार इसी जगहमें होगा।

२। सीपरी ग्वालियरके पास मालवेके रास्तेमें है।

हुए देखा तो आखें खुलीं और मिरजा अबुलकासिमको ढूंढा तो नहीं पाया। तब तो बहुत घबराये और तरखून मुहम्मदखां हाजी मुहम्मद खां और ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद [ख्वाजाजहां] को बादशाहकी खिदमतमें माफी मांगनेके लिये भेजा, मगर बादशा-हने उनको भी समझाकर रख लिया और पीछे नही जाने दिया।

बैरामखाने यह सुन कर कभी तो यह विचार किया कि अभी बादशाहके पास बहुत भीड नहीं हुई है, जल्दीसे पहुंच कर बन्दोबस्त कर लूं और कभी इसको बेअदबी समझकर माफी मांगनेके वास्ते जाना मुनासिब समझा और आखिर इसी मनशाने जानेकी तय्यारी की ; मगर बादशाहके सलाहकारों (मन्त्रियों) को उनका आना भी मंजूर नही था। कुछ लोगोंने कहा कि अब वह दिल्लीमें आवे तो हजरत लाहोरको चले जावे और जब लाहोरमें आवे तो काबुलको सिधारे। उससे न मिले।

बहुतोंने कहा कि कहीं नहीं जाना चाहिये। अगर वह लडना चाहे तो यहीं रह कर उससे लडें। बादशाहने भी इसी बातको पसन्द करके लडनेके लिये वहीं पांव जमाये और तरखून मुहम्मद खां और हबीबुल्लाहको यह कह कर भेजा कि बैरामखांको किसी तरह न आने देना। हम अभी उसे नही देखेंगे।

बैरामखाने जब इस तरह दिल्ली जानेका रास्ता बन्द पाया और लडाईके विचारसे जाना उचित न देखा तो उनको बडी चिन्ता हुई कि अब क्या करना चाहिये। वलीबेग और शेख गदाई तो कहते थे कि अभी बादशाहके पास अधिक सेना नही है, जल्दीसे चल कर अपना काम कर ले परन्तु खानखाना इस कुकर्मको अपना धर्म नही समझकर कभी तो कहते थे कि मेरे बिना बाद-शाहोंका काम नहीं चलेगा, इसलिये नम्रतापूर्वक बादशाहको मना लेनेका उपाय करना चाहिये। कभी यह विचार करते थे कि अभी तो बहादुर खां और उसके लश्करसे जा मिलूं जो मालवे पर जा रहा है और मालवा फतह करके वहां रहजाऊं। फिर

जैसा अवसर देखूं वैसा करूं। कभी यह सोचते थे कि आगरा छोड़ कर सम्भलके [१] रास्तेसे अलीकुलीखांके पास होकर पठानोंके देशमें चला जाऊं और कुछ दिन वहां रह कर अपने हितका साधन करूं। कभी यह सूझती थी कि विरक्त होकर मक्के जानेका जो विचार किया करता था सो अब उसका समय आ गया है क्योंकि बादशाह अपना काम आप करने लगे हैं। इसलिये बादश इसे छल करनेकी आज्ञा मांगू। इसमें यह भी आशा थी कि कदाचित् वे दयालुतासे अपने पास बुला लेंगे।

निदान यही विचार स्थिर करके बहादुरखांको (२) सीपरीसे वापस बुला लिया और बादशाहकी खिदमतमें रवाना कर दिया, इस तरहसे अपने आदमियोंके वहांसे भेजनेमें यह बात सोची थी कि जो मेरे हितू हो तो ऐसे लोगोंका बादशाही लश्करमें रहना अच्छा है और जो ये भी जाना चाहते हो तो इनको साथ रखनेमें फायदा नहीं, विदा कर देनेमें नेकनामी भी है।

फिर मक्के जानेका विचार प्रकट करके शिकन्दर पठानके बेटे और गाजीखां तदरको बादशाही मुल्कोंमें फसाद करनेके लिये भेजा और इनी मतलबकी चोशोदा लिखावटें भी इधर उधर रवाना करके अलवरको कूच किया कि जिससे वहांसे बालबच्चोंको लेकर पंजाबमें चले जावें।

बादशाहको जब यह हाल मालूम हुआ तो [खानखानाको] लिखा कि तुम उन लोगोंके बहकानेसे कि जो इस काहके कारण हुए हैं परिणाम न सोचकर देशोंको विध्वंस करनेके वास्ते

१। रुहेलखण्डका एक पुराना शहर जो मुरादाबादके पास है और जिसका नाम शास्त्रमें शंभलग्राम लिखा है। कहते हैं कि कल्की अवतार इसी जगहमें होगा।

२। सीपरी ग्वालियरके पास मालवेके रास्तेमें है।

वाहर निकाले हो और तुमने सिकन्दरके बेटे और नातीयोंको आज्ञा दी है कि जाकर राज्यमें उपद्रव करें। मकदूमुलमुल्क खांको खत लिख कर उसके दीवान मुबारकके हाथमें भेजा है कि मैं लाहोरको आता हूं; किला किसी दूसरेको न देना। तातार खां पपमइयेको भी ऐसा ही स देशा भेजा है और आप अलवरको चले हो कि वहांसे लाहोरको कूच कर जाओ। हमको यह भरोसा है कि तुमने अपनी समझसे तो इनमेंसे कोई भी काम नहीं किया है। लोगोंने बहकाकर यहांतक बात बढ़ा दी है परन्तु तुम ही कहो कि क्या ४०(१) वर्षतक स्वामिभक्तिसे सेवा करने, प्रतिष्ठासे परमपदको पहुंचने, और जगत्में कीर्ति पानेके पीछे भी इस शेषावस्थामें स्वामिद्रोही बनोगे और अपने किये कराये की लज्जा नहीं करते। तुमने हमको इतने कष्ट दिये हैं तो भी हम तुम्हारा भला चाहते हैं और अभी तुम्हारा मिलना चाहते हैं। इस लिये जो तुमको कोई प्रदेश भी दे जहां कि तुम चले जाओ तो फिर स्वार्थी लोग बातें बना कर हमको तुमसे अप्रसन्न करेंगे। इससे तो यही ठीक है कि जैसा तुमने अर्जीमें लिखा है हज (२) करनेको चले जाओ और जो सामग्री भेटकी तुमने सहरन्द और लाहोरमें प्रस्तुत रखी है उसे लदवाकर वहांसे मगवा लो।

१। इससे जाना जाता है कि खानखाना संवत १५४६से बादशाही नौकर थे और यही एक आधार उनकी अवस्था जानने का सारे अकबरनामेमें है। और इसपरसे कह सकते हैं कि उस समय वे ५६ बरसके होंगे, क्योंकि मुआसिरउलउमराके कर्त्ताने उनका हुमायूं बादशाहके पास आना १६ बरसकी उमरमें लिखा है यदि यह कलपना सही है तो उनका जन्म भी संवत १५६० के लगभग होना संभव है। हुमायूं बादशाह संवत १५६५ में जन्मे थे।

२। मक्केकी यात्राको मुसलमान हज कहते हैं।

कि जब हमारी हालतें होकर आवेगी तो इस अतीशानि तुम्हें मिलवाव जो तुम कहोगे उसके करनेमें इनकार नहीं करेंगे और फिरसे दीवान खानेमें रक्खेंगे। इन लोगोंके कारणसे तुम्हारी प्रतिष्ठा संसारमें कम हो गयी है; परन्तु हम नहीं चाहते कि तुम बदनाम होओ और स्वार्थी लोगोंकी बातोंमें आकर सीधे रस्तेसे बहको। जैसे तुम हमारे प्रतापसे इस लोकको परम कामनाओंको पहुंचे हो वैसेही हमारे उपदेशसे उस लोकके पुण्यको भी प्राप्त करो।

बैरामखांने इस शिक्षापत्र पर कुछ ध्यान नहीं दिया। माहमअनगाने बादशाहसे कहकर खानखानाका काम बहादुरखांको दे दिया। कयाखां गगको बहरायचमें (१) जागीर देकर उधर भेजा। सुलतान हुसैन जलायर और कुछ और लोग कैद किये गये। मुहम्मद अमीन दीवान भाग गया। बहादुरखांको भी इटावेमें जागीर देकर भेज दिया। इस तरह माहम अनगाकी सलाहसे खानखानाके आदमी जो दरगाहमें थे तितर बितर कर दिये गये।

१२ रजब मंगलवार (चैत सुदी १२ संवत् १६१७) को बैरामखां आगरेसे अलवरकी तरफ रवाना हुए। बादशाहको खबर दी गयी कि वे नागोरके रास्तेसे पंजाब जानेके इरादेमें हैं। इस पर बादशाहने भी उनका रास्ता रोकनेके लिये २२ रजब शुक्रवार (वैशाख वदी ८) को नागोरकी ओर कूच किया और मीर अबदुल लतीफको बैरामखांके पास भेजकर फिर ये बातें कहलायी कि तेरी बन्दगी और खिदमतके हक जो इस बडे घरानेमें हैं सब लोगोंको मालूम है। हम जो कम उमर होनेसे सैर और शिकारमें मशगूल रहकर मुल्क और मालका काम नहीं करते थे तो सब बातें तेरे ऊपर छोडी गयी थी। अब हम अपनी बादशाहीका काम करने लगे हैं तो तू इसको खुदाकी

१। अवधका एक शहर।

बडी बखशिशोंमेंसे ममफ़क्तर शुक्र गुजार हो और कुछ मसगके वास्ते हज करनेको चला जा कि जिसको बाबत कहेगा करता था हिन्दुस्थानमेंसे जो जागीर और जो कुछ तू चाहे वही हम तेरे वास्ते मुकर्रर कर देंगे जिसका हासिल तेरे आदमी फसलको फसल बर्षा बर्षी तेरी सरकारमें पहुंचाया करेंगे।

२६ रजब मङ्गलवार (वैशाख बदी १२) को बादशाहके डेरे जम्झरमें (१) हुए। वहां नासिरुलमुल्क (मुल्ला पीर मुहम्मद) भी गुजरातसे आकर हाजिर हो गया। बादशाहने उसको खांका खिताब, खिलअत, झण्डा और डङ्का देकर अहमदखां और मिरजा शर्फुद्दीन वगैरहके साथ नागोरको भेजा कि जो खानखाना मक्केको जाता हो तो उसको बादशाही सीमासे निकाल बाहर करें और जो न जाने जाना चाहे तो सजा दें।

नागोर (२) मिरजा शर्फुद्दीनको जागीरमें दिया गया।

फिर बादशाह जम्झरसे लौटकर ११ शाबान बुधवार (वैशाख सुदी १३।१४) को दिल्लीमें आ गये और अपना काम करने लगे।

बैरामखां अभी मेवातमें ही थे कि बादशाही फौजके आनेकी खबर उनके लशकरमें फैली जिसके सुनते ही सब लोग उनको छोडकर बादशाहकी सेवामें चले गये। उनके पास सिवाय वलीबेग या उसके दो बेटे हुसेन कुली और शाह कुलीके जो उनके सम्बन्धी थे, या शाहकुली महरम तथा हुसेनखां वगैरह कई आदमियोंके और कोई न रहा।

१। जम्झर एक कसबा दिल्लीसे आगे जिले रोहतकमें है।

२। नागोर अब जोधपुरके राज्यमें जोधपुरसे ४० कोस उत्तरमें है। उस समय भी जोधपुरके नीचे था, शर्फुद्दीनको जागीरमें देनेका यह मतलब था कि वह फतह करके अपने कब्जेमें कर ले।

जब बादशाहकी फौज कूच करती हुई पास आ पहुंची और बैरामखांको निश्चय हो गया कि अब बचावकी जगह नहीं रही तो उन्होंने रियासतकी आस छोड़कर बादशाहको कसूरोंकी माफी और मक्के जानेकी छुट्टी मिलनेकी अरजी लिखी और कई हाथी, तुमन, तौग, झण्डा, नक्कारा और सब सामान सरदारीके हुसेन कुलीके साथ दरगाहमें भेज दिये और उन अमीरोंको जो उनके पीछेमें लगाये गये थे लिख भेजा कि आप लोग किस वास्ते तकलीफ उठाते हैं? मैं आप ही दुनियासे उदास हो गया हूं। वे लोग इस बातको सच समझकर लौट गये। फिर शेख गदाई भी डरता डरता दरगाहमें आ गया। बादशाहने उस पर भी बहुत मेहरबानी फरमायी।

खानखाना बादशाही सीमा छोड़कर बीकानेर गये। (१) वहांके राव कल्याणमल और कुंवर रायसिंह सत्कार पूर्वक सामने आ कर मिले। बैरामखां कुछ दिनों तक उनके पाहुने रहे। वहां यह खबर उड़ी कि मुल्ला पीर मुहम्मद गुजरातकी ओरसे चढ़ा चला आ रहा है। इस पर कुटिल बुधि वाले साथियोंने फिर उनको भड़काया तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला बागी होकर बीकानेरसे पंजाबको कूच किया और कुछ सेना एकत्र करके उत्तर सीमाके अमीरोंको लिखा "मैं तो हज्जको जाता था परन्तु साहसखान आदि मेरे शत्रुओंने बादशाहका मन मुझसे फेर कर यह प्रसिद्ध कर रखा है कि हमने बैरामखांको निकलवा दिया है। इसलिये मेरे जीमें यह आया पहले इन दुर्जनोंको दण्ड दू

१। बीकानेर जानेका यह कारण हुआ था कि जब खानखाना बादशाही अमलदारीसे मारवाड़ होकर गुजरातको जाने लगे तो जोधपुरके राव मालदेवने फौज भेजकर रस्ता रोक दिया जिससे वे उधर न जा सके और नागोरसे बीकानेरको चले गये थे।

फिर हज्जको जाऊं और सुन्नी पीर मुहम्मदसे भी समझूं जिसने इन दिनोंमें नौबत और निशानका मान प्राप्त करके मेरे निकालनेका बीडा उठाया है।"

बादशाहने समाचार सुनकर फिर बेरामखांको एक फरमान लिखा जिसका यह आशय था—

"खानखाना जाने कि वह हम सबसे बचानेका पात्र हुआ है। हमारे पिताने उसकी सेवा और भक्ति देखकर पूरी पालना की और हमारी शिक्षाका बड़ा काम उसको सौंपा। उनके पीछे हमने उसकी पिछली बन्दगीका विचार करके सारे राजकाज उसीके भरोसे पर छोड दिये। उसने जो अच्छा बुरा करना चाहा वही किया यहां तक कि इन ५ वर्षोंमें कई कुकर्म ऐसे भी किये कि जिनसे सब लोगोंको घृणा हो गयी जैसे शेख गदाईको सारे मौलवियों और सैयदोंके ऊपर करके इतना बढाया कि उसको भी (१) तसलीम करनेकी माफी दे दी और वह बडे हलकेमें घोडे पर सवार होकर हमसे हाथ मिलाता था।

जो नवीन सेवक अपने थे उनको तो खान और सुलतानके खिताब देकर झण्डे डङ्के और बड़ी उपजके देश दिये और मेरे बापके अमीरों, खानों और सुलतानोंको जिनका बड़ा हक था रोटीका भी मुहताज कर दिया और जो हमारे हजारों सेवक वर्षोंसे उमेदवारी करते थे उन्हें खानेको भी न दिया और जो लोग हमारी सवारियों और शिकारोंमें दौडते थे उनके प्राणों तकका लागू था। अपने नौकरोंको तो जो भांति भांतिके अन्याय और अपराध करते थे कुछ नहीं कहता था और हमारे नौकरोंसे जो जरा सी भी चूक हो जाती थी और रूठ भी उनका नाम ले लेता तो उनके मारने और घर लूटनेमें देर नहीं करता था।

१। बादशाहको झुककर सलाम करना।

शाहकुलो नारजी मुहम्मद तकिर और नजरबारखान जैसे धूर्तों और खुशामदियोंको सत्यवादी समझ कर पालता था और उनका पक्ष करता था। शाहकुलीने आज्ञा भङ्ग की और अश्लील उत्तर दिया जिससे वह जीभ काट लेने और वध करनेके योग्य था पर उसे कुछ न कहा और सुनकर चुप हो रहा।

ऐसे ही नजरबारखान, भी उसके और दूसरे लोगोंके समक्ष ऐसा कटु वाक्य बोला था कि उसे प्राण दण्ड दिया जाता और वली बेगको वह आप जानता है कि कजलबाशोंमें (१) उसकी क्या दर थी और क्या उसने सेवा की थी परन्तु अपना जमाई जानकर बड़े बड़े अमीरोंसे भी उसका दरजा बढ़ा दिया। हुसेन कुलीको जिसने अब तक एक तुर्कसे भी पञ्जा नहीं लड़ाया था सिकन्दरखां, अबदुल्ला खां और बहादुरखांके बराबर उपजाऊ जागीरें दी और हमारे बड़े बड़े सरदारोंको ऊजड़ गांवोंपर टाला।

फिर इन दिनोंमें तो उससे ऐसे ऐसे अनाचार होने लगे थे कि जिनसे हमको क्लेश ही क्लेश होता जाता था और तो क्या जो थोड़ेसे लोग हमारे पास रह गये थे उनसे भी वह अलग करके हमको अकेला ही रखना चाहता था। इसलिये हम आगरेसे दिल्ली चले आये और उसको लिखा कि कुछ पेच ऐसे पड़ गये हैं कि वह हमसे मिल नहीं सकता है और हम उससे इतना बहुत दुख पाकर भी उसका वैसा ही खानखाना जानते हैं और उसके चित्तकी शान्तिके लिये शपथ करते हैं कि उसके धन और प्राण हरनेका हमारा विचार कदापि नहीं है, परन्तु हम राज्यके काम आप ही लिया चाहते हैं। इसके सिवा और जो मनोरथ हो अरजीमें लिख भेजे तो जिस रीतिसे हम योग्य समझेंगे हुक्म देंगे।"

१। ईरानियोंमें।

वह बहुधा हमसे कहा भी करता था कि अब समय आ गया है कि आप अपनी बादशाहीका काम किया करें। इसलिये हमने जाना था कि वह हमारा काम करना सुन कर प्रसन्न होगा, परन्तु सुना गया कि उसने राज्यतृष्णासे ४० वर्षतक हमारे घरसे अपने लालन पालन और पोषण होनेका उपकार भूल कर दुर्जनोंका कहना माना जो उसको स्वामिद्रोह और कृतघ्नताके पापोंका भागी बनाया चाहते हैं। इसको न समझ कर उसने सिकन्दरके बेटे और तातारखांको उपद्रव करने पर उठाया है और राज्यमें विघ्न डालनेके लिये पंजाब जानेका विचार किया है।

हमको इन बातोंपर विश्वास तो नहीं होता क्योंकि वह हमारे घरमें पला है और हमारा हुक्म मानना उसका धर्म्म है।

"अब हमारा यही कहना है कि जो लोग उसको बहकाते हैं उन्हें पकड़ कर हमारे पास भेज दे। हमने इन ५ वर्षों में सदा उसका उचित और अनुचित कहना किया है सो अब वह भी हमारा यह वाजबी हुक्म न टाले। हम उसके अपराध क्षमा कर देंगे और जो वह सेवामें आना चाहेगा तो उचित समय देख कर बुला भी लेंगे, क्योंकि अभी तक उसकी पिछली सेवा और भक्ति हमारे हृदयमें है। हम चाहते हैं कि उसका नाम जो देश देशान्तरमें सुविख्यात हो रहा है स्वामिद्रोहमें निन्दित न हो जावे।

यह हमने उसको चेता दिया है सो वह कभी कुछ और विचार न करे। परन्तु जो अब भी घमण्डसे नहीं मानेगा तो हम सेना सज कर आते हैं। उसको नष्ट कर देंगे। हमारे उदयका समय है और उसके अस्तका। हम जीतेंगे और वह हारेगा। पछतावेगा और पकड़ा जावेगा। क्या वह अपने विनाश कालका अनुभव इस प्रत्यक्ष प्रमाणसे नहीं करता है कि इन ५ वर्षों में उसने अपने मनुष्योंकी कैसी कुछ पालना इस आशासे की थी कि कि बुरे दिनोंमें काम आवेंगे और जिनको भाई और बेटा कहता

था अभी जिनके अलग होनेका लेशमात्र गुमान भी नहीं करता था वे हो मत्र अभीसे उसको छोड गये हैं और जो थोडे रह गये हैं वेभी एक एक करके हमारे पास चले आवेंगे और उसको अकेला छोड देंगे। इति।

इन पत्रको पढ कर खानखाना फिर भडके और बीकानेरसे पंजाबको रवाना हुए। जब पतरह देवे (भिट डेके) किलेके पास पहुचे जो उनके निज सेवक शेर मुहम्मद दीवानकी जागीरमें था तो मिरजा अब्दुर्रहीमको स्त्रियों और धन सम्पत्ति सहित उसके पास (जिसे बेटेके बराबर पाला था) छोडकर आगे बढे। पीछेसे शेर मुहम्मद उनको सब सम्पत्तिको दबा बैठा और उनके पुत्र कलत्रादिको बादशाहके पास ले गया। इस दुस्सह दुःखकी चोट बैरामखांके कलेजे पर और भी बेढब लगी और वे जब धारे ग्रासके पास पहुचे तो मिरजा अब्दुल्लाह मुगल वहां उनसे लडनेको तैयार हुआ। वलीबेग धारे पर गया और हार कर आया। बादशाहने जब खानखानाका बीकानेरसे पजावको जाना सुना तो यह इरादा किया कि एक अच्छा लशकर भेज कर उनका रास्ता रोक दें जिससे लाहोरमें जाकर कुछ बखेडा न करे। तब माहम अगाने अपने बेटे अदहमखांको तो रख लिया और शम-सुद्दीन खा अत्तगाको बहुतसे अमीरोंके साथ खानखानाके ऊपर भेजा। और पीछेसे बादशाह भी २० जीकाद मगलवार (भादों बदी ७ संवत १६१७) को दिल्लीसे रवाना हुए और हुसैन कुली खाको महमदखा कोकाके हवाले कर गये।

बैरामखा जालधरकी जाते थे कि शमशुद्दीन खांने गाव गुना-चूरमें पहुच कर उनका रास्ता रोक लिया। बैरामखाने अपनी सेनाके दो विभाग करके वलीबेग, शाह कुलीखां मरहम, वली-बेगके भाई इसमाइल कुलीखां, हुसेन खा और याकूब सुलता नको आगे भेजा और दूसरे विभागको ५० हाथियों सहित अपने पास रखा।

जिलहजिकी (१) लगते ही लड़ाई हुई। पहले ही हल्लेमें बादशाही लशकर खानखानाकी नजरो फौजमें भाग भाग भाग निकला। शमसुद्दीन खांके पास थोड़ेसे आदमी रह गये थे कि इतनेमें खानखाना पीछेसे आये। आगे एक दलदल पड़ती थी जिसमें उनके हाथी फंस गये और रास्ता रुक गया। इसलिये खानखानाने बायें हाथको मुड़ कर आगे बढ़ना चाहा। इससे इधर तो इनके आदमी इनका भागना समझकर बिखरने लगे और उधरसे शमसुद्दीनखांने धावा किया और भागा हुआ बादशाही लशकर भी सम्हलकर आ गया। बैराम खां लौट गये।

दो कोस तक उनका पीछा हुआ। इसमाइल कुली खां, अली-बेग, हुसेनखां, याकूब हमदानी, अहमद बेग और दूसरे सरदार उनके पकड़े गये। धन सब लुट गया। उसमें एक जड़ाऊ कड़ा भी था जो खानखानाने मशहदमें (२) भेजनेके लिये १ करोड़ रुपये लगाकर बनवाया था।

बादशाहने सरहदमें पहुंच कर इस फतहकी खबर सुनी। यहां मुनअमखां भी बहुतसे अमीरों और लश्करके साथ आकर १८ जिलहिज सोमवार आसोज बदी ५ को बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गया। बादशाहने उसको खानखानाका खिताब और वकालतका [महामन्त्रीका] काम दिया। फिर शमसुद्दीन खां अत्तगा (३) भी आ गया तो उसको खानआजमकी

१। जिलहिज सन् ९६७ भादों सुदी २ संवत १६१७को लगा था।

२। मशहद खुरासानमें एक नगर है जहां शीआ जातिके मुसलमानोंका बड़ा धाम है और आजकल शाह ईरानके अम-लमें है।

३। यह जीजी अनाका (बादशाहकी धायका) पति और खान आजम मिरजा अजीज कोकाका पिता था। तुर्कीमें धायको अंगा धाऊको अत्तगा और धा भाईको कोका कहते हैं।

पदवी प्रदान की। वलीबेग जखमोंसे कैदमें मर गया। उसका सिर पूर्वके देशोंमें लोगोंको डरानेके लिये भेजा गया। इसका भी एक गहरा घाव बैरामखांके हृदयमें लगा क्योंकि यह उनका बहनोई था।

फिर बादशाह तो २६ जिलहिज आसोज बदी १२।१३ को लाहोर पहुचे और खानखाना सवालक पहाड़में राजा गणेशके (१) पास चले गये। राजाने उनको तलवाड़ेके (२) किलेमें रख दिया (जो व्यासा नदीके ऊपर था।)

बादशाह १० मुहर्रम सन ९६८ मङ्गलवार आसोज सुदी ११ को लाहोरसे कूच करके माछीवाड़ेमें ठहरे और फौज पहाड़में गयी तो वहांके हिन्दुओं और राजाओंने उसको रोका। इसपर लड़ाई हुई और सुलतान हुसेनखां जलायर बादशाही फौजमेंसे मारा गया। लोग उसका सिर काटकर खानखानाके पास बधाईमें ले गये। वे उसको देखकर बहुत रोये और बोले कि धिक्कार है मेरे जीनेको कि जिसके वास्ते ऐसे दीदार जवान मुफ्तमें मारे जाते हैं। पहाड़के हिन्दू जो शरणागतकी रक्षा करना परम धर्म्म समझते थे उनको बहुत सी हिम्मत बंधाते थे तोभी उन्होंने मुसलमानोंके हितसे उसी समय अपने गुलाम जमालखांको बादशाहके पास क्षमा मांगनेके लिये भेजा। बादशाहने मेहरबानीसे मौलाना अबदुल्लाह सुलतानपुरी वगैरह

१। ये नादोनके राजा थे। नादोन जालन्धरके जिलेमें कांगड़ेके पास है। और अब भी एक छोटासा राज्य है जहांके राजा नरेन्द्रचन्द्र हैं।

२। कई इतिहासोंमें नलवाड़ा भी लिखा है यह कांगड़ेके राजाओंका था। नादोन और कांगड़ेके राजा दोनों कटोच जातिके राजपूत हैं। कांगड़ेके राजा जयचन्द अवल्वा ग्राममें रहते हैं।

कई पासके रहनेवालोंको उनके साथ भेजकर हुक्म दिया कि लाकर खानखानाको ले आवे।

खानखानाने फिर अर्ज कराया कि हजरतकी तरफसे तो मुझे विश्वास है परन्तु (१) चगताई अमीरों और सब कार्य्यकारियोंका भय लगता है। इसलिये मुनअमखां आकर मुझे ले जावे तो मैं हजरतको सलाम करके मक्के चला जाऊं और जबतक जीऊं तबतक वहीं रहूं।

बादशाहने हाजीपुरमें जो पहाड़के नीचे सतलज और व्यासा नदियोंके बीचमें था डेरा करके मुनअमखां, ख्वाजाजहां अशरफखां, और हाजीमुहम्मदखां सीसतानीको उनके लानेके लिये भेजा। जब वे उन घाटियोंमें पहुंचे तो जमींदारोंकी बड़ी भीड़ देखी जो अपनी मर्य्यादाके अनुसार मरने मारनेको तुले खड़े थे।

बैरामखां किलेमें थे। मुनअमखां उनके पास गये। बैरामखां मुनअमखांको देखकर रोये। मुनअमखां तसल्ली देकर उनको बाहर लाये। तब बाबा जम्बूर और शाहकुलीखां महरम उनका पल्ला पकड़कर रोने लगे कि दगा है मत जाओ। मुनअमखांने कहा कि तुम आज रात यहीं रहो, कल कुशल सुन कर आ जाना। यह सुनकर वे भी खानखानाको छोड़कर वहीं रह गये।

बादशाही लशकर पहाड़के नीचे जमा खड़ा था। ज्यों ही

१। चङ्गेजखांका एक बेटा जगताईखां था। उसकी औलाद चगत्ता और जगताईखां कहलायी और चङ्गेजखांने तैमूरके पर दादाके बाप "काराचार नोया" को चगताईखांका अतालीक बनाया था जिससे उसकी औलादका नाम भी चगताई हो गया और यही कारण तैमूरिया बादशाहोंके भी चगताई कहलानेका है।

वैरामखां आते हुए दिखे तो बडा कोलाहल मचा। वैरामखां गलेमें रूमाल बांधे हुए बादशाहके पैरोंमें आ पडे (१) और फूट फूटकर रोने लगे (२)।

बादशाहने वैरामखांका सिर उठाकर छातीसे लगा लिया रूमाल गलेसे खोला आंसू पोंछे और दाहने हाथको मालूमी जगह पर बिठाया मुनअमखांको उनके पास बैठनेका हुक्म

१। अकबर नामेमें खानखानाके उपस्थित होनेकी तारीख नहीं लिखी। केवल आबान और मुहर्रमका महीना लिखा है और आबान मास २३ मोहर्रमको लगा था। इस लेखसे खानखानाका आना २३ से २९ मोहर्रमके बीचमें किसी दिन हुआ होगा जो कातिक बदी १० और सुदी १ से आगे नहो सरक सकता क्योंकि सुदी २ से तो सफरका महीना लग गया था। जोधपुर राज्यके पुस्तकालयमें एक पुरानी ख्यात है जिसमें लिखा है कि वैरामखा मगसर बदी ७ को अकबर बादशाहके कदमोंसे लगा। उन्होंने कहा कि मक्के जाओ। वह रवाने हुआ। पाटनमें एक पठानने उनको मार डाला। मगसर बदी७ को आबानकी २८ तारीख थी और सफरकी २१। न मालूम यह इतने दिनोंका अन्तर क्यों है।

२। जिन दिनों यह मसविदा डुमरांवमें पण्डित नकछेदी तिवारीजीके पास था उनदिनों भूतपूर्व भारतमित्र सम्पादक स्वर्गीय बाबू बालमुकुन्दजी गुप्तको कलकत्ते जाते हुए तिवारीजी मिले। उस समय तिवारीजी ऊपर लिखा हुआ वृत्तांत पढ रहे थे जब खानखानाके रोनेका हाल पढा तो तिवारीजीको भी रोना आ गया था और यह बात गुप्तजीने कलकत्ते में पहुचकर मुझ लिखी थी तभीसे उन्हें इस ग्रन्थको भारतमित्रके उपहारमें देनेका ध्यान हो गया था। अफसोस है कि न अब तिवारीजी है और न गुप्तजी।

दिया और ऐसी दया मयाकी बातें कीं जिनसे बैरामखांके मुखकी मलिनता जो लज्जा और अनुतापसे थी जाती रही। फिर निज वस्त्र जो पहरे हुए थे उनको बख्शे और प्रसन्नता पूर्व्वक मक्के जानेकी आज्ञा दी। तरसून मुहम्मदखांको राज्य सीमा तक पहुंचा देनेके लिये साथ किया। (१)

फिर बादशाहनें (२) भी प्रस्थान करके सैन्यको तो दिल्ली भेजा और आप छडी सवारीसे शिकार खेलनेके लिये हिसार पधारे। यह प्रायः वही मार्ग था जिधरसे होकर खानखाना निकले थे। मानो यह उनका अन्तिम अनुसरण था।

खानखाना नागोर होकर गुजरातको गये। तरसून मुहम्मद खां और हाजी मुहम्मदखां जिनको बादशाहने देखभालके लिये साथ भेजा था नागोरकी (३) सीमा तक उनको पहुंचा कर लौट आये।

बैरामखाने एक तिरस्कार करके हाजी मुहम्मदसे कहा

१। मुन्तखिबुत्तवारीखमें लिखा है कि मुनअमखाने खानखानाको अपने डेरे पर ले जाकर डेरे तम्बू और दूसरे सब साज बाज सफरके तय्यार कर दिये। बादशाहसे भी खर्च मिला और सब छोटे बडे अमीरोंने भी अपनी ज्यादे अनुसार रोकड धन और माल जिसको तुर्क लोग चन्दूग (चन्दा) कहते हैं खानखानाको दिया। खानखाना दो दिन पीछे वहांसे कूच कर गये।

२। अकबरनामेमें बादशाहके कूच करनेकी भी तारीख नहीं लिखी है।

३। बादशाहका राज्य इधर उस समय नागोर तक था। नागोरकी सीमा हिसारकी तरफ पंजाबसे मिली हुई थी और नागोरका प्रदेश मारवाडके राव मालदेवके अधिकारमें था जो

 स्वतन्त्र राठोड राजाधिराज थे।

दिया था।

हाजी मुहम्मदखांने उत्तरमें कहा कि जब तुमने इतनी ग्यासिश्तें जतलाने पर भी बादशाहको और उनके पिताको पालनाको भूलकर उनके सामने तलवार खेंची तो मैंने जो तुम्हारा सङ्ग छोड दिया, तो इसमें क्या बुरा किया ?

यह सुनकर बैरामखां लज्जित हो गये और फिर कुछ न बोले।

इतना लिखकर अबुलफजलने अकबरनामेमें लिखा है कि मैंने विश्वास योग्य पुरुषोंसे सुना है कि इस विषयमें बैरामखां सदा यथार्थ बातसे खिसियाना हो जाता था।

बादशाहने हिसारसे तारीख ४ (१) रबिउलअव्वल शनिवारको दिल्लीमें और १२ (२) रबिउस्सानी सोमवारको आगरेमें प्रवेश किया। और वहां जो भवन बैरामखांके थे वे मुनअमखां खानखानाको दे दिये।

खानखाना नागोरसे गुजरातको जा रहे थे कि जङ्गलमें उनको पगडी बबूलके झाडमें उलझ कर धरती पर गिर पडी। वे इसको अपशकुन समझ कर बहुत घबराये तब उनके एक सखाने हाफिजका (३) शेर पढकर उनके चित्तको शान्त

१। मगसर सुदी ६ स० १६१७ इस दिन शनिवार ही था और आजर महीनेकी ११ तारीख थी।

२। पौष सुदी १३ सवत् १६१७ सोमवार तारीख ८ मास दे" सन ५ इलाही।

३। हाफिज फारसी भाषाका एक सुकवि ईरान देशके प्रसिद्ध नगर शीराजमें हुआ है उसकी मृत्यु संवत १४३८के लगभग हुई थी।

कर दिया। उस [illegible]
[illegible]
करे तो तू कुछ सोच मत कर।

इस तरह चलते चलते जब बैरामखां पाटनमें पहुंचे जो पहिला नगर गुजरातका है और जिसको पहिले नहरवाला (१) कहते थे तो विश्राम करनेके लिये कुछ दिन ठहरे उनका कुटुम्ब भी सब साथ था।

उन दिनो मूसाखां (२) फौलादी वहांका हाकिम था। उसके पास पठानोंकी बहुत सी भोड हो रही थी उनमें मुबारकखां लोहानी भी था जिसका बाप माछीवाडेकी लडाईमें मारा गया था जो बैरामखांकी अफसरीमें हुई थी। उस द्वेषसे उस बावले पठानको इस समय बैरामखांसे बैर लेनेकी सूझी और एक बात यह भी थी कि शेरशाहके बेटे सलीमशाहकी कशमोरी औरत उस काफलेमें अर्थात् पथिकोंके समूहमें थी जो बैरामखांके साथ मक्केको जाता था और उस काश्मीरनके साथ उसकी एक लडकी भी थी जो सलीमशाहसे हुई थी और यह बात ठहरायी गयी थी कि बैरामखां उस लडकीको अपने बेटेके वास्ते लेसें यह सुनकर भी पठान बिगडे हुए थे।

बैरामखां नित्य प्रति पट्टनके बागों और मकानोंको देखने आया करते थे। एक दिन नावमें बैठकर सहस्रलिङ्ग (३) तालावका जलमहल देखनेको गये। वहांसे आते समय जब नावसे

१। पाटनका असली नाम अनहलपुर पट्टन था। मगर मुसलमान लोग नहरवला कहते थे।

२। यह गुजरातके बादशाह मुजफ्फर दूसरेका नौकर था।

३। यह तालाब गुजरातके राजाधिराज सिद्धराज जयसिंह सोलंकीका बनाया हुआ है जो संवत् ९९८ से १०५३ तक राज सिंहासन पर विराजमान रहे थे।

उतरकर सवार होने लगे तब मुबारकखां ३०।४० पठानो सहित तालाबकी तट पर आया और ऐसा जाहिर किया कि मिलनेको आया है। खानखानाने इन सबको बुला लिया मुबारकखाने जाती ही छुरा निकाल कर बैरामखाकी पीठमें ऐसा मारा कि छातीसे पार हो गया। फिर और एक पठानने मस्तक पर तलवार मारकर उनका काम पूरा कर दिया। उनके साथी इस हत्यासे घबराकर भाग गये और उनकी लोथ वैसी ही धूल और लोहूमें लिपटी पडी रही। निदान कई फकीरोंने उठाकर शेख हिसानको कबरके पास गाड दी जहासे सन ९८५ में (१) मशहदको भेजी गयी।

खानखानाका वध १४ जमादिउलअव्वल शुक्रवार सन ९६८ माघ सुदी १५ सवत् १६१७ को हुआ और जब यह खबर बादशाहको पहुची तो उन्होने भी बहुत शोक और सन्ताप किया।

इस स्थान पर अबुलफज्लने लिखा है—"मै नहीं जानता हूं कि यह मारा जाना उसके पिछले कर्मों का दण्ड था या अभी उसका चित्त कुविचारोसे शुद्ध नहीं हुआ था या उसकी मनोकामना सिद्ध हुई [जो शहीद होने अर्थात् तलवारसे मारे जानेकी थी] या ईश्वर कृपाने उस सज्जन पुरुषको पश्चात्तापके बोझने हलका कर दिया।

"सच तो यह है कि बैरामखा वास्तवमें साधु और सुशील था। परन्तु कुसगसे जो मनुष्यके वास्ते बडा पाप है वह पहिले तो अपनेको अच्छा समझने लगा फिर खुशामदोसे उसका उन्माद बढता गया क्योंकि जो कोई अपनेको अच्छा समझता है उसके पास खुशामदियोका जमघटा हो जाता है और जो अपनी झूठी भी प्रशसा खुशामदसे सुनता है सो उसे सच मानकर

१। सन ९८५ हिजरी चैत सुदी २ सवत् १६३४ को लगा था

आत्मश्लाघी हो जाता है। इसीसे बैरामखांको यह बुरा दिन आगे आया। बादशाहका यथार्थ रूप जो बचपन और राजकाजमें प्रवृत्त न होनेकी ओटमें छिपा हुआ था उसको दृष्टिमें नहीं आया। वह दूसरोंके दोष ढूंढनेमें अपने अवगुण न देख सका। उसका घर खुशामदियोंसे उतना नहीं बिगडा कि जितना उसके बुद्धि-हीन मित्रों और सम्बन्धियोंसे बिगडा, पर यह भी उसका सौभाग्य था कि उसका प्राणान्त कृतघ्नतासे न हुआ। जीते जी ही उसके कर्मों का प्रायश्चित्त हो गया था। जब कि उसने दयालु बादशाहकी सेवामें उपस्थित होकर उनको राजी कर लिया था।"

अन्य इतिहास वेत्ताओंने बैरामखांको बहुत महिमा लिखी है मुल्ला अब्दुल कादिरके मतसे वे "बड़े बुद्धिमान सत्यवादी सुशील और नम्र और सत्पुरुषोंके भक्त थे। दूसरी बार हिन्दुस्थान इन्हींके पराक्रमसे फतह हुआ था।

वे मिरजा जहांशाहके वंशज थे। पहिले बाबर बादशाहके पास रहे। फिर हुमायूं बादशाहसे खानखानाका पद पाया। अकबर बादशाहने उनकी पदवीमें खानबाबा और बढ़ा दिया था, परन्तु दुश्मनोंने बादशाहका मन उनसे बिगड़ दिया जिससे वह सब बखेड़ा हुआ।

वे आप भी विद्वान थे और विद्वानोंका आदर भी पूरा करते थे। उनकी कीर्त्ति सुन कर दूर दूरके विद्वान उनके दरबारमें आते थे और उनकी उदारतासे निहाल होकर जाते थे।"

"खानखाना काव्यके रहस्यको भी अच्छा समझते थे। उन्होंने उस्तादोंकी कवितामें गहरे दोष निकाले हैं और "दरालिया" नाम एक ग्रन्थमें संग्रह किये हैं। बात बनानेमें भी वे बहुत कुशल थे। एक रात हुमायूं बादशाह उनसे कुछ सम्भाषण कर रहे थे कि उनको जब आ गयी। बादशाहने झलाकर कहा कि "हां बैरम मैं तुझसे कह रहा हूं" इन्होंने झट सम्हलकर कहा मेरे बादशाह। मैं हाजिर हूं, परन्तु मैंने सुना है कि बादशाहोंके सन्मुख

शास्त्रोंको, सत्पुरुषोंके समान मनको और पंडितोंके सामने जिह्वाको वशमें रखना चाहिये। सो हजरत तो बादशाह भी हैं सत्पुरुष भी हैं और पण्डित भी हैं। इसलिये मैं इस दुविधामें पड गया था कि अब मैं किस किसको वशमें रक्खूं, बादशाह यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए।

कंधारमें एक रात शाह "अबुल मआली" ने जो हुमायूं बादशाहके खास चहेतोंमेंसे था शराब पीकर "शीयामत" के (१) एक मुसलमानको(२) मजहबसे मार डाला। उसके घरवालोंने बादशाहसे पुकार की। बादशाहने शाहको बुलाया तो वह उसी मुसलमानका खूनसे सना जामा पहिने था और जिस छुरीसे मारा था उसको बग़लमें छिपाकर नशेमें झूमता हुआ बड़ी ठसकसे आया और सामनेसे गुज़र गया। तब बैरमखांने एक शेर पढ़ा जिसका भावार्थ यह है,—

उसकी (नायकाकी) बिखरी हुई अलकावली निशाचरोंका (चोरोंका) पता देती है और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि इसने अपने पल्लेके नीचे दीपक छिपा रक्खा है।

बादशाहने इस शेरको बहुत सराहा परन्तु उसके भावार्थके अनुसार कुछ निर्णय उस निरपराधके मारे जानेका न किया।

खानखानाकी फारसी और तुर्की कविताका दीवान (संग्रह) प्रस्तुत है और वे हुमायूँ बादशाहकी संगतसे जो बड़े ज्योतिषी थे ज्योतिष विद्याका भी ज्ञान रखते थे।

१। मुसलमानोंमें दो बड़े पन्थ शीया और सुन्नी हैं जिनमें बड़ा मतभेद है शीया ईरानमें अधिक हैं और सुन्नी सब मुल्कोंमें शीआओंसे अधिक हैं वे शीयाको राफ़ज़ी कहते हैं जिसके माने पतितके हैं।

२। अकबरनामेमें इसका नाम शेरअली लिखा है। यह ईरानी शाह तहमास्पका नौकर था। जब हुमायूँ बादशाह कंधारमें

तवारीख "तबकात अकबरी" में (१) लिखा है कि बैरामखां खानखानाके नौकरोंमेंसे २५ आदमी पांच हजारीके मनसबको पहुंचकर नौबत और निशानके धनी हो गये थे।

मुआसिरुलउमरामें लिखा है कि बैरामखां विद्या, भलाई, दान धर्म और कर्मसे युक्त, न निमें निपुण, शूरवीर, कार्यकुशल और दृढ हृदय थे। उन्होंने तैमूरके घरानेके बड़े बड़े उपकार किये थे। ऐसी हलचलके समयमें जब कि राज्य कुछ स्थिर न हुआ था जन्नत-आशियानी हुमायूँ बादशाह स्वर्गवासी हुए और शाहजादा अभी छोटे और नादान थे, पंजाबके सिवा सब देश हाथसे जाते रहे थे, पठान बड़े जोरशोरसे बादशाहीका दावा करते थे। चगताई अमीर जो हिन्दुस्थानमें रहना पसन्द नहीं करते थे काबुलको लौट जानेकी सलाह देते थे और बादखशांके अधिपति मिरजा सुलेमानने अवसर पाकर काबुलमें अमल कर लिया था। परन्तु बैरामखांकी दृढता और उद्योगसे बिगड़ी हुई बात फिर बनी और राज्य भी स्थिर हुआ। इधर अकबर बादशाहने भी बड़े मान सम्मानके साथ पूरा अधिकार राजके कामोंका उनको दिया था और उनसे शपथ ले ली थी कि जो उचित और योग्य हो वही करें; न किसीका

जाकर खानखानाके मेहमान हुए थे तो शेरमुहम्मद शाहसे छुट्टी लिये बिना ही उनके पास चला आया था। अबुलमुआली जिसका मगज बादशाहके बहुत पास रहनेसे चल गया था। दरबारमें कहा करता था कि मैं इस रापजीको मार डालूँगा। बादशाह तो इस बातको दिल्लगी ही समझते रहे और उसने एक रातको बेगुनाहका खून ही कर डाला। बादशाहको यह बात दिलमें तो बहुत बुरी लगी मगर मोहब्बतसे कुछ न कह सके।

१। यह ग्रन्थ बख्शी निजामुद्दीनने अकबरशाहके समयमें बनाया है। इसको तवारीख निजामी भी कहते हैं। मुन्तखिबुल तवारीख इसीका साराश है।

पक्ष दावें और न किसीसे डरे परन्तु ज्यों ज्यों खानखानाका ऐश्वर्य्य बढ़ा और वे अपने अतिरिक्त किसीको कुछ नहीं समझने लगे त्यों त्यों शत्रु भी बढ़ते गये जिन्होंने बहुत कुछ झूठ सच लगा बुझाकर बादशाहका मिजाज बिगाड़ दिया। तो भी बादशाहका मनशा खानखानासे बिगाड़नेकी नहीं थी और न खानखाना प्रतिकूल होना चाहते थे परन्तु दोनों ओरके चुगलखोरोंने दोनों ओर आग लगाकर इधर बादशाहको भड़काया उधर खानखानाको इस बात पर जमाया कि प्रतिष्ठ पूर्वक मर जाना अप्रतिष्ठित होकर जीनेसे उत्तम है और यही कारण उनके नष्ट हो जानेका हुआ क्योंकि अहंकार और राजतृष्णा मनुष्यका नाश करदेती है।

इस प्रकार थोड़ा बहुत वृत्तान्त बैरामखांके जीवनका जो इतिहासकी पुस्तकोंमें मिला यहां लिखा गया अब केवल उनकी उदारताका वर्णनरह गया है सो भी इस यहां किये देते हैं और आगे चलते हैं।

मुन्तखिबुल तवारीखके कर्त्ता मुल्ला अब्दुल कादिरने जो उनका समकालीन था उनकी और अमसुद्दीनखांकी लड़ाईका वृत्तांत लिख कर कहा है "अजब यह है कि इस वर्ष (९६७ संवत १६१६में) खानखानाने हाश्मी शाइरकी एक गजल पसन्द करके अपने नामसे प्रसिद्ध की और उसके पुरस्कारमें उसको ६०००० टके (१) देनेका हुक्म देकर उससे पूछा कि क्यों इतने दाम

(१) पहिले चलनी सिक्कोंको टके कहते थे चाहे चांदीके हों चाहे तांबेके उस समयकी कहावतके अनुसार अब भी धनवान पुरुषको मारवाड़में टकोंवाला कहते हैं जैसा कि हिन्दुस्थानमें पैसावाला और रुपया वाला बोलते हैं। अकबरके समयमें दामका चलन हुआ ४० दामका १) होता था राजपूतानेके लुटेरे धाड़ेतीको समझौतोंमें मालदारोंकी दामोदर कहकर लूटनेकी

ठीक है? उनने कहा कि ६० कम (१) है। खानखानाने ४० हजार और दिलवाकर पूरे १ लाख कर दिये।

इसी तरह, १ लाख टके खानखानाने गानेपर भी एक दी सभामें रामदास लखनवीको (२) दिये जो मशहूर गायक बादशाहके कलावन्तोंमेंसे था और जिसको गानविद्याके विषयमें दूसरा तानसेन कह सकते हैं। क्या सभामें क्या एकान्तमें यह निरन्तर खानखानाके पास रहा करता था और उसके गानेके प्रभावसे सदा खानकी आंखोंमें आंसू आ जाया करते थे।

ऐसे ही १ लाख टके जुझारखां बदाऊनीको एक फारसी कविताकी, रीझमें दिये थे जो उसने उनके नाम पर बनायी थी। यह भी पहले तो सलीमशाहके अमीरोंमें नौकर था और उसको उससे झगड़ा उठा और तोग (३) भी मिला था मगर फिर सिपाहगरी छोड़कर थोड़ी सी जीविका पर सन्तोष कर बैठा था खानखानाने जुझारखांको यह इनाम नहीं दिया था किन्तु सरहिन्द हीके (पञ्जाबके) सारे जिलेका कलक्टर भी बना दिया था।

चेष्टा करते थे, और लोग तो यह जानते थे कि ये भगवतका भजन कर रहे हैं और वे टकोंका भजन करते थे।

१। कम शब्द यहां श्लेष है क्योंकि उसका अर्थ न्यून भी है और अक्षरोंके हिसाबसे ६० भी है। फारसीमें अङ्कोंकी गिनती भी अक्षरोंसे होती है। १०के वास्ते काफ (क) और ४० के लिये मीम (म) लिखते हैं। इस युक्तिसे हाफिजने दोनों बातें पूरी जता दी थी अर्थात् ६० भी और कम भी।

२। ये सूरदासजीके पिता थे। इनका विषय हम विस्तार पूर्वक सूरदासजीकी जीवनीमें लिख चुके हैं।

३। तोग एक सरदारीका सूचक चिह्न माही मरातबके समान दरबारसे दिया जाता था और झण्डेके ऊपर बांधा जाता था।

लाट टरी पानकी नजरसे तिनकेने भी तुच्छ है बर विलाद दन तिनकोंने जो अब पानी पर लगत आये हैं। (१)

खानखानाके खानिदानो नेवाबोंका परिणाम।

खातषा सुसा पोर सुहम्मदखां बादशाहने सेना देकर मालवे पर भेजा था। उसने वह देश विजय करके बड़ा घोर कुकर्म किये। और तो क्या केवल यह देखनेके लिये कि किससे कितना रक्त निकलता है और किसके प्राण शीघ्रतासे और किसके कठि- नतासे छूटते हैं सैकड़ों मनुष्योंके मस्तक छेदन कराये और बड़ी निर्दयतासे उनके मरनेका तमाशा देख देखकर अपने कठोर चित्तको प्रसन्न किया। फिर मालवेसे खानदेश जीतनेको गया। वहांसे लड़ाई हारकर भागा और नर्मदामें डूबकर (२) मर गया। खानखानाके १ वर्ष पीछे ही अपने पापोंके फलको प्राप्त हुआ।

खिजरखां भी ओर सुहम्मदको बादशाहने मुह नहीं ल- गाया जिससे वह समानेमें [पञ्जाबमें] जा रहा। जब बङ्गाल और बिहारके अमीर बादशाहसे बदले तो उसने समानेके नायब फौजदारको न्योता देकर भोजन करानेके मिससे बुलाया। जब वह आया तो तीरको भाल घिसने लगा और फिर वही तीर

१। इन अन्तिम लेखसे यह ग्रन्थकर्ता खानखानाके पीछेके अमीरों पर कटाक्ष करता है और उन्हें दातव्यतामें उनको अपेक्षा बहुत क्षुद्र बतलाता है। अर्थात् अबके अमीर तिनकेही समान हलके हैं और जैसे तिनका थोड़ेसे पानीमें भी ऊपर रहता है वैसे ही ये भी थोड़ी सी सम्पत्ति पाकर भी अपना ओछापन प्रकट करते हैं।

२। यह घटना सन् ९६९में (संवत् १६१९में) हुई उसके साथ बहुतसे आदमी थे परन्तु किसीने उसके निकालनेकी कोशिश नहीं की। अकबरनामा दफतर २ पृ० १६८।

कामानमें खेंचकर उसकी छातीमें मारा। उसके लगते ही वह ता मर गया और इसने उसका सब धन माल लेकर उस प्रांतमें लूट मार मचा दी। निदान वह सन् ८६८में (संवत १६१८।१८में) खत्नानेके फौजदारके हाथसे मारा गया।"

अभिमानी शेख गदाईने भी कुछ उन्नति नही की। जो पद खानखानाने दिया था उसको भी खो बैठा और कोई अधिकार उसको न मिला। वह सन् ८७६ में (संवत् १६२५ में) मर गया।"

—❦—

खानखानानामा।

दूसरा भाग।

पहला खण्ड।

नवाब अबदुर्रहीम खां खानखानाकी माता।

खानखानाकी मा (१) जमाल खां मेवातीकी बेटी थी। जब हुमायूं बादशाह शेरशाह पठानसे लड़ाईमें हारकर ईरानको गये थे तो वहांके शाह तुहमास्प सफवीने उनसे कहा था कि आपने हिन्दुस्थानके जमींदारोंसे रिश्तेदारी नहीं की और अजनबीसे बने रहे, इसीसे आपके पैर नहीं जमे। अब जो फिर वहांकी बादशाही आपके हाथ आ जावे तो दो काम जरूर करना। एक तो पठानोंको जहां तक बने हुकूमतसे अलग करके व्यापारमें लगाना, दूसरे वहांके राजाओं और जमींदारोंसे रिश्तेदारी करना, इससे आपका राज्य बना रहेगा।

हुमायूं बादशाहने जब दूसरी बार दिल्ली फतह की तो हुसैन खां मेवातीको दिल्ली सम्भलमें हिन्दुस्थानके सब जमींदारोंसे विशेष धनवान बलवान और ऐश्वर्य्यवान देखकर उसके चचा जमाल खांकी बड़ी बेटीसे तो अपना विवाह किया और छोटीसे बैराम

---

(१) जमाल खां अलावल खांका बेटा और हसन खां मेवातीका भतीजा था। हसनखांका कई पीढ़ीसे अलवरमें राज्य था। वह १०००० सवारों सहित महाराना सांगाजीके साथ होकर बाबर बादशाहसे लड़ा था और काम आया। ये लोग असलमें यादव राजपूत थे और मुसलमान होनेके पीछे खानजादे कहलाने लगे थे। अब भी बहुत लोग इस घरानेके अलवर राज्यमें हैं।

खाका करा दिया। फिर तुरत ही उनको शाहज़ादे अकबरके साथ पंजाबमें सूर पठान सिकन्दर शाहका उपद्रव मिटानेके लिये भेजा। वे बेगमको भी साथ ले गये थे। परन्तु जब हुमायू बादशाहके मरे पीछे अकबर बादशाहको लेकर हेमू दूसरसे लडनेको दिल्लीकी ओर गये तो बेगमको लाहोरमे भेज दिया था।

खानखानाका जन्म।

वहां १४ सफर ९६४ (१) गुरुवार "दे" महीनेकी छठी तारीखको इनका जन्म हुआ। उस समय बादशाह दिल्लीसे पंजाबको आ रहे थे। रास्तेमें यह बधाई पहुंची जिसपर उन्होंने प्रसन्न होकर बालकका अबदुर्रहीम नाम रखा और अपनी दिग्विजयकी सिद्धिके लिये, जिसके वास्ते पंजाबको आते थे, इस सुखद समाचारको एक शुभ शकुन समझा।

बैरामखांने बडा उत्सव किया और ज्योतिषियोंने जन्मपत्री देखकर कहा कि यह बालक बादशाहसे शिक्षा पाकर उच्च पदको पहुंचेगा और स्वामिभक्त होकर बडे बडे कार्य्य करेगा। ऐसे ही शुभसंवाद शकुनियोंने भी कहे जिनका पहिला परिणाम यह निकला कि बादशाहके जालन्धरमें पहुंचते ही सिकन्दर शाह सूर जो पंजाबमें अडा हुआ था, हिमालय पहाडमें भाग गया।

बाल्यावस्थामें विपत्ति और बादशाहका प्रतिपाल।

जब बैराम खां बादशाहसे बिगडकर बीकानेर गये और वहांसे पंजाब आये तो मिरजा अबदुर्रहीमको अपने अन्तःपुर और

(१) माह बदी १ संवत् १६१३, परन्तु खानखानाकी जन्मपत्रीमें जो आगे लिखी जावेगी उनकी जन्म तिथि मगसर सुदी १४ संवत् १६१२ सोमवार है। न जाने क्यों, दोनोंमें इतने दिनोंका अन्तर है। दोनो तिथियोंके साथ दिन भी है और पंचाङ्गसे दोनों ही सही हैं। परं जन्म तो २ बार नहीं हो सकता। इसलिये कौन तिथि सही है और कौन नहीं इसका निरूपण हम आगे करेंगे, जहां इनकी जन्मपत्रियां लिखेंगे।

धनमाल सहित पतरहंदेके किलेमें शेर मुहम्मदके पास छोड गये थे। उसने उन सबको पकडकर बादशाहके पास भेज दिया। पर जब बैराम खां बादशाहके पास आकर मक्केको बिदा हुए तो इनको भी सकुटम्ब साथ ले गये थे। गुजरात पहुंचकर जब बैराम खां मारे गये, तब ये केवल ४ वर्षके थे। मुहम्मद अमीन दीवाना, जो नामका तो दीवाना था और काम स्यानोंकेसे करता था, बाबा जम्बूर और ख्वाजा मलिक (१) इनको पाटणसे ले निकले और मारे रास्ते पठानोंसे लडते भिडते अहमदाबादमें पहुंचे। वहां ४ महीने रहे। फिर दरगाहको (२) रवाने हुए। जालोरमें (३) बादशाहका फरमान मिला जो इनके नाम था और जिसमें लिखा था कि यहां आजाओ हम पालन करेंगे। इससे वे लोग प्रसन्न होकर सन् ९६९के (४) लगते ही इनको बादशाहकी शरणमें आगरे ले आये। बादशाहने इन्हें होनहार और चेष्टावान् देखकर अपने पास रख लिया। उस समय दरबारमें इनके बहुतसे शत्रु भरे हुए थे। तो भी इनको पालने पोसने लिखाने पढाने और सभ्यता सिखानेमें कमी नहीं हुई।

मिरजा खांकी पदवी और विवाह।

बडे होनेपर बादशाहने इन्हें मिरजा खांकी पदवी प्रदानकी और अपनी धाय जीजी (५) अंगाकी बेटी माहबानूंसे इनका

---

(१) ये तीनों खानखानाके नौकर थे।

(२) राजद्वार (३)जालोर अहमदाबाद गुजरातसे उत्तर दिशामें दिल्ली और आगरेके रास्तेपर एक पुराना शहर है जो अब तो जोधपुर दरबारके अधिकारमें है और उस समय एक नवाबके पास था जिससे फिर जोधपुर वालोंने ले लिया।

(४) सन ९६९ आश्विन सुदी२ सं० १६१८ को यानी ११अगस्त १५६१ ईस्वीको लगा था।

(५)जीजी अंगाने बादशाहको दूध पिलाया था।

विवाह कर दिया। इस सम्बन्धसे इनका भी बादशाहके घरानेसे वही मेल जोल हो गया जो इनके पिताका था और एक बलवान् थोक था आइयोंका इनका पक्षपाती बन गया।

गुजरात जाना और पाटनकी जागीरमें पाना।

जब इनकी अवस्था १६ वर्षकी हुई और भाग्योदयका समय आया तो बादशाह गुजरात (१) फतह करनेको चढे और ये भी उनके साथ गये २६ आबान (२) सन् १७ ता० १रजब सन् ९८०को बादशाहके डेरे पाटन ज़िले गुजरातमें हुए तो उनको बैराम खांकी याद आयी ये सेवामें उपस्थित हो थे। इनसे वह सब वृत्तान्त बैरामखांके मारे जानेका पूछा और कृपा करके कहा कि हमने पट्टन मिरजाखांको दी। परन्तु अभी इसके पास उसके रक्षणका साधन नहीं है। इसलिये सय्यद अहमद खां (३) यहांका रक्षक रहे। पाटन गुजरातका पहिला परगना था जो बादशाहके कब्ज़ेमें आया और यही इनकी पहिली जागीर भी थी जो बापके पीछे मिली। क्या ईश्वरकी माया है कि जिस धरती पर इनके बापका लहू गिरा था और जहां इनकी जानपर आ बनी थी, अब वहींसे इनके भाग्योदयका प्रारम्भ हुआ।

वहां जो शोक इनके मनमें बापकी याद आने या उनकी कबरकी देखनेसे उत्पन्न हुआ होगा उसका अधिकांश इस सौभाग्यमें शान्त हो गया होगा।

फिर गुजरात जाना।

बादशाहने पट्टनसे जाकर गुजरातकी राजधानी अहमदाबादको फतह किया और खान आजम मिरजा अजीजको जो इनका साला

(१) गुजरातमें न्यारी बादशाहत टांक जातिके मुसलमान राजपूतोंकी थी। उस समय वहांका बादशाह मुजफ्फर सुलतान था।

(२) अगहन सुदी ३ स० १६२९ शनिवार।

(३) यह भी एक बादशाही अमीर था और उस चढ़ाईमें मिला था।

था, २३ खरदाद (१) सन् १८ ता० २ सफर बुधवार सन् ६८१ को (२) राजधानीमें [फतहपुर (३) सीकरीमें] प्रवेश किया। ये भी साथ थे। फिर गुजरातियोंने अवसर पाकर अहमदाबादको आ घेरा। बादशाह अपने धाभाई खान आजमको बचानेके लिये १० शहरेवर (४) सन् २४ रबी-उल-आखर सन् ६८१ रविवारको सांडनियोंपर सवार होकर फिर गुजरातको गये और मारामार ८ दिनमें वहां पहुंचे। ये भी उस दौडमें साथ थे। बादशाहने जब लडनेके वास्ते सेनाके व्यूह रचे तो इनको बीचके व्यूहमें नियत किया।

इस लडाईमें भी बादशाहको जीत हुई। इनका भी अभ्यास संग्राम सम्बन्धी कामोंमें बढा; क्योंकि एक वर्षमें दो बार ऐसी बडी लडाईमें सम्मिलित रहनेका अवसर मिल गया था।

गुजरातकी सूबेदारी।

पाटनकी जागीर ऐसी शुभ घडी और शुभ मुहूर्तमें इनको मिली थी कि उसके प्रतापसे दो वर्ष पीछे ही समग्र गुजरातमें इनका अधिकार हो गया। कारण उसका यह हुआ कि खान आजम बादशाहका हुक्म कम मानता था। इसलिये बादशाहने उसको गुजरातकी सूबेदारीसे दूर करके इनको सन् २१के (५) आरम्भमें अजमेरसे

१। प्रथम आषाढ़ सुदी संवत् १६३० बुधवार २३ खरदाद सन् १८ जून ३ सन् १५६३ ई०।

२। मशहूर राजधानी तो हिन्दुस्थानकी दिल्ली है पर अकबरने फतहपुरको जो सीकरीके पास है उन दिनोंमें राजधानी बना रखा था।

३। अहमदाबादसे ५०० मील पूर्व और उत्तरके कोनमें।

४। भादों बदी ११ संवत् १६३० रविवार १० शहरेवर सन् १८।

५। सन् २१ इलाही चैत सुदी ११ संवत् १६३३ को लगा था।

वजीरखां मीर अलावुद्दौला, सैयद मुजफ्फर और प्यागदास सहित गुजरातमें भेजा। सूबेदारी तो इनके नाम हुई, परन्तु अभी तक इनको राजकाज करनेका काम नहीं पड़ा था; इसलिये काम वजीरखांको सौंपा गया। अलावुद्दौला अमीन, प्यागदास दीवान और मीर मुजफ्फर बख्शी हुआ।

मेवाडमें २ वर्ष रहना।

कुछ महीने पीछे बादशाहने अजमेर आनेका विचार करके इनको भी बुलाया। हुक्म पहुंचते ही वजीरखांको चार्ज देकर गुजरातसे चल दिये और पहिले ही पडाव पर बादशाहके चरण कमलोंमें उपस्थित होकर साथ साथ अजमेर (१) आये और फिर साथ ही मेवाडके (२) दौरेमें भी गये। उस समय महाराणा प्रतापसिंहसे लडाई हो रही थी। बासवाडे (३) पहुंच कर "दे" महीनेकी १५ तारीखको (४) बादशाहने इन्हें भी उस लडाई पर भेज दिया। ये दो वर्ष तक मेवाडके पहाडोंमें दौड धूप करते रहे। परन्तु पूरी विजय न होनेसे बादशाहने शहबाजखांको (५) फौजका अफसर करके भेजा। ये उसके साथ कुम्भलमेर पर गये। २४ फरवरदीन (६) सन् २२ को वह दुर्गम दुर्ग फतह होगया। वहांसे धावा करके इन लोगोंने गोगूंदा और उदयपुरको भी ले लिया।

---

(१) बादशाह ५ महर सन् २१ को कूच करके १६ को अजमेर पहुंचे थे। ५ महर आसोज बदी ८।१० संवत् १६३३को थी और १६ महर आसोज सुदी ६ शुक्रको।

(२) बादशाह ३१ महरको मेवाड रवाने हुए थे। उस दिन कातिक बदी ६ थी और वार शनि था। (३) बासवाडा एक जुदा राज्य गहलोतोंका मेवाडकी पूर्व और दक्षिण सीमा पर है।

(४) पौष सुदी ६ बुधवार (५) शहबाजखां काम्बोह जातिका मुसलमान और मीर बख्शी था।

(६) वैसाख बदी १२ बृहस्पतिवार संवत् १६३५।

जब इस तरह मेवाडमें बादशाही अधिकार जम गया तो फौज लौट आयी और उसके साथ वे भी बादशाहकी सेवामें आ गये (१)।

मीर अर्ज होना।

सन् २५ के प्रारम्भमें [२] बादशाहने इन्हें मीर अर्जकी महत् पद पर नियत किया। मीर अर्जका यह काम था कि जो लोग बादशाहसे अपनी दीन दशा कहने आवे उनका वृत्तान्त बादशाहकी सेवामें अर्ज किया करे और जो उसका उत्तर मिले वह जाकर उनको कह दे। अब तक यह काम किसी एक मनुष्यके अधीन न था। प्रति दिन एक सच्चा और सुजान व्यक्ति नियत हो जाया करता था। परन्तु अब बादशाहने अधिक भीड, काम बहुत लोभका, अति प्रचारका और दरबारमें पहुचना कठिन देख कर यह विचार किया कि किसी कुलीन और सच्चे सेवकको, जो स्वार्थी न हो, यह बडा काम देवे जो अपने और परायेको समदृष्टिसे देख कर उनके मनोरथ निवेदन किया करे और अवसर पाकर उत्तर ले लिया करे। यदि ठीक उत्तर न मिले तो खिन्न न होकर फिर प्रार्थना करनेका साहस करे। ये सारे गुण इनकी चेष्टासे प्रकट थे, इसलिये बादशाहने इन्हीको

(१) शहबाजखा ५ तीर सन् २३ को मेवाडसे गाव थारा इलाके पजाबमें बादशाहके पास पहुचा था उस दिन आषाढ सुदी १२ संवत १६३५ मङ्गलवार था।

(२) सन् २५ इलाही २४ मुहर्रम सन् ९८८ शुक्रवारको आरम्भ हुआ था, उस दिन चैत वदी ११ संवत १६३६ थी। अकबरनामेमें यह नही लिखा है कि किस दिन इनको वह ग्राम मिला था; परन्तु पूर्वापर मिलानेसे ऐसा जाना पडता है कि चैत वदी ११ के पीछे वैशाख सुदी ११ तक किसी तिथिको मिला होगा।

यह काम दिया जिससे इनकी ऐश्वर्यमें और वृद्धि हुई और राजलक्ष्मीका प्रकाश बढा।

अजमेरकी सूबेदारी।

८ महीने पीछे फिर इनके और बढतीके दिन आये तो अजमेरकी सूबेदारी इनको मिली जो रुस्तमखांके मारे जानेसे खाली हुई थी। बादशाहने नीति शिक्षाकी बहुतसी बातें कह कर इनको अजमेर भेजा और रणथंभोरका प्रसिद्ध जिला जागीरमें दिया जिससे अब ये देशपति और गढपति हो गये (१)।

दरबारमें उच्च पद।

सन् २६ में (२) ये अजमेरसे दरबारमें आये हुए थे कि २४ दे को (३) बादशाह शिकारके लिये नगर चैनको (४) गये। ३ बहमनको (५) तसलीमके (६) समय बख्शियोंने इनको शहबाज-खांके ऊपर खडा किया। इस पर शहबाजखां बुरा मान कर जाने लगा तो बादशाहने शिक्षा देनेके लिये उसको राय साल दरबा-

---

(१) अजमेरमें नियत होनेकी मिती भी अकबरनामेमें नहीं लिखी है; परन्तु रुस्तमखां १० आबान सन २५ को कछवाहे राजपूतोंकी लडाईमें जखमी हो कर दूसरे दिन मरा था। इस-लिये कह सकते हैं कि अजमेरकी सूबेदारी इनको आबान या आजरके महीनेमें मिली होगी और १० आबान सन् २५ अगसर बदी ११ संवत् १६३७ को थी।

(२) सन् २६ इलाही चैत सुदी ७ संवत् १६३८ को लगा था।

(३) पौष सुदी ११ हु० संवत् १६३८।

(४) नगर चैन फतहपुर सिकरीके पास एक शहर अकबर बादशाहने बसाया था जो उनके जीते ही समय उजड गया।

(५) माघ बदी ३ हु० संवत् १६३८।

(६) दरबारमें सलाम करना।

गीकी (१) पहरेमें रख दिया। इस वातसे इनका अधिक प्रताप बड़े बड़े अमीरोंको मनमें खटक गया और उन्होंने जान लिया कि बादशाह इनको और भी बढ़ाना चाहते हैं।

राज सभामें छोटे छोटे जीवोंके न पकड़े जानेका प्रस्ताव।

१ फरवरदीन (२) सन् २७ इलाहीको बादशाहने नये दिनके उत्सव किये। महद्राजसभामें विराजमान हो कर यह भाषण किया कि प्रभुता वास्तवमें ईश्वरको ही फबती है, दीन मनुष्यको क्या सामर्थ्य है कि जो प्रभु बननेकी चेष्टा करे और अपने सजातियोंको दास बनावे। यह कह कर गुलामोंको जो कई हजार थे, दासत्वसे मुक्त कर दिया और कहा कि जबरदस्ती पकड़े हुओंको गुलाम कहना और उनसे गुलामी कराना कहांकी सभ्यता है? फिर सब सभासदोंको भी अपनी अपनी इच्छा निवेदन करनेकी आज्ञा दी। जब इनकी बारी आयी तो इन्होंने कहा कि छोटे छोटे जीव जन्तु (चिड़िया मछलिया आदि) न पकड़े जावें तो अच्छा हो, क्योंकि थोड़ेसे लाभकी सम्भावनामें बहुतसे जीव नष्ट होते हैं।

बादशाहने दूसरे सभासदोंकी प्रार्थनाके साथ इनकी आकांक्षा भी स्वीकार की। इससे इनकी प्रकृतिका पता लगता है कि ये कैसे दयालु और पुण्यात्मा थे।

बड़े शाहजादेका रक्षक होना।

ऐसी ऐसी बुद्धिमानी और योग्यताकी बातोंसे इनकी जगह बादशाहके दिलमें बढ़ती जाती थी और वे इनकी कार्य कुशलतासे सन्तुष्ट होकर जब कोई काम इनके योग्य देखते थे तो प्रसन्नता पूर्वक इनको उस पर नियुक्त कर देते थे और इनके ऊपर

१। यह शेखावत कछवाहोंमें एक बड़ा सरदार और बादशाही दरबारका सभासद था।

२। चैत बदी २ रविवार संवत् १६३८ को तारीख १ फरवरदीन सन् २७ थी।

उनको भरोसा भी पूरा था। इसीलिये जब जो बडे शाहजादे सुल-तान सलीमको अतालकीकी जगह खाली हुई तो उसके वास्ते भी बादशाहने इन्होंको उत्तम समझ कर शाहजादेका अता-लीक (१) बनाया अर्थात् शाहजादेको इनको रक्षामें रखा। इन्होंने इस महत्सौभाग्यका बडा उत्सव किया और बादशाहसे उसमें पधारनेकी प्रार्थना की। दयालु बादशाह २७ शहरेवर (२) सन् २७ को इनके घर पधारे जिससे सब लोगोंको आनन्द हुआ।

घोडोंके प्रबन्धमें नियुक्ति।

इसी साल बादशाहने व्यापारियोंके सुखके लिये क्रय विक्रयका कर नियत करके एक एक अमीरको एक एक वस्तु का अधिकार दिया। उसमें घोडोंकी देख भाल इनको मिली।

ये दोनों काम भी इनको विद्या और बुद्धिके योग्य थे।

सामाजिक कार्यमें शाहजादेका सहायक होना।

(३) सन् २८ में बादशाहने राज्य और राजकाजके बहुत बढ जानेसे सुबीते और प्रबन्धके लिये शाहजादोंको पृथक पृथक काम बांटे और कोप, क्षमा, विवाह और जन्म सम्बन्धी कार्य्यों का प्रबन्ध बडे शाहजादे सुलतान सलीमके अधीन किया। ये उसके भी सहायकोंमें रखे गये।

गुजरातमें लडने जाना।

इसी साल जो इनका राज योग और प्रबल हुआ और एक बडी लडाईमें विजय प्राप्त करके पृथिवीमें प्रतिष्ठित होनेका समय आया तो बादशाहने इनको फिर गुजरात भेजा। परन्तु अब गुजरातमें पहिलेकोसी शान्ति नहीं थी। वहांके अगले सुलतान मुजफ्फरने जिसे बादशाह पकड लाये थे कैदसे भाग

१। पहले कुतुबुद्दीनखां अतालीक था, पर वह इस समय किसी काम पर बाहर भेजा गया था।

२। आसोज बदी ८ रविवार संवत १६३८।

३। सन् २८ चैत बदी १३ संवत १६३८ को लगा था।

कर उस देशका अधिकांश फिर जीत लिया था और अहमदा-वादमें बैठ कर फिर अपनी आन दुहाई फेरी थी। जो वादशाही अमीर गुजरातमें थे वे लडाईमें हार कर पटनेमें चले आये और वादशाहको अर्जी पर अर्जी भेजते थे। वादशाहने ८ महर (१) सन् २८ को एक वडा लशकर इनके साथ विदा किया जिसमें इतने अमीरोकी नौकरी बोली गयी थी ;—

१ सैयद कासम।
२ सैयद हाशम।
३ शेरेविया खां।
४ राव दुर्गा।
५ राय लवण करण।
६ मेदिनी राय।
७ मियां वहादुर।
८ दरवेश खां।
९ रफीय सरमदी।
१० शेख कवीर।
११ नसीव तुर्कमान।

हुक्म दिया गया कि सब सीधे रास्तेसे गुजरातको जावे। कुली-चखा और नवरङ्ग खा इस आज्ञाके साथ मालवे भेजे गये कि वहाके लशकरको लेकर इनसे जा मिले।

ये वादशाहसे विदा हुए। कुछ लोग तो सेनाके एकत्र होनेके लिये रास्तेमें ठहरे और कुछ वेसमझ लोगोंके झूठी खवरें उडानेसे धीरे धीरे चले। जब ये मेड़तेके पास पहुंचे तो पट्टनसे ख्वाजा ताहिरने आकर कुतुवुद्दीन खाके मारे जाने और किले भडूं-चमें भी मुजफ्फरके अमल हो जानेका वृत्तान्त कहा। ये बुद्धिमा-नीसे इन अशुभ समाचारोंको गुप्त रख कर आगे बढे और शीघ्रतासे २० दे को (२) पाटन पहुंचे। वहां जो सेना थी वह सहर्ष अगवानीको आयी और यहां जो सब सरदारोंने मिलकर स-लाहें की तो किसी किसीने कहा कि जब तकम ालवेका लशकर नहीं आवे तब तक यहीं ठहरें और किसी किसीने कहा कि वाद-

१। कातिक वदी १ संवत १६४०।

२। माह वदी १४ वुधवार संवत १६४०—१ जनवरी सन् १६८४ ई०।

शाहको आने दें, अभी आगे बढना उचित नहीं है। इस प्रकार बहुत कम लोगोंने लडनेकी सलाह दी। कारण इसका यह था कि मुजफ्फरके पास ४० हजार सवार और १ लाख पैदल सेना थी। इधर सेना सिर्फ दस हजार ही थी। निदान दौलतखां लोदीने जो इनका सलाही और सेनापति था, कहा कि बादशाही अमीरोंके आने पर तो जीतमें उनका साझा पड जावेगा। जो तुम खानखाना बनना चाहते हो तो अकेले फतह करो, नहीं तो अज्ञात अवस्थामें जीनेसे मर जाना अच्छा है।

सुजफ्फर पर चढाई।

खानखानाने यह सुन कर अहमदाबादके अगले सूबेदार एतमादखांको जो भाग कर आया था पट्टन हीमें छोडा और बाकी लशकरके साथ लडाईकी इच्छासे कूच किया। युद्धके वास्ते जो व्यूह रचा था उसके ७ अङ्ग थे। उसके एक एक अङ्गमें कई अमीर, राजा, राव तथा ठाकुर नियुक्त किये गये थे जिनका ब्योरा नीचे लिखा जाता है।

१। गर्भमें, स्वय थे, शहाबुद्दीन अहमदखां, जान दरवेशखां, सुरतान राठोड (१) मीर मुजफ्फर, अबुलफतह, मिरजा कुली खां, मुगल और शेख मुहम्मद मुगल।

२। दाहिनी भुजामें शेरबियाखां, मुहम्मद हुसेन, शेख अबुल-कासिम, बुनियाद बेग फौरोजा, मीर हाशम और मीर मानक।

बायी भुजामें मोटा राजा (२)राय दुर्गा, तुलसीदास जादौ (३) बीजा देवडा और रायनारायण दास जमीदार ईडर।

१। सुरतान राठोड प्रसिद्ध राव जयमल राठोडके बेटे थे जो चित्तौडगढमें अकबर बादशाहसे लडे थे।

२। मोटा राजा जोधपुरके महाराज थे इनका नाम उदयसिंह था। यह मोटे बहुत थे इससे अकबर बादशाह इनको मोटा राजा कहते थे।

३। ये करौलीके थे।

४। हिरावल अर्थात् आगेकी अनीमें—पायदा खां मुगल, सैयद कासिम, सैयद हाशम, राय लवण करन, रालचन्द, सैयद बहादुर, सैयद शाह अली सैयद नसरुल्लाह और सैयद करमुल्लाह।

५। एलतमश अर्थात् गर्भ और हिरावलके बीचकी अनीमें मेदिनीराय, रामसाह, राजा मुकुट मणि, ख्वाजा रफीअ, मुकम्मल वेग सरसदी, नसीब तुर्कमान, दौलतखां लोदी, सैयदखा कारीणी, शेखवली, शेखजैन और खिजर आका।

६। तरह सहायक सेनामें ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद बख्शी, मीर अबुल मुजफ्फर, मीरमासूम भक्करी, वेग मुहम्मद तोकबाई, मीर हबीबुल्लाह, मीर शरफुद्दीन, और हाथी बलूच।

७। किरावल अर्थात् आगे चलने वालोंमें मिया बहादुर उजबक। बाकी हाथी हरेक अनीमें थे।

मुजफ्फर यह सुनकर बहुतसे लश्कर सहित अहमदाबादमे आया। व्यूहमें वह तो गर्भस्थ था, शेरखां फौलादी, और लूणा काठी, दाहिनी तथा बायीं अनीमें थे और सालह बदख्शी अगली अनीमें था। उसने सानपुरमें लड़नेकी सलाह की और वहीं तोपखाना भी चुना था।

इन्होंने ८ मोहर्रम (१) सन् ९९२ को सेनाकी उत्तेजनाके वास्ते यह युक्ति की कि बादशाहकी ओरसे एक फरमान [आज्ञा पत्र] बनाया और बड़ी धूमसे अगवानी जाकर उसको लाये और सब फौजको सुनाया। जिसका यह आशय था कि हम आते हैं हमारे पहुंचने तक लड़ाई मत करना।

मुजफ्फरसे लड़ाई।

यह फरमान सुनकर सारी सेना आह्लादके मारे चिल्ला उठी और मुजफ्फरकी जगह छुड़ानेके लिये गांव सरखेजकी ओर चली।

१। माघ सुदी ११ च० संवत १६४०।

६ वहमनको (१) वहां पहुंचकर अहमदाबाद और नदीके बीच डेरे किये। यह समाचार सुनकर मुजफ्फर भी उधरही चला और यह खबर उडी कि वह पीछेसे आवेगा, इसलिये इन्होंने राय दुर्गाको तरहमेंसे [सहायक अनीमेंसे] कुछ फौज देकर पीछे भेजा. बाकी फौजें आगे बढी और दुश्मनसे भिडीं। लडाई छिडी। दोनों ओरके वीर लडे, कटे और मरे। हिरावल और एलतमशके पैर टूट गये; तो भी ये खानखाना होनहार वीर ३०० योधाओं और १०० हाथियों सहित जहां खडे थे वहीं जमे रहे। मुजफ्फर इनके सामने ही ६।७ हजार सवारों सहित खडा था। इनके पास थोडीसी सेना देखकर लडनेको आया। उस समय इनके कुछ शुभचिन्तकोंने इनके घोडेकी लगाम पर हाथ डाला कि रणांगनसे निकाल ले जावे; परन्तु इन्होंने लगाम छुडाकर हाथियोंको आगे बढाया और दुश्मनोंको सामनेसे हटाकर मैदान जीत लिया।

जीत और उसका उछाह।

यह फतह ७ वहमन (२) सन् २८ तथा १३ मुहर्रम ९९२को हुई, जिसके उछाहमें इन्होंने अपना सब धन माल साथियोंको दे डाला। अन्तमें एक मनुष्यने आकर कहा कि मुझे कुछ भी नहीं मिला। तब एक कलमदान जो बाकी रह गया था उसको देकर प्रसन्न किया।

मुजफ्फर पर और फतह।

मुजफ्फर राजमहेन्द्रीकी ओर भागा था; इन्होंने भागे हुओंका पीछा नहीं किया; उस दिन तो वहीं रहे। दूसरे दिन तडके ही अहमदाबादमें जाकर सुशोभित हुए। यहां मालवेके अमीर भी आ मिले।

१। माघ सुदी १४ बु० संवत १६४०

२। माघ सुदी १५ भृगुवार संवत १६४०।

बादशाहने गुजरात आनेके विचारसे १० बहमनको (१) इला-हाबादसे कूच किया था कि २५ बहमनको (२) कोडा घाटमपुरमें इस फतहकी बधाई पहुंची और वे खुश होकर राजधानीको लौट गये।

सुजफ्फरने खंभातके सेठोंसे रुपये लेकर फिर १०।१२ हजार सवार इकट्ठे कर लिये। यह खबर सुनकर इन्होंने सैयद कासिम वगैरह कई अमीरोंको तो अहमदाबादमें छोडा और बाकीको मालवेके लशकर सहित साथ लेकर खंभातके ऊपर धावा किया। सुजफ्र सैयद दौलतको कुछ फौज सहित धोलकेमें भेजकर अचला परमारके गांव "सबद" में चला गया।

इन्होंने बड़ौदेमें पहुंचकर तोलकखांको तो सैयद दौलतपर भेजा और आप सुजफ्फरके पीछे गये। १८ असफन्दारको (३) सुजफ्फरसे लड़ाई हुई। वह फिर भागकर नर्वदा पार चापा पहाडमें चला गया जिसके दक्षिणमें तापती नदी बहती है और तीन ओर पहाड ही पहाड हैं।

जब यह नादोदमें पहुंचे तो सैयद दौलतपर तोलकखांके फतह पानेकी बधाई आयी जिससे लशकरवालोंका दिल और बढा और व्यूह रचकर उस पहाडपर धावा किया गया। मुजफ्फर फिर लडाई हार कर भागा। बादशाही फौजने पीछा करके उसकी २ हजार सेनाको मारा और ५०० को पकडा।

खानखानांका खिताब और ५ हजारी मनसब।

जब बादशाहको इस दूसरी फतहकी खबर पहुंची तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक इनको खानखानांका खिताब, एक भारी खिलअत और पांच हजारी मनसब बख्शा और दूसरे अमीरोंको भी मनसब बढाये।

१। फागुन वदी ३।

२। फागुन सुदी ३ ता० १ सफर सन् ९९२।

३। चैत वदी १२ संवत १६४०।

गुजरातियोंका भागना।

सैयद दौलत खंभातमें चला गया था। इसलिये इन्होंने मोटा राजा, मेदनीराय, राजा मुकटमणि, रामसाह, उदयसिंह, रामचन्द्र, बाघ राठोड़, तुलसीदास जादों बहादुर, अनपलगहड़, नाल फतह सगल, बारावहरी, और दौलतखांको उसपर भेजा। इन सरदारोंने वहां जाकर उसको भगा दिया।

फिर खानखानाने महेन्द्रीसे ख्वाजा, निजामुद्दीन अहमद, मीर मासूम, और सुरतान राठोड़को श्राविद और मीरक यूसुफ वगैरह पर भेजा जो राजपीपलेके पहाड़से निकलकर लूट मार करते थे। ये जब धोलकेमें पहुंचे तो वे लोग भाग गये।

देशका प्रबन्ध और फतहबाग।

खानखाना १५ उर्दी (१) बिहिश्त सन् २८ को अहमदाबाद पहुंचकर देशके प्रबन्धमें प्रवृत्त हुए और जहां मुजफ्फरके ऊपर फतह पायी थी वहां एक बाग लगाया। उसका नाम फतह बाग (२) रखा।

भड़ूचकी फतह।

मुजफ्फर राजपीपलेसे पट्टनको आया। इन्होंने शादमानेगको उधर भेजा तो वह ईडर होकर काठियावाड़में चला गया। वहासे बन्दर घोघेमें जाकर छिप रहा। खानखानाने भड़ूचके ऊपर फौज भेजकर वह किला भी १० मिहरको (३) मुजफ्फरके किलेदारसे खाली करा लिया।

मुजफ्फरका पीछा करना।

इस वर्ष लड़ाई दङ्गा रहनेसे खेतीकी उपज कम हुई जिससे सरदारों और सिपाहियोंका बल घट गया। गुजराती यह

१। जेठ वदी १० संवत १६४१ ता० २२ रबीउस्सनी सन् ९९२।

२। अब इसेफतहवाड़ी कहते हैं।

३। आसोज वदी में सं० १६४१।

भेद पाकर उपद्रव करने लगे। मुजफ्फर गोंडलमें आया जो जूना-गढसे १५ कोस है। अमीनखां गोरी और जाम (१) भी उससे मिल गये। खानखानांने कुलीचखांको अहमदाबादमें छोड़ा और फौजके २ विभाग करके मेदिनीराय, बेगमुहम्मद, कासमवेग, रामचन्द, उदैचन्द आदिको धधूका से ७ कोसपर गांव हड्डालेमें भेजा। और अहमदाबादसे ७ कोस गांव बेराईमें बयान बहादुर तथा भूपतराय प्रभृतिको नियत किया। सैयद कासमको पट्टनमें छोड़ा और आप (२) आजर १२ सन् २९ को मुजफ्फरसे लड़नेको गये। उस समय वह मोरवीमें था जहांसे इनका आना सुनकर खरडी और राजकोटको चल दिया जो काठियावाड़में है। वीरमगावसे खरडी तक ६० कोसमें बस्ती न थी। तो भी ये भोजनकी सामग्री लेकर कड़ी सवारीसे वहां पहुंचे तो वह पहाड़में जो द्वारकासे २० कोस समुद्र तट पर है चला गया। इन्होंने भी वहां जाकर छावनी डाल दी। अमीनखांने अपने बेटेको भेज दिया। जामके वकीलोंने आकर कहा कि मुजफ्फर यहांसे ४० कोस पर है। ये उधर गये; परन्तु वह नहीं मिला। तब इन्होंने अपनी सेनाके ४ खण्ड करके उस प्रदेशमें भेजे। वहांके राजपूत वीरतासे लड़कर काम आये और वह सुन्दर देश लुट गया।

जामका अधीन होना।

इस अवसरमें मुजफ्फर अपने बेटोंको जामके पास छोड़कर अहमदाबाद गया। इन्होंने उसकी कुछ परवाह न करके जामको दण्ड देना चाहा। वह भी पहले तो सेना सजकर लड़नेको आया और फिर ४ कोस दूर रहकर अधीनता स्वीकार करने लगा। राय दुर्गा और कल्याण रायके बीचमें पड़नेसे उसकी प्रार्थना स्वीकृत हुई। तब उसने अपने बेटे जस्साको लाल रङ्गके हाथी और भेंटको दूसरी वस्तुओं सहित भेजा।

१। जाम नगरका राजा।

२। मगसर सुदी २ सं० १६४१।

सुजफ्फरको फिर हराना।

नवा नगर इनसे १० कोस रह गया था कि ये जामके अधीन हो जानेसे अहमदाबादको लौटे। मोरवीके पास पहुंच कर सुना कि सुजफ्फर अहमदाबादको आता है। हडाले और पगातीको सेना मिलाकर लडनेको गये। वह पगातीमें पाकर लडा। मदन चौहान, रामचन्द्र, उदैसिंह, सैयद लाद, सैयद बहादुर, सैयद शाह अली, श्रीपत दखनी, केशवदास, बाघ राठोड आदि जो पहिली सेनामें थे खूब लडे। ख्वाजम वरदी लडता हुआ सुजफ्फरके पास तक जा पहुंचा। वह फिर भाग गया और उसके कई सरदार मारे गये।

खानखाना दरबारमें।

ये इस बधाईसे प्रसन्न होकर अहमदाबादमें आये। बादशाहका हुक्म पहुंचा था कि जब गुजरातके प्रबन्धसे निश्चिन्त हो जाओ तो दरगाहमें आओ। इसलिये ६ अमरदाद (१) सन् ३० को अहमदाबादसे चलकर २४ को (२) बादशाहकी सेवामें पहुंचे। बादशाहने बहुत कृपा की और जब लाहौरको जाने लगे तो २२ शहरेवर (३) सन ३० को राजा टोडरमलके तालाबसे जो फतहपुर सिकरीके पास था इनको गुजरात जानेकी आज्ञा दी। इनकी अनुपस्थितिमें अवसर पाकर मुजुफ्फर फिर अहमदाबाद पर आया था, परन्तु कुतुबुद्दीनखां आदि अमीरोंने ३० कोस तक सामने जाकर उसको रणकी (४) तरफ भगा दिया।

१। सावन सुदी ३ संवत १६४२।

२। भादों बदी ६ सं० १६४२।

३। आसोज बदी ५ संवत १६४२।

४। एक बडी झील खारे पानीकी जो कच्छ देशमें है।

सिरोही और जालोरके अधिपतियोंको अधीन करना।

इन्होंने गुजरातको जाते हुए सिरोही और जालोरके जमीदारोंको जो उस समय गुजरातके अधीन थे रास्तेमें अपने पास बुलाया। सिरोहीका राव तो कुछ दिनोंमें आकर मिल गया। और जालोरपति गजनीखांने पहिले तो हुक्म नहीं माना और जब फिर इनको दृढ़प्रतिज्ञ देख कर आया तो उसको अपने साथ ले गये और जालोर उससे छीन कर दूसरेको दे दी।

शिकारमें बेतरह फंस जाना।

इस यात्रामें ईश्वरने एक बड़ी जान जोखिमसे इनकी रक्षा की थी। सिरोहीके पास पहुंच कर इनके मनमें यह वासना उपजी कि थोड़ेसे सहित जा कर शिकारका आनन्द लें और यौवन मदसे इस धुनमें सेनासे दूर निकल गये। फिर थकावट और धूपसे व्याकुल होकर एक वृक्षकी छायामें जा बैठे। इतनेमें एक अहेरीने अनीतिसे एक गाय पकड़ ली। इस पर उस प्रान्तके राजपूत लड़नेको आये। यह उठ कर उनपर गये। कुछ इनके साथी भी पहुंचे। बड़ी लड़ाई हुई। इनकी जान पर आ बनी। रहनेकी आशा न थी कि जीत हो गयी और उन लोगोंको पूरा दण्ड दिया गया।

सन् ३१ में (१) बादशाहने इनके साले खान आजम मिरजा अजीज कोकाको बराड़ फतह करनेका हुक्म दिया था। वह मालवेसे गया; परन्तु जो अमीर उनके साथ थे उससे नहीं बना इसलिये उस कालमें सफलता न पाकर सहायता प्राप्त करनेके लिये वह इनके पास आया। ये बड़ी धूमधामसे अगवानी। जाकर उसको लाये और सहायताके वास्ते सेना भी सजायी, परन्तु उसके शत्रुओंने इनको भी बहका दिया।

१। सन् ३१ इलाही चैत सुदी १ संवत १६४३ को लगा था अर्थात ये दोनों वर्ष एक ही दिन आरम्भ हुए थे।

थे चुप हो रहे और खान आजम जैसा आया था वैसा ही चला गया।

गुजरातमें नये कार्य्यकारी।

इसी साल बादशाहने एक एक सूबेमें [मण्डलमें] दो दो कार्य्य कुशल माण्डलीक [सूबेदार] नियत किये कि जो एक दरबारमें आवे या एक बीमार हो जावे तो दूसरा उसका काम करे। ऐसे ही दीवान बख्शी भी पृथक पृथक स्थापित कर दिये। गुजरातके सूबेमें ये तो थे ही, दूसरा नाम कुतुबुद्दीनखांका लिखा जो इनकी अनुपस्थितिमें काम किया करता था। अबुल कासिमको दीवान और निजामुद्दीन अहमदको बख्शी बनाया।

सुलतान मुरादके विवाहमें जाना।

सन् ३२ में (१) शाहजादे मुरादका विवाह इनके साले खान आजम मिरजा अजीज कोकाकी बेटीसे ठहरा था। इसलिये बादशाहने इनको लिखा कि अगर उस देशमें शान्ति हो गयी हो तो दरबारमें उपस्थित हो जाओ। वहां उन दिनों कोई अशान्ति भी न थी। इस वास्ते ये साडनी पर सवार होकर १५ दिनमें १६ उर्दी (२) बहिश्तको बादशाहके पास पहुंचे जो उस समय पंजाबमें थे और २५ को (३) शाहजादेका विवाह हो गया।

दरबारमें पञ्चायत।

खान खाना बहुत दिनों तक दरबारमें रहे। बादशाह बड़े बड़े कामोंमें उनको भी पञ्च और मध्यस्थ बनाते थे जिसका एक दृष्टान्त यह है कि शहबाज खां और राजा टोडरमल वजीरका आपसमें हिसाबका झगड़ा था। उसकी सफाईके लिये बाद-

१। सन ३२ चैत सुदी ३ संवत १६४४ को लगा था।
२। द्वितीय बैसाख बदी १४ संवत १६४४।
३। द्वितीय बैसाख सुदी ८ संवत १६४४।

शाहने इनको अजबुद्दौला, हकीम अबुलफतह, और शेख अबुल फजल को पञ्च बनाया था जिन्होंने दोनोंके स्वार्थको अलग करके न्यायसे चुका दिया।

खानखाना काश्मीर और काबुलमें।

सन् ३४ में (१) बादशाह काश्मीरको गये। ये भी साथ थे। बादशाहने उस भूमिकी शोभा देख कर हीरापुरसे इनको बडे शाहजादे और बेगमोंके लानेके लिये भेजा। शाहजादा तो चला आया और बेगमोंको मार्गकी सङ्कीर्णतासे नौशहरेमें छोड आया। बादशाह जो बेगमोंकी प्रतीक्षामें थे शाहजादे पर बहुत क्रुद्ध हुए और खानखानाको भी लिखा कि जो शाहजादेकी मत मारी गयी थी तो तुमने क्यों ऐसा किया।

यह कार्रवाई करके आप अगवानी हो कर बेगमोंको लानेके लिये अकेले हीरापुर तक पीछे चले गये; फिर मन्त्रियोंकी विनय पत्रिकाओंके पहुंचनेसे लौट आये और इन्होंको लिख भेजा कि बेगमोंको अच्छी तरह ले आना।

ये बडे परिश्रमसे मार्ग साफ करके कहारोंको सहायता देते हुए बेगमोंको ले आये जिससे बादशाह बहुत प्रसन्न हुए। (२)।

तुजक बाबरीका अनुवाद।

१ अमरदादको (३) बादशाह काश्मीरसे चलकर काबुलको गये और ८ आजरको (४) काबुलसे हिन्दुस्थानको लौटे। रास्ते में १२ आजरको (५) योरत बादशाह नामक पडावमें डेरे हुए। वहां इन्होंने बाबर बादशाहके इतिहासका फारसी

१। सन् ३४ चैत सुदी ५ सं १६४६ को लगा था और बादशाह १६ उर्दी बहिश्त जेठ बदी ७ को रातको काश्मीर गये थे।

२। ८ तीर सावन बदी ४ को यह काम हुआ था।

३। सावन सुदी १२स १६४६। ४। मगसर बदी ४स १६४६

५। मगसर बदी १३।

अनुवाद जो इस अवकाशमें किया था बादशाहकी दृष्टिमें लाकर रखा तो बादशाहने बहुत धन्यवाद दिया। यह इतिहास स्वय बाबर बादशाहका लिखा हुआ तुर्की भाषामें था जिसको हिन्दुस्थानी लोग नहीं समझ सकते थे। इन्होंने उसको फारसीमें (१) करके उन लोगोंका बड़ा उपकार किया।

महा मन्त्री होना।

जब इस तरह इनकी कार्यदक्षता और निःस्वार्थता बादशाहको निश्चय हो गयी तो उन्होंने १२ दे (२) सन् ३४ को बारी काश्राव (३) नामक पडाव पर इनको वकालतका बहुत् अधिकार दिया जो राजा टोडरमलके मरजानेसे खाली हुआ था।

वकालतका ओहदा मुगलोंके राज्यमें सर्वोपरि था। वकील बादशाहका प्रतिनिधि समझा जाता था। इनके बाप भी इसी पद पर थे।

जौनपुर जागीरमें।

गुजरात इनसे उतरकर मिरजा अजीज कोकाको मिली तो जौनपुर इनको जागीरमें मिला और गजनी खांको जिसे उन्होंने पकड़ा था और जो अब दरबारमें आकर निरन्तर सेवा किया करता था बादशाहने ८ उर्दी बहिश्त (४) सन ३५ को जालोर प्रदान किया जो इन्होंने उससे छीनकर दूसरेको दे दिया था।

दारनका जन्म।

१२ आजर (५) सन ३५ को इनका तीसरा बेटा दारन जन्मा। इनको सदा सन्तानकी वांछा रहा करती थी। जब गुजरातमें थे तो

१। फारसी तुजक बाबरी छप गयी है उसमें तो इनका नाम नहीं है पर छापेवालेने ऊपर छापा है।

२। पौस वदी १२ संवत १६४६। ३। यह स्थान काबुल और सिन्धु नदीके बीचमें है। ४। वैसाख वदी १० सं० १६४७। ५। मगसर सुदी ८ सं० १६४७।

एक रात बादशाहने शेख अबुलफज़्लसे कहा कि खानखानाको लिख दो कि ईश्वर शीघ्रही तीन पुत्र देगा। उनके ऐरच, दाराब, और कारन नाम रखना। सो वैसाही हुआ और इन्होंने इसका बडा उत्सव किया। उसमें बादशाहको भी बुलाया। बादशाह गये और इनका मान बढाया।

कंधार जाना।

२४ दे (१) सन ३५ को बादशाहने इन्हें कंधार जानेका हुक्म दिया। शाहबेग खां, रावल भीम दलपत जानशबहादुर, बलभद्र राठोड, शेरखां आदि ४५ अमीरोंकी नौकरी इनके साथ बोली गयी।

कंधार पहिले तो इनके बापकी जागीरमें था; फिर बादशाहने ईरानके बादशाहको दे दिया था और उसकी तरफसे मुजफ्फर हुसेन मिरजा और रुस्तम मिरजा कन्धारमें थे। अब ईरानका बल घट गया था और वे भी बदले हुए थे। उधर तूरानका बादशाह कन्धारकी तावमें था; इसलिये बादशाहने कन्धार लेनेका विचार करके इनसे कहा कि बलूचस्तानके रास्तेसे जाओ। जो वे लोग हुक्म मान लें तो वह सरस देश उन्होंके पास छोड देना, नहीं तो पूरा दण्ड देना और ठट्ठेका जमींदार अबतक सेवामें नहीं आया है, इस वास्ते किसी सुपात्र पुरुषको उसके पास भेजना जो वह आजावे या सेना साथ कर दे तो ठीक, नहीं तो अभी कुछ न बोल कर लौटते वक्तायलक्ष लेना।

इन्होंने कूच करके लाहोरसे एक कोसपर डेरा किया। पहिली बहमनको (२) बादशाह वहां पधारे। बडी सभा जुडी। खूब नजर निछावर हुई।

मुलतानमें पहुंचना।

मुलतान और भक्कर इनकी जागीरमें थे; इसलिये इन्होंने पासका रास्ता जो गजनी और बंगश होकर था, छोडकर दूरका

१। माघ वदी ५। २। माघ वदी १०सवत् १६४७।

छाड़ा लिया और लोधी लोगोंने कहा कि कन्धार तो निर्धन देश है और ठठ्ठा मालदार है जिसपर इन्होंने बादशाहसे सिन्ध लेनेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने इनको आज्ञा देकर शाहजादे दानियालको कधार पर भेज दिया।

सुलतानके पास बिलोची सरदार आकर मिले। भक्करके समीप व्यूह रचा गया।

मिरजा जानीने दूत भेजकर कहलाया कि जो मेरे देशमें उपद्रव न होता तो मैं खुद कन्धारको चलता। अब अपनी सेना आपके साथ कर दूंगा।

सिंधपर चढ़ाई।

इन्होंने दूतोंको कैद करके लम्बे लम्बे कूच किये। इतनेमें यह खबर आयी कि सहवानके किलेमें आग लगी और धान चारा जल गया।

अब इन्होंने एक सेना जलमार्गसे और दूसरी स्थल मार्गसे भेजी। पहले जल सेनाने सहवानके नीचेसे जाकर कश्तीका ले लिया और किलेवालोंको तोप और बन्दूकसे कुछ हानि न हुई। यह नगर भी उसी भांति सिन्ध देशका द्वार है जैसा कि गढ़ी बङ्गालेका और बारहमूला काश्मीरका है।

ये किलेके पास जाकर ठहरे। किला सिन्ध नदीके एक ऊंचे तटपर था। नदीकी तीन धाराएं उसके पास आकर मिली थीं। किरावेग नावोंमें बैठकर गया और बहुतसा माल लूट लाया। मिरजा जानी यह बात सुनकर लड़नेको आया। नसीरपुरके पासकी जगहको जिसके एक ओर नदी और दूसरी ओर नाले थे उसने किला बनाकर तोपों और जङ्गी नावोंसे सुदृढ़ किया।

इतनेमें रावल भीम और दलपत राठौर जेसलमेर और बीकानेरसे अमरकोट होकर आये और नसीरपुरपर जल और स्थलके मार्गसे फौज भेजी गयी कुछ लोग घाटीपर भी होते गये।

सिन्धियोंपर फतह।

१८ आबान (१) सन् ३६ को भनुओंसे ६ कोस पर जा पहुंचे। २१को(२) कुछ फौज सिन्धियोंकी नावोंमें बैठकर लडनेको आयी। परन्तु रात हो जानेसे लडाई न हुई। बादशाही सेना रातके अंधेरेमें नदीसे उतर गयी। तडके ही तोपें बहुत तेजीसे चलने लगी। जो लोग पानीसे उतर गये थे, उन्होंने तीरोंकी वर्षा की; फिर बरछे और जमधरकी मार दी। निदान सिन्धी भाग गये। बडी फतह हुई। ४ नावें माल और मनुष्यसे भरी पकडी गयीं। एकमें हुरमुज बन्दरका एलची भी था जो व्यापारियोंके प्रबन्धके लिये ठट्ठेमें रहता था और जानी बेग जो यह जतलानेके लिये कि टग्र देशान्तरके लोग सहायक बनकर आये हैं अपने कुछ आदमियोंको कई देशोंके लोगोंकी वरदी पहिना कर लाया था।

सिरजा जानीके ऊपर दोनों तरफसे जानेका विचार होकर रह गया। नहीं तो पूरी फतह हो जाती। इस फतहकी बधाईमें जो साडनी सवार दौडाया गया था, वह १३ आजरको।(३) लाहोरमें बादशाहके पास पहुचा।

ठट्ठेपर फौज।

फिर सिंधियोंने रास्ता रोक कर रसद बन्द कर दी जिससे इन्होंने २७ देको (४) किलेका घेरा छोड दिया और जूनमें (५) जाकर छावनी डाली, बाकी फौजें ठट्ठे पर गयी।

१। मगसर वदी १० सं० १६४८।

२। मगसर वदी १२ स० १६४८।

३। पोष वदी ५ संवत १६४८।

४। माघ सुदी ३ संवत १६४८।

५। यह वही जगह थी जहा हुमायूं बादशाह भी रहे थे और इनके बाप गुजरात होकर पहुचे थे।

मिरजा जानीकी हार और सन्धि।

मिरजा जानी किलेसे निकलकर सहवाको गया। इन्होंने ख़्वाजा मुकीम और राजा टोडरमलके बेटे धारू वगैरहको उसपर भेजा; इनसे और उससे बडी लडाई हुई। पहले तो मिरजो जीते और धारू वीरतापूर्वक मारा गया, परन्तु पीछे बादशाही फौज जीती और मिरजा जानी हार कर अपने किलेको भागा जिसको इन्होंने धावा मार कर उसके पहुंचनेसे पहले ही विध्वंस कर दिया। तब वह सेहवानसे ४० कोस सिन्धु नदीके निकट एक और किला बनाकर रहा। इन्होंने २६ फरवरी (१) सन् ९० को जाकर उसे भी घेरा। दोनों तरफसे तीर और बन्दूककी लडाई होने लगी। नैनकोटके किलेमें जो थे, वे अपने किलेदारका सिर काट लाये और इस भांति वह किला अनायास ही हाथ आ गया जिसके हर्षमें मोरचे आगे बढ़ाये गये। सिंधियोंमें बीमारी फैली बादशाही लशकरमें रसद बन्द हुई तो बादशाहने बहुतसा नाज और रुपये भेज दिये। उसके पहुंचनेसे सेनाका साहस बढ गया और वह यहांतक बढती हुई चली गयी कि बाहरवाले अन्दरवालोंके हाथसे बरछे छीन लेते थे। निदान मिरजा जानीने सेविस्तानका जिला, सेहवानका किला, २० जङ्गी नाव और अपनी बेटी मिरजा एरचको देना स्वीकार करके सन्धि कर ली और बरसातके पीछे बादशाहकी सेवामें उपस्थित होनेका भी वचन दे दिया। तब इन्होंने १६ खुरदादको (२) मोरचे उठा लिये। मिरजाने बेटी व्याह दी और सहवान सौंप देनेको आदमी भेज दिये।

मिरजा जानीका मिलाप और मुल्ला शकेबीको २००० मोहरोंका इनाम।

फिर मिरजा जानी मिलनेको आया। उस दिन इन्होंने एक

१। वैसाख सुदी ३ संवत १६४८।

२। प्रथम आषाढ बदी १० संवत १६४८।

बडी सभा सजायी थी। इनके नौकर मुल्ला अकेबीने इस फतहके विषयकी एक कविता बनायी थी, वह उसने इस सभामें पढी जिसकी रीभमें इन्होंने १000 अशरफिया उसको दी और इतनी ही मिरजा जानीने भी सिर्फ एक पदके पारितोषिकमें प्रदान की जिसका यह आशय था,—

"जो हुमा (पक्षी) आकाशमें उडा करता था, उसको तूने पकडा और जालसे छोड दिया।"

मिरजाने मुल्लासे कहा,—"रहमत खुदा"की तुभपर कि तूने मुझको हुमा कहा। जो गीदड कहता तो तेरी जीभ कौन पकडता ?

फिर मिरजा जानीपर चढाई।

फिर इन्होंने सेहवानसे २० कोस सन नामा ग्राममें छावनी डालकर बरसात व्यतीत की। मिरजाने कहलाया कि सावनू (१) साख लेकर दरगाहको चलूंगा और उसने सेहवानका पूरा प्रान्त भी नहीं सौंपा था। वरन गाव और हालाकंडीको भी नही छोडा था। इसलिये इन्होंने उसके दूतको ठहराके कुछ फौज सिन्धु नदीसे उतार कर ठट्ठेको भेजी। कुछ जङ्गी नावो में बिठायी और कुछ नदीके निकटसे चलायी। विचार यह था कि तीनो फौजें शीघ्रतासे पहुंच कर नसीरपुर ले ले जिससे मिरजा जानी दरगाह जानेमें विलम्ब न करे।

नसीरपुरकी फतह।

फिर ये दूतको विदा करके पीछेसे आप भी आ गये और नसीरपुर ले कर उन तीनो फौजोको उसी भांति आगे बढाया। मिरजा ठट्ठेसे तीन कोस चलकर नदीके तटको दृढ करनेके लिये वहा ठहरा था कि लोगोंने जाकर उसका बाजार लूट लिया। मिरजाने वकील भेजकर कहलाया कि प्रतिज्ञा भग क्यों की ? इन्होंने जवाब दिया कि प्रतिज्ञा तो हमारी टूटनेवाली नहीं है,

(१) फसल खरीफ।

परन्तु सुना था कि हुरमुज बन्दरके फरगी इस देशपर धावा करना चाहते है; इसलिये बन्दर लाहरीको जाते है। यह कहकर नू लौटा दी।

सिरजा जानीका सब देश सौंप देना।

१० आबान (१) सन् ३७ को ये और मिरजा मिले और उन्हों ठट्ठेको कूच किया। जब रास्तेमे सिरजाकी तरफसे कुछ विरो न देखा तो कहा कि निवाडा क्यों नहीं दे देते हो जिससे फि कोई कुछ कह ही न सके? मिरजाने लाचारीसे सब देश सौं दिया और दरगाहमें जानेकी तय्यारी की।

ठट्ठे और लाहरी बन्दरमें जाना।

ये ठट्ठेको देखकर बन्दर लाहरीमें गये और 'शाह बेग आ कई पुरुषोसे कहा कि तुम मिरजाको लेकर आगे चलो। तब कु लोगोंको ठट्ठेमें छोड कर स्थलके मार्गसे लौटे और फतह बाग पास मिरजासे आ मिले।

मिरजा जानीको दरबारमें लाना।

ये २९ बहमन (२) सन् ३७ को सैयद बहाउद्दीन आदि व अमीरोंको सिन्धमें छोडकर मिरजा जानीके साथ दरगाहमें पहु चे ८ फरवरदीन (३) सन् ३८ को लाहोरके दौलतखानेमें दोनों मुजरा हुआ।

दक्षिण जीतनेको जाना।

२५ मेहर (४) सन् ३८ को बादशाहने सुलतान दनियाल दक्खिन फतह करनेको भेजा। इनको भी साथ किया; पर

१। कार्तिक बदी १२ संवत १६४९।

२। फागुन बदी २ संवत १६४९।

३। चेत बदी ११ संवत १६४९।

४। कार्तिक बदी ८ संवत १६५०।

इसी कामपर सुलतान मुराद पहले जा चुका था। वह अब दनियालके जानेसे अप्रसन्न होगा, यह सोचकर बादशाहने दनियालको बुला लिया और सुलतानपुरमें आकर १५ दे (१) सन् ३८ को इन्हें हुक्म दिया कि आगरेमें जाकर सेना एकत्र करें और सुलतान मुरादको लिखा कि खानखाना सिपहसालारके आते तक गुजरातमें ठहरा रहे। इसपर वह भडोचमें ठहर गया।

शाहजादे मुरादकी नाराजी।

ये आगरे आये और जब सेना इकट्ठी हो गयी तो भेलसेमें जाकर कुछ दिनोतक रहे जो इनकी जागीरमें था। ९ अमरदाद (२) सन् ४० को उज्जैनमें पहुंचे। सुलतान मुराद गुजरातमें इनका रास्ता देख रहा था। अब जो इनका मालवे होकर जाना सुना तो कुपित होकर इनसे जवाब पूछा। इन्होंने अरजी भेजी कि खानदेशका जमीदार राजा अलीखा भी बादशाही फौजके साथ हो जावेगा। उसको लेकर आता हूं। तब तक आप गुजरातमें शिकार खेलें।

शाहजादा इस जवाबको सुनकर फिर भडका और गुजरातसे दक्षिणको चल दिया। तब तो ये लाव लशकर तोपखाना और फीलखाना मिरजा शाहरुखको सौंपकर दौडे और १८ आजर (३) सन् ४० को चांदोरके पास जो अहमदनगरसे ३० कोस इधर है शाहजादेकी सेवामें पहुचे; परन्तु शाहजादेने अपने अतालीक सादिकखांके बहकानेसे इनको दरबारमें नहीं बुलाया और जो दूसरे दिन बहुतसी कहा सुनीसे बुलया भी तो बहुत रुखाईसे सलाम लिया। इससे ये और दूसरे अमीर जो इनके साथ थे दिलमें नाराज हुए और कामसे हाथ खेंच बैठे। शाहबाज खां भी इनके साथ गया था। सादिक खांसे उससे भी शत्रुता थी। इसलिये वह भी मारे डरके दरबारमें कम जाता था।

१। पोस वदी १३।१४ संवत १६५०।

२। सावन वदी ११ संवत १६५२।

३। मगसर सुदी ९ संवत १६५२।

अहमदनगर पहुंचना।

७३ (१) सन् ४०को शाहजादा अहमदनगरसे आधकोस पहुंचकर ठहरा। वहां बहुत लोगोंने आकर रक्षापत्र लिये फिर ये और शहबाज खां शहरसे गये। परन्तु इनकी बेपरवाईसे सिपाही प्रजाको लूटने लगे उनको बहुत परिश्रमसे रोका तो सही, परन्तु शहर वालोंका दिल फिर गया। चांदबीबीने जो अहमदनगरके बादशाह बुरहान निजामुल्मुल्ककी बहन थी दरवाजे बन्द करके लड़ाईको ठानी।

दूसरे दिन शाहजादेने अहमदनगरको घेरा। तीसरे दिन शाहअली और अभंगर खां उधरसे इनके मोरचेपर आये और लड़ाईमें हार खाकर गये, परन्तु आपसकी फूटसे उनका पीछा नहीं किया गया।

आपसकी फूट और अहमद नगरवालोंसे सन्धि।

सेनामें जो स्याने आदमी थे उन्होंने कहा कि यहां ३ बड़ी फौजे हैं। तीनों तीन काम करें अर्थात् किलेकी तरफ देशका दबाना और रास्तोंकी रक्षामेंसे एक एक काम लेले परन्तु कुछ स्थिर न हुआ;

११ असफन्दारमजको (२) किलेकी कुछ दीवार बारूदसे उड़ायी गयी, मगर अन्दर जानेमें इतनी ढील हुई कि किलेवालोंने उसकी मरम्मत करली और बराड देना करके सन्धिकी बात चलायी शाहजादेने स्वीकार करके १० फरवरदीन (३) सन् ४१ को अहमद नगरसे कूच किया और १४ उर्दी बहिश्तको (४) महकरमें (५) पहुंचकर जगह जगह थाने बिठा दिये। एक थानेपर खानखानाको

१। पौष बदी १३ संवत १६५२।

२। फागुन सुदी २ संवत १६५२।

३। चैत सुदी १ संवत १६५३।

४। बैसाख सुदी ६ संवत १६५३।

५। बराड़ देशका एक स्थान।

भी रख दिया, क्योंकि सादिकखांने उससे यह जड दी थी कि मैं तो आपका गुलाम हूं और चाहता हूं कि यह फतह आपके नामसे हो और खानेखाना चाहता है कि अपना नाम करे और सेनापति भी आपही अकेला बना रहे।

दक्षिणी दलका उमडना।

शाहजादेके आनेसे दक्षिणमें बडी खलबली पडी। अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुण्डाके बादशाहोंने मिलकर लडने पर कमर बांधी। ६0000 सवारोंकी एक सजी हुई सेना तरल तोपखाने सहित प्रस्तुत की। बीजापुरका (१) नाजिर सुहैलखां हबशी सेनापति बना और लडनेको आया।

दक्षिणियोंसे लडने जाना।

शाहजादेने अपने बहनोई मिरजा शाहरुखको उसपर जानेके लिये उद्यत किया और इनको सेना सज्जित करनेका हुक्म दिया। तब ये १५००० सवारोंका एक सुदृढ़ व्यूह रचकर कि जिसके १० अंग प्रत्यंग थे शाहपुरकी छावनीसे आगे बढ़े और पाथडीसे १२ कोस असनी गांवके पास लडाईकी जगह देखकर ठहर गये। व्यूहके अङ्ग प्रत्यङ्ग निम्न लिखित रूपके थे;—

१। कल्ब अर्थात् बीचके अङ्गमें ये आप और मिरजा शाहरुख आदि २४ अमीर थे।

२। दाहने अङ्गमें सैयद कासम और दीधोदास आदि १७ वीर थे।

३। बायें अङ्गमें खान देशका स्वामी राजा अली खां था।

४। हिरावल अर्थात् सबसे आगेके अंगमें जगन्नाथ और दुर्गादि २० राजपूत सरदार थे।

५। अलतमश अर्थात् हिरावल और कल्बके बीचमें अली मरदान बहादुर आदि १० अमीर थे।

६। दाहने हाथकी सहायक सेनामें गजनीखानादि ८सरदार थे

(१) क्लीव।

७। बाये हाथकी सहायक सेनामें हसनशाह नजरबेग मीर बहुतसे तुरकमान थे।

८। दहिने हाथके प्रत्यगमें शेर ख्वाजा आदि १४ अमीर और अहदी थे।

९। बांये हाथके प्रत्यगमें मीर अबुलमुजफ्फर आदि १८ अमीर थे।

१०। चन्दावल अर्थात् पिछले अङ्गमें मलिक रुस्तम आदि ६ सरदार थे।

उधरसे सहेली भी अपनी सेनाको सजाकर आया। अहमद नगरवालों अर्थात् निजामुल्मुल्ककी सेना तो बीचमें थी। बीजापुरके आदिलखांकी दहने और गोलकुण्डेके कुतुबशाहकी बाये हाथ पर थी।

एक विशाल विजय।

ये २८ बहमन (१) ४१ को पहर दिन चढे गोदावरीसे उतर कर युद्धमें प्रवृत्त हुए जिसका प्रारम्भ दाहिने प्रत्यगसे हुआ। शेर-ख्वाजा खूब लड़ा। पिछले दिनको घोर संग्राम मचा। दखनी बहुत थे और उनके पास तोपे भी बहुत थी। इससे बादशाही फौज चल विचल हो गयी; परन्तु जगन्नाथ राय दुर्गा राजसिंह और दूसरे राज पूत सरदार जो अलग-अलग घोडे थामे खडे थे, बीजापुरवाले राजा अलीखांके ऊपर जा पडे। वह वीरतासे लडकर वहीं मर गया। उसके अमीर और ५०० नौकर भी काम आये। दखनी राजा अली-खांको, मिरजा शाहरुख और खानखाना जानकर अपनी जीत होनेके भरोसेसे उस अन्धेरी रातमें कमर बांधे खडे रहे। इधर बादशाही फौजको अपनी विजयका निश्चय था और राजा अली खांके वास्ते यह कल्पना की जाती थी कि वह दुश्मनोंसे मिल गया या निकल भागा भी तो उसका डेरा लुट गया है।

१। फागुन बदी ३० संवत १६५३। तवारीख फरिश्तामें १८ जमादिउस्सानी है [फागुन बदी ४] इस विषयकी आलोचना आगे की जावेगी।

द्वारकादास हिरावलमें और सैयद जलाल शहनी अनीमें काम आये। रामचन्द्र जो बडे बडे धावे करता था राजा अली-खांकी फौजमें २० घाव खाकर गिरा और रात भर मुर्दों में पडा रहा। तडके उसको उठाकर डेरे पर लाये और कई दिनोंमें वह मर गया।

प्रातःकाल बादशाही सेना जो रात भरकी प्यासी थी पानी पीनेको नदीकी ओर चली। यह अब ७००० थी। दखनी जो २५००० थे लडनेको आये और थोडीसी लडाई लडकर भाग गये। तीनों बादशाहोंके कई अमीर और बहुतसे सिपाही खेत रहे।

इस बडी फतहसे सबको अचम्भा हुआ। ४० हाथी और बहुत सी तोपें हाथ आयीं।

दूसरे दिन राजा अलीखांकी लोथ मिली। शङ्का करने वाले लज्जित हुए।

कुछ विशेष वृत्तांत मुआसिर-उल उमरासे।

मुआसिर उल उमरामें कुछ विशेष वृत्तान्त इस युद्धका लिखा है। वह भी हम यहां लिखे देते हैं,—

पहर भर दिन चढा था कि लड़ाई शुरू हुई, दुशमनकी तोपोंके दनादन चलनेसे सेनाओंके दिल दहलने लगे। उस समय अलीबेग रूमी जो उस तोपखानेका अफसर था खानखा-नाको प्रारब्धके प्रभाव तथा ईश्वरकी प्रेरणासे दौडता हुआ इनके पास आया और यह कह गया कि सारी आतशबाजी तुम्हारे बराबर चुनी हुई है और अभी उसमें आग दी जाती है। इस वास्ते जो आप दाहिनी तरफको मुड जावें तो ठीक होगा।

खानखानाने ऐसा ही किया और राजा अलीखांसे भी इधर आनेको कहलाया। वह खानखानाकी जगह तक पहुंचा था कि गनीमका तोपखाना एकदमसे चला। सूरज धुएंसे छिप गया। अबकी फौज राजा अलीखांको खानखाना समझकर बढी। इधरसे राजपूत जो हरोलमें थे दौडे और राजा अलीखांका वहीं

काम तमाम हो गया और उसके अमीर सब उसके पास पास कट मरे।

इधरसे खानखानाने धावा किया और दुशमनोंकी फौजको वहांसे भगाया। परन्तु उसी अवसरमें रात हो गयी और दोनों फौजें अपनी अपनी जीत समझ कर सारी रात रणमें जमी खड़ी रहीं। कोई भी घोड़की पीठसे नहीं उतरा। दखनी तो यह समझते थे कि हमने खानखानाको मार डाला और उसकी पिछली सेनाका नाश कर दिया है। खानखाना यह जानते थे कि बादशाही लशकरकी फतह हुई है।

दूसरे दिन ज्योंही प्रातःकालका उजाला हुआ, बादशाही लशकर जो रात भरका प्यासा था और जिसमें ७००से ज्यादा आदमी न थे पानी पीनेके वास्ते नदीको जाने लगे। सुहेल यह देखकर २५००० हजार सवारों सहित चढ आया। बड़ी लड़ाई हुई। दक्खनकी तीनों फौजोंमें बहुतसे आदमी मारे गये।

उस समय दौलतखां लोदीने जो हिरावलमें था इनसे कहा कि हम कुल ६०० सवार हैं। यदि सुहेलखांके या उसके तोपखाने- और हाथियोंके सामने जाकर लडें तो आधे रास्तेमें ही खेत रहें। इसलिये उसकी पीठ पर जाकर धावा करते हैं।

खानखानाने कहा-अरे। यह क्या करता है। दिल्लीका नाम डबोता है। दौलतखांने कहा। जो जीते रहेंगे तो १०० नयी दिल्ली बसा लेंगे, और जो मारे गये तो खुदासे काम है।

निदान जब दौलतखांने चाहा कि घोड़ा बढावे तो सैयद कासमने जो बारहके (१) सैयदोंके साथ उसकी अरदलीमें था कहा कि हम तुम हिन्दुस्थानी हैं, मरनेके सिवाय और उपाय नहीं है, परन्तु खानखानाका इरादा तो जानना चाहिये कि क्या है।

(१) बारह एक बस्तीका नाम है। वहांके सैयद वीरतामें सिद्ध थे।

तब दौलतखां लौटा और खानखानासे बोला कि इतनी बडी दलबादल जैसी सेनासे सामना है और जीत दुविधेमें है। यदि हार हो जावे तो आप वह जगह बता दीजिये कि जहां आकर आपको ढूंढ लेवें। खानखानाने कहा कि "लोथोंके नीचे।"

यह सुनते ही दौलतखां (१) सैयदोंको साथ लेकर गया। उसने पीछेकी ओरसे धावा करके शत्रुओंको ऐसा गडबडाया कि सुहेलखां उतने बडे लाव लश्करका धनी होकर भी भाग निकला।

कहते हैं कि उसी दिन ७५ लाख रुपये रोकड और माल खानखानाके पास था। वह सब उन्होंने लुटा दिया और सिवाय ऊंटोंके बोझके और कुछ अपने पास नहीं रखा।

दखनियोंके ४० हाथी तोपखाने समेत लूटमें आये, परन्तु जब राजा अलीखांके मारे जानेका हाल खानखानाको मालूम हुआ तो उतनी बडी फतहका आनन्द शोक और सन्तापसे बदल गया।

यह फतह सन् १००५की जमादिउस्सानी महीनेके (२) पत्तमें हुई और यह ऐसी बडी फतह थी कि जिससे सारा दक्षिण देश कांप उठा था। परन्तु यहां शाहजादेके अति मद्यप होने और सेनापतियोंमें फूट पड जानेसे इतना भी न

१। दौलतखां लोदीका बाप सलीम शाह सूरके अमीरोंमेंसे था जब बाबर बादशाहने लोदियोंका राज्य ले लिया तो उमरखां गुजरात चला गया था। वह तो वहीं मरा और दौलतखां खानखानाका नौकर हुआ, परन्तु खानखाना उसको भाईके बराबर रखते थे। बहुतसी लडाइयां उन्होंने दौलतखांकी वीरतासे ही जीती थीं। फिर शाह दानियालने उसको खानखानासे मांग लिया और वह उसीकी नौकरीमें मर गया।

२। फागुन वदी ३० सं० १६५३।

हो सका कि १०५ कोस तो शत्रु को भागी हुई सेनाका पीछा करते जिसमें बादशाही लशकरकी धाक और भी दक्खिनियोंकी दिलोंमें बैठ जाती।

खानखानाका शाहजादेसे रूठ जाना।

फिर ये शहजादेका साथ छोडकर अपनी जागीरमें (१) जा बैठे और वहांसे बादशाहके पास गये।

हम इस हालको तो यहीं छोडते हैं और तवारीख फरिश्तां परीक्षासे कुछ विशेष वृत्तान्त इस विषयका उद्धृत करते हैं। इस इतिहासका कर्ता मुहम्मद कासम फरिश्ता बीजापुरका रहने वाला था। इस प्रसङ्गसे उसने दक्षिणकी बादशाहतोंका वर्णन विस्तार पूर्वक किया है।

अहमद नगरका हाल तवारीख फरिश्तासे।

फरिश्तासे जाना जाता है कि अहमदनगरका राज्य उस समय सरदारोंकी आपा धापीसे पतला पडा हुआ था। बुरहान निजामशाहका बेटा इबराहीम जिसको तख्त पर बैठे हुए ४ महीने ही हुए थे, बीजापुरके बादशाह आदिलखांके मुकाबलेमें मारा गया था। अहमदनगरमें दो बड़े थोक दखनियों और हबशियोंके थे। दखनियोंका सरदार मियां मञ्झू था। उसने रणागनसे अहमदनगरमें आकर इबराहीम निजामशाहके बेटे बहादुरशाहको तो जो १॥ वर्षका था उसकी फूफी चांदबीबी से छीनकर जुनेरके किलेमें भेज दिया और अहमद शाहको जो दौलताबादमें कैद था, बुलाकर तख्त पर बिठाया। उस समय तो हबशी भी सम्मत थे। परन्तु पीछेसे उनके सरदार इखलास खाने यह जानकर कि अहमद शाह राजवंशमेंसे नहीं है। मियां मञ्झूसे झगडा किया। इस पर हबशियोंने अहमदन

१। जागीरका नाम नहीं लिखा है शायद भेलसेमें चले गये हों।

नगरको घेर कर जुनेरके किलेदारसे बहादुर शाहको मांगा। परन्तु उसने बिना हुक्म मियां मञ्झूके नही दिया। हवशियोने अहमदनगरके बाजारमेंसे एक लडकेको पकडकर कहा कि यह निजामके घरानेसे है और उसको बादशाह बनाकर दस बारह हजार सवार इकट्ठे कर लिये। तब मियां मञ्झूने अर्जी भेजकर शाहजादे मुरादको गुजरातसे बुलाया। यह अर्जी अभी रास्तेमें ही थी कि हवशियोंमें जागीरों और कामोंके बाटनेपर झगडा होकर तलवार चली। दखनी सरदार जो उनसे आमिले थे उनका साथ छोडकर मियां मञ्झूसे मिल गये। तब तो मियां बाहर निकलकर २४ मुहर्रम(१) शनिवार सन् १००४ को हवशियोसे लडा और उनको जीतकर शाहजादे मुरादके बुलानेसे पछताया। इतने हीमें सुना कि खानखाना और राजा अलीखां शाहजादेसे आमिले हैं और शाहजादा ३०००० हजार सवार मुगल पठान और राजपूतों सहित कूचकरके अहमद नगरकी सीमामें आपहुंचा। तब तो मियां मञ्झूको बडी चिन्ता हुई और वह आप तो सेना एकत्र करने और आदिलखां तथा कुतुबशाहकी सहायता लेनेको अहमदनगरकी तरफ चला गया और अनसार खांको चांदबीबीकी और खजानेकी चौकसीपर किलेमें छोड गया। चांदबीबी मियां मञ्झूसे नाराज थी और उसको अनसारखांका भी भरोसा न था इसलिये उसने मुरतिजा निजामशाहके धाभाई मुहम्मदखांसे उसके मारनेको कहा जिसने बडी वीरतासे अनसारखांको मार डाला और किलेमें बहादुर निजाम शाहकी आन दुहाई फेर दी।

२३ रबीउस्सानी (२) १००४ को शाहजादा मुराद बडे बडे अमीरो सहित उत्तर दिशासे आकर अहमद नगरके बाहर ईदगाहके पास खडा रहा और उसके कुछ दिन पहले सिपाही काले

१। आसोज बदी ११ संवत १६५२

२। पौष बदी ८ संवत १६५२

चबूतरेके मैदान तक आगे बढ़ते हुए चले गये परन्तु चांदबीबीने तोपोंके कई फैर उनपर किये जिनसे वे हट गये और शाहजादा हश्तबहिश्त नामक बागमें जाकर रात भर जागता रहा।

शाहजादेने अहमद नगर और बुरहानाबादकी रक्षाके लिये कुछ आदमी भेज दिये थे और प्रजा तथा व्यापारियोंको अभय दान दे दिया था, इससे लोग मुगलोंका विश्वास करके अपनी अपनी जगह बैठ रहे थे।

दूसरे दिन शाहजादा, मिरजा शाहरुख, नव्वाब खानखाना, शहबाजखां कम्बो, सादिक मुहम्मद खां, मुरतिजा खां, राजा अलीखां और राजा जगन्नाथने किलेके नीचे आकर मोरचे लगाये।

२७ को (१) शहबाजखां कंबो जो दुष्टतामें प्रसिद्ध था, शाहजादेकी आज्ञाके बिना ही शहर देखनेका मिस करके सेना सहित आया और प्रजाको लूटने लगा। शाहजादे और खान खानाने जब यह सुना तो उसको बहुत झिड़का और बहुतसे लुटेरोंको भांति भांतिका दण्ड दिया। तो भी अहमदनगरके लोग तो रातको ही बाहर निकल गये।

उस समय निजामशाही अमीरोंके तीन स्वतन्त्र घेरे थे। एक मियां मझू का जो अहमदशाहको बादशाह जानकर आदिल खांकी सीमापर जा बैठा था, दूसरा इखलास खांका जो मोतीशाह नामक एक लड़केको बादशाह बनाये हुए दौलताबादके प्रान्तमें भड़का रहा था, तीसरा अभंग खांका वह भी आदिल खांके राज्यमें पड़ा था और बड़े बुरहान निजामशाहके बेटे शाह अलीको जो ७० वर्षका बूढ़ा था, बीजापुरसे बुलाकर बादशाह बना चुका था। इनको चांदबीबीने अहमदनगरको रक्षाके लिये शीघ्रतासे आनेका परवाना भेजा था, परन्तु इनके आनेसे पहले इखलास खां अहमदनगरके घेरेकी खबर सुनकर दौलताबादकी तरफसे आया। उसके साथ

१। पौष बदी १२ सं० १६५२।

१०००० सवार थे। खानखानाने अपनी सेनामेंसे ६००० सवार छांट कर दौलत खां लोदीके साथ उसके रोकनेको भेजे। गङ्गाके तटपर दोनोंकी मुठभेड हुई। इखलास खां हारा, दौलतखांने पीछा किया और पट्टनको जा लूटा।

फिर अभग खां शाहअलीको लेकर बीजापुरकी तरफसे आया। उसके दूत पहलेसे आकर किलेमें जानेका मार्ग जान गये थे सो वह उसकी सोधमें चला आ रहा था। परन्तु लडके ही उसके पहुचनेसे पहले सुलतान मुरादने, जो मोरचोंको देखने चढा था, वहां खाली जगह देखकर खानखानाको भेज दिया।

अभग खां ३००० हजार चुने हुए सवार और १००० बन्दूकची लेकर रातके अंधेरेमें वहां पहुंचा और इन लोगोंको सोया हुआ देखकर लडनेको चढ आया।

खानखाना २५०सवारोंसहित जो पहरे पर थे छतके ऊपर जाकर तीर मारने लगे और उनका नौकर दौलत खां भी ४०० पठान सहित आ गया और दौलत खांका बेटा ६००सवारों सहित चढा। तब अभग खां तो शाह अलीके बेटे और ४०० वीरों सहित खानखानाके डेरेमें होकर किलेमें घुस गया और शाहअली बाकी लशकरको लेकर जिधर आया था उधर होको भागा। दौलतखांने पीछा करके ९०० दखिनियोंको तलवारके घाट उतार दिया।

चांदबीबीने बीजापुरके बादशाहसे मदद मागी। आदिल खांने सुहेलखांको २५००० सवारों सहित भेजा। मियां मझू और अहमद निजामशाह वगैरः भी उसमें जा मिले। ५।६ हजार सवार और बहुतसे पैदल गोलकुण्डेके बादशाह मुहम्मदअली कुतुबशाहके भेजे हुए महदी कुलीको अफसरीमें आये।

सुलतान मुरादने ये खबरें सुनकर इन फौजोंके आनेसे पहिले ही अहमदनगर फतहकर लेनेका विचार करके ५ सुरगें अपने डेरेसे किलेमें लगायी और रज्जबकी चांद (१) रातको उनमें दारूद

(१) चैत सुदी २ स० १६५३।

भरकर दबादी। दूसरे दिन जुमेको नमाज पढ़नेके पीछे आग लगानेका इरादा था कि रात होको मुहम्मदखां गोगाजोने किलेमें जाकर उन सुरंगोंका पता बता दिया। चांद सुलतानाने २सुरंगकी बारूद तो शुक्रवारको दो पहरतक निकलवा ली। बाकी सुरंगकी खोज हो रही थी कि शाहजादे और सादिक मुहम्मदखांने जो नहीं चाहते थे कि अहमद नगरकी फतह खानखानाके नामसे हो, उनको सूचित किये बिना ही सुरंगोंमें आग देदी जिससे किलेकी ५० गज दीवार उड गयी, किलेवाले जो तीसरी सुरंगको खोद रहे थे कुछ तो वहीं मर गये और बाकी भाग निकले। चांदसुलताना फौरन महलसे निकली और तलवार लेकर वहां आ खडी हुई। उसे देखकर और लोग भी आगये। शाहजादे और उसके अमीर तो बाकी सुरंगोंके उडनेकी बाट देखते रहे और इन्होंने तोपें बान और बन्दूकें चुनकर रास्ता बन्दकर दिया और जब शाहजादेकी फौज धावा करके आयी तो उसपर ऐसे बान और गोले मारे कि घबराकर लौट गयी। किला फतह न हुआ। सबने चांदबीबीकी तारीफकी और उसने भी वहीं खडी रहकर रातोरात वह गिरी हुई दीवार फिर उठवाली।

शाहजादेने किला फतह न होने, नाज चारेके कम हो जाने और दक्षिणके बादशाहोंका कटक निकट पहुचनेसे खानखानाको सलाह पूछी कि अब क्या करना चाहिये। ये सादिकखांसे नाराज थे इसलिये पहिले तो इन्होंने यही कहा कि जो सब सरदारोंकी सलाह हो वही ठीक है। परन्तु जब बहुत कहा गया और सबने अपने विरुद्धाचरणपर पछतावा किया तो इन्होंने कहा कि उधरसे तो दक्षिणके बादशाहोंका कटक चला आरहा है और इधर अनाज घी घास और दूसरी आवश्यक वस्तुओंके न होनेसे घोडों और आदमियोंका बल घट गया है इसलिये यह समय लडनेका नहीं है। अभी तो यही उत्तम बात है कि यहांसे कूच करके बराडमें चलें और उस देशको फतह करें। जब अपना राज्य जम जावे और

यहांके आदमी अपनेसे हिलमिल जावें तो फिर इधर आकर अहमद नगरको फतह करलें। शाहजादेने और सब लोगोंने जो खुराक न मिलनेसे घबरा गये थे इनका कहना स्वीकार करके इन्हींको पूर्ण अधिकार इस कामका दे दिया। तब इन्होंने सुरतिजा खांको अहमद नगरमें भेजकर ऐसा उपाय किया कि चांदबीबीने दक्षिणके बादशाहों और अपने अमीरोंसे गुप्त सन्धि करली जिसमें यह ठहरा कि बराडका उतना प्रदेश जो तफावल खांके (१) पास था शाहजादा लेले और बाकी राज्य माहोरके किलेसे चोल बन्दरतक और परेंडेसे दौलताबादके किले और गुजरातकी सीमातक अहमद नगरके अधिकारमें रहे। जब इस सन्धि पत्रपर दोनों तरफके बड़े बड़े अमीरोंकी मोहरें हो गयीं तो खानखाना शाहजादेको लेकर चित्तोरके घाटसे दौलताबादकी तरफ चले गये। उस समय सुहेलखां अहमद नगरसे ६ कोस पर था। इस सन्धिकी खबर सुनकर दखनी और हबशी अमीर उसको, मियां मंझूको और अहमद शाहको छोड़कर अहमदनगरमें चले आये और चांदबीबीके हुक्मसे बालक बहादुर शाहको जुनेरसे लाकर बादशाह बना सुहेलखा, मिया मंझू और अहमदशाह बीजापुरको चले गये।

बहादुर निजाम शाहने अपने धा भाई मुहम्मदखांको पेशवा (२) किया उसने अभंगखांको कैदकर दिया जिससे फिर अहमद नगरके राज्यमें उपद्रव होनेकी चेष्टा हुई। चांदबीबीने फिर बीजा-

---

१। तफावल खा बराडका अन्तिम बादशाह था जिससे सुरतिजा निजामशाहने यह मुल्क सन् ९८२ संवत १६३१ में छीन लिया था।

२। दक्षिणी बादशाहोंमें पेशवाका खिताब मुख्य मन्त्रीको दिया जाता था। वही खिताब पूनाके पेशवाओंने भी सितारेके राजाओंसे लेकर ग्रहण किया था।

पुरके बादशाहको लिखा। उसने फिर सुहैलको सन् १००५में (१) भेजा। मुहम्मदखाने कहना नहीं माना तो सुहैलखांने चांदबीबीकी सलाहसे अहमद नगरको घेरा। मुहम्मदखाने खानखानाको पत्र लिखकर बुलाया। इसपर दखनी सरदारोंने उसको पकड़ा और अभङ्गखांको छोड़ा। अभङ्गखां पर चांदसुलतानाको भरोसा था इस लिये इसीको पेशवा बनाया और सुहैलखांको मान सम्मान देकर विदा किया। उसने जाते हुए राजापुरमें सुना कि दिल्लीके अमीरोंने सन्धिके विरुद्ध बराडसे आगे बढ़कर पाटडीमें अमल कर लिया है इसलिये वहीं ठहरकर आदलखांको अर्जी लिखी।

इधरसे चांदसुलतानाका भी पत्र पहुंचा कि मुगलोंने सन्धि तोड़ दी है। आदिलखाने सुहैलखांको लड़नेका हुक्म लिखा और कुतुबशाहने भी अपनी सेना भेजी। अहमद नगरसे भी 60000 सवार बराड़को विदा हुए।

खानखाना जालनेमें थे। उन्होंने दखनियोंको यह हलचल सुनकर सेना एकत्रकी और शाहपुरमें शाहजादेके पास जाकर सब हाल कहा। फिर उसको वहीं छोड़कर २०००० सवारों सहित सुहैलखांके ऊपर गये। क्योंकि वे यह चाहते थे कि यह फतह मेरे नामसे हो।

१८ जमादिउस्सानीको (२) तीसरे पहरसे लड़ाई शुरू हुई। सुहैलखाने भारी तोपोंके राजा अलीखां और राजा जगन्नाथको जो

१। स० १६५३-५४।

२। फागुन वदी ४ सवत १६५३। अकबर नामेमें इस लड़ाईकी ता० २८ बहमन लिखी है जो पहिले लिख आये हैं। उस दिन फागुन वदी ३० थी और जमादि उस्सानीकी २८ थी न मालूम यह १० दिनका अन्तर कैसे है और किसकी भूल है। हमारी समझमें यह लेखकका दोष है क्योंकि १८ जमादिउस्सानीको १८ बहमन थी जिसको २८ नकल करनेमें हो गयी होगी।

सामने आये थे ४०००सिपाहियों सहित मार डाला और घास होते होते धावा करके मुगलोंकी फौजको ऐसा दबाया कि वह भागकर शाहजादेके पास जाकर ही ठहरी। सादिकखांने भी शाहजादेको लेकर दक्खिनसे निकल जानेकी तय्यारी की। परन्तु खानखाना इतनी भागड़ पड़ जानेपर भी थोड़े से आदमियोंसहित अपनी जगह पर जमे खड़े रहे बल्कि दखनियोंको सामनेसे हटाकर वहां आ खड़े हुए जहां सुहेलखांका तोपखाना चना था। सुहेल भी सामने ही था। परन्तु पहर रात गये तक दोनों एक दूसरेके हालसे अज्ञात रहे। फिर कुछ मशालें सुहेलखांके आगे जलायी गयी, खानखानाने आदमी भेजा तो मालूम हुआ कि सुहेलखां है, तब उसीके तोपखानेमेंसे कई तोपें उसकी तरफ छोड़ीं, सुहेलखां मशालें बुझाकर वहांसे हट गया।

खानखानाने अपना नक्कारा बजाया और नरसिंगा फूंका जिसको सुनकर कुछ बादशाही लोग जो अन्धेरेमें छिपे थे उनके पास आ गये। सुहेलने भी जहां तक होसका १०।१२ हजार दखनियोंको इकट्ठा कर लिया। दिन निकलते ही खानखानासे लड़नेको आया। खानखानाके पास ३।४ हजारसे जियादा सवार न थे। तो भी उन्होंने उसको हराकर नलदुर्गकी तरफ भगा दिया। अहमदनगर और गोलकुण्डेवाले पहिले ही भाग गये थे।

फिर खानखाना परनाला और गावीलके किलों पर फौज भेजकर जालनाको लौट गये।

शाहजादेने सादिक खांके कहनेसे खानखानाको कहलाया कि अब अवसर है, चलकर अहमदनगरको ले लें। खानखानाने जवाब दिया कि अभी तो यही उचित है कि इस वर्ष बराडमें रह कर यहांके किलोंको फतह करें और जब यह देश पूर्णरूपसे दब जावे तो दूसरे देशों पर जावें। इस जवाबसे शाहजादेने बुरा माना और बादशाहको शिकायतकी अर्जियां भेजीं जिस पर बादशाहने खानखानाको बुलाकर शेख अबुलफज़लको दक्षिणका सेनापति करके भेजा।

खानखाना दरबारमें।

जब बादशाहको खानखानाके चले आनेका समाचार लगा तो २५ फरवरदीन (१) सन् ४३ को अपने निज सेवक शालिशाहनको दक्षिणमें भेजा कि जाकर शाहजादे मुरादको ले आवे, उसको सुशिक्षा देकर फिर वहां भेजेंगे और रूप खवासको हुक्म दिया कि खानखानाको झिडक कर दक्षिणमें लौटा देवे। वो शाहजादेके पीछे पहुंचने तक वहांकी सेनाओंका और देशोंका प्रबन्ध रक्खे।

शाहजादा तो आता था, परन्तु उसके साथके स्वार्थी अमीरोंने अपने स्वार्थसे उसको नहीं आने दिया और इन्होंने अर्ज करायी कि जब शाहजादे आ जावेंगे तो मैं चला जाऊंगा। बादशाहको यह बात नहीं भायी। तब ये अपनी जागीरसे चलकर १२ आबानको (२) लाहोरमें बादशाहके पास पहुंचे। बादशाहने इनके अपराध क्षमा करके दरबारमें बुलाया।

बादशाहकी खफगी।

मआसिर उल उमरामें लिखा है कि बादशाहने कई दिनों तक इनको ड्योढी बन्द रखी। ये निरन्तर शाहजादेकी अप्रसन्नता सादिक खाकी शत्रुता और और अपनी बेगुनाही तरह तरहसे अर्ज कराते रहे। निदान बादशाहने क्षमा करके इनको दरबारमें बुलाया और दक्षिण फतह करनेकी सलाह पूछी तो इन्होंने शाहजादेको बुला लेने और उस लडाईका पूर्ण अधिकार अपनेको मिलनेकी प्रार्थना की। यह बात बादशाहको बुरी लगी और फिर इनको मनसे उतार दिया।

माहबानू बेगमका देहान्त।

२६ आबान (३) सन् १००७को बादशाह लाहोरसे आगरे

१। चैत सुदी ८ संवत १६५५।

१। कातिक सुदी ६ सवत् १६५५।

२। मगसर वदी ५ सवत् १६५५।

चले। अम्बालेमें पहुंचनेपर इनकी वेगम माहबानूं जो खान आजमकी वहन थी, बीमार हो गयी। बादशाहने उसको वहीं छोडा और इन दोनो अमीरोंको भी कुछ दिन उसके पास रहनेकी आज्ञा दी। वह ७ दे (१) सन् १००७को मर गयी जिससे इनको तो जो दुख हुआ सो हुआ पर बादशाहने भी बहुत शोक किया, क्योंकि दूध शरीक वहन थी।

फिर दक्षिणमें जाना।

बादशाह १६ बहमन (२) सन् १००७ को आगरे पहुंचे और शेख अबुलफज्लको शाहजादे मुरादके पास भेजा। यह २५ बहमनको (३) चलकर १८ उर्दीबहिश्त (४) सन् ४४ को वहां पहुंचा। २२ को (५) शाहजादा मुराद मिरगीसे मर गया। बादशाहने यह अशुभ समाचार सुनकर शाहजादे दानयालको मुरादकी जगह नियत किया। वह २ तीर (६) सनको विदा हुआ, पीछेसे ६ महर (७) सन् ४४ को बादशाहने भी कूच किया। १८ महरको (८) इन्हें भी शाहजादे दानियालके पास जानेका हुक्म दिया। विदा करते समय डेरे पर पधार कर मान बढाया और यह भी फरमाया कि जब वह वहां पहुंचे तो शेख अबुलफज्ल दरबारमें आ जावे।

अहमदनगरके शाहको पकड कर बुरहानपुरमें ले जाना।

जब ये शाहजादेके पास पहुंचे तो शाहजादेने २ उर्दीबहिश्त (९) सन् ४५ को अहमदनगर पहुंच कर मोरचे लगाये और चार महीने पीछे ६ शहरेवरको (१०) वह किला फतह कर लिया।

१। पौष बदी ३० संवत १६५५। २। माह सुदी १० संवत १६५५। ३। फागुन बदी ३ संवत १६५५। ४। वैसाख सुदी १४ संवत १६५६। ५। जेठ बदी २ संवत १६५६। ६। आषाढ सुदी २ संवत १६५६। ७। आसोज सुदी १० संवत १६५६। ८। कातिक बदी ९ संवत १६५६। ९। वैसाख सुदी ८ संवत १६५७। १०। भादों बदी ४।५ संवत १६५७।

खानखाना बहादुर निजामको पकड़ कर बादशाहके पास जो उस समय बुरहानपुरमें आये थे ले गये, तो ८ आजरको (१) उनका मुजरा हुआ।

फिरिश्ताका लेख।

तवारीख फरिश्तामें लिखा है कि अकबर बादशाहने नागेरको घेरकर दानियाल सुलतान और खानखानाको अहमदनगरपर भेजा अभग खां हबशी जो १५००० सवारोंसे उन्हें रोकनेको गया था, चित्तारके घाटेसे ही बिना लड़े डेरे जलाकर जुनेरको भाग गया। शाहजादेने जाकर अहमद नगरको घेरा, जब किला टूटनेपर आया तो चादसुलताना ने चीतेखां हबशीसे जो किलेमें था कहा कि अब किला शाहजादेको सौंप दें और बहादुरशाहको धन और राज्य सामग्री सहित जुनेरमें ले चलें। उसने यह सुनते ही सब लोगोंसे कह दिया कि चादबीबी तो मुगलोंसे मिलगयी है और किला सौंपती है। इसपर दखिनियोंने अन्दर जाकर उस मरदानी बेगमको मारडाला। इधर शाहजादेने सुरंगसे दीवार उड़ाकर किला ले लिया और बहादुरशाहके सिवाय सब लोगोंको मारडाला।

राजू और अम्बरसे लड़ाइयां।

खानखानाके बुरहानपुर जानेके पीछे राजू दखनी और अम्बर चम्पू हबशीने शाहअलीके बेटे मुर्तजा निजामशाहको अपना स्वामी स्थापित करके बादशाही थानोंपर आक्रमण किया। बादशाहने आसेरमें यह समाचार सुनकर २३ बहमनको (२) इन्हें अहमदनगर और शेख अबुलफज़्लको नासिक भेजा। इनके पहुंचते पहुंचते मुर्तिजाके पास बहुत सेना एकत्र हो गयी थी जिससे बादशाहने शेखको भी पास जानेका हुक्म लिखा, वह नासिकके रास्तेसे लौटकर वरगा गावमें इनसे आ मिला।

१। मगसर बदी १० संवत १६५७।

२। माघ सुदी ८ संवत १६५७

१० असफन्दारको (१) शाहजादा दानियाल भी बादशाहके पास गया। बादशाहने उसकी सेवासे प्रसन्न होकर खानदेश उसको दिया और खानदेशका नाम भी दानदेश रख दिया और उसका विवाह खानखानाकी बेटी जानाबेगमसे किया।

बादशाहका कूच आसेरसे।

११ उर्दी बहिश्त (२) सन् ४६ को बादशाह आसेरसे आगरेको कूचकर गये। २८ को (३) शाहजादे दानियालको नर्मदासे बुरहानपुर आनेकी आज्ञा हुई।

अम्बरसे सन्धि।

खानखानाके और शेखके पहुंचते पहुंचते राजू और अम्बर-चम्पू बहुत बल पागये थे। शेखने राजूको कई बार हराया तौभी उसने न सिका और जालनाके किले लेलिये और अम्बरने तिलङ्गाने पर चढाई करके कई बादशाही अमीरोंको पकड लिया। तब ये अहमद नगरसे उस पर गये, शेखको भी बुलाया और लडकर उसे भगा दिया तो भी देशकाल देखकर सन्धि करली और अली सरदान वगैरःको छुडाकर कुछ प्रदेश भी छोड दिया और अम्बरसे यह स्वीकार करा लिया कि वह आज्ञामें रहेगा और अपनी सीमासे आगे न बढेगा।

शेखकी सम्मति इस सन्धिमें नहीं थी इसलिये वह नाराज हो कर बुरहानपुरमें शाहजादेके पास चला गया और ये माजरा नदीसे सेनाको लौटा लाये।

बादशाहने अम्बरका तिलङ्गाना लेना सुनकर मीर मुर्तिजाको तिलङ्गानेपर भेजा और लिखा कि खानखाना तो पाठडी और तिलङ्गानेके बीचमें रहे और शेख अबुलफज़्ल राजूके ऊपर जावे।

१। फागुन वदी १० संवत १६५७।

२। वैसाख वदी १३ संवत १६५८।

३। वैसाख सुदी १५ संवत १६५८।

मिरजा रुस्तम, राजा सूरजसिंह, और राजा विक्रमादित्य शेखकी सहायतापर नियत हुए।

अम्बरका सन्धिसे फिरना।

अम्बरचम्पू इधरसे सन्धि करके बराडके अधिपति मलिक बुरीदके ऊपर गया और उसको जीतकर गोलकुण्डेके कुतुबुलमुल्कसे लड़ा। दोनोंसे ४३ हाथी और बहुतसा धन माल लेकर तिलंगानेपर गया। मीर मुर्तिजा तो किलेमें ही बैठा और अम्बरने वह देश दबाकर और भी आगेको पाव फैलाया।

बादशाहने शाहजादेकी अर्जीसे यह सब समाचार जानकर हुक्म लिखा कि शेख तो जालनापुरको जावें। अहमद नगरका सरक्षण और राजूका निकन्दन उसके आधीन रहे। बराड पाठड़ी तिलङ्गानेका प्रबन्ध और अम्बरपर आक्रमण खानखाना करे।

ऐरच अम्बरको हराना।

अब एक हबशी और उठा। उसने पाठड़ी और पाटसमें आकर द्वन्द मचाया। तब इन्होंने राजा सूरज सिंह और गजनी खां जालोरीको भेज कर उसे भगा दिया। फिर अपने बेटे ऐरचको एक भारी फौज देकर अम्बर चपूके ऊपर भेजा। लड़ाईमें राजा सूरजसिंह आदि राजपूत सरदार अग्रगामी थे। बीचमें इतनी सेना ऐरचके साथ थी। इन्ही दोनों फौजोंने अम्बरको भगा कर खेत जीता, २० हाथी छीने और बहुतसा द्रव्य लूटा।

अबुल फज़्लका मारा जाना।

शेख अबुलफज़्लको बादशाहने अपने पास बुलाया। वह आगरेको जाता था कि बड़े शाहजादे सुलतान सलीमके हुक्म देनेपर बुन्देला राजा बरसिंह देवके हाथसे वह ता० १ (१) रबीउल अव्वल सन् १०११को मारा गया और दक्षिणकी लड़ाइयोंका सारा भार इनपर आ पड़ा।

१। भादों सुदी २ सवत १६५९ व २८ असरदाद सन् ४७।

एरचका फिर अम्बरको हराना।

इन्होंने फिर मिरजा एरचको अम्बर पर भेजा। इस बार एरचने फिर बड़े धड़क्केसे अम्बरको हराया। उसके सारे हाथियों और लड़ाईके सामानको छीन लिया। बादशाहने प्रसन्न होकर उसको बहादुरका खिताब दिया और राय बिहारीचन्दके भतीजे जादो दासके हाथ इनको, शाहजादेको और एरच बहादुरको प्रशंसा पत्र भेजे।

बादशाहका दानियालको बुलाना और उसका खानखानाके पास जाना।

शाहजादा दानियाल भी दारू बहुत पीने लगा था। पहिले पहिल तो बादशाह उसको छोड देनेकी शिक्षा लिखते रहे और अब अपने कई पास रहनेवालोंको शाहजादेके लेनेके लिये भेजा। परन्तु शाहजादा बुरहानपुरसे खानखानाके पास चला गया और बादशाहको लिख भेजा कि खानखानाको अपने पास बुलाना उचित न समझकर मैं आप उसके पास इसलिये जाता हूं कि समझाकर अपनी जगह छोड आऊं।

बादशाहने इसका यह जवाब लिखा कि ये सब तुम्हारे बहाने हैं खानखाना ऐसा चाकर नहीं है कि तुम्हारे बिना उस सूबेमें नहीं रह सके या उसको तुमसे कुछ समझने और उपदेश लेनेकी

अबुल फज़लने अकबर नामा सन् ४६ के अखीर तक लिखा है, फिर बाकी इतिहास अकबर बादशाहका सन् ४७ से सन् ५० की शा-दात तहीने तक मुहिब अली खाने संक्षिप्त रीतिसे लिखकर उसमें लगाया है। परन्तु यह पिछला लिखा हुआ हाल किसी प्रतिमें है और किसीमें नहीं। लखनऊमें जो अकबर नामा छपा है। उसमें नहीं है, कलकत्तेमें जो छपा है, उसमें है।

आवश्यकता हो या यह बात हो कि वह भी तुम्हारी भांति मद्यप हो गया हो। अब जो तुम शराब नहीं छोड़ोगे और हमारा हुक्म नहीं मानोगे तो हम भी तुमको कुछ नहीं लिखेंगे।

खानखाना और दानियालका मिलाप।

खानखानाने गाव जीनयम्बेमें अगवानी जाकर शाहजादेको बीजापुरके बादशाह आदिल खांके अमीरोंकी चिठियां दिखलायीं जो उसके वास्ते आदिल खांकी बेटीका डोला लेकर जाते थे।

दानियालका व्याह आदिलखांकी बेटीसे।

शाहजादेने मिरजा एरच बहादुरको ५००० सवारोंसहित डोला लानेके लिये भेजा। वह "भीमडा" नदीके तटपर आदिल खांके सरदारोंसे मिला। फिर शाहजादा भी आदिल खांका मान बढानेके लिये खानखाना समेत अहमदनगर तक गया और वहां आदिल खांकी बेटीसे व्याह करके बुरहानपुरमें लौट आया।

तूरान जीतनेकी सम्मति।

बडे शाहजादे सुलतान सलीमके और बादशाहके बीचमें कई वर्षोंसे बिगाड चला आता था। वह सन् १०१२में (संवत् १६६१में) शाहजादे सलीमके इलाहाबादसे आगरेमें बादशाहके पास हाजिर हो जानेपर दूर हो गया और बादशाहने अपने व पोतोंके मुल्क बलख, बुखारा और समरकन्द उजबक जातिके अमीरोंसे पीछे लेने और अमीर तैमूरकी समाधिके दर्शन करनेका इरादा करके राजा मानसिंहको बङ्गालसे और खानखानाको दक्षिणसे इस बडे दिग्विजयकी सलाह करनेके वास्ते बुलाया। राजा बादशाहके पास आगये और खानखानाने बुरहानपुरसे अरजी लिखी कि खुदाके फजलसे कोई रोकनेवाला नहीं है। जिधर कूच होगा, विजय लक्ष्मी हाथ बांधकर उपस्थित हो जावेगी। (१)

१। यह तो इकबालनामे जहांगीरीमें लिखा है और अकबरनामेके शेषांशमें जो मुहिब अलीखांका लिखा हुआ है, यह बात

दानियालकी दारूसे दुर्गति।

इस बीचमें बादशाहने फिर कई मनुष्य शाहजादे दानियालके लाने और शराब छुड़ानेके वास्ते भेजे तो उसने अब यह बहाना निकाला कि "जब तक बड़े शाहजादे हजरतकी सेवामें हैं, मैं हाजिर नहीं हो सकता"। और शराब छोड़ना तो कहां दिन दिन उसकी मात्रा बढ़ती जाती थी, जिससे शाहजादेकी तन्दुरुस्ती बिगड़ गयी थी और मरनेकी नौबत आपहुंची थी।

बादशाहकी ताकीदसे दारूकी रोक और दानियालकी मृत्यु।

बादशाहने यह समाचार पाकर खानखानाके ऊपर बहुत कोप किया और पूरे पूरे बन्दोबस्त करनेकी ताकीद लिखी। तब तो खानखानाने शाहजादेकी शराब बन्द करनेको पहरे बिठा दिये और लोगोंका आना जाना बन्दकर दिया। तोभी बाजे खिदमतगार बन्दूकोंकी नालियोंमें तेज शराबें ला लाकर पिलाते थे। जिसका परिणाम यह हुआ कि २८ शव्वाल (१) सन् १०१३ को शाहजादेका प्राणान्त हो गया। परन्तु खानखानाके उपस्थित होनेसे सेनाके प्रबन्धमें किसी प्रकारकी गड़बड़ सड़बड़ नहीं होने पायी। उन्होंने कई आदमियोंको जो निषेध करनेपर भी छिपे छिपे

यों लिखी है कि बादशाहने यह सुनकर कि तूरानका बादशाह बाकी मुहम्मद खां प्रजाको पीड़ा देता है, उस विलायतके फतह करनेका इरादा किया, जो उनकी बापौती थी। खानखानाको दक्षिणसे, कुलीच खांको लाहोरसे और राजा मानसिंहको बङ्गालसे बुलाया। खानखानाने तो जो लाग्‌ छल और कपटका घड़ा हुआ था, दक्षिणकी मुहिमको बहुत भारी बताकर अपना रहना वहीं आवश्यक समझा। राजा मान सिंह और कुलीच खां हाजिर हो गये। परन्तु वह विचार पूरा न हुआ।

१। चैत बदी ३० संवत १६६१

दारू लाकर पिलाते थे जानसे मरवा डाला। उनकी पुत्री जाना बेगमने शाहजादेके साथ प्राण देनेका बहुत आग्रह किया परन्तु बडी मुशकिलोंसे खानखानाने उसको रोका, तो भी शेष उमर अपनी अवस्था बडे शोक और सन्तापसे मैले कुचैले कपडोंमें काटी।

दक्षिणमें पूर्ण अधिकार।

शाहजादे के पीछे दक्षिणका पूर्ण अधिकार खानखानाको मिल गया और वे बहुत बरसोंतक उस बडे सूबेमें सन्धि विग्रह करनेको समर्थ रहे।

तवारीख फरिश्तासे अहमदनगर और खानखानाका कुछ हाल।

तवारीख फरिश्तामें जो वृत्तान्त अहमद नगरके टूटनेसे अकबर बादशाहके देहान्त तकका लिखा है वह यहां उद्धृत किया जाता है। इसके दो अभिप्राय हैं, पहला तो यह कि वह खानखानाकी जीवनीसे सम्बन्ध रखता है; दूसरा यह कि जो फेरफार और अन्तर इतिहासोंमें रहता है वह भी इस ग्रन्थके पाठकोंको विदित हो जावे और वे समझ लें कि जब एक ही मनुष्यके थोडेसे वर्षोंके वृत्तान्तमें इतिहास वेत्ताओंका लेख परस्पर मेल नहीं खाता है तो सैकडो हजारों वर्षोंके बने हुए पुराणोंकी कथाओंमें भेद पाया जाना कुछ विचित्र नहीं है।

तवारीख फरिश्तामें लिखा है कि अहमद नगर छूट जानेसे पीछे निज मशाही अमीरोंने शाह अलीके बेटे मुरतिजाको अपना बादशाह बनाकर परेंडेके किलेमें राजधानी की। उनसे अम्बर हबशी और राजू दखनी जो कुछ बडे सरदार नही थे अपने पराक्रमसे थोडेही दिनोंमें इतने बढ गये कि अम्बर अहमद नगरसे दक्षिणमें तिलङ्गानेकी सीमातक और राजू उत्तरमें गुजरातके सिवाने तक धरती दबा बैठा। पर दोनोंमें एका न था, एक दूसरेको गिराना चाहता था। खानखानाने यह बात समझकर अपनी कुछ सेना भेजी जिसने अम्बरकी भूमिका थोडासा भाग जो तलङ्गानेकी तरफ था जीत लिया। यह सुनकर अम्बर ७।८ हजार

सवारी सहित सन् १०१० में (१) वहां गया और खानखानाके थाने उठा दिये। तब खानखानाने मिरजा एरचको ५००० सवारी सहित भेजा। नांदेरके पास अम्बरसे मुकाबिला हुआ। एरचको अपना नाम करनेकी धुन थी और अम्बरको अपनी जमीन बचाने की। इसलिये दोनो बडी क्रूरतासे लडे। अम्बर घायल होकर रणांगनमें गिरा। उसके अनुचर उसी क्षण उसको उठाकर ले गये और मिरजा एरचकी जीत हुई।

अम्बर उद्योगी था और जानता था कि साहस दिखाये बिना देशकी रक्षा न होगी। इसलिये फिर लड़नेका उद्यम करने लगा। खानखानाने उसको वीर पुरुष देखकर सन्धि कर लेनेका विचार प्रकट किया। वह भी इससे अपना लाभ समझकर राजी हो गया। क्योंकि राजूका उसको खटका लगा हुआ था बल्कि खानखानाको वह उसीको साजिश समझता था।

जब सन्धि ठहर गयी तो अम्बर खानखानासे आकर मिला और अपनी सीमा स्थिर कर गया।

खानखानाने अवरसे सन्धि करके बीजापुरके बादशाह आदिल-खा पर जोर डाला। उसने बहुतसा नजराना देना करके अपनी बेटीका डोला सुलतान दानियालके वास्ते भेजा। खानखानाने बुरहा-नपुर जाकर यह बधाई शाहजादेको दी तो वह मुहर्रम सन् १०१३ में (२) नासिक और दौलताबादके रास्ते से अहमद नगरको गया। यह प्रदेश राजूके अधिकारमें था इसलिये उससे कहलाया कि वह भी अम्बरको तरह अधीन होकर सेवामें आवे और अपनी भूमिका पटा करावे। परन्तु राजूने इस बातपर विश्वास न किया तब शाहजादेने क्रुद्ध होकर उसको दण्ड देना चाहा। राजू भी

१। संवत् १६५८-५९

२। जेठ सुदी ३ संवत् १६६१ से असाढ़ सुदी २ संवत् १६६१ तक

८००० सवारों सहित लड़नेको भाया। परन्तु मम्मुन नहीं लौता था और इधर उधर रहकर लूट मार करता था। शाहजादेने जालनापुरमें आदमी भेजकर खानखानाको बुलाया। ये शीघ्र ही ५।६ हजार सवार लेकर गये। राजू उनके पहुंचते ही शाहजादेका पीछा छोड़कर दूर चला गया। तब शाहजादा और खानखाना अहमद नगर जाकर डोलेको पट्टनमें लाये। वहांसे शाहजादा तो विवाह करके बुरहानपुरको लौट गया और ये जालनापुरमें चले आये।

फिर मुरतिजा निजामशाहने अम्बरकी कठोरतासे व्याकुल होकर राजूको बुलाया। वह परेंडेमें जाकर उससे मिला और अम्बरने उससे कई लड़ाइयोंमें पराजित होकर खानखानाने सहायता मांगी। इन्होंने बीयरके हाकिम मिरजा हुसेन बेगको २। हजार सवारों सहित भेजा। अम्बरने इस सेनाके बलसे राजूको हरा कर दौलताबादकी तरफ भगा दिया।

फिर खानखाना तो जालनापुरसे बुरहानपुरमें चले गये जहां शाहजादे दानियालके मरजानेसे उनको रहना पड़ा और अम्बरने दौलताबादपर चढ़ाई की। राजूने कायरतासे खानखानाकी शरण ली। ये बुरहानपुरसे दौलताबादको आये और ६ महीनेतक दोनोंके बीचमें पड़े रहे जिससे दोनोंमेंसे किसीको भी अपने विपचीसे लड़नेका साहस न हुआ। निदान अम्बर खानखानाको राजूके पचमें देखकर उनके कहनेसे राजूके साथ सन्धि करके परेंडेको चला गया, तब यह भी जालनापुरमें आगये।

जहांगीर बादशाहका समय।

सन् १०१४ में (१) अकबर बादशाहका देहान्त होनेपर शाह-

१। अकबर बादशाहका देहान्त संवत् १६६२ में कातिक सुदी १४ की रातको हुआ था। उस दिन ४ आबान सन ५० और १२ जमादिउस्सानी १०१४ थी। दूसरे दिन दफन किये गये।

जादे सलीम आगरेमें तख्तपर बैठकर जहांगीर बादशाहके नामसे राज्य करने लगे। उन्होंने भी खानखानाको उसी अधिकार पर रहने दिया। परन्तु मुकर्रबखांको भेजकर शाहजादे दानियालके बेटोंको उनके पाससे मगवा लिया।

खानखाना दरबारमें।

अकबर बादशाहके मरनेसे दक्षिणमें शत्रुओंका जोर बढ गया था जिससे खानखाना २।३ वर्षतक जहागीर बादशाहके पास न आसके। सन १०१७में (संवत १६६५में) कुछ अवकाश मिला तो आगरे पहुचकर रबीउस्सानी महीनेकी २४ तारीखको (१)बादशाहके चरणोंमें उपस्थित हुए। बादशाहने जैसा कुछ उनका आदर सत्कार किया वह बादशाहने ही अपने हाथसे तुजुक जहांगीरमें इस भांति लिखा है:—

एक पहर दिन चढा था कि खानखाना जो मेरी अतालकीके महत् अधिकारसे सन्मानित है, बुरहानपुरसे आकर सेवामें उपस्थित हुआ। उसको इतने आनन्द और उछाहका आवेश हो रहा था कि वह नहीं जानता था कि पावसे आया है या सिरसे। उसने बडी व्याकुलतासे अपनेको मेरे पांवोंमें डाल दिया और मैंने भी कृपालुता और दयालुतासे उसको उठाकर छातीसे लगाया और उसका मूंह चूमा। उसने दो हार मोतियोंके कई हीरे और कई माणिक भेंट किये जिनका मोल ३ लाख रुपये हुआ। उनके सिवाय बहुतसी चीजें और सौगातें भेंट कीं।

जहांगीर बादशाह ८ जमादिउस्सानी गुरुवारको अपना राज सिंहासनपर बैठना लिखते है। सो मालूम नहीं यह क्या बात है। तारीखके साथ दिन भी लिखा है जिससे भूल हो जानेका भ्रम नही हो सकता। उस तारीखको गुरुवार ही था बापके मरनेके पीछे बेटा तखतपर बैठता है, ये ६ दिन पहिले ही कैसे बैठ गये होंगे यह विचारनेकी बात है।

१। भादों वदी १२ संवत १६६५।

जहांगीर उसमानी महीनेको २१ तारीखको (१) खानखानाने निजामुल्मुल्कको बादशाहीका शेष भाग विजय करदेनेकी प्रतिज्ञा की और यह बात लिख दी कि जो दो वर्षमें यह कार्य्य न कर दूं तो अपराधी होऊं। परन्तु जो सेना उस प्रान्तमें नियत है उनसे अधिक १२००० सवार और १० लाख रुपये और मुझको मिल जावें।

बादशाहने मन्त्रियोंको आज्ञा की कि शीघ्र ही सब सामग्री समग्र करके खानखानाको दे दो।

रज्जबके (२) महीनेमें बादशाहने ससन्द घोडा जो ईरानके शाहका भेजा हुआ था और तवेले भरमें श्रेष्ठ था, खानखानाको दिया। बादशाह लिखते हैं कि खानखाना इतना प्रसन्न हुआ कि जिसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता। सच तो यह है कि ऐसा बड़ा और अच्छा घोड़ा अभीतक हिन्दुस्थानमें नहीं आया था और फतूह नाम एक हाथी भी जो लड़नेमें अद्वितीय था बीस और हाथियों सहित दिया।

खानखानाकी विदा दक्षिणको।

खानखाना तारीख १४ शाबान (३) रविवारको बादशाहसे विदा हुए। बादशाहने जड़ाऊ तलवार, पेटी और शिरोपाव खासा हाथी समेत प्रदान किया।

शाहजादे परवेजकी चढ़ाई।

दक्षिणमें जब ये समाचार पहुंचे कि खानखानाने अहमदनगरके शेष भागको जीत देनेकी प्रतिज्ञा बादशाहसे की है तो अम्बर और राजू भी सन्धि तोड़ बैठे और उन्होंने बीजापुर और गोलकुण्डेके बादशाहोंको भी अपनी सहायता पर सज्जित कर लिया। इतनेमें

१। आसोज बदी ८ संवत १६६५।

२। यह रज्जबका महीना आसोज सुदी २ को लगा था।

३। मगसर बदी २ संवत १६६५।

खानखाना बुरहानपुरमें पहुंचे और उन्होंने दक्षिणका बहुरंग देखा तो नीति निपुणता से बात ठंडी डाल दी और उन लोगोंको अपनी ओरसे अशान्त न किया। इधर बादशाहसे भूठे न पडनेकी अर्जियोंमें ऐसी बातें जतायीं कि बादशाहने किसी एक शाहजादेके भेजनेकी आवश्यकता देख कर सुलतान परवेजको तैयार किया। ५ लाख रुपये उसको और बीस लाख उसके साथके लश्करको सजानेके लिये दिये। १ जमादिउस्सानी (१) सन् १०१८ को अमीरुल्उमरा और जगन्नाथके बेटे करमचन्दको, और ८ रज्जबको(२) राय जयसिंहको नौकरी शाहजादेके साथ बोली गयी १४ रज्जबको (३) मङ्गलके दिन शाहजादा बिदा हुआ। उसको और उसके साथी अमीरोंको भारी भारी शिरोपाव हाथी घोडे और जड़ाऊ हथियार दिये गये और १००० अहदी भी साथ गये परन्तु इन बातोंके करनेसे पहले बादशाहने मुल्ला हयातीको खानखानाके पास भेज कर बहुत सी बातें कृपा अनुग्रहकी कहलायीं। २ रमजानको (४) बादशाहने फिर बडा एक कटक जिसमें १९३ मनसबदार और १४६ अहदी थे शाहजादेके पास भेजा।

मुल्ला हयाती खानखानासे मिल कर १ जीकादको (५) अजमेरमें बादशाहके पास आया। १ लाख और २ मोती खानखानाको भेट लाया जो २०००० रुपयोंके आंके गये।

खानजहां लोदी दक्खनकी मुहिम पर।

शाहजादेका और इन फौजोंका आना सुनकर दक्खनी लडनेका उद्योग करने लगे। अभी शाहजादा पहुंचा भी नहीं था कि

१। भादों सुदी २ सं॰ १६६६।

२। आसोज सुदी ९।

३। आसोज सुदी १५ मङ्गलवार।

४। मगसर सुदी ४ संवत १६६६।

खानखानाने दक्खनियोंकी यह दशा देख कर बादशाहको विनयपत्र लिखा कि राव दक्षिणी एकत्र होकर उपद्रव किया चाहते है। बादशाहने परवेज और उसके साथकी सेनाके भेजने पर भी यह जान कर कि वहां अभी और सहायताकी आवश्यकता है स्वयं जानेका विचार किया। अमीरुलउमरा शरीफखांने भी लिखा कि श्रीमानोंका पधारना उचित है और बीजापुरने अर्जी भेजी कि कोई सभासद यहां आ जावे तो मैं अपने अभिप्रायको उसके द्वारा अर्ज कराऊं। इस पर बादशाहने सभासदोंसे कहा कि इस विषयमें जो जिसके जीमें आवे सो कहे। खानजहां लोदीने प्रार्थना की कि जब इतने बड़े बड़े अमीर जा चुके हैं तो फिर हजरतके पधारनेकी जरूरत नहीं, यदि आज्ञा हो तो मैं भी शाहजादेकी सेवामें जाऊं और लड़ाईको समाप्त करूं। इस बातकी सराहना और लोगोंने भी की। तब बादशाहने १७ जीकाद को (१) उसे भी बहुमूल्य वस्त्र जड़ाऊ हथियार हाथी और घोड़ा देकर दक्षिणको विदा किया और फिदाईखांको आदिलखांके पास भेजनेके लिये साथ दिया।

राजा वरसिंहदेव, विक्रमाजीत, और शुजाअतखां वगैरह भी ४।५ हजार सवारों सहित खानजहांकी सहायतामें नियुक्त हुए परवेजके वास्ते खासा घोड़ा और खानखानाके लिये सिरोपाव भेजा गया।

बादशाही लश्करकी फूट और हार।

जब सब लशकर, सरदार और शाहजादे दक्षिणमें एकत्र हुए तो फिर वही ईर्षा और खेंचा तान होने लगी, जो शाहजादे मुरादके समयमें थी और जब शाहजादे परवेजने बालाघाट पर चढाई की तो सरदारोंकी फूटसे यहां तक काम बिगड़ा कि शत्रुओंने बल पाकर रसद रोक दी। हाथी बहुतसे घोड़े ऊंट

१। फागुन बदी ५ शुक्र स० १६६६।

और दूसरे उपयोगी पशु मर गये। निदान दीनता दिखाकर शत्रुओंसे मिलाप करना पडा तब कहीं पीछे आनेको रास्ता मिला और उधर अहमदनगरका किला कब्जेसे निकल गया।

खानखाना पर दोष लगाना।

अब सब सरदारोंने मिलकर बादशाहको अर्जी लिखी कि ये सारे काम खानखानाकी ईर्षा और बेबन्दोबस्तीसे बिगडे हैं। परन्तु बादशाहको विश्वास न आया। तब खानजहां लोदीने (१) जिसका बादशाहको बड़ा भरोसा था, लिखा कि वास्तवमें यह सारी बुराई और बदनामी खानखान की कुटिलता से हुई है। अब यातो इस सूबेमें उसीको स्थिर रहने देना चाहिये या उसे दरबारमें बुलाकर यह कार्य्य मुझे मिल जाना चाहिये और ३०००० सवारोंकी सहायता भी मिलनी चाहिये। मैं २ वर्षमें बीजापुर तक सारे दक्षिण देश पर बादशाही राज्यकी जड जमा दूंगा और जो इस अवधिमें यह काम मुझसे पूरा न हो सका तो मैं मुंह नहीं दिखाऊंगा।

खानखानाका दरबारमें आना और खानजहांका स्थानापन्न होना।

इस पर बादशाहने महाबतखांको वहांके सच्चे समाचार भुगताने और खानखानाको दरबारमें लानेके लिये भेजा। वह जब

१। खानजहां लोदी दौलतखांका बेटा था, बापके मरे पीछे जहांगीर बादशाहका नौकर हो गया था, उसका नाम पीरखां था। बादशाहने सलाबतखां रखा और खानजहांकी पदवी दी। वह बादशाहसे बहुत मुंह लग गया था। बादशाह उसको बेटोंके बराबर समझते थे। उसने बादशाहके पीछे बालाघाटकामुल्क अहमदनगर वालोंको दे दिया। जहांका वह उस समय सूबेदार था। फिर शाहजहांसे बागी हो कर दक्षिणको भागा लडाईमें मारा गया।

बुरहान पुरमें पहुंचा तो ये उसके साथ नहीं थे। जब शाहजादा कुछ दूर रह गया तो वह इनको छोडकर बादशाहके पास पहले गया। पीछेसे ये भी १२ आबान (१) सन ५ को पहुंचे। बादशाहका मन इनसे खिंच गया था। इसलिये उन्होंने वैसी छापा और अनुग्रह नहीं दिखाया जैसी पहले दिखाते थे या अपने पिताको करते देखते थे। बल्कि यह कहा कि तुमतो सब बातोंका जिम्मा लेकर गये थे। फिर वहांके जाने पर दाने चारे नाज और दूसरी जरूरी चीजोंका बन्दोबस्त न हुआ।

खानजहांने खानापन होकर मिरजा एरचको शाहजादेसे कहकर दरबारमें भेज दिया। दाराबखां पहिले ही बापके साथ चला आया था।

लोगोंने बादशाहको खानखानाकी ओरसे बहकाया तो बहुत था परन्तु बादशाह उनसे उतने नहीं बिगड़े थे जितनी कि उन महापुरुषोंको आशा थी। और बादशाहने भी यही लिखा है कि "जब सरदारोंसे और खानखानासे नहीं बनी तो मैंने उसका वहां रहना उचित न समझ कर खानजहांको तो सेनापति कर दिया और उसको दरबारमें बुला लिया। अभी तो यही कारण अहापाका है, आगे जैसा प्रकट होगा उसके अनुसार छपा अछपा होगी।

बादशाहकी छपा खानखानाके बेटों पर।

अब जो इसके आगे तुजुक जहांगीरीमें देखते हैं तो बादशाहका अनुग्रह भी इनके और इनके बेटोंके विषयमें पाया जाता है, जैसे दाराबखांको अबतक मनसब नहीं मिला था और इस लिये न उसको तनख्वाह थी और न जागीर। बादशाहने खानखानाके आनेसे २।३ दिन पीछे ही उसको हजारी जात और ५०० सवारोंके मनसबसे सम्मानित करके गाजीपुरका जिला उसको

(१) मगसर बदी २ संवत् १६६७

जागीरमें दिया। और जब एरच आया तो पहिले ८ फरवरदीन (१) सन् ६ को जडाऊ कमरपेटी दी और कई दिन पीछे शाहनवाजखांकी पदवी प्रदान की।

खानखानाकी जागीर कन्नौज और कालपीमें।

उन्हीं दिनोंमें काबुलसे अहदाद पठानके उपद्रव करने और वहांके सूबेदार खानदौरासे प्रबन्ध न हो सकनेके समाचार आये तो बादशाहने खानखानाको जो बिना काम बैठे थे वहां भेजनेका विचार किया। इतनेमें पञ्जाबका सूबेदार कुलीचखां आ गया जो पहिले बुलाया गया था। उसने खानखानाको भेजे जानेसे अप्रसन्न होकर बादशाहसे उस कामके कर देनेकी प्रतिज्ञा की। इसलिये बादशाहने उसे ६ हजारी मनसब देकर काबुलमें भेजा और पञ्जाबकी सूबेदारी पर मुर्तिज खांको नियत किया और इनकी जागीरकी तनखाह आगरेके सूबेमें सरकार कन्नौज और कालपी पर इस अभिप्रायसे लगा दी कि उन प्रान्तोंके दुष्टोंको दण्ड देकर नष्ट करें।

चलते समय तीनों बेटे खासे खिलअत और हाथी घोड़े पाकर विदा हुए। ४ बहमन (२) सन ६ को बादशाहने अपने बांधनेकी तलवार जिसका नाम शाह बच्चा था, शाह नवाजको दी।

दक्षिणमें फिर एक और हार।

खानखानाको बुलानेके पीछे बादशाहने इनके साले खान आजमको बहुत सा कटक देकर भेजा था और सैयद अबदुल्लाहखांको भी जिसे फीरोज जङ्गकी (रणजीत की) पदवी मिली थी गुजरातकी तरफसे नासिक होकर जानेका हुक्म लिखा था परन्तु न कुछ खानखानासे बना न खान आजमसे और फीरोज जङ्ग तो लड़ाई हार कर ही गुजरातमें भाग आया।

१। वैसाख वदी १ सं० १६६८।

२। माघ वदी ६ संवत् १६६८।

बात यह ठहरी थी कि इधरसे यह जावे और उधर बराडसे राजा मानसिंह, खानजहां, और अमीरुल उमरा, आदि रवाने हों और दोनों कटक एक दूसरेको कूच मुकामकी खबर रखकर एक ही दिन शत्रुके ऊपर पहुंचे और उसको एक साथ दोनों ओरसे घेरकर जेर करें, परन्तु अबदुल्लाहखाने जिसके साथ १०००० सजे हुए सवार थे घमण्ड और अकेले फतह करनेकी धुनसे जल्दी करके धावा कर दिया। राजा रामदास कछवाहेने बहुत कहा कि धीरजसे कूच करना चाहिये, पर उसने नहीं माना।

अंबरने जब यह सुना तो बहुतसे सरदार और बरगी भेज दिये जिन्होंने रात दिन लड़कर अबदुल्लाहखांको भगा दिया। अलीमरदानखां बहादुरको पकड़ लिया। बगलानेतक पीछा किया। यह सुनकर बराडका लशकर भी राहमें से ही बुरहानपुरमें परवेजके पास लौट आया।

खानखाना फिर दक्षिणमें।

बादशाह अपनी तुजुकमें (प्रबन्धको पुस्तकमें) लिखते हैं कि जब ये समाचार आगरेमें मुझको पहुंचे तो मैंने अपने मनमें बहुत क्रोध किया और चाहा कि आप जाकर इन साहिबोंके मारे हुए नौकरोंकी जड़ उखाड़ डालूं। परन्तु अमीर और शुभचिन्तक लोग इस बातपर बिलकुल राजी न हुए और ख्वाजा अबुल हसनने अर्ज की कि उधरके कामोंको जैसा कि खानखानाने समझा है दूसरे किसीने नहीं समझा। उसीको भेजना चाहिये जो इस बिगड़ी हुई बाजीको सुधारे और समय देखकर (अभी तो) कोई सन्धि करले। फिर ठीक उपाय कर लिया जावे। दूसरे हितैषी भी इस बातमें सहमत हुए। सबकी सलाह यही ठहरी कि खानखानाको भेजना चाहिये और ख्वाजा अबुल हसन भी साथ जावे। इस ठहराव पर दीवानोंने (१) खानखाना और उसके साथियोंकी तय्यारी

१। कर्मचारियोंने।

करदी और वे सन ७ के उर्दी बहिश्त महीनेकी १७ वीं तारीखको (१) इतवारके दिन विदा हुए।

इस अवसरपर बादशाहने खानखानाका मनसब ६ हजारी शाहनवाज खांका ३ हजारी दाराबखांका २ हजारी कुछ और बढ़ाकर कर दिया और उनके छोटे बेटे रहमान दादको भी मनसबसे विमुख नहीं रखा। इसके सिवाय खानखानाको भारी सिर पाव, जड़ाऊ तलवार, खासा हाथी और इराकी घोड़ा दिया। उनके बेटों और साथियोंको भी खिलअत और घोड़े बखशे।

खानखानाने बुरहानपुर पहुंचकर फरेन्दूखां बरलास, राय मनोहर और राजा बरसिंहदेव, बुन्देलेकी पदवृद्धिकी प्रार्थना की। बादशाहने स्वीकार करके तीनोंके मनसब बढ़ाकर इस भांति कर दिये।

१। फरेन्दूखां बरलास—ढाई हजारी जात—१५०० सवार।

२। रायमनोहर—एक हजारी जात—८०० सवार।

३। राजा बरसिंहदेव—चार हजारी जात—२२०० सवार।

दक्षिणियोंसे सन्धि।

खानखानाने दक्षिणियोंसे फिर वही युक्ति सन्धिकी बरती और बीजापुरके बादशाह आदिलखांको भी इस बातपर राजी किया कि जो दक्षिणकी लड़ाईमें उनको शामिल किया जावे तो ऐसा प्रबन्ध करे कि जो परगने बादशाही अधिकारसे निकल गये हैं वे फिर कब्जेमें आजावें।

इन बातोंको बादशाहसे अर्ज करनेके लिये खानखानाने शाहनवाजखांको भेजा। उसने ६ बहमन (२) सन् ७ को दरबारमें आकर १०० मोहरें और एक हजार रुपये नजर किये। बादशाहने सन्धि स्वीकार करके खान आजमको मालवेमें आने और वहांसे

१। वैसाख सुदी ६ संवत १६६४।

२। माघ सुदी ४ संवत १६६८

मेवाडपर जानेका हुक्म लिखा और शाहनवाज खांको अपने पास रख लिया। ९ महीने पीछे खानखानाके बुलानेमें ४ असफंदार (१) सन् ८ को घोडा और सिरोपाव देकर विदा किया। खानखानाने अंबरसे सन्धि करके बराड और खानदेशका प्रबन्ध बहुत कुछ सुधार लिया और बादशाहका अजमेरमें आना सुनकर बहुत सी भेट भेजी जो १८ तीर (२) सन् १० को बादशाहकी सेवामें पहुंची। बादशाहने उसका यों वर्णन लिखा है।

१ माणिक—३

२ मोती—१०३

३ याकूत—१००

४ जडाऊ फरसे २

५ मोतियों और याकूतोंको जडी हुई किलङ्गी १

६ झरझरी जडाऊ १

७ तलवार जडाऊ २

८ तरकश मखमलकी १

९ भुजबन्ध जडाऊ १

१० हीरेकी अंगूठी १

इन सबका मोल १ लाख रुपये हुआ।

११ दक्षिण और कर्णाटकके कपडे सादे और सुनहरी तारोंके

१२ हाथी १५

१३ घोडा जिसकी गुद्दीके बाल धरती तक लटकते थे १

इसके साथ शाह नवाजखांको भी भेट थी जिसमें ५ हाथी और ३०० कपड़े नाना प्रकारके थे।

खानजहां लोदी फिर दक्षिणमें।

खानजहां लोदीने जो प्रतिज्ञा की थी वह पार न पडी थी

१। सावन सुदी १० संवत १६७०

२। असाढ सुदी १५ संवत् १६७२

और उलटी हानि ही हानि हुई थी जिससे वह बादशाहको मुह नही दिखा सकता था। परन्तु बादशाहको उससे बहुत प्रेम था। इसलिये बडे स्नेहसे उसको बुलाया। वह बुरहानपुरसे चलकर ८ असरदाद (१) भोमवार सन १० को अजमेर पहुचकर सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाहने अच्छा मुहूर्त्त निकलवाकर फिर उसे ८ महर (२) सन् १० को दक्षिण भेजा और एक बडीभौर चञ्चल चतुरङ्गिणी सेना जिसमें ३२० मनसबदार ३००० अहदी ७०० तुर्क सवार और ३०० पठान ढिलोजाक (३) थे उसके साथ दी। ३० लाख रुपये खर्चके वास्ते दिये और कई अमीरोंके मनसब भी उसके कहनेसे ज्यादा किये। जोधपुरके राजा सूरजसिंहको भी ३०० सवार मनसबपर बढाकर दक्षिणको विदा किया और जो अमीर दक्षिणमें थे उनके वास्ते भी सिरोपाव राजा सारङ्गदेवके हाथ भेजे और दाराबखांके वास्ते १ जडाऊ तलवार भेजी।

दक्षिणमें फिर अशान्ति और युद्ध।

खानजहांके जानेसे फिर दखनियोमें कोलाहल मचा। अब खानखाना बुरहानपुरमें रहते थे और शाहनवाजखांको बालापुरकी छावनीमें रखा था। अहमदनगरके सरदार आदमखां, याकूतखां, जादूराय और बाबू कांटिया वगैरह शाहनवाजखांके पास आये, उसने सबको हाथी, घोडे, खिलअत और रुपये देकर बादशाही चाकरीमें रख लिया और उनको साथ लेकर, बाला-पुरसे अम्बरके ऊपर उधरसे दखनियोंकी फौज आयी, तो उससे लडाई की। वह भागकर अम्बरके पास गयी। अम्बर अपनी, आदिलखांकी और कुतुबशाहकी बहुतसी सेना एकत्र करके लड-

१। सावन सुदी ६ संवत १६७२

२। आसोज सुदी १० सं० १६७२।

३। पठानोंकी एक जाति।

नेको आया। २५ बहमन (१) रविवारको तीसरे पहरके समय दोनों सेनाकी मुठभेड हुई। दाराबखां जो अपनी फौजमें था, राजा बरसिंह देव, रामचन्द और अलीखां आदि सरदारों सहित तलवार खेंचकर दखनियोंकी हिरावल फौज पर दौड़ा और उसको तितर बितर करके सीधा बीचकी सेना पर गया। वहां ऐसी लड़ाई हुई कि देखने वालोंकी आंखे पथरा गयी। २ घड़ी तलवार चली। लोथोंसे खेत पट गया। अम्बर भागा। दो तीन कोस तक उसका पीछा हुआ। परन्तु रात हो जानेसे वह बचकर निकल गया। उसका तमाम तोपखाना, ३०० ऊंट, खुर्नालसे भरे हुए जङ्गी हाथी, अरबी घोड़े और बहुतसे हथियार लूटमें आये और कुछ सरदार भी पकड़े गये। फिर शाहनवाजखां आगे बढ़कर "करकी"में गया जहां अम्बरकी छावनी थी मगर वहां किसीको नहीं पाया। क्योंकि वहां वाले पहिले ही निकल गये थे। इसलिये उनके मकानोंको गिराकर रोहनखेड़के घाटेसे उतर आया।

बादशाहको जब इस फतहकी बधाई पहुंची तो उन्होंने प्रसन्न होकर सब सरदारोंके मनसब बढ़ाये—

परवेजकी बदली और खुर्रम दक्षिणमें।

दक्षिणकी फौजोंका प्रबन्ध जैसा कि बादशाह चाहते थे सुलतान परवेजसे नहीं हुआ था। इसलिये बादशाहने उसको दरबारमें आनेका हुक्म लिखा।

वह २० तीर (२) सन् ११ को बुरहानसे रवाने हुआ। २८ को (३) यह खबर बादशाहको बिहारीदास वाकिआनवीसकी अर्जीसे मालूम हुई।

१। फागुन बदी १२ रविवार संवत् १६७२।

२। सावन बदी १३ संवत् १६७३

३। यह मामूली चाल डाककी थी कि ८ दिनमें बुरहानपुरसे अजमेरको कागज पहुंचते थे। बुरहानपुर अजमेरसे २५० कोस है।

मेवाड़ फतह होजानेसे बादशाहको अजमेरमें कोई काम नहीं रहा था और दक्षिण फतह करनेकी उनको बहुत आकांक्षा थी। इसलिये १८ शव्वाल (१) सन् १०२को (रविवार ८ आबानको) उन्होंने सुलतान खुर्रमका पेशखीमा अजमेरसे दक्षिणको चलाया और २० आबान (२) शुक्रवारको सुलतान खुर्रमको शाहकी पदवी देकर बड़े ठाठसे विदा किया। और दूसरे दिन २१ आबान (३) १ जीकाद शनिवारको आप भी ४ घोड़ेकी फारसी रथ अर्थात् बग्गीसे बैठकर मालवेको गये। २३ असफन्दारको (४) सोमवारके दिन माडूके (५) किलेमें पहुंचे। इसी दिन सुलतान शाह खुर्रमने भी बुरहानपुरमें प्रवेश किया। अफजलखां और रायरायां तो बीजापुरमें गये थे। आदिलखां ७ कोस अगवानी आकर इनके पाससे बादशाहके फरमानको ले गया और इन लोगोंका सत्कार करके कहा कि अम्बरने जो बादशाही इलाके ले लिये हैं वे उनसे छुड़ा दूंगा और उसी दिन अम्बरके पास अपने दूत भेजकर यही सन्देसा उसको भी कहलाया।

अम्बरने इधर तो शाह खुर्रमके पहुंचनेसे और उधर आदिलखांके बहकानेसे डरकर अहमद नगर और दूसरे किलोंकी कुंजियां जो उसने ले ली थीं शाहजादेके पास नजराने समेत भेज दीं। आदिलखां और कुतबुल्मुल्कने भी अधीनता अङ्गीकार करके विनय पत्र भेजे। शाहजादेने बादशाहको लिखकर आदिलखांको फरजन्द (बेटे)का खिताब दिलाया। खानखानाको खानदेश और बुरहानपुरकी सूबेदारीपर स्थिर रखा। जो नये इलाके

१। कातिक बदी ६ रवि सं० १६७३।

२। कातिक सुदी २ सं० १६७३।

३। कातिक सुदी ३ सं० १६७३।

४। फागुन सुदी ७ सं० १६७३।

५। अजमेरसे माडू १५८ कोस है।

फतह हुए थे उनके शासनपर शाह नवाजखांको १२०० सवारोंसे भेजा। जगह जगह अपने योग्य पुरुषोंको नियत करके सारा प्रबन्ध ठीक कर दिया। साथमें जो लशकर था उसमेंसे ३०००० सवार और ७००० प्यादे बरकन्दाज तो वहां छोड़े और बाकी जो २५००० सवार और २०० तोपखे थे, उनको साथ लेकर बुरहानपुरसे कूच किया। सो २० महर(१) सन् १२ गुरुवारको माडूमें बादशाहके पास पहुंचा। अहमद नगरके अमीरों, बीजापुरके वकीलों, बगलानेके राजा और दाराबखांको भी साथ लाया।

खुर्रम दरबारमें।

बादशाहने खुश होकर मोती जवाहर खुर्रमपर निछावर किये और शाहजहांका खिताब ३० हजारी मनसब और दरबारमें कुरसीपर बैठनेका मान दिया और जो सरदार उनके साथ गये थे और दक्षिणसे आये थे उन सबका सत्कार भी हाथी घोड़े गहने और सिरोपाव देकर किया।

ऊदाराम दखनी।

दक्षिणी सरदारोंमें ऊदाराम ब्राह्मण भी था जो पहिले अम्बरका साथ छोड़कर शाह नवाजखांके पास चला आया था और फिर अम्बरके धोखेमें पड़कर उसके पास लौट गया था। परन्तु अम्बरने फौज भेजकर उनको नष्ट करना चाहा जिससे वह लड़कर बादशाही सीमामें आगया और शाहजहांसे मिलकर उनके साथ बादशाहकी सेवामें आया। बादशाहने उनको तीन हजारी जात और १५०० सवारका मनसब देकर नौकर रख लिया।

बादशाह गुजरातमें।

फिर बादशाह मालवेसे गुजरातको गये और वहांसे मालवे होकर आगरेको लौटे।

१। आसोज सुदी १२ संवत १६७४

हीरेकी खान।

खानदेशमें पनजू नामक एक जमींदार था; उसके पास गोंड वानेमें एक हीरेकी खान थी। खानखानाने उसका हाल सुनकर अपने बेटे अमरुल्लाहको कुछ फौजके साथ भेजा। पनजूने अपनेमें लड़नेकी सामर्थ्य न देखकर वह खान सौंप दी और उसपर बादशाही दारोगा बैठ गया। यह खबर १० अमरदाद (१) सन् १३ को गुजरातमें बादशाहके पास पहुंची।

आदिलखांका महत्व।

५ महर गुरुवार (२) सन् १३ को बादशाहने शाहजहांकी प्रार्थना पर मुहम्मदाबादसे (गुजरात) अपना चित्र १ लाल और एक खासा हाथी इब्राहीम आदिल खांको भेजकर लिखा कि निजामुल्मुल्क और कुतुबुल्मुल्कके राज्यका जितना जीत लेगा वह उसके इनाममें गिना जावेगा और शाहनवाज खांको हुक्म भेजा कि जब आदिलखां चाहे एक सजी हुई सेना उसकी सहायताको भेज दी।

पहिले निजामुल्मुल्क दक्षिणके अधिराजोंमें बड़ा गिना जाता था। अब बादशाहने आदिलखांको तमाम दक्षिणका अग्रगण्य बना दिया।

दाराबखां दरबारमें।

दाराबखां गुजरातमें बादशाहके साथ था। इब्राहीमखांको बादशाहने दक्षिणके सूबेका बख्शी नियत करके भेजा था। खानखानाने उसके कामोंसे प्रसन्न होकर उसकी सिफारिश लिखी तो बादशाहने २१ महर (३) रविवारको उसे हजारीजात और २०० सवारोंका मनसब प्रदान किया।

१। सावन सुदी ११ संवत् १६७५।

२। आसोज सुदी ८ संवत् १६७५।

३। कातिक बदी ११ सं० १६७५।

२३ आबान (१) गुरुवारको बादशाहने गांव मदनपुरके डेरेमें दाराअखांको नादरीका खिलअत दिया। नादरी बिना बाहोंकी कमरी होती थी जो जामेके ऊपर पहनी जाती थी, परन्तु हर कोई बिना दिये बादशाहके नहीं पहन सकता था।

खानखाना दरबारमें।

(२) २१ शहरेवर सन १३ गुरुवार २२ रमजान सन् १०२७ को बादशाह गुजरातसे (जहां मालवे होते हुए गये थे) आगरेको मालवेके रास्ते से ही लौटे। राजपन्थ खानदेश और बुरहानपुरको सीम में होकर निकलता था। इसलिये खानखानाने बादशाहकी सेवामें उपस्थित होनेकी आज्ञा मांगी बादशाहने हुक्म भेजा कि जो सर्व प्रकारसे सुबीता हो तो अकेला आकर जल्दीसे लौट जाना।

ये इस आज्ञाके पाते ही (३) १८ आजर सोमवारको छडी सवारीसे घाटोचादामें बादशाहके पास पहुंचे। १००० मोहरें और १००० रुपये नजर किये। बादशाहने भी वैसी ही मेहरबानी की जैसी कि किया करते थे। २१ आजरको (४) खासा घोडा जिसका नाम सुमेरु था दिया और २७ को (६) खासा पोस्तीन (५) जो पहने हुए थे और सात घोडे अपनी सवारीके प्रदान किये।

२ दे (७) रविवारको बादशाह रणथंभोर पहुंच कर तीन दिन वहां रहे; परन्तु खानखानाको भेट करनेका अवसर नहीं मिला

१। मगसर बदी १३।
२। आसोज बदी १३ संवत १६७५।
३। पौष बदी ८।
४। पौष बदी १२।
५। पौष सुदी २।
६। चमडेका कोट रूएंदार।
७। पौष सुदी ६।

जिससे उन्होंने ६ देको (१) रणथभोरसे आगे पडाव पर अपनी बहुमूल्य भेट बादशाहकी सेवामें उपस्थित की जिसमेंसे बादशाहने डेढ लाख रुपयेके रत्न, जडाऊ गहने, कपडे और हाथी पसन्द करके रख लिये। शेष पदार्थ फेर दिये।

७ हजारी मनसब और दरबारसे विदा।

८ दे रविवारको (२) बादशाहने खानखानाको ७ हजारी जात ७००० सवारका मनसब और खासा खिलअत खासा हाथी, जडाऊ तलवार और कमर पट्टा देके और दोनों सूबों अर्थात् खानदेश तथा दक्षिणकी सूबेदारीपर स्थिर रखकर विदा किया और फरमाया कि हमने सुना है कि शाहनवाज खा शराब बहुत ज्यादा पीने लगा है। यदि यह बात सही हो तो उसको हर तरहसे रोको, जो न माने तो हमको स्पष्ट लिखो, हम अपने पास बुलाकर उसका इलाज करेंगे। ऐसा न हो कि वह इस युवावस्थामें अपनेको नष्ट कर देवे।

शाहनवाज खांकी मृत्यु।

खानखाना जब बुरहानपुरमें पहुचे तो उन्होंने शाहनवाज खाको अति रुग्न (३) और निर्बल पाया। उसकी दवा दारु भी बहुत की। परन्तु रोगकी शान्ति न हुई और वह ३३ वर्षकी अल्पायुमें अपने बूढे बापका विलखता छोडकर इस असार संसारसे चल धरा।

उसके मरनेसे खानखानाको तो जो दुख हुआ सो हुआ; परन्तु बादशाहको भी बहुत उदासी हुई। वे खुद ५ (४) उर्दी बहिश्त गुरुवार सन् १४के वृत्तान्तमें लिखते हैं "इस शुभ

१। पौष सुदि १० ह०।

२। पोष सुदी १४ स० १६७५।

३। बीमार।

४। वैसाख सुदी १२ संवत् १६७६।

समाचारके सुननेसे मैंने बहुत अफसोस किया। मन यह है कि खूब खानाजाद था। (१) चाहिये तो था कि इस राज्यमें अच्छी अच्छी चाकरियां देता और बडी बडी कीर्त्तियां छोडकर मरता। यद्यपि सबको इसी रास्तेपर चलना है और मौतसे कोई नहीं बच सकता है मगर इस तरहसे उठ जाना बुरा लगता है। उमेद है कि उसके गुनाह बख्शे जावे। राजा सारगदेवको जो पास रहनेवाले सेवकों और मिजाज जाननेवाले चाकरोंमेंसे है मैंने अपने उस अतालीकके पास भेजकर बहुत सी मेहरबानियों और बखशिशोंसे उसको सहानुभूति की और शाहनवाजखांका जो ५ हजारी मनसब था वह उसके भाइयों और बेटोंके मनसबों पर बढा दिया। उसके छोटे भाई दाराबखांका मनसब असल और इजाफेसे पांच हजारी जात और ५००० सवारका करके खिलअतको घोडा और जडाऊ तलवार बख्शी और उसको बापके पास भेज दिया" सो वह शाह नवाजखांकी जगह सूबे बराड और अहमद नगरका सरदार बना। उसका भाई रहमान दाद २ हजारी जात और ७०० सवारके मनसबसे सन्मानित हुआ। शाहनवाजखांके बेटे मनुचहरको २ हजारी जात हजार सवारका और दुसरे बेटे तुगरलको हजारी जात और ५०० सवारका मनसब मिला।

बादशाह काश्मीरमें।

बादशाहने मालवेसे आगरे पहुंचकर १ शहरेवर सन १४ को (२) बारानी अर्थात् बरसाती खिलअत खानखाना और दूसरे अमीरोंके वास्ते जो दक्षिणमें नियत थे भेजे।

१। घरजाम गुलस बादशाह अपने नौकरोंको खानाजाद कहते थे। उसी प्रथासे दरबार जोधपुरके सरदार और मुतसद्दी अबतक भी अर्जीमें अपनेको खानजाद लिखते हैं।

२। द्वितीय सावन सुदी १४ स० १६७६।

२४ महर गुरुवार सन् १४को(१) बादशाहने दशहरेका उत्सव करके सांझ समय काश्मीरको कूच किया।

८ आवान (२) शुक्रवारको मथुरासे ६ लाख रुपये आसेरगढकी सामग्रीके लिये खानखानाके पास भेजे।

दक्षिणमें उपद्रव।

अम्बरने बादशाहका काश्मीर जाना सुन कर अहमदनगर पर चढाई की। खानखानाने बादशाहको जो अरजी लिखी वह २५ फरवरदीन (३) सन् १५ के लगभग पहुंची जिसकी बाबतमें वे इस भांति तुजुक जहांगीरीमें लिखते हैं,—

"इन दिनोंमें सिपहसालार खानखाना और दूसरे शुभचिन्तकोंके प्रार्थनापत्रोंसे प्रकट हुआ कि अम्बरने अपने स्वभावकी दुष्टतासे फिर उपद्रव करनेको पाव बढाया है। उसने बादशाही सवारीके अति दूर होनेसे अवसर पाकर वे सब वचन तोड दिये जो अमीरोंसे किये थे और बादशाही राज्यमें हस्तक्षेप किया है सो जलदी अपने कियेका दण्ड पावेगा। सिपहसालारने खजाना मांगा था। सो हुक्म दिया गया कि राजधानी आगरेके कर्मचारी २० लाख रुपये सिपहसालारके पास भेज देवें।"

"फिर खबर पहुंची कि अमीर अपने अपने स्थानोंको छोड कर दाराबखांके पास चले आये हैं और बरगी लोग (४) लशकरके

१। आसोज सुदी ८ सं० १६७६। बादशाही पञ्चाङ्गमें दशहरा इसी दिन था। हमारे पञ्चाङ्गमें दूसरे दिन लिखा है। यदि इस पञ्चाङ्गसे आसोज सुदी ७ टो न होती तो १० गुरुवारको ही होती। बादशाही पञ्चाङ्गमें ७ एक ही है।

२। कातिक वदी १० संवत १६७६।

३। चैत सुदी ११ सं० १६७७।

४। पिंडारे लुटेरे।

आसपास सजे हुए फिरते है। खंजरखां अहमदनगरमें घिर गया है। दो तीन बार बादशाही बन्दो ने शत्रुओंसे युद्ध किया। हर बार वे हार कर भागे; आखिरको दाराबखां अच्छे सवारोंको लेकर उनकी छावनी पर गया। बडी लड़ाई हुई। शत्रु हार कर जङ्गलमें भाग गये। उनकी छावनी लुट गयी। बादशाही सेना कुशलपूर्वक अपने डेरोंमें आयी, परन्तु नाज चारा बहुत महगा हो गया था; इस लिये सरदार सलाह करके रहनगढके घाटेसे उतर आये। शत्रु ढिठाई करके वहां भी दिखाई दिये। राजा बरसिंहदेवने आगे बढ कर बहुतोंको मारा और मनशूर हबशीको जीता पकडा। उसको हाथीके पावोंमे डालना चाहा, परन्तु वह उस पर राजी न हुआ तो राजाने उसका मस्तक छेदन करा दिया।"

यह लडाई कई महीनों तक होती रही। एक लडाईमें खानखानाके छोटे बेटे रहमानदादको जान गयी जो अपने भाई दाराबखाके पास बालापुरमें था।

रहमानदादकी मृत्यु।

बादशाह लिखते है कि इन दिनोमें शुक्रवारको (१) खानखानाके बेटे रहमानदादके विषयमें यह खबर पहुंची कि वह बालापुरमें मौतसे मर गया। कुछ दिनोसे तप हो गयी थी जिसकी निर्बलताके दिनोंमें एक दिन दक्षनी व्यूह रचकर आते है। उसका बडा भाई दाराबखा लडनेको सवार होता है। जब यह खबर रहमानददाको लगती है तो वह अति पौरुष और पराक्रमसे उसी

१। महर महीनेकी १३वी चन्द्रवार और १६वी गुरुवारके बीचमें शुक्रवारको रहमानदादकी खबर आना तुजुक जहांगीरोमें लिखा है, परन्तु शुक्रवार १३ पहले १० को था या १६ के पीछे १७ के बीचमें तो नही था।

कमजोरी और थकावटमें सवार होकर भाईके पास पहुंचता है और जब कि शत्रुको हराकर लौटता है तो शरीरकी कुछ रक्षा नही करता। उसी क्षण वायुका कोप हो जाता है नसें खिचने लग जाती है। जीभवन्द हो जाती है। दो तीन दिन इसी दशामें रह कर प्राण छोड देना पडता है। जवान खूब लायक था। तलवार मारने और काम करनेमें वहुत साहसी था। तमाम जगह उसका यही मनोरथ रहता था कि अपनी तलवारका चमत्कार दिखावे; आग सूखे और गीलेको वरावर जलाती है। जब कि मुझे ही बहुत कष्ट हुआ है तो उसके बूढे वापके दिल पर तो क्या गुजरा होगा। अभी शाह नवाजखांका जख्म ही नहीं भरा था, कि यह दूसरा घाव लगा। आशा हैं कि परमेश्वर उसको शांति और सन्तोष देवे।" (१)

दखनियोंकी चढाई।

खानखाना इन दुःखोंके मारे गनीमका पूरा पूरा वन्दोबस्त न कर सके जो अब हर तरफसे गावोंको लुटता, खेतोंको जलाता चला आता था। शाहजहांसे जो इकरार हुए थे वे सब तोड डाले गये थे; वादशाहने काश्मीरमें यह समाचार सुनकर फिर शाहजहांके भेजनेका विचार किया था। परन्तु वह उस समय कोट कागडेकी फतहके उद्यममें लगा हुआ था। उसके वडे वडे सरदार वहा गये हुए थे जिससे उसके दक्षिण जानेमें विलम्ब हुआ। दखनियोने शिथिलतासे और भी वल पाकर ६०००० सवार भेजे, वहुत सा विभाग वादशाही राज्यका दवा लिया, हरेक स्थानसे थाने उठा दिये और मह्वकरमें वादशाही लश्करको जा घेरा। वहा तीन महीने तक लडाई होती रही। ३ युद्ध वडे

(१) भूतकालको वर्तमान कालकरके लिखनेकी प्रथा अकवर नामे और तुजुक जहांगीरीमें वहुधा देखी जाती है। यह उसीका यथावत उल्था है।

हुए, जिनमें बादशाही बन्दे जीते तो मरे परन्तु, नमदेंगे गरने न खोल सके जो बर्गियों अर्थात् दक्षिणके लुटेरोंने बन्द कर रखे थे। जब नाज नहीं मिलने लगा तो बालाघाटसे उतर कर बालापुरमें आ गये जैसा कि पहले लिखा गया है। दुश्मन भी साथ साथ ही पीछा करते आये और बालापुरके आस पास भी लूट मार करने लगे। बादशाही बन्दोंमेंसे ६।७ हजार चुने सवार उनकी छावनीपर गये। वे ६०००० थे तो भी एक बड़ी लड़ाई लड़कर और उनके डेरे लूट कर लौटे। परन्तु वे फिर इकट्ठे होकर लड़ते हुए लश्कर तक आये। दोनों तरफसे १००० मनुष्य खेत रहे।

इस तरह ४ महीने तक बालापुरमें रहे। जब नाज और चारेकी तंगी बहुत ही हुई और लोग भाग भागकर शत्रुओंके पास जाने लगे तो वहां ठहरना भला न देखकर बुरहानपुरमें आ गये। वे भी पीछे लगे चले आये। ६ महीने तक बुरहानपुरको घेरे रहे। बराड और खानदेशको अनेक बस्तियोंको दबा बैठे। खानखाना उनके हटानेका बहुत उद्यम करते थे। परन्तु सिपाही भूखोंके मारे अधमरे हो रहे थे, घोड़े थक रहे थे, बादशाहको ओरसे मदद नहीं पहुंचती थी, इस कारणसे लाचार थे। कुछ बन नहीं पड़ता था। बादशाहको लगातार अर्जियां भेजते थे। अन्तमें यहांतक लिख चुके थे कि मेरे ऊपर घोर कष्ट आ पड़ा है और मैंने जौहर करके मर जानेकी ठान लो है।

शाहजहां फिर दक्षिणमें।

२७ सफर सोमवार (१) सन् १५ को बादशाह काश्मीरसे लौटे। सोमवार ८ आजर (२) ५ मुहर्रम सन् १०३० को लाहोर पहुंचे।

१। कातिक बदी ८ स० १६७७।

२। मगसर सुदी ६ स० १६७७।

इसी दिन कागडेके फतह होनेकी खबर आयी जो १ मोहर्रमको शाहजहाके मन्त्री सुन्दर ब्राह्मणके (१) परिश्रमसे २ वर्षमें हाथ आया था। बादशाहने इस बधाईसे प्रसन्न होकर ४ दे भगुवारको (२) शाहजहाको एक भारी शिरोपा और हाथी घोडे देकर दक्षिणको ओर विदा किया और चलते समय फरमाया कि बाबा जैसे तुम्हारे दादाने धावा करके खान आजमको गुजरातियोंके घेरेसे छुडाया था, वैसे ही तुम भी जाकर खानखानाको दखनियोंसे बचाओ और दक्षिण जीतनेके पीछे २ करोड दामका मुल्क अपनी जागीरमें ले लेना। ६५० मनसबदार १०00 अहदी १000 बर्कन्दाज रूमी १००० पैदल तोपची १ बडा तोपखाना १ करोड रुपयेका खजाना और बहुतसे हाथी साथ किये। यह लश्कर उन ३०००० सवारोंके सिवाय था जो पहिलेसे खानखानाको दिये हुए थे। परन्तु इससे पहिले कोकाखाको खानखानाके पास भेजकर बहुतसे सन्देशे और कृपायुक्त वचन कहला दिये थे।

फिर बादशाह भी पजाबसे पयान करके १४ असफदार (३) सन १५ को आगरेमें आगये।

१। सुन्दर शाहजहाका प्रतिष्ठित पारिषद था। बादशाहने उसकी कार्य्यकुशलतासे प्रसन्न होकर पहिले तो रायरायांकी पदवी प्रदान की थी और अब कागडा विजय करनेसे विक्रमजीतकी उपाधि दी। अजीब बात है कि कागडाको अकबरके समयमें तो राजा बीरबलसे बडा धक्का लगा था जिसका वर्णन हम उसके चरित्रमें छाप चुके हैं और अब इन दूसरे ब्राह्मण देवतासे उसका सर्वथा नाश हुआ।

२। पोष सुदी २ स० १६७७।

३। फागण सुदी १२।

दखनियोंकी पराजय।

जब शाहजहां उज्जैनमें पहुंचा तो मालूम हुआ कि किलेके कार्याचारियोंकी अर्जी आयी कि दखनी नर्मदासे उतर आये हैं और उन्होंने कई गांव यहांके लूट लिये हैं। शाहजादेने ख्वाजा अबुल हसनको ५००० सवारोंसे सहित भेजा। उसने उन लोगोंको नर्मदासे उतरते हुए जा दबाया और लडकर बुरहानपुरकी तरफ भगा दिया। फिर शाहजहां भी बुरहानपुर पहुंचा। दखनी अभी तक शहरको घेरे हुए थे और बादशाही बन्दे जो २ वर्षसे उनके साथ लडते लडते थक गये थे शहरके अन्दर बडे सङ्कटमें थे। शाहजादेने ८ दिनमें उनको ३० लाख रुपये और बहुतसे जिरहबख्तर देकर शहरसे बाहर निकाला और लडकर दखनियोंको भगा दिया। खिडकी तक फौज उनके पीछे गयी जहांसे अम्बर और निजामुलमुल्क एक दिन पहिले निकलकर दौलताबादको चले गये थे।

अम्बरका फिर सन्धि करना।

बादशाही बन्दोंने खिडकी शहरको जो २० वर्षमें बसा था ऐसा उजाडा कि फिर २० वर्षमें भी न बसे। वहांसे फौजका कूच अहमदनगरको दखिनियोंका घेरा उठानेके वास्ते हुआ। पट्टनतक पहुंचे थे कि अम्बरने दूत भेजकर फिर दीनता दिखायी और कहलाया कि जितना हुक्म होगा उतना ही नजराना और जुर्माना भेज दूंगा। इसके साथ ही यह भी खबर पहुंची कि दखनी अहमदनगरसे भी उठ गये हैं। तब कुछ फौज खञ्जरखांकी सहायताके लिये खर्च सहित भेजकर अमीर लोग बुरहानपुरमें चले आये और अम्बरसे यह बात ठहरी कि जो मुल्क बादशाही अधिकारमें पहिलेसे था उसके सिवाय १४ कोसतक और धरती उन परगनों को छोडदे जो बादशाही राज्यसे मिले हुए हैं और ५० लाख रुपये नजराने और जुरमानेके दे।

शाहजादेने यह सब हाल बादशाहसे अर्ज करनेके लिये अफ-

जलखांको भेजा। वह ४ खुरदाद (१) सन् १६ को बादशाहके पास पहुंचा। बादशाहने खुश होकर उसके हाथ लालकी जड़ी हुई कलङ्गी जो शाह ईरानने भेजी थी, शाहजहांके वास्ते भेजी और अहमदनगरके हाकिम खंजरखांका मनसब ४ हजारी कर दिया।

बादशाह काश्मीरमें।

१३ आबान (२) सोमवार सन् १६ को बादशाहने आगरेसे काश्मीरकी हवा खानेको पयान किया। क्योंकि कई वर्षों से आगरेकी गरमी उनसे सही नहीं जाती थी।

खानखानाकी मारक दशा।

खानखानाको सुख सम्पत्ति भोगते हुए बहुत वर्ष हो गये थे अब दुःखकी भी बारी आयी। पहिले तो उनके जवान बेटे मरे फिर दखनियोंने आकर बुरहानपुर घेरा जिसके मारे उन्होंने जोहर करके मरनेकी ठानी और निःसन्देह उस वीर पुरुषके लिये कि जिसने मैदानकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी दल बादल सेनाओंको विजय किया हो, इस तरह बेबस होकर शत्रुओंसे घिर जाना मरनेसे क्या कम था? निदान शाहजहांके पहुंचनेपर उस सङ्कटसे तो छुटकारा मिला परन्तु दुःखने पीछा न छोड़ा बल्कि वह अब शाहजहांके दुर्भाग्यसे मिलकर और भी भयङ्कर हो गया।

बाप बेटों अर्थात् बादशाह और शाहजहांका बिगाड़।

शाहजहां दखनियोंके दारुण घेरेको बुरहानपुरसे उठा कर अपने पौरुषपर फूला न समाता था कि दैवने उसको शत्रुओंके विरुद्ध दरबारमें और ही अद्भुत गुल खिलाया। जिससे उसको

१। जेठ सुदी ५-६ संवत् १६७८

२। मगसर वदी ७ संवत् १६७८ परन्तु इसदिन सोमवार नहीं था शनिवार था।

सौतेली मां नूरजहां बेगम जो अबतक उसके काम सुधारती रही थी उसका पच्च छोड़कर प्रतिकूल हो गयी।

नूरजहां बेगमका कुछ हाल।

जहांगीर बादशाहको नूरजहांसे बहुत प्रेम था। यह मिरजा गयास ईरानीकी बेटी थी और शेर अफगनखां ईरानीको ब्याही थी। मिरजा गयास अकबर बादशाहके समयसे कारखानोंका दीवान था और शेर अफगनखां कई वर्ष तो खानखानाकी सेवामें रहा था फिर जहांगीर बादशाहका नौकर हुआ। बादशाहने उसको वर्द्धवानमें जागीर दी थी। फिर उसके अनाचारके समाचार सुनकर अपने कोका (धाभाई) कुतुबुद्दीनखांको जो बङ्गाल और उडीसेका सूबेदार था लिखा कि शेर अफगनको दरगाहमें भेज दो और जो न आवे तो सजा दो। कोकाने वर्द्धवान जाकर शेरअफगनको पकड़ना चाहा तो उसने कोकाको मारडाला और आप भी मारा गया। नूरजहां बेगम पकड़ी आयी तो बादशाहने अपनी सौतेली मा रुकैया सुलतान बेगमको बख्श दी। वह बहुत दिनोंतक उनके पास रही। फिर बादशाहके चित्त चढ़ी तो थोड़े दिनोंमें सब बेगमोंसे बढ़ गयी। अपने बापको मुख्य मन्त्री बनाया, भाईको आसिफखांकी पदवी दिलाकर सब अमीरोंसे बढ़ाया। बादशाही सारा काम आप करने लगी। बादशाहका नाम मात्र रह गया। वे कहा भी करते थे कि मैंने तो राज्य नूरजहांको दे डाला है। अब मुझे १ सेर शराब और आधासेर कबाबके सिवाय और कुछ नहीं चाहिये।

बादशाहके ५ बेटे खुसरो, परवेज खुर्रम, जहांदार, और शहरयार थे। खुसरो राजा मानसिंहका भानजा और खान आजम मिरजा कोकाका जमाई था। इस प्रसंगमें वे दोनों सरदार अकबर बादशाहके पीछे उसीको तख्तपर बैठानेके विचारमें थे परन्तु उनकी यह कामना पूरी न हुई और जहांगीर ही पिताकी जगह बैठे तो भी खुसरो अपनेको बादशाहीके योग्य समझकर

पज बदी भागा था और पकड़ा जाकर अन्तमें खुर्रमको सौंपा गया था जो उसीकी कैदमें मर गया।

परवेज बादशाहका प्यारा बेटा था। परन्तु नूरजहांने उसको नही बढ़ने दिया और खुर्रमको बढ़ाया क्योंकि उसके भाई आसिफखांकी बेटी ताजबीबी खुर्रमको ब्याही थी और इस सम्बन्धसे नूरजहां खुर्रमके पक्षमें हो गयी थी। परन्तु अब जो अपने पेटकी (१) बेटीका विवाह शहरयारसे करना चाहा तो शाहजहांका बल घटाने लगी कि जिससे शहरयारको बापके पीछे बादशाह बननेका अवसर मिले। बादशाह उसके कहनेमें थे जो वह कहती वही करते थे।

शहरयार सब भाइयोंमें छोटा था तोभी बादशाहने नूरजहांके कहनेसे २७ रबीउल आखिर (२) सोमवार सन् १०३० को ८ हजारी जात और ४ हजारका मनसब देकर फौजी अफसर बनाया और ४ उर्दी बहिश्त (३) सन् १६ को नूरजहांकी बेटीसे उसका विवाह कर दिया।

इतने हीमें ईरानके शाह अब्बास सफवीके कन्धारपर आनेके समाचार हुए। बादशाह उस समय कांगड़े होकर काश्मीरकी हवा खानेको जा रहे थे और कुछ स्वास्थ भी उनका बिगड़ा हुआ था इसलिये जैनुल आबदीन बख्शीको शाहजहांके लानेके लिये भेजकर काश्मीरको चल दिये।

जैनुल आबदीन जब शाहजहांके पास पहुंचा तो वह मानपानके साथ लेकर रवाना हो गया। जब मांडूमें आया तो सुना कि उसको जो अच्छी अच्छी जागीरें दिली थीं वह बदलकर शहरयारको दे दी गयी हैं। तब

१। यह लड़की नूरजहांके भूतपूर्व पति शेर अफगनसे थी।

२। चैत बदी १४ संवत् १६७७

३। बैसाख बदी ४ संवत् १६७८।

तो वह वहीं ठहर गया और बरसातके पीछे हाजिर होनेकी अर्जी लिखकर वकीलोंको बिदा किया। जो (१) ७ तीर सन् १७ को काशमीरमें बादशाहके पास पहुंचा। बादशाहने शाहजहांसे बुरा मानकर उसके साथके राजाओं और अमीरोंको तो दरबारमें चले आनेका हुक्म भेजा और शाहजहांको लिखा कि अब यहां न आवे। उधर हो गुजरात मालवे दकन और खानदेशके सूबोंमें जो उसको इनायत किये जाते हैं। जहां चाहे वहां रहे और इधरकी जागीरोंके बदले जागीरें भी अपनी उधर होके किसी सूबेमें ले ले।

इस झमेलेमें कन्धारको फौज न जा सकी और शाह अब्बासने आकर उसको घेर लिया। बादशाहने यह खबर सुनकर २७ अमरदाद सन् १७ को काशमीरसे लाहोरकी तरफ कूच किया। रास्तेमें १ शहरेवरको (२) शहरेयारने कन्धार जानेकी प्रार्थना की। बादशाहने स्वीकार करके १२ हजारी जात और ८००० सवारका मनसब उसको दिया और कन्धारके वास्ते जो लश्कर तय्यार हो रहा था उसका अफसर भी उसीको नियत किया। परन्तु यह अभी कन्धारको बिदा भी न होने पाया था कि शाह ईरानने कन्धार ले लिया और क्षमा मांगनेके लिये दूत और पत्र भेजा। बादशाह भी उत्तरमें उलहनेका पत्र भेजकर लाहोरसे आ गये और आसिफखांको आगरेमें भेजा कि वहां जितना कुछ खजाना मोहरों और रुपयोंका अकबर बादशाहके राज्य शासनसे अबतक संग्रह हुआ है उस सबको लाहोरमें ले आवे और परवेजके वकीलको हुक्म दिया कि जल्दीसे जाकर परवेजको बिहारकी सेना सहित यहां लावे।

१। द्वितीय असाढ़ बदी २ संवत् १६७९।

२। सावन सुदी १० सं० १६७९।

३। भादों बदी ४ सं० १६७७।

शाहजहांका बापके मुकाबले पर जाना और खानखानाका शाह-जहांके साथ रहना।

शाहजहां जिसे बेदौलतकी पदवी मिली थी, ये बातें सुनकर माडूसे फतहपुरमें आया और उसके मन्त्री सुन्दर ब्राह्मणने जिसको विक्रमाजीतकी उपाधि उपलब्ध हुई थी, आगरेमें जाकर कई अमीरोंके घर लूटे। बादशाहने यह समाचार सुनते ही १७ बहमनको (१) लाहोरसे आगरेकी ओर प्रस्थान किया और यमुनाके किनारेका रास्ता लिया; शाहजहां मथुरामें आगया था। यहांसे वह भी यमुनाके किनारे किनारे चला। खानखाना दाराबखा और कई अमीर जो गुजरात और दक्षिणके सूबेमें नियत थे उसके साथ थे परन्तु खानखानाका सम्बन्ध शाहजहासे सबके अपेक्षा अधिक था। प्रथम तो दक्षिण और बराडके सूबे जिनके वे शासक थे शाहजहांका मिल चुके थे, दूसरे शाहजहासे उनकी बातें भी पक्की हुई थी क्योंकि उनकी पोती जो शाहनवाजखांकी बेटी थी उनको व्याही हुई थी।

बादशाहका खानखानाको नमकहराम लिखना।

बादशाहने इस समय खानखानाको नमकहराम लिखा है और उसका वर्णन इन अक्षरोंमें किया है।

"जब कि खानखाना जैसा अमीर जो अतालीकीके ऊंचे पदको पहुंचा हुआ था, ७० वर्षकी अवस्थामें अपना मुंह नमकहरामीसे काला कर ले तो दूसरोंसे क्या गिला है। मानो शरीर ही नमकहरामीसे बना था। उसके बापने भी अन्तिम अवस्थामें मेरे बापसे ऐसा ही बरताव किया था। सो यह भी उस उमरमें बापका अनुगामी होकर हमेशाके लिये कलङ्की हुआ। भेडियेका बच्चा आदमियोंमें बडा होकर भी आखिरको भेडिया ही होता है।"

१। माह सुदी ७ सं० १६७८।

नूरजहांका बाप बेटोंमें सन्धि न होने देना और सुन्दर ब्राह्मणका
लड़ाईमें काम आना।

शाहजहांने कई बार विनय पत्र और दूत पिताके पास भेजे और क्षमा मांगी परन्तु नूरजहांने बादशाहको उससे ऐसा कठोर कर दिया था कि वे किसी तौर पर भी उसकी अर्जियों पर गौर नहीं करते थे। बल्कि उसके वकीलोंको कैद कर देते थे शाहजहांको दण्ड देनेका पक्का विचार कर लिया था परन्तु शाहजहां और खानखाना बादशाहके सामने होनेका साहस न करके दिल्लीके पाससे बायें हाथको मुड़। गये सुन्दर ब्राह्मण, दाराबखां और राजा भीमको लड़नेके लिये छोड़ गये। ८ फरवरदीन (१) बुधवार सन् १८ को बादशाहने २५००० हजार सवार आसिफखांकी अफसरीमें भेजे। बलोचपुरमें लड़ाई हुई, सुन्दर गोलीसे मारा गया, बाकी लोग भागकर शाहजहांके पास गये और वह मांडूको लौटा।

बादशाह भी उसके पीछे चले। १ उर्दी बहिश्त (२) सन १८ को फतहपुर पहुंचे। १० को (३) परवेज भी हिण्डोनमें उनसे आ मिला। २५ को (४) बादशाहने उसे ४०००० सवारों सहित महाबतखांकी अतालीकीमें शाहजहांके ऊपर भेजा।

बादशाह अजमेरमें, परवेज मालवेमें और शाहजहां दक्षिणमें।

खुरदाद (५) शनिवार सन १८ ता० १८ रज्जब सन १०३२ को बादशाह अजमेरमें पहुंचे। सनूचहार जो शाहनवाजखांका बेटा और खानखानाका पोता था शाहजहांका साथ छोड़कर परवेजके

१। चैत बदी १४ स० १६७९।

२। बैसाख बदी ७ स० १६८०।

३। बैसाख सुदी १ स० १६६०।

४। जेठ बदी १ स० १६८०।

५। जेठ सुदी १ स० १६८० को शनि नहीं मङ्गल था और रज्जब १८ नहीं ३० थी।

पास आ गया। खानखाना भी इसी जोड तोडमें थे कि परवेज चांदके घाटेसे उतर कर मालवेमें पहुंचा। शाहजहां २०००० सवारों और ३०० जङ्गी हाथियों सहित लडनेको आया। खानखानाको भी साथ आना पडा, परन्तु ये और शाहजहां रणागनमें एक कोस पीछे रहे। दाराबखां और राजा भीमको आगे भेजा। महाबतखांने इधरके बहुतसे अफसरों और अमीरोंको मिला लिया था। इसलिये सामना होते ही वे लोग बादशाही लश्करमें जा मिले। शाहजहांने यह खबर पाकर बाकी आदमियोंको बुला लिया और रातों रात खानाखाना सहित नर्मदाके पार उतर गया।

खानाखानाकी महाबतखांसे खटपट।

नर्मदा पार खानखानाका एक कासिद जो महाबतखांके नामका पत्र लिये जाता था शाहजहांकी पकडमें आगया। उस पत्रके सिरे पर यह लिखा था कि जो १०० आदमी नजरोंमें मेरी देख भाल नही रखते होते तो बेचैनीसे कभीको उडकर वहां पहुंच जाता।"

खानखाना शाहजहांकी कैदमें।

शाहजहांने खानखानाको बेटों समेत बुलाकर वह पत्र दिखाया। उन्होंने बहाने तो बहुत किये, परन्तु कोई ठीक न था। इसलिये शाहजहांने उनको दाराबखां आदिके सहित अपने डेरेके पास कैद कर दिया। बादशाह इस विषयमें यह कहता हुआ "तुज़ुक" लिखते हैं कि "उसने जो १०० आदमियोंकी नजरोंमें रहनेका पहलेसे अपशकुन लिखा था वह उसके आगे आया।"

सन्धिका सन्देसा और खानखानाका कैदसे छुटकारा।

शाहजहांकी मनशा पहिले तो खानखाना और उनके बेटोंको आसेरके किलेमें कैद रखनेकी थी, परन्तु फिर अपने साथ बुरहानपुरको ले गया। अब नर्मदा नदी बीचमें थी और उसके दोनों किनारों पर दोनों ओरके लश्कर जमे हुए थे। अबदुल्लाखां फीरोज जङ्गने जिसे अब "खानतुज़ा"की उपाधि मिली थी और

जो शाहजहांसे जा मिला था राव रतन हाडाके हाथ सुलह करना चाहा; परन्तु महाबत खांने कहा कि जब तक खानखाना न आवे सन्धि स्वीकार नहीं है। इसपर शाहजहांने खानखानाको कैदसे छोडकर उनसे बहुत शिष्टाचार किया और कुरानकी कसम लेकर वचन पक्का करनेके लिये उनको अन्तःपुरमें ले गया तथा अपनी बेगमों और बेटियोंके सामने कहा कि अब वक्त बहुत नाजुक आगया है। मैं अपनेको तुम्हारे हवाले करता हूं। मेरी इज्जत और आबरू तुम्हारे हाथमें है। ऐसा करो कि जिससे बात अधिक न बिगडे और फिर भटकना न पडे।

खानखाना सन्धि कराने जाते हैं और परवेजसे मिल जाते हैं।

खानखाना शाहजहांको धीरज देकर सन्धि करनेके वास्ते चले; बात यह ठहरी थी कि इधरसे खानखाना और उधरसे महाबतखां नदीके दोनों कराड़ोंपर बैठकर सुलहकी तजवीज ठहरावें। अभी यह कार्य्य आरम्भ भी न हुआ था कि बादशाही लशकर शाहजहांकी फौजको गाफिल देखकर नदीसे उतरने लगा जिससे शाहजहांकी फौज गड बडाकर भाग निकली और खानखाना समयके पलट जानेसे अजीब झञ्झटमें पड गये कि न तो ठहरनेको जगह रही और न जानेको रास्ता। निदान सब वचन कचन तोडकर महाबतखांकी मारफत शाहजादे परवेजसे जा मिले। उस समय उनके गुलाम फहीमने उनसे बहुत कहा कि मुझे महाबतखांकी तरह देखते हुए यहां दगा मालूम होता है। कहीं कुछ अपमान न हो जावे। इससे तो उत्तम यह है कि हथियार पकडकर बादशाहके हजूरमें चले चलें। परन्तु खानखानाने नहीं माना।

शाहजहां बापका राज्य छोड जाता है।

खानखानाके दगा देनेसे शाहजहांके दिलको बडा धक्का लगा और वह बादशाही राज्य छोडकर कुतुबुलमुल्ककी सीमामें चला गया जो गोलकुण्डेका स्वतन्त्र बादशाह था।

खानखानाको राजा भीमका लिखना।

खानखानाने राजा भीम सीसोदियाको (१) जो शाहजहांका निज सखी और हितैषी था लिखा कि जो शाहजादे मेरे लड़कोंको छोड़ देवे तो मैं बादशाही लशकरको किसी न किसी बहानेसे लौटा दूं। नहीं तो बहुत मुशकिल पड़ेगी। राजाने जवाब दिया कि अभी तो ५।६ हजार जान झोंकनेवाले और सिर देने हारे शाहजादेकी चरदलीमें हाजिर हैं। जब तू पास पहुंचेगा तो मैं तेरे बेटेको मारकर खबर लूंगा।

बादशाह काश्मीरमें।

सुलतान परवेज ४० कोसतक शाहजहांके पीछे जाकर १ आबानको (२) बुरहानपुरमें लौट आया और बादशाह भी निश्चिन्त होकर शाजर १ सफर (३) सन १०३३ को अजमेरसे काश्मीरको चल दिये।

शाहजहांका बङ्गालपर चढ़ाई।

आदिलखांने तो शाहजहांको कुछ सहानुभूति नहीं की। परन्तु कुतुबुलमुल्कने अपनी अमलदारीमेंसे उड़ीसेकी तरफ उसको मार्ग दे दिया जिधरसे वह बङ्गालमें जा पहुंचा। बादशाहने मुलतान परवेज और महावतखांको लौट आनेका हुक्म लिखा और आसफसे उड़ीसेतक अपने भरोसेके सरदारोंको जावतेके लिये भेज दिया।

परवेजका बुरहानपुरसे कूच।

परवेजने ६ अरदबिहिश्त (४) सन १८ को बुरहानपुरसे कूच

१। भीम सीसोदिया राना अमरसिंहका बेटा और करनसिंहका भाई। था शाहजहाने उसको महाराजकी पदवी दी थी।

२। कातिक सुदी १ सं० १६८०

३। मगसर सुदी २।३ सं० १६८०

४। चैत सुदी ६ सं० १६८१

किया और दक्षिणकी रक्षाके लिये जो थाने बैठाये उनमेंसे खान पुरके थानेपर मनूचहरको रखा।

शाहजहांका बङ्गाल जीतकर दाराबखाको देना।

शाहजहांने बङ्गालके सूबेदार इब्राहीमको मारकर बङ्गाल जीत लिया। ४० लाख रुपये इब्राहीमके खजानेके लूटमें आये थे। वे अपने साथियोंको बांट दिये। उनमेंसे १ लाख रुपया दाराब खांको दिया और उसको कारागारसे निकालकर कुरानकी शपथ ली और बङ्गालकी हुकूमत देकर उसकी बीबी १ लडकी और शाहनवाजखांके एक लडके सहित अपने पास रख लिया।

शाहजहांका बिहार जीतकर इलाहाबादपर चढना।

फिर शाहजहांने बिहार जीतनेको प्रयाण किया और राजा भीमको पहिलेसे भेज दिया—बिहार परवेजकी जागीरमें था। उसके कर्मचारियोंसे कुछ प्रबन्ध न होसका। भीमने जाते ही पटनेमें प्रवेश किया। पीछेसे शाहजहां भी पहुंचा। वहां उसके पास बहुतसा कटक जुड गया। राजा भीम और अबदुल्लाहखां इलाहाबादपर आये।

परवेजका खानखानाको कैद करना और फहीमका स्वामि प्रेमधर्म्म साधनमें माराजाना।

परवेज, रावरतन हाडाको बुरहानपुर सौंपकर बिहारको गया। उस समय उसने खानखानाको इस हेतुसे कि उनका बेटा दाराबखां शाहजहांके पास था नजर कैद कर लिया। उनका डेरा शाहजादेके डेरेके पास लगाया जाता था और बडे बडे आदमी उनकी चौकीका पहरा देते थे। जाना बेगमके सिवाय जो उनकी विधवा बेटी थी किसीको उनके पास नहीं छोड़ा था। फिर उनका धन माल भी कुरक करना और उनके गुलाम फहीमको पकडना चाहा। वह बड़ा वीर और स्वामि प्रेधर्मी था। अपने स्वामीके हितार्थ शाहजादेके और महाबतखांके मनुष्योंसे लडा और जब वह मारा गया तो मनुष्योंका हाथ खानखानाके डेरेपर पडा।

यह फहीम एक राजपूतका लडका था। इसीके बाबत अब तक यह कहावत चली आती है कि "कसावे खानखाना उडावे मिया फहीम।"

परवेज और शाहजहांका युद्ध, भीमका माराजाना और शाहजहांका भागना।

अबदुल्लाहखां अभी इलाहाबादको घेरे हुए था कि परवेज और महावतखां आ पहुंचे। तब वह वहांसे उठकर जौनपुरमें शाहजहांके पास चला गया। शाहजहां बेगमों और बच्चोंको रोहतास गढमें छोडकर बनारस पर आया जहां परवेज भी पहुंच गया था। उसके साथ ४०००० सवार थे और शाहजहांके पास ७००० हो; तो भी राजा भीम सीसोदियाने मैदानकी लडाई लडनेकी उत्तेजना दी। अबदुल्लाहखां इससे सहमत नहीं था। परन्तु शाहजहांने राजाकी राय मानी और कुछ पीछे हटके मैदानमें ही व्यूह रचकर लडनेकी ठानी। उधरसे परवेज आया। भाई भाई तौंस नदी पर लडे। राठोड सीसोदियोंसे भिडे। खूब तलवार चली। लहूकी नदी बही। भीम एक भीषण युद्ध करके वीर शय्यापर पौढा (१) शाहजहांकी हार हुई। वह चार कूचमें रोहतास आया और वहांसे पटनेको चला गया।

महाबतखांका खानखाना होना।

बादशाहने इस विजयसे सन्तुष्ट होकर ७ हजारी ७००० सवारका मनसब तुमन तोग और खानखानाका खिताब महाबतखांके वास्ते भेजा और उसका पद खानखानाके बराबर कर दिया।

दक्षिणमें अम्बरका फिर जोर पकडना।

उधर दक्षिणमें अम्बरने बीजापुरके बादशाहपर चढाई करके उसका मुल्क लूटा और बादशाही फौज जो उसकी सहायताको

१। जोधपुरके इतिहासमें लिखा है कि भीम सीसोदिया महाराज गजसिंहके हाथसे मारा गया था।

बुरहानपुरसे गयी थी उसको भी फ़ताकर मनूचहर, नागकाला और अकोदतखांको पकड़ लिया। फिर अहमद नगरको ना घेरा और याकूत हबशीको बुरहानपुरपर भेजा।

दाराबखांका शाहजहांके पास न जाना और शाहजहांका उसके बेटेको मरवा डालना।

शाहजहांने रोहतासमे दक्षिण जाते हुए दाराबखांको बङ्गालकी गद्दीमें बुलाया। परन्तु वह ज़मीन्दारोंके बलवेका बहाना करके नहीं गया। तब शाहजहां उनके जवान बेटेको जो ओलमें था अबदुल्लाह खांके हवाले करके जिस मार्गसे आया था, उसी मार्गसे दक्षिणको चला गया। अबदुल्लाह खांने दाराब खांके बेटेको मार डाला। परवेजने बङ्गाल महाबत खांको जागीरमें देकर पीछेको कूच किया और बंगालके ज़मीन्दारोंने दाराब खांको परवेजके पास भेजा। वह आकर महाबत खांसे मिला।

बादशाह लाहोरमें और दाराब खांका वध।

बादशाह १५शहरेवारीको (१) काश्मीरसे कूच करके लाहोरमें आये और दाराब खांके समाचार सुनकर महाबत खांको लिखा कि इस कुपात्रके जीते रखनेमें क्या लाभ है, शीघ्र इसका सिर हमारे पास भेज दो। महाबत खांने ऐसा ही किया।

कहते हैंकि बादशाहके पास भेजनेसे पहिले महाबत खांने दाराब खांका मस्तक एक थालमें ढककर तरबूजके नामसे खानखानाके पास भेजा। खानखानाने देखकर कहा, हां तरबूज शहीदी (२) है।

खानखानाका दरबारमें बुलाया जाना।

फिर बादशाहसे "अरबदस्तगीब"को शाहजादे परवेजके पास

(१) आसोज सुदी ४ सं० १६८१।

(२) शहीदीका अर्थ मारा हुआ—और शहीदी एक प्रकारका तरबूज भी होता है। यहां शहीदीके दो अर्थ हैं।

भेजकर खानखानाको भी बुलाया। इनसे खानखानाकी पदवी छिन गयी थी। तौभी महावत खांने इनको बड़ी इज्जतसे भेजा और विदा होते समय शिष्टाचार करके अपनी समझमें सफाई कर ली।

शाहजहांका अम्बरसे मिलकर बुरहानपुरपर आना।

शाहजहांके दक्षिणमें पहुंचनेपर अम्बरचपू भी उससे मिल गया और उसने याकूत खां हबशीके १००० फौजसे उसकी सहा-यतामें बुरहानपुरके ऊपर भेजा। जब वह मलकापुरमें पहुंचा और राव रतन हाडाने बुरहानपुरसे निकलकर उसपर जाना चाहा तो बादशाहने यह खबर सुन उसको लिखा कि जबतक दूसरी फौज न पहुंचे, ऐसा साहस न करे और मुखलिस खांको परवेजके पास भेजकर दक्षिण जानेकी ताकीद की।

बादशाहका काश्मीर जाना और शाहजहांका अहमद-
नगरको छोडना।

बादशाह असफन्दार (१) सन १८ में लाहौरसे फिर काश्मीर चले गये। शाहजहांने याकूत हबशीसे मिलकर बुरहानपुरको घेरा और ३ बार धावा करके बहुत जोर दिया। परन्तु राव रतन हाडाने हर बार उसको और दखनियोंको हरा हराकर किलेके पाससे हटा दिया। इतनेमें परवेज और महावत खांके नर्मदा तक आ पहुंचनेकी खबर उड़ी तो शाहजहां और दक्षिणी बुरहान पुरका घेरा छोड़कर बालाघाटको चले गये।

बुरहानपुरमें रावरतन हाडाका जमा रहना और दुश्मनोंको
भगाकर ५ हजारी होना।

बादशाह १८ उर्दी बहिश्त (२) सन् २०को काश्मीर पहुंचे।

१। यह असफन्दारका महीना फागुन सुदी ११ संवत् १६८१ को लगा था।

२। वैसाख सुदी १ संवत् १६८१।

दक्खिणकी खबरों असद खांने रपोट भेजी कि शाहजहां देवल गांवमें है और याकूत हबशी अम्बरकी फौजसे बुरहानपुरको घेरे हुए हैं। राव रतन हाडा किलेमें जमा हुआ है। बाहर आकर भी लडता है। फिर खबर आयी कि अम्बरको फौज उठ गयी है।

बादशाहने प्रसन्न होकर ५ हजारी ५००० सवारका मनसब और रायराजका खिताब (१) जो दक्खिणमें बहुत बडा समझा जाता है राव रतनको दिया। इससे पहिले सर बुलन्द रायका खिताब भी उसे मिल चुका था।

शाहजहांका बापसे अपराध क्षमा करा लेना।

शाहजहां जब बुरहानपुरका घेरा छोडकर दक्खिणको जाता था तो मार्गमें बहुत बीमार हो गया जिससे उसने पछताकर बादशाहको अरजी अपराध क्षमा करनेको भेजी। बादशाहने अपने हाथसे उत्तर लिखा कि जो अपने बेटे दाराशिकोह और औरङ्गजेबको सेवामें भेजे तथा रोहतास और आसेरके किले छोड दे तो उसके अपराध क्षमा किये जावेंगे और बालघाटका देश भी दिया जावेगा।

शाहजहांने इस हुक्मको सिरपर चढाकर दोनों बेटोंको भी १० लाख रुपयेके नजराने सहित भेजा और रोहतास तथा आसेरके किलेदारोंको भी दोनों किले बादशाही आदमियोंको सौंप देनेका हुक्म लिख दिया।

खानखाना दरबारमें और उनके अपराधोंकी माफी।

खानखाना बादशाहके हजूरमें पहुंचे तो मारे लज्जाके बहुत देरतक उन्होंने अपना माथा धरती परसे नहीं उठाया। बादशाहने उनका दिल ठिकाने लानेके लिये कहा कि अबतक जो कुछ हुआ दैव संयोगसे हुआ, न कुछ हमारे अखतियारकी बात थी न तुम्हारे

१। पाठान्तर राव राजा। बूंदीके रईस उस दिनसे राव राजा कहलाते हैं।

अखतियारकी। तुम इसका जियादा सोच सन्ताप न करो और दखणियोंको हुक्म दिया कि इनको उचित जगहपर लेजाकर खड़ा करो।

महाबतखांको दरबारमें बुलाना और उसका परभार बङ्गाल जाना।

अब शाहजहांकी ओरसे शान्ति हुई तो नूरजहांने शाहजादे परवेजको निर्बल करनेके लिये महाबतखांको उसके पाससे अलग करना आवश्यक समझकर बादशाहसे यह हुक्म लिखाया कि महाबतखां तो बङ्गालको चला जावे और खानजहां लोदी गुजरातसे दक्षिण जाकर शाहजादेकी अतालीकी करे। परन्तु जब परवेज और महाबतखांने अङ्गीकार नहीं किया तो बेगमने महाबतखांको अकेला दरबारमें बुलाया। तब महाबतखां यहां तो नहीं आया पर बङ्गालको चला गया।

खानखानाका फिर खानखाना होना।

१८ मेहरमास (१) सन् १०३५ को बादशाह काश्मीरसे लौटे। २० को लाहोर पहुंचे। खानखानाको १ लाख रुपये इनायत करके २३ असफन्दार (२) सन २० को काबुलकी ओर रवाने हुए। उस समय उन्होंने खानखानाको न पसिरे खानखानाकी पदवी और खिलअत देकर कन्नौजकी हुकूमतपर भेजा। इस जगहपर "मआसिरुल उमरा"के कर्त्ताने लिखा है कि अब उस दुनियादार बूढ़े अमीरने अपनी अंगूठीमें इस भावका यह शेर (दोहा) खुदाया था,

"जहांगीरकी मेहरबानीने खुदाकी मददसे
मुझको जिन्दगी और खानखानी दुबारा दी है।"

महाबतखां पर कोप।

महाबतखांने अपनी बेटीका ब्याह एक आदमीसे किया था। बादशाहने उसको बुलाया और यह कहकर कि क्यों तूने ऐसे बड़े

१। कार्त्तिक बदी ७ संवत् १६८२

२। फागुन बदी १५ द्वितीय संवत् १६८२

सरदारकी बेटी बिना हुक्मके लेली अपने रूबरू पिटवाया और कैदकर दिया।

महाबतखांका दरबारमें आना और बादशाहको अपने काबूमें कर लेना।

महाबतखां इन बातोंसे नूरजहां बेगम और उसके भाई आसिफखांको जो तमाम काम बादशाहोंका करता था अपने बिगाड़नेके विचारमें देखकर ४।५ हजार जङ्गी राजपूतोंके साथ पंजाबमें बादशाहके पास आया तो उससे हिसाब समझने वगैरहमें और कुरताकी गयी। तब तो उसने एक दिन आसिफखांकी गफलतसे बादशाहको थोड़ेसे आदमियोंके साथ भटनदीके उस तरफ देखकर जा घेरा और हाथीपर सवार कराकर अपने डेरेपर ले गया। परन्तु इतनी भूल रह गयी कि नूरजहां बेगमको साथ न लेता गया जिससे उसको यह औसान मिल गया कि नदीसे उतरकर लशकरमें चली गयी और दूसरे दिन ८ फरवरदीन शनिवार (१) सन् २१ ता० २८ जमादिउलसानी स० १०३५ को अपने भाई आसिफखां वगैरह अमीरोंके साथ लड़नेके वास्ते आयी। परन्तु महाबतखांके राजपूतोंसे हारकर बड़ी मुशकिलसे नदीमें गोते खाती हुई पीछे गई और आसिफखां अटकके किलेमें जाकर पकड़ा गया।

महाबतखांका खानखानाको कन्नौजके रास्तेसे लौटाकर लाहोरमें बुलाना।

महाबतखां बादशाहको उसी हालतमें काबुल ले गया और दिल्लीके हाकिमको लिखकर खानखानाको कन्नौजके रास्तेसे लौटाया और लाहोरमें बुलाया। इसी तरह आगरेके हाकिमको लिखा कि दाराशिकोह और औरंगजेबको नजर बन्द करके लावे।

शाहजहांका अजमेरमें आकर सिन्धको जाना।

शाहजहां यह खबर सुनकर (२) २३ रमजानको नासिकसे

१। चैत सुदी १ संवत् १६८३

२। आषाढ़ बदी ८ संवत् १६८३

चलकर अजमेर पहुंचा। १००० सवार साथ थे। परन्तु महाराज भीमके बेटे किशन सिंहके अकस्मात् मर जानेसे ५०० सवार जो उसके पास थे बिखर गये। इस बिघ्नसे वह महावतखांके ऊपर जानेमें कुछ लाभ न देखकर जोधपुर और जैसलमेरके रास्तेसे ठट्ठेको चल गया।

महावतखांकी स्थिति और उसका चला जाना।

काबुलमें महावतखांके हजार डेढ़ हजार राजपूत बादशाही अहदियोंसे लड़कर मारे गये और बादशाही आदमी दिन दिन बढ़ने लगे। बादशाहने (१) १ शहरेवर सन् २१ को काबुलसे कूच किया। रास्तेमें एक दिन महावतखांसे कहलाया कि कल नूरजहां बेगमके सिपाहियोंकी हाजरी होगी। तुम तड़के सलाम करनेको मत आना, कहीं कुछ बोलचाल होकर झगड़ा न हो जावे। महावतखां उस दिन दरबारमें नहीं आया। बस इस एक दिनकी गैरहाजिरीमें बादशाह उसके काबूसे निकल गये और उससे कहला दिया कि अब आगे आगे चला करो। उसका आगे चलना था कि बादशाह उसके पीछे ऐसे वेगसे चलने लगे कि सम्भलनेका अवकाश नहीं मिला। हतोत्साह होकर वह घबरा गया। तब बादशाहने हुक्म भेजा कि आसफखांको कैदसे छोड़कर शाहजहांके पीछे जावे जो ठट्ठेको गया है। महावतखां हुक्म न माननेमें अपना विनाश देखकर भटनदीके तटसे जहां उसने पिछले साल बादशाहको घेरा था ठट्ठेको चल दिया।

बादशाहका लाहोर पहुंचकर खानखानाको महावतखां पर भेजना।

बादशाहने (२) ७ आबानको लाहोरमें पहुंचकर आसिफखांको मुख्य मन्त्री बनाया और यह सुनकर कि महावतखां ठट्ठेका रस्ता छोड़कर हिन्दुस्तानको गया है कुछ फौज उसके

१। भादों सुदी ३ संवत १६८३

२। कातिक सुदी १० संवत् १६८३

पीछे भेजी और और खानखानाको जो पहिलेसे लाहोरमें पहुंच गये थे ७ हजारीजात ७००० सवार दो अस्पे सेह अस्पेका मनसब, खिलअत, तलवार, घोड़ा जड़ाऊ जीनका और खासा हाथी देकर महाबतखांके पीछे भेजा और अजमेरका सूबा उनको जागीरमें लिख दिया। इसी तरह नूरजहांने भी हाथी घोड़े ऊंट और १२ लाख रुपये उनको अपनी सरकारसे दिये। खानखाना आप महाबतखांसे जले भुने थे। उनकी पोती दाराबखांकी बेटी जो "आसिफखांके बेटे शायस्ताखांको व्याही थी कहा करती थी कि मैं जब महाबतखांको देखूंगी बन्दूकसे मार दूंगी" क्योंकि उसके बाप और भाईको महाबतखांने मारा था। इन्हीं कारणोंसे खानखाना बड़े क्रोधसे महाबतखांसे बैर लेनेको बादशाहसे विदा हुए।

खानखानाकी मृत्यु।

अब इस तरह खानखानाके दिन फिरे तो और भी कई घटनाएं ऐसी हुईं कि जिनसे उनको लाभ पहुंचे। अम्बर दक्षिणमें मर गया था और दखनियोंने लड़ना छोड़ दिया था। (१) ७ सफर सन् १०३६को परवेजकी भी मृत्यु हो गयी थी। शाहजहां जो ईरान जानेके विचारसे सिन्धको गया था परवेजका मरना सुनकर काठियावाड़ और और गुजरातके रास्तेसे दक्षिणको लौट आया था। यह तो सब कुछ हुआ; परन्तु इनकी आयुषने साथ नहीं दिया। बीमार तो लाहोर होसें हो गये थे। दिल्ली पहुंचे तो इतने अशक्त हो गये कि लाचार वहीं ठहरना पड़ा और यह ठहरना मौतका बहाना था। कई दिन पीछे सन् १०३६के बिचले महीनोंमें शान्त हो गये और अपनी बीबीके मकबरेमें जो उन्होंका बनाया हुआ था दफन हुए। उस समय उनकी आयु ७२ वर्षकी थी।

१। कातिक सुदी ८ संवत् १६८३ शुक्र

हरेक सन् हिजरीके विचले महीने जमादि उस्सानी या रजब माने जा सकते है। इस लेखसे खानखानाका देहान्त फागुन संवत् १६८३ या चैत संवत् १६८४में हुआ होगा। अफसोस है कि तुजुक जहांगीरीमें खान खानाके मरनेकी मिती नहीं लिखी है। पिछले वर्षो में जहांगीर बादशाहने रोग ग्रस्त और दुखी हो जानेसे स्वय लिखना छोड दिया था। कुछ वर्षों तक तो मोतमिदखां लिखा करता था। उसका लेख ठीक है, परन्तु मोहम्मद हादीने जो ३ वर्षका हाल लिखा है वह बहुत ही थोडा है। और दिन मिती भी विशेष वारके नही है। इस कोता कलमीसे खानखाना जैसे नामी अमीरकी मृत्यु तिथि अन्धेर खातेमें मारी गयी; मोतमिदखाने भी अपने ग्रन्थ इकबाल नामे जहांगीरीमें नहीं लिखी है।

खानखानाके ६।७ महीने पीछे ही बादशाह भी मर गये और राज्यकी रचना कुछ और की और हो गयी। इस वास्ते थोडासा वर्णन उसका भी किये देते है।

खानखानाके पीछेका कुछ हाल।

महावतखां बादशाही फौजसे पीछा छूटता न देखकर राज पीपले और बगलानेके रास्तेसे जुनेरमें शाहजहांके पास चला गया। बादशाह (१) २१बहमन सन २१को काश्मीर गये, क्योंकि गरमियोंमें उनको हिन्दुस्तानकी हवा हानि करती थी। परन्तु इस बेर वहां भी चैन नही मिला, बीमारी बढ गयी, भूख जाती रही, पीछे राजौरमें (२) २८ सफर सन १०३७ रविवार १५ आबान सन् २२ को शान्त हो गये। शहरयार तो पहिले ही अपनी बीमारीका इलाज करानेको लाहोर चला गया था और खुसरोके बेटे दावरबख्शको जो उसके पास कैद था इरादतखांके पास रखा गया था। आसिफखाने उसीको बादशाह

१। फागण बदी ८ सं० १६८३

२। कातिक बदी १० सं० १६८४

बनाकर कूच किया। नूरजहांने उसको बहुत बुलाया, पर बहनके पास जाकर फटका भी नहीं, दुःख पूछना तो दूर रहा। तब वह भी बादशाहकी लोथको लेकर उसके पीछे हो ली। दूसरे दिन बम्भरमें पहुंच कर बादशाहको कफन पहिनाया और लाहोरको भेजकर बागमें (१) दफन कराया।

आसिफखांने बनारसी नामक एक हिन्दूको डाक चौकीसे शाहजहांके पास भेजा और उसके बेटोंको भी नूरजहांके पाससे ले लिया तथा नजरबन्द करके उसके पास लोगोंका आना जाना बन्द कर दिया, क्योंकि वह अपने जमाई शहरयारको बादशाह बनानेके उपायमें थी और आसिफखां अपने जमाई शाहजहांको बादशाह बनाया चाहता था। उधर शाहरियार लाहोरमें बादशाह बन ही बैठा था। जब आसिफखां दावरबख्शको लेकर लाहोर आया तो शहरयार लडनेको निकला, परन्तु हारा, पकड़ा गया और कैद हुआ।

उधर शाहजहां बनारसीके पहुंचते ही (२) २३ रबीउल अव्वल गुरुवार सन् १०३७को जुनेरसे रवाने हुआ और इधर आसफखांने (३) २२ जमादिउल् अव्वल रविवार सन् १०३७को लाहोरमें उसके नामकी आन दुहाई फेर कर दावरबख्शको उसके भाई गरशास्प और दानियालके बेटो बायशनकर, तहमुर्स और होशङ्ग सहित मार डाला। शाहजहां आगरे पहुंच कर (४) ८ जमादि उस्सानी सोमवारको तख्त पर बैठा। महावतखां खानखाना हुआ और आसिफखां वकील—उलसल्तनत

१। यह स्थान अब शाहदके नामसे प्रसिद्ध है लाहोरसे ५ मील है।

२। मगसर बदी १० सं० १६८४

३। माह बदी १० सं० १६८४

४। माह सुदी १० सं० १६८४

बना। नूरजहां १ कोनेमें बैठा दी गयी। सब उपद्रव शान्त हो गया। भाई भतीजेमेंसे दावेदार कोई नही (१) रहा।

खानखानाकी सन्तान विशेष तो शाहजहांके झगडोंमें खप गयी और जो रही थी वह ऐसी नहीं थी कि जिससे शाहजहां और उसके अमीरोके चित्तमें कुछ शङ्का या चिन्ता उत्पन्न हो।

दूसरा खण्ड।

—*०*—

समालोचना और ग्रन्थकारोंके मत।

यह अच्छा बुरा जीवन चरित्र खानखानाका हमने उस समयकी तवारीखोंसे लिखा है। इससे ज्ञात होगा कि आदमीको अपनी जिन्दगीमें जो क्षण भङ्गुर कहलाती है क्या क्या ऊंच नीच वर्ताव इस असार संसारके बरतने पडते है और कालकी विचित्र गति उसके चित्तको कैसा कैसा चल विचल कर देती है। देखो एक समय तो खानखानाकी कैसी हवा बंध गयी थी कि हर तरफसे भलाई ही भलाई उनके पल्ले पडती थी और एक समय ऐसा आया कि उनकी बनी बनायी बात भी विगड गयी। राज दरबारके उलट फेर भी बडे ही बेढब होते हैं जो बडे बडे धीर धुरन्धर पुरुषोंको भी डिगमगाकर कभी कुछ और कभी कुछ कर देते हैं और उनके प्रपञ्चोंमें पडकर मनुष्योंको

---

(१) इस विषयमें एक मारवाडी कविने कहा है,—

दोहा।

मरम सगाई ना गिने, नां सबलां में सीर।

मुरम पटारे मारिया, कैका काकै बीर॥

संभलना बहुत कठिन हो जाता है। खानखानाको जहांगीर और शाहजहांके आपसके बिगाड़में फंस जानेसे जान मालकी हानि, लौकिकमें अपकीर्ति और दोनों ओरकी बेएतबारीके सिवाय और कुछ प्राप्ति न हुई. पत भी खोई और पतयारा भी गया जिससे उनकी अन्तिम अवस्था बहुत बुरी तरहसे बीती। एक फारसी कविने कहा है कि "जगतरूपी बागके रङ्ग और रूपकी स्थिरता नहीं है; क्योंकि दाखोंके हरे भरे होनेका परिणाम काला मुंह हो जाना है।"

अब हम कुछ इतिहास वेत्ताओंके मत और लेख जो खानखानाके विषयमें हैं लिखते हैं—

तुज़क जहांगीरीमें (१) लिखा है कि खानखाना दरबारके बड़े अमीरोंमेंसे था अकबर बादशाहके राज्यमें बड़े बड़े काम किये जिनमें ये तीन तो बहुत ही बड़े थे।

१। गुजरातकी फतह और मुजफ्फरका भगाना जिससे गया हुआ देश गुजरातका फिर हाथ आया।

२। सुहैलकी लड़ाई जिसमें ७०००० जङ्गी सवारों और मद मत्त हाथियोंको २०००० सवारोंसे मारा।

३। सिन्ध और ठट्ठेकी फतह।

ऐसी ही एक फतह उसके बेटे शाहनवाजखाने भी जहांगीर बादशाहके समयमें अम्बर चम्पूके ऊपर पायी थी।

खानखाना विद्या और योग्यतामें अपने समयका पक्का था।

---

(१) यह जहांगीर बादशाहकी दिनचर्याका ग्रन्थ है। १६॥ वर्ष तक तो बादशाहने इसे लिखा है, फिर १८ वें वर्षके प्रारम्भ तक मोतमदखाने मसौदे बनाकर बादशाहसे सही करायी हैं, शेष ३ वर्षों का वृत्तान्त मिरजा मोहम्मद हादीने पूरा किया है और भूमिका भी लिखकर लगायी है जिसमें जहांगीरके युवराज रहते समयका वृत्तान्त है।

अरबी तुरकी फारसी और हिन्दी भाषाओंको खूब जानता था। नकली और अकली इल्म (आगम, निगम और षट दर्शनमें) उसकी पूरी गति थी। यहां तक कि हिन्दी शास्त्रोंमें भी पूरा अभ्यास था। बहादुरी और सरदारीमें तो अद्वितीय ही था। हिन्दी और फारसीमें कविता अच्छी बनाता था। उसने "वाकेआतबाबरी"का उल्था अकबर बादशाहके हुक्मसे फारसीमें कराया गया।

मवासिरुल्उमरामें (१) लिखा है कि "खानखाना विद्याकी निपुणतामें एक ही था। अरबी, फारसी, तुरकी और हिन्दीमें धारा प्रवाह जैसा था, कविता खूब समझता था और आप भी कविता करता था। उसमें रहीमकी छाप धरता था। कहते है कि जो भाषाएं पृथ्वी प्रचलित हैं उनमेंसे बहुतेरी भाषाओंमें बात चीत कर लेता था। हिम्मत और सखावत (उदारता) तो उसकी हिन्दुस्थानमें प्रसिद्ध है ही, बल्कि बाजी बातोंको लोग मुशकिलसे मानते हैं; कहते हैं कि एक दिन बरातों (चिट्ठों) पर दस्तखत करता था; एक प्यादेकी बरात पर १००) टकेकी जगह १०००) रुपये लिख दिये और वही रहने दिये। कवियोंको उसने बहुधा अशर्फिया उनके बराबर तोल दी हैं। एक दिन मुल्ला नजीरीने कहा कि १ लाख रुपयेका कितना ढेर होता है, मैंने नहीं देखा है। खानखानाने हुक्म दिया कि खजानेसे लावे। जब लाये तो मुल्लाने कहा "खुदाका शुक्र है कि मैंने नवाबकी बदौलत इतना रुपया देखा।' खानखानाने फरमाया "सब मुल्लाको देदो कि फिर खुदाका शुक्र करे।"

१। यह अति ही उत्तम ग्रन्थ फारसी भाषाका ३ बड़े बड़े खण्डोंमें है। इसमें उन बड़े बड़े राजाओं और मुसलमान अमीरोंके जीवन चरित्र लिखे हैं जो बाबर बादशाहके समयसे लेकर मोहम्मद शाहके राज्य तक हिन्दुस्थानमें हुए हैं।

खानखाना हमेशा बहुतसे रुपये फकीरोंको और मोल विद्योंको चौडे और छुपे देता था और दूर रहने वालोंको (१) बरसोहें भेजा करता था। हरेक विद्याके विद्वनोंका समूह उसके समयमें सुलतान हुसेन (२) मिरजा और नसीर (३) अलीगेरके समयके समान था। ;

बुद्धि, बहादुरी और राज क्रियामें भी खानखाना बहुत बढा चढा था परन्तु वैर भाव तथा कपट देख कर और समय समझ कर अपनेको वैसा ही बना लेता था। यह उसमें जियादा था वह कहा करता था कि शत्रुसे मित्रताकी लपेटमें शत्रुता करनी चाहिये। यह शेर उसके वास्ते कह गया है।

बेंतभर शरीर और १०० गांठें घटमें
मुट्ठीभर हड्डिया और १०० बल।"

३० वर्षके लगभग कई कई बेर वह दक्षिणमें रहा। उस समय शाहजादों और अमीरोंमेंसे जो कोई उसकी मददको गया उसीने उसकी मिलावट और लाग लपेट वहांके बादशाहोंसे देख कर उसको कपटी और अन्तर द्रोही बताया और शेख अबुल-फजल तो उसे बागी ही कह चुका था। जहांगीरके राज्यमें अम्बर-चम्पूकी मित्रतासे कलङ्कित हुआ। उसके विश्वासी मन्त्री महम्मद मासूमने नमकहरामी करके बादशाहसे अरज करायी थी

१। वर्ष भरका नियत किया हुआ रुपया।

२। यह हिरातका बादशाह अकबरसे कुछ पहिले था और बड़ा गुणज्ञ था। इसके दरबारमें जितने विद्वान एकत्र थे तवारीख वाले उतनेका किसी बादशाहके दरबारमें रहना नहीं बताते है। तवारीख रोज तुलसफामें उसकी सभाके सब विद्वानोंके वृत्तान्त लिखे है।

३। अमीर अली शेर उस बादशाहका वजीर था और वह भी वैसाही विद्वान और पालक था।

कि अक्बरकी चिट्ठियां खानखानाके नौकर शेख "अबदुल सलाम लखनवीके पास है।" बादशाहने महावत खांको उसकी तलाश लेने और काट देनेका हुक्म दिया। उस बिचारेने जान खो दी, परन्तु भेद न खोला।

खानखानाका नाम जगतमें चिरायु हो गया है। अकबरके राज्यमें तो उससे बड़े बड़े काम हुए, पर जहांगीरके राज्यमें कुछ न हुआ। बल्कि पूरी बुद्धि और अच्छी समझ होनेपर भी बहुतसे अपमान सहे। परन्तु राजतृष्णा नहीं छोडी।

"कहते है कि दरबारकी खबरोंका उसको बडा चसका पडा हुआ था। दो तीन आदमी नित्यप्रति डाक चौकीमें रोजनामचा भेजा करते थे। तो भी उसके दूत अदालतों, कचहरियों, चबूतरों, गली कूचों और बाजारोंमें लगे रहते थे और जो कुछ झूठे सच्चे समाचार सुनते थे, लिख देते थे। खानखाना सन्ध्या होते ही उन सबको पढ़कर आगमें जला देता था।"

"कहते है, कि बहुधा चीजें उस समय उसके घरानेमें ही थी; जैसा हुमा पक्षीका पर जिसको शाहजादोंके सिवाय और कोई मस्तक पर नहीं लगा सकता था।"

३ तजकरेहुसैनीमें (१) लिखा है कि किसी मनुष्यने एक पुरुषको व्याकुल सा फिरता देखकर कारण पूछा तो उसने कहा कि मैं एक स्त्री पर मोहित हूं; परन्तु वह तो १ लाख रुपये लिये बिना बात ही नहीं करती इसका कोई उपाय जानते हो तो बताओ। उसने कहा कि इसका उपाय तो बहुत सुगम है; जो तू काव्य रचना जानता हो तो अपना वृत्तान्त कहकर खानखानाके पास ले जा। वह तुरन्त एक छन्द बनाकर ले गया जिसका यह आशय था;

१। यह ग्रन्थ फारसी कवियोंके जीवन चरित्रका है जिसको मीरहुसैन दोस्त सम्भलीने सन् ११६३ हिजरी संवत् १८०७ में बनाया था।

हे उदार खानखाना।
एक चन्द्रमुखी मेरी प्यारी है।
वह जान मागे तो कुछ सोच नहीं है
रुपया मागती है यही मुशकिल है।

"खानखानाने मुसकुरा कर पूछा कि कितना रुपया मांगती है उसने अरज की कि १ लाख। खानखानाने १०६०००) रुपये उसको दिलाकर फरमाया कि १ लाख रुपये तो उसको मागनेके हैं और ६०००) रुपये तेरे भोग विलासके वासते है।"

कहते हैं कि खानखाना वर्षा काल लगते ही अपने सिपाहियोंको ४ महीनेका वेतन देकर घर जानेकी आज्ञा दे दिया करते थे कि बरसात भर आरामसे अपने जोरू बच्चोंमें रहैं और जाडेके लगते ही नौकरी पर आ जावें। एक साल कोई लड़ाई होने वाली थी। इस कारण घर जानेकी आज्ञा तो न दे सके, पर प्रति मनुष्य एक एक मोहर देकर कहा कि लौंडियां मोल लेकर यहीं उनके साथ मौज उडावे। उस समय एक सिपाहीने कहा कि मैं दो मोहरें लूगा आपने उसको बुलाकर पूछा कि सबको एक एक मोहर मिली है; तू २ क्यों मागता है? उसने कहा कि १ से तो यहा मैं लौंडी खरीद कर मौज करूगा और दूसरी घर भेज दूगा जिससे एक गुलाम मोल लेकर वहा भी गुल छर्रे उड़ावे। इस पर आप बहुत हसे और सब सिपाहियोंको घर जानेकी छुट्टी दे दी।

४। तारीख चगत्तामें (१) लिखा है कि एक दिन एक कङ्गाल ब्राह्मणने खानखानाकी ड्योढी पर जाकर कहा कि नवाबसे कहो तुम्हारा साढू आया है। नवाबने उसको बुलाकर बडे मान

१। यह ग्रन्थ खड़ी भाषामें जयपुरके महाराजा सवाई माधोसिहजीकी आज्ञासे बनाया गया है। इसमें कई प्रकारके विषय हैं। कुछ अश इतिहासका भी है।

सम्मानसे पास बैठाया। किसीने पूछा कि यह मंगता कहांसे आपका साढ़ू हो गया ? नबावने कहा कि सम्पत्ति और विपत्ति दो बहनें हैं। एक हमारे घरमें है और दूसरी इसके घरमें। इस सम्बन्धसे यह हमारा साढ़ू है।

किसीने खानखानाकी पालकीमें लोहेकी पनसेरी फेंकी। खानखानाने उसे ५ सेर सोना दिला दिया। किसीने कहा कि इसने तो गर्दन मारनेका काम किया था और आपने ५ सेर सोना दिया यह भी खूब हुआ। खानखानाने कहा कि इसने हमको पारस समझ कर ऐसा किया था।

५। बूंदी राज्यके इतिहास वंश भास्करमें (१) लिखा है कि जब बूंदीके महाराव राजा भोज अकबर बादशाहके दरबारमें रहतेथे तब बादशाहका वजीर नवाब खानखाना था। यह बड़ा गुणवान था। संस्कृत आदि भाषाओंको जानता था। बड़ा पण्डित और पण्डितोंका कदरदान था। अवगुण किसीके नहीं देखता था; सबके दुःखोंमें पड़ जाता था। एक दिन एक दुर्बल ब्राह्मण भूखा प्यासा पड़ा हुआ मुसलमानोंको कोस रहा था। खानखानाने इसकी दीन दशा पर तरस खाकर कहा कि तुमको खाना पीना बहुत मिल जावेगा तुम हम लोगोंपर दया रखो। ब्राह्मणने प्रसन्न होकर अपनी पागड़ी नवाबके पास फेंक दी और कहा कि मैं तुम्हारी बातोंसे सन्तुष्ट हुआ हूं; परन्तु इस पगड़ीसे अधिक देनेको मेरे पास कुछ नहीं है, क्योंकि हमारे शास्त्रका हुक्म है कि आदमी जिसकी बातोंसे प्रसन्न होवे उसको कुछ देवे।

१। यह पद भाषाका महत् काव्य बूंदीके महाराव राजा श्रीरामसिंहजीकी आज्ञासे उनके आश्रित मिश्रण गोतके चारण कवि सूर्य्यमलका बनाया हुआ है जो बारहट कृष्णसिंहजीकी टीका सहित छप चुका है।

वह पगडी सारी छेद छेद हो रही थी और रगडे बदने उसके ऊपर मैल हो मैल चढा हुआ था। तो भी नवाबने अपने सिरसे बांध ली और उसको बहुत सा रुपया आपने भी दिया और अपने अमीरोंसे भी दिलाया।

जैसा अच्छा बादशाह अकबर था वैसा ही अच्छा उसका यह वजीर भी था। इसके बराबर धर्मात्मा हिन्दू मुसलमानोंमें कोई न था। बहुत ही सुशील और लज्जावान था। एक साहु कारकी स्त्री इसको देखकर मोहित हो गयी थी। एक दिन उसने बुलाया तो यह गया और पूछा कि क्यों नेकबख्त! मुझे क्यों याद किया। स्त्रीने शरमाकर कहा कि मैं तुमसे तुम्हारे जैसा बेटा मागती हूं। नवाबने कहा कि नेकबख्त सुन। बेटा देना मेरे अख्तियारमें नहीं है और जो ऐसा हो भी तो क्या मालूम कि वह मुझसा हो या न हो और तेरी टहल करे या न करे और तुझको मुझ जैसा बेटा चाहिये सो मैंही तेरा बेटा होता हूं। आजसे तू मेरी मा और मैं तेरा बेटा हूं। जो तू कहेगी सो ही करूंगा। यह कहकर उसकी गोदमें सिर रख दिया जिससे उसको भी लज्जा आगयी और वह अपने खोटे मन्तव्यसे बहुत पछतायी।

एसी बात न किसी योगीसे हो सकती है न यतिसे जो नवाब खानखानाने उस स्त्रीसे की थी;—

इस नवाबने कवि गगके कवित्तोंसे प्रसन्न होकर ३०००००) तीस लाख रुपये (१) उसको दिये थे।

६। मआसिर उलउमरामें जो यह बात लिखी है कि खान खाना हरेक भाषामें भाषण कर सकते थे इसका कुछ पता मेवाड और मारवाडमें भी मिलता है। वहा महडू शाखाका

१। खूब चन्द कविने खानखानाका गगको एक छप्पयके ऊपर २७ लाख देना इस कवित्तमें कहा है

मान दसलाख दये दोइ। हरनाथके पैं।
लाष हरनाथ दे कलङ्क कवि प्रेहैं को॥

चारण जाड़ा नामक हुआ। उसने एक बेर ये ४ चार दोहे खान-खानाकी प्रशंसाके बनाकर सुनाये थे;—

१। खानखाना नवाब रो। मोहि अचम्भो एह॥
माये किम गिरि मेरु मन। साढ तिहत्थी देह॥१॥
२। खानखाना नवाब रे। खांडे आग खिवन्त॥
जल वाला नर प्राजले। तृण वाला जीवन्त॥२॥
३। खानखा ना नवाब री। अदसगोरी धन्न॥
सह ठकुराई मेर गिर। मनी न राई मन्न॥३॥
४। खानखाना नवाबरा। अड़िया भुज ब्रह्मण्ड॥
पूठे तो है चण्डिपुर। धार तले नव खण्ड॥४॥ †

बीरवल दे छ औौर केशवके कवित पर।
सिवा हाथी बावन दे भूषन विन लेहैं को॥
छप्पै पे सताई लाख गग खानखानो दिये।
यातें धन दान दूनूई हरसें कैहै को॥
श्री गम्भीर सिंह छन्द एूव छन्दके ये रीझि।
बदासें दया दई दई न फेर देहै को॥१॥

† इन चार दोहोंका अर्थ यह है।

१। मुझे यही अचम्भा है कि खानखानाका मेरु पर्वत जैसे मन ३॥ हाथकी देहमें कैसे समा गया है॥ १॥

२। खानखाना नवाबकी तलवारसे आग झड़ती है। परन्तु उसमें जलवाले नर अर्थात् पराक्रमवाले तो जल मरते हैं और जो तिनके मुहमें ले लेते हैं वे जी जाते हैं॥ २॥

३। खानखाना नवाबके अदसनको धन्य है कि मेरु गिरि जैसी बड़ी ठकुराईके बराबर भी उन्होंने अपने मनमें नहीं मानी॥ ३॥

४। खानखाना नवाबके भुज ब्रह्माण्डमें अड़े हुए हैं। चण्डीपुर अर्थात् दिल्ली तो उसकी पीठपर है और ८ खण्ड तलवारकी धारके नीचे हैं॥ ४॥

इस कविका नाम तो भासकरन था, परन्तु मोटा बहुत था। इस लिये लोग जाडा जाडा कहते थे। सो खानखानाने भी उसको देखकर यह दोहा कहा:—

घर जड्डी अम्बर जडा। जड्डा महडू सोय॥
जड्डा नाम अलाहदा। और न जड्डा कोय॥ १॥

और प्रति दोहा १ लाख रुपया देना चाहा। परन्तु जाडा महडूने रुपये तो नहीं लिये। महाराणा उदयसिंह जीके कुंवर और महाराणा प्रताप सिंहके भाई सीसोदिया जगमालजीको बाद-शाहसे जागीर दिलानेके लिये कहा जो अपने भाईसे रूठकर चले आये थे और जाडा जिनका वकील बनकर खानखानासे मिला था।

खानखानाने बादशाहसे अर्ज करके जगमालजीको जहाजपुरका परगना दिला दिया जो मेवाडका ही था, परन्तु बादशाहने ले लिया था।

"मुआसिर रहीमी."

सुना है कि खानखानाके चरित्रोंका एक ग्रन्थ फारसीमें बना हुआ है जिसका नाम मआसिर रहमी है। परन्तु वह अबतक हमारे देखनेमें नहीं आया है। यह जो जीवनचरित्र उनका हमने लिखा है वह उन पुस्तकोंसे लिखा है जो हमारे पुस्तकालयमें हैं।

खानखानाकी संस्कृत कविता

हम ऊपर यह लिख आये हैं कि खानखाना हिन्दी और संस्कृत भाषामें भी काव्य रचना करते थे सो इस बातको दोनों भाषाओंके पण्डित लोग भी स्वीकार करते हैं और उनके बनाये हुए बहुतसे श्लोक और कवित्त हिन्दुओंमें प्रसिद्ध हैं मुसलमानोंसे ज्यादा हिन्दुओंकी सुसभ्य सभाओंमें उनका नाम लिया जाता है। रहीम काव्य नामक एक संस्कृत ग्रन्थ भी उनका बनाया हुआ सुना गया है।

हम यहां पहिले उनकी कुछ संस्कृत कविता लिखते हैं फिर भाषाकी लिखेंगे।

श्लोक।

आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्ण या भूमिका।
व्योमाकाश खखांबराब्धि वसुवत्त्वत्प्रीतयेऽद्यावधि॥
प्रीतस्त्वं यदि चेन्निरीक्ष्य भगवन् स्वप्रार्थितं देहि मे।
नोचेद्ब्रूहि कदापि मानय पुनस्त्वेतादृशी भूमिका॥

॥ अर्थ—कवित छप्पय॥

रिझवन हित श्रीकृष्ण, स्वांग मैं बहुविधि लायौ॥
पुर तुम्हारे है श्रवन अवनि, अहवह रूप कहायौ॥
गगन बेत खख व्योम, वेद वसु स्वांग दिखाये।
अन्त रूप यह अनुप, रीझके हेत बनाये॥
जो रीझे तो दीजिये, ललित रीझ जो चाय।
नाराज भये तो हुकम कर, रे स्वांग फेर मति लाय॥१॥

श्लोक।

रत्नाकरोस्ति सदनं गृहिणी च पद्मा।
किं देयमस्ति भवते जगदीश्वराय॥
राधा गृहीत मनसेऽमनसे च तुभ्यं।
दत्तं मया निज मनस्तदिदं गृहाण॥२॥

अर्थ।

रत्नाकर समुद्र तो आपका घर ही है और जो लक्ष्मी है वह आपकी पत्नी हैं। फिर हे जगदीश्वर! मैं क्या आपको दूं। सो आप प्रसन्न हैं आपका मन राधाने ले लिया है। इसलिये मैं अपना मन आपको देता हूं उसे ग्रहण कीजिये—

श्लोक।

अरण्या पाषाणं प्रहाति पङ्गुरपीत्यपि वसू।
गुणी मूकाङान्ध विजय मपि नीत निज पदम्॥

अहं चिन्नेनाश्मः पशुरपि तवार्चादि करणे।
क्रिया भिल्लागड़ालो रघुवर! नमा मुद्वरमिकि ॥३॥

इसका अर्थ यथा सवैया।

गौतम नारि पाषाण रही, पशु जाति रह्यो कपि पुञ्ज विचारो॥
पापी बडोहि निषाद हुतो, परताप प्रभो तिन इनको तारो॥
मैं इ सबै बिधि चित्तमें पत्थर, पूजनमें पशु कर्म्म हत्यारो॥
होय निकामनके सुख धाम हे, रामजी! काहेन मोहि उधारो॥१

श्लोक।

यद्या त्वया व्यापकता हताते।
भिदैकता वाक्परता चस्तुत्या॥
ध्यानेन बुद्धेः परता परेश।
जात्या जताचन्तु मिहार्हसित्व॥४॥

अर्थ।

मैने जात्रासे तेरी व्यापकता मिटायी है। भेद करनेसे तेरी एकता और अस्तुति करनेसे तेरी वाक्परता हरी है ध्यान करनेसे तेरी बुद्धिके परे होना मिटाया है। तो भी मैंने तेरी जाति ठहराकर अजाति पना दूर किया है सो तू मेरे इन अपराधोंको क्षमाकर॥ ४ ॥ पण्डित जगन्नाथ त्रिशूलीने एक दिन यह श्लोक खानखानाको सुनाया।

श्लोक।

प्राप्यचला नधिकारान् शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु।
नापकृत नोपकृत न सत्कृत किं कृत तेन॥५॥

जिसने राजाका अधिकार पाकर शत्रुओंका अपकार मित्रों और बन्धुओंका उपकार नही किया तो उसने क्या किया।

खानखानाने हसकर इसके उत्तरमें यह श्लोक कहा।

श्लोक।

प्राप्यचला नधिकारान्।
शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु॥

नोपकृतं नोपकृतं ।
नोपकृत किं कृत तेन ॥

जिसने राज्यका अधिकार पाकर शत्रुओं मित्रों और बंधुओंका उपकार नही किया तो उसने क्या किया।

श्लोक।

दृष्टात्तत्र विचित्रतां तरुलतां, मैंथा गया बागमें।
काचित्तत्र कुरङ्ग शाव नयना, गुल् तोडती थी खडी॥
उन्मद्भ्रू धनुषा कटाक्ष विशिखे, घायल किया था मुझे।
तत्सीदामि सदैवमोह जलधौ, हेदिल गुजारो शुकर॥६॥

अर्थ।

विचित्र तरु लता देखनेको बागमें मैं गया। कोई वहां बाल कुरङ्ग जैसी आंखोवाली खडी गुल तोडती थी—
उसने भवोंकी कमान उठाकर कटाक्षके बानोंसे मुझे घायल किया—
तबसे मैं मोहके समुद्रमें सदाके लिये डूब गया। हे दिल! गुजारो शुकर॥७॥

पुनः श्लोक।

एकस्मिन्दिवसे वसान समये, मैं था गया बागमें।
काचित्तत्र कुरङ्गबाल नयना, गुल् तोड़ती थी खडी॥
तांदृष्ट्वा नवयौवनां शशि मुखी, मैं मोहमें जा पडा।
नो जीवामि त्वया विना शृणुसखे, तू यार कैसे मिले॥८॥

अर्थ।

एक दिन सन्ध्या कालमें, मैं बागमें गया था वहां कोई हरनके बच्चे जैसी नेत्रोंवाली खडी गुल तोडती थी—
उस नवयौवनवती चन्द्रमुखीको देखकर मैं मोहमें जापडा। मैं तेरे बिना नही जियूंगा रे ? प्यारी तू यार कैसे मिले॥८॥

श्लोक गङ्गाजीसे प्रार्थना।

अच्युत चरण तरङ्गिणी। शशिशेखर मौलिमालती माले ?
त्मतनु वितरण समये हरता देय न मेहरिता ॥८॥

भावार्थ।

विष्णु बनाओगी तो मुझे कृतघ्नताका दोष होगा। क्योंकि तुम उनके चरणसे निकली हो अतएव शिव बनाना जिससे तुम्हे सिरपर धारण करूं ॥८॥

खानखानाकी भाषा कविता।

खानखानाकी भाषा कविता कि जिसमें भी रहीमको छाप है बहुत रसीली और चटकीली है। हमको अपने पुस्तकालयमें इनके २७ दोहे नाना साहिब हकीम शङ्करलालजीके लिखे मिले सो यहां लिखे जाते हैं।

दोहा।

तैं रहीम मन आपनों कीनों चन्द्र चकोर।
निसवासुर लागो रहै कृष्ण चन्द्रकी ओर ॥१॥
मुकता करत कपूर कर चातककृष्ण हर होय।
ये तो बडो रहीम जल (१) कुथल परे विष होय ॥२॥
सर सूखे पंछी उडे जिन सर जल अधिकाय।
मीन दीन बिन पङ्कके कहु रहीम कित जाय। ३॥
बडे पेटके भरन कू कह रहीम दुख बाढ।
तातें हाथी हहरकै रह्यौ दांत दोय काढ ॥४॥
थोरे करे बडेनकू बडे बड़ाई होय।
त्यों रहीम हनवन्त सों गिरधर कहै न कोय ॥५॥
ससिके सुख दसु चादनी सुन्दर सभी सुहात।
लगे चोर चित चौगुनी कसत रहीमन धात ॥६॥

(१) पाठान्तर व्याल बदन बिष होय।

ज्यों रहीम सुख होत है बढ़े आपने गोत।
त्यों बिडरी भ पिया लखै आंखनही सुख होत॥७॥
बड़न जो कोऊ घट कहे तिन रहीम घट जान।
गिरधर मुरलीधर कहत मन दुख कछू न मान॥८॥
इसी भावका यह दोहा सूरदासजीका भी है।
सर्प गयो मुकता भयो कदली भयो कपूर।
ऊहि फण गयो तो विष भयो सङ्गतको फल सूर॥१॥
ससि सुकेस साहस सदिल लाज सनेह रहीम।
बढ़े बढ़े दढ़ जात है घटे घटे तिहसीम॥९॥
यह रहीम मत सङ्गते जनमत नाही कोय।
बैर प्रीत अभ्यास जस होत होत ही होय॥१०॥
अज कर क्रिया रहीम सुख सिद्धि भावके हाथ।
पासे अपने हाथ है दाव न अपने हाथ॥११॥
जे रहीस बढ़ बढ़ गये घटको डारत काढ़।
चन्द दूबरो कूबरो तऊ नखत तें बाढ़॥१२॥
दीनन पै जे हित करें धन रहीम ते लोग।
कहा सुदामा बापरो कृष्ण मिलता जोग॥१३॥
प्रीतम छवि नैनन बसो पर छवि दृग न समाय।
भरी सराय रहीम लखि ज्यों पथी फिर जाय॥१४॥
नेर लगाय रहीम प्रभु कर देखो जो कोय।
नरको दस बारवो कहा नारायन बस होय॥१५॥
दुर दिन परे रहीम प्रभु सभी लिये पहचान।
सोच नही धन हान को होत बड़न हित हान॥१६॥
यह न रहीम सराहिये देन लेनकी प्रीत।
प्रानन पाई राखिये हार होयके जीत॥१७॥
रहमन कहत जो पेट सो क्यों न भयो तू पीठ।
भूखे मान घटाय दे भरे दिखावे दीठ॥१८॥
सनमें नहीं रहीम प्रभु दिनसे नाहि दिवान।

देख द्रगन जे आदरे मन तिह हाम विकान ॥१९॥
जिन रहीम तन मन जियो कियो हिये विच भौन।
तासों दुख सुखको कथा रही दनगको कौन ॥२०॥
धूरहु डारत सीम पर कह रहीम किन काज।
जिन रज रिप पतनी तरी सो ढूढत गजराज ॥२१॥
जो रहीम भावी कहु होती अपने हाथ।
राम न जाते हिरन सग सीता रावण साथ ॥२२॥
सम्पत सम्पतवान कू सब कोई सब देय।
दीनबन्धु बिन दीनकी को रहीम सुध लेय ॥२३॥
हित अनहित सब कोउ लहै के सलाम के राम।
हित रहीम तब जानिये जादिन आवे काम ॥२४॥
कह रहीम या जगत तें प्रीत गयी दे टेर।
कहु रहीम नर नीचमें स्वारथ स्वारथ हेर ॥२५॥
ज्यों रहीम लघु दीप ते प्रकट सबै निध होय।
मन सनेह कैसे दुरै द्रग दीपक जहा दोय ॥२६॥
रहमन असुवा वाहुरे विथा जनावत येह।
जाको घरते काढिये क्यों न भेद कह देह ॥२७॥

कवित्त।

सुनिये विटप प्रभु दुमप है तिहारे हम। राखिहो हमैंतो सोभा रावरी बडाये है, त्याग हो हमें तो यामे हर्खना विषाद कछु। जहा जहा जायें तहा दूनी छवि छाय है, सुरन चढेगे नरनाथ न चढ़ेंगे सीस। सुकवि रहीम हाथ हाथ न विकाय है देसमें रहेंगे परदेशमें रहेंगे काहु भेसमें रहेंगे तऊ रावरे कहाय है ।१।

रहीम सतक।

खानखानाके भाषा ग्रन्थोंमेंसे अभीतक यही रहीमशतक प्रसिद्ध हुआ है। इसकी २ प्रतियां हमारे देखनेमें आई है। पहला एक तो हमारे मित्र पण्डित सूर्य्यनारायण शर्माने जो नागरी साहित्य

प्रचारणी सभा (सदरबाजार) जबलपुरके मन्त्री है। बम्बईके सुवि-ख्यात प्रेस श्रीवेङ्कटेश्वरमें छपाई है इससे १२५ दोहे हैं।

दूसरी प्रति जोधपुरमें रामस्नेही साधु आरत रामजीके पास है इसमें १०५ ही दोहे हैं।

खानखानाका उत्तर राना अमरसिंहको।

खानखाना जैसे पण्डितोंके श्लोकोंका उत्तर श्लोकोंमें देते थे वैसाही नियम उनका भाषा कवितामें भी था। उदयपुरके महा-राणा अमरसिंहजी जब जहांगीर बादशाहकी फौजके दबावसे जङ्गलोंमें फिरते फिरते थक गये थे। तब उन्होंने यह दो दोहे बनाकर खानाखानाको भेजे थे:—

हाडा कूरम राव बड गोखां जोख करन्त।
कहियो खानाखानने वनचर हुआ फिरन्त ॥१॥

तुवरासू दिल्ली गई राठौडां कनवज्ज।
राण (१) पयपै खानने वह दिन दीसे अज्ज ॥२॥

खानखानाने इसके उत्तरमें यह सन्तोषदायक दोहा रानाजीको लिखा था।

(२) धर रहसी रहसी धरम खपजासी खुरसाण।
अमर विशम्भर ऊपरे राखो नहची राण। १॥

१। पयपै—कहे—

२। इस दोहेकी भविष्यवाणी पर उस दिन तो शायद कि-सीको ही विश्वास हुआ हो तो हुआ हो। परन्तु उसका फल आज तो प्रत्यक्ष ही देखनेमें आता है। क्योंकि उदयपुरके राना-ओंका देश और धर्म्म जो उस समय था। आज भी बना हुआ है और खुरसाण अर्थात् मुगल जो उनको दुख देते थे कभीके खप गये हैं। दिल्ली और विशेष करके राजपूतानेकी भाषा कवितामें खुरसाण शब्द मुसलमानोंके वास्ते आता है। जैसे मस्तानमें

रहीमके कुछ और दोहे (१) भडौआ संग्रहके

चौथे खण्डमें उद्धृत—

जो रहीम छोटे बढ़ैं बढ़त करत उतपात।
प्यादेसों फरजी भयो तिरछो तिरछो जात।१।
धनद रा अरु सुतनमें रहत लगाये चित्त।
क्यों रहीम खोजत नही गाढ़े दिनको मित।२।
गहि सरणागत रामकी भवसागरकी नाव।
रहि मन जगत उद्धारको औरन कछु उपाव।३।
छमा बडनको उचित है छोटनको उतपात।
कहु रहीम प्रभुका घट्यो जो भृगुमारो लात।४।
कहि रहीम नहि लेत है रह्यो विषय लपटाय।
घास चरै पसु आपतें गुरलों लाये खाय।५।
गति रहीम बड नरन की ज्यों तुरङ्ग व्यवहार।
दाग दिखावत आपने सही होत असवार।६।
अब रहीम चुप ह्वै रहो समझि दिननको फेर।
जब दिन नीके आय है बनतन लागे देर।७।
यों रहीम तन हाटमें मनुआ गयो बिकाय।
ज्यों जलमें छाया परे छाया भीतर नाय।८।

यवन, सबसे पहले यूनानी भारतमें आये थे तो यहा उनको यमन कहते थे फिर अरब लोग भी उधरसे ही अर्थात् पश्चिम समुद्रके तटसे आये तो वे भी यमन ही समझे गये। फिर तुर्क महमूद-गजनवी वगैरा खुरासानकी तर्फसे आये तो उस समय मुसलमानोका नाम खुरसाण और खुरसाणी हो गया। तुर्क और मुगल शब्द पीछे चला है परन्तु कविलोग तीनों शब्दोमें जो कवितामें आजावे वही ले आते हैं।

१। यह ग्रन्थ हमारे मित्र डुमरांव निवासी नकछेदी तिवारी जीका बनाया हुआ है।

जगत जाही किरण सों अथवत ताही कांति।
त्यों रहीम दुख सुख सबै बढत एकही भांति ८।
छोटे काम बडे करैं तौ न बडाई होय।
ज्यों रहीम हनुमन्तको गिरधर कहै न कोय।१०।
अनुचित उचित रहीम लघु करहि बडनके जोर।
ज्यों ससिके संजोग तैं पचवत आगि चकोर।११।
मांगे घटत रहीम पद किती करो बढि काम।
तीन पैर वसुधा करी तऊ बावनै नाम।१२।
रहिमन अब वे बिरछ कहं जिनकी छांह गम्भीर।
बागन बिच बिच देखियत सेंहुड कुढज करीर।१३।
होय न जाकी छांह ढिग फल रहीम अति दूर।
बाढ्यो सो दिन काज हीं जैसे तार खजूर॥१४॥
नाद रीझ तन देत मृग नर धन हेत समेत।
ते रहीम पसुतें अधिक रीझे कछू न देत॥१५॥
जाल परे जल जात बहि तज मीननको मोह।
रहिमन मछरी नीरको तऊ न छाडति छोह॥१६॥
रहि मन पानी राखिये बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून॥१७॥
बडे बडाई ना तजैं लघु रहीम इत राइ।
राइ करौंदा होत है कटहर होत न राइ॥१७॥
जारत निपुनई गुन बिना रहिमन निपुन हजूर।
मानो टेरत बिटप चढि इहि प्रकार हम कूर॥१८॥

खानखानाकी इमारतें।

मारवाडी कहावत है कि "गीतडा नाम कै भीतडा नाम" अर्थात् मनुष्यका नाम यातो गीतों (कविताओं)में रहता है या भीतों (इमारतों)में रहता है सो खानखानाका नाम दोनोंमें ही रहा है। खानखानाकी बनाई कविता तो हम कुछ लिख ही चुके हैं और कुछ दूसरे कवियोंकी आगे लिखेंगे जिससे खान-

खान का नाम अमर हो गया है यहां तो उनकी बनाई हुई इमारतोंका हाल लिखते हैं।

खानखाना जहा २ रहे वहां उन्होंने बडी २ हवेलियां बनायी थी, बाग लगाये थे, महल भ्रुकाये थे, परन्तु बहुत वर्ष व्यतीत हो जानेसे अब उन सबका पूरा २ पता नहीं लगता।

हमने इस विषयकी भी बहुत खोजना की है और जो थोडा सा हाल सुना है या तवारीखकी पुस्तकोंमें लिखा मिला है वह यहां लिखे देते है।

खानखानाकी हवेली।

खानखानाने अपने रहनेके वास्ते १ बडी हवेली-आगरेमें बनायी थी। जिसमें एक सुन्दर और-सुडौल सिंहासन भी निर्माण कराया था उस पर चांदी और सोनेकी चोबों पर जरीका शामियाना खिचा रहता था जिसमें मोतियोंकी झालरें झिल-मिलाया करती थीं। उसके नीचे बढ़िया गलीचे और कालीन बिछे रहते थे। किसीने चुगली खायी कि खानखाना तो बाद-शाहोंकी भांति तखत पर बैठता हैं और चवर कराता है, बादशाहने पूछा कि यह सच है? उसने अर्ज की कि उसकी हवेलीमें तखत चवर और छत्र मौजूद ही है इसके सिवाय और क्या प्रत्यक्ष प्रमाण होगा।

एक दिन बादशाह खानखानाकी हवेली पधारे देखते २ वहां भी पहुंचे कि जहां यह राज्य चिह्न धरे थे। बादशाहने चुगलखोरका यह कहना सच मान कर पूछा कि मिरजा ये चीजें यहां क्या है? उन्होंने अर्ज की कि जहांपनाहके लिये हैं विराजिये जो यह न होतीं तो आज मुझे लज्जित होना पड़ता।

बादशाह प्रसन्न होगये और खानखानाकी बुद्धिकी बहुत प्रशंसा की। चुगलखोर अपना सा मुंह लेकर रह गया।

फतह बाग।

अहमदाबादसे ३ कोस सरखेच गांवकी सीमामें साबरमतीके तटपर जहां खानखानाने सुलतान मुजफ्फर गुजरातीको जीता था वहां एक सुरम्य बाग लगाया जो गुजरातमें उस समयके सब बागोंसे अच्छा था। और पीछे भी बहुत वर्षों तक उसकी शोभा वैसी ही बनी रही थी २५ वर्ष पश्चात् सन् १६१७ में जहांगीर बादशाहने इस बागको देखा था। और जो हाल उसका अपनी तुजुकमें लिखा वह हमल यहां उद्धृत करते हैं।

गुरुवार ६ बहमनको मैं फतह बाग देखने गया जो एक सुन्दर स्थानमें लगा है १५०००) रुपये रस्तेमें लुटाये।

यह बाग जिस जगह है वहां सिपहसालार खानखाना अत्तालीकने मुजफ्फरको लड़ाईमें हराकर फतह पायी थी। इस लिये इसका नाम फतह बाग रक्खा। गुजरातके लोग इसे फतह बाड़ी कहते हैं।

मेरे बापने इस फतहके पारितोषिकमें पांच हजारी मनसब खानखानाका खिताब और गुजरातका सूबा मिरजाखांको (१) दिया था।

खानखानाने जो बाग लड़ाईकी जगह बनाया वह साबरमतीके किनारे पर है और उसके योग्य एक विशाल भवन भी चबूतरे सहित जो नदीके ऊपर है निर्माण किया है। बागका कोट चूने और पत्थरोंका बहुत मजबूत बना है। यह बाग १२० जरीबमें अच्छी सुहावनी जगह पर है। २ लाख रुपये इसमें लगे होंगे मेरा तो बहुत दिल लगा। यह कह सकते हैं कि सारी गुजरातमें इस जैसा दूसरा बाग न होगा। मैंने गुरुवारका दरबार वहीं करके निज सेवकोंको प्याले दिये और रात वहां रह

---

(१) मिरजाखां भी खानखानाका नाम था—

कर शुक्रवरको पिछले दिनसे शहरमें आया १०००) रुपये रस्तेमें निछावर किये।

इस समय वागवानने पुकार की कि चम्पाके कई छम जो चबूतरे पर थे मुकर्रबखांके नौकरने काट लिये हैं यह सुनकर मेरा चित्त उदास हो गया और खुद निर्णय किया। जब निर्णय हो गया कि यह कुकर्म उसने किया है तो हुक्म दिया कि उसके दोनो अंगूठे काट डालीजावे। जिससे दूसरो को भय हो जावे (१) मुक-र्रबखांको इस वातकी खबर न हुई नहीं तो वह तुरन्त दण्ड दे देता।

दूसरे गुरुवारको वादशाह फिर इस वागमें आये जिसका हाल यों लिखते हैं कि गुरुवार २२ को फतह वागमें जाकर गुलाब वाड़ी देखी गयी। एक क्यारी तो वहुत ही खूब खिली हुई थी। इस देशमें गुलाब वहुत कम होता है। एक जगह इतना होना गनीमत तथा गुल लाला भी बुरा न था। अंजीर पके हुए भी थे कई अंजीर मैंने अपने हाथसे तोड़े जो सबसे बड़े थे उनमेंसे एकको तोला तो ७॥ तोलेका हुआ। ४ दिन भोग विलासमें व्यतीत करके सोमवार २३ वी की रातको इस वागसे शहरमें आया।

तीसरे गुरुवार २४ वी अमरदादको फिर वादशाह फत-हबागमें गये २ दिन तक वहां मौज उड़ाते रहे शनिवारको पिछले दिनसे दौलतखानेमें पधारे।

उस समयसे १५० वर्ष पीछे गुजरातकी तवारीख (२) मिरआत अहमदी बनी है उसमें फतहबागका यह हाल लिखा है। कि अब कुछ मकान और कोट तो बना हुआ है खेती होती है बाग-पना जाता रहा। इति।

१। मुकर्रबखां उस समय गुजरातका सूबेदार था—

२। यह गुजरातकी बहुत अच्छी तवारीख सन् ११७० में बनी है।

अब फतेवाडीका यह हाल है कि सानन्द नाम एक छोटेसे रजवाडेकी सीमामें आयी हुई है। सानन्द अहमदाबादसे ७।८ कोस है फतहवाडी अहमदाबादसे ४ कोस और सरखेजसे ३ कोस दक्खन पच्छमके कोनेमें है। बाग और बगीचेका तो कुछ पता नहीं है कोट कुछ बाकी रह गया है जो आदमीके बराबर ऊंचा है। इसमें कोलीभील और रेबारियोंके घर हैं। और वही लोग यहां रहते है। नदीके ऊपर जो महल थे वे भी गिरा दिये गये हैं क्योंकि कोलीभील और रेबारी चोरी धाडा करके उन महलोंमें छिप जाते थे और चोरी धाडेका माल इन्मा-सोंमें छिपा देते थे। इन्मारत सात थे उनके भीतर भी महल और मकान बने हुए थे जिनमें अब चमचेडें बहुत भरी रहती हैं।

कोलीभील और रेबारी जो फतहवाडीमें रहते हैं किसीको अन्दर नहीं आने देते हैं, क्योंकि उनको यह भय बना रहता है कि कोई उनके चोरी धाडे या भेद लगानेको न आया हो।

फतहवाडीमें अब कोई चीज देखनेके लायक नहीं है। नाम बाकी रह गया है। कहते हैं कि फतहवाडीके इमारतोंसे अहमदाबादके किले तक जिसको भद्र कहते हैं जमीनके अन्दर ही अन्दर रस्ता था पर अब उसका भी कुछ पता नहीं है।

शाहवाडी।

फतहवाडीसे १ कोस शाहवाडी है वहां भी अच्छे २ मकान बने थे जिनका अब कुछ निशान रह गया है। शाहवाडी अहमदाबादकी अंग्रेजी अमलदारीमें अहमदाबादसे ३ कोस पर है उसमें अबरेवान्यू कमिश्नर रहता (१) है।

भदरसे तिरपोलीया।

खानखानाने कुछ इमारतें भदरसे भी बनाईं थीं लक्षा

(१) फतहवाडीकी वर्तमान दशाका हाल जो ऊपर लिखा है अहमदाबादके पुरोहित पूनमचन्दजीने कृपा करके इस पुस्तकके वास्ते लिख भेजा था।

उनका नाना जमालखां मेवाती रहता था, अब उन इमारतोंमेंसे तिरपोलिया बहुत मशहूर है यह एक आलीशान मकबरा (कब्रस्थान) था। इसके ३ तरफ ३ बडी बडी खुली हुई पोलें थीं। चौथी तरफकी पोल बन्द थी इसीसे तिरपोलिया कहलाता है। ऊपर लदावका बडा गुम्बद है। कहते हैं कि इतना बडा गुम्बद लदावका कहीं देखनेमें नहीं आता। शायद यह खानखानाकी माकी कबर पर बनाया गया हो। अब तो इसमें कोई कबर नहीं है। चारो दरवाजे खुले हुए हैं और चारों तरफ चोपडका बाजार बना हुआ है। जिसमें रात दिन सैकडों हाथी घोडे बग्गी रथ तिरपोलियेमें होकर आते जाते (१) हैं।

यह तिरपोलीया अब भी खानखानाका कहलाता है। इसके बाबत एक राजीनामेका फोटू तीवारी नकछेदीजीने मेरे पास भेजा है। उससे मालूम होता है कि २०० वर्ष पहिले औरङ्गजेब बादशाहके राजमें यह तिरपोलीया खानखानाकी जायदादकी मालकनी नजीबुन्निसा बेगमके कबजेमें था और उसकी एक पोल और पोलके आगेकी जमीन यारमोहम्मद नामके एक शख्सने दबा ली थी। उसीके बाबत यह राजीनामा हुआ था। हम इस राजीनामेका कुछ सारांश यहां इस अभिप्रायसे लिखते हैं कि जिजसे पाठकोंको उस समयकी अदालती कारखाईका हाल भी मालूम हो जावे।

राजीनामेका सारांश।

हम रफीक और आलम जो खानखानाका (२) मरहूमके विरसेकी (३) मालकिनी नवीबुल निसा बेगमकी सरकारके वकील हैं। इस बातका सही इकरार करते हैं कि खानखानाका मरहूमका तिरपोलीया जो कसबेअलवरके बाजारमें चोरस्ते पर बना है उसका

१। यह वृत्तान्त अलवर निवासी मित्रवर मु॰ रघुवरदयालजी इन्सपेक्टरके पतसे लिया गया है जो उन्होंने मेरे पूछने पर कृपा करके लिखा था। २। मरे हुए। ३। सम्पत्ति।

एक बन्द दरवाजा सैय्यद कमाल मोहम्मदके पोते सैयद सुजफ्फरके बेटे सैयद यार मोहम्मद (१) मिल्कीकी हवेलीके पास था। उस दरवाजे और उसके आगेकी ज़मीन पर सैयद यार मोहम्मदने कबजा कर लिया था। हमने इस प्रसङ्गसे कि तिरपोलीया खानखाना मरहूमकी इमारतोंमेंसे है। खानखानाकी (२) वारिसानी नजीबुल-निसा बेगमको तरफसे (३ वकालतन दरवाजे और आगेकी ज़मीनकी बाबत खानखाना शान सैयद वजीउद्दीनखां फोजदार दफाले मेवातके नायब सैयद शाह मोहम्मदके हजूरमें दावा किया। तो सैयद यार मोहम्मदने वह दरवाजा और ३६ गज ज़मीन जो दरवाजेके पास थी अपने कबजेसे निकाल कर छोड़ दी। अब फिर हमको सैयदयार मोहम्मदकी हवेलीमें कुछ दावा नहीं रहा है। हम उससे राजी हैं। इस वास्ते यह राजीनामा लिख दिया है सो काम पड़ने पर सनद होवे। १० शव्वाल सन् (४) ४७ जलूस मैमन तमानूस मुताबिक सन् १११४ हिजरी नीचे ऊपर और हाशिये पर मोहरे और दसखत गवाहोंके हैं। (५) दसखत हिन्दीमें भी हैं। मगर हिन्दी हर्फ ऐसे अशुद्ध बिना लगमातके लिखे हैं कि कुछ समझनेमें नहीं आता है कि इनका क्या मतलब है।

इपोक और आलमखाके हाथकी कटारी बनी हुई है। इससे मालूम होता है कि वे लिखे पढे नहीं थे।

खानखानाका भी मकबरा इलाबरमें है। मगर अधूरा कबर अन्दर मौजूद हैं उनकी सांचे बनाये हुए ताराद और मकबरे भी वहां है।

खानखानाका मकबरा दिल्लीमें।

खानखानाका मकबरा (समाधि स्थान) कि जहां उनको

१। जागीरदार। २। मालिकनी। ३। वकीलकी तौर पर। ४। यह वर्ष औरङ्गजेब बादशाहके जलूसके हैं। ५। नुद रसे सिला हुआ।

गाड़ा था पुरानी दिल्लीमें खण्डहर पड़ा है। जिसके देखनेसे बहुत अफसोस होता है कि जो मनुष्य उम्रभर लोगोंसे भलाई करता रहा था। लोग उसकी कबरके पत्थर तक खोदने गये जिन्होंने सच कहा है कि "सब दातारके होलागू होते हैं"।

किताब (१) असार उस्समनादीदमें जो सन् १८६३ सवत् १९०३ में बनी है। इस मकबरेका यह हाल लिखा है।

यह मकबरा शाहजहानाबादसे ४ मील निजामुद्दीन औलियाकी दरगाह और बारेपुलेके पास है। इसको खानखानाने अपनी बीबीके वास्ते बनाया था पर उसको तो यहां दफन होना नसीब न हुआ आप दफन हुए।

यह मकबरा भी किसी जमानेमें बहुत तोफा बना हुआ था इसके बुर्ज तमाम सङ्गमरमरके थे जगह जगह लाल पत्थरसे सफेद पत्थरकी धारियां लगी हुई थीं और बेलबूटे बने थे। पर अफसोस है कि यह बिल कुल उजड गया है। इसका तमाम सङ्गमरमर उखाड़कर बेच डाला और ऐसे उमदा मकबरेको ढहा डाला। कहते हैं कि आसिफुद्दौलाके वक्तमें इसका तमाम पत्थर उखाड़कर लखनऊमें गया है। यह मकबरा बिल कुल लुण्डा रह गया है इस मकबरेका (२) तावीज भी उखाडकर ले गये हैं। अब इसमें गाय भैंसें बन्धती हैं और गोबरकी बदबूसे अन्दर जाना मुश्किल होता है।

देखो क्या (३) अजमत और शान (४) थी खानखानाकी, और अब क्या हाल है। खानखानाके नाम निशानके लिये यह मकबरा

१। सर सैयद अहमदखांने इसमें दिल्लीकी इमारतोंका हाल लिखा है।

२। कबरका चिह्न

३। महत्व

४। आतङ्क

था। सो यह भी न रहा—जिसके दिवानखानेमें सैकडों मन गुलाब छिडका जाता था अब उनके मकबरेमें हजारों जानवरोंका मूत्र पडा है।"

जौनपुरका पुल।

जौनपुरके प्रसिद्ध पुलको भी बहुत लोग इन्हींका बनाया समझते हैं। परन्तु इनका बनाया नहीं है। खानखाना मुनअमखांका बनाया है जो इनके बापके पीछे खानखाना हुआ था।

उस पुलके लेखमें मुनअमखांका नाम खुदा है तो भी जौनपुरके (१) भूगोलमें भूलसे यादन्तकथा सुनकर इनके गुलाम फहीमको मुनअमखांका गुलाम और उस पुलका बनानेवाला लिख दिया है सो गलत है। वह पुल तो मुनअमखां खानखानाने ही बनाया है जो सन् ९७२ से ९७५ तक बनकर तैयार हुआ था।

फिर जौनपुर हमारे खानखानाकी जागीरमें भी सन् ९९८ से लेकर कई वर्ष पीछे तक रहा था। उस समय फहीम भी वहां रहा होगा जिससे वहांके साधारण लोगोंको उसका नाम याद रह गया।

खानखानांकी जन्मपत्री।

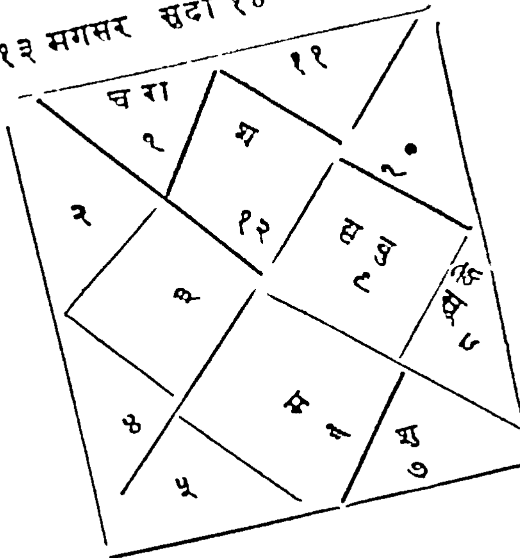
जन्म पत्री भी इतिहासमें कामकी चीज होती है कि उससे यथार्थ समय विदित होजाता है। मुसलमानोंमें हिन्दुओंके समान तो जन्म पत्रीकी प्रथा नहीं है तो भी कोई कोई बडे आदमी जन्म पत्री बनवाते हैं। इसी विचारसे हमने खानखानाकी जन्मपत्रीकी भी खोजनाकी तो एक कुण्डली टोंकानिवासी ख्यातमें मिली। दूसरी एक ज्योतिषीकी पोथीमें पाई और तीसरी एक मित्रके पुस्तकालयसे आयी। परन्तु पहिली पिछली दोनोंसे नहीं मिलती इसमें ४ पहरका अन्तर रहता है।

---

(१) इस भूगोलको जिले जौनपुरकी पाठशालाओंके डिपटी इन्सपेक्टर मोलवी तुफैलअहमदने सन् १८७९ संवत् १९३१ में बनाया था।

नं १

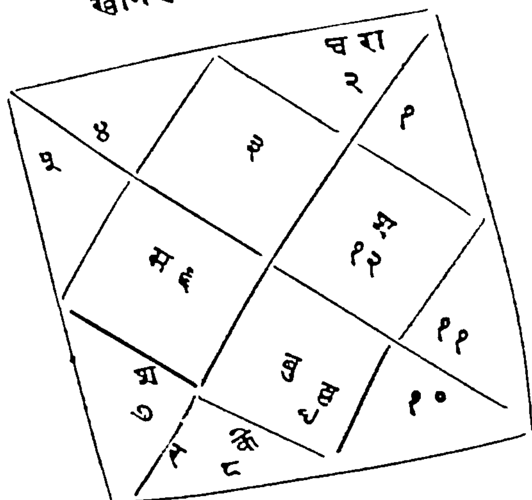
सवत् १६१३ मगसर सुदी १४ ग्यानख्यानाका जन्म



नं २

सवत् १६१३ मगसर सुदी १४ सोम ऊ० घटी ३७।१७

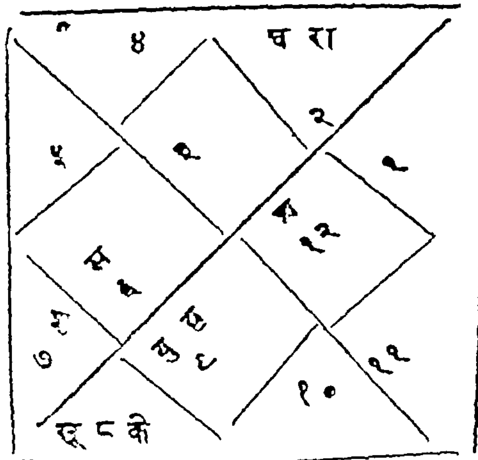
ख्यागख्यानाका जन्म



नम्बर ३

संवत १६१३ मंगसर सुदी १४ सोमे उ० घ० ३ खानखानाका जन्म।

अस्त विरवा ८ अघ अहा।

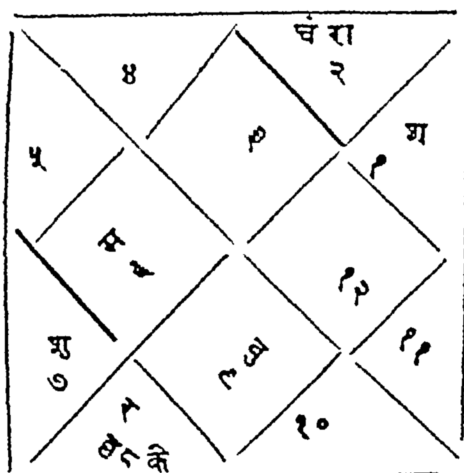


यहां सत्यासत्यके लिये संवत १६१३ का (१) चण्डूपञ्चांग देखा गया तो मंगसर सुदी १४ का यह विवरण निकला।

मार्ग सितात् संवत १६१३ शाके १४७८ तिथि १४ चन्द्र ११३४ न० २५।१५ शि २२।५६ हस्ते स १३।४७ म० ४।३४ उ० घटपद वरण हस्तो

सू च म बु बृ शु श रा के इसके अनुसार कुण्डली मिथुन
८ २ ६ ८ ८ ७ १ २ ८

लग्नकी यह होती है।

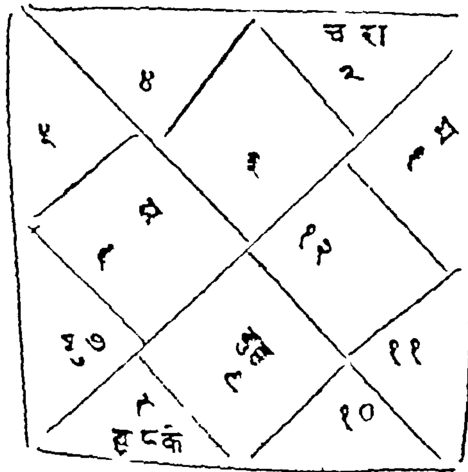


इस कुण्डलीसे ऊपरकी दोनों मिथुनलग्नकी कुण्डलियोंके शनि और गुरु नहीं मिलते। शनि उनमें तो मीनका है। और पञ्चांगमें मेषका और उन दिनोंमें शनि अभी भी नहीं था जो मीन पर आया समझा जावे इसलिये उन दोनों कुण्डलियोंमें मीनका शनी क्यों लिखा है इसका कुछ कारण सिवाय इसके कि भूलसे ऐसा हो गया होगा और कुछ समझमें नहीं आया। और गुरु उस दिन तो वृषकाका हो था। फिर पोष वदी १२ को धनका आया। उस पञ्चांगमें कि जिससे यह जन्मपत्री बनी है मगसर सुदी १४ से पहिले धनका आ गया हो तो कुछ आश्चर्य नही है क्योंकि इतना अन्तर तो मारवाड और दिल्लीके पचांगमें उदयास्तके विपर्ययसे रहा ही करता है तो भी इस अन्तरका पता लगानेके लिये पुनः खोजनाकी गयी तो (१) श्रीपतिकी टीकामें फिर एक जन्मपत्री खानखानाकी मिली जिसको श्रीपतिके टीकाकार श्रीवल्लालदैवज्ञ (२) कृष्ण देवज्ञने जो खानखानाका आश्रित मालूम होता है शुद्ध और स्पष्ट करके उदाहरणमें लिखी है नकल उसकी यह है।

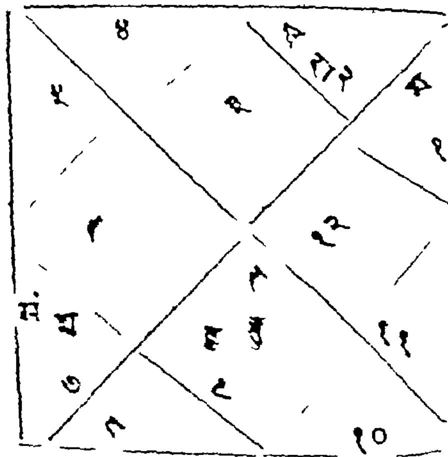
१। ग्रन्थ श्रीपति शाके ९६१ में बना था। चन्द्रागनन्दोनशको इति वचनात्। २। एक कृष्णपण्डितका नाम आईन अकबरीमें भी लिखा है जो बादशाही पण्डितोंमें नोकर था।

संवत् १९१३ शा॰ १८७८ मार्गशीर्ष शुक्ल १४ चन्द्र घ॰ १५ पल ३० परतो पूर्णिमा कृत्तिका नक्षत्रे घ० २६।४६ शिव योगे घ॰ २४।२० इष्ट दिवसे सूर्योदयात् गत घटी २८।१६ रात्रि गत घ॰ २।५५ मिथुन लग्ने लाभ पुरे श्रीमत् खानखाना महाशया ना मत निर सूत् (१)

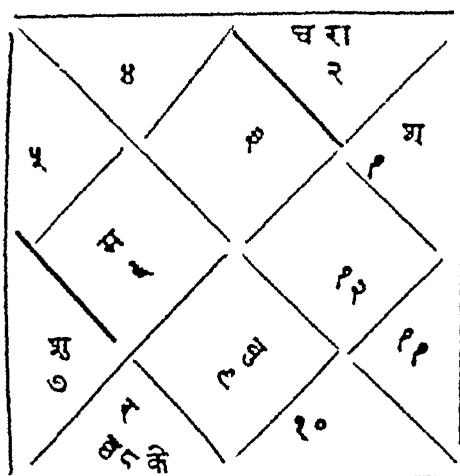
अथ लग्न कुण्डली।



अथ भावकुण्डली।



सू च म बु शु गु श रा के इसके अनुसार कुण्डली मिथुन
८ २ ६ ८ ८ ७ १ २ ८
लग्नकी यह होती है।

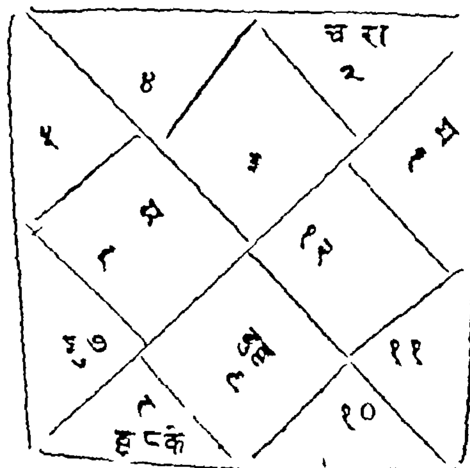


इस कुण्डलीसे ऊपरकी दोनों मिथुनलग्नकी कुण्डलियोंके शनि और गुरु नहीं मिलते। शनि उनमें तो मीनका है। और पञ्चांगमें मेषका और उन दिनोंमें शनि कभी भी नहीं था जो मीन पर आया समझा जावे इसलिये उन दोनों कुण्डलियोंमें मीनका शनी क्यों लिखा है इसका कुछ कारण सिवाय इसके कि भूलसे ऐसा हो गया होगा और कुछ समझमें नहीं आया। और गुरु उस दिन तो वृषकका ही था। फिर पोष वदी १२ को धनका आया। उस पञ्चागमें कि जिससे वह जन्मपत्री बनी है मगसर सुदी १४ से पहिले धनका आ गया हो तो कुछ आश्चर्य्य नहीं है क्योंकि इतना अन्तर तो मारवाड और दिल्लीके पंचागमें उदयास्तके विपर्यंतसे रहा ही करता है तो भी इस अन्तरका पता लगानेके लिये पुनः खोजनाकी गयी तो (१) श्रीपतिकी टीकामें फिर एक जन्मपत्री खानखानाकी मिली जिसको श्रीपतिके टीकाकार श्रीवत्सालदेव।लग्न (२) कृष्ण देवज्ञने जो खानखानाका आश्रित मालूम होता है शुद्ध और स्पष्ट करके उदाहरणमें लिखी है नकल उसका यह है।

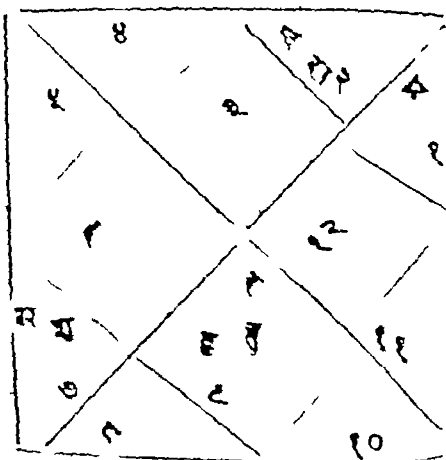
१। ग्रन्थ श्रीपति शाके ९६१ में बना था। चन्द्रागनन्दोनशको इति वचनात्। २। एक कृष्णपण्डितका नाम आईन अकबरीमें भी लिखा है जो बादशाही पण्डितोंमें नोकर था।

संवत् १९१३ शा० १८७८ मार्गशीर्ष शुक्ल १४ चन्द्र घ० १५ पल ३० परतः पूर्णिमा कृत्तिका नक्षत्रे घ० २६।४६ शिव योगे घ० २४।२० दिवसे सूर्योदयात् गत घटी २८।१६ रात्रि गत घ० २।४४ मिथुन लग्ने लाभ पुरे श्रीमत् खानखाना महाशया नाम निर सूत् (१)

अथ लग्न कुण्डली।



अथ भावकुण्डली।



इसमें सब यह चण्डू पञ्चांगसे मिल जाते हैं बृहस्पतिका भी अन्तर नहीं रहता। सो इसका यह कारण है कि इन दोनोंकी गणितका आधार एकही करण ग्रन्थ अर्थात् ब्रह्म तुलाके ऊपर था।

१ श्वेत वाराह कल्प प्रवृते गताब्द वृन्द १९७२९४८८४५७

२ सृष्टि तो गताब्दगण १८५५८८४६५७

३ गत कलि ४६५७

४ विक्रमस्य राज्याद्गताब्दगण १६१३

५ शालि वाहन शकाब्दा १४७८

६ ब्रह्म तुलग गताब्दा ३७३

७ कल्पाऽहर्गण ७२०६३६१४३९५६

८ सृष्टेरहर्गण ७१४४०३९२७८६९

९ कलेरहर्गण १७०१२४२

१० ब्रह्मतुलराऽहर्गण १३५६०४

अब यहां यह शङ्का होती है कि घडी पल क्यों नहीं मिलते सो इसका यह उत्तर है कि चण्डूपञ्चांगमें ब्रह्म तुलासे अधिक च-ण्डूजी ज्योतिषीकी गणितके बीज भी मिलाये जाते हैं। जिससे ब्रह्मतुलाकी गणितमें और चण्डूपञ्चांगकी गणितमें घडी पलका अन्तर रह जाता है।

यों इतना परिश्रम करनेपर खानखानाकी शुद्ध जन्म पत्रीका पता मिला है। परन्तु जो एक महीनेका अन्तर खानखानाकी जन्म तिथिमें फारसी तवारीखके हिसाब और इस जन्मपत्रीके लेखसे आता है और जिसका ब्योरा ४२ वीं पृष्टिके नीचे दिया गया है अभी बाकी है।

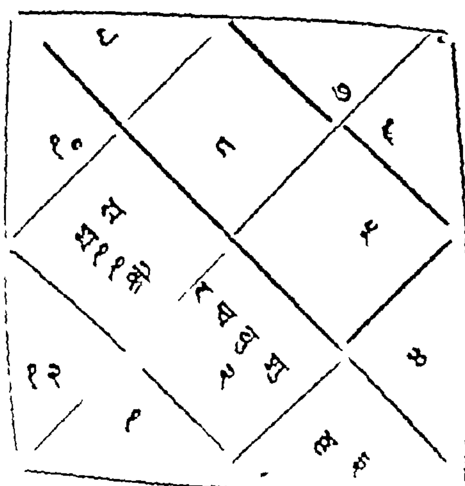
इस जन्मपत्रीकी शोधमें जो सफलता हुई तो उससे और जन्म पत्रियोंके ढूढनेका भी साहस हुआ। और थोडेही दिनोंमें कई सौ जन्मपत्रियां उन राजाओं बादशाहों और अमीरोंकी हस्तगत हो गयीं कि जिनके नाम इतिहासमें देखे जाते हैं।

खानखानाके बेटोंकी जन्मपत्रिया।

१ मिरजा एरचकी जन्मपत्री

संवत १६४३ ज्येष्ट सुदी १ सामे उदयात्त घटी ११।

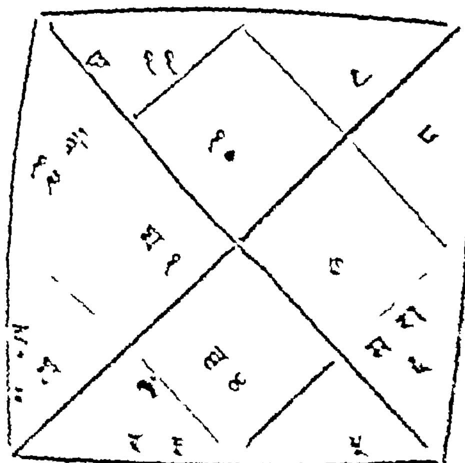
मिरजाएरच जन्म



२ मिरजा दाराबकी जन्मपत्री

संवत १६४४ असाढ वदी ४ बुधे उदयात्त घटी २।२५।

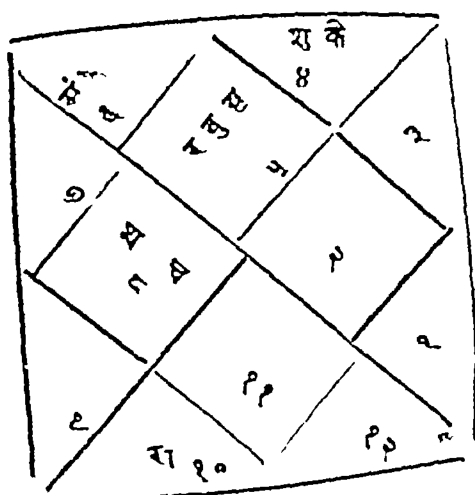
मिरजा दाराब जन्म



३ मिरजा रहमानदादजी जन्म पत्री

संवत १६५७ श्रावण सुदी ७ बुधे उदया तघटी २।०।।

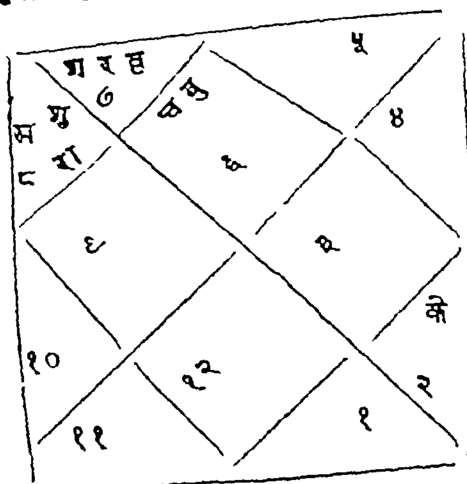
मिरजारहमानदाद जन्म।



४मनुचहरकी जन्मपत्री

संवत १६५८ कातिक बदी १२ शनौ रात्री गत घटी

२६ १ एसद एत मनुचहर जन्म: अच्चभा ४३।३०



एक रात बादशाहने शेख अबुलफज़्लसे कहा कि खानखानाको लिख दो कि ईश्वर शीघ्रही तीन पुत्र देगा। उनके ऐरच, दाराब, और कारन नाम रखना। सो वैसाही हुआ और इन्होंने इसका बड़ा उत्सव किया। उसमें बादशाहको भी बुलाया। बादशाह गये और इनका मान बढ़ाया।

कंधार जाना।

२४ दे (१) सन ३५ को बादशाहने इन्हें कंधार जानेका हुक्म दिया। शाहबेग खां, रावल भीम दलपत जानशबहादुर, बलभद्र राठौड़, शेरखां आदि ४५ असीरोंकी नौकरी इनके साथ बोली गयी।

कंधार पहिले तो इनके बापकी जागीरमें था; फिर बादशाहने ईरानके बादशाहको दे दिया था और उसकी तरफसे मुजफ्फर हुसेन मिरजा और रुस्तम मिरजा कन्धारमें थे। अब ईरानका बल घट गया था और वे भी बदले हुए थे। उधर तूरानका बादशाह कन्धारकी तावमें था; इसलिये बादशाहने कन्धार लेनेका विचार करके इनसे कहा कि बलूचस्तानके रास्तेसे जाओ। जो वे लोग हुक्म मान लें तो वह सरस देश उन्होंके पास छोड़ देना, नहीं तो पूरा दण्ड देना और ठट्ठेका जमींदार अबतक सेवामें नहीं आया है, इस वास्ते किसी सुपात्र पुरुषको उसके पास भेजना जो वह आजावे या सेना साथ कर दे तो ठीक, नहीं तो अभी कुछ न बोल कर लौटते वक्त समझ लेना।

इन्होंने कूच करके लाहोरसे एक कोसपर डेरा किया। पहिली वहमनको (२) बादशाह वहां पधारे। बड़ी सभा जुड़ी। खूब नजर निछावर हुई।

मुलतानमें पहुंचना।

मुलतान और भक्कर इनकी जागीरमें थे; इसलिये इन्होंने पासका रास्ता जो गजनी और बगश होकर था, छोड़कर दूरका

१। माघ वदी ५। २। माघ वदी १० सम्वत् १६४७।

थी जो खानदेशके जमींदार पजूके पास थी। एक दिन उसकी अर्जी पहुंची कि पंजूने बादशाहकी नमस्कारसे लानेको अपनेमें सामर्थ न देखकर खान देदी और बादशाहो दारोगा उस पर बैठ गया। यहांका हीरा सब प्रकारके हीरोंसे सुथरा और स्वच्छ होता है।

खानखानाकी बेटियां।

१ जानाबेगम जो शाहजादे दानियालको व्याही थी। इससे एक लडका हुआ था परन्तु जिया नहीं।

२ खैरउन्निसा बेगम बडी चतुर थी। जब जहांगीर बादशाह गुजरातको गये थे तो यह भी साथ थी और यही बादशाहको फतह बागमें ले गयी थी। "तवारीख सिरआत अहमदी"में लिखा है कि खानखानाकी बेटी खैरउन्निसा बेगमने बादशाहसे प्रार्थना की कि शाव फतहपुरमें खानखानाका बाग है, मैं चाहती हूं कि उस बागमें हजरतकी जियाफत करके प्रतिष्ठा प्राप्त करूं। बादशाहने स्वीकार किया परन्तु वह समय पतझडका था वृक्ष ठुंडे हो गये थे, बागकी शोभा जाती रही थी, तो भी उस चतुर बेगमने जैसे फल फूल और पत्ते जिस वृक्षके थे वैसे ही रंगीन कागज और मोमके कारीगरोंसे बनवाकर उन वृक्षोंमें ऐसी युक्तिसे लगवा दिये कि जब बादशाह आये तो बागको छटाको देखते ही मोहित होकर उन कृत्रिम पुष्पों और फलोंके तोडनेको झुके। उस समय उस अद्भुत कारीगरीकी चालाकी जानकर अति प्रसन्न हुवे। बेगमकी बुद्धिकी बहुत तारीफ करके प्रतिष्ठा और जीविका बढाई।

मिरजाएरज शमशेरखां।

खानखानाके पीछे उनके घरानेमें बहादुर ऐसा हुआ कि जिसने बाप दादेके नामको फिरसे चमकाया। वंशप्रभावके अनुसार इसमें भी पौरुष पराक्रम और दूसरे सद्गुण थे।

बाडाइयोंमें घायल होनेसे मादक पदार्थोंका सेवन यह भी करता था, परन्तु विशेष करके नहीं। इसकी नौकरी दादाके समयसे दक्षिणमें चाली हुई थी। जब जहांगीरके १९ वे वर्षमें

(१)अम्बरने अहमदनगरके पास युद्ध करके लशकरखांको बहुतसे बादशाही अमीरोंके साथ पकड़ लिया था तो यह उस लड़ाईमें खूब लड़ा। जख्मोंसे चूर होकर दुशमनोंके हाथ पड़ा और बहुत दिनोंतक दौलताबादमें कैद रहा। जब छूटकर आया तो जहांगीर बादशाहने उस बहादुरीके बदलेमें इसको मिरजाखांका खिताब ६ हजारी ३० हजार सवारका मनसब और नक्कारा निशान दिया।

शाहजहांकी इसपर कृपादृष्टि रही। उसके ८ वें वर्षमें निजाबतखांकी जगह जो श्रीनगरपर चढ़ाई करके लड़ाईमें हार गया था इसको बागलेके पहाड़की फौजदारी और जागीर मिली।

९ वें (२) सालकी अन्तमें यह बावला होकर कुछ समय तक संज्ञाहीन रहा, किन्तु अच्छा होनेपर अवधकी सूबेदारी पर भेजा गया। फिर इसी माडूकी फौजदारी और जागीर मिली।

२१ वें वर्षमें एलिचपुरका हाकिम हुआ।

२८ वें वर्षमें शाहजादे औरङ्गजेबने बापके हुक्मसे इसको देवगढ़के जमींदार दोरतखिरके ऊपर भेजा जिसने कई वर्षसे कर नहीं भेजा था।

और दरगाहसे इसका काम और मनसब उतर गया। जिससे यह बहुत वर्षों तक घर बैठा रहा। निदान औरंगजेबके १० वें वर्षमें (१) शेख अब्दुललतीफ बुरहानपुरीके स्थानमें जिसका भाव बादशाहको भी था, ३ हजारी ३ हजार सवारके मनसब पर फिर नियुक्त हुआ और ऐरचकी फौजदारीपर (२) भेजा गया।

१६ वें वर्ष सन् १०८३ में (३) कालवश हुआ। इसने एक बहुत अच्छा बाग बुरहानपुरमें लगाया था।

मुहम्मद मुनअम।

मनूचहरका बेटा मुहम्मद मुनअम भी सुयोग्य पुरुष था। और वह औरङ्गजेबके साथ दक्षिणसे हिन्दुस्थानमें आया। डेढ़ हजारी मनसब और खानका खिताब पाकर बादशाहकी बन्दगीमें रहा।

दूसरे सालमें दाराबकी जगह अहमदनगरका किलेदार हुआ।

यहां तक हाल इन दोनों बाप बेटोंका मआसिरुल उमरामें लिखा था सो इस ग्रन्थमें दिया गया। जनीबुन्निसा बेगम शायद इसीकी बेटी हो।

खानखानाकी प्रशंसाके कवित्त।

खानखानाकी प्रशंसामें जैसे फारसी भाषाके अनेक कवियोंने कविता की है वैसे ही हिन्दी भाषाके कवियोंने भी की थी। हमने उसकी भी खोज लगायी तो १४ कवित्त मिले जिनमें २ कवि गङ्गके हैं १ मण्डनका है, १ अनो कुलीका, १ हरनाथका, और १ ताराकविका। बाकी कवित्तोंमें कवियोंके नाम नहीं हैं हम उनको यहां क्रमसे लिखते हैं।

१। सन् १०७७

२। बुन्देलखण्डमें

३। सम्वत् १७२९।३०

कवि गङ्गके कवित्त।

छहरे छबीली छुति छटक अमर कन्दो,
धीर न धरत धुन सुनत निसाना की।
सबनको ठाट ठट्यो मलेको पहाच्यो गङ्ग,
फुरमान अल्हदान लगत एक आना की।
सोवन उबीठे बीठे नीठे मीठे महबूब,
छिये भर न हेरियत लवट बदाना की।
तोसे खाने फीलखाने खजाने दूरमखाने।
खाने खाने खबर नवाब खानखाना की॥१॥
नवल नवाब खानखाना जू तिहारे डर,
परी है खलक खैल भैल जहँ तहँ जू।
राजनकी रजधानी डोरी फिरे वन वन,
नैठनकी दैठे बैठे भरै वेटी वहँ जू।
एहँ गिरि राई परी उमुद्र मथाई सब।
कहै कवि गङ्ग चक्र चलो और चहुँ जू॥
भूमि चलो सेस पर सेस चल्यो कच्छ पर।
कच्छ चल्यो कोल पर कोल चल्यो कहँ जू॥२॥
हेरसको खानखाना बिरच्यो हिराने देश,
दच्छिन फौजें सारी खग सुख जो परी।
साते साते घायनके एकसा एलाप हारे,

हंस मानसर तज्यो चक्क चक्की न मिलै अति ।
बहु सुन्दरि पदमिनि पुरुष न चहै न करै रति ॥
खलभलित सेस कवि गंग भनि अमित तेज रवि रथ खस्यो ।
खानाखान बैरम सुवन जिहि दिन क्रोध कर तंग कस्यो ॥४

दोहा

गंग गौछ मौछे जमुन, अधरन सरसुती राग ।
प्रकट खानखाना भयो, कामद बदन प्रयाग ॥१॥

मण्डनका कवित्त ।

तेरे गुन खानखाना परे ते दुनीके काम,
एइ तेरे काम गुन आपनो धरत है ।
तू तो खग खोल खोल खलन पै कर लेत,
एउ ता सो कर लेत नेक न डरत है ।
मण्डन सुकवि तू चढत नवखण्ड पर,
यह तेरे भुज दण्ड चढो न परत है ।
आहुटी अटल खान साहसी तुरकमान,
तेरी एक मान तोसों तोउ सो करत है ॥५॥

अलाकुलीका कवित्त ।

धाडा लायो लूट किधौं सिंहलको कूट कूट ।
हाथी घोडे ऊंट एते पाए ते नगीने हैं ।
अच्छा कुली कविको कुबेर ते मिताई कीनी,
अगनतसे धन मापे नग धो नगीने हैं ।
पाई है तैं खान लछ भई पहचान भूल,
रह्यो है जहां नहीं समान कहांकीने हैं ॥
पारसते पायो किधौं पारातें कमायो किधौं ।
समुद्रहुते, लायो किधौं खानखाना दीने है ॥ ६ ॥

ताराकविका कवित्त ।

जोर बर धन जोर रविरथ कैसे जोर बने,
बने जोर देखे दीठ जोर रहियतु है ।

देन कोदि देया ऐसो है नयो दिवैया ऐसो,
　　　　दान खानखानाजी कहै ते कहियतु है।
तन मन डारे बाजी हेतन सम्हारे जात,
　　　　जौन अधिकाई कहो तासो कहियतु है।
पौनकी बड़ाई बरनत सब तारा कवि,
　　　　पूरो न परत ताते पौन कहियतु है। ७।

प्रसिद्ध कविका कवित्त।

सात दीप सात सिन्धु परद परक वारे,
　　　　जाके डर टूटत अटूट गढ़ राजा के।
कंपत कुबेर फेर मेर मरजाद छोड़,
　　　　एक एक रोम झर पड़े हनुमानके।
धरनि धसक धंस सुनत उधद गई,
　　　　अमत प्रसिद्ध खगा दीले सुरतानके।
दिस पत फूट टूट चूर चकचूर भये,
　　　　बड़े पीलखानाजू नकाब खानखानाके। ८।

हरनाथ कविका कवित्त।

देखना विनान सत जानना भिखारीने ॥
सेवा खानखानाकी उमेदवारी दानहीते ।
मदर मकानको न होत धनवारीमें ॥
अब बरपन माझ पहर है पहर माझ ।
आज कावा की हैरि पजारी है से ॥ १० ॥

छप्पय ।

मदनरूप तनत बल, वीरआगन गल गज्जत ।
बहु सनाह पाखरौं, द्वार दुन्दुभी बहु बज्जत
बहु साहस उत्थपन, फेर थप्पन समर्थवर ।
सहनसाह सिर छत्र, ताहि रक्खन समर्थनर ॥
खानान खान बैरम सुतन चित्त :सहरस रत्तयो ।
धनमद जोबन राज मद एकहि मदन मत्तयो ॥

कवित्त ।

सबल नवाब खानखाना जू तिहारे डर,
बैरी बिडराने धुनि सुनिदै निसानकी ।
तिहूनकी रानी फिरैं थकी बिलखानी सब,
छूटी रजधानी सुध खानकी न पानकी ।
काहू मिली हाथिन हिरन बानरन,
तिनहीं तै रच्छा भई उनहीके प्रानकी ।
सची जानी गजन भवानी जानी केहरन,
मृगन मयंक रानी जानी कपि जानकी ॥१२॥
दच्छनको जुज्झ (१) खानखाना जू तिहारो सुनि,
होत है अचम्भौ राजा राना उमरायकै ।
एक दिन एक रात औ द्यौस अथियें उगे,
आये जे मुकाम न ले गये निरवायकै ।
पारसके समर हमीरहू के परतेवे,

मिटै रविमंडलको सारे जेरायकै।
रजनीके जूझे दूर सूरजको पैडो चाहे,
रात राहगीर दरवाजे ज्यों लरायकै ॥१३॥

नगर ठठाको रजधानी धुरधानी कीनी
धरक्यो पधारो खानखानो या ठठ्ठमें
छाई है तुसार औ तुखार न उतार भरे,
उजबक उलटि गयो है पलकमें।
पौर पौर परे सोर ठौर ठौर पौर दरे,
खानखाना आये तें पयान है खलकमें।
पिय भाजे तिय छाडि तिया डारे पीव पीव,
बाबो बाबो बिलपात बालक ठठ्ठमें ॥१४॥

दिल्लीके दुकान भारी टोपे रहैं खासनीके,
देखो करिके राख्यो देहको दहत है।
दहतके तास नाम रावत सिपाह साहि,
छलके मदद धग धगजे दाहत हैं।
खानखानाजूको पद ऐसो बखसीस भई,
बाकी बखसीस और बखसीस हत है।

टेकना विगान मत जानना भिगारीसे ॥

सेवा खानखानाकी उमेदवारी टानजोते ।

मद्दर मदानको सूजोत धनधारीमे ॥

ग्रब वरपन मांझ पहर है पहर मांझ ।

भाग पाव सो ईरे पहारी हूँ मे ॥ १० ॥

छप्पय ।

मदनरूप तनत वल, वीरबाहन गन गज्जत ।

बहु सनाह पाखरों, द्दार दुन्दुभी पट् बज्जत

बहु साहस उत्थपन, फेर थप्पन समर्थवर ।

सहनसाह सिर छत्र, ताह रक्खन समर्थनर ॥

खानान खान बेरम सुतन चित्त सब्ररस रत्तयो ।

धनमद जोबन राज मद एकहि मदन मत्तयो ॥

कवित्त ।

नवल नवाब खानखाना जू तिहारे डर,

बैरी बिडराने धुनि सुनिकै निसानको ।

तिहुनकी रानी फिरैं धकी बिनखानी सब,

छूटी रजधानी सुध खानको न पानको ।

काहू मिली हाथिन हिरन बानरन,

तिनही ते रक्षा भई उनहीके प्रानकी ।

सची जानी गजन भवानी जानी केहरन,

मृगन मयंक रानी जानी कपि जानकी ॥१२॥

दच्छनको जुज्झ (१) खानखाना जू तिहारो सुनि,

होत है अचम्भो राजा राना उमरायके ।

एक दिन एक रात औ द्योस अधियै उगे,

आये जे मुकाम न ले गये निरवायके ।

बारसके समर रहीमहके परेतेवे,

१। युद्ध।

मिटै रविमंडलको मारै जेहरायकै।
रजनीके जूझै सूर सूरजको पैठो चाहै,
रात राहगीर दरवाजे ज्यों सरायकै॥१३॥

नगर ठठाको रजधानी धुरधानी कीनी
घरक्यौ छधारी खानपानी ना छलकमैं।
छाडे है तुखार औ बुखार न उपार भरे,
उजबक उजरके गयो है पलकमै।
पौर पौर परे रौर ठौर ठौर पौर दहै,
खानखाना ध्याये तें घवाल है खलकमैं।
पिय भाजै तिय छांडि तिया कारै पीव पीव,
बावो बावो बिलखात बालक बलकमैं॥१४॥

दियेके हुकम आगी दीये रहै जामनीके,
देहके कहेते राख्यो देहको चहत हैं।
वखतकी वाम नाम राखत जिहान माहि,
धनके सबद धन धनजे कहत हैं।
खानखानाजूकी अब ऐसो बखसीस भई,
वाकी बखसीस और बखसीस चहत है।
हाथिनके नाम हाथी रहत तबेलनमें,
घोरा दिये घोरा सतरजमें रहत है॥१५॥

काहूको सिकार स्याल लोमनको फेल जीत,
काहूको सिकार मृगमार सुखमानो है।
काहूको सिकार साथ सिकरा सिचान बाज,
काहूको सिकार देखी बादल बखानो है।
खानखानाको सिकार सिधु पैको वारपार
[illegible] खट बनको ठानो है।
[illegible] सुनीहै साम [illegible] तीन चार लाख
कौतुक दिखाको पतसाह याध मानो है॥१६॥

दोहा। (मारवाड़ी भाषामें)

खानखान न जानियो, जरा टालड़ न जाय।
कूप नीर नहै बिना, नीलो घरो न थाय॥१॥
खानाखान न बावतें, बाड़ो मग उन्नान।
सुटफर पड़े न ऊठियो, जैसे पाथा छान॥२॥
खानाखान नबावतें, खग लगायो प्रेम।
सुटफर पड़े न ऊठियो, गये जोग्रमो क्षेम॥३॥
खानाखान नवाब हो, तुम धुर से चल हार।
मेरा सेती गहि लिये, इस दगधका भार॥४॥

अकबरके फरमान खानखानाके नाम।

अकबर और खानखानामें जो सम्बन्ध सेवक और स्वामि हत्तिका था उसका पता जहांतक इतिहासोंसे लगा, वह तो पहिले लिखा जा चुका है। अब यहां उक्त स्वामी और सेवकके उस सप्रेम वार्तालापका भी कुछ नमूना दिखाया जाता है जो पत्र व्यवहारके द्वारा होता था।

अकबरकी ओरसे जो नामे और फरमान अर्थात् पत्र और परवाने समकालीन बादशाहों तथा हिन्दुस्थानी अमीरोंको लिखे जाते थे उनको विशेष करके शेख अबुलफजल लिखा करता था जो बड़ा जबरदस्त मुंशी था और जिसकी लेखन शक्तिकी प्रशंसामें इतना कहना ही बहुत होगा कि ईरान नरेश शाह अब्बास कहा करता था कि जितना मुझको अबुलफजलकी "कलम"का डर लगता है उतना अकबरकी तलवारका नहीं लगता।

अबुलफजल एक गरीब शेख नागोरका रहनेवाला था। परन्तु भाग्यवशसे पहिले सन ९८२में (१) अकबरका मीर मुंशी हुआ। फिर अपनी योग्यता और बादशाहकी गुणग्राहकतासे बढते बढते मुख्य मन्त्रीके समान पदको पहुंच गया था अकबर

(१) संवत् १६३१।

नामा जो एक विशाल और गम्भीर इतिहास उस सुलक्षाटका है। इसी अबुलफज़लका बनाया हुआ है और आईन अकबरीका भी यही वार्त्ता है जिसमें उस नीतिवान और विचारशील राजराजेश्वरके सुप्रबन्धका वर्णन भारतवर्षका भूगोल और शास्त्रोंका साराश हैं।

अबुलफज़ल खरा आदमी था। शाहजादोंकी भी खुशामद नहीं करता था। इसलिये शाहजादे सुलतान सलीमने सन् १०११ में (१) उसको मरवा डाला और सन् १०१५में (२) उसके भानजे अबदुल समदने उसके लेखोंको बड़े परिश्रमसे इकट्ठा करके एक पुस्तकमें एकत्र किया जिसका नाम "मुनशियात अबुल-फज़ल" है। इसके ३ खण्ड है।

पहिले खण्डमें बादशाहकी ओरसे लिखे हुए पत्र और फरमान हैं।

दूसरे खण्डमें वे पत्र है जो स्वय अबुलफज़लने अपनी ओरसे लिखे थे।

तीसरे खण्डमें फुटकर लेख और अरबी फारसी ग्रन्थोंकी समालोचना है।

खानखानाके नामके केवल २ फरमान प्रथम खण्डमें हैं। पहिला दूसरेसे कुछ बड़ा है और दोनोंका पूरा अक्षरार्थ न तो हिन्दी लेखमें आ सकता है और न इस पुस्तकके वास्ते कुछ उपयोगी है। इसलिये आवश्यक भावार्थ लिखना ही उचित समझा।

पहिला फरमान।

पहिला फरमान हस्तलिखित प्रतिके पूरे ८ पृष्ठोंमें है। बादशाहने बहुत लम्बी चौड़ी उपमामें खानखानाका नाम लिखकर वही ही लम्बी चौड़ी उपमा राजा बीरबरके वास्ते भी दी है और पठानोंकी लड़ाईमें उनके काम आजानेका हार्दिक शोक प्रकट किया

१। सवत् १६६०। २। स १६६४।

तुम्हारी अर्जी पहुंची। उससे तुम्हारी स्वामिभक्ति विदित होकर प्रसन्नता प्राप्त हुई। दक्षिण विजय करनेके विषयमें जो तुमने अपने विचार लिखे थे उससे हम भी सहमत हैं। तुम्हारी बुद्धि और जोर ताक़ा हमको ऐसा ही भरोसा है कि तुम शीघ्रही गुजरात मालवाके प्रबन्धसे खचित होकर दक्षिणको जीतो और वहांके सामान हाथी और पदार्थ हमारे भेट करो।

खुद्दारके अपराध क्षमा करने, जगन्नाथ और मानमल आदिके मनसब छापाकर भेजनेकी जो तुमने प्रार्थनाकी थी सो स्वीकृत होकर छापापत्र भेजे जाते हैं। खुद्दारको जो धरती दो वह सेवा और समयके अनुसार होनी चाहिये।

अमीनखांके बेटोंके वास्ते खास बेग और खुद्दारके लिये जो तुम उचित समझो सो करो।

भरोसेके सहायकोंको भेजनेकी जो अर्जीकी थी सो मंजूर हुई और शेख इब्राहीमको बुलाया सो जब हम आगरेको जाते हैं और जब इधरकी जमीदारोंके काम उसको सौंपे हुए हैं तो उसके भेजनेमें इतना लाभ नहीं जान पडता है कि जिसके वास्ते इन कामोंको योंही छोड दिया जावे।

और जो तुमने अपने बेटोंको बाबत लिखा कि जब दक्षिणको जाऊं तो इन्हें कहां छोड जाऊं या हजूरमें भेज दूं, सो तुम्हारा और तुम्हारी सन्तानका सम्बन्ध इस घरमें ऐसा नहीं है कि जब किसी कामपर न होवें तो क्षणभर भी आंखोंसे दूर रहें। तुम हमारे पधारनेके समाचारों पर कान लगाये रहो। यदि हमारा आना आगरेमें जल्दी हो जावे तब तो उत्तम बात यही है कि लडकोंको हजूरमें भेज दो और जो यह निश्चय हो जावे कि हम अभी पंजाबमें ही विहार करेंगे जो गुजरातसे बहुत दूर है तो तुम वहीं किसी भरोसेकी जगहमें उनको रखकर दक्षिणको चले जाना।

दूसरा फरमान।

दूसरा फरमान ७ पृष्ठोंमें है। इसके प्रारम्भमें बहुत दूरतक तो वसन्तऋतुकी शोभाका वर्णन है। फिर लडाइयोंमें विजय प्राप्त होनेकी प्रसन्नता और तूरानके बादशाह अबदुल्लाखां उजबकके भेजे हुए कबूतरोंके रङ्ग रूप और उडानकी प्रशंसा है। हबीब कबूतरबाज जो कबूतरोंके साथ आया था, उसकी तुलना बादशाहने अपने अद्वितीय इतिहासवेत्ता नकीबखांसे करके लिखा है कि जैसे नकीबखां मनुष्योंके वंश जानता है वैसे ही हबीब कबूतरोंकी कुली पहचानता है। उनके शरीरकी दशा जाननेमें जालीनूस हकीमके सम नहै तो उनके गुणोंके पहचाननेमें अफलातून हकीमके सदृश है।

इसके आगे कबूतरोंके उडनेकी विचित्रताका बखान करके लिखा है कि हम सदा ही और विशेष करके हर्ष और आनन्दके समयमें तुमको अधिक याद किया करते हैं। इसलिये जिस दिन ये कबूतर हमारे दृष्टिसे निकलते थे और हम इनको देख देखकर प्रसन्न होते थे उस समय हमको तुम्हारी इस काम सम्बन्धी बातोंकी बहुत याद आती थी जिससे इन "परीजादों"के मनमें एक भ्रम उपजा और इन्होंने अपनी बोलीमें अपना मनोरथ

कहा जिसका साराश यह है कि परमेश्वरने हमारा मनशा पूर्ण करके इसको इस दरबारमें पहुंचाया है, तो यहांके सब सेवकोंसे और विशेष करके खानखानासे जो बादशाहका निज शिष्य है यह चाहते हैं कि हममेंसे किसीको भी बादशाहसे मांगकर हमारा कुटुम्ब भङ्ग न करे। क्योंकि हम सब बादशाहको छत्र छायामें ही रहनेको आशा करते हैं सो जब इनको यह इच्छा है तो हम भी अपने हितैषियोंसे और विशेषकरके तुमसे कि तुम सबसे अधिकतर मांगने वाले हो, यह चाहते हैं कि इनके मांगनेका आग्रह न करोगे जिससे हमारे आनन्द और उत्साहमें विघ्न न पड़े और इनके वियोगको सहन करके इन्हे एक दूसरेसे बिछुड़नेका दुःख न दोगे। इनके बच्चे भी तुम्हारी न्यायशीलतासे यह आशा करते हैं कि जब तक हम बड़े होकर बादशाहको अपने उड़नेका कौतुक न दिखा लेवे तब तक हमको हमारे मा बापसे अलग न करें।

और तुम्हारा एक नया पहुना (१) भी रास्ता चल रहा है उसके पहुंचने तक ठहरो। हम तुमको अच्छे अच्छे कबूतर प्रदान करेंगे और उस मिहमानका भी इनके बच्चोंमेंसे भाग मिलेगा। कदाचित् बिलम्ब हुआ तो जो कुछ तुमने अपने वास्ते सोचा होगा उससे काम मिलेगी।

शेख अबुलफजलके पत्र खानखानाको।

मुनशियात अबुलफजलके दूसरे खण्डमें भी कई पत्र अबुल-

१। यह एक संकेत इस बातका है कि उस समय खानखानाकी बेगमके गर्भ था। इसलिये बादशाह लिखते है कि नये महमानके आने पर अर्थात् बालक जन्मनेपर हम तुमको कबूतर देंगे और तुम्हारे लड़केको भी कबूतरोंके बच्चे इनायत करेंगे और जो बालकके होनेमें देर हुई तो तुमने अपने वास्ते जितने कबूतर मिलनेकी आशाकी होगी उससे कम मिलेंगे। यह एक दिल्लगी बादशाहकी खानखानासे थी।

फजलकी तरफने खानखानाके नाम लिखे मिलते हैं। उनमेंका सो वह अंश जो इतिहास और राजनीतिसे सम्बन्ध रखता है यहां लिखा जाता है।

पहिला पत्र।

पहिला पत्र जो २० पृष्ठोंमें है अरबीके एक पदसे प्रारम्भ होता है। अबुलफजल खानखानाको लिखता है कि तुम्हारे मिलनेकी लालसा उतनी ही अधिक है जितनी कि तुम्हारी जय प्राप्तिकी प्रसन्नता है। मैं क्या कहूं कि इन दिनोंमें चित्तको कैसी कुछ चिन्ता रही। इधर तो वियोगका दुःख उधर गुजरातसे बुरे समाचारोंके पहुंचनेका उद्वेग और इनसे कष्टकी यह बात कि बहुत दिनोंसे तुम्हारा न कोई दूत आता था और न पत्र पहुंचा था। इन सबसे बढ़कर शत्रुओंकी दुष्टता थी जो निन्दा करके मित्रोंका दुख बढ़ाते थे जिन्होंने ऐसा अवस्थामें जीनेसे मरना उत्तम समझ रखा था। परन्तु बादशाहके तेज प्रतापसे अब वह दुर्दशा व्यतीत हो गयी और शीघ्रही अच्छे दिन आगये।

इसमाफकी बात यह है कि तुमने बड़ी ही वीरताकी। यह काम तुमसे ही बन आया और पुरुषसिंह ऐसा ही किया करते हैं। तलवारों और कमानोंको यदि बोलनेकी शक्ति हो तो वे तुम्हारे भुजबलका हजार बार बखान करें।

शत्रु और मित्र मन्त्रियोंकी बहुतसी सलाह और खैंचतान होनेके पश्चात्, जिसका कुछ वृत्तान्त आपका अपने वकीलोंकी लिखा पढ़ीसे विदित हुआ होगा, १६ बहमन माहजलालो तदनुसार १७ मुहर्रमको बादशाहने इलाहाबाससे फतहपुरकी ओर पयान किय। विचार यह था कि शीघ्रतासे राजधानीमें पहुंचकर विशेष कटक तो वहीं छोड़ दवें और छड़ी सवारीसे अहमदाबादके ऊपर धावा करें जिससे सेवकोंकी पुष्टि हो जावे और रिपु दल दब जावे।

इतनी बहुत गड़बड़से बादशाहके शांत चित्तमें कुछ भी घबरा-

छूट नहीं हुई और तिसी बड़ो दूरको लम्बी यात्राको पग पग बाटको समझकर मन्द मन्द गतिसे चलते प्रसन्नवदन और प्रफुल्लित चित्त हो पधारते थे। परम स्वामिभक्त अनुचरोंके साथमें मैं भी था।

बहमन महीनेकी अन्तिम 'मितिको जोकि प्रथम तिथि (१) सफरकी थी बादशाही कटक कोड़ा घाटमपुरमें उतरा हो था कि किसना चौधरीके कासिद (धावक) बधाई लेकर पहुंचे। श्रीमानोंने ईश्वरको प्रणाम करके दुन्दभी बजानेकी आज्ञा दी। इतना आनन्द और उत्साह हुआ कि जिसको यथार्थ अवस्था वर्णन करनेको मैं समर्थ नहीं हूं। तुम इसीसे अनुमान करलेना कि इस प्रसन्नताने समभावसे शत्रुओं और मित्रों मे एकता कर दी थी।

इसके पीछे कल्याणराय, एतमादखां, निजामुद्दीन अहमद और शहाबुद्दीन अहमदखांकी अर्जियां क्रमसे पहुंची जिनसे तुम्हारी पूरी बहादुरी बादशाहको विदित हुई। श्रीमानोंने प्रसन्न होकर परम कृपासे बहुत शाबाशी और खानखानाकी बड़ी पदवी तुमको दी।

ईश्वरको धन्यवाद है कि उसने अपनी दयालुतासे तुमको वह पदवी दिखायी जो पञ्चहजारी मनसबवालोंकी मन वाञ्छित कामनाओंकी अन्तिम सीमा होती है।

तुम्हारे पञ्चहजारी होनेको बहुत लोग असम्भव समझते थे और प्रत्यक्षमें कुछ उसका उद्योग भी नहीं था। हकीम अबुलफतह या कुछ दूसरे सन्मित्रोंने कदाचित कुछ श्रम किया होगा। वास्तवमें ईश्वरने तुम्हारा वह प्रभाव प्रगट किया है कि जो

१। फतह १३ मुहर्रम सन् ९९२ को हुई थी और बधाई १८ दिनमें बादशाहके पास एक सफरको पहुंची। इधर बादशाह भी १४ दिनमें ४० तथा ५० कोस ही चले थे। उस समय डाक और सवारी इतनी धीमी चलती थी। अहमदाबादसे आगरा २५६ कोस था और आगरेसे घाटमपुर ५० या ६० कोस होगा।

बड बड़े विदचण पुरुषो की तीचण दृष्टिसे छिपा हुआ था।

समय अवकाश देनेमें बहुत कजूम है इसलिये इस विषयमें विशेष नहीं लिख सकता इतनेके वास्ते ही बडी भीख मागनेसे अवसर मिला है।

निदान अति प्रतीचा करनेके पीछे ता० २५ सफर सन् ९८२को फौलाद दीवानेका भला आदमी पहुचा और तुम्हारा छपापत्र लाया जिसके पढनेसे असीम प्रसन्नता हुई और आश्चर्य्य भी बहुत हुआ। ऐसी बडी विजय प्राप्त करके वहां स्थिर हुए विना इधर आनेका विचार करते हो और जिसकी प्रार्थना करनेके वास्ते मुझको शपथ भी लिखी थी। अन्तमें वह बात सन्मित्रोंके सन्त्रसे बादशाहके कानोंतक पहुचायी गयी तो श्रीमान्‌को भी बडा अचम्भा हुआ। हकीम अबुलफतहने वाक्य पटुतासे वह प्रार्थना स्वीकार भी करा ली। परन्तु मुझे जो आश्चर्य्य था वह अभी दूर न हुआ था कि दो तीन दिन पीछे फौलाद दीवानने तुम्हारी अर्जी श्रीमानोंके चरण कमलोंमें अर्पित की जिसमें श्रीमानोंके गुजरातमें पधारने और राजा टोडरमलके भेजनेकी प्रार्थना लिखी थी। इससे और भी मेरा चित्त विच्छिन्न हुआ। पुराने समयके कर्म्मचारियोंकी सलाहसे तुमने ऐसा किया है। जब कि इस वृहत राज्यको परमेश्वरने अपने सरचणमें रख छोडा है तो इसके शुभचिन्तक भी सर्व प्रकारके सामाज्कि शोकसन्तापसे बचे रहेंगे। इसपर भी ज्ञानका अनुभव न होने और मायामें लिप्त रहनेसे चिन्तातुर होना पडता है।

मैंने जो कुछ ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया था, अफसोस है कि उसको तुम्हारे प्रेममें आसक्त होकर कुछ दिनोंके लिये खो बैठा, नहीं तो मैं कहा और तुम जैसोंकी प्रीति कहा और ये उद्वेग कहा? निदान तुम्हारे आग्रहपूर्व्वक लिखनेसे मैंने अपनी समझको अलग रखकर सुहृद स्नेहियोंकी सम्मतिसे बहुतसी कहा सुनी करके, जिसका वृत्तान्त आपको अपने मित्रोंसे 'वदित

हुआ होगा श्रीमानोंसे मेष संक्रान्तिके उत्सवके पीछे मानये जाना, खजाना भेजना और उन सब कार्यों का सम्पादन करना स्वीकार कराया है जिनका ब्योरा उस फरमानमें लिखा गया है जो अमृतालिब और फौलाद दीवानके हाथ जा चुका है. आशा है कि सब अच्छा होगा।

क्या करूं यह मेरा स्वभाव है कि जो उत्तम विचार मनमें उत्पन्न होते हैं उनको लिखे बिना चित्तको शान्ति नहीं होती और इसी हेतु इतना बहुत लिखकर तुम्हें कष्ट दिया है। आशा है कि मन और शरीरके विचारों और कामोंकी भीड़ तुमको इसके पढ़नेसे न रोकेगी।

मैं इस पत्रको तुम्हारी तन्दुरुस्तीकी "दुआपर" समाप्त करना ही चाहता था कि चौधरी किशना, शहाबुद्दीन अहमदखां और नवाब कोकाकी अर्जियां जो ता० ५ रबीउलअव्वलको नादौतमें लिखी गयी थीं; रेवारियोंके हाथ पहुंचीं उनसे शुभ समाचार नयी फतहके मिले। यद्यपि इसके पहिले मुजफ्फरके खम्भातसे भागने और उसके पीछे फौजके जानेकी खबर कई मनुष्योंकी लिखावटसे जानी गयी थी परन्तु सविस्तर अब मालूम होकर चिन्ता और व्याकुलता प्रसन्नतासे बदल गयी।

परमेश्वर नित्य ही तुम्हारी ऐसी जय किया करे। श्रीमानोंको जो प्रसन्नता तुम्हारी इस लगातार जीतसे हुई है उसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता। क्या दरबारमें और क्या एकान्तमें तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं जिससे शत्रु दुखी और मित्र सब सुखी हैं।

श्रीमान कई बार कह चुके हैं कि जो चाकर गुजरातमें भेजे गये हैं उनके मनसब अर्ज करो तो बढ़ाये जावें और उनको कृपापत्र भी भेजें। परन्तु श्रीमान न्याय और राजनीतिकी परिपाटीसे सब काम आप देखकर करते हैं। तुम्हारी खानखानीका फरमान, खासा खिलअत पेटी तलवार और घोड़के छांटनेमें दिन लगजानेसे इतनी देरमें लिखा गया था तो दूसरा फरमान किस तरह लिखा

जा सकता था जब कि नये दिनोंके आजानेसे उसका उत्सव राज रीतिसे किया जाता है और मेष सक्रान्तिके दिन तो सब छोट बड़ोंको यथोचित न्याय पूर्वक मान और सन्मान दिया जाता है और अजके तो हरेकको उसको आशासे अधिक देना है। मेख सक्रान्ति दूर नहो है। ईश्वरने चाहा तो इन सब कामोंसे फुरसत हो जाने पर दूसर फरमान तुम्हारे पास पहुचेगा।

आपसे यह बात छिपी न होगी कि सच्चे सच्चा वेही है जो दिलसे यह चाहते हों कि मित्रोंके छोटे और बड़े अवगुण जता कर उनसे त्याग करावें न कि खुशामदियोंकी भांति अवगुणोंको ही गुण बताकर अपनेको हितैषी बतावें जैसाकि संसारमें हो रहा है और इनका यह कपट थोड़े ही दिनोंमें प्रकट होकर लोक और परलोक बिगाड़ देता है। सो बुद्धिमान लोग जानते ही है। जब आप यही थे तो मिलनेके समय इन बातोंको कहा सुनी हो जाती थी। परन्तु अब आप दूर है इसलिये चाहता हूं कि चिट्ठियोंमें ऐसी मनोवृत्तियां लिखी जाया करे। आशा है कि आपको भी ऐसी ही इच्छा होगी।

मैं चाहता था कि इसी पत्रमें पहिले तो कुछ प्रकरण गूढ़ रहस्यका लिखू जो साराश सब मतमतान्तरों और शास्त्रोंका है।

दूसरे यह प्रार्थना करू कि आप न्यायदृष्टिसे खूब देखभाल कर निरूपण कर लेवें कि ये बातें निरन्तर सब विद्वानो की मानी हुई है तो भी आपके विशाल चित्तमें कैसी जचती है और जब कि यह निश्चय हो जावे कि अति उत्तम है तो जो इसकी विपरीत हैं वे सर्वथा वृथा हैं।

तीसरे यह चाहता हूं कि नित्य और जो नित्य न बने तो सप्ताहमें और जो सप्ताहमें न हो सके तो एक महीनेमें और जो महीनेमें भी बन न पड़े तो एक वर्षमें अपनी आयुभरका दफतर स्मृति जबसे सम्हाली हो देख लिया करें और बिना किसीको सम्मतिके अपने हृदयमें विचार करके देखें कि पिछले वर्षोंमें क्या

परमेश्वरने अपनी क्रिया कुशलतासे जैसे समग्र शरीरका प्रबन्ध एक जीवके अधीन किया है वैसे ही पृथिवीका प्रबन्ध भी नीति विशारद नरेशोंके अधिकारमें दिया है। जीवात्मा यदि शरीर और मनकी शक्तियोंका शासन, जो उनके कर्मचारी हैं न्याय और नीति पूर्वक करता है तो स्वास्थ्य बना रहता है नहीं तो उसमें विघ्न पड़कर नाशकी प्राप्ति होती है। ऐसे ही जो किसी देश या राज्यका स्वामी सावधानी और बुद्धिमानीसे कामोंको सम्हालता रहे तो सब प्रजाको वशमें कर ले और किसी प्रकारकी हानि न पड़ने दे; नहीं तो राज शीघ्र ही भ्रष्ट हो जावे जिसकी स्थिति इन ५ बातोंके ऊपर निर्भर है—

१। सावधानी, यानी सब लोगोंका हाल भरोसेके मनुष्यों तथा कई ऐसे आदमियोंके द्वारा जानते रहना, जो एक दूसरेको न जानते हों, राज्य, नगर और घरसे सावधान रहना, सच्ची झूठी खबरोंको बुद्धिमें तौलकर जान लेना।

२। प्रजागणके अपराध क्षमा करना और उन अपराधोंको उनकी अज्ञानतासे जानकर क्रूर न होना।

३। जिनपर अन्याय हुआ हो उनका न्याय करना और दुष्टोंका (जो अपने सम्बन्धी हों तो भी) पक्ष न करना।

४। संसार असार है, ऐसा सबको निश्चय कराना और बिना

कहे जो दीन दुःखी लोगोके मनोरथ समझकर सिद्ध कर देना, प्रजाके धन हरनेकी आकांक्षा न करना, ऐश्वर्य्यको अपने पुरुषार्थसे न समझना।

५। न्याय पथका अवलम्बन करना, हठका त्याग करना जो लोग अपने मतके न हों उनसे वैरभाव न रखना हां जो समझ सके तो अपना मत नम्रता पूर्व्वक उनको समझावे। केवल मत विरोधसे उनपर अन्याय न करे और उनके धन धान्य धरा और धामका पूरा पूरा संरक्षण करता रहे।

प्रियवर! ये वाक्य प्राचीन बुद्धिमानोंके हैं जो उन्होने कृपा करके लोक हितार्थ कहे हैं।

बुद्धिमानोंके उपदेश तो सर्वथा श्रेयस्कर ही होते हैं। परन्तु अहोभाग्य उनका है कि जो सुनते हैं और उनका साधन करते हैं। और निःसन्देह ऐसी बातो का प्रतिपादन करना पुरुष सिंहोंका ही काम है जो इनके द्वारा काटोंको फूल बनाकर मित्रों और शत्रुओं में समभावसे रहते हैं, और हकीम अनवरीके इस वाक्य को, कि जो शत्रुओंमें निर्वाह कर सके और जो मित्रोंमें रह सके वही पुरुष सिद्ध है, परलोकका साधन बना कर सन्तुष्ट होते हैं।

मैं अब ऐसे प्रकरणोंके कहनेसे कि जिनसे अपनेको तो सुधारा ही नहीं है चुप रहता हू और इससे अधिक अपनेको और दूसरे लोगोंको कष्ट न दूंगा। क्योंकि ईश्वरका ऐसा नियम है कि उपदेश जब तक किसी सत्पुरुषसे न दिया जावे कुछ फल नहीं देता है। परमात्मा हमको और तुमको सन्मार्गपर लगाकर परम पदको पहुंचावे।

दूसरा पत्र।

यह ८ पृष्ठोंमें है। आदि अन्तमें तो वेदान्त, राजनीति, धर्म्मनीति और प्रेम प्रीतिके रहस्यका विषय है। बीचमें जो समाचार लिखे हैं उनका यह साराश है कि महवाजखाने घोडाघाट (१) समुद्र

१। बङ्गालेका एक नगर है।

तक सब देश और टापू जीत लिये। अब नदी भी गये ईसाखां नावमें बैठकर भागा सो पानीमें डूब गया।

व औरछा और माण्डिल वाले टाले और बंदगानसे उन्होंने तक दि-ग्विजय करके उन देशोंपर अधिकार कर लिया, दुष्टोंको हटाकर सब जगह अमन चैन कर दिया। "कतलु लोहानी"ने जो पठानोंके उपद्रवका अधिष्ठाता था सेवा स्वीकार करके अपने बेटेको सहोदर हाथियों और बढ़िया पदार्थों सहित बादशाहके चरणोंमें भेजा।

उधर मुहम्मद हकीम (१) मिरजाकी मृत्यु हो गयी जो बड़े बड़े बलवाइयोंके साहसका हेतु था।

निजामुद्दीन कुलीबखाने जो अर्जी तुम्हारी दूसरी फतहके अधि-सर वृत्तान्तोंको दरबारमें भेजी थी उसमें उसने अपना बहुत कुछ प्रेम तुम्हारे प्रति प्रकट किया है।

उर्दीबहिश्त महीनेकी तीसरी और रबीउस्सानीकी ११ वीं तारीखको जो उत्सवका दिन था और श्रीमान् बहुत प्रसन्न थे, तुम्हारी दूसरी अर्जी भी पहुंची जिसमें दूसरी फतहके समाचार थे उनको सुनकर श्रीमानोंने बहुत प्रशंसा की। तुम्हारे और तुम्हारे साथके लोगोंके मनसब पद) बढ़ानेकी फिर आज्ञा दी। विलम्ब हो जानेसे कर्मचारी धमकाये गये। अब शीघ्रही सब कामोंके पूर्ण हो जानेकी आशा है।

चौथी उर्दीबहिश्तको रातको तुम्हारा पत्र हकीम अबुलफतहके नाम पहुंचा। ऐसा पाया जाता है कि दूसरी फतह होनेसे पहिले लिखा गया होगा। क्योंकि कई बातें उसमें चिन्ता और व्याकुलताकी लिखी हुई थीं जिनसे चित्त बहुत विचित्र हुआ। तुम बुद्धिमान हो सब कामोंका पूर्वापर देखना चाहिये। यह जगत ईश्वरका बनाया बाग है काट पर दृष्टि देनेसे पहिले इसके फलोंको देखना चाहिये और प्रसन्न होना चाहिये। आयु जो

४। यह अकबर बादशाहका भाई था।

शीघ्रतासे बीती चली जाती है और जिसका कोई बदला नहीं मिल सकता है उसको हसी खुशीमें पूरी करनी चाहिये। साधारण मनुष्यों को भांति हर्ष और शोक करना तुम्हारा काम नहीं है।

यद्यपि मैं जानता हूं कि ऐसी बातें व्याकुलताकी दशामें किसीको नहीं सुहाती, वर्त्तमान कालके लोगों को तो बहुत ही कड़वी लगती हैं, परन्तु तुम विद्वान हो और सच्चे वचनों से सन्तुष्ट होते हो इसलिये मैंने ऐसा लिखा है।

तीसरापत्र।

इस पत्रका यह आशय है कि खानखानाने अबुलफज़लसे ब्रह्म विद्याके विषयमें पूछा और उसने उत्तरमें अपना सिद्धान्त लिखा है।

चौथ पत्र।

इस पत्रका साराश यह है कि मैं वह नहीं हूं कि ज जबानोंसे कहूं वह दिलमें न हो। तुम जानते होगे कि मैं ठेटसे विरक्त मन था और गृहस्थोंमें आया जब भी वही हाल था। लोग मुझसे मित्रता किया चाहते थे। मैं दूर भागता था। निदान हकीम अबुलफतहने, जो मर चुका है, और तुमने मुझको अपनी दोस्तीके जालसे फासा। मैं कुछ समय तक तुमको उपदेश करता रहा तुम मानते रहे जो कभी कोई सच्ची बात कड़वी भी लगी तो तुम अपने मनको वशमें रखकर सदुपदेशकी चाहना करते रहे। परन्तु अब थोड़े दिनों से वह इच्छा नहीं पायी जाती और मैंने भी लिखना छोड़ दिया तो भी यथाशक्ति दिलसे तुम्हारे सुधारनेके उद्योगमें बद्धकटि हूं। पर हां इस कामका उस्ताद नहीं हूं जिससे इसके कई साधन छूट भी जाते हैं। एक विशेष कारण यह भी था कि इन दिनों मेरे भाई शैख अबुलफैज़ फैजीका देहान्त हो गया और इस दुःखसे मुझको अवकाश नहीं मिला।

तीन महीने पीछे महमूदखां पहुंचा उसने बने बनाये सुगम कामको बहुत कठिन बताया। मैंने जैसा कि मेरा कर्त्तव्य प्रीति और हितकी परिपाटीसे था बहुत परिश्रम किया परन्तु वहांका

गया और वृत्तान्त लोगोंको निश्चय हो चुका था, इसलिये बात जब मैंने तुम्हारी ओरसे कहा और तुम्हारी सराहना की तब तो पर लज्जित हो होना पड़ा और क्यों नहीं लज्जित होता, जब कि तुमको अपना परम मित्र बतलाया था। निदान यहां तक नौबत पहुंची कि मुझपर भी कोप हुआ जिसको मैंने सह लिया क्योंकि मैं ही उसका कारण हुआ था।

मैं जानता हूं कि साथियोंने तुमसे दगा की। यदि शाहजादा जवानी और बड़ाईके उन्मादमें नम्रताके रास्ते पर न चला था तो हे विलक्षण विद्वान्। तेरी विलक्षण बुद्धिको क्या हुआ था? तू क्यों डर गया और मागे हुए बड़प्पनके बोझमें दबकर घमण्ड कर बैठा? कितनासा काम था जो तेरे करनेसे नहीं होता? तूने अपने स्वामीकी प्रसन्नताके लिये शाहजादेका मन क्यों नहीं मनाया? इन २ वर्षोंमें उन्मत्ततासे तूने बात भी न सुनी, सीधा रास्ता छोड़ दिया और अब तक भी सचाईके मार्गको ग्रहण नहीं करता है। मैं चाहता हूं कि कोप करूं और १००० गालियां दूं परन्तु जोभ एक पुनीत अङ्ग है, उसको गालियोंसे बिगाड़ना बड़ा अनर्थ करना है।

मैंने माना कि तू मूर्ख था पर बुद्धि नहीं थी तो भक्ति कहां चली गयी थी? वह स्वामिधर्मीपनकी बात क्या हुई? क्यों काममें बेपरवाई की जिससे ऐसा हुआ? यदि सौगन्द खाना मेरी समझमें पाप न होता तो मैं १००० सौगन्दें खाता जो इस बड़े कामका सोग था। दुश्मनोंके इस मनवाञ्छित काम करनेपर भी मुझे विश्वास था कि तू बावला और मदोन्मत्त हो गया होगा। तो भी मुझे देखकर सचेत हो जावेगा और मेरा कहना मान कर जावेगा। इसलिये मैंने अनेकबार बादशाहसे प्रार्थना की कि मनुष्य प्रकृतिके स्वभावसे जो भूल हुई सो हुई मैं जाकर शीघ्र ही अपनी मित्रताका ऐसा दबाव डालूं कि खानखाना शाहजादेके कहनेमें रहे और उनकी सेवा सच्चे मनसे करे। परन्तु कुछ लाभ न हुआ

और इस प्रार्थनासे मुझपर भी खफा हुए। परन्तु मेरे मनमें उसका कुछ विचार न हुआ और मैं उसी तरह दृढ़ सङ्कल्प हूं।

खैर जो हुआ सो हुआ, मुझ सच्चे हितैषीकी सलाह यही है कि अपने वचनोंका पालन करके श्रीमानोंके चित्तको शान्त करो श्रीमान तो तुमसे वह आशा रखते हैं जो अपने किसी पुत्रसे भी न रखते होंगे। अब आप बुलानेकी तो प्रार्थना न करें और बचपने (अर्थात् मूर्खता) से अलग होकर उसी सेवामें दिल लगावें। श्रीमान् बुलावें भी तो यही उचित है कि इसी सेवाकी प्रार्थना करें क्योंकि श्रीमानोंका चित्त यही चाहता है कि यह काम तुम्हीसे हो और जो वस्तमें मेरे आनेको उचित समझें तो अर्जी भेजें सो फिर मेरे उद्योग करनेका आधार हो। मैं कहां और यह काम कहां? परन्तु यह लालसा है कि श्रीमानोंके कोमल हृदय पर जो भार है उसको दूर करें। ईश्वरको सहस्रों धन्यवाद हैं कि बराड रह गया। इसको मैं तुम्हारे परिश्रमका फल जानता हूं। इससे वह भार कुछ हलका हुआ। आशा है कि बिलकुल जाता रहे। जो दुष्ट जन खुशी मना रहे थे वे अब शोकमें बैठे हैं। यदि मूलमन्त्र (१) जाननेमें एक दो बार मुझसे भूल हो जाती तो मुझे अपनी समझका विश्वास नहीं रहता। मैं जानता हूं कि ये बातें साधारण हैं। सच तो यह है कि श्रीमानोंके परम पवित्र हृदयमें कभी मलीनता आती ही नहीं। (२)

प्रेम वह नहीं है कि जो संयोगकी वांछासे अपना मन अर्पण करे। प्रेमी वही है कि जो निष्काम होकर सर्वस्व योंही दे दे दोनों लोकोंके फूलोंको २ डालिया जाने, उनकी छड़ी बनावे और अश्रुओंका बन्धन दे।

१। यथार्थ अभिप्राय।

२ यह अन्तमें शेखने खानखानाकी तसल्ली की है कि बादशाह वास्तवमें तुमसे अप्रसन्न नहीं हैं।

इत बहुत है अवसर थोड़ा। समय बाधक और मन निरत; इसी पर समाप्त करता हूं।

तेरी आंखें खुली हैं और मन चेतन्य है तू सबसे अधिक अपनी लज्जा रख †

पांचवें पत्रका सारांश

परमेश्वर तुम्हारी मनकामना सफल करे। आज दैवयोगसे ति जिसका कारण प्रत्यक्षमें सच्चे हितैषियोंकी सम्मतिका विरोध या अल्प बुद्धि मनुष्योंका दुर्मत हो सकता है तुमने कन्धार जानेका विचार छोड़ दिया और ठट्टा फतह करनेका इरादा किया था जिससे दूसरे तात्पर्यसे विशेष परिश्रम करने और बहुत समय तक कष्ट उठानेकी इच्छा हुई (क्योंकि कन्धार लेना सुगम था और ठट्टा कठिन) और फिर मुझसे पिछले पत्रोंमें शिक्षा लिखनेकी टीका पूछते हो। सो मैंने जो कुछ लिखा वह प्रीति रीतिकी अधिकतासे लिखा था। वह शिक्षा ऐसा न था जो हमारे तुम्हारे स्नेह या सज्जन पुरुषोंके प्रेमके विरुद्ध हो। तुम्हारी बेपरवाई देखते हुए तो मैंने कुछ भी शिक्षा नहीं किया है और न परीक्षा। जब कि मेरी प्रीति तुम्हारे प्रति सिद्ध हो चुकी है फिर शिक्षेकी जगह कहां रही? तुम जितने सज्जनतामें बढ़ते जाते हो उतना ही मैं मूर्ख बनता और तुम्हारी मित्रतामें वृद्धि करता जाता हूं। तुम्हारे पास तो इस समय आत्मश्लाघी लोग भरे हुए हैं जो मुझे अपनेको उनमें गिनानेकी लज्जा न आती होती तो मैं भी अपने दिल जलाने, तुम्हारे काम निकालनेमें बादशाहसे झगड़ने, और अपनी हानिका सोच न करनेकी थोड़ी सी कथा लिखता।

† यह पत्र उस समय लिखा गया था जब कि शाहजादे मुराद और खानखानाकी अनबनसे दक्षिणका देश फतह नहीं हुआ था बरन दक्षिणियोंने कुछ अंश बादशाही राज्यका ले लिया था और बादशाह शाहजादेके लिखनेसे खानखाना पर कोपायमान हुए थे।

मैं तो ठठसे विरक्त मन था, मुझे प्रारब्धने पकड़ा और अ‍मात्य पदमें जोत दिया। तो अब इसका धर्म भी निबाहना पड़ा इसीलिये कुछ इस सम्बन्धके विषयकी भी कहता हूं कि बादशाह तुमसे इतने प्रसन्न है कि जिसका वर्णन इन पत्रोंमें नहीं समा सकता है। तुम्हारी सब सेवाएं मंज़ूर हो गयी हैं। सारे अमीरों और मनसबदारोंने तुम्हारे कामोंके बखान बहुत अच्छी तरहसे लिखे हैं जो अपने स्थान (१) पर स्थिर हो गये हैं और शीघ्र ही उनका फल तुमको मिलनेवाला है।

जहाज़ी नावोंके वास्ते हुक्म हो गया है, तोपें और उनको सामग्री पीछेसे पहुंचेगी।

दौलतखांके वास्ते पूरी सिफारश कर दी गयी है, वह अपनी मुरादको पहुंच जावेगा।

अमीर लोग राज्यके अनेक प्रान्तोंसे विजयके पत्र भेज रहे हैं आशा है। कि तुम भी शीघ्र ही इस बड़े कामको सम्पादन करके बादशाहकी प्रसन्नता प्राप्त करोगे। मुझे इतनी भी फुरसत नहीं है कि परमेश्वरसे अपनी कुछ कहूं विषयवासनाने घेर रखा है। सत्सङ्ग कम होता है। भाई हकीम हमामसे तो मिलता रहता हूं वह भी कामोंमें डूबा हुआ है। कभी शाम नाना चाहे जमामा और शाहन सा (२) पढा करो। बात चीत उनके

अनुसार क्रिया करो। अकेलेमें सदा अपने कर्मों को गिनते रहो नीतिकी पुस्तकोंमेंसे अहयाके (१) उत्तर भागको पढ़ा करो। निष्कपट और निर्लोभी मनुष्योंकी खोज रखो, जो सच्चे शब्द कहें। झूठे खुशामदियोंसे बचे रहो।

छठे पत्रका सारांश।

कृपापत्र पहुंचा। सज्जनता पायी गयी। मुझसे उपदेश चाहा मैं आप ही शिक्षाहीन हूं फिर क्या शिक्षा करूं? परन्तु भाग्य अच्छे थे जिससे बादशाहको सेवामें आ जाना जिसके दर्शनोंसे ज्ञान चक्षु खुले। आशा है कि शिक्षा देनेके योग्य हो जाऊं। अब जो कुछ मैंने समझा है तुमको भी लिखता हूं।

इसके आगे नीति, न्याय और ज्ञान मार्गकी बातें लिखी हैं।

समुच्चय।

ऐसेही और भी कई पत्र हैं जिनमें खानखानाकी कन्धार, सिंध और दक्षिण सम्बन्धी भूल चूकको अबुलफजलने पकड़ा है और खानखानाने जो उसके उत्तर दिये हैं वे भी काटे हैं। बादशाहकी नाराजी जताकर भी यही लिखा है कि बादशाह दिलसे तुम पर अप्रसन्न नहीं है।

एक पत्रमें खानखानाने बादशाहकी नाराजीके विषयमें लिखा तो यह उत्तर दिया कि यहां तो कुछ भी नहीं है। सदा तुम्हारे भाव और भक्तिकी चर्चा दरबारमें और एकान्तमें होती रहती है। कभी हुक्म न हुआ कि कोई फरमान चाहे वह खफगीका ही हो, बगैर यार वफादारकी उपाधिके न लिखा जावे और आजमखांको तो तुम्हारी सहायताके वास्ते भेजा था इससे तुमको इतना भड़कना नहीं चाहिये था।

फिर एक और पत्रमें जो ता॰ २ रमजान (२) सन् ९९२ को

१। अहयाउलउलूम मुसलमानोंकी धर्मनीतिका ग्रन्थ है।
२। भादों सुदी ३ संवत् १६४१

लाहौरसे लिखकर भेजा था, यह शिक्षा लिखी है कि बाद-शाहके फरमानके जवाबमें। जो खफगीका है अपराध स्वीकार करके अपनी हानिको सुधार लो। तुम्हारी अर्जीको पढ़नेसे बाद-शाहकी नाराजी १००० अर्थोमें १ अर्थ पर आ रही है परन्तु तुम एक को ही १००० जानकर उसके दूर करनेका प्रयत्न करो।

इसके आगे पत्रमें लिखा है कि ता॰ ६ जमादिउलअव्वलको तुम्हारा खत मिरजा अली बहादुर लाया। पढ़कर शोक हुआ। आनेका इरादा न फरमानके अनुसार है और न तुम्हारी समझके योग्य। जब कि तुमको उसी कामके करनेकी प्रेरणा की गयी थी तो उससे अपने बुलानेका तात्पर्य्य समझ लेनेको क्या कहा जावे?। अब इधर आनेकी इच्छा न करो। आगरेमें १ वर्ष तक ठहरनेकी मरजी बादशाहकी न थी। तुम श्रीमानोंके मनको बहुत करके दक्षिणकी फतहमें लगा हुआ जानकर आनेकी बात छोड़ दो और उस देशके जीतनेमें जिसका उत्तम अवसर यही है विलम्ब मत करो जैसा कि पहले कई बार कर चुके हो।

सिंध और दक्षिण फतह करनेका धन्यवाद भी कई पत्रोंमें है। कंधार खुरासान और ईरानकी तरफ बढ़नेकी भी उत्तेजना है

इन सब पत्रोंमें सरकारी कामोंसे निज व्यवहारकी बातें अधिक हैं और उनमें विशेषतर अध्यात्म शिक्षाका है। अबुलफजल एक प्रकारका वेदान्ती था। उसने आत्मशिक्षा और वैराग्यकी बातें जैसी खानखानाको लिखी थी वैसी ही उस समयके दूसरे बड़े बड़े अमीर मिरजा, आजम, जैनखा कोका और राजा मानसिंहको भी लिखी हैं। वह बादशाहका वजीर, मुन्शी और मुसाहिब था इस वास्ते सब लोग उससे पत्र व्यवहार रखते थे। और वह सबको यथार्थ बातें उनके हितकी, जिनसे इस लोक परलोकका कल्याण हो लिखा करता था परन्तु उसके लेख बहुत क्लिष्ट हैं और आशय भी गूढ़, जिससे उसका अभिप्राय समझनेमें बहुत मुश्किल पड़ती है। जो फारसी भाषाका पूरा व्याकरणी, वेदान्ती, नीतिज्ञ

इतिहास वेत्ता और कवि भी यही उनके लेखोंका यथार्थ सारगर्भित आशय समझकर आनन्द प्राप्त कर सकता है।

खानखाना और शेखकी भेंट

मआसिरुल उमरामें लिखा है कि जिस समय शेख अबुलफजल प्रधान मन्त्रीके पूर्ण अधिकार में था एक दिन खानखाना और मिरजा जानी उससे मिलने गये थे। शेख पलंग पर लेटा हुआ अकबरनामेके पत्र देख रहा था, इनका कुछ स्वागत नहीं किया केवल इतना ही कहा कि आओ मिरजा बैठो।

मिरजा जानी बेगको सिन्धकी बादशाहीका घमण्ड था इस लिये वह उठ गया।

दूसरी बार फिर खानखाना मिरजाको मनाकर शेखके स्थान पर ले गये तो शेख पोल तक लेनेको आया। बहुत आदर सत्कार किया और कहा कि हम लोग तो आपके सेवक और प्रजा हैं।

मिरजाको बड़ा अचम्भा हुआ कि या तो वह घमण्ड था या यह विनय।

खानखानाने कहा कि उस दिन तो मुख्य मन्त्रीपना इसकी दृष्टिमें था और आज भाई चारेका बर्ताव है।

—— o ——

परिशिष्ट।

मआसिर रहीमी।

यह खानखानाके जीवनचरित्रका ग्रन्थ है जो उनके जीते जी ही ईरानके एक विद्वान अब्दुल बाकीने बनाया था। यह मेरे देखनेमें तो नहीं आया परन्तु मौलाना शबलीने बङ्गाल एशियाटिक सोसाइटीके पुस्तकालयमें इसकी एक पुरानी प्रति देख कर उस परसे कुछ आशय उर्दूके पत्र "नुदवामें" छपवाया था उसीका सारांश यहां लिखा जाता है।

यह ग्रन्थ २००० पृष्ठोंमें पूर्ण हुआ है। अर्धांशमें तो खानखानाके पूर्वजोंका हृत्तात है और शेषमें खानखानाका चरित्र है जिसमें मुख्य बातें इतनी हैं—

१ जन्म और शिक्षा।

२ बादशाही दरबारकी सेवा बन्धन और दिग्विजय।

३ खानखानाकी अरबी, फारसी, और तुर्की भाषाओंमें निपुणता और प्रत्येकमें गद्य पद्य लेख और काव्य रचना।

४ शील स्वभाव।

५ शस्त्र विद्याके चमत्कार।

६ लोकहित और सुखके काम।

७ कृषिकार्य्यमे उन्नति।

८ खानखानाके दरबारी शिल्पकारोंकी नयी नयी कारीगरियोंके आविष्कार।

९ खानखानाका पुस्तकालय।

१० खानखानाके दरबारके कवि।

११ आलिम (विद्वान) हकीम और सुन्शीक।

न० १ और २ को छोड़कर (जिनका बहुत सा विषय हमारे इस ग्रन्थमें आ चुका है) मौलाना शिबलीने अपना लेख न० ३ अर्थात् खानखानाकी विद्वत्तासे आरम्भ किया है। वे लिखते हैं कि खानखाना कई भाषाओंको जानते थे, उनकी अरबी, फारसी, और तुरकी कविताका नमूना मूल ग्रन्थमें दिया है तुरकी और फारसी तो उनकी मातृभाषा थी लेकिन अरबी भाषाकी कविता भी कुछ कम नहीं है। शोक और महाशोक है कि ग्रन्थकर्त्ताने जो ईरानी था, खानखानाकी हिन्दी भाषाकी कविताका एक भी नमूना नहीं दिया है, नहीं तो इस बातका पता लगता कि उर्दूका हिन्दी भाषा पर क्या प्रभाव पड़ने लगा था।

खानखानाको अरबी भाषामें यह अभ्यास था कि जो कहींसे कोई लिखावट आती थी तो मूल भाषाको पढ़े बिना ही उसका उलथा इस प्रकारसे करते चले जाते थे कि मानो वह उलथा ही लिखा हुआ उनके हाथमें है।

एक बार मक्केके शरीफने (महन्तने) अकबरको पत्र भेजा था जिसमें अरबीके कठिन कठिन शब्द भर दिये थे। अकबरने अबुलफजल, फतहउल्ला शीराजी और खानखानाको हुक्म दिया कि फारसीमें अनुवाद करके लावे। अबुलफजल और फतहउल्ला तो कोषोंकी सहायता लेनेके लिये उस चिट्ठीको साथ ले जाने लगे, परन्तु खानखाना वहीं दीपकके पास जाकर पढ़ने लगे और साथ साथ तरजुमा भी करते गये।

फारसी भाषामें आज भी उनकी बनायी हुई एक पुस्तक मौजूद है अर्थात बाबर बादशाहने जो अपने वृत्तान्त तुरकी भाषामें लिखे थे उनका तरजुमा अकबरके कहनेसे खानखानाने फारसीमें किया है जो बहुत सरल और सरस है।

खानखानाका फारसी दीवान अर्थात फारसी भाषाकी कविताका संग्रह तैयार करना मूल ग्रन्थमें तो लिखा है परन्तु वह कहीं

देखा नहीं गया। खानखानाके और जगह जगह बहुत पाये जाते हैं। बहुधा ऐसा होता था कि खानखाना कोई समस्या देते थे और सब दरबार उसकी पूर्ति करता था जिसमें नजीरी, उरफी और शकेबी जैसे कवियोंके सामने सफलता होना ; कठिन काम था। तो भी हम देखते हैं कि ऐसे दंगलमें खेत खानखाना होके हाथ रहता था।

मूलग्रन्थमें तुरकी कविता भी लिखी है परन्तु हम उसको नहीं समझ सकते।

ग्रन्थकर्त्ताने यह भी लिखा है कि खानखानाने जितनी कविता फारसी भाषामें की थी उससे कई गुनी अधिक हिन्दीमें की है। परन्तु उसकी खोज कौन लगावे ? और एक अचम्भेकी बात यह भी है कि खानखानाने युरोपकी बोलिया भी सीख ली थीं और इनकी आवश्यकता यों हुई थी कि अकबरका युरोपियन बादशाहसे पत्र व्यवहार रहा करता था इसीलिये उसने खानखानाको युरोपीय भाषा सीखनेकी आज्ञा दी थी। ग्रन्थकर्त्ता लिखता है कि बहुतेरे टापू ईसाइयोंके अधिकारमें है और अफरजाके (फ्रांसके) बादशाहोंका और हिन्दुस्थानके बादशाहोंमें पत्रव्यवहार बहुत होता है इसलिये अकबर बादशाहने अपने इस सेनापतिको (खानखानाको) ईसाइयोंकी बोली सीखने और उनके अक्षर पढ़नेका हुक्म दिया। इन्होंने इस जातिके मुख्य मुख्य व्यक्तियोंसे जो बादशाही दरबारमें थे और व्यापारियों तथा मुसाफिरोंसे थोड़ासा मेल जोल करके उनके अक्षरों और भाषाओंमें ऐसा अभ्यास कर लिया कि अब उनसे बढ़कर जानने लगे हैं।

खानखानाका सब भाषा जानना इतिहास वेत्ताओंने भी स्वीकार किया है। मआसिरुलउमरामें लिखा है कि वह पृथ्वीकी बहुतेरी प्रचलित भाषाओंमें बात चीत कर सकते थे।

पुस्तकालय।

खानखानाकी विद्या सम्बन्धी उदारताओंका प्रमाण स्वरूप

उसका पुस्तकालय था जिसमें विद्याके इतने बहुत भण्डार रक्खे गये थे कि वह स्वयं एकाडिमी वा विश्वविद्यालयका काम देता था। इसमें बड़े बड़े विद्वान बड़े बड़े सुलेखक और बड़े बड़े चित्रकार काम करते थे और खानखानाकी उदारतासे उदर पूर्ण करते थे।

मोलवियोंमें बहराइचका रहनेवाला शेख मुहम्मदनाम भी था जिसका बाप भाषाका प्रसिद्ध कवि था और कवितामें अपना नाम ब्रह्मो धरता था। चित्रकारोंमें माधव नाम एक हिन्दू बड़ा बड़े ही अद्भुत चित्र बनाता और चित्राम करता था। पुस्तकालयमें बहुधा पुस्तकें उसीके हाथकी बनाई हुई और संवारी हुई थीं।

कवि।

अबुलफजलने जो बादशाही दरबारके कवि लिखे हैं उनमें बहुधा खानखानाके पाले हुए थे। अबुलफजलसे बढ कर उस समयके फारसी कवियोंके वृत्तान्त खानखानाकी जीवनीके ग्रन्थमें मिलते हैं उरफी नजीरी और शकबी वगैरा कवियोंने अकबर जहांगीर और शाहजादे मुरादको प्रशंसामें भी कविता की है। परन्तु उससे बढी चढी कविता खानखानाकी प्रशंसाकी इन्हीं कवियोंकी बनाई हुई देखी जाती है। जिसका कारण खानखानाकी उच्च उदारता और काव्य रहस्यको समझना था। शेखफजी बादशाहका सभासद और कृपा पात्र होनेसे खानखानाके बराबर था और इसी कारण उसने उरफी वगैर: शाइरोंकी भांति किसी बादशाही अमीरकी प्रशंसा नहीं कही है तो भी उसे कहना पडा कि खानखानाकी उदारताने चित्तको प्रफुल्लित कर दिया क्योंकि उसको शाइरी पर भरोसा था इसलिये वह प्रशंसा करनेसे पहिले ही इनाम दे देता था।

खानखानाकी उदारताके चरचे अरब और ईरान तक फैल गये थे शकेबी असफहानी, जब हज करनेको मक्के जाता हुआ अदनमें पहुंचा तो उसने बच्चोंको गीत गाते हुए सुना कि

खानखाना भाया जिसके प्रतापसे क्वारी कन्याओंने पति पाये व्यापारियोंने माल बेचे बादल बरसे जल थल भर गये।

खरबूजा।

ग्रन्थ कर्त्ताने लिखा है कि पहिले खरबूजा नही होता था। सबसे पहिले खानखानाने ईरान और खुरासानसे बीज मंगवाकर गुजरातके गांव बलकावाडेमें बुवाये २।३ वर्षमें ही ऐसे अच्छे खरबूजे निपजने लगे जो वलायतकी बराबरी करते थे।

हम्माम।

हम्माम भी सबसे पहिले गुजरातमें खानखानाने मुहम्मद अली खिलावटसे बनवाया और सब लोगोंके नहानेके लिये दे दिया उस समयसे हम्माम सब जगह बनने लगी है।

जहाज।

खानखानाने ३ जहाज इस अभिप्रायसे बनाये थे कि हजके दिनोंमें गरीब हाजी उनमें बैठकर सेंतमेंत हज कर सकें।

अबरी और अवलका कागज।

जिल्द बंधीके कामोंके लिये अबरीका कागज खानखानाके कारीगरोंने नया निकाला था अवलका कागज तो पहिलेसे था परन्तु ७ रङ्गोंके अवस लेनेका कागज इन्हींके समयमें निकला था।

बाणविद्या।

बाणविद्यामें खानखाना इतने दक्ष थे कि जब गुजरातके बादशाह मुजफ्फर पर जय प्राप्त की थी तो एक दिन चौगानमें गेंद खेल रहे थे उस समय एक कव्वा उडा जाता था खानखानाने लगातार १२ तीर मारकर उसके आस पास तीरोंका चक्कर बांध दिया और १३वे तीरमें उसको मार गिराया।

एक बेर एक सिहके ललाटमें ऐसा तीर मारा जो इधरसे उधर तक निकल गया।

व्यायाम।

व्यायाममें भी खानखाना विचित्र कौशल करना जानते थे। वह एक कपड़ा ४ आदमियोंको पकड़ा देते थे जो चारों कोनोंको तानकर खेंच खड़े रहते थे और आप दूरसे दौड़ते दौड़ते उस कमान पर पांव रखते हुए इस सफाईसे निकल जाते कि कपडेको जरा झोल नहीं आती।

सज्जनता

खानखाना इतना ऐश्वर्य्यता पाकर भी बहुत नम्र स्वभावके सज्जन थे। जब उनको खानखानाकी पदवी मिली थी तो कई उपदेश एक पत्रपर लिखकर नौकरोंको दे दिये थे वे जब उनको किसी बात वा किसी मनुष्य पर क्रोध करते देखते तो पत्र आगे कर देते जिसके देखते ही खानखाना ठण्डे हो जाते थे।

एक बार पांवमें घाव पड जानेसे बहुत दिनो तक कचहरी नही कर सके थे एक दिन किसी कामके लिये बाहर निकले तो भीड हो जानेसे एक नौकरका पांव उनके घाव पर पड गया जिससे घाव फट गया दरबारी लोग नौकरको ताडना करने लगे खानखानाने यह कहकर उनको रोक दिया कि इसका क्या अपराध है? होनेवाली बात थी।

सम्पूर्ण।

वालेसका जीवनचरित ।

कुँनीराम बांठियाकी पुस्तकें

॥ श्रीः ॥

स्काटलेण्डके इतिहासयुक्त

स्काटलेन्ड-रवि

वालेसका जीवनचरित।

अनुवादक—

महावीरप्रसाद।

कलकत्ता।

९७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट, भारतमित्र प्रेसमें

पण्डित क्षपानन्द शर्म्मा द्वारा

मुद्रित और प्रकाशित।

संवत् १९६३।



सर विलियम वालेस।

विज्ञप्ति।

२०—२२ वर्ष हुए बाबू योगेन्द्रनाथ विद्याभूषण एम० ए० ने बङ्गभाषामें सर विलियम वालेसकी जीवनी लिखी थी। यह पुस्तक उसीका अनुवाद है। बाबू योगेन्द्रनाथ बङ्गभाषाके एक तेजस्वी लेखक थे। उन्होंने बङ्गदर्शनके ढङ्ग पर आर्य्यदर्शन नामका एक मासिकपत्र निकालकर कई वर्ष तक बडी योग्यतासें चलाया था। आर्य्यदर्शनके लेख पाण्डित्यपूर्ण होते थे। योगेन्द्र बाबू स्वाधीन प्रकृति और सच्चे देशहितैषी थे। उनके बनाये ग्रन्थ और उक्त मासिकपत्र इस बातके साक्षी हैं। वह कई उत्तम उत्तम पुस्तकें लिख गये हैं जिनमें सर जान ष्टुआर्टमिलकी जीवनी, मेजिनीकी जीवनी (अपूर्ण), गेरीवाल्डीकी जीवनी, वालेसकी जीवनी, आत्मोत्सर्ग और हृदयोच्छ्वास मुख्य हैं। गेरीवाल्डीकी जीवनीका मराठी भाषामें :अनुवाद हुआ है। मैं महाबली वालेसकी जीवनीका अनुवाद करके हिन्दी पाठकोंकी सेवामें अर्पण करता हूं।

कलकत्ता
फाल्गुन शुक्ल ७ संवत् १९६३ वि०।

महावीरप्रसाद।

मुखबन्ध।

आत्मोत्सर्गका फड़कता हुआ दृष्टान्त वीर चूड़ामणि वालेस है। मेजिनी और गैरीवाल्डीने जिस तरह केवल स्वदेशोद्धारके व्रतमें जीवन आहुति दे दी वालेसने भी वैसेही केवल एकही चिन्तामें और एकही काममें जीवन समर्पण कर दिया था। दुर्दमनीय अङ्ग-रेजोंके अत्याचारसे जन्मभूमि स्काटलैण्डका उद्धार करनेमेंही उसका सब शारीरिक और मानसिकबल खर्च हुआ था। उसका शारीरिक और मानसिक बल भी अपरम्पार था। वह भीमके समान बली था। एक वस्तुमें दो गुण बहुधा नहीं पाये जाते। वह आलस्य और भयका नाम नहीं जानता था। उसने अकेले जो जो काम किये हैं वह आज कलके लोगोंको बड़े आश्चर्य्यमें डालनेवाले हैं। वह गैरी-वाल्डीकी भांति निष्काम कर्म्म योगी था। जन्मभूमिका उद्धार करनेके सिवा उसने अपनी उस अलौकिक वीरता और बुद्धिमानीसे और किसी फलकी इच्छा नहीं की। वह चाहता तो स्काटलैण्डका शासनदण्ड चिरकालके लिये अपने हाथमें रख सकता किन्तु यह उसका इरादा नहीं था। वह स्वजातिका अवैतनिक और स्वेच्छा-प्रवृत्त सेवक बन कर उसके लिये प्राण देनेको बराबर तय्यार था। इसीलिये जब उसने देखा कि उसकी हुकूमत स्काटलैण्डके तालुके-दारोंको असह्य होगई तब अकारण देशमें भीतरी लड़ाईकी आग न भड़का कर वह जातीय उद्धारका कार्य्य उनको सौंप कुछ दिनके लिये फ्रांस चलागया। किन्तु उसकी गैरहाजिरीमें स्काटलैण्डका सौ-भाग्य सूर्य्य फिर अस्ताचल पर पहुंचनेको हुआ। उसने अङ्गरेजोंको बार बार पराजित करके स्काटलैण्डसे भगाया था, यहां तक कि एक बार उसकी दिग्विजयिनी सेना लन्दनके तोरण द्वारतक पहुंची और इङ्गलैण्डकी महारानीको आकर उससे शान्ति की भीख

मांगनी पड़ी थी। गर्वित इङ्गलेण्डने इससे बढ़ कर अपमान और कभी सहा था कि नहीं इसमें सन्देह है। किन्तु साहसी एडवर्ड किसी तरह पीछे पांव देनेवाले नहीं थे। वह जितनी बार हारते थे उतनीही बार लड़नेको तय्यार होते थे। पराजयके गुरुत्वके अनुसार उनके आयोजनका गुरुत्व नियमित होता था। ऐसा अध्यवसाय ऐसी मुस्तैदीही अंगरेजोंकी सफलताकी जड़ है।

सर विलियम वालेस जब फ्रांस चला गया तब एडवर्डने स्काटलेण्डको फिर तबाह कर डाला। स्काटलेण्डके तालुकेदार एक एक करके उनकी अधीनता स्वीकार करने लगे। फिर ब्रिटिश सिंहकी पताका स्काटिश किलों पर फहराने लगी। स्काटिश जातीय दलने वालेससे स्वदेशमें लौट आनेकी प्रार्थना की। वालेसने पहले जातीय आह्वान पर कान नहीं किया। जातीय दूत उदास होकर लौट आया। किन्तु उसका वह मान स्वदेशानुरागकी आगमें शीघ्रही भस्म होगया। वह स्वदेशकी दुर्गतिकी खबर पाकर बहुत दिन निश्चिन्त न रह सका। बहुत जल्द स्काटिश देश के किनारे आपहुंचा। इतनेमें वालेसके आनेका समाचार एडवर्डके कानों तक पहुंचा। एडवर्ड बार बार विफल मनोरथ हुएथे इससे फिर उन्होंने वालेससे सम्मुख संग्राममें खड़े होनेका साहस नहीं किया। वीरतासे जो बात न बनी विश्वासघातसे उसको पूरा करने पर आमादा हुए।

एडवर्डने वालेसके नौकरको सोना देकर खरीद लिया। वालेस जब सोया हुआ था उस समय उसके नमकहराम नौकरने उसको पकड़वा दिया। वालेसके आनेकी खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैली भी न थी कि यह घृणित कार्य्य होगया। व्याध सोये हुए सिंहको जैसे जालमें फंसाता है वैसेही अंगरेज उसको सोये हुएही घोड़ेकी पीठमें बांध कर ताबड़तोड़ लन्दनकी तरफ ले भागे। सवेरे जातीय दलने जब समाचार पाया तब तक वालेस बहुत दूर चला गया था। हाथ पांव बांध कर वालेस लन्दन टावरके कारागारमें फेंका गया।

अङ्गरेज जजोंके विलक्षण विचारसे वालेस राजद्रोही समझा गया। एडवर्डकी आज्ञासे उसकी देह टुकडे टुकडे करके चारोंओर फेंकी गई। स्वाधीनता देवी खूनकी बडी प्यासी है। जो जाति उसके चरणोंमें आत्मबलि दे सकती है जो जाति उसके मन्दिरके सामने देशके श्रेष्ठ मनुष्योंको बलि दे सकती है वह उसी जाति पर प्रसन्न होती है। इसीसे आज वालेसने स्वजातिके उद्धारके लिये उस दुराराध्या स्वाधीनता देवीके मन्दिरके सामने आत्म-बलि दी। उसकी वीरतासे जो काम नहीं हुआ वह उसकी आत्म-बलिसे होगया। स्वाधीनता देवी स्काटलेण्डके प्राणके प्राण वालेसका खून पीकर बहुत सन्तुष्ट हुई। वेनक वरनकी रणभूमिमें ब्रूसने आसानीसे जय पाकर अनन्तकालके लिये स्काटलेण्डमें स्वाधीनता देवीको प्रतिष्ठित किया। उक्त ब्रूसकी पीढी दरपीढी स्काट-लेण्डके सिंहासन पर बैठी थी। अन्तमें एलिजाबेथकी मृत्यु होने पर स्काटलेण्डके राजा छठे जेम्स प्रथम जेम्सके नामसे इङ्ग-लेण्ड और स्काटलेण्डके संयुक्त सिंहासन पर बैठे। अतएव एक तरहसे इङ्गलेण्डकोही स्काटिश राजवंशकी अधीनता स्वीकार करना पडी। वालेसकी वैसी निठुर हत्याका इससे बढ कर उत्तम प्रायश्चित और क्या हो सकता है?

इसलिये जिस महापुरुषके रक्तसे अनन्तकालके लिये स्काटलेण्डमें स्वाधीनताकी प्रतिष्ठा हुई उस महापुरुषकी कीर्त्ति कहना सुनना या पढ़ना हरेक स्वदेशानुरागी व्यक्तिका कर्त्तव्य है। इसी विचारसे आज हमने उस महापुरुषकी कीर्त्ति यथाशक्ति वर्णनकी है, अब स्वदेशानुरागी व्यक्तिमात्र उसे सुनें और पढें तो हम अपना परि-श्रम सार्थक समझेंगे। जो महात्मा हैं उनकी जीवनी सब देशके लोगोंके लिये शिक्षाप्रद है। जातिगत विद्वेषके कारण जो लोग ऐसी अनमोल शिक्षाकी उपेक्षा करते हैं वह बहुत भूलते हैं।

श्रीयोगेन्द्रनाथ बन्द्योपाध्याय।

कार्त्तिक १२९३ (फस्ली)

अवतरणिका ।



सन् १०६६ ईस्वीमें विजयी विलियम द्वारा इङ्गलेण्ड विजित होने पर, इङ्गलेण्ड और स्काटलेण्डमें बड़ा भारी गदर मचा। जबर-दस्त साक्सन तालुकेदारोंने विलियमके असह्य प्रतापसे व्याकुल हो फोर्थ पार होकर स्काटलेण्डकी उपत्यकामें शरणली। यहां तक कि विलियमके सहयायी नार्मन जागीरदार भी उसकी मनमानी चालसे नाराज होकर साक्सन सामन्तोंकी देखा देखी स्काटलेण्डके पहाड़ी प्रदेशोंमें जावसे। इनके जानेसे स्काटलेण्डमें एक विशेष परिवर्त्तन होने लगा। इंगलेण्डकी तरह स्काच अदालतोंमें भी फरासीसी भाषा घुसी। इससे यद्यपि जातीय भाषाकी असलीयतमें कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ तथापि जातीय जीवनको विशेष हानि हुई थी। क्योंकि जातीय भाषाका अनादर होनेसेही जातीय जीवन सङ्कीर्ण हो जाता है। जिस समय स्काटलेण्डके भाग्यचक्रमें यह सब फेर बदल होरहा था उस समय स्काच् सिंहासन पर माल-काम् केनमोर, प्रथम अलकजेण्डर और प्रथम डेविड नामक तीन नृपति क्रमसे विराजमान थे।

किन्तु विदेशी भाषाके घुसनेसे जातीय भाषाका अनादर और उससे जातीय जीवनमें सङ्कीर्णता होने पर भी कुछ जबरदस्त नार्मन सामन्तोंको आश्रय देकर स्काच् राजाओंने उस समय मानो बड़े राजनीतिज्ञका काम किया। क्योंकि उस समय दो फायदे हुए थे एक तो प्रतापी नये राजाका बल घटा, दूसरे स्वराज्यका जोर बढ़ा। विशेष कर नार्मन सरदार, वीर भूमि युरोपके मैदानमें जो युद्ध कौशल और वीरधर्म्म सीख आये थे स्काटलेण्डमें उसका प्रचार करके उन्होंने वहांकी भविष्यकीर्त्तिकी नीव डाली।

सन् ११५३ ईस्वीमें डेविडकी मृत्यु हुई। उस समयसे दूसरे अल-कजेण्डरके शासनकाल तक कुछ कम सौ साल स्काटलेण्डमें बराबर शान्ति रही। इतने दिन स्काटलेण्डके भाग्याकाशमें प्रचण्ड सौभाग्य

सूर्य्यका उदय रहा। तिजारत सौदागरी और खेतीकी खूब उन्नति होनेसे स्काटलेण्ड बडा धनवान होगया। धनके साथ साथ उसका बल भी इतना बढ गया था कि सन् १२४४ ईस्वीमें दूसरा अलक-जेण्डर एक लाख पैदल और तीन हजार सवार लेकर स्काटलेण्डपर चढ आनेवाले तीसरे हेनरीका सामना करनेको इङ्गलेण्डकी सीमा पर जा पहुंचा। हेनरी इस सेना समुद्रमें कूदनेका साहस न कर सका और सन्धि करके धोखेसे राजधानीको लौट गया।

तीसरे अलकजेण्डरके समय स्काटलेण्डका सौभाग्यरवि सबसे ऊंचे स्थान पर पहुंच गया। इस राजाने खेतीकी ओर बहुत ध्यान दिया। इससे उसका खजाना धनधान्यसे परिपूर्ण होगया और उसकी प्रजा बहुत धनी होगई। उसकी एक बडी सेनाने सन् १२६३ ईस्वीमें विख्यात लार्गसकी लडाईमें गर्वित नार्मनोंके छक्के छुडाये। इस लडाईमें इसने ऐसी बहादुरी दिखाई थी कि शत्रुओंको भी उसकी प्रशंसा करनी पडी। गुणग्राही तीसरे हेनरीने तीसरे अलक-जेण्डरकी वीरता पर प्रसन्न होकर अपनी बडी लडकी राजकुमारी मार्गेरेट उसे व्याह दी। कुछ दिन इङ्गलेण्ड और स्काटलेण्ड अपनी पुरानी शत्रुता भूल गये। इङ्गलेण्ड इस समय स्काटलेण्डका यहां तक मुहताज था कि १२६४ ईस्वीमें जब अर्ल ग्लास्टर और दूसरे वैरनोंने लण्डन टावर घेर लिया तब हेनरी (तीसरे) और युवराज एडवर्ड (प्रथम) को अपनी जान बचानेके लिये अलकजेण्डर (तीसरे) की शरण लेनी पडी। अलकजेण्डरने ससुर और सालेकी मददमें तीस हजार सेना भेजी। हेनरीने उसीकी मददसे बागी वैरनोंको दबा कर इङ्गलेण्डमें शान्ति फैलाई।

हेनरीने दामादको इङ्गलेण्डके जागीरदारोंमें शामिल करना चाहा था किन्तु किसी तरह कर न सका। उसने दामादको विवाहके दहेजमें इङ्गलेण्डमें कुछ जमीन दी। इस जमीनके लिये अलकजेण्डरको आमदरबारमें कभी कभी ससुरके सामने कोर्निश करना और घुटना टेक कर बैठना पड़ता था। एक बार एक

उत्सवमें हेनरीने दामादको स्काटलेण्डके लिये भी सिर नवाने और घुटना टेकनेका खुल्लमखुल्ला हुक्म दिया। स्काटराज यह बात सुनतेही क्रोधसे कांप उठा उसने बड़ी नफरतके साथ हेनरीका प्रस्ताव अस्वीकार किया। अलकजेण्डरके सौभाग्यसे उसके जागीर-दार परस्पर मिल कर रहते थे और उसके बड़े अनुरक्त थे। इसलिये इंगलेण्डका यह अनुचित प्रस्ताव घृणा सहित कुचल डालनेमें वह जरा भी न डरा।

किन्तु विधाताने स्काटलेण्डको यह सुख बहुत दिन तक नहीं दिया। १२८५ ईस्वीमें उसका सुखसूर्य्य अस्त होगया। उस वर्ष तीसरे अलकजेण्डरकी और उसके थोड़ेही दिन बाद एक मात्र उत्तराधिकारिणी उसकी पोती नारवेकुमारीकी मृत्यु होजानेसे स्काटलेण्डका सिंहासन उत्तराधिकारी बिना शून्य होगया। इस दुर्घटनाके समय आपसकी भयानक फूटसे स्काचोंकी छाती कूटी जाने लगी।

स्काटराज प्रथम डेविडके छोटे पुत्र हन्टिंग्डनके अर्ल डेविडकी तीन लड़कियोंके क्रमसे जान बेलियल्, राबर्ट ब्रूस और जान हेस्टि-ङ्गस नामक तीन उत्तराधिकारी थे। यह तीनों अब शून्य स्काच् सिंहासनके दावेदार होकर रङ्गभूमिमें खड़े हुए।

इस भीतरी फसादके समय ६ प्रधान स्काच् स्काटलेण्डके राज प्रतिनिधि बनाये गये। ग्लासकोके प्रधान पुरोहित राबर्ट, जान किउमिन, स्काटलेण्डके प्रधान खजाञ्ची जान्, फाइफके अर्ल मेकडफ बुकानके अर्ल जान किउमिन और सेन्ट एण्डरूजके प्रधान पुरोहित विलियम फ्रेजरके हाथमें स्काटलेण्डका शासन भार सौंपा गया। इसके बाद दो वर्ष तक स्काटलेण्ड घराऊ झगड़ोंसे कमजोर होता रहा। समस्त स्काटलेण्ड इस समय दो भागमें बट गया तब बेलि-यल और ब्रूस उसके हकदार खड़े हुए।

स्काटलेण्डके दुर्भाग्यसे बुरी साइतमें हकदार इस विषयके फैसलेके लिये हेनरीके पुत्र इंगलेण्ड नरेश प्रथम एडवर्डको

शरणमें गये। एडवर्ड इस शर्त पर पञ्चायत करनेको राजी हुए कि इसके बाद स्काटराजको इंगलेण्ड नरेशकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ेगी। उन्होंने पुरानी ऐतिहासिक घटनासे अपना यह हक़ साबित किया।

स्काट राज विलियमने ११७४ ईस्वीमें जब इङ्गलेण्ड पर आक्रमण किया तब वह चारसौ सवारों सहित यार्क शायरके बैरनों द्वारा पकड़े गये। उन्हें और उनकी सेनाको छुड़ानेके लिये स्काच् बैरनोंने हेनरीसे यह सन्धि की कि विलियम कैदसे छूटने पर इङ्गलेण्डके जागीरदार बन कर स्काटलेण्डमें राज्य करेंगे। विलियम अपने बैरनोंकी यह शर्त माननेको लाचार हुए। पीछे ११८९ ईस्वीमें हेनरीके मरने पर सिंह हृदय रिचार्ड इङ्गलेण्डके सिंहासन पर बैठे। उन्होंने पवित्र तीर्थ स्थान जेरूजेलमकी यात्रा करते समय विलियम सिंहको रक्सबरा और बारविकके किले (विलियमने सन्धिकी जमानतके तौर पर यह दोनों किले इङ्गलेण्ड नरेशको देरखे थे) लौटा दिये और उन्हें सब तरहकी अधीनतासे बरी कर दिया। इसके बदलेमें विलियम सिंहने १ लाख रुपये दिये। रिचार्ड और विलियमकी इसी सन्धिसेही इस विषयका आखिरी फैसला हो गया था। इसलिये उस पुराने टूटे हुए स्वत्व पर यह नया दावा खड़ा करना एडवर्डके लिये न्यायसे बिलकुल रहित था इसमें सन्देह नहीं।

किन्तु ऐसा दावा अनुचित और न्याय-रहित जान कर भी सिंहासनके भिखारी बेलियल और ब्रूस एडवर्डके प्रस्ताव पर राजी हुए। अब स्काटलेण्डका भाग्य फूटा।

बेलियल और ब्रूसने स्काटलेण्डके सिंहासनके लिये स्काटलेण्डकी स्वाधीनता एडवर्डके चरणोंमें डालदी परन्तु उन्होंने स्काटिश पार्लीमेन्टकी राय लेकर यह काम नहीं किया। इससे वह दोनों एडवर्डकी जिस शर्तमें बांधेगये स्काच् जाति उसमें नहीं बन्धी। अतएव एडवर्डने जब बेलियलके पक्षमें अपनी राय जाहिर करके स्काट-

लेण्डको अपना करद राज्य बनाना चाहा तब स्काटिश पार्लीमेण्ट किसी तरह राजी नहीं हुई।

एडवर्डका फैसला सबके मानने योग्य न होने पर भी प्रचलित नियमानुसार ठीक हुआ था। क्योंकि बेलियल अर्ल डेविडकी बड़ी लड़कीका परपोता और ब्रूस छोटी लड़कीका पोता था। लोगोंके ख्यालसे ब्रूस अधिक नजदीकी था इसलिये उसके मौजूद रहते दूरका उत्तराधिकारी बेलियल स्काटिश सिंहासनका अधिकारी नहीं हो सकता था। किन्तु प्रचलित ज्येष्ठाधिकारवाले नियमके अनुसार जेठी लड़कीका उत्तराधिकारी मौजूद रहते छोटी लड़कीका कोई उत्तराधिकारी हकदार नहीं समझा जा सकता। इससे एड-वर्डका फैसला प्रचलित रिवाजके अनुसार था इसमें सन्देह नहीं।

किन्तु दूसरे अलकजेण्डरके समयमें ब्रूस उत्तराधिकारी स्वीकृत होचुका था और वह स्काटलेण्डके अधिक लोगोंके मन मुआफिक भी था इससे एडवर्डने पहले ब्रूसकोही स्काटिश सिंहा-सन देनेका प्रस्ताव किया। परन्तु ब्रूसने उनके सब नियम स्वीकार नहीं किये इससे वह प्रस्ताव खारिज हुआ। एडवर्डने अब लाचार होकर बेलियलका पक्ष लिया। १२९३ में बेलियल प्रथम एडवर्ड की अधीनतामें स्काट-सिंहासन पर बैठे। इधर मालकम केनमोर के समयसे स्काटिश-राजवृन्द जिस राजनीति पर चले आते थे, जिस से इस समय स्काटलेण्डका भला हुआ था धीरे धीरे उसका परि-णाम बुरा हुआ। उन लोगोंने जिन नार्मन बैरनोंको आश्रय देकर बड़ी बड़ी जमींदारियां और राज्यके सब ऊंचे ऊंचे पद देरखे थे वह अभीसे स्काट-सिंहासनकी तरफसे लापरवाही दिखाने लगे। उन विदेशी बैरनोंने अब देखा कि स्काटलेण्डसे इंगलेण्डकी भविष्य में मुठभेड़ अटल है उसमें स्काटलेंडका सिंहासन इंगलेण्डके नरेशके हाथमें जाय चाहे स्काटराजके हाथमें रहे उनका कुछ नफा नुक-सान नहीं है। जबतक उनकी जमीन पर कोई हाथ न डालेगा तबतक उन्हें किसीसे उज्र नहीं है। बल्कि जबरदस्त इंगलेण्ड नरेशका पक्ष लेना उनके लिये और अच्छा है। फिर स्काटराज

इंगलेण्डेश्वरका अधीन राजा हो तो है। इस लिये जबरदस्तका साथ देनेमें कमजोरकी तरफसे कुछ खटका नहीं बल्कि उसके विरुद्ध चलनेमें भारी डर है। स्काट लोगोंके साथ उनका कुछ जातीय सम्बन्ध नहीं था इसलिये जातीय मर्यादा रखने की भी उन्हें कुछ परवा न थी। बल्कि इंगलेण्डनरेश और इंगलेण्डवासी नार्मनों से खूनका सम्बन्ध होनेसे स्वय उधर उनके हृदयका आकर्षण था। जब स्मरण होता है कि स्काटलेण्डकी सब बड़ी बड़ी जमींदारियां विदेशी नार्मनोंके हाथमें थीं, राज्यके सब ऊंचे ऊंचे पदों पर वही थे तो हमारे मनमें यह विस्मय होता है कि क्योंकर स्काटिश जातीय दल इस दुर्लंघ्य घटनाओंको लांघकर जातीय जीवनको विध्वंस करनेवाली इन विघ्न बाधाओंको पारकर राखमें छिपी हुई चिनगारीकी भांति स्वाधीनतासमरमें आखड़ा हुआ।

स्काटलेण्डके नार्मनोंने जैसा सोचा था वैसाही हुआ। बहुत जल्द एडवर्डसे वेलियलकी रगड़ शुरू होगई। इस रगड़में उक्त नार्मन वैरन एडवर्डकी ओर जातीयदल वेलियलकी तरफ खड़ा हुआ। हम आज जिस प्रातःस्मरणीयचरित महात्माकी जीवनी लिखना चाहते हैं वही इस जातीय दल संगठका, नायक और एक मात्र बल था। अगर कभी किसीने निःस्वार्थ भावसे जातीय उद्धारके व्रतमें जीवन उत्सर्ग किया है, अगर कभी किसीने स्वजातिके हितार्थ जातीय भाग्यदेवताकी तृप्तिके लिये शरीरका रक्त बूंद बूंद करके दिया है, अगर कभी किसीने स्वजाति और स्वदेशकी चिन्ता जन्मभर की है, अगर किसीने कभी सोते समय भी स्वजाति और स्वदेशका स्वप्न देखा है, अगर किसीने कभी स्वजातिके उद्धारके लिये शरीरके टुकड़े टुकड़े करके दसों दिशाओंमें फिकवाया है तो **सर विलियम वालेस** ने।

आज हम उस पूज्य नरदेवके आगे और जो स्काटलेण्ड उसकी जन्मभूमि है उसके आगे भी सिर नवाते हैं। कविवर बार्नसने सच कहा है कि ऐसा स्काटिश हृदय नहीं कि जिसका गर्म खून वालेसके नाम पर न उबल उठे।* हम यह भी कहते हैं कि ऐसा स्वजाति प्रेमी मनुष्य नहीं, वालेसकी कहानीसे जिसका कलेजा न फटने लगे, वालेसके नामपर जिसका हृदय भक्तिरससे न उमड़ उठे।

* "At Wallace's name what Scottish blood,
But boils up in a spring-tide flood?"

॥ श्री. ॥

स्काटलेण्डके इतिहासयुक्त

वीरवर वालेसका जीवनचरित ।

पहला अध्याय ।

स्काटलेण्ड और इगलेण्डकी उस समयकी भीतरी अवस्था ।

युरोपके दूसरे राज्योंकी तरह स्काटलेण्ड और इगलेण्डमें भी उस समय सामन्त तान्त्रिक प्रथा जारी थी। सामन्त यानी जागीरदार लोग प्राय: सब विषयोंमें स्वतन्त्र थे, सिर्फ युद्धके समय उन्हें धन और सेनासे राजाकी सहायता करनी पडती थी उनको एक तरहसे छोटे छोटे राजा भी कह सकते थे। यह सामन्त तान्त्रिक प्रथा पहले भारतवर्षमें भी जारी थी। भारतवर्षमें एक एक समय एक एक प्रतापी राजा सम्राट तो होता था किन्तु उसके अधीनस्थ राजा लोग उसको कुछ नजर देकर और बादशाह मान करकेही छुट्टी पाजाते थे। वह अपने राज्यके भीतर सब विषयोंमें स्वाधीन होते थे। विजयी सम्राट अगर किसी पर चढाई करता या शत्रु उस पर चढाई करता तो जागीरदार रुपये और सेनासे प्रभुकी मदद करते थे, किन्तु प्रभुको विपदमें फसा देखतेही वह अकड जाते और हरेक अपनेको स्वतन्त्र बनानेकी कोशिश करता। इस लिये जब जब जातीय एकताकी ज्यादा जरूरत पडती तबही तब जातीय भीतरी गदर खडा होजाता था। नतीजा यह होता कि जातीय पराजय और जातीय पतन होता था। इसी कारण

भारत-गौरव रवि पृथिवीराजका और उनके साथही भारतका भी पतन हुआ। उसी एक कारणसे स्काटलेण्डका पतन हुआ, उसी एक कारणसे हेनरी और उनके वीर पुत्र एडवर्डको कदम कदम पर अटकना और हारना पड़ा था। किसान और मजदूर और उनकी भूमि सामतोंके अधीन होनेसे वह लोग जब चाहते तभी राजाको मुट्ठीमें कर सकते थे। किन्तु इगलेण्डमें इस तकरारसे मेवा फला। वहां इस राजा और सामतों के झगडेसेही प्रजातन्त्र शासनप्रणालीकी उत्पत्ति हुई। पर भारत और स्काटलेण्डमें इससे जातीय पतन हुआ।

सन् १०६६ ई० में विजयी विलियमके इगलेण्ड जीतनेके बाद करीब अढाई सदी तक साक्सन सामत और पुरोहित लोग जमीन लेकर बराबर नार्मन राजाओंसे लडते रहे। वह राज्यकी विकट लालसासे दो सदी तक वेल्स आयर्लेण्ड और स्काटलेण्ड आदि पडोसी राज्योंको इगलेण्डमें मिलानेकी कोशिशमें लगे रहे। इससे उन्हें धन और सेनाकी बडी जरूरत पडी। तब आये हुए जागीरदारोंने धन और सेना देनेसे इनकार किया तो नार्मन राजा इनकी जमीन पर हाथ बढानेको मुस्तैद हो गये।

किन्तु किसान और मजदूर जो उस समयकी जातीय सेनाकी अद्वितीय सामग्रीये, सामतोंके अधिकार में थे इससे इगलेड नरेश उनको काबूमें न करसके। अतमें उन्होंने अपनी भूल समझी। देखा कि घरमें झगडे लगे रहनेसे बाहर विजय नही पासकते यह सब सोचकर इगलेण्डेश्वर जानने १२१५ ईस्वीमें इगलेण्डको प्रजाको महत स्वत्वपत्र यानी मेगनाचार्टा प्रदान किया। यह पत्रही इगलेंडकी सर्वसाधारण प्रजाकी व्यक्तिगत स्वाधीनता की जड है। यह मेगनाचार्टा पाकर साक्सन सरदार खुशीसे राजाके अनुगामी हुए। किन्तु तीसरे हेनरीने जानके सिंहासन पर बैठकर पिताका दिया हुआ स्वत्व प्रजासे छीन लेना चाहा। इसका परिणाम हम पहलेही बताचुके है कि वह और उसके पुत्र प्रथम एडवर्ड

लन्दन टावरमें कैद किये गये। उस समय हेनरीके दामाद स्काट-नरेश तीसरे अलक्जेण्डर अगर ससुर और सालेको छुड़ानेके लिये तीस हजार सेना न भेजते तो इङ्गलेण्डका इतिहास कैसा बनता कौन कह सकता है? हेनरी कमजोर मिजाजके थे इससे फिर उन्होंने प्रजासे झगड़नेका साहस नहीं किया। प्रजाकी सहानुभूति और सहायता बिना उनकी राज्य-लालसा मनकी मनहीमें रहगई। पीछे उनके पुत्र प्रबल प्रतापी एडवर्डने पिताकी गद्दीपर बैठतेही सबसे पहले वेल्सको अपने राज्यमें मिलाया और जल्दही आयर्लेण्डने भी उनकी अधीनता मानली। अब उनकी विजयपिपासू नेत्र स्काटलेण्ड पर पड़े। उनका खजाना भरा और विजयिनी सेना रणोन्मत्त थी इसलिये स्काटलेण्डको जीत लेना उन्होंने बहुत सहज समझा किन्तु ऐसा नहीं हुआ। फ्रांसदेशकी गिनी की खाड़ीमें एडवर्डका एकुइटन नामक एक छोटासा राज्य था। उसके लिये फ्रांस-राजके सामने उन्हें जागीरदारकी हैसियतसे सिर नवाना पड़ता था। इस समय फिलिप फ्रांसके सिंहासन पर थे। उन्हीं दिनों अङ्गरेजों और नार्मनोंके तिजारती जहाजोंमें फसाद उठने पर अङ्गरेज सौदागरोंने दिनेमारोंकी सहायतासे नार्मन जहाजोंको बड़ा नुकसान पहुंचाया। इसपर फिलिपने बिगड़ कर इसकी जवाबदेहीके लिये अपने सामन्त एडवर्डको फ्रांसीसी दरबारमें हाजिर होनेका हुक्म दिया। एडवर्डने यह हुक्म नहीं माना। फिलिपने एकुइटन जब्त कर लिया। मानी एडवर्डसे यह सहा नहीं गया उन्होंने फ्रांस पर चढ़ाई करनेके लिये बहुत सेना इकट्ठी की। वह चढ़ाई करनाही चाहते थे कि इतनेमें वेल्सने सिर उठाया। एडवर्ड उसी सेना सहित वेल्सपर चढ़ दौड़े और विद्रोही वेल्सवासियोंको अच्छी तरह हरा कर कड़ा दण्ड दिया। स्काटलेण्ड, वेल्स और गिनीमें लड़ाई छिड़ जानेसे एडवर्डका भरा खजाना खाली होगया। अब उन्होंने प्रजाका स्वत्व छीन कर उसकी मर्जीके खिलाफ भारी कर लगाया। पुरोहित, जागीरदार और सौदागर—सबने मिलकर

[२

एडवर्डका मुकाबला किया। पीछे सन् १२८७ ईस्वीमें वह जब सेना सहित फ्रान्सने लडनेके लिये कूच करने लगे तब अर्ल हियरफोर्ड और नार्फोक नामक दो प्रधान जागीरदार इंगलैण्डके बाहर जानेसे इनकार करके सेना सहित अपने अपने घर लौट आये। इसी तरह स्काटलैण्डको कूच करनेके समय भी उन्हें अपनी प्रजासे बार बार दबना पडा। यों उनका प्रचण्ड दर्प चूर्ण करके इंगलैण्डकी प्रजाने एक एकाकार अपने गये हुए सब स्वत्व फिर प्राप्त कर लिये। स्वत्व पाकर प्रजा अब खुशीसे उनका साथ देनेको तैयार हुई।

जब एडवर्डने फिलिपसे लडनेका विचार किया तब उन्होंने सामन्त-स्वामीकी हैसियतसे स्काट नरेश बेलियलको सेना सहित सहायताके लिये बुलाया। स्काट राज और उनकी प्रजाने तब अपनी दशा समझी। एडवर्डको बादशाह स्वीकार करना उन्होंने पहले केवल जबानी एकरार करना समझा था पर अब समझा कि एडवर्डकी दुर्दमनीय विद्वेष वृत्ति पूरी करनेके लिये उन्हें बीच बीचमें जातीय खून और जातीय धन खर्चना पडेगा। तब उन्हें भय हुआ। भयसे वह लोग फिर गये। स्काट नरेशने इतने दिन पर अपनी भूल समझी और समझ कर एडवर्डकी अधीनता छोड दी। इसका परिणाम हुआ इङ्गलैण्डसे भीषण संग्राम। इस जातीय स्वाधीनताके समरमें वालेस आदिका जातीय दल बेलियलका सहायक हुआ। वह इस अदम्य तेजसे इंगलैण्डका आक्रमण रोकने लगा कि अंतमें एडवर्डको अपनी प्यारी जागीर एकुइटनकी आशा छोड फिलिपसे सन्धि करके समूची सेना सहित स्काटलैण्ड पर चढाई करनी पडी। अगर डनबारके अर्लकासपैट्रिक जैसे स्काटलैण्डप्रवासी विश्वासघातक नार्मन जागीरदार धन और सेनासे एडवर्डकी सहायता न करते, अगर फालकर्कके युद्धमें जातीय दलमें सेनापतित्वको लेकर परस्पर फूट न फैलती, अगर मानटीथ वीरवर वालेसको एडवर्डके चरणोंमें न बेच देता तो आजके इतिहासमें न जाने क्या होता, तब स्काट-

लेण्डका भी जातीय जीवन लोप न होता। विश्वासघातकता! तेरी महिमा अपार है। तूने जयचन्द्र बन कर भारतका सिंहासन यवनोंको सौंपा। विभीषण बनकर लङ्का रामके हाथमें दी। मान-टीथ बन कर वालेसका शरीर एडवर्डके चरणोंमें वेचा। किउमिन और कामपेङ्किककी शकलमें स्वदेशकी स्वाधीनता विदेशियोंके चरणोंमें डाल दी। पिशाचि! तेरे लिये असाध्य कुछ नहीं है। तेरे आनेसे मनुष्य भीषण राक्षस बन जाता है। तब वह अपनाही खून आप पीता है अपनाही मांस आप खाता है। पिशाचि! इस जगतमें सब नाशवान हैं किन्तु क्या तेरा नाश नही?

दूसरा अध्याय।

वालेसके लडकपन और जवानीके अद्भुत कार्य्य।

वालेसने स्काटलेण्डके किसी पुराने जागीरदारके वंशमें जन्म लिया था। इतिहाससे इतना पता लगता है कि रिचार्ड वालेन्स या वालेस, वालेस वंशका आदि पुरुष था। आर्डिङ्ग नदीके किनारे किलमरनक नगरके निकट रिकार्टन नामक गावमें उसका किला था। वह गाव रिचार्ड टोन या रिचार्ड नगरके नामसे प्रसिद्ध हुआ। रिकार्टन रिचार्ड टोनका अपभ्रंश है। १२५९ ईस्वीमें एडम वालेस नामका उस वंशका एक आदमी एडम और मलकम नामक दो पुत्र छोड कर मर गया। एडम पैत्रिक जायदादका मालिक बन कर रिकार्टनके गढमें रहा। दूसरा पुत्र मलकम एलरस्ली किलेका मालिक हुआ। मलकमने आयर नगरके शेरिफ सर रोनाल्ड क्राफोर्डकी लडकी जेन क्राफोर्डसे विवाह किया। इसी विवाहका फल एलरस्लीका नाइट सुप्रसिद्ध सर विलियम वालेस था।

जेनके गर्भसे मलकमके तीन पुत्र हुए—सर मालकम वालेस सर विलियम वालेस और जान वालेस। सबसे छोटे जानको १२०७ ईस्वीमें इङ्गलेण्ड नरेशने फांसी पर चढ़ा दिया।

हमारे ग्रन्थके नायक सर विलियम वालेसने सम्भवत १२७० ईस्वीमें स्काट राज तीसरे अलक्जेण्डरके मरनेसे कुछ पहले जन्म लिया। इस हिसाबसे जब वह विश्वासघातक मानटीथ द्वारा १२०५ ईस्वीमें एडवर्डके हाथमें सौंपा गया उस समय उसकी उमर ३५ वर्ष थी। इतिहास-क्षेत्रमें जब वह पहले पहल आया तब उसकी उमर २७ वर्ष थी। ८ सालके अन्दर उसने स्काटलेण्डमें एक नया युग बर्ता दिया।

ऐसा कहते हैं कि वालेसने लडकपनमें अपने चाचा डुनिपेसके पुरोहितके पास रहकर ग्रीक लाटिन प्रभृति प्राचीन साहित्यसागर मन्थन करके रत्न चुन चुन कर अपने चित्त भाण्डारमें भरे थे। सन् १२९१ ईस्वीकी ११ वी जूनको ६ राज प्रतिनिधियोंके स्काट-लेण्डकी हुकूमत छोड़ देने पर एडवर्ड स्काटलेण्डके चक्रवर्त्ती राजा हुए और उसी समय उन्होंने सर्वत्र यह आज्ञा जारी की कि हर स्काटलेण्डवासीको मेरे सामने कोर्निश करके और घुटना टेक कर मेरी अधीनता स्वीकार करना होगी। वालेसके पिता एलरस्लीके अधीश्वर सर मलकम वालेससे यह आज्ञा सही न गई। वह एड-वर्डके सामने घुटना टेकनेके बदले दूसरी सजा अच्छी समझ कर बडे बेटे सहित डम बार्टन शायरके लेनक्सोके किलेमें चला गया। इधर उसकी सहधर्मिणी मझले बेटे वालेसको लेकर बूढ़े बाप क्राफोर्डके यहां चली गई। छोटा लडका जान पहले ही वहां भेजा जाचुका था। क्राफोर्डने इन लोगोंको बडे यत्नसे अपने मकानमें रखा। जब वालेस माता सहित किल्स पिण्डी नगरमें था तब वह दण्डीके विद्यालयमें भेजा गया। उस समयके विद्यालय गिरजेके साथ होते थे। उच्चश्रेणीके बालक और पादरीपुत्रही उनमें ...ने पाते थे। इस समय उसकी उमर करीब १६ वर्ष थी। उसके

भविष्य दीक्षा गुरु और जीवनचरित लेखक जान ब्लू यरसे उसका यहीं प्रथम परिचय हुआ।

इस समय एडवर्डने स्काटलेण्ड पर बडी कडाई शुरू की। उनकी उद्दत सेना दुर्गरक्षित नगरों पर आक्रमण करके भयानक अत्याचार और मार काट करने लगी। उस नई जवानीमेंही वालेसका हृदय इस जातीय पीडासे बहुत व्यथित हुआ। वह गाल पर हाथ धर कर कभी कभी स्वदेशकी भविष्य चिन्तामें निमग्न हो जाता था। ऐसा कहते हैं कि उसने विद्यालयमें पढते समय यथेच्छाचारी सैनिकोंका सामना करनेके लिये सहपाठियोंका एक छात्र-समाज बनायाथा। पूर्वोक्त जान ब्लू यरकी तरह सरनील केम्बेल भी उसका सहपाठी था। वालेस तभीसे हमेशा तलवार और छुरा बाधता था। क्योंकि एडवर्डके सैनिकोंके साथ किशोरावस्थासेही उसकी छेड छाड होने लगी थी इस बीचमें कितनेही वालेसकी तलवारके शिकार भी होचुके थे।

वालेस एक दिन कहींसे डंडीको लौटरहा था कि डंडीके गवर्नर सेलबार्डके पुत्रने उसपर आक्रमण किया। कम्बरलेण्ड निवासी सेलबार्ड एलवर्डकी अधीनता स्वीकार करके उनकी कृपासे डंडी और फोर फारके किलेका मालिक हुआ है। गवर्नर सेलबार्ड लालच और उसके पुत्र घृणा और अनुचित घमण्डके कारण प्रजाकी आखोंमें काटेसे लगते थे। उस दिन गवर्नर-कुमार चार साथियों सहित खेलता था इतनेमें वालेस सुन्दर हरी पोशाक पहने और हथियार बाधे उधरसे जानिकला। गवर्नर के पुत्रसे यह देखा न गया वह वालेसको कहने लगा—"अरे गर्वित स्काट। यह सज धज यह वीरोचित वस्त्र शस्त्र दासके योग्य नहीं हैं। सियारको शेरकी छाल ओढना कभी शोभा नहीं देता।" यह कहकर वह ज्योंही वालेसका छुरा छीननेको झपटा त्योंही वालेसने उसकी गर्दन पकडकर तलवारसे काट डाली। लाश जमीन पर पडीरही और वालेस वहांसे भागा। वह बचपनमें जिस चाचाके

घर रहता था भागा भागा वही पहुंचा। चाचीने उसे जनाना पोशाक पहना कर चरखा कातनेको बिठा दिया। उसका पीछा करने वालोंने आकर उस घर को अच्छी तरह ढूंढा पर वालेस का कहीं पता न पाकर अफसोस और निराशाके साथ लौट गये। तब उसकी चाचीने रातको उसे डी नदी पार करा दिया। वालेस कुशल पूर्वक किन्‌कार्डिन नगरमें माताके पास चला गया।

यहां उसकी माता और भाईने उस वारदात की बात सुनकर बहुत डरे। वहां रहनेसे पकड़े जानेका अन्देशा जानकर भाईबन्दोंने उन लोगोंको वहांसे चले जानेकी सलाह दी। वालेसकी माता पुत्र सहित बैरागिनीके भेषमें तीर्थ यात्राके बहाने अनेक देशोंमें घूमती हुई दुनिपेसमें आपहुंची। यहां वह लोग आदर पूर्वक रखे गये। जबतक उनका भाग्य न पलटे तबतक वहीं रहनेकी उन्हें सलाह दी गई। अभागिनी जेनने यहीं लाउडन पहाड़का शोचनीय युद्ध समाचार सुना। इस युद्धमें उसका पति और बड़ा पुत्र अंगरेजोंके हाथ मारेगये। पिता और बड़े भाईका मरना सुनकर वालेस बड़ाही शोकातुर हुआ। परशुरामने जैसे पितृ-घाती क्षत्रियके रक्तसे पिताका तर्पण किया था हमारे नये वीरने वैसेही पितृघाती अंगरेजके लोहूसे पिताका शोकानल बुझानेकी प्रतिज्ञा की। चारों ओर देशमें शत्रुओंका अत्याचार सुनकर वह लोग दुनिपेसकी मेहमानदारी छोड़नेको लाचार हुए। आश्रय-दातासे वालेसने कहा—"मेरे पिता और भ्राताको अंगरेजोंने मार डाला है आज मैं ईश्वरके सामने शपथ करता हूं कि अगर मैं जीता रहा तो जरूर इसका बदला लूंगा।"

दुनिपेस छोड़कर वह लोग अपने निवासस्थान एलरस्लीके किले में आये। वहां वालेससे उसके मामा सर रोनाल्डकी मुलाकात हुई। वह उस समय आयरके गवर्नर पर्सीकी निगरानीमें वहां रहते थे। बेचारी जेनने अपने लिये भी पर्सीसे शान्तिकी भीख मांगनेके लिये भाईको कहा मगर वालेस इस बात पर राजी न

हुआ। उसने ऐसे समयमें शत्रुसे शान्ति मांगकर बदला लेनेका समय आलस्यमें खोना कायरका काम समझा। वह माताको एलरस्लीके किलेमें छोडकर मामाके साथ रिकर्टनमें बूढे चाचा सर रिचार्डके गढमें गया। आर्विङ्ग नदीके किनारे एक ऊंचे स्थान पर रिकर्टनका किला था। वालेसके चाचाके पोते जान वालेसका, पासके क्रैगी दुर्गकी उत्तराधिकारिणीसे व्याह होगया था तभीसे वालेस वंश रिकर्टन दुर्ग छोडकर क्रैगीमें रहने लगा। तबसे रिकर्टनका किला बेमरम्मत पडा रहा फिर गिर गया। अब उसका निशान भी नहीं है।

जो हो, वह वालेसकी एक यादगार था। १२८२ ईस्वीके फरवरी महीनेमें वह यहा आया और एक महीना भी नहीं बीता था कि एक अनमोखी घटनाके कारणसे उसे वहासे भागना पडा। एक दिन वह आर्विङ्ग नदीमें मछली मारने गया था। जाल ढोने के लिये सिर्फ एक लडका उसके साथ था। वह बहुतसी मछलिया मार चुका था कि इतनेमें गवर्नर पर्सी उधरसे जानिकले वह दल बल सहित आर्विङ्गके किनारे किनारे ग्लासगोका मेला देखने जाते थे। उनके शरीररक्षक पाच सवार वालेसके पास आकर तमाशा देखने लगे। जालमें बहुतसी अच्छी अच्छी मछलिया फसी देख कर उन लोगोंने गवर्नरके लिये मागी। वालेसने कुछ मछलिया देदेनेके लिये लडकेको कहा। उन्होंने सब मागी। कहा—"इस बार जालमें जितनी मछलिया आई हैं सब गवर्नरको मिलनी चाहिये, फिर तुम चाहे जितनी मछली मारकर लेजाओ।" इस पर वालेसने बिगडकर कहा—"आज यह मछलिया एक बूढे निमन्त्रित नाइटके भोजनमें जायगी, इस लिये अगर तुम लोग भलेमानस हो तो जितनी दी है उतनीही ले जाओ।" गर्वित अङ्गरेजोंने यह बात न मानी। एक सवारने घोडेसे उतरकर बालकसे सब मछलिया छीन ली। वालेस बोल उठा—"तुम्हारा यह बडा अन्याय है।" अङ्गरेज बोला—"क्या? मेरा अन्याय? दुष्ट! तो यह ले।"

यह कहकर वह तलवार निकाल वालेस पर झपटा। वालेसके हाथमें एक बर्छेके सिवा और कोई हथियार नहीं था। उसने उसी बर्छेसे उस अङ्गरेजको जमीन पर गिरा दिया। गिरनेके साथ उस की तलवार अलग जागिरी। वालेसने उसी तलवारसे उसको काट डाला। बाकी चारोंने यह देखकर वालेस पर आक्रमण किया। वालेसने उसी तलवारसे दोको जमीन पर सुलाया। बाकी दो ने भागकर, कुछ दूर गये हुए पर्सीसे सब हाल कहा। पाच हथि-यारबन्द सवार एक निरस्त्र आदमीसे हार गये—यह सुनकर पर्सी ने उनसे नफरत दिखाई और हत्याकारीका पता लगानेको आदमी भेजनेसे इनकार किया। उधर वालेसने घर आकर बुढ़े चाचासे सब हाल कहा। उन्होंने वालेसका अब वहां रहना बेहतर न समझकर उसे कहीं चले जानेकी सलाह दी। जाते समय बहुतसा धन दिया और कहा कि जब जो जरूरत पडे मुझे खबर देना मैं भेज दूंगा। उन्होंने आदमी भी साथ कर देना चाहा परन्तु वालेसने यह मंजूर नहीं किया।

वालेस जवानीके तेज और अपने आदमियोंकी मृत्युके जोशमें पागलसा होकर घोडे पर सवार हो आयर नदीके किनारे अचिन-क्रव किलेकी तरफ रवाना हुआ। उस समय सर डनकन वालेस उस किलेके अध्यक्ष थे। वह वालेसहीके खान्दानके थे। उन्होंने अपने कुटुम्बीका स्वागत किया। कईल नदीके किनारे उनका सनड्रम नामका एक और किला था। इस किले और पासके लागलन वनने वालेसको कुछ दिन शत्रुओंके हाथसे बचाया।

एक दिन वालेसके जीमें आयर नगर देखनेकी आई, वह लांग-लन वनमें अपना घोडा बाधकर एक बालकको साथ ले पैदल उस नगरके बाजारमें आया। पर्सी और उनके निष्ठुर सिपाही उस समय आयर किलेकी रखवाली करते थे। उनकी कडाईसे वहांके [illegible] थर थर कांपते थे। उस समय स्काट लोगोंसे अपना शारी-बल अधिक साबित करनेकी गरजसे अङ्गरेज बडी बडी डींगें

मारा करते थे। उस दिन एक मुष्टण्ड दिहाती अङ्गरेज बाजारमें बैठकर कह रहा था—"जो मुझे एक रुपया देगा वह इस गेंदसे —जो मेरे हाथमें है—मेरी पीठ पर अपनी शक्ति भर मार सकेगा और मैं हर किसी स्काटसे दूना बोझ उठा सकता हूं।" वालेसने बड़े कौतूहलमें आकर उससे कहा—"तुम अगर अपनी पीठ पर मेरा एक घूसा सह लो तो मैं तुम्हें तीन रुपये दूंगा।" अङ्गरेज सिपाहीने मञ्जूर किया। वालेसकी वज्रमुष्टि ज्योंही उसकी पीठ पर पड़ी उसकी रीढ़ टूट गई। सब देखकर विस्मित हुए, सबकी आखें वालेस पर पड़ीं। उसी वक्त उसे अगणित अङ्गरेज सवारोंने घेर लिया। मगर महाबली वालेस पांच छःको मार मार झट लागलन बनमें निकल गया। वहां पेड़के नीचे उसका घोड़ा बंधा था। उस पर सवार होकर पीछा करनेवालोंकी निगाहसे निकलकर सकुशल अचिनकावके किलेमें जापहुंचा।

किन्तु वालेसका दुर्दमनीय मन अधिक दिन एक जगह रहने वाला नहीं था। वह फिर कौतूहलमें आकर आयर नगर देखने निकला। राहमें आयरके शेरिफ उसके चाचाके नौकरसे भेट हुई। वह मालिकके वास्ते बाजारसे मछलियां खरीदकर लिये जाता था। गवर्नर पर्सीके भण्डारीने उससे मछलियां छीन लेनी चाही। नौकर बेचारा बनकर वालेसका मुंह देखने लगा। वालेसने भंडारीसे कहा—"साहब! क्या करते हैं इसको जाने दीजिये।" यह वाक्य भंडारीको बहुत बुरा लगा। उसने अपनी छड़ी वालेसकी पीठपर चलादी। वालेसने गुस्सेमें अपनी कमरसे छुरा निकालकर भंडारीको मारडाला। तुरत चारोंओरसे अंगरेजसेनाने आकर उसे घेर लिया। इस तुमुल युद्धमें यद्यपि वालेसने सात अंगरेजोंको जमीनपर गिराया तथापि इतने आदमी उसपर धावित थे कि अबकी वह दुर्भेद्य व्यूहसे निकलकर भाग न सका। अन्तमें पकड़कर पकड़ा गया और आयरके पुराने कैदखानेमें कैद किया गया। यहां निर्जन पाप पिंजरेमें वह रखा गया था, इस तरह सर्दी था

होगया। काराध्यक्षने उसे मरा समझ कर कैदखानेकी दीवार परसे पासके खेतमें फेंकवा दिया। वह बेमाल्हो वहां पड़ा था कि इतनेमें उसकी धाय आयर निवासिनी निउटन खबर पाकर उसकी लाश देखने आई। उसने अपने घरमें कबर देनेके बहाने वालेसकी देह लेजानेकी आज्ञा काराध्यक्षसे ली। वहां लेजाकर उसने और उसकी लड़कीने दिन रात सेवा करके वालेसको जिलाया।

वालेसने अच्छीतरह आराम होनेपर घोड़े, रुपये और हथियार के लिये रिकार्टनमें बूढ़े चाचाके पास जानेका इरादा किया। इधर प्राण बचाने वाली धाय और उसकी लड़कीको एलरस्ली दुर्गमें माके पास भेज दिया। धायके घरमें एक पुरानी तलवार थी सिर्फ वही लेकर वह रिकार्टनकी तरफ चला। राहमें ग्लासगोके मेलेसे लौटते हुये स्क्वायर लागकासल और उसके दो नौकरोंने उसपर हमला किया। लागकासल उसे जबरदस्ती आयर लेजानेकी चेष्टा करने लगा। वालेसने लाचार होकर आत्मरक्षाके लिये लाग-कासल और उसके एक नौकरको पुरानी तलवारसेही काटडाला। दूसरा नौकर जान लेकर भाग गया।

वालेसको रिकार्टनमें बूढ़े चाचा रिचार्ड और उनके दो पुत्रोंने आदरसे रखा। इधर उसका आना सुनकर कारसबीसे उसके मामा रोनालड और एलरस्लीसे उसकी मा भी आगई। वालेसकी अद्भुत रिहाई सुनकर और उसके बाद आज उसे देखकर सबके आनन्दकी सीमा न रही। उस समय सबकी आंखोंसे आनन्दके आंसू बहने लगे।

तीसरा अध्याय।

स्काटराज वेलियलका परिणाम—वारविक और डनबारका युद्ध स्काटलेण्डकी शोचनीय दशा।

हम पहले कह आये हैं कि एडवर्डने वेलियलको स्काटलेण्डका सिंहासन दिलाया। सन् १२८२ ईस्वीकी २० वीं नवम्बरको वेलियल शपथ करके इङ्गलेण्डेश्वरके जागीरदार बनकर स्काटिश राज्यके मालिक बने। उसी महीनेकी ३० वीं तारीखको उन्होंने स्कोन नामक शिलापट्ट पर बैठ कर स्काटलेण्डका राजमुकुट पहना। २६ दिसम्बरको न्यूकेसलके किलेमें उन्हें भविष्यमें अपनी बात कायम रखनेके लिये एडवर्डके सामने दुबारा शपथ करना पड़ा।

किन्तु यह राजमुकुट उनके सिर पर कांटासा मालूम होने लगा। बात बातमें एडवर्ड उनको मामूली वैरनकी तरह इङ्गलेण्डके दरबारमें बुलाने लगे। राजसिंहासन वेलियलके कष्टका कारण होगया। अन्तमें जब उन्हें एडवर्डके साथ सेना लेकर युरोप जानेकी आज्ञा दी गई तब उनकी धीरता जाती रही। उक्त कायरके जीमें भी वीरताकी आग भड़क उठी। उन्होंने स्काटिश पार्लेमेंटसे सलाह करके १२८६ ईस्वीकी ५ वीं अप्रेलको आम दरबारमें एडवर्डकी अधीनता त्याग दी और फ्रांस नरेश फिलिपसे एक बड़ी सन्धि करली। इस कामका नतीजा सोच कर स्काटलेण्डवासियोंने एक स्वरसे इङ्गलेण्ड पर धावा करनेका मनसूबा बांधा। जातीय विपद जान कर जातीय स्वाधीनताकी रक्षाके लिये उन्होंने जीजानसे प्र[illegible] किया। इस डरसे कि कहीं एडवर्डकी अपार सेना आकर स्काटलेण्डको तहस नहस न करने लगे, इन लोगोंने पहलेहीसे इङ्गलेण्ड पर हमला करके उसीको लड़ाईका मैदान बनाना चाहा। जो चाहा सब बहुत जल्द कर दिखाया। उन्होंने कम्बर-

लेण्ड लाव कर न्यूकेसलके किले पर हमला किया और उसमें आग लगा कर ८ अप्रेलको नारदम्बरलेण्ड प्रदेशमें पहुंच कर सेनाके किनारे और डेक्सम नगरमें लूट पाट आरम्भ कर दी।

एडवर्डने यह खबर पातेही क्रोधसे अधीर हो कर बारविक नगरके निकट बड़ी भारी फौज जमा की। स्काटलेण्ड फार्गसकी लड़ाईके बाद फिर रणभूमिमें नहीं उतरा था। इसलिये स्काटिश सेना यद्यपि वीरता और साज सामानमें एडवर्डकी सेनासे किसी बातमें कम न थी तथापि शासन और बहुदर्शितामें युरोपके रणक्षेत्रमें वीर दर्पी एडवर्डकी सेनासे उसकी बराबरी नहीं हो सकती। तो भी बारविक नगरके घेरेके समय स्काट सेनाने घेरा डालनेवाले एडवर्डके १६ जङ्गी जहाज बरबाद कर दिये। एडवर्डसे और सहा नहीं गया उन्होंने बड़े वेगसे नगरमें घुसनेकी चेष्टा की किन्तु उनकी चेष्टा व्यर्थ हुई। अङ्गरेजी बल जो काम नहीं कर सकता अङ्गरेजी हिकमत उसे पूरा करती है। एडवर्डने बलसे बारविक लेनेमें असमर्थ होकर हिकमत लड़ाई। अबके वह जीत गये। इस नगपर अधिकार करके उन्होंने नगर निवासियों पर जैसा निष्ठुर आचरण किया था, अपने यम सदृश सिपाहियोंको लोगों पर जिस निर्दयताका व्यवहार करनेकी आज्ञा दी वह पढ कर हमारा खून सूख जाता है, उसके पढनेसे निर्दय पामरकाभी हृदय पिघलता है। अङ्गरेजोंने काली कोठरीकी हत्या लेकर सिराजुद्दौलाको नर पिशाच बनाया है किन्तु वह हत्या सिराजुद्दौलाकी इच्छासे नहीं हुई। वह उसकी असावधानीसे हुई। किन्तु एडवर्डके हुक्मसे उस दिन बारविकमेंके बालक बूढे बनिता तक भी तलवारके हाथसे न बची। एडवर्डके हुक्मसे बारविकमें सतरह हजार निरस्त्र निरीह मनुष्य कतल किये गये। २८ वी अप्रेलको सुप्रसिद्ध डनबारकी लड़ाईमें दोनों दलका घोर संग्राम हुआ। इसमें वारेन और सरके दो अर्ल इङ्गलेण्डकी बड़ी सेनाके नायक थे। उन्होंने अशिक्षित और बेतरतीब स्काटिश सेनाका असामयिक आक्रमण व्यर्थ करके उसे अच्छी तरह

हराया। वालेसके जीवनी लेखक अन्ध कवि हेनरीकी रायमें इन दोनों युद्धोंके पराजयका प्रधान कारण जातीय विश्वासघातकता है।

स्काटिश सिंहासनका प्रधान ग्राहक मार्चका अर्ल एडवर्डसे न जा मिलता और डनवर किलेका गवर्नर सर रिचार्ड सिवर्ड अङ्गरेज सेनापति वारेनके हाथमें डनवरका किला न सौंप देता तो न जाने इस युद्धका परिणाम क्या होता। यह विश्वासघातक सिवर्ड स्काट नरेशोंका एक आश्रित नार्मन जागीरदार था। इसलिये स्काटलैण्डकी जातीय मान और जातीय स्वाधीनताकी इसे जरा भी परवा न थी। और मार्चका अर्ल यद्यपि एक खान्दानी स्काट जागीरदार था तो भी उसने नीचा देखकर वेलियलके अधीन रहनेसे इङ्गलैण्डके बादशाहकी शरणमें जाना अधिक इज्जतका काम समझा। जो हो, इस जातीय विश्वासघातके कारण डनवरके मैदानमें दस हजार स्काट मारे गये। निर्लज्ज वेलियलने पिछले कामोंके लिये क्षमा माग कर प्राण बचाया किन्तु पुत्र सहित लन्दन टावरके भयानक कैदखानेमें डाल दिया गया और अगणित स्काटिश जागीरदार जञ्जीरोंसे बांध कर इङ्गलैण्ड भेजे गये।

ऐसा कहा जाता है कि एडवर्डने ब्रूसके पुत्रको बागी वेलियलकी गद्दी देनेका लोभ देकर ब्रूस और उसके साथियोंको अपनी तरफ कर लिया था। इसी लालचसे डनवरकी लड़ाईमें ब्रूस और उसकी सेना जातीय दलसे लड़ी थी। लड़ाईके बाद ब्रूसने एडवर्डको प्रतिज्ञाका स्मरण कराया तो विजयी एडवर्ड कह बैठे "क्या! मुझे और कोई काम नहीं था कि मैं तुम्हारे लिये जातीय धन और जातीय रुधिरसे राज्य जीतने जाता?" ब्रूस अपनासा मुंह लेकर वहांसे चल दिये तबसे वह अपनी इङ्गलैण्डकी जमींदारीमें चुप चाप रहने लगे। फिर उन्होंने किसी राजनीतिक काममें हाथ नहीं डाला। उनके पुत्र रावर्ट ब्रूस इसी समय माताके सम्बन्धसे कारिकका अर्ल कहलाये। इस समय उनकी उमर २३ से ज्यादा न थी। अब उन्होंने पिताके वैराग्यसे सन्तुष्ट न होकर उनसे अलग स्वाधीनता पूर्वक काम करना शुरू किया।

डनवर विजयके बाद वेल्स और आयर्लेण्डसे १५ हजार सेना एडवर्डसे आमिली। एडवर्ड उसे लेकर सवा पांच महीने समस्त स्काटलेण्डको रौंदते फिरे। सिर्फ लोगोंका जानो माल बरबाद करकेही बाज न आये। उन्होंने जातीयजीवनमें फिर प्राण डालने-वाले ओशीले पत्रादि जला डाले और जातीय राजभक्तिमें उत्तेजना देनेवाली स्कून नगरकी सुप्रसिद्ध अभिषेक शिला वेस्टमिनिस्टरमें भेज दी।

लौटते समय वह जान वारेन और सरके अर्लको स्काटलेण्डके शासनकर्त्ता, क्रेसिङ्हमको खजाची, अरमेसवार्डको प्रधान विचार-पति, वारेनके भानजे पर्सीको गालवे प्रदेशका रक्षक तथा आयरका शेरिफ और क्लिफोर्डको पूर्व स्काटलेण्डका निगहबान बना गये। मानो उन्होंने स्काटलेण्डको सब तरहसे छान बांध लिया। मानो वह जञ्जीर तोड कर स्काटलेण्ड फिर न उठेगा। मानो फिर कभी इसके भाग्याकाशमें सौभाग्य-सूर्य्य उदय न होगा।

चौथा अध्याय।

वालेसकी साधना।

लाउडनगिरिका युद्ध।

जिस समय वारविक और डनवरमें तुमुल संग्राम चलता था उस समय साधकवर वालेस गहरी साधनामें निमग्न था। वह पहलेही समझ गया था कि एडवर्डकी सुशिक्षित और लडाकी सेनासे स्काटलेण्डकी अशिक्षित और नौसिख सेना सम्मुख समरमें कभी जीत न सकेगी। यह जान कर उसने दृढप्रतिज्ञ, कष्टसहिष्णु वीर जवानोंकी एक सेना बनानेका इरादा किया। इधर उसकी अलौकिक वीरता, अमानुषिक बल, अटल सहिष्णुता और सबसे

बढकर उसके अदम्य स्वजाति प्रेम और स्वदेशानुरागका यश सर्वत्र फैल गया था इससे झुण्डके झुण्ड वीरोने आकर उसे अपना नायक बनाया। सचमुच एडवर्डके अत्याचारी सिपाहियोंके जुल्म से और अपने पिता भ्राताके मारे जानेसे वालेसके हृदयमें स्वजाति प्रेम और स्वदेशनुरागका भाव इतना बढगया था कि जबतक शत्रु दवाये नहीं जाते है तबतक यह जिन्दगी उसे भारी मालूम होने लगी। वह अपने क्रोधकी आगसे आप जलने लगा, स्वजातिके चरणोंमें प्राणन्योछावर करनेसेही, न्योछावर कियाप्राण स्वजातिके उद्वारमेंलगा देने की इच्छारखनेसेही वालेस अमर होगया था। इसीसे वह अकेले लाख आदमियोंकी ताकत रखता था। उस महाबली स्वदेशानुरागमें मस्त दैवशक्ति सम्पन्न वालेसके झण्डेके नीचे धीरे धीरे कुछ स्वजातिप्रेमी आ खडे हुए। उसी दलको लेकर नरदेव वालेसने विपक्षियोंके साथ गेरिला युद्व आरम्भ किया।

आयरकी दुर्घटनाके बाद वालेस रिकार्टनमें आकर माके साथ रहता था, वहीं उक्त वीर वृन्द आकर उससे मिले। उसमें सर रिचार्डके तीन पुत्र एडम, रिचार्ड और सायमन और रावर्ट वायड तथा नेलाण्ड मुख्य थे। वालेसने मातासे विदा लेकर इन कई साथियों सहित रिकार्टनसे सुविख्यात रणभूमि मकालिनमूरकी तरफ कूच किया।

सन् १२८६ ईस्वीमें गर्मीका मौसिम आना चाहता है। प्रकृति मानो चारों ओर हास्य फैला रही है। एक ओर स्काटलैण्डके बाशिन्दे दुर्भिक्षकी ज्वालासे तडप रहे है, दूसरी ओर खान पानमें व्यस्त एडवर्डकी सेना ऐशमें मस्त है। यह दृश्य जातीय दलको बडाही दुःखदायी हुआ। क्रोधसे वालेसका हृदय फडक उठा। वह अवसर ढूढने लगा। बहुत जल्द अवसर भी आगया।

उनलोगोंके मेकालिन मूरमें पहुचनेके कुछही दिन बाद समाचार मिला कि फेनविक नामका एक अगरेज सैनिक आयरके गेरिसन

पर्सीके लिये कार्लाइल नगरसे सेना सज्जित कोई गाडी सामान लेजा-रहा है। इसी आदमीके हाथसे वालेसका पिता मरा था। इस लिये वालेस इस खबरसे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसी वक्त उसपर हमला करनेका बिचार किया। वह लाउडनकी ओर चला। सिर्फ पचास उसके वीर साथ थे। शामको वह लोग पासके एक जंगलमें छिपरहे। रातभर वहीं रहकर सुना कि वह सेना निकट आगई है।

इधर उषादेवी पूर्व दिशा लाल करके गगन पटपर आरही है उस पवित्र समयमें उस छोटेसे देशभक्त दलने घुटना टेककर भक्ति पूर्वक ईश्वरकी उपासना की और उसका पवित्र नाम लेकर प्रतिज्ञा की कि यातो उस युद्धमें जय प्राप्त करेंगे या प्राणदेदेंगे। भारतमें भी स्वजाति प्रेमके ऐसे चमकते हुए दृष्टान्तका अभाव नहीं है। चिलियान वालेकी लडाई शुरू होनेसे पहले वीर चूडामणि सिख अपना अपना श्राद्ध तर्पण आप करके मैदानमें आये थे। उन्होंने भी उस युद्धमें जीतेंगे या मरेंगे—इनमेंसे पिछली बात स्थिर कर ली थी।

वालेसने फेनविकके हाथसे अपने पिताके मारे जानेकी घटना बयान करके साथियोंका जोश चौगुना करदिया। वह वीर दल बडे आग्रहसे अंगरेजी सेनाकी बाट देखने लगा। फेनविक दो सौ अगरेजी सवारोंके साथ आरहा था। वह सवेरेकी सुनहली किरणोंमें दूरसे वालेसको पहचानकर प्रसन्न हुआ। सोचा यही दुष्ट हमलोगोंके कैदखानेसे बच गया है, अबके मैं इसको कैद करके पर्सीके पास लेजाऊंगा। इसी आशासे फड़क कर फेनविकने लदीहुई गाडियोंको बीस सैनिकोंके जिम्मे रखकर बाकी १८० सवारों सहित उस क्षुद्र देशभक्त दलपर आक्रमण किया।

वालेसका सर्वाङ्ग वख्तरसे ढका है मस्तकपर लाल सिंह अङ्कित हैलमेट शोभायमान है, हाथमें एक तिकोनी ढाल, दुहत्थी तलवार, गदा और बर्छी और कमरमें तेज छुरा है। उसके सहचरोंके पास

भी ऐसेही अस्त्र शस्त्र हैं। वह सब अंगरेजों पर जोरसे टूट पड़े। फेनविकने सोचा था कि तेजीसे घोड़े दौड़ाकर उस वीर दलको दलमल डालेंगे किन्तु बात उलटी हुई देखकर वह बहुत विस्मित हुआ।

स्काटोंका आक्रमण बड़ा भयानक हुआ। वह व्यूह तोड़कर बड़ेवेगसे सेनामें आ घुसे। तितर बितर अंगरेज सवारोंने झट उन्हे घेर लिया। परन्तु वालेसके बर्छे और तलवारसे अनगिनत सवार जमीन पर गिरने लगे। अन्तमें उसकी नजर सबसे ऊंचे घोड़े पर सवार फेनविक पर पड़ी। वह बीचके सैनिकोंको मारता काटता क्रुद्ध सिंहकी तरह गर्जता फेनविकके सामने आया। उसकी तलवारसे फेनविक घोड़ेसे नीचे गिरा और उसी वक्त बायडने पहुंच कर उसके शरीरमें तलवार घुसेड़ दी। फेनविककी यह दशा देखकर अंगरेजी सेना चारोंओरसे बायड पर टूट पड़ी। वालेसने आकर उसका उद्धार किया। दोनों वीर केसरी घेरनेवालोंको मारते काटते व्यूहसे बाहर होगये। अंगरेज सवार नायककी मृत्युसे उदास होकर भी दूसरे सेना नायक बोमण्डका उत्साह पाकर बड़ी तेजीसे लड़ने लगे। अन्तमें रिकर्टनके युवक वालेसके हाथसे बोमण्ड भी धरती पर आगिरा। अंगरेजी तेज इससे भी घटनेवाला नहीं। अंगरेज सवार घोड़ेसे उतर कर पैदल सिपाहीकी तरह घमासान युद्ध करने लगे। किन्तु वालेस और उसके वीरोंकी असाधारण वीरताके सामने सब हार गये। मैदानमें सौसे अधिक अंगरेजोंकी लाश छोड़कर बाकी अंगरेज इधर उधर भाग गये। जातीय दलके केवल तीन आदमी काम आये थे।

फेनविकके साथ जो कुछ माल मता था सब उन स्काटोंके हाथ लगा। कोई छकड़े, कोई सवारी सजे सजाये घोड़े, सोना शराब और खाने पीनेकी बहुतसी चीजें उन्हें मिली। यह सब चीजें उन्होंने लाइडेसडेल बनमें छिपा रखी। जो अभी अंगरेज सैनिक लड़ाईसे भाग गये थे वही सबसे पहले आयरके गवर्नर पर्सीके पास यह शोकसमाचार लेगये।

अङ्गरेजोंसे वालेसका यही सबसे पहला सम्मुख समर था। इसीमेंही वालेसने अपनेसे चौगुनी अङ्गरेज सेनासे लड कर उसे परास्त किया। लाउडन पहाड स्काटलेण्डका पानीपत है। यहा पर तीन बार स्काटलेण्डके भाग्यकी परीक्षा हुई। एक बार रोमवालोंसे और दूसरी बार अङ्गरेजोंसे स्काटोंका भीषण समर हुआ। तीसरी बार प्रथम चार्लसके समय धर्म्म और कानून सम्बन्धी व्यक्तिगत स्वाधीनताको लेकर राजदलसे प्रजातान्त्रिकदलका घोर युद्ध हुआ।

पर्सी इस समाचारसे बहुत व्यथित हुए। रसदकी कमीसे आयर किलेकी सेना बहुत कष्ट पाने लगी। वह अपने कर्म्मचारियों को दूसने लगे कि तुम लोगोंने वालेसको मुर्दा समझ कर आयर किलेकी दीवारसे बाहर फेंककर बडी बेवकूफी की और कहा कि आइन्दे कार्लाइलसे खुश्कीके रास्ते रसद न भेजकर तरीके रास्ते भेजा करो।

इधर वालेस और उसके सहचर २१ दिन क्लाइडेसडेलके जंगल में छिपकर जातीय शत्रुओंको तंग करनेके लिये नई नई तरकीब सोचते रहे। उन लोगोंके डरसे इस रास्तेसे अङ्गरेजोंने जाना आना छोडदिया। धीरेधीरे लाउडन पहाडकी लडाईकी खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई और वालेसके नामसे एक तरफ अङ्गरेजी खून सूखने लगा दूसरी तरफ सताये हुये स्काटलेण्ड वासियोंका हृदय उत्साहसे मस्त होगया।

पर्सीने फौरन ग्लासगो नगरमें अङ्गरेज जागीरदारों और दूसरे कर्म्मचारियोंकी एक विराट सभा बुलाई। करीब दस हजार अङ्गरेज जमा हुए। सभाके विचारका प्रधान विषय था वालेस। वायवेल निवासी सर आमेर डि वालेस नामक एक स्वजाति विश्वास-घाती स्काटने सलाह दी कि एडवर्ड की आज्ञा आने तक वालेससे एक सामयिक सन्धि की जाय। पर्सीने कहा कि वालेस सन्धि नहीं करेगा। वालेसने कहा कि वालेसके चाचा रिकार्टनके शेरिफ सर

रेनाल्डके जरिये यह काम होसकेगा और सन्धिको,जमानतमें उसकी
जागीर जब्त रखनेसेही मतलब होजायगा। सर रेनाल्ड उसीवक्त
बुलाये गये। वालेसको रोकना असम्भव बता कर उन्होंने पहले तो
अस्वीकार किया। किन्तु पर्सीके बारबार कहने पर लाचार
हो स्वीकार किया। पर्सीने एडवर्डके प्रतिनिधि होकर यह सन्धिकी
कि जब तक यह सन्धि न टूटेगी तबतक कोई वालेसका बाल न छू
सकेगा। सर रेनाल्ड यह सन्धिपत्र लेकर लार्डडेसडेलके जङ्गलमें
गये। वालेस खानेके लिये बैठता था कि इतनेमें सर रेनाल्ड वहां
जा पहुंचे। दोनो गले लगकर मिले। फिर दोनोंने खुशी खुशी
खाना पीना किया। इसके बाद रेनाल्डने वालेससे सन्धिका
प्रस्ताव करके उसे मान लेनेका अनुरोध किया और कहा कि इसमें
तुम आगेके लिये अच्छी तरह तय्यार होसकोगे। वालेसने सन्धि
का प्रस्ताव सुनकर इनकार किया, कहा—"धूर्त्त विश्वासघातककी
सन्धिका क्या विश्वास ?" किन्तु अन्तमें साथियोंकी सलाह और
चाचा पर आफत आनेके ख्यालसे अङ्गरेजोंसे चन्द रोजके लिये
सन्धि की। स्थिर हुआ कि यह सन्धि सिर्फ १० महीने तक
रहेगी। १२९६ ई० के अगस्तमें सन्धि कीगई। इसके भरोसे उस
देशभक्त दलका हरेक आदमी अपने मकान चला गया। वालेस
भी चाचाके साथ कारस्बी शहरको चला गया।

किन्तु एक अङ्गरेजका पैर भी स्काटलेण्डकी धरती पर देखकर
वालेसकी कल नहीं पडती थी। अङ्गरेज आयरमें क्या कर
रहे हैं यह देखनेके लिये एक दिन वह मौजमें आकर उधर चल
पडा। अपनेको प्रगट न करनेके इरादेसे सिरसे पैर तक वस्त्र-
तर पहनकर आया था। उसने शहरमें जाकर देखा कि एक अङ्ग-
रेज बकलर हाथमें लिये पटेबाजी खेल रहा है। उसने ताना
मारकर वालेसको धाजमाइशके लिये बुलाया और कहा—"अजी
वस्त्रतरवाले। तुम्हारी सब विद्या पहलेही मालूम होगई।" यह
सुन वालेसको असह्य हुआ। उसने अपनी तेज तलवार निकाल

पांचवां अध्याय।

ग्लासगोमें सभा।

पर्सीके नौकरोंकी हत्या—अर्ल मलकमसे वालेसकी मुलाकात—गार्गुनक और किर्कवेडन किले पर अधिकार—शार्टउडशा का युद्ध—सेन्टजानस्टनका शत्रुके हाथमें पडना।

सन् १२८६ ईस्वीमें सितम्बरका महीना है। स्काटलेण्डके शासनके लिये कुछ कानून बनानेको ग्लासगो नगरमें अङ्गरेजोंकी एक बडी भारी सभा जुडी। डरहमके पादरीने उसके सभापतिका आसन ग्रहण किया। सब प्रदेशोंके शेरिफ इस सभामें बुलाये गये थे। इस लिये आयरके खान्दानी शेरिफ सर रेनाल्डके पास भी बुलावा गया। वह वालेस और दो सहचरों सहित ग्लासगो जारहे हैं। एक लडका रेनाल्डका सुन्दर घोडा लेकर आगे रवाना हो चुका है, वालेसने दो साथियों सहित उस लडकेको आ लिया है, बूढे रेनाल्ड पीछे पीछे आते हैं। रास्तेमें पर्सीके कुछ नौकरोंसे भेंट होगई। कीमती चीजोंसे लदे एक छकड़ेकी रखवालीमें पर्सीके पांच प्यादे और तीन सवार ग्लासगोकी तरफ जाते थे। गाडीका घोडा बहुत थक गया था इससे उन्होंने रेनाल्डका घोडा उसमें जोत लेना चाहा। वालेसने मना किया। कहा सन्धिकी हालतमें ऐसी राहजनी क्षमाके योग्य नहीं है। मगर उन्होंने न माना घोडेको गाडीमें जोत दिया। वालेस गुस्से से लाल होकर ऐसे लुटेरेपनका बदला देनेके लिये रेनाल्डकी राय लेनेको पीछे लौटा। रेनाल्ड स्प्रिंगसाइड तक आगये थे। उन्होंने वालेसको चुप रह जानेके लिये कहा। वालेसने इससे बहुत नाराज होकर उनकी प्रधानता छोड दी और बदला लेनेका इरादा करके घोड़ेपर चढा वहां आपहुंचा। इधर रेनाल्ड वालेसका बेतरह गुस्सा देखकर बहुत

सोचमें पड़े और इस डरसे कि पीछे पर्सी इस मामलेमें उन्हें भी न फंसावे स्यूरसाइडमें एक कदम आगे न बढ़े। उन्होंने वहीं सारी रात वालेसका परिणाम सोचते सोचते बिताई।

इधर वालेस अपने दोनों साथियोंको लेकर जहांसे लौटा था वहां आया। इस बीचमें पर्सीके आदमी कैथकार्टसे जरा आगे बढ़ गये थे। वालेसने खोजखाज कर उन्हें जा पकड़ा। बिना कुछ कहे उन पर टूट पड़ा और कई नौकरोंको मार कर सब चीजों सहित दोनों घोड़े लेकर रातों रात पैडोका पुल आधकार क्लाइड नदी पार होगया। ग्लासगोके इतने पास रहना किसी तरह उचित न समझा वह साथियों सहित लेनाक्सकी ओर चला। अर्ल मेलकम उस समय उस किलेके अध्यक्ष थे उन्होंने अभी तक एडवर्डकी अधीनता स्वीकार नहीं कीथी इसलिये वालेसके साथियों सहित वहां जाने पर बड़ी खातिर होनेकी सम्भावना थी। किन्तु वह एक बारगी उससे मुलाकात न करके दो चार दिन वहां एक होटलमें ठहरा। इधर पर्सीने यह समाचार सुनकर समझा कि वालेसकाही यह काम है। यह ख्याल करके उन्होंने उसी वक्त सर रैनाल्डके पास दूत भेजा। दूतने आकर देखा कि सर रैनाल्ड मियार्नसमें ठहरे हैं। किन्तु पर्सीके नौकरोंके मारे जानेकी वारदात ग्लासगोसे कुछही दूर पर हुई थी। रैनाल्ड विचारालयमें हाजिर किये गये। परन्तु साबित हुआ कि वह इसमें बिल्कुल निर्दोष हैं और भतीजेकी उस काररवाईकी उन्हें खबर तक न थी।

तीन चार दिन तक ग्लासगोमें सभाका अधिवेशन होता रहा। उस समय वालेस लेनक्समें ठहरा था। उसे खबर मिली कि सभा ने उसकी गिरिफ्तारीके लिये कानून जारी किया है। राबर्ट बायड नेलान्ड वगैरह सभाकी बैठकके समय ग्लासगोमें थे। वह अपने सरदारकी इस विपदसे बहुत फिक्रमन्द हुए। वालेसकी खोजमें वहांसे चुपचाप निकल आये। वालेसके दूसरे साथियोंमेंसे

कौन कहा था इसका ठिकाना न था। ऐसे वक्त वालेसकी घबराहट बहुत बढ गई।

वह होटल छोडकर अर्ल मलकमके पास पहुंचा। मलकमने बडेही आदरसे उसे लिया। लेनक्स उन दिनों रणवांकुरे वीरोंसे भरापुरा था वह आज भी एडवर्डके प्रतापकी उपेचा करताथा। अर्लने कहा—"अगर आप लेनक्समें रहना मंजूर करें तो मेरे सब वीर सहचर आपके हुक्म पर चलेंगे।" किन्तु वालेसने नामजूर किया। जो महात्मा समूचे स्काटलेण्डको शत्रुके हाथसे उवारनेके लिये प्राणकी बाजी लगा चुका है वह भला ऐसे छोटे प्रस्तावको क्योंकर मजूर करता? वालेसने अपना दिली इरादा प्रगट न करके मलकमसे उत्तरकी ओर जानेकी इच्छा प्रगट की।

उत्तर जानेसे पहले उसने गेरिला युद्धके लिये एक छोटी सेना बनानेका विचार किया। रोमिउलस्ने रोमकी नीव डालते समय और शिवाजीने महाराष्ट्र-साम्राज्यकी प्रतिष्ठा करते समय अपना दल बनानेका जो उपाय किया था वालेसने भी ठीक वही उपाय किया। स्काटलेण्डकी स्वाधीनताके लिये जो प्राण देनेको मुस्तैद थे उन सबको उनके दोषोंका कुछ ख्याल न करके वह अपने दलमें मिलाने लगा। यहांतक कि बहुतसे आयर्लेण्डवासियोंको भी शामिल करनेसे न हिचका। जिनलोगोंने वालेसको अपना मन्त्रगुरु बनाया उन सबको उसके सामने शपथ करना पडा। यह छोटीसी सेना लेकर वालेस उत्तरकी ओर चलनेको तय्यार हुआ। अर्ल मलकमने बडे सम्मान सहित उसको विदा किया। उसने उसको बहुतसा धन देना चाहा किन्तु वालेसने नहीं लिया। वह धनका लोभी न था। परोंका लूटा हुआ धन निवट नहीं गया था इसीसे उसने मलकमसे धन नहीं लिया बल्कि चलते वक्त गरीब दुखियोंको अपनी तरफसे कुछ कुछ दान कर गया।

स्टर्लिंग सायरसे कुछ दूर अङ्गरेजोंने गार्गुनक नामका एक नया किला बनाया था। १२९६ ई० के दिसम्बर महीनेमें वालेसके साथ

६० जवान उस किलेकी तरफ आये। उस समय आरान थरवाल नामके एक फौजी आदमीके ऊपर इस किलेका भार था। किलेकी हालत देखनेके लिये दो जासूस रातको वहां भेजे गये। वह देख आये कि किलेकी खाई पर पुल पड़ा है, यद्यपि दरवाजा बन्द है तथापि प्रहरी बेखबर सोरहे हैं। वालेस उसी वक्त अपने दल सहित पुल पार होकर दरवाजे पर आपहुंचा। दरवाजा मजबूत फाटकोंसे बन्द था। फाटक तोड़कर दरवाजा खोलनेकी बहुत कोशिश कीगई परन्तु फल कुछ न हुआ। अन्तमें स्वयं वालेस उसके पास आया। उसने एकही मारके जोरमें दीवारके कुछ हिस्से सहित फाटक उखाड़लिया। यह देखकर सब विस्मित हुए। वास्तव में शारीरिक बलमें हमारे देशके भीमके साथ सिर्फ वालेसकी ही तुलना होसकती थी। आवाजसे किलेके रखवालोंकी नीन्द टूटी। हाररचकने झट उठकर वालेसके मुंह पर सोटा मारा। वालेसने उसके हाथके सोटा छीनकर उसीसे उसे यमलोक भेज दिया। फिर उसी सोटेसे कप्तानका भी काम तमाम किया। उसके वीर साथी उसकी मददको पहुंच गये और किलेके सब लोग मारे गये। वालेसके किसी आदमीने बालका या स्त्रीका शरीर नहीं छूआ। पुल उखाड़कर वालेस चार दिन तक उसी किलेमें मौज करता रहा। इस किले पर आक्रमण और अधिकार ऐसी बेखबरीमें हुआ था कि कई दिन तक किलेके बाहर किसीको कुछ मालूम नहीं हुआ। वह लोग किलेदारकी स्त्री और लड़कोंको बिदा करके वहांकी कीमती चीजें लूटकर किलेके सब घरोंमें आग लगा, रातको फोर्थ पार हो निकटके जङ्गलमें चले गये।

यह मिथवेनका जङ्गल कहलाता था। यह सेन्ट और जानस्टन पार्थ शहरसे थोड़ी दूरपर था। वालेस बड़ा शिकारी था। उसने यहां आ कर एक तीरसे एक बढ़िया हरन मारा और उसका मांस अपने साथियोंको खूब खिलाया। रात वहां बिताकर वह सवेरे अकेले भेष बदलकर सेन्टजानस्टन नगरकी तरफ चला। नगरके निकट

पहुंचकर उसने एक आदमीसे कोतवालके पास खबर भेजी। कोतवालकी आज्ञा लेकर वह नगरके दरवाजे पर आया। कोतवालने स्वागत करके उसका नाम धाम पूछा। उसने नाम बदल कर कहा—"साहब। मेरा नाम विल मालकमसन और मेरे पिताका नाम मालकम है। मैं एडिंक बनसे आता हूं। रहने लायक जगह ढूढनेके लिये उत्तर प्रदेशसे इधर आगया हूं।" कोतवालने कहा—"महाशय। मैं किसी और ख्यालसे आपसे नहीं पूछता हालमें पश्चिम प्रदेशसे वालेस नामके एक पापीने आकर इंगलैण्डके महाराजके सब आदमी मारडाले। ऐसी बुरी खबर आई है इसीसे पूछना पडता है।" वालेसने इस ढङ्गसे उत्तर दिया कि कोतवालको कुछ शक न रहा। उसने उसको खुशीसे शहरमें जाने दिया।

सेण्टजानष्टन कैसे कब्जेमें आसकता है इसका ठीक करनेके लिये ही वह आया था। किन्तु उसने देखा कि किलेका द्वार बडाही मजबूत और दीवार बडी मोटी है। यह देखकर उसने फिलहाल उनपर अधिकार करनेका ख्याल छोड दिया। यहां सुना कि पर्थ सहरमें अंगरेजोंका किल्फ़ेवन नामका एक किला है। सर जेम्स बटलर नामका एक निर्दयी नाइट उन दिनों उसका अफसर था। वालेसने सुना कि उसी दिन सेण्टजानष्टनसे एक टुकडी अङ्गरेजसेना वहां जायगी। यह सुनतेही उसने उस पर रास्तेमें हमला करने का विचार किया और मकान मालिकसे विदा होकर मेथवनकी तरफ चला गया। वह चूं कि बतला किसीसे कुछ कहकर नहीं आया था इससे उसके साथियोंको बडी फिक्र हुई थी। दूरसे वालेसका बिगुल सुनकर उनकी जानमें जान आई। वालेस बिगुल बजाते बजाते ज्योंही जंगलमें घुसा त्योंही चारों ओरसे उनके साथी आ पहुंचे।

किलेकी सब कीमती चीजें लूटकर रातको पासके साटउडसा नामक बनमें छिपा आया। लौटकर कैदियोंको रिहाई देकर किलेमें आग लगा दी और फिर उसी बनमें चला गया। जब किलेकी आग भभक उठी तब अडोस पडोसके लोगोंको असली भेद मालूम हुआ। इधर कप्तान बटलरकी विधवा स्त्रीने रिहाई पाकर सेन्ट जानस्टन किलेके अफसर सर जिराडं हिरेनके पास जाकर सब हाल कहा। हिरेन समझ गये कि दगाबाज वालेसकाही यह काम है, वह तुरन्त एक हजार सवार लेकर उसे ढूंढने निकले।

इधर वालेसने हमलेके खटकेसे जङ्गलमें एक सुन्दर लकडियोंका किला बनाया, छः गोलाकार लकडियोंकी दीवारोंसे किलेको घेरदिया हर दीवारमें दो गुप्त दरवाजे इस गरजसे रखे कि अगर एक दीवार शत्रुके हाथमें चली जायगी तो यह लोग गुप्तद्वारसे क्रमसे पीछे बढ़ते जायगे, सब दीवारोंपर शत्रुओंका अधिकार होजानेपर अन्तिमद्वार से सघन बनमें निकल जायंगे।

फिक्कीवन युद्धमें सरजेमस बटलरके मारे जानेसे उनके पुत्र सर जान बटलर पिताका बदला लेनेके लिये धावा करनेवाली सेनाके नायक हुए हैं। वह दो सौ सवार साथ लेकर बनमें घुसे। बाकी सेनासे सर जिराडंने बन घेर रखा। बटलरके आनेतक वालेसका किला तय्यार नहीं हुआ था। वालेस बहुतसे साथियोंको किला बनाने पर तैनात करके थोडेसे आदमियों सहित बाहर आया। अङ्गरेजोंके साथ १४० तीरन्दाज और ८० बर्छेबरदार थे वालेसके साथ सिर्फ २० तीरन्दाज थे। उसके हाथमें एक बडा भारी धनुष था जिसे उसके सिवा दूसरा कोई नहीं चढा सकता था। वह पेडोंकी डालियोंसे बने नकली किलेसे इस धनुष पर बाण चढा कर अङ्गरेजोंको मारने लगा। किन्तु अपने तीरन्दाजोंको अङ्गरेजी तीरन्दाजोंसे घायल होते देखकर उसनेउन्हें हुक्मदिया कि पेडों की डालियोंमें छिपकर बाण चलाओ। आप वैसेही धनुष खेंचनेलगा। अन्तमें उसके गलेमें भी एक बाण आलगा किन्तु भाग्यसे उसने गलेमें

लोहेका बख्तर पहन रखा था उससे घाव गहरा नहीं लगा। उसकी तेज निगाह उसी वक्त तीर चलानेवाले पर पड़ी। उसने झट किले से बाहर निकलकर उस भागते हुए धनुर्धारीका गला तलवारसे काट डाला। वह सब तो असाधारण वीरता दिखाने लगा, उसके अमोघ बाणोंसे पन्द्रह अङ्गरेज मरे किन्तु उसके तीरन्दाज अङ्गरेजी बाणोंसे विकल होगये। थोड़ी देरमें चारों ओरसे अङ्गरेजी सेनाने आकर उन लोगोंको घेर लिया। 'या तो लड़ाईमें जीतेंगे या मरेंगे' इस जोशीले वाक्यसे हतोत्साह स्काट सेनामें नया उत्साह आगया। दोपहर होचली है। असंख्य अङ्गरेजी सेनाका सामना करनेके लिये उसके पास सिर्फ १५ वीर खड़े हैं इतनेमें स्वत बटलर के भानजे विलियम लोरेनने एक झपक तीन सौ सेना सहित उनके एक किनारेसे आकर स्काटों पर हमला किया। बटलरका बेटा सर जान लोरेनसे आमिला। इधर सर जिरार्ड हिरेनने इस तरह बन घेर लिया कि वालेस बाहर भी नहीं भाग सकता। वह लोग बड़ी चालाकीसे उस अङ्गरेजी सेनासे लड़ने लगे। पर इस-तरह रहना अब बेखतर न समझकर वालेस एक ओर गढ़में चला गया। एक करके उसके अधिकांश साथी मारे गये। अन्तमें वह युद्धस्थलमें जीतेजी पकड़े जानेकी अपेक्षा युद्ध करते करते मर जाना अच्छा समझकर बचे खुचे साथियों सहित रणभूमिमें उतर आया। भयङ्कर शेरकी तरह एक झपट्टे में बटलरके सामने आकर बड़े जोर से उस पर तलवार चलाई। उसका जोर एक डालीसे रुक जानेके कारण वार पूरा नहीं लगा पर बटलर घायल होकर जमीन पर गिर पड़ा। फौरन, बहुतसे अङ्गरेज आकर अपने सेनापतिको वहांसे उठा लेगये। यह देख लोरेनने-बहुत दुःखित और क्रोधित होकर बड़े वेगसे आकर वालेस और उसके बहादुरोंको घेर लिया। वालेसकी तीक्ष्ण दृष्टि लोरेन पर पड़ी। वह उछलकर उसके सामने आया। मदद पहुंचनेसे पहलेही वालेसकी तलवारने लोरेन का सिर धड़से अलग कर दिया। वालेसके १५ आदमियोंमेंसे

७ वीर मारे गये किन्तु अङ्गरेजोंकी तरफके कोई १२० आदमियोंने प्राणत्याग किये। अब वालेस उन आठ साथियों सहित जंगलसे बाहर निकलकर पासके किलेमें घुसकर अङ्गरेजोंका मुकाबला करने लगा। उधर लोरेनकी मृत्युसे अङ्गरेजी सेनामें खलबली पड गई। हिरेनने एक जङ्गी सभा की। उस सभामें उस दिन लडाई बन्द रखनेकी सलाह हुई। उन लोगोंने वनमें जगह जगह खोद कर गडे धनका पता लगानेकी चेष्टा की पर कुछ फल न हुआ। अन्तमें वह लोग दुःखित चित्तसे सेन्ट जानस्टन नगरको लौट आये। युद्धके दूसरे दिन रातको स्काट लोग किलेसे निकलकर सार्टउडसा वनसे गडा धन खोदकर मेथवेन वनमें लेगये। वहा दो दिन रह कर एलको पार्ककी तरफ चल दिये। वहा कुछ दिन रहनेका विचार किया।

ऐसी अफवाह थी कि सेन्टजानस्टनमें एक बडी सुन्दर स्त्री वालेस की प्रेमिका थी। उसको देखनेके लिये वालेस पादरीकी पोशाक पहनकर सेन्ट जानस्टनको आया। स्त्रीने बहुत दिनके वियोगके बाद बडे आदरसे नायकको ग्रहण किया। रात होने पर फिर तीसरे दिन आनेका वादा करके वालेस एलकोपार्कको विदा होगया।

वालेस भेष बदलनेमें विशेष चतुर और घोडा छिपानेमें बहुत सावधान था तो भी उसके एक शत्रुने उसे पहचान लिया और हिरेन और बटलरको इसकी खबर दी। उन्होंने उस स्त्रीको अपने यहां बुलवाया और कहा—"अगर सच बात न बताओगी तो तुम्हें आगकी जलती चिता पर चढना होगा और अगर साफ साफ कह दो तो तुम्हें धन और खिताब दिया जायगा और एक अच्छे नाइट से तुम्हारा व्याह करा दिया जायगा।" भय और लालचसे वह स्त्री वालेससे विश्वासघात करनेको राजी हुई। उसने ठीक ठीक बता दिया कि वालेस फिर किस समय आवेगा। उस समय उसके घर के बाहर किसी गुप्त स्थानमें हथियारबन्द आदमी आकर छिपे रहे। वालेसको देखनेके लिये उन लोगोंका मन अधीर होगया।

वालेसको इस साज़िशकी कुछ खबर न थी वह बादेगर प्रेमिका के पास आपहुंचा। विश्वासघातिनीने उससे बडा प्यार दिखाया। वालेस कुछही देर ठहरकर चलने लगा। पिशाचीने रातभर रहने को कहा। वालेसने कहा—"साथियोंको एकबार देखे बिना नींद न आवेगी।" पापिनीने देखा कि काम न बनने पर मैं मारी जाऊगी इस लिये रो गाकर उसे रात भर ठहरनेके लिये जिद की। जब वालेस किसी तरह राजी न हुआ तो वह जोरसे रो उठी। अपनी मृत्यु स्थिर जानकर पछताने लगी कि "मैं मृत्युसे बचनेके लिये प्राणसे भी प्यारेको मौतके हवाले करना चाहती थी अब कहां जान बचती है? इस जन्ममें जो होना था वह तो हुआ अब परलोकमें मेरी क्या गति होगी?" इस पश्चात्तापसे उसका हृदय जलने लगा। वह रह न सकी, सब हाल कहकर उसने वालेससे क्षमा मांगी। वालेसने उसका पश्चात्ताप हृदयसे समझकर उसे क्षमा किया और उसीकी पोशाक पहनकर स्त्रीके भेषमें दक्षिणी द्वारसे झटपट बाहर आया। "मैं वालेसको भीतर बन्द कर आई हूं तुम लोग जल्द मेरे घरमें जाकर उसे गिरफतार करो।" यह कहकर वालेस हथियारबन्द जवानोंका थक मिटाकर और उनको दूसरे काममें लगाकर एलकोपार्ककी तरफ नौ दो ग्यारह हुआ। उसको दौडते देखकर किसी किसीको सन्देह हुआ। उन्होंने उसका पीछा किया। वालेसने शेरकी तरह झपटकर दो को मार डाला बाकी भाग गये। वह निर्विघ्न अपने स्थान पर आगया।

छठा अध्याय।

वालेसका पीछा—उसके हाथसे फडनका सिर कटना।

कार्लेके हाथसे हिरेनका मरना—गास्कििला—फडनकी प्रेतमूर्ति—वालेसकी तलवारसे बटलरकी मृत्यु—वालेसका टरउडमें विधवा स्त्रीके घर टिकना—चाचासे मुलाकात—डनडफ और गिलबकमें जाना।

१२८६ ईस्वीके नवम्बर महीनेकी अन्धेरी रातमें वालेसने सेन्ट जानस्टनसे भागकर बडी मुश्किलसे जान बचाई। उसके भागते समय जो हल्ला हुआ उसीमें उसकी प्रेमिका गायब होगई। वालेस अपने भागनेके रास्ते में जो लाशें डाल गया था शत्रु उसीके सहारे एलओपार्कमें आपहुंचे। उनके साथ एक शिकारी कुत्ता था। उन्होंने वालेसका गुप्त स्थान ढूँढनेके लिये उसे वहां छोड दिया। उसके पीछे पीछे एक सौ हथियारबन्द जवान जाने लगे। इधर सेनापति बटलर ३०० सेना लेकर पार्क घेरकर बैठे और सेनापति हिरेन दो सौ सेना लेकर अन्तमें उनकी मदद करनेके इरादेसे कुछ दूर पर ठहरे रहे। सिर्फ ४० स्काटिश वीर उस दस गुनी अङ्ग-रेजी सेनाके सामने उपस्थित हुए। चारोंओरसे घेरा है भागनेका रास्ता नहीं इससे लडनेके सिवा दूसरा उपाय न था। अतएव उन्होंने युद्धकी ठानली। उस थोडीसी वीरसेनाने इस जोरसे अङ्ग-रेजों पर आक्रमण किया कि पहले ही वारमें ४० अङ्गरेज गिरे। बटलरकी सेना धीरे धीरे हताश होचली। उसकी शिथिलता देख कर वालेस दलबल सहित व्यूह तोडकर अपने किलेकी तरफ दौडा। टे नदीके उस पार किला था। सोचा था कि टे नदी पार होजायगी पर आकर देखा कि नदी बडी गहरी है। बिना तैरे पार नहीं होसकते। वालेसके साथियोंमेंसे ज्यादा आदमी

तैरना नहीं जानते थे इससे लाचार बन्ह इरादा छोड़ना पड़ा। नदी में डूबनेसे रणभूमिमें मनुको रुधिरसे पिछतर्पण करते करते प्राणदेना बेहतर समझकर वह वीरदल लौट आया और फिर लड़ने लगा। बटलर उन लोगोंको देखकर डरे नहीं यद्यपि अपनी तितर बितर सेनाको मिलित करके बड़ी तेजीसे आक्रमण किया। किन्तु जान पर खेलनेवाले स्वदेशानुरागियोंका तेज कौन सह सकता है? वह दैवीशक्तिसम्पन्न वीर रणक्षेत्रमें अद्भुत रणकौशल दिखाने लगे। मालूम होता था कि मानो दैवीशक्तिने उन्हें अजेय बना दिया है। दैवी शक्तिसेही उस उंगलियों पर गिननेलायक जातीयदलने अङ्गरेजोंकी लाशोंसे मैदानको श्मशान बना दिया। दो बारकी लड़ाई में एक सौ अङ्गरेज मारे गये। बटलर हताश होकर मैदान छोड़ कुछ दूर पर सेनापति हिरेनसे सलाह करने गये। उसी मौके पर वालेस अपने बचे हुए सोलह साथियोंको लेकर वेल्हटके मैदानसे चल दिया।

इधर बटलर हिरेनकी सेना लेकर मैदानमें आये। मैदान खाली देखकर उन्होंने वालेसकी खोजमें फिर उसी शिकारीकुत्तेको छोड़ा। कुत्तेमें अद्भुत बुद्धि थी उसने वालेसका रास्ता पहचान लिया। वालेस गास्क बनकी तरफ जाता था। लाचार वह रास्ता छोड़कर उसको दुर्गम पहाड़पर चढ़ना पड़ा। उसके एक साथी फाडन नामके आइरिशने उसके साथ जानेसे इनकार किया। उसको विश्वासघातक समझकर वालेसने उसका सिर काट डाला और लाश वहीं छोड़कर साथियों सहित पहाड़ पर चढ़ने लगा। वालेसकी देखरेख में स्टिफिन और कार्ले नामके दो सहचर साथ छोड़कर वहीं कहीं छिप रहे।

इधरसे बटलर और हिरेन अपने ५०० सैनिकों सहित वहां पहुंचे। कुत्ता फाडनकी लाश छोड़कर एक कदम भी आगे न बढ़ा। सब लोग एकचित्तसे वह लाश देख रहे थे कि इतनेमें चुपकेसे कार्ले और स्टिफिन उनमें आमिले। किसीने उन्हें शत्रु नहीं समझा।

हिरेन बड़े गौरसे उस लाशकी परीक्षा कररहे थे कि इतनेमें कार्लेने अपनी तलवारकी नोकसे उनके गलेमें गहरी चोट पहुंचाई और फिर उसी वक्त दोनो गायब होगये। उसी चोटसे हिरेन मर गये। सबने समझा कि वालेस जरूर कहीं पासही है उसके साथियोंके सिवा और किसीका यह काम नही है। हिरेनकी मृत्युसे अङ्गरेजी सेनाको बड़ा शोक हुआ। बटलर अधीर हो चीख मारकर रोने लगे। वह कुछ देर बेसुध पड़े रहे। पीछे कुछ धैर्य्य धरकर चालीस् सिपाहियो सहित हिरेनकी लाश दफन करनेके लिये सेन्टजानस्टन को भेजो और बाकी सेनाको कई टुकड़े करके वालेसकी खोजमें इधर उधर भेजा। स्वय कुछ सेना लेकर पासके वनकी निगरानी करने लगे।

वालेस जब चोटी पर कुछ दूर तक चढ़ गया तब उसे अपने प्यारे सहचर कार्ले और स्टिफिनको याद आई। उन्हें न देखकर समझा कि वह शत्रुओंके हाथमें पड़ गये घबराकर नीचे उतरा। चारों ओर ढूढ़ने लगा। ढूढते ढूंढते वह लोग गास्क किलेमें आगये। किलेकी चौड़ी और हवादार दालानमें सब आराम करनेलगे। पासके एक किसानके घरसे २ भेड़ लाकर जिबह करके पकाया खाया। खानेके बाद वह लोग लेटे हुए थे कि इतनेमें पासके पहाड़से बिगुल की आवाज आई। स्काटलेण्ड निवासी ऐसीही आवाज करके बिखरी हुई सेनाको जमा करते थे। वालेसने यह पता लगानेके लिये कि बिगुल किसने बजाया, पहले दो आदमियोंको भेजा। वह लौटकर नहीं आये। फिर वह आवाज आई, वालेसने फिर दो आदमी भेजे, वह भी नही लौटे। वह आवाज फिर भी कान फाड़ने लगी। वालेसने घबराकर सबके बाकी नवो आदमियोंको भेजा। मगर कोई नही लौटा। वह अकेला उस सुनसान स्थानमें बैठा था मन बड़े सोचमें पड़ा। एक तो काली रात दूसरे उस सुनसान अकेलेमें उस बड़ी इमारतमें अकेला, तीसरे साथियोंका न लौटना— इन सब बातोंसे। फिर भी उसकी कल्पना पागलसी होगई। इसी

ऐसा मालूम होने लगा मानो गन, यह बिगुल बजा रहे हैं। वह तलवार निकालकर जिधरसे आवाज आती थी उधर दौड़ा। किले की दालानसे आगे पैर रखना चाहता था कि ऐसा जान पड़ा मानो दालानके दरवाजे पर फडन अपना सिर हाथमें लिये खड़ा है। वालेसको देखकर उसने वह सिर उसके पैरकी तरफ फेंका। उठा कर मानो फिर फेंका। डरके मारे वालेसका खून जमने लगा। उसको विश्वास होगया कि यह फडनका भूत है आदमी नहीं। भयसे व्याकुल होकर वहांसे भागना चाहा। दरवाजे पर फडनकी प्रेतमूर्ति खड़ी है इससे उधरसे जानेकी हिम्मत न करके एक बन्द खिड़कीका किवाड़ पैरसे तोड़कर दस हाथ नीचे कूद पड़ा और वहांसे उठकर बेतहाशा भागा।

कुछ दूर पर नदी थी जब नदी पार हुआ तब वालेसकी जानमें जान आई। तब उसने उस किलेकी तरफ दृष्टि फेरी। उसे जान पड़ा कि मानो किला जल रहा है। उसने फडनके भूतको ही इस का कारण समझा। उसे यह भी विश्वास होगया कि उसी भूतने बिगुल बजाकर उसके साथियोंको मार डाला है। उन दिनों भूत का भय और भूतका विश्वास बहुतोंको था। वालेस इस भौतिक उत्पातसे डरा और उदास हुआ। वह नदीके किनारे टहलते टह-लते भगवानकी स्तुति करने लगा, पागलकी तरह रोते रोते उसने भगवानसे उनका अभिप्राय पूछा।

इतनेमें उषादेवी पूर्व आकाशमें हंसी उठी। रातका अन्धकार सूर्य्यके भयसे भागकर पहाड़की गुफामें जा छिपा। इतनेमें बटलरने दूरसे वालेसको देखा। वह स्काटोंकी चाल रोकनेकी गरजसे उसी नदीके किनारे घोड़े पर टहलते थे वालेसको देखतेही उधर घोड़ा दौड़ाया और पास आकर उससे नामधाम पूछा। वालेसने नाम छिपाकर कहा कि मैं सर जान स्टुआर्टके पास एक खबर लेजा रहा हूं। बटलरने कहा—"तू झूठ बोलता है तू जरूर आदमी है।" यह कहकर तलवार निकालकर उस पर

दौडे। वालेसकी तलवारने झट म्यानसे निकलकर बटलरकी टांग काट डाली। लङ्कडे सेनापति उसी वक्त घोडेसे गिर पडे। वालेस ने उनके घोडेका गला पकडकर बटलरका सिर काट डाला। एक अङ्गरेज सैनिक दूरसे दौडा हुआ आया। वालेसने उसका बर्छा छीन लिया और बटलरके घोडे पर सवार हो डालरियककी तरफ चला। अङ्गरेज सेनाने उसका पीछा किया। जो उसके पास आने लगे उन्हें वह मारने लगा। इस तरह अङ्गरेजोंका खून बहाते वालेस तेजीसे जाने लगा। बटलरका तेज घोडा भी इस तरह दौडते दौडते थक गया। वालेस घोडा छोडकर आध कोस पैदल गया। आगे फिर एक घोडा मिला। वालेसने उस पर चढकर ज्योंही बाग छोडी त्योंही अङ्गरेज सेना उसके पास पहुंच गई। उसने सरपट घोडा दौडाया तो भी कोई कोई पास पहुंचने लगे उन्हें वह तलवारसे काटने लगा। इस तरह २० अङ्गरेज मारेगये। अन्तमें वालेस एक दलदलके सामने आपहुंचा मगर यहां उसका घोडा गिर पडा और फिर नहीं उठ सका। उसे लाचार होकर फिर पैदल चलना पडा। बडी फुर्तीसे दौडकर शत्रुओंकी नजरसे बचा, अन्तमें उसने फोर्थके किनारे आकर केम्बकस नगरके पास नदी पार होकर शत्रुओंके हाथसे जान बचाई।

यों पीछा करनेवालोंके हाथसे पीछा छुडाकर वालेस डरउडकी तरफ चला। दूसरे दिन सूर्योदयसे पहले वहां एक परिचित विधवा स्त्रीके घर आया। उसका थका मांदा शरीर विश्राम चाहता था यहां आकर पूर्ण विश्राम पाया। विधवा खुद वालेसके लिये भोजन बनाने लगी। उसकी झोपडी वालेसके लिये बेखतर नहीं थी इस लिये उसने पासके बनमें एक पेडके नीचे वालेसके लिये बिस्तर जमा दिया। स्त्रीके दो लडके उसके पैर दाबने लगे। इधर उसने वालेसके साथियोंका पता लेनेके लिये एक औरतको गास्क किले की तरफ भेजा और वालेसकी खबर देनेके लिये तीसरे लडकेको डुनिडिक्स उसके चाचाके पास भेजा।

खबर पातेही उसके चाचा वहां आये। वालेससे चाचाकी बहुत बातें हुई। उन्होंने वालेसके कामको पागलपन बताकर हंसी की और कहा—"तुम अकेले एडवर्डके सेनासमुद्रमें कूदकर आप डूबोगे, डूबे हुए स्वदेशको हरगिज निकाल न सकोगे। इसलिये मेरा कहना मानो और इस असम्भव आशाको छोड़कर एडवर्डके अधीन कहींके लाट बनकर सुख चैन करो। एकबार कहनेसे एडवर्ड मान लेंगे इसमें मुझे शक नहीं है।" यह वाक्य वालेसके कानोंको बहुत बुरे लगे। उसने जवाब दिया—"मैं या तो स्काटलेण्डमें फिर शान्ति स्थापित करूंगा नहीं तो उसी काममें जीवन देदूंगा, स्काटलेण्डके पराधीन रहते मैं कोई सुख नहीं चाहता।" धन्य वालेस! धन्य तुम्हारा स्वजातिप्रेम! तुम्हारे जैसे राजनीतिक सन्यासीकी चरणरज जिस देशमें पड़ती है उस देशकी सदाकी पराधीनता भी दूर होजाती है।

वालेसकी मोहिनीशक्तिसे चाचाकी राय बदल गई। उन्होंने हृदयसे वालेसके उदारसंकल्पका अनुमोदन किया। उन लोगोंकी बातचीत कार्ल और स्टिफिनके अचानक आजानेसे रुक गई। अध्यक्ष वालेसको सकुशल देखकर उनके आनन्दकी सीमा न रही। वह लोग किस लिये वालेसका साथ छोड़कर रास्तेमें छिप गये थे और उसके बाद क्या क्या किया सब उन्होंने वालेसको कह सुनाया। वालेसने सबसे पहले उन्हींकी जबानी सुना कि अङ्गरेज सेनापति सर जिरार्ड उनकी तलवारसे मारे गये। वह लोग वहां आनन्दसे वार्तालाप कर रहे थे इतनेमें जो स्त्री गास्क किलेमें भेजी गई थी वह लौट आई। वह कहने लगी—मैं देख आई कि गास्क किलेको जानेका रास्ता अङ्गरेज सैनिकोंकी लाशोंसे भरा पड़ा है। (पाठकों को याद होगा कि वालेसने अपने पीछा करनेवालोंको मारकर उन की लाशोंसे गास्कका रास्ता श्मशान बना दिया था) वह किला और उसकी दालान ज्योंकी त्यों है उसका एक पत्थरभी इधर उधर नहीं आ है किन्तु बिगुलकी आवाज सुनकर जो लोग गये थे उनका

कुछ पता न पाया।" इस खबरसे वालेसका फडनको प्रेतमूर्तिका विश्वास और पक्का होगया।

वालेस उस जङ्गलमें अब अधिक दिन ठहरनेको राजी न हुआ तब उस स्त्रीने उदारतापूर्वक उसे बहुतसा रुपया दिया और अपने बड़े और मझले बेटेको उसके साथ कर दिया। उसके चाचाने उन लोगोंको बढ़िया घोड़े और वीरोंकी पोशाकें दीं। उसी रातको वालेसने कार्ले, स्टिफिन और उस स्त्रीके दोनों लडकोंसहित डनडफ की तरफ कूच किया। सर जान ग्रेहम नामका एक बूढ़ा नाइट—जिसने लार्गसकी लडाईमें बडी बहादुरी दिखाई थी—यहांका मालिक था। उसने बुढ़ापेमें शान्तिसे रहनेके लिये लाचार होकर एडवर्डसे सन्धिकी थी किन्तु उनकी अधीनता स्वीकार नहीं की। वालेसको पाकर वह बडा प्रसन्न हुआ। वालेस बडे आदरसे उसके किलेमें तीन दिन रहा। ग्रेहमके उसीके नामका एक पुत्र था। उसने यौवनावस्थामें ही प्रान्तिक युद्धमें स्काटराज अलकजेण्डरको बड़ी मदद की थी इस लिये उन्होंने उसे "वारविकका नाइट" की उपाधि दी। इस वीर युवकसे वालेसकी बडी मित्रता होगई। यह मित्रता मरते दम तक न टूटी। ग्रेहमने जीतेजी वालेसका साथ न छोडा। वनमें किलेमें रास्तेमें लडाईमें जहां वालेस जाता वहां ग्रेहम छायाकी तरह उसके पीछे पीछे रहताथा। वालेसके कष्ट यन्त्रणामय जीवनमें ग्रेहम उसका प्रधान आश्रयस्थल था।

पर गम्भीरता छागई। किसी किसीने यह कहकर मनको प्रबोध दिया कि जब वालेसको स्टर्लिङ्ग पुल पार होते किसीने नहीं देखा तो मालूम होता है कि वह फोर्थमें डूब गया। किन्तु पर्सीको यह विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने सोचा कि वालेस बड़ा बली और चतुर है सम्भव नहीं कि वह जलमें डूब गया हो। इस लिये उनका मन आगेकी बात सोचकर घबराया। इस समय सर जान स्टुअर्ट सेन्ट जानस्टनके शेरिफ बनाये गये।

वालेसने गिलबककमें पहुंचकरही करमवीमें चाचा सर रैनाल्डको, रिकार्टनमें भाई एडम वालेसको और दोनों मित्र बायड और क्रेयर को अपना हाल बतानेके लिये कार्लीको भेजा। वालेसकी सफलता का समाचार सुनकर वह लोग बेहद खुश हुए और उसी वक्त उस की मददके लिये बहुतसा रुपया भेजा।

जिन दिनों वालेस गिलबक्कमें था उन दिनों कौतूहलमें आकर कभी कभी लेनार्कशायरकी तरफ जाया करता था। उसकी तल-वार अकसर अङ्गरेजोंका खून पीती थी। वह रास्तेमें जहां तितर बितर अङ्गरेजी सेना देखता उस पर हमला करता। उसकी तेज तलवारसे किसीकी रक्षा न होती, यहांतक कि खबर देनेके लिये भी कोई लौटने नहीं पाता था। हेसिलरीग लेनार्कसायरके शेरिफ थे। उनका मिजाज बड़ा कड़ा और स्वाधीन था प्रजा उनको यम के समान समझती थी। उनको इस बातका बड़ा आश्चर्य हुआ कि कौन इस तरह मेरी सेना बरबाद कर रहा है। उन्होंने अपने सैनिकोंको हुक्म दिया कि कहीं जाओ तो आत्मरक्षाके लिये इकट्ठे होकर जाओ। वालेस जब शत्रु सेना अधिक देखता तब कुछ छेड़ छाड़ न करता। उसके चारो साथी छाया तरह उसके पीछे पीछे रहते थे।

सातवां अध्याय।

वालेसका प्रणय—लाकमेबेन और क्राफोर्ड किले पर अधिकार।

वीरका हृदय भी प्रणयसे खाली नहीं है। ऐसा कोई हृदय नहीं देखा जाता जहां प्रणयकी अमलदारी न हो। राजाकी अटारी लेकर दरिद्रकी झोपडी तक सर्वत्र प्रणय विराजमान है। अनुराग संसारत्यागी सन्यासियोंके हृदयमें भी प्रवेश करता है। वालेस राजनीतिक सन्यासी होकर भी इसके हाथसे न बच सका। परम-योगी दिगम्बर भी इसके हाथसे नहीं बचे। जिसका हृदय स्वदेश की दुर्दशासे शोकाकुल था, जिसने प्रण किया था कि स्वदेशका उद्धार किये बिना किसी तरहका दुनियावी सुख नहीं करूंगा वह आज प्रेमका जोर रोक न सका। उसने इसको जातीयव्रतमें खलल डालनेवाला बताकर हृदयको बहुत समझाया किन्तु हृदयने कुछ ख्याल नहीं किया। लेनार्कशायरकी कोई अलौकिक सुन्दरी मनो-मोहिनी उच्च-वंशोद्भवा कोमलस्वभावा रमणी उसके चित्तविकारका कारण थी।

मेहमानदारीके लिये कई प्रकारके भोजन बनाये गये थे। युवती युवक परस्परकी मुलाकातमें एक दूसरे पर प्रेमासक्त होगये। युवती ने कहा—"मैंने आजसे आपके चरणोंमें आत्मसमर्पण कर दिया। जङ्गल, वन जङ्गल, रणभूमि या शान्तिनिकेतन—आप जब जहां रहेंगे, दासी छायाकी भांति आपके पीछे पीछे रहेगी, मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि आपके सिवा और किसी पुरुषकी पत्नी न हूंगी। अब प्रार्थना यही है कि दासीको अपनाइये।" वालेसका हृदय रमणी के प्रेमसे पिघल गया किन्तु वह फिलहाल विवाह करनेको राजी न हुआ। कहा—"जितने दिन स्काटलैण्ड शत्रुके हाथमें रहेगा उतने दिन विवाहमें मेरा अधिकार नहीं है। जिस दिन स्वदेशको शत्रु रूपी कांटेसे अलग कर सकूंगा उसी दिन तुम्हारा पाणिग्रहण करूंगा। मैं भी प्रतिज्ञा करता हूं कि तुम्हें छोडकर और किसी स्त्रीको पत्नी नहीं बनाऊंगा।" इसी तरह दोनो प्रतिज्ञा करके एक प्रकार नैतिकदम्पती होगये। उसी दिनसे वह दोनो परस्पर पति पत्नीकासा व्यवहार करने लगे। नैतिक विवाह करके दोनोंने बड़े आनन्दसे भोजन किया।

वालेस दूसरे दिन तडके चारों साथियोंसहित गिलबक छोडकर कर्हौडकी तरफ रवानाहोगया। कर्हौडमें उसका भतीजा टाम हालिडे और भाई एडवर्ड लीटल रहते थे। उन्होंने समझ लिया था कि वालेस लडाईमेंमारागया। आजअचानक उसे देखकर आनन्दसेउछल वालेस वहां तीन दिन रहा। चौथे दिन लाकमेबेनकी तरफ चला। वह सब मिलाकर १६ सवार होगये हैं। शहरसे कुछ दूर नाकउड नामक बनमें सबको छोडकर वालेस लीटल कार्ले और हालिडेको ले कर शहरमें पैठा। वहां किसी सरायमें भोजन बनानेका हुक्म दे कर घोडोंको वहीं बांध दिया और आप पासके गिरजेमें जा कर भजन सुनने लगे। उनकी गैरहाजिरीमें क्लिफोर्डने चार सवारों सहित उस सरायमें आकर पूछा—"यह किसके घोडे बंधे हैं?" भठियारीने कहा—"हुजूर। पश्चिमसे चार भले आदमी आकर मैं

यहां ठहरे है उन्हींके चारों घोड़े है।" घमण्डी क्लिफोर्डने कहा— "वह भूत ऐसे सुन्दर घोड़े लेकर क्या करेंगे?"—यह कहकर उसने चारोंकी दुम काट डाली। भठियारी चिल्ला उठी। उसकी आवाज सुनकर वालेस और उसके साथी आपहुचे। इधर क्लिफोर्ड दुम काटकर रफूचक्कर हुआ। वालेस असली हाल सुनकर क्रोधसे लाल होगया तो भी इस दिल्लगीकी वातसे उसकी हसी न रुकी। उसने साथियो सहित क्लिफोर्डका पीछाकिया और पुकारकर हसीसे कहने लगा—"यार! मालूम होगया कि तुम एक चतुर हजाम हो, मै भी एक हजाम हू पश्चिमसे अच्छे रोजगारकी तलाशमे आया हू। दिल बहुत चाहता है कि तुम्हें अपना इल्म दिखाऊ।" यह कहते कहते वालेस क्लिफोर्डके पास पहुच गया। पहुचनेके साथ उसकी भीम तलवारने क्लिफोर्डको दो टुकड़े कर डाला। एक औरको भी मारा। वालेसके साथियोंने बाकी तीनको मार डाला।

वह लोग क्लिफोर्डका घोडा लेकर डेरे पर लौट आये और रसोईकी तय्यारी तक न ठहरे। भठियारीको भोजनका दाम चुका अपने दुमकटे घोडे और क्लिफोर्डके सुन्दर घोडेको लेकर चलदिये।

क्लिफोर्डके मारे जानेकी खबर नगरमे फैलतेही अङ्गरेजी किले से २० सवार वालेस और उसके साथियोंकी खोजमें निकले।

खून बहते देखकर क्रोधमें मत्त हाथीकी तरह अकेले अङ्गरेजों पर टूट पडा। चण भरमें उसकी तलवारने पन्द्रह सवारोंको जमीन पर सुला दिया। बाकी सवार यह बेढब सामना देखकर किलेकी तरफ भगे। स्काटोंने भागती हुई अङ्गरेजी सेनाका पीछा किया। रादमें हालिडेने देखा कि दो सौ अङ्गरेजी सेना पासके जङ्गलमें छिपी हुई है तब उसने चाचाको लौटनेकी सलाह दी।

जङ्गलकी अङ्गरेज सेनाने जब देखा कि स्काट कहींको तरफ भागा चाहते हैं तब वहांसे निकलकर उनका पीछा किया। सर ह्यू नामके एक प्रवीण अङ्गरेज सेनापति इस सेनाके नायक थे। वह बखतर पहने हुए एक खूबसूरत घोडे पर सवार थे। वालेस एक पेडसे पीठ सटाये सर ह्यूकी बाट देखता था। ज्योंही वह उसके सामने आये उसकी कराल तलवार उनके सिरके दो टुकडे करके गले पर आकर ठहरी। वालेस चट ह्यूके घोडे पर सवार होगया। सेनापतिकी मृत्यु देखकर अङ्गरेजोंने उसे घेर लिया। उसी वक्त उसके साथी भी सहायताको आपहुचे। दोनों ओरसे घोर संग्राम होने लगा। हालिडे पैदलही विलचण वीरता दिखाने लगा। वालेस घोडे पर चढा हाथमें बर्छा लिये शेरकी तरह शत्रुओंका मथन करने लगा। मानो चारोंओर मौत फैलाने लगा। अन्तमें अङ्गरेज हताश और बलहीन होकर भाग चले। इस लडाईमें सेनापति के सिवा बीस अङ्गरेज मारे गये और बहुतसे घायल हुए। स्काटों मेंसे एक भी नहीं मारा गया सिर्फ पाच आदमी जखमी हुए।

ग्रेष्टाक नामका एक अङ्गरेज सैनिक सर ह्यूके नीचे अफसर था। उसने मुट्ठी भर स्काटोंके सामने पीठ दिखानेवाले अङ्गरेजों को धिक्कार देकर तीनसौ सेना लेकर आक्रमण किया। वालेस और उसके सब साथी अब घोडों पर सवार थे। वह लोग धीरे धीरे शत्रुओंको एक तंग दर्रेमें लेआये। वालेसने इतनी थोडी सेना ले कर इतनी बडी सेनाके सामने खुले मैदानमें उतरनेका साहस नहीं किया इसीलिये हिकमतसे उसे तंग जगहमें लेगया। वह जानता

था कि इस तंग जगहमें संख्या ज्यादा होनेसे कुछ मुआका नहीं है। अङ्गरेज अपनी भूल समझकर पीछे हटे। वालेसने उनका पीछा करनेकी हिम्मत न की।

इसी हालतमें दोनों पक्षकी सेना पड़ी है इतनेमें वालेसके प्यारे मित्र ग्रेहम और कर्कपेट्रिक सेना सहित वालेसको ढूंढते हुए वहां आपहुचे। ग्रेहमके साथ तीस और कर्कपेट्रिकके साथ पचास चुने हुए योद्धा थे। दूरसे मित्रोंकी सेना देखकर वालेसने आक्रमणका इरादा किया। उसका जो इरादा था वही काम था। भयानक शेरकी तरह अङ्गरेजी सेना पर टूट पड़ा। दैवीशक्तिसम्पन्न स्वजाति प्रेमी वीरदलका वेग किसकी ताकत है जो बरदाश्त कर सके? पलक भरमें अंगरेज सैनिकोंकी लाशोंसे मैदान भर गया। यह बिजलीकासा तेज अङ्गरेजोंसे बरदाश्त न होसका। वह पीठ दिखाकर भागे। सेनापति ग्रेस्टाक भी सिपाहियोंके घेरेमें घोड़ेपर सवार होकर भागा। किन्तु उसके सामने ग्रेहम और कार्कपेट्रिक चले आये। उधर वालेसने उसका पीछा किया। उसने दूरसे ग्रेहमको देखकर ग्रेस्टाक पर आक्रमण करनेका चिल्लाकर हुक्म दिया। ग्रेहम ने झट अङ्गरेज सेनापतिके पास पहुंचकर तलवारसे उसका सिर काट डाला। सेनापतिके मारे जाने पर अङ्गरेजी सेना भयसे इधर उधर भागी। कितनेही सिपाही पीछा करनेवाले स्काटोंके हाथ मारे गये।

वालेसने उसी रातको लाकमेबेन किले पर आक्रमण करनेका इरादा जाहिर किया। कहा—लड़ाईमें जितनी सेना मारी गई है उससे मालूम होता है कि किलेकी रक्षाके लिये बहुत थोड़े आदमी हैं। सबने उसके इस इरादेका अनुमोदन किया और फौरन उसके अनुसार काम किया गया। उसी कालीरातको उस वीरदलने लक्रमेबेन किलेकी तरफ कूच किया। टाम हालिडे उस प्रदेशसे ज्यादा वाकिफ था इस लिये वही उस दलका पथप्रदर्शक बना। हालिडे के प्रधान सहचरोंमेंसे वाटसनको कुछ दिन उस किलेमें रहना पड़ा था। उसकी किलेके सब लोगोंसे मुलाकात बात थी। वह अकेले आगे आकर दरवाजे पर खड़ा हुआ। दुर्गद्वाररक्षकने पूछा— "वाटसन। क्या खबर है?" वाटसनने कहा—"सेनापति स्वयं आरहे हैं शीघ्र द्वार खोल दीजिये।" बिना कुछ सोचे विचारे उसने उसके कहनेसे दरवाजा खोलदिया। हालिडेउसके पीछे छिपा था। रक्षकने ज्योंही दरवाजा खोला हालिडेकी तलवारने उसे काट डाला। उसके हाथमें चाबियोंका गुच्छा था, वाटसन उसे लेकर आगे आगे चलने लगा और हालिडे तथा दूसरे लोग उसके पीछे पीछे। किसीने उन्हें नहीं रोका। किलेमें ऐसा कोई था ही नहीं जो उनको रोकता। सिर्फ दो नौकर और कई स्त्रियां थीं। इसलिये वह लोग बेधड़क चारों ओर घूमने लगे मानो वही किलेके मालिक थे। किला देखभाल कर सब भूख प्याससे विकल होगये थे, लड़ाईमें गये हुए अङ्गरेजोंके लिये जो खानपानका सरञ्जाम रखा था उससे अपनी भूख प्यास बुझाने लगे, केवल वाटसन दरवाजे पर पहरा देने लगा। इतनेमें मैदानसे भागी हुई अङ्गरेजी सेना आकर दरवाजे पर खड़ी हुई। उन लोगोंको जरा खबर न थी कि किला दुश्मनोंके हाथ आगया है। इस लिये उन्होंने बेखटके भीतर घुसना चाहा। वाटसनने कुछ रोकटोक न की। वह लोग ज्योंही भीतर पहुंचे विजयी स्काटसेनाने सबका काम तमाम कर दिया। एक भी योधा न बचा।

दूसरे दिन तड़के स्काटिश सरदार, वाटसनके हाथमें किलेका

भार और अङ्गरेज औरतोंको स्वदेश चले जानेका हुक्म देकर कार्डोड की तरफ रवाना हुए। उस दिन वहां रहकर दूसरे दिन नहाने खानेके बाद क्राफोर्ड मूरकी तरफ कूच कर गये। यहां आकर वह कई दल होगये। टाम हालिडे कईल किलेको लौट गया। अङ्गरेजोंको मालूम नहीं हुआ कि वह इस लड़ाईमें शामिल था। वह वैरवटके वहां रहने लगा। कार्कपैट्रिक एस्कडेल वनमें जारहा यहां अङ्गरेजोंसे उसको कुछ डर न था।

वालेस और ग्रेहम चालीस साथियों सहित क्राफोर्ड किलेको रवाना हुए। वालेस उसी रातको उस किले पर आक्रमण करना चाहता था। इस समय मार्टिण्डल नामका एक कम्बरलैण्डनिवासी अङ्गरेज किलेका अफसर था। वालेस पासकी क्लाइड नदीके किनारे सब सेना छोड़ एडवर्ड लीटल नामके सिर्फ एक साथीको लेकर शहरमें पैठा। एक होटलके पास जाकर उसने एक स्काट स्त्रीसे सुना कि इस समय अङ्गरेजसेना उसी होटलमें खापीकर मस्त हो रही है। स्त्रीने कहा—"अगर तुम स्काट हो तो जल्द भागो, क्यों कि वह लोग वालेस नामके एक स्काट और उसके लाकमेबेन किला लेलेनेकी चर्चा करते थे, इसलिये उधरसे होकर जाना तुम्हारे लिये खतरेसे खाली नहीं है।" वालेसने स्त्रीको अपना सच्चा हित चाहनेवाली समझा किन्तु उसकी सलाहके बरखिलाफ काम करनेपर मुस्तैद हुआ।

उनके होश हवास ठिकाने कर दिये थे। वालेसने मग्रको मार डाला। हारररक्क लौटलने भी पाच सिर गिराये। इधर से हम वालेसकी आज्ञानुसार किलेके दरवाजे पर पहुंचा। किवाड़ बन्द देखकर उसने उसमें आग लगा दी। अग्निलीला देखकर वालेस उधर दौड़ा। देखतेही देखते किवाड़ जलकर भस्म होगया यह लोग भीतर घुसे। वहां सिर्फ कई औरतें थीं इस लिये यह लोग चारोंओर घूमने लगे। खानेकी कोई चीज न मिली। पीछे उन्होंने होटलसे खाना मगाकर भूख बुझाई और रात वहीं बिताई। सवेरे औरतोंको रिहाई देकर किलेमें आग लगाई और डनडफको कूच कर दिया। यह रात उन लोगोंने डनडफमें बड़े आनन्दसे बिताई।

आठवां अध्याय।

हेमिङ्गटनकी उत्तराधिकारिणीसे वालेसका विवाह—अङ्गरेजोंसे घिरकर वालेसका कार्टलेन क्रेगसमें आश्रय लेना—हेसिल रीगके हाथसे उसकी नवोढा पत्नीकी मृत्यु—वालेसकी प्रतिज्ञा—उसके हाथसे हेसिलरीगकी हत्या—बीगरका प्रसिद्ध युद्ध—वालेसका स्काटलेण्डका अभिभावक चुना जाना—क्री नदीके किनारेके किले और टरमबरी किले पर अधिकार—अंगरेजों से सन्धि—वालेसका कमनकनगर में निवास।

सन् १२९७ ईस्वीके मार्च महीनेमें वालेस डनडफसे गिलबंकको रवाना हुआ। वसन्त ऋतु आई है। वृक्षावली हरे हरे सुन्दर पत्तोंसे शोभायमान है चारों ओर चिड़ियोंकी मीठी तान उड़ रही भांति नई सजधजसे जगतका मन मोह रही है। ऐसे समयमें

किस प्रणयीका चित्त ठिकाने रह सकता है? वालेसका उदार-हृदय भी वसन्ती वायुसे प्रणयानलमें पिघलने लगा। इतने दिन लड़ाई भिड़ाईमें लगे रहनेसे प्रणयिनी स्त्रीका ख्याल नहीं रहा। किन्तु आज इस विश्रामागारमें वसन्तके झकोरेसे उस अनुपम रूपवती निराश्रया युवतीके लिये उसका मनमतङ्ग मतवाला होगया। विरह सह न सका और उसके घर जापहुंचा। कई दिनके आवागमनसे और प्रणय-परिणय और सामरिकजीवनसे उचित अनुचित सम्बन्धके विषयमें अनेक तर्क वितर्क करनेके बाद वालेस उससे खुल्लमखुल्ला विवाह करनेको राजी हुआ। वालेसके प्रियमित्र पादरी वुं यरने इस विवाहकी पुरोहिताई की। नवीन दम्पतीने कुछ दिन आनन्दपूर्वक मधुचन्द्रिमा (Honey Moon) बिताई। कुछही दिन बाद युवती गर्भवती हुई और समय पाकर एक लड़की पैदा हुई।

इस प्रकार वालेस यद्यपि मनके सुखसे प्यारीके साथ रहने लगा तथापि उस सुखके समय भी देशकी दुर्गति याद करके उसे शोक होने लगा। जबतक अङ्गरेज स्काटलैण्डमें शासन करते हैं तबतक वालेसके चित्तको उचे सुखकी आशा कहां?

हुआ है। इसलिये उसने एक वएक जान पर खेलना नहीं चाहा। झगडा बचाने लगा। पटन्त पवनकी भांति चुपचाप छेडछाड सहने लगा। किन्तु जब देखा कि अङ्गरेज सामने आरहे हैं तब देर करना उचित न समझकर यह लोग जबरदस्त शेरकी तरह उछलकर उन पर आटूटे। पल भरमें लाशों और रक्तकी धारासे रणभूमि डूब गई। किन्तु इतनी अङ्गरेज सेनाने आकर उन्हें घेर लिया कि पचास अङ्गरेजोंको जमीन पर सुलाकर और व्यूह तोडकर उन्हें मैदानसे भागना पडा। वालेस दलबल सहित प्यारीके घरकी तरफ दौडा। अगरेजोंने पीछा किया। वालेस की पत्नीने पति और उसके साथियोंको विपद देखकर सिंहद्वार खोल देनेका हुक्म दिया। स्काटलोग उस रास्ते से भीतर चले गये। जबतक सब स्काट सेना खिडकीकी राह किसी बेहतर जगहमें न पहुंची तबतक वालेस और ग्रेहम अद्भुत वीरतासे सिंहद्वारकी रक्षा करते रहे। इधर स्काट कार्टलेनक्रेग नामकी गुफामें जाछिपे। यह गुफा अब भी "वालेस गुफा" कहलाती है। साथियोंके निरापद स्थानमें पहुंच जानेकी खबर पाकर वालेस और ग्रेहम सिंहद्वार छोडकर उधरही चले।

प्रणय स्त्रीको देवी बना देता है। प्रणय उसे अपना स्वार्थ भूल जानेकी शिक्षा देता है। पतिके ऊपर आफत देखकर अपने भविष्य का विचार न करके वालेसकी पत्नीने अपने महलका सिंहद्वार खोल दिया। पति और उसके साथियोंको खिडकीसे भाग कर जान बचानेकी सलाह दी। स्वदेशका उद्धार करके प्राणसे भी प्यारी स्त्रीको सुख देनेकी आशासे आज वालेसने पत्नीकी सलाह मान ली। उन लोगोंके चले जाने पर प्यारीकी क्या गति होगी वह इस बातको ख्यालमें नहीं लाया। वह स्वय शत्रुओंकी स्त्रियोंसे जैसा सलूक करता था शायद समझा था कि अगरेज सेनापति भी उसकी स्त्रीसे वैसाही सलूक करेगे। किन्तु उसकी यह धारणा दुराशा मात्र हुई। सती पतिका प्राण बचानेके अपराधमें

अङ्गरेज सेनापतिकी आज्ञासे पकड़ीगई और उसीवक्त तलवारसेकाट डाली गई। वालेससे नाता तोड़कर सतीने प्राणत्याग तो किया किन्तु उसकी प्राणोत्सर्गका चमकताहुआ दृष्टान्त सदाके लिये स्काट-स्त्रियोंको आदर्श बन गया।

पत्नीके मारे जानेकी खबर उसकी खास दाईने वालेस तक पहु-चाई। इस शोचनीय समाचारसे उसके, उसके प्रियमित्र ग्रेहम और दूसरे स्काटोंके शोककी सीमा न रही। वालेसका हृदय यद्यपि शोकसे विह्वल होगया था तथापि वह वीरोचित धैर्य्यसे शोक सम्हालकर रोतेहुए प्रियमित्र और दूसरे साथियोंको इस तरह उत्ते-जित करने लगा—

समूचा वीरदल बदला लेनेकी इच्छासे मत्त होकर रातको लानार्क की तरफ रवाना हुआ। अगरेजोंको उनके आक्रमणका गन्ध न था वह बेफिक्र सोते थे। शहरमें जाकर उस दलके दो टुकडे हुए। एक टुकडेको लेकर वालेस हेसिलरीगके महलको चला और दूसरे को लेकर ग्रे हम सर राबर्ट थार्नको ढूंढने लगा। शेरिफ हेसिल-रीग ऊंची अटारी पर बेखबर सो रहे थे इतनेमें वालेस उनके शय-नागारके दरवाजे पर पहुचा। उसके लात मारनेसे दरवाजा टूट गया। झन्नाटेकी आवाजसे हेसिलरीगकी आंखें खुलीं। वह डरके मारे सीढियोंकी तरफ भागना चाहते थे कि वालेसने उनका गला पकड लिया और तलवारसे काट डाला। अचिगलेकका शक दूर नहीं हुआ उसने हेसिलरीगको अब भी जीता समझकर तलवार की नोक उनके बदनमें दोबार गडाई। हेसिलरीगका पुत्र पिताकी सहायताको दौडा पर वह भी पार हुआ। महलमें कुहराम पडगया। रोनेकी आवाज सुनकर सडकमें बहुत लोग जमा होगये। उधर ग्रे हमने सर राबर्टथार्नके मकानमें आग लगा दी वह उसीमें जलकर भस्म होगये। और भी कितनेही नगरनिवासी जल गये। वहांके वाशिन्दोंमें अधिकतर स्काट थे इसलिये वालेससे उनको आपसे आप सहानुभूति हुई। सबने आकर वालेसका साथ दिया। सैकडों अङ्गरेज मारे गये। लानार्क पर स्काटोंका पूरा अधिकार होगया। जल्द यह खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई। झुण्डके झुण्ड स्काट आकर वालेसके झण्डेके नीचे खडे हुए। सबने एक वाक्यसे वालेस को सरदार और नेता माना। वालेसने अब अपने हृदयका भाव छिपा नहीं रखा, आज सबके सामने साफ कह दिया कि स्काटलेंड को अगरेजोंकी गुलामीसे छुडानाही मेरे जीवनका एकमात्र व्रत है।

लानार्क विजयके बादही वालेसका नाम पहले पहल इतिहासमें आया। यहींसे जातीय ऐतिहासिक उसको समूचे जातीयदलका नेता मानने लगे। महात्मा शिवाजी जैसे पहले डाकू कहलाये थे उसी तरह वालेस भी पहले

डाकू बताया गया था। सच पूछिये तो मामूली आदमी महात्माओं के अलौकिक कार्य्यों का कारण समझनेमें असमर्थ होकर उनकी निन्दा किया करते हैं * हरेक समाज सुधारक, हरेक धर्मसुधारक और हरेक राजनीतिक सन्यासीका जीवन ऐसीही अनुचित निन्दा के तीरोंसे जखमी हुआ करता है। वह लोग जिनका दुःख दूर करनेके लिये अपना सुख छोड देते है अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं वही उनकी उद्देश्य पर सन्देह करते है और हर तरहसे उनके काममें विघ्न डालते है। खासकर राजनीतिक सन्यासीकी जिन्दगी बडे खतरेमें होती है। वह शत्रु मित्र, स्वजाति विजाति सबसे सताये जाते है। जबतक सफलकाम न हो तबतक वह शत्रुओंके सामने बागी और स्वजातिके सामने अशान्ति फैलानेवाले डाकू हैं। अगर सफलमनोरथ हुए विना वह मरजायं या यह काम छोड दे तो इतिहासमें उनका ऐसाही चित्र खींचा जाता है।

स्काटलेण्डके भाग्याकाशमें इस तरह जो फिर दिन लौटता था उसकी खबर रथवेनके मध्यस्थ सर पालिन डो वालिसने एडवर्डके पास भेजी। यह आदमी स्काटलेण्डका होकर भी जातीय स्वाधीनता एडवर्डके चरणोंमें बेचनेको तैयार हो गया था। इस जातीय विश्वासघातके इनाममें एडवर्डने रथवेनके गवर्नर मध्यस्थ सरको हटाकर उसकी जगह इनको बिठाया। इसीकी चिट्ठीमें एडवर्डको सबसे पहले यह मालूम हुआ कि स्काट लोग स्वदेशको अंगरेजोंकी बेडीसे छुडाने पर मुस्तैद हैं। एडवर्ड स्काटलेण्डको फिर काबूमें करनेके लिये बडी भारी सेना लेकर उधर रवाना हुए। उनकी छावनीमें रिकार्टनवासी जाप नामका एक काला स्काट था। अंगरेज उसे ग्रिमस्पीके नामसे पुकारते थे। वह वालेसका नाम और गुणावली सुनकर उसकी खोजमें निकला। खोजते खोजते आइल प्रदेशमें जापहुंचा। वहां स्काटिश अधिनायकसे भेंट हुई। वालेस सेना जमा करनेके इरादेसे वहां गया था। उसने जापकी जबानी इङ्गलेण्डकी भीतरी हालत और एडवर्डकी इच्छा मालूम की। कार्य्यदक्षता और विश्वासकी खातिरसे इस आदमीको स्काटोंने स्काटलेण्डका अस्त्रधारक बनाया।

आयरशायरसे लौटकर वालेसने झटपट सेना इकट्ठी की। उसने पहलेका कुसूर माफ करके केदियोंको रिहाई दी। वही लोग उसकी सेनामें विशेष करके थे। उसके चाचा सर रेनाल्डसे अङ्गरेजोंकी जो सन्धि हुई थी उसका समय बीत गया है। तोभी अंगरेजोंने उनकी जायदाद इस लिये जब्त कर रखी कि वह स्वयं खुल्लमखुल्ला लडाईमें अंगरेजोंके मुकाबले खडे न हों। इससे वह खुल्लमखुल्ला तो वालेसका साथ न देसके मगर छिपे छिपे उसे धन और जनसे बहुत कुछ सहायता देने लगे। इधर कानिहम और काइलसे एडम वालेस और राबर्ट बायड एक हजार हथियारबन्द पुरुषों सहित लानार्कमें आकर वालेसके झण्डेके नीचे खडे हुए। र जान ग्रेहम और उसका चुनाहुआ रिसाला और दूसरे बहुतसे

स्काट देशभक्त वालेससे आमिले। सब मिलाकर कोई तीन हजार सवार और असंख्य पैदल सेना जातीय पताकाके नीचे आजमी। सेनाकी संख्या तो बहुत बढ गई किन्तु उसमें अधिकतर सिपाही अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित न थे इससे मौके पर इस अधिकतासे उतना फायदा नहीं हुआ।

इधर इङ्गलेण्डनरेश एडवर्ड या उनके प्रतिनिधि साठ हजार सुसज्जित सेना लेकर लङ्काशायरके बीगर नामक गाव तक आपहुंचे। वहांसे उन्होंने दो दूतों सहित अपने भानजे फौजको वालेसके पास भेजकर यह कहलायाकि अगर वालेस अपने पिछले अपराधोंके लिये अब भी क्षमा मागले तो उसे क्षमा कीजायगी और बहुत कुछ इनाम दिया जायगा। नहीं तो वह राजविद्रोही समझा जायगा और गिरफतार करके फासी पर लटकाया जायगा। वालेसने बड़ी नम्रता दिखाकर चिट्ठीमें इसका जवाब दिया और अपनी शक्ति दिखानेके लिये दोनों दूतो और भानजेको मार डाला।

काममें हाथ नहीं देना चाहिये। वालेसने उत्तर दिया कि स्काटलेण्डको शत्रुके पजेसे छुड़ानेके लिये इससे भी बढ़कर भयंकर काम करना होगा।

एडवर्डको छावनीसे लौटकर वालेसने सवेरे तक आराम किया। खूब तड़के समस्त जातीय सेना एडवर्डका मुकाबला करनेको तय्यार हुई। वालेस सर वायड और मचिगलेकके साथ रिसालेकेआगेहुआ। जान ग्रेहम, एडम और समर्विल सहित बीचमें रहा। सर वालटर और उसका पुत्र डेविड तथा सर जान टिन्टो रिसालेके पीछे रहे। रिसालेके इन तीन स्थानोंके पीछे वालेसने पैदल सेना रखी और उसे हुक्म दिया कि तुम लोग जल्द मत लड़ने लगना। क्योंकि उनके पास न तो बढ़िया हथियार थे और न हारने पर भागनेके लिये सजेसजाये घोड़े। इसके बाद उसने सब सैनिकोंको सम्बोधन करके कहा कि जबतक रणमें विजयलक्ष्मी प्राप्त न हो तबतक कोई लूटपाट न मचावे।

इस तरह तय्यार होकर वह लोग एक मन और एक वाक्यसे धीरे धीरे अङ्गरेजी मोर्चेकी तरफ जाने लगे। राहमें टाम हालिडे दो पुत्रों सहित और लार्डन कार्कपेट्रिक तीन सौ सेना सहित आमिले। उनके अचानक आजानेसे स्काटिश सेनाके आनन्द की सीमा न रही।

वालेस अङ्गरेजी छावनी अच्छी तरह देख आया था इस लिये जिधर इङ्गलेण्डनरेश या उनके प्रतिनिधिका खेमा था उसने अपनी सेना उधरही चलाई। मानो सुनसान कन्दरेमें जोर शोरका जलप्रपात आपड़ा। अङ्गरेजी सेनाको इतना खयाल न था कि यहां पर हमला होगा इससे वह तय्यार न थी। सो पहले तो बड़ीही गड़बड़ मची पीछे अङ्गरेजोंके धैर्य्यगुणसे उनकी छावनीमें फिर सिल-सिला बंधा। पहली मुठभेड़ बड़ी भयानक हुई। अङ्गरेज-सेना-नायक अर्ल आफ केन्ट पांच सौ सेना लेकर रातको घूमने गये थे वह झटपट आकर शिविरकी रक्षाके लिये जीजानसे चेष्टा करने लगे। उधर ग्रेहाम प्रभृति स्काटिशसेना-नायक वालेसकी बगलमें आडटे।

बडी तेजीसे स्काटिश सवार और पैदल सेना अर्ल आफ केन्टकी तरफ दौडी। उक्त अर्ल अद्भुत वीरतासे राजाके चन्दोवेकी रक्षा करते थे। किन्तु वालेसकी तलवारने जल्दही उनकी देहके दो खण्ड कर दिये। सेनानायकके मारे जानेसे सब अङ्गरेजी सेना मैदान छोडकर भागी। मैदानमें चार हजार और भागते वक्त सात हजार अङ्गरेजी सेना मारी गई। वीस हजार भाग गई। स्काटों ने कल्टर होप तक उसका पीछा किया। फिर सेनानायकके हुक्म से लौट आये।

परीक्षाके लिये वारनेमन्‍के ड्यूकको दस हजार सेना लेकर स्टर्लिंग जानेका हुकुम दिया। वेस्टमोरलेण्ड और पिकार्डीके जमींदार भी एक एक हजार घुड़सवार लेकर उनके पीछे चले। राल्फ बेसिंगथवेट, सर राल्फ वे, आयमर डिवालेन्स प्रभृति भी अपनी अपनी फौज लेकर ड्यूकके साथ हुए। यह शत्रुकी अङ्गरेज सेना जब स्टर्लिंगके मैदानमें पहुंची तो सामने सिर्फ अङ्गरेजोंकी लाशें देखी, स्काट एक भी न देखा। किन्तु तुरन्तही स्काटसेनाका गुप्त स्थान मालूम होगया। अङ्गरेजोंके भागनेकी खबर पातेही वालेस समस्त जातीय सेनासज्जित रोपिग नामक एक दलदलके किनारे आया। अपने घोडे पीछे रखकर घुड़सवार, पैदलसेनाके शामिल कतारबन्द होकर दलदलके किनारे खड़े हुए। अङ्गरेजी रिसाला और पैदल सेना दलदलके दूसरे किनारे थी। अपने सेनापतिके हुक्मसे अङ्गरेजी रिसाला दलदलमें चला। ज्योंही आगे बढा त्योंही घोडोंके पैर कीचडमें ऐसे फस गये कि निकल न सके। स्काटसेना आक्रमणकी बाट देखती थी अब शेरकी तरह उछलकर दलदलमें फसे शत्रुओं पर टूट पडी। एक एक करके सब अङ्गरेज स्काट वीरोंकी तलवारोंसे मारे गये। पिकार्डीका जमींदार सर ग्रेहमके हाथसे और ड्यूक आफ वेस्टमोरलेण्ड वालेसके हाथसे मारे गये। दोनों सेनापतियोंके मारे जानेसे बाकी अङ्गरेज सेना इधर उधर भागने लगी। उसके मुंहसे इस दूसरी हारका समाचार सुनकर अङ्गरेज सेनापति बडाही शोकाकुल हुआ और सालवे पार होकर इङ्गलेण्ड चला गया।

विजयलक्ष्मी प्राप्त करके वालेसने कार्कनमें एक महती जातीय सभा की। उस सभामें वह एक स्वरसे जातीय अभिभावक बनाया गया। सबने उसकी अधीनता स्वीकार की।

इसकेबादही वालेसने दक्षिणस्काटलेण्डकी यात्राकी। वहांके अङ्गरेज कप्तान और शेरिफोंको निकालकर उनकी जगह स्काच कप्तान और शेरिफ बहाल किये। स्टर्लिंगकी अद्भुत विजय बिना यह रद्दोबदल सहजमें न होने पाता।

इस विजयके बाद स्काटलेण्डके पहाड़ी किले एक एक करके वालेसके हस्तगत होने लगे। फ्ली नदीके किनारे एक बड़ी चट्टान पर क्रागन्नटन कैसल नामका एक किला था। फ्ली नदीसे सागरका संगम होनेसे तिकोनी भूमि पर यह किला बना था। इसकी रक्षा के लिये ६० अङ्गरेज चौकीदार थे। उसके अन्दर जानेका सिर्फ एक रास्ता था। वालेस सब सेना नीचे छोड़कर सिर्फ दो आदमियों सहित दरवाजे पर आया। चौकीदार बेखबर थे शत्रुओंके अचानक आजानेसे भौचक्के रह गये। वालेसकी जबरदस्त ठोकरसे दरवाजा खुल गया। दरवान, प्रहरी सब एक करके तलवारके शिकार हुए। ६० अङ्गरेज मारे गये। खबर देनेके लिये सिर्फ एक बूढ़ा पादरी और दो औरतें रह गईं। जितने दिन किलेकी रसद न निबटी उतने दिन वालेस सेना सहित वहां रहा। रसद खतम होजाने पर किलेका दरवाजा तोड़कर चला गया।

कराया। स्काटलेण्डका शत्रु समझकर वालेसने उन्हें नमस्कार नहीं किया और बिना शिष्टाचार किये एक बारही उनसे आनेका कारण पूछा। प्रधानमन्त्रीने उत्तर दिया—"इंगलेण्डके महाराजने इस वक्त कुछ दिनके लिये सन्धि करनेके इरादेसे मुझे आपके पास भेजा है। आपका क्या इरादा है?"

वालेसको अङ्गरेजोंका बहुत विश्वास न था, तथापि उसने लाचार होकर सन्धि करना स्वीकार किया। सन्धि हुई कि एक वर्षतक इंगलेंड और स्काटलेण्डमें कोई झगडा न होगा। सन्धिके दिन जो स्थान जिसके दखलमें है वह उसीके दखलमें रहेगा। १२८७ ईस्वीके फरवरी महीनेमें यह सन्धिपत्र लिखा गया और दोनों तरफसे सही की गई। इस सन्धिके बाद वालेस कामनक किलेमें जाकर रहने लगा। अङ्गरेजोंकी बातों और कामों पर उसे बहुत विश्वास न था इसलिये उसे बहुत बेखबरीमें रहनेका साहस न हुआ।

सन् १२८७ ईस्वीसे पहले वालेसका नाम इतिहासमें नहीं आया था। स्वदेशके लिये जीवन समर्पण करके लगातार अङ्गरेजोंसे लडते भिडते रहने और कदम कदम पर विजयलक्ष्मी प्राप्त करनेसे बहुत जल्द उसका नाम समस्त स्काटलेण्डमें मशहूर होगया। बीगरकी लडाई जीतने पर वह स्काटलेण्डका रक्षक माना गया। इंगलेण्डके महाराज गर्वित एडवर्डको भी उससे सन्धि करनी पडी। किन्तु इस छोटीसी विजयसे उसका चित्त फूलकर कुप्पा होनेवाला नहीं था। वह स्काटलेण्डको एक दम स्वाधीन बनाना चाहता था इसलिये एक अङ्गरेजका चरण भी स्काटलेण्डकी छाती पर रहते उसे विश्रामकी आशा कहां?

नवां अध्याय।

वालेसका स्वप्न—अङ्गरेजोंका विश्वासघात और आयर बारिकका हत्याकाण्ड।

वालिसने जो आशंका की थी वही हुई। अङ्गरेजोंके विश्वास-घातके लक्षण बहुत जल्द मालूम होगये। अप्रेल महीनेके आरम्भ मेंही एडवर्डने कारलाइलमें एक सभाकी। इस सभामें सब अङ्गरेज सेनापति बुलाये गये। विश्वासघातक आमिर डि वालेन्सके सिवा और कोई स्काट नहीं बुलाया गया। इस सभामें यह बात तै हुई कि १२८० ई०की १८वीं जूनको आयरनगरके बारिकमें एक मड्ती सभाका अधिवेशन होगा। सब बड़े आदमियोंको उसमें आनेके लिये न्योता दिया गया। आयरके गवर्नर पर्सी साहिबको बात पहलेहीसे जानते थे इसलिये उन्होंने यह अवसर पा जानेसे अस्वीकार किया कि मैं इस विश्वासघातका अनुमोदन नहीं करूंगा।

इसे लो।' तलवारकी चमकसे दसोदिशाएं प्रकाशमान हो गईं। वह बूढा वालेसको एक पर्वतकी घाटीमें लेजाकर अन्तर्धान होगया। वालेसकी आंखोंने बहुत दूर तक उसका पीछा किया फिर रुक गईं। वालेस उसका विशेष हाल जाननेके लिये व्याकुल हुआ। उसने देखा कि सामने कुछही दूर पर मेघमालासे एक बडा भारी अङ्गारा निकलकर रासमे सारवे सेण्ड तक समस्त स्काटलेण्डमें फैल गया। उसी अग्निकुण्डसे एक स्वर्णमयी देवीका आविर्भाव हुआ। देवीकी देहकी प्रभासे दसोदिशाएं चमक उठीं। यहांतक कि भगवान सूर्य्यदेव भी मलिन होगये। देवीमूर्ति धीरे धीरे वालेसकी तरफ उतरने लगी। उसने वालेसके पास आकर कहा—"वत्स! यह लाल हरा दण्ड ग्रहण करो, ईश्वरने निपीडित जातिका उद्धार करनेके लिये तुमको अधिनायक बनाया है। हृदय में साहस करके उसका यह बडा काम पूरा करो। इस पृथिवीमें तुम्हें पुरस्कारकी आशा बहुत कम है किन्तु वैजयन्ती-धाममें तुम्हारे लिये सिंहासन तय्यार है।" यह कहकर देवी वालेसके हाथमें एक पुस्तक देकर जिस मेघमालासे निकली थी एकाएक आकाश की ओर जाकर उसीमें मिल गई। स्वप्नमें वालेसने पुस्तक खोल कर देखा कि उसका पहला भाग जस्तेके अक्षरोंसे, दूसरा सोनेसे और तीसरा चांदी के अक्षरों से लिखा है। लिखा हुआ पढनेकी चेष्टा करनेमें वालेसकी नींद टूटगई। वह झट बेंचसे उठकर गिर्जेके बाहर आया और पादरीसे स्वप्नका पूरा हाल कह सुनाया। पादरीने यथाशक्ति उसका मतलब निकालनेकी कोशिश की। कहा—महात्मा सेण्टएण्ड्रूने तुम्हें यह तलवार दी है। जिस पहाडके पास वह तुम्हें ले गये वह अत्याचारोंका तूदा था, तुम्हें इन अत्याचारोंका बदला लेनेका इशारा किया है। वह आग स्काटलेण्डके अशुभकी सूचना है। वह देवी स्वयं कुमारी मेरी है। इस दण्डसे तुम्हें स्काटलेण्डका शासन और शत्रुका दमन करना होगा दण्डके लाल रंगसे युद्ध और खून-खराबी जाहिर होती है वह तीन भागोंमें बटी हुई पुस्तक तुम्हारे

राबर्ट बायड, सर रेनाल्डके पीछेही पीछे आये थे उन्होंने रेनाल्ड की शोचनीय हत्याकी खबर पाकर वालेसके और साथियों सहित एक होटलकी शरण ली। वालेसका एक और सहचर गायलैण्डका स्टीफन आयरकी सभामें जाता था रास्तेमें वालेसने मिलनेकी किसी औरतने रेनाल्ड आदिकी हत्याका हाल उससे कहा। इसलिये वह भी उसी होटलमें जाकर बायडसे मिला और वहांसे सब लागलेन वनकी तरफ चल दिये।

इधर वालेस कारसबोसे सन्निपात लेकर आयरकी छावनीकी तरफ चला। रास्तेमें उसी स्त्रीसे भेट हुई। उसने उस भयंकर हत्या-काण्डकी बात उससे कही और उससे इसका बदला लेनेका अनुरोध किया। वालेस यह समाचार सुनकर हक्काबक्का और शोकाकुल हो गया। उसने एडमवालेस और विलियम क्राफोर्डके निकट यह खबर भेजनेका भार उस स्त्रीको देकर बायड और स्टीफनसे मिलनेकेलिये लागलनकी यात्रा की।

उधर उसको जबरदस्ती सभामें लानेके लिये सोलह अङ्गरेज सैनिक भेजे गये। राहमें वालेससे उनकी भेट हुई। वह वालेस को पहचानते नहीं थे। किन्तु उसकी अद्भुत वीरताने जल्दही उसका परिचय देदिया। उसने और उसके साथियोंने क्षणभरमें दस अङ्ग-रेजोंको मार डाला। बाकी ६ जान लेकर भाग गये।

आयरके नये गवर्नर आरनुल्फने उस सभामें जितने अङ्गरेज आये थे उनका उत्साह बढानेके लिये सबको नाइटका खिताब दिया। उस सभामें कोई ४ हजार अङ्गरेज जमाहुएथे। गवर्नरने वादा किया कि मृत स्काट वीरोंकी जायदाद उन लोगोंमें बांट दी जायगी। समूची सभ्य मण्डलीके सम्वर्द्धनार्थ एक बडाभारी भोज हुआ। अङ्गरेज खान पानके रेलपेलसे बदमस्त होगये। वहीं विश्वासिनी स्वजातिप्रेमिका स्त्री यह खबर लागलेनवनमें वालेसके पास लेगई। इस बीचमें वालेस के पास बहुतसे आदमी जमा होगये थे। उसने आज उनको आयर ...षण हत्याकाण्डका बदला लेनेका जोश दिलाया। यद्यपि वह

पहलेसे स्काटलेण्डका अधिनायक बनाया गया था तथापि उस समय वहसब लोग मौजूद न थे इससे उसने नये चुनावके लिये पांच आदमी चुननेका अनुरोध किया। उसके अनुसार वालेस बायड क्राफोर्ड एडम और अचिन्नलेकचुनेगये। इन पांचोने चिट्ठी डालकर अपने अपने भाग्यकी परीक्षा करना चाही। तीन बार चिट्ठी डाली गई तीनोबार वालेसकेही नाम निकली। तब उसने सेनापतिका पदग्रहण किया और तलवार छूकर प्रतिज्ञाकी कि जबतक आयरकी हत्याका बदला न लूंगा तबतक पानी न पीऊंगा।

राबर्ट बायड, सर रेनाल्डके पीछेही पीछे आये थे उन्होंने रेनाल्ड की शोचनीय हत्याकी खबर पाकर वालेसके बीस साथियों सहित एक होटलकी शरण ली। वालेसका एक और सहचर आयर्लेण्डका ष्टीफन आयरकी सभामें जाता था राहमें वालेसके रिश्तेकी किसी औरतने रेनाल्ड आदिकी हत्याका हाल उससे कहा। इसलिये वह भी उसी होटलमें जाकर बायडसे मिला और वहांसे सब लागलन बनकी तरफ चल दिये।

इधर वालेस करसबीसे सन्धिपत्र लेकर आयरकी छावनीकी तरफ चला। रास्तेमें उसी स्त्रीसे भेट हुई। उसने उस भयंकर हत्याकाण्डकी बात उससे कही और उससे इसका बदलालेनेका अनुरोध किया। वालेस यह समाचार सुनकर हक्काबक्का और शोकाकुल हो गया। उसने एडमवालेस और विलियम क्राफोर्डके निकट यह खबर भेजनेका भार उस स्त्रीको देकर बायड और ष्टीफनसे मिलनेकेलिये लांगलनकी यात्रा की।

उधर उसको जबरदस्ती सभामें लानेके लिये सोलह अङ्गरेज सैनिक भेजे गये। राहमें वालेससे उनकी भेट हुई। वह वालेस को पहचानते नहीं थे। किन्तु उसकी अद्भुत वीरताने जल्दही उसका परिचय देदिया। उसने और उसके साथियोंने क्षणभरमें दस अङ्गरेजोंको मार डाला। बाकी ६ जान लेकर भाग गये।

आयरके नये गवर्नर आरनुल्फने उस सभामें जितने अङ्गरेज आये थे उनका उत्साह बढानेके लिये सबको नाइटका खिताब दिया। उस सभामें कोई ४ हजार अङ्गरेज जमाहुएथे। गवर्नरने वादा किया कि मृत स्काट वीरोंकी जायदाद उन लोगोंमें बांट दी जायगी। सन्ध्याको सभ्य मण्डलीके सम्वर्द्धनार्थ एक बडाभारी भोज हुआ। अङ्गरेज खान पानके रेलपेलसे बदमस्त होगये। वही विश्वासिनी स्वजातिप्रेमिका स्त्री यह खबर लांगलेनबनमें वालेसके पास लेगई। इस बीचमें वालेस के पास बहुतसे आदमी जमा होगये थे। उसने आज उनको आयर भीषण हत्याकाण्डका बदला लेनेका जोश दिलाया। यद्यपि वह

पदलेने स्काटलेण्डका अधिनायक बनाया गया था तथापि उस समय यहसब लोग मौजूद न थे इससे उसने नये चुनावके लिये पांच आदमी चुननेका अनुरोध किया। उसके अनुसार वालेस बायड क्राफोर्ड एडम और अचिङ्गलेकचुनेगये। इन पांचोंने चिट्ठी डालकर अपने अपने भाग्यकी परीक्षा करना चाही। तीन बार चिट्ठी डाली गई तीनोंबार वालेसकेही नाम निकली। तब उसने सेनापतिका पदग्रहण किया और तलवार छूकर प्रतिज्ञाकी कि जबतक आयरकी हत्याका बदला न लूँगा तबतक पानी न पीऊंगा।

उसी दम वालेस की कार्य्य प्रणाली स्थिर हुई। उसने स्थिर किया कि आयर की बारक और शहर के जिन जिन मकानोंमें आज रातको अङ्गरेज ठहरे है उनमें आग लगादेंगे। उसने उस विश्वासिनी स्त्रीको और आयरके कुछ आदमियोंको हुक्म दिया कि तुम लोग जिन मकानोंमें अंगरेज है उनपर खड़ियासे दाग दे आओ और बीस आदमियोंको भेजा कि वह उनसब मकानोंके दरवाजोंपर जलनेवाली चीजे रख आवें। राबर्ट बायडको पचास आदमियोंसहित किलेके दरवाजे पर इसलिये तैनात किया कि जब चारों ओर आग लगे तब नगरकी रक्षाके लिये किलेसे सेना बाहर न निकलने पावे। बाकी आदमियों सहित वह स्वयं छावनी की तरफ चला, और दागवाले सब मकानों के दरवाजों पर आदमी तैनात कर दिये। एकही वक्त बारक और दागवाले मकानों में आग लगा दी गई। जलनेवाली चीजोंके संयोगसे आग लगते ही चारों ओर धधक उठी मतवाले अङ्गरेज जहांजहां थे वहीं जलकर भस्म होगये। उस रातको किलेमें सिर्फ थोड़ीसी सेना थी क्योंकि प्राय सब सेना सभामे आगई थी। जो लोग किलेमें थे उनमेंसे बहुतेरोंने अग्निकी ज्वाला देखकर किलेसे बाहर आनेकी कोशिश की बायडने कुछ रोक टोक न की। लेकिन किले में घुस कर जोलोग वहां छिपे थे उन सबको मारकर किला लेलिया। वहां उसकी रक्षाके लिये २० आदमी छोड़कर नगर की शान्ति रक्षामें वालेसकी मदद करनेके लिये बाकी साथियों

सहित बाहर आया। उस रात आयरमें सब मिलाकर ५ हजार अङ्गरेज अपने घोर विश्वासघातका प्रायश्चित्त करने के लिये काल के गाल में गये। १२९७ ईस्वी की ग्रीष्मऋतुमें यह घटना हुई।

यथासमय सब आकर मिले, तब वालेसने बिना विलम्ब ग्लासगो की यात्रा करनेका सङ्कल्प किया। क्योंकि वहां भी ऐसी एक सभा होनेकी बात थी और वालेसको खटका हुआ कि कहीं हमारे हित मित्रों पर वहां कोई विपद न पड़ी हो। उसने आयर के मुख्य मुख्य लोगोंको बुलाया। उनके हाथमें लौटने तक किले और शहरकी रक्षाका भार देकर तीन सौ सवारों सहित ग्लासगो को कूच किया। उनके पास घोड़े न थे इसलिये उन्होंने मृत अङ्गरेज सैनिकोंके घोड़ोंसे अपने अपने लायक २०० घोड़े चुन लिये। ३०१ सवार बड़े वेगसे बातकी बातमें ग्लासगोके तोरणद्वार पर जा पहुंचे। अङ्गरेज डरके मारे अधीर हुए। विशपबेकके हाथ नगर और किलेकी रक्षाका भार था उन्होंने झट एक हजार सेना इकट्ठी की। वालेसने अपनी सेनाके दो टुकड़े करके एक भाग अचिंगलेक को दिया और एक भागका सेनापति स्वयं हुआ। दोनोंने दो तरफसे शहर पर हमला करनेका प्रस्ताव किया। अङ्गरेज वालेस की सेना थोड़ीसी देखकर ताज्जुबमें आये। फौरनही दोनोंदलोंमें लड़ाई छिड़ गई। यद्यपि अङ्गरेजोंकी ओर प्रायः चौगुनी सेना थी तथापि वालेस और उसके वीरवृन्द झटसित तेजसे अङ्गरेज सवारोंको भूमि पर गिराने लगे। इधर अचिंगलेककी सेनाने उत्तर की तरफसे नगर पर आक्रमण किया। तब अंगरेज सेना दो हिस्सोंमें बट गई। अचिंगलेककी सेनाने बड़े वेगसे टूटकर शत्रुसेना को तितर बितर कर दिया। इसी बीचमें वालेसने भी आगे बढ़कर एक तलवारसे अङ्गरेजी झण्डेवालेका सिर काट डाला। झण्डेके गिरतेही अङ्गरेजी सेनाके हृदयका बल टूट गया। चारसौ अङ्गरेज विशपबेकको लेकर दक्षिण जंगलकी तरफ भागे। वालेसने ... सहित पीछा करके शत्रुओंको पछाड़ा। सर आमेर डी

वालेसकी मददसे वेक थोड़ेसे साथियों सहित जान लेकर भागने पाये थे।

जातीयदलकी इस बहादुरीसे संतुष्ट होकर स्काटलेन्डके बहुतेरे जमीन्दार (लार्ड) धीरे धीरे एडवर्डके विरुद्ध सिर उठाने लगे। बूकन, आयोल, मेनटीथ, लोरन, सर नील केम्बल डङ्गन प्रभृति पुराने खान्दानी लोग एडवर्डकी अधीनता छोड़कर जातीयदलके साथ सहानुभूति दिखाने लगे।

मेकफेडियन और सिर्फ ४ और जमीन्दार अङ्गरेजोंकी तरफ रहे। उन्होंने १५ हजार सेना लेकर सर नील केम्बलके नगरको रूंध किया। यह शहर खाईसे घिरा हुआ था जिस पर सिर्फ एक पुल लटक रहा था। केम्बलने वह पुल फेंक दिया। शत्रु सेना को खाई पार होनेका साहस न हुआ वह इसी पार बैठी रही। इधर केम्बेलने वालेसको खबर देनेके लिये दूत भेजा। केम्बेल और वालेस दोनों डंडीके स्कूलमें एकही साथ पढ़े थे। स्वदेशानुरागका भाव दोनोंके दिलमें उसी समय बढ़ा। अर्ल डङ्गन दूत बने उन्होंने ढूंढ़ते ढूँढ़ते अन्तमें डनडफ किलेमें वालेसको पाया। वह सुनतेही सर जान ग्रेहमको लेकर केम्बेलकी मददको रवाना हुआ।

इस समय एडवर्डके पक्षपाती अर्ल रोकवी असंख्य सेनासहित स्ट्रालिङ्ग कैसल नामक किलेमें थे। वालेस उसी राहसे आता था उसने उस किले पर भी अधिकार जमानेकी ठान ली। जब वालेस उसके दरवाजे पर पहुंचा तब अर्ल मलकम ससैन्य उससे आमिला। उसने मिलित सेनाके दो भाग करके पहला भाग मलकमके जिम्मे छोड़कर एकसौ हट्टे कट्टे और लड़ाके वीरोंको लेकर ग्रेहम सहित किलेमें प्रवेश किया। रोकबीने उस थोड़ीसी स्काटसेनाकी परवा न करके १४० तीरन्दाजोंसे उसका मुकाबला किया। दोनोंमें घमासान युद्ध हुआ।

ग्रेहम ज्योंही आगे बढ़ा त्योंही एक अङ्गरेजी तीरन्दाजका तीर उसके घोड़ेको लगा। ग्रेहम कूदकर जमीन पर

आया। यह देख वालेस भी घोडा छोडकर पैदल हुआ। दोनो पांव-प्यादे घोर युद्ध करने लगे। इतनेमें मलकमने बाकी सेना लेकर क़िलेमें प्रवेश किया। अङ्गरेज सेनाके अब कान खडे हुए। वह भागनेकी फिक्रमें लगी मगर राह न मिली। ; हाथापाई करते वालेस रोकवीके सामने आ पहुंचा। झट उसकी तलवार ने रोकबीको काट डाला। धीरे धीरे स्काटवीरोंके अव्यर्थ अस्त्रोंसे सब अङ्गरेजी सेना मारी गई। सिर्फ रोकबीके दो पुत्र और २० सैनिक रहे। उनके आत्मसमर्पण करनेमें स्टर्लिंगकैसल स्काटोंके हाथ आगया। इस दुर्गकी रक्षाका भार मलकमको देकर वालेस केम्बलकी सहायताको चला।

मेकफेडियन स्काट लोगो पर वडा भारी जुल्म करने लगा था उसके रक्तके प्यासे सैनिक वालक और स्त्रीको मारनेमें भी नहीं सकुचातेथे इससेवालेसने प्रतिज्ञा कीकि याती इसे उसके पापका पूरा दण्ड दूंगा या लडाईमें प्राण दूंगा। उसने दो हजार सेना लेकर केम्बलकी तरफ कूच किया। केम्बल उस समय आर्गाइलशायरमें वालेसकी वाट देखते थे। डकान वालेसका पथप्रदर्शक होकर उसे आर्गाइलशायरको ले चला।

वालेसकी सेना चलते चलते थक गई। विशेषकर नाटे शरीरके कुछ सैनिक वहुत पिछड गये। आक्रमणमें विलम्ब करना या तितर बितर होकर आक्रमणकरना—दोनोंको हारकीजडसमझ कर वालेसने अपनी सेनाके पाच भाग किये। छाट छाटकर सर्वोत्कृष्ट एक सौ सवार स्वय लिये, एक सौ सर जान ग्रेहमको दिये और सर रिचार्ड लन्डिन और एडम वालेसको पाच पाच सौ दिये। यह बारहसौ चुनी हुई सेना लेकर वह लोग आगे वढे। बाकी सेनाको धीरे धीरे आगे वढनेका हुक्म देगये।

इस तरह कतार बाधकर वह लोग ग्लान्डोकार्टमें आपहुचे। यहां सर नील केम्बलसे मुलाकात हुई। केम्बल वालेससे मिलने ~ लिये कुछ आगे वढ आये थे। वालेसको पाकर उनके आनन्द

की सीमा न रही। केम्बलकी तीन सौ सेना सहित गिल मांङ्-केल नामका एक आदमी शत्रुसेनाका हालचाल लेनेके लिये भेजा गया। उसने एक शत्रु दूतसे सुना कि अङ्गरेजसेना उसीदिन पर्थ समीरसे चली जायगी। पीछे ऐसा न हो कि वह दूत जाकर मेकफेडियन को हमारी खबर दे इस खटकेसे स्काटदूतने अङ्गरेज दूतको मार डाला। फिर उसने आकर वालेसको यह खबर दी।

केम्बलकी सेना लेकर अब वालेसके पास अठारह सौ सेना हो गई है। ऊबड़ रास्तेका ख्याल करके वह लोग घोडे छोडकर पैदल शत्रुसेनाके सामने चले। मूसलधार वृष्टिकी तरह शत्रु सेना पर टूट पडे। शत्रु सेना तितर बितर होगई। सख्याकी अधिकतासे फिर उसका सिलसिला बध गया। वालेस, ग्रेहम, केम्बल, लन्डिन एडम वालेस और रावर्ट वायड—इन छ: वीरोंका अद्भुत रणपाण्डित्य और अमानुषी शक्ति देखकर शत्रुसेना चकित और भय-भीत हुई।

निराशाके जोशमें मेकफेडियन और उसकी आइरिश सेना लडाईमें जान पर खेलने लगी। दो घण्टे तक घोर युद्ध किया। किन्तु स्काटिश जातीय दलका समस्त वेग अन्तमें मेकफेडियनकी आइरिश सेना पर आपडा। वह उसे सम्हाल न सकी और लडाई छोडकर भागी। कुछ पहाड पर चढ गई किन्तु ज्यादातर हथियारोंसे बचनेके लिये जलमें कूद पडी। दो हजार आइरिश जलमें कूदे और फिर न निकल सके। आपही जलमें डूब गये। मेकफेडियनकी स्काटिश सेना अन्ततक लडी अन्तमें उसने हथियार डालकर वालेससे क्षमा मागी। वालेसने हुक्म दिया कि हरगिज स्वजातिका खून न गिरने पावे। मेकफेडियनने भागकर एक कन्दरे की शरण ली थी। डकानने वहां जाकर उसको मार डाला और उसका सिर लाकर वालेसको उपहार दिया।

जिन्होंने वालेससे शान्तिकी भीख मागी उसने उन सबको उनकी जमीन लौटादी। लोरेनमें सर्वत्र अभूतपूर्व शा-

विराजने लगी। स्वदेशानुरागके पुरस्कारके तौर पर वालेसने डगलसके हाथमें लौरेनका जिला सौंप दिया।

धीरे धीरे असंख्य स्वजातिप्रेमी स्काट वालेसके झण्डेके नीचे आखड़े हुए। सर जान ग्रामजे, पुरोहित मिनक्लोयर, लार्ड्स्आर्ट आदि उनमें मुख्य थे। इधर वालेसकी जो सेना पिछड़ गई थी वह भी विजयक्षेत्रमें आपहुंची। मैदानमें मरी हुई शत्रुसेनाके शरीरमें जो हथियार और सामान अब भी मौजूद थे वह सब इसने लेलिये। अब स्काटसेनाकी सङ्ख्या बहुत बढ़ गई और वह विजयके उल्लासमें मस्त होगई।

वालेसने सुना कि स्कोन नगरमें आर्मेस बी नामक एक अङ्गरेज जज है। वह सर विलियम डगलसको लेकर वहां पहुंचा। उसके अचानक आक्रमणसे घबराकर वहांवाले भागनेलगे। आर्मेसबी कुछ आदमियों सहित निकल गया। बाकी सब इन दोनोंके हाथ मारे गये। वालेस और डगलस कीमती चीजें लूटकर जातीय छावनीको लौट आये।

सुविख्यात ब्रूसके ससैन्य आजानेसे इस समय जातीय दलका बल बहुत बढ गया था। जिस जातीय स्वाधीनताका यज्ञ वालेसने आरम्भ किया है सुप्रसिद्ध वैनकबरन रणक्षेत्रमें वीरवर ब्रूस उस यज्ञ को समाप्त करेंगे।

स्काटलेन्डके विद्रोहने ऐसा भीषण आकार धारण किया कि एडवर्ड अपनी फ्लैन्डर्सकी युद्धयात्रा रोक देनेको लाचार हुए। उन्होंने भानजे लार्ड हेनरी, पर्सी और राबर्ट डी क्लीफोर्डके अधीन चालीस हजार पैदल और तीनसौ सवार सेना स्काटलेन्डको भेजी। जब यह महती अङ्गरेजसेना एननडेलसे होकर जारही थी उसी वक्त रातको कुछ स्काटोंने उस पर आक्रमण किया। इसमें अङ्गरेजोंका नुकसान बहुत हुआ परन्तु स्काट उन्हें रोक न सके।

इस अङ्गरेज सेनासे स्काटसेनाकी इरविन्नमें भेट हुई। स्काट सेनाके इरादेसे एक ऊंचे खेतमें सजेसजाये अङ्गरेजोंकी राहदेखतेथे।

स्काटोंका दल बड़ाजबरदस्त था उसकोलेकर लड़ना बहुत मुशकिल न था किन्तु स्काटलेन्डकी दुर्भाग्यसे जातीयदलमें इसी समय सेनापतित्वको लेकर बड़ा फसाद खड़ा होगया। जिस जातिका भाग्य फूटता है वह ऐसीही धड़ाबन्दीमें पागल होकर जातीय कर्तव्य भूल जातीहै। जातीय कर्तव्य भूलकर इस समय लुन्डिन; स्टुआट, राबट ब्रूस, सर विलियम डगलस, अलकजेन्डर डी लिनसे और वालेसके बहाल किये हुए नये विशप विसार्ट प्रभृति जातीय नेता अपने साथियों सहित जातीय दल छोड़कर अङ्गरेजी छावनीमें चले गये। १२९७ ई० की तारीख ९वी जुलाईको इन विश्वासघातक जातीय नेताओंसे एडवर्डकी सन्धि हुई। एडवर्डने इस सन्धिके फैसलेमें जातीय नेताओंकी पूरी स्वाधीनता और जमानत ली। अङ्गरेजोंने समझा था कि चारोओरसे निराश होकर वालेस अन्तमें इसी सुलहनामे पर सही करेगा। किन्तु उन लोगों की आशा पूरी नही हुई। जिसने स्वजातिके चरणोंमें अपना जीवन समर्पण कर दिया है, जिसने अपना स्वार्थ स्वजातिके स्वार्थ पर न्योछावर कर दिया है वह क्या जातीय मर्य्यादाके बदले शत्रुसे अपना प्राण भीख माग सकता है? नही—हरगिज नहीं। वह स्काटकेसरी सर जान ग्रेहम, सर एन्ड्रू मरे और दूसरे हितमित्रो और सहचरों सहित मनमलीन करके पहाड़की ऊंची चोटियोंकी तरफ चला गया। इधर अङ्गरेज सेनापति पर्सी और क्लीफोर्ड स्काट लोगोंमें फूट डालकर और शरणागत स्काट वैरनोंको अधीनताकी बेड़ी पहनाकर झटपट इङ्गलेन्डको चलदिये।

राहमें जाते जाते स्काटोंके जीमें आया कि सेन्ट जानस्टन किले पर दखल करना चाहिये। यह किला खाई और दीवारोंसे घिरा था। दीवारें बहुत ऊंची न थीं इससे खाई पर तख्ते बिछाकर झट एक हजार सैनिक खाई पार करके और दीवार फांदकर किले के भीतर घुस गये और दरवाजा खोल दिया। समूची स्काट सेना भीतर चली गई। अङ्गरेज अचानकके आक्रमणसे घबरा गये।

किलेदार सर जान स्टिवार्य मुख्य मुख्य ६० सैनिक लेकर नाव पर सवार हो डन्डीनगरको भाग गये। किले पर हमला करनेके समय रथवेन नामके एक स्क्वायरने तीस साथियों सहित पहुंचकर वालेस को वडी सहायता की। तीन दिन वालेस किलेमें लूटपाट करता रहा फिर रथवेनको किला सोपकार उत्तरको चला गया।

उसने एवर्डीनमें एक जातीय सभा की। उसके आनेसे एब्रट काउपर नगर छोडकर भागगये। उत्तरको तरफ जाते जाते ग्लासिस नगरमें वालेस विशप सिनक्लेयरसे मिला। सिनक्लेयर उस के साथ होलिये। ब्रेचिनमें आकर उन्होंने रात बिताई। सबेरे तय्यार होकर स्काटलेण्डका भण्डा उडाया और इङ्गलेण्डके विरुद्ध खुल्लम-खुल्ला युद्ध की घोषणा की। मियरन्स जिलेसे होकर वहलोग गये। अगरेज चारोओर डरकर भागने लगे। अन्तमें ४ हजार अङ्गरेजोंने कीन शहरके गिर्जेमें आकर शरणली। उस गिर्जेके विशपने इङ्गलेण्ड जानेकी आज्ञाचाही। किन्तु वालेस आयरका विश्वासघात यादकरके बदला लेनेको तयार हुआ। उसने गिर्जेमें आग लगा दी। देखते ही देखते चार हजार अङ्गरेज जलकर राख होगये।

इसके बाद वह लोग एवर्डीनमें गये वहां एक सौ अङ्गरेजी जंगी जहाज माल असबाबसे लदे समुद्रमें खडे थे। वालेस सेनासहित उन पर टूटपडा और लूटपाटकर अन्तमें आग लगादी। पुरोहित स्त्रियों और बालकोंके सिवा और किसीको भागने नहीं दिया। जहाजके बाकी अङ्गरेज जल मरे जो किनारे थे वह वालेसकी तलवारके शिकार हुए।

वालेसने विजयीसेनासहित इसके बाद बूकानके लार्ड वोमिएटकीतरफ कूच किया। अङ्गरेज लार्ड उनके आनेकी खबर सुनतेही शहर छोड कर समुद्रके रास्ते भागगये। इसके बाद उसने डन्डी किलेपरहमला करनेका विचारकिया। इसको छोड़कर फोर्थके और सब किले इस समय वालेसके हाथ आगये है। उसका आगमन सुनकर विश्वाघा-क सर आयर डि वालेन्स इस जन्मके लिये जन्मभूमि छोड़कर

इङ्गलेण्ड भाग गया। वालेसकी विजयवार्ता उसने औरोंकी मार्फत एडवर्डके कानतक पहुंचाई एडवर्ड बहुत काममें फसेरहनेसे स्वयं तो न जासके मगर साठ हजार सेनासहित खजानची क्रेसिङ्हम और और अर्लवारेनको स्काटलेण्डपर भेजा। स्टर्लिंग किलेपर फिर दखल और स्काटलेण्डको अच्छीतरहसे पराजय करना इस चढाईका मुख्य उद्देश्य था। विश्वासघातक अर्ल डनबर इस अङ्गरेज सेनाके साथ टुइ नदीके किनारे आकर मिल गये। यह विराट सेना स्टर्लिंग महलके सिंह दरवाजे पर आपहुंची, आतेही किला घेर लिया। अर्ल मलकम जातीय दलके प्रतिनिधि होकर इस किलेकी रक्षा करते थे।

यह सुनकर वालेस डन्डीके घेरेमें एक हजार सेना छोडकर बाकी सेना सहित स्टर्लिंग कैसलको चला। राहमे जापको सेना लानेका भार सौंपकर और उसको मंगलके दिन ससैन्य स्टर्लिंगकैसल के सामने उपस्थित होनेका हुक्म देकर रामजे और ग्रेहमके साथ वालेस शनिवारको उस किलेकी तरफ रवाना हुआ।

एक लकडीके पुलसे किलेके भीतर जाना पडता था। वालेसने एक चतुर बढईसे पुलको बीचोबीचसे चिरवा दिया और उसपर इस तरह मट्टी दिलवाई कि किसीको उसका दो खण्ड होना मालूम न होसके। कटावके बीचमें इस तरह काठकी थूनिया दी कि चाहे जितनी सेना पुलसे बेखटके पार होजाय। थूनियां इस ढङ्गसे लगाई गईं कि एकाके हटानेसे सब गिर पडे और पुल दो टूक होकर नदी में डूब जाय।

वालेसने उस बढईको हुक्म दिया कि तुम लडाईके दिन यहां छिपे रहना। जब मैं शङ्ख बजाऊं उसी समय थूनी हटाकर सरक जाना।

उस भयानक मुठभेडका दिन आगया। अङ्गरेज सेना स्काट-सेनासे पचास गुनी ज्यादा थी। वालेस वह थोडीसी सेना किलेसे हटाया। अङ्गरेज सेनाके दो भाग होकर बीस हजार क्रेसिङ्हमके

अधीन आगे गई और शङ्कार वारेनके अधिपतित्वमें पीछेपीछे आने लगी। क्रेसिङ्गमकी सेनापुलपार होगई गम्न नही बजा। स्काट डरे। पञ्चभरमें वारेनकी सब सेना पुलके ऊपर आगई। तब शङ्ख बजा। उसके साथ साथ वह लम्बा चौडा लकडीका पुल वारेनकी सेना सहित जलमें धस गया। अङ्गरेज सेनामें भारी हाहाकार मचा। गिरते हुए घोडे और घुडसवारोंकी चीखसे आकाश फटने लगा। इधर वालेस, ग्रेहम, वायड रामजे प्रभृति मस्त शेरकी तरह क्रेसिङ्गमकी सेना पर आटूटे। वालेस क्रेसिङ्गमको लक्ष्य करके बडी दिलेरीसे उधरही दौडा। उसकी यह रण चण्डीमूर्त्ति देखकर शत्रुसेनाको रोकनेका साहस न हुआ। उसने बेधडक क्रेसिङ्गमके सामने जाकर एकही तलवारमें घोडे और घुडसवारको काट गिराया। सेनापतिके पतनसे अङ्गरेज सेनाका साहस टूट गया। तथापि उसने असीम साहसके साथ कुछ देर युद्ध किया। मगर जब देखा कि दस हजार सेना सेनापतिके साथ सिधार गई तब वह डरसे तितर बितर होकर भागगई किन्तु शत्रुसेनाके पीछा करनेसे कोई न बचा। जो जलमें कूद पडेथे वह डूब गये। जिन्हे जलमें कूदनेका साहस न हुआ वह स्काटोंकी तलवारोंके नीचे आगये। इसतरह जो बीस हजार अङ्गरेज सेना पुल पार हुई थी उसमेंसे एकभी सैनिक अपने देशको न लौट सका। वारेनकी सेनामेंसे जो पुलके उसपार थे वह यह हाल देखकर एकासास डनवरकी तरफ भागे। किन्तु वहभी पीछा करनेवाले स्काटोंके हाथसे न बचे। वालेस और ग्रेहमने शत्रुओंको हेडिंगन नगरमें जा पकडा। उनमें हथियारोंसे कितनेही मारे गये। यहा रामजे, बयिड, लण्डिन एडम वालेस और अर्लसफाकम सहचरों सहित उससे आमिले। १२८७ ईस्वीकी ११वीं सितम्बरको यह प्रसिद्ध युद्ध हुआ। इसमें बहुत थोडे स्काट मारे गये जिनमें एन्डरू मरेके सिवा और किसी सेनापतिकी मृत्यु नही हुई। मगर उस बेशुमार अङ्गरेज सेनामेंसे बहुतही थोडे आदमी भागकर बचे थे। क्रेसिङ्गम प्रभृति

लोग उसी मैदानमें बेसमय मारे गये। इतने दिनमें स्काटोंने वारविक डनवर आयर आदिकी भयानक हत्याका बदला लिया। इतने दिन पीछे उनके हृदयकी दाह बुझी।

स्काटलेन्डके रक्तसे जो अङ्गरेज शरीर मोटा ताजा हुआ था उसी अङ्गरेज शरीरके रक्त मांससे आज स्काटलेन्डकी भूमि उपजाऊ हुई।

वालेस सहचरों सहित वह रात हेडिङ्गटन नगरमें बिताकर दूसरे दिन स्टर्लिङ्ग केसलमें आपहुचा। बिना विलम्ब उसने घोषणा की कि स्काटलेन्डके सब बेरन आकर जातीय स्वाधीनता फिरसे कायम करने और जातीय शान्तिकी रक्षाके लिये मेरी मातहती स्वीकार करें। जिन्होंने इससे इनकार किया वालेसने उनके दर्पका उचित दण्ड दिया। सरजान मेन्टीथ आदि पुराने खान्दानी बेरनोंने एकएक करके उसकी मातहती स्वीकार की।

इधर वारेन अपनी अपार सेना स्टर्लिङ्ग केसलके रणक्षेत्रमें खोकर बड़ी फुर्तीसे वारविककी तरफ भागे। स्वदेश वासियोंसे उस अङ्गरेज सेवयज्ञका समाचार सबसे पहले उन्हींको कहना पड़ा। इस समाचारसे स्काटलेन्डके अङ्गरेज इतने डरे कि एक घड़ी भी स्काटलेन्डमें रहनेका उन्हें साहस न हुआ। उन्होंने अपना अपना किला छोड़कर झटपट इङ्गलेन्डका रास्ता लिया।

इसप्रकार स्टर्लिङ्ग युद्धके बाद दस दिनमें वारविक और रक्सबराके सिवा स्काटलेन्डके और सब किले वालेसके हस्तगत होगये। बहुत दिनके बाद फिर स्काटलेन्डकी जातीय पताका फहराने लगी। इतने दिनपर स्काटलेन्ड स्वाधीन हुआ। आज जातीय दलके हृदयमें आनन्द नहीं समाता। पतित जातिके सिवा उस आनन्दका अन्दाज और कौन कर सकता है?

वालेस स्काटलेन्डका गवर्नर बनाया गया। उसने मिस्टर क्राफोर्डको एडिनबराका किला सौंप दिया।

यह शोक सम्वाद समुद्र पार होकर फ्लेंडर्समें एडवर्डके पास पहुचा। उनके शिरसे मानो ताज खस पड़ा।

दसवां अध्याय।

स्टिरलिंग ब्रिज और फैलकर्क का युद्ध।

स्टरलिंग ब्रिजकी लड़ाईके बाद स्काटलेण्डमें पांच महीने शान्ति रही। पांच महीने अङ्गरेजोंको स्काटलेण्डकी शान्ति भङ्ग करनेका साहस न हुआ। उसी भीतरी शान्तिके समय वालेसने पर्थनगरमें एक जातीय सभा बुलाई। स्काटलेण्डके सब जागीरदार और बड़े आदमी उस सभामें जमा हुए। सिर्फ विश्वासघातक कसपेट्रिकने आना अस्वीकार किया। उसने अपने किलेमें बैठकर उस जातीय दलको नीचा दिखाया और उस जातीय बुलावे पर बहुत व्यंग बाण छोड़े। सभाके सब लोगोंने उसी वक्त उसपर सेना भेजनेके लिये वालेसको सलाह दी। किन्तु वालेसने यह न करके पहले उसे कहला भेजा कि अगर आप अपने पिछले अपराधके लिये क्षमा मांगें और आगे विश्वास दिलावें तो इस बार आप माफ किये जायंगे। यह बात सुनकर कसपेट्रिक बहुत हंसा और उसनेदूतके द्वारा उत्तरभेजाकि अपने जङ्गली राजासे जाकर कहना कि कसपेट्रिक इस जिन्दगीमें उसकी अधीनता न मानेगा और अपने राज्यपे शासन करनेसे भी न डरेगा।

इस हेकड़ी पर समस्त जातीय सभा कसपेट्रिकसे बिगड़ गई। क्रोधसे वालेसकी आंखोंसे चिगारियां निकलने लगीं। उसने प्रतिज्ञा की कि कसपेट्रिक और मैं दोनों एक साथ स्काटलेण्डमें हुकूमत नहीं कर सकते एक म्यानमें दो तलवार नहीं रह सकतीं। यह प्रतिज्ञा करके वह मस्त हाथीकी तरह सभासे निकला। वालेसकी जो प्रतिज्ञा थी वही काम। उसने उसी वक्त दो सौ सवार सेना लेकर उधरको कूच किया। रास्तेमें उसकी सेना दूनी होगई।

अर्लपेट्रिकने नौ सौ सेना लेकर उस प्रवाहिनीकी चाल रोकना चाहा किन्तु प्रबलप्रवाहिनी तिनकोंकी तरह पेट्रिककी सेनाको चीर कर उसके दरवाजे पर आपहुंची। जिस तेजीसे आई उसी

तेजीसे किलेपर अधिकार करके उसे सीटनके सपुर्द कर दिया। कसपेट्रिक जान लेकर किला छोड इङ्गलेण्डकी तरफ भागा जाता था। वालेसने तीनसौ सेनासे उसका पीछा किया और उसे भगाता भगाता एट्रिकावन तक लेगया। आगे जाना बेफायदा समझकर लौट आया।

इधर भगोडे जागीरदारके दलसे ब्रूस और विशप वेक् प्रभृति जागीरदार आमिले। ब्रूस इनमें जल्द शामिल न होता किन्तु उन लोगोंने उसे यह कह कर राजी किया कि वालेस स्वय स्काटलेन्डकी राजगद्दी चाहता है। अर्लपेट्रिकने बीस हजार सेना लेकर स्वय उनपर घेर लिया और जहाजी सेनासे तरीके रास्ते रसद आना रोक दिया। विशपवेक दस हजार सेना लेकर डर्हममें रहे।

वालेस यह खबर पातेही पाच हजार सेना लेकर सीटनकी मददको दौडा। सीटन ज्यादा सिपाहियोंको किलेकी निगरानीमें तैनात करके थोडेसे साथियो सहित वालेससे आमिला। विशपवेक दस हजार सेना सहित स्पिटमूरमें छिपकर वालेसकी चाल देखते थे। इस बीचमें पेट्रिक भी किलेका घेरा उठाकर अपनी समूची सेना सहित स्पिटमूरमें वेकसे आमिला। इससे शत्रुसेनाका जोर तीस हजार या उससेभी ज्यादा होगया। वालेस केवल पांच या छः हजार सेना लेकर उस भारी सेना पर चढ दौडा। प्रचण्ड झरना जैसे नदीमें गिरकर उसके जलमें खलबलाहट डाल देता है वैसेही वालेस शत्रुसेनाको उथल पुथल करने लगा। किसे ताकत है जो वालेस और उसके वीरोंकी गति रोकसके? वालेस तलवार हाथमें लेकर धडल्लेसे अकेले शत्रुसेनाके व्यूहमें घुस गया। असख्य शत्रुसेनाने उसे घेर लिया। मानो सप्तरथी मिलकर अभिमन्युको मारने चले। कासपेट्रिकने उसे जरा जखमी किया। घोडेके मारे जानेसे उसे पावप्यादे लडना पडा। इधर उसके सैनिक उसे न देखकर बहुत घबराये कितनेही वहांसे सरक गये। उन्हें उसकी यह हालत नहीं मालूम हुई। कासपेट्रिकने घोडेपर सवार होकर

पावथ्यादि वालेसको बर्छेसे मारना चाहा किन्तु वालेसकी असाधारण कुशलतासे उसको मन कोशिश व्यर्थ होने लगी। इधर ग्रेहम लौडर, वायल, है, रासजे, गुडिन, वायड, शीटन आदि जागीरदार वालेसको न देखकर पांच हजार सेनासहित शत्रुके व्यूहमें घुसगये। उनको गोलने जाकर विशपवेकको मुहकी खानी पडी। जैसे हाथियोंका झुण्ड केलेके वनमें जाकर सामनेके पेडोंको उखाड कर पैरों तले रौदता है उसी तरह उस वीरदलने सामना करनेवाले अङ्गरेजोंको रौद पटककर वालेसका उद्धार किया। वालेस घोडे पर सवार होकर पीछा करनेवाले शत्रुओंका हमला व्यर्थ करके अपनी छावनीमें लौट आया। इस बीचमें वहां उसके चार हजार साथी आजुटे थे। स्काटिश योद्धाओंके मैदानसे चले जानेसे कर्कपेट्रिककी ही जय हुई किन्तु वह जय उसे बहुत बडे दाम पर खरीदना पडी थी। इस मैदानमें सात हजार अङ्गरेज-सेनाकी समाधि हुई। इधर स्काटिशदल पांचसौसे अधिक मौते नहीं हुई और कोई स्काटिश कर्म्मचारी मारा नहीं गया। विजय लाभ करके भी कर्कपेट्रिक सुखी नहीं हुआ, क्योंकि अगणित सेनाके मारे और वालेस के भाग जानेसे उसको बहुत अफसोस हुआ था।

विशपवेक स्काटिश सेनाके फिर हमलेके डरसे लेमरमूरकी तरफ चलदिये। इधर स्काटिशसेनाकी हारकी खबर चारों ओर फैलनेसे स्काटलेण्डके वाशिन्दे डरकर स्काटिश जातीय झण्डेके नीचे आकर खडेहुए। सब मिलाकर दो हजार नईसेना आकर जमाहुई। इसीको लेकर वालेस विशपवेकका पीछा करने लेमरमूरकी तरफ चला। सवेरे वहलोग एकबएक अंगरेजी छावनीके सामने जापहुंचे। अंगरेज सेनाको पहलेसे इसकी कुछ खबर न थी इसलिये वह शान्तिदायिनीनिद्राकी गोदमें आराम कर रही थी। स्काटिश सेनाने दो हिस्सोंमें बटकर दोतरफसे हमला किया। बहुतसे सैनिक सदाके लिये सोगये, जो उठे वह किधर भागे कुछ पता नहीं। किन्तु विशपवेक अपनी जगहसे एकपैरभी इधर उधर न हुए वह लुन्डिनकी तलवारसे

घायल हुए तथापि बहादुरीसे लडते रहे। किन्तु जब शरीर शिथिल होगया तबवह मैदान छोडकरभागे। कसपेट्रिक और ब्रूसनेभी पांच हजार सेनासहित वही रास्ता लिया। भागते भागते अङ्गरेज अन्तमें डर्हम किलेमें जाकर छिपे। विजयी स्काटसेनाने ट्वीड नदीतक अंग-रेज सेनाका पीछा किया था लडाईके मैदानमें और भागते समय वीस हजार अङ्गरेज मारे गये। ष्टिटमूरकी लडाईमें अङ्गरेजोंने विजय पाकरभी ७ हजार सेना खोई थी इस लेमरमूरकी लडाईमें हारकर वीस हजार सेना खोई। इससे उनके मनमें उत्साह न रहा। वह विराट अङ्गरेज सेना तितर बितर होकर भाग गई। वालेस मौका पाकर कसपेट्रिकका किला उखाडने और खेत तहस-नहस करने लगा सिर्फ डनवरका किला सावित छोडा।

लडाई शुरू होनेके अठारहवें दिन वालेस पर्थनगरमें लौट आया उस समयभी वहां जातीय सभाका अधिवेशन होरहाथा। वालेसका विजय समाचार सुनकर सबलोग आनन्दित हुए। जातीयसभाने उसे समूचे स्काटलेण्डका गवर्नर बनादिया। जागीरदारोंने अबके एक वाक्यसे उसकी अधीनता स्वीकारकी। वालेस स्टर्लिंग समरकी वि-जयके बाद अपने हितमित्रों और सेनाद्वारा गवर्नर बनाया गयाथा किन्तु इसबार समस्त जातिने एक वाक्यसे उसे उस गौरवके पद पर अभिषिक्त किया। इसी समयसे वह वास्तवमें स्काटलेण्डका प्रतिनिधि और शासनकर्ता कहा जासकता है।

स्काटलेण्डका गवर्नर मुकर्रर होनेपर सेनाविभाग पर वालेसकी पहली और पूरी निगाह पडी। ग्रन्थके आरम्भमे कहा गया है कि मामूली तौरसे राजाको भी सब तरहसे सहायता मिलनी मुशकिल होती थी। जागीरदारोंकी ईर्षा और अहङ्कारका बुरा नतीजा वालेस पहलेही भोग चुका था। इसलिये विपद पडने पर उसे उनसे कुछ सहायताकी आशा न थी। किसानों और गुलामोंका स्वार्थ जागीरदारोंके स्वार्थसे ऐसा मिला हुआ था कि उनसे भी किसी तरहकी सहायताकी उम्मेद न थी। इसलिये वालेसने स्थायीसेना

रखनेका विचार किया। किन्तु एक दम नया ढङ्ग चलानेसे जागीरदारोंकी नाराजीका खटका था इसलिये उसने पहले बीचका रास्ता लिया। तनख्वाहदार स्थायी सेना न कायम करके उसने वर्तमान मिलिशिया (अस्थायी सेना) की नींव डाली। समूचे स्काट लेण्डको कई जिलोंमें बांटा। सोलह और साठ वर्षके अन्दर जिन की उमर थी उनमें जो हथियार बांधने योग्य थे उनकी एक फिहरिस्त तय्यार की। इन अस्थायी सेनामें एक तरहका नया ढङ्ग चलाया। हर चार आदमियों पर पांचवें, हर नौ आदमियों पर दसवें, हर उन्नीस पर बीसवें इत्यादि इसी हिसाबसे हर ९९९ पर पर हजारवें आदमीको सेनापति मुकर्रर किया। उसके हुकमकी पूरी तामील हो इसके लिये हर गांवमें फांसीकी एक टिकठी रखी गई। जो डरपोक कायर पुरुष स्वदेशरक्षाके लिये बुलाने पर भी हथियार उठानेसे नाहीं करता, दृष्टान्तसे दूसरोंको 'नहीं' छुडानेके लिये वह फांसी पर लटका दिया जाता। जो जागीरदार अपनी प्रजाको देशहितैषीदलमें शामिल होनेसे रोकता वह कैदखाने भेजा जाता या उसकी जायदाद जातीयभाण्डारमें जब्त करली जाती। यों उसकी अस्थायी सेना बनी। इन लोगोंको हमेशा हाजिर रहना नहीं पडता, अपने अपने दलपतिके अधीन रहकर विद्या सीखना पडती और बुलाये जाने पर जातीय झण्डेके नीचे आकर खडा होना पडता था।

वालेस और उसके सहकारी मरे ने यों जातीय सेना बनाकर पीछे जातीय वाणिज्यकी उन्नतिकी ओर ध्यान दिया। वालेस केवल असाधारण वीरही नहीं था, राज्यको धनधान्य पूर्ण करने और बन्दोबस्त रखनेमें भी वह बहुत प्रवीण था। उसने हमबर्ग और लूबेकनगरसे स्वाधीन वाणिज्यकी सन्धि की। उस सन्धिपत्रसे वालेसकी राजनीतिज्ञताका बहुत कुछ पता लगता है।

वालेस इस समय प्रभुत्वकी चरमसीमा पर पहुंच गया है। अब तो प्रभुताका कोई मुकाबला करनेवाला नहीं है। इतने पर भी

ग्यारहवां अध्याय।

वालेसकी इङ्गलेन्ड पर चढाई—सेन्ट अलबनकी सन्धि।

१२९७ ईस्वीके अक्टोबर महीनेमें खबर आई कि एडवर्ड कमपेट्रिककी सलाहसे स्काटलेन्ड पर दूसरी चढाई करना चाहते हैं। यह खबर पातेही वालेसने जागीरदारों और अनुचरोंकी एक सभा बटोरी। उसके बुलावे पर रसलिनमूरमें चालीस हजार आदमी जमा हुए। उसने जागीरदारोंको सम्बोधन करके कहा—"एडवर्ड स्काटलेन्डपर फिर चढाई करना चाहते हैं इसलिये मैंभी प्रण करता हूं कि देहमें दम रहते उन्हें सफलमनोरथ न होनेदूंगा।' जागीरदारोंने एक स्वरसे बडे उत्साहपूर्वक उसकी प्रतिज्ञामें सहायता देना स्वीकार किया। ४० हजारमेंसे उसने २० हजार आदमी छांट लिये। जो लोग अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित और जातीयकार्य्यके व्रती थे वालेसने उन्हींको चुना। बाकी बीस हजार आदमियोंको उसने देशकी भीतरी उन्नतिके कामोंमें लगाया। लगातार लडाइया होनेसे इस देशकी भीतरी हालत बिगड गई थी इससे वालेसने कहा—अब ज्यादा आदमी लेनेकी जरूरत नहीं है।

सागरगामिनी नदीकी भांति वह महती सेना एक मन और एक ध्यानसे जातीय गीत गाती इंगलेन्डकी तरफ चली। वालेसका इरादा था कि एडवर्डको स्काटिश मैदानमें पैर न रखनेदें। इसलिये वह लोग उनकी चाल रोकनेके लिये इंगलेन्डकी तरफ रवाना हुए। इस बार स्काटिश भाग्यकी इंगलेन्डके मैदानमे परीक्षा होगी। अबके वह लोग यह प्रतिज्ञा करके निकले हैं कि या तो युद्धमें जीतेंगे या वहीं कट मरेंगे। इस वास्ते वालेसने इस यात्रामें देशके बडे बडे जमीदारोंको साथ नही लिया। कारण अगर वह न लौटे तो उन्हीं जमींदारों द्वारा स्काटलेन्डकी रक्षा होसकेगी। बहुत कहने सुननेसे लाचार होकर उनमेंसे सिर्फ कुछ जमींदारोंको साथ

लेगया। बड़े आदमियोंमें सिर्फ मलवास, केरवल, रामजे, ग्रेहम, एडम, वायड, अचिगलेक, लुन्डिन, लोडर, हे और सीटनने साथ नही छोड़ा। इस महती सेनाने न्‍ाविसके मैदानमें जाकर छावनी डाली। वहांसे सिर्फ ४० आदमियोंको साथ लेकर वालेस रक्सबरा किलेके द्वार पर पहुचा और किलेदार सर रेल्फग्रेको बुलाकर हुक्म दिया कि तुम लौटते समय किलेकी चाबियां मेरे हाथमें देनेके लिये तैयार रहना नही तो तुम्हारी देह किलेकी दीवारमें लटका दूंगा। उसने रामजेकी मारफत ऐसाही हुक्म बारविक किलेमें भी भेज दिया।

अब ज्यादा देर न करके वालेस और उसकी सेना ट्वीड नदी पार होकर नारदम्बरलेण्ड और कम्बरलेन्डमें दाखिल हुई। मतवाले हाथीकी तरह उसकी सेनाने इनदोनों प्रदेशोंको दलमल डाला। आग लगाकर डरहम नगर खाक कर दिया। यार्कशायरकी भी यही दशा हुई। सेनाको बदला लेनेका जोश चढा था वह जहां जाने लगी वहा तलवार और आगसे काम लेने लगी। पन्द्रह दिन के अन्दर एडवर्डके दूतने आकर वालेससे चालीस दिनकी शान्ति चाही, कहा—"इसके बादही एडवर्ड लडाईमें वालेसका मुकाबला करेंगे।" स्काटलेन्डके भाग्यनाथने यह प्रस्ताव मान लिया और यार्कनगरमें एक दिन ठहरकर ससैन्य नरदालरटनकी तरफ कूच किया। वहा पहुचकर छावनी डाली। चालीस दिनकी सन्धि सर्वत्र प्रगट कर दी गई और वालेसने लूटका माल खरीदनेके लिये सब को बुलाया।

एडवर्डने सन्धिका नियम तोड़कर सन्धिके भीतर ही बेखबरीमें वालेस पर आक्रमण करनेके लिये बहुतसी सेनासहित वाल्टननगरके कप्तान सर रेल्फ रेमन्डको भेजा। वालटननगरसे थोड़ी दूर पर कुछ स्काचमेन रहते थे। वह लोग यह खबर स्काटिश छावनीमें लेगये। वालेसने उसी वक्त हिउ, लुन्डिन और रिचार्डके सेनापतित्वमें तीन हजार सेना भेजी। हुक्म दिया कि

ग्यारहवां अध्याय।

वालेसकी इङ्गलेन्ड पर चढाई—सेन्ट अलवनकी सन्धि।

१२९७ ईस्वीके अक्टोबर महीनेमें खबर आई कि एडवर्ड कसपेट्रिकको सलाहसे स्काटलेन्ड पर दूसरी चढाई करना चाहते हैं। यह खबर पातेही वालेसने जागीरदारों और अनुचरोंकी एक सभा बटोरी। उसके बुलावे पर रसलिनमूरमें चालीस हजार आदमी जमा हुए। उसने जागीरदारोंको सम्बोधन करके कहा—"एडवर्ड स्काटलेन्डपर फिर चढाई करना चाहते हैं इसलिये मैंभी प्रण करता हूं कि देशमें दम रहते उन्हें सफलमनोरथ न होनेदूंगा।' जागीरदारोंने एक स्वरसे बडे उत्साहपूर्वक उसकी प्रतिज्ञामें सहायता देना स्वीकार किया। ४० हजारमेंसे उसने २० हजार आदमी छांट लिये। जो लोग अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित और जातीयकार्य्यके व्रती थे वालेसने उन्हींको चुना। बाकी बीस हजार आदमियोंको उसने देशकी भीतरी उन्नतिके कामोंमें लगाया। लगातार लडाइया होनेसे इस देशकी भीतरी हालत बिगड गई थी इससे वालेसने कहा—अब ज्यादा आदमी लेनेकी जरूरत नहीं है।

सागरगामिनी नदीकी भांति वह महती सेना एक मन और एक ध्यानसे जातीय गीत गाती इंगलेन्डकी तरफ चली। वालेसका इरादा था कि एडवर्डको स्काटिश मैदानमें पैर न रखनेदें। इसलिये वह लोग उनकी चाल रोकनेके लिये इंगलेन्डकी तरफ रवाना हुए। इस बार स्काटिश भाग्यकी इंगलेन्डके मैदानमें परीक्षा होगी। अबके वह लोग यह प्रतिज्ञा करके निकले हैं कि या तो युद्धमें जीतेंगे या वहीं कट मरेंगे। इस वास्ते वालेसने इस यात्रामें देशके बडे बडे जमीदारोंको साथ नहीं लिया। कारण अगर वह न लौटे तो उन्हीं जमींदारों द्वारा स्काटलेन्डकी रक्षा होसकेगी। बहुत कहने सुननेसे लाचार होकर उनमेंसे सिर्फ कुछ जमींदारोंके साथ

लेगया। बड़े आदमियोंसे सिर्फ मलवास, केम्बल, रामजे, ग्रेहम, एडम, वायड, अचिगलेक, लुन्डिन, लोडर, हे और सीटनने साथ नहीं छोड़ा। इस महती सेनाने ब्रासिसके मैदानमें जाकर छावनी डाली। वहांसे सिर्फ ४० आदमियोंको साथ लेकर वालेस रक्सबरा किलेके द्वार पर पहुंचा और किलेदार सर रेल्फाग्रेको बुलाकर हुक्म दिया कि तुम लौटते समय किलेकी चाबियां मेरे हाथमें देनेके लिये तैयार रहना नहीं तो तुम्हारी देह किलेकी दीवारमें लटका दूंगा। उसने रामजेकी मारफत ऐसाही हुक्म बारविक किलेमें भी भेज दिया।

अब ज्यादा देर न करके वालेस और उसकी सेना ट्वइड नदी पार होकर नारदम्बरलेण्ड और कम्बरलेन्डमें दाखिल हुई। मतवाले हाथीकी तरह उसकी सेनाने इनदोनों प्रदेशोंको दलमल डाला। आग लगाकर डरहम नगर खाक कर दिया। यार्कशायरकी भी यही दशा हुई। सेनाको बदला लेनेका जोश चढ़ा था वह जहां जाने लगी वहां तलवार और आगसे काम लेने लगी। पन्द्रह दिनके अन्दर एडवर्डके दूतने आकर वालेससे चालीस दिनकी शान्ति चाही, कहा—"इसके बादही एडवर्ड लड़ाईमें वालेसका मुकाबला करेंगे।" स्काटलेन्डके भाग्यनाथने यह प्रस्ताव मान लिया और यार्कनगरमें एक दिन ठहरकर ससैन्य नरदालरटनकी तरफ कूच किया। वहा पहुंचकर छावनी डाली। चालीस दिनकी सन्धि सर्वत्र प्रगट कर दी गई और वालेसने लूटका माल खरीदनेके लिये सबको बुलाया।

एडवर्डने सन्धिका नियम तोड़कर सन्धिके भीतर ही वेखबरीमें वालेस पर आक्रमण करनेके लिये बहुतसी सेनासहित माल्टननगरके कप्तान सर रेल्फ रेमन्डको भेजा। मालटननगरसे थोड़ी दूर पर कुछ स्काचमेन रहते थे। वह लोग यह खबर स्काटिश छावनीमें लेगये। वालेसने उसी वक्त हिउ, लुन्डिन और रिचार्डके सेनापतित्वमें तीन हजार सेना भेजी। हुक्म दिया कि

राहमें छिपकर आनेवाली अङ्गरेजीसेनापर वेखबरीमें हमला करना। सर रेल्फ रेमन्ड सात हजार सेना लेकर आते थे अचानक तीन-हजार स्काचसेनाने बड़े वेगसे गर्जकर उनपर आक्रमण किया। उसकी प्रचण्ड तलवारोंसे पलक भरमें तीन हजार अङ्गरेज मारे गये बाकी डरके मारे जहांतहां भाग गये। सेनापति सर रेल्फ लड़ाईमें काम आये। वालेस फौरन उस भागती हुई अङ्गरेज सेना का पीछा करके मालटन नगरमें दाखिल हुआ और वहां असंख्य शत्रुओंको मारकर शहर लूट लिया। दो दिन रहकर शहरका किला गिरादिया और फिर छकड़ोंमें लूटका माल असबाव लदाकर अपनी छावनीमें लेआया। लौटकर अपनी सेनाको अचानकके आक्रमणसे बचानेके लिये छावनीके चारोंओर चारदीवारी वनाई।

इससे एडवर्ड समझ गये कि वालेस जल्द इंगलेन्ड छोड़ना नहीं चाहता। अब उनके जीमें डर समाया। उन्होंने यमफ्रेट नगरमें पार्लीमेन्टका अधिवेशन किया, किन्तु लार्डोंने कहा कि जबतक वालेस स्काटलेन्डका मुकुट नहीं पहनता तबतक हमलोग आपको उससे लड़ने नहींदेंगे। पार्लीमेन्टकी यह राय स्काटिशछावनीमें भेजी गई। इसके फैसलेके लिये केम्बल आदि स्काटिश वीरोंने वालेसको ताज पहननेका अनुरोध किया। उसने दृढतासे इस प्रस्तावको अस्वीकार किया। अन्तमें अर्ल मलकमकी सलाहसे एडवर्डका उज्र मिटानेके लिये सिर्फ एक दिन अपनेको स्काटलेन्डका राजा कहनेका हुक्म दिया। तोभी अङ्गरेज खुली लड़ाईमें वालेसके सामने आनेका साहस न कर सके। उन्होंने सलाह की कि किलेवाले शहरोंकी रक्षा करें और सब बाजार बन्द करके वालेसकी सेनाको रसद न मिलने दें। उनकी यह कोशिश व्यर्थ हुई। वालेसने सन्धि कास मय बीत जानेके बाद भी पांच दिन तक राह देखी तो भी अङ्गरेज सेनाका दर्शन न पाया तब अपना झण्डा उड़ाया और एड-वर्डको अयोग्य राजा कहकर घोषणा की। वह नरदालरटन शहर ...। ~ खेती बरबाद करता यार्कशायरसे होकर जाने लगा।

उसकी सेना गिरजे और स्त्री बच्चोंके सिवा और कुछ नहीं छोड गई।

धीरे धीरे वह जबरदस्त सेना यार्कनगरके सामने आपहुंची। यार्कनगर किलेसे सुरक्षित था वहां बहुत सेना तैनात थी। स्काटोंने चार हिस्से होकर चार जगहसे उस किले पर हमला किया। उनके साथ चार हजार तीरन्दाज थे। इधर नगरमें भी ४ हजार धनुर्धर और बारह हजार दूसरी सेना थी। इसलिये उसने बडी कामयाबीसे स्काचोंका हमला व्यर्थ किया। स्काट लोग डरसे नगर छोडकर भाग गये।

इधर रात होगई। स्काट रात भर शहरसे बाहर छावनी डाले पडे रहे। सारी रात मशाल जलाकर वह लोग शत्रुओंका रगढंग देखते थे। यद्यपि उनमें बहुतसे घायल हुए थे किन्तु एक भी स्काच मारा नहीं गया। इसीसे स्काटोंने हार कर भी हिम्मत नहीं हारी।

दूसरे दिन सूर्य्योदयके बाद स्काटोंने नये उत्साहसे पहले दिनकी तरह कतार बांधकर नगर पर फिर आक्रमण किया। इस दिन भी आग फेंककर तथा कई तरहसे शहरको बडी हानि पहुंचाई किन्तु शहरमें घुस नहीं सके। फिर रात होगई फिर स्काटोंने शहर-पनाहके बाहर छावनी की। सब आराम करने लगे मगर वालेस की आखोंमें नींद नहीं थी। वह घोडे पर सवार होकर चारोंओर देखता फिरता था कि प्रहरी पहरा देरहे हैं या नहीं। इतनेमें एकाएक पासही शत्रुसेना देखी। सर जान नाटन और सर विलियम ली पांच हजार सेना लेकर चुपके चुपके हमला करनेकी नीयत से स्काटिश छावनीकी तरफ बढ रहे थे। देखतेही वालेसने बिगुल बजाया, फौरन उसकी हमेशा मुस्तैद सेना उठकर अस्त्रशस्त्रसे सज्जित हुई। शत्रु शहरपनाहसे निकलकर पहले अर्ल मलकमके सामने आये। वालेस उसे हठी समझता था इसलिये स्वयं लडाईमें पहुंचा। दोनों मिलकर शत्रु सेनाको मारने लगे।

अन्तमें सर जान नाटन और १२०० सेनाके मारे जानेसे शहरके

पीठ दिखाकर शहरमें भाग गये। स्काटोंने विजयोत्साहसे छावनीमें लौटकर आरामसे रात बिताई। सबेरे उठकर फिर शहर पर चढाई की। इस तरह बहुत दिनके घेरेके बाद यार्कशहर ने सोना देकर प्राणभिक्षा चाही। वालेसने इस शर्तपर उन्हें छोडना चाहा कि वह लोग शहरपनाह पर स्काटिश झण्डा गाडने दें। यार्क लाचार राजी हुआ। स्काटलेन्डका झण्डा यार्क शहरकी दीवार पर फर्राने लगा। पांच हजार पौण्ड कर और इफरातसे रोटी शराब तथा दूसरी खानेकी चीजें पाकर स्काट बीस दिनके बाद शहर छोडकर चले गये।

अप्रेलका महीना आया। अभीतक वालेस और उसकी सेना इंगलेन्डमें है। रसदका मिलना मुशकिल होजानेसे लाचार उसे लूट पाटकाही सहारा लेना पडा। वह लोग जगली हरिण मारकर और खेतकी खडी फसल काटकर किसी तरह पेट पालने लगे। अन्तमें दक्षिणकी तरफ कूच कर गये। राहमें अग्निलीला करने लगे। गांव शहर लूटते जलाते वह अवध्य सेना लन्दनकी तरफ जाने लगी। तोभी अङ्गरेजसेनाने वालेसका सामना करनेका साहस नहीं किया। उसने पीछे हटते हटते अन्तमें लन्दन जाकर छावनी डाली।

उधर रसदकी कमीसे वालेसको आगे बढनेकी हिम्मत न हुई। उसने अपने झण्डा लेचलनेवाले जापकी सलाहसे रिचमन्डको कूच किया। वहा अभीतक इफरातसे रसद थी। उसे पाकर उसकी सेना बेहद खुश हुई। रिचमन्डसे बहुतसे स्काच कैदी और मजदूर थे। यहां नौ हजार स्काच वालेसके झण्डेके नीचे आखडे हुए। यह सम्मिलित सेना वहासे साम्पवार्थको रवाना हुई।

स्काचोंने उस शहरको सहीसलामत छोड जाना चाहा था मगर नगर रक्षक सो सैनिकोंने उन पर ऐसा अत्याचार किया कि उन्होंने किलेको घेरकर आग लगा दी। किलेदार फिकियूने किलसे ज्योंही बाहर निकलना चाहा त्योंही वालेसकी तलवारने उसका सिर धड

के अन्त कर दिया। पीछे स्काटोंने किलेमें घुसकर बच्चे बूढ़े और स्त्रियोंको छोड़ बाकी सबको यमलोक भेज दिया। रात वहीं बिताई। सबेरे किलेका माल लेकर चलते बने। वालेसने फिलिप्यू के सिर सहित एडवर्ड या उनकी मन्त्रीसभाके पास यह खबर भेजी कि अगर आप पूर्वप्रतिज्ञानुसार मुझे युद्ध न देंगे तो मैं एक बारही लन्दनके तोरणद्वार पर जापहुचूँगा। मन्त्रिसभा बुलाई गई बहुत बड़ी बहसके बाद तय हुआ कि चाहे किसी दाम पर हो शान्ति मोल ली जाय। यह बात तय हुई किन्तु किसीने दूत बनना स्वीकार नही किया। अन्तमें एडवर्डकी रानी स्वयं स्काटिश छावनी में जानेके लिये जिद करने लगी। ऐसी अफवाह है कि वालेसके वीरोचित गुणो पर रानी यहां तक मुग्ध होगई थीं कि उसकी प्रेमाभिलाषिनी हुई थी। जोहो इधर स्काट हार्फोर्डशायरके सेन्ट अलबन्स शहरमें आपहुचे। नगरके पादरीने सद्भावसे उनकी बड़ी खातिर की। इससे उन्होने नगरको कुछ नुकसान नहीं पहुचाया। यहां स्काट छावनी डाल और चन्दोवा तानकर राजमहिषीकी बाट देखने लगे।

अर्ल मलकामने उन्हे इससे मना किया। वालेसने रानीका हाथ धरकर उनका मुकुट चूमा। उनसे राज्यसम्बन्धी विषयो पर बहुत बात चीत हुई। दोपहरका खाना खानेके बाद दरबार हुआ। रानी ने वालेसको फुसलानेकी हजार कोशिश की किन्तु उसे किसी तरह टससे मस न कर सकीं। अनुकूल सन्धि पानेकी आशासे अन्तमें सोनेका लोभ तक दिखाया गया किन्तु वह आशा भी विफल हुई। स्वदेशके लिये प्राण न्योछावर करनेवाले स्वदेश प्रेमीके आगे कामि नी और काञ्चन दोनो निष्फल होते है। वालेसने औरतसे सन्धि करना अस्वीकार किया हा इतना मानलिया कि वह एडवर्डके यहा से सन्धिका प्रस्ताव लेआने वाले दूतोकी रक्षा करेगा और मुमकिन हुआ तो उनका प्रस्ताव मजूर कर लेगा। एडवर्ड इस समय फ्लान्डर्स की लडाईमें लगे थे जल्द उनके आनेकी उम्मेद न थी इससे रानी लाचार इतनेहीसे सन्तुष्ट होकर चली गईं।

स्काट सेन्ट आलवनसेंही रहे। इसी बीचमे एडवर्डके दूत सन्धि का प्रस्ताव लेकर आये। सन्धिकी नियमावली ते हुई। रक्सबरा और वारविकके किले और इङ्गलेण्डमें कैद या और किसी कारणसे रहनेवाले स्काच वालेसके सपुर्द किये गये। जो स्काच सपुर्द हुए उनमें रैन्डलफ, अर्ल लोरन् अर्लबूकन, क्यूमिन और सुलिस मुख्य थे। वालेसने ब्रूस और सर आमेर डी वालेसको मांगा तो एडवर्ड ने उत्तर दिया कि वह भागगये। कसपेट्रिक भी वालेसके सपुर्द किये गये। वालेसने उन्हें आदरसे लिया। कुल एकसौ स्काच लार्ड कैद से छोडकर एकसौ बढिया घोडों सहित वालेसके पास भेजे गये। सन्धिके नियमानुसार स्काट जब नरदारलटनमें आये तब दोनो तरफ के हस्ताक्षर सन्धिपत्र पर हुए। जब स्काट दखरी नगरमें पहुचे तब उनकी सख्या ६० हजार होगई थी। यह विजयी महती सेना केरसमूरमे आई। यहां वारविक और रक्सबरा किलेकी चाबियां वालेसके हाथमें दी गईं। यह सन्धि ५ वर्षके लिये हुई।

बारहवां अध्याय।

वालेसकी फ्रान्स यात्रा।

स्काटलेण्डमें पाच वर्षके लिये सन्धि हुई। अब वालेसने एक बार फ्रास देखनेका विचार किया। इरादा है कि फ्रास की भीतरी अवस्था देखकर स्काटलेण्डकी भीतरी उन्नति करना चाहिये। इसी इरादेसे वह सिर्फ पचास आदमियो सहित सन् १२९८ ईस्वी की ता० २० अप्रैलको फ्रांस रवाना हुआ। पार्लीमेन्टसे अनुमति लेनेमे उज्र उठनेका ख्याल करके उसने चुपचाप यात्रा करदी। छिपकर जानेका एक यहभी कारण है कि स्काटलेण्डमें उसके न रहनेका समाचार पाकर कहीं एडवर्ड सन्धिका नियम तोड चढाई न करदे या अपने जगी जहाज भेजकर उसे गिरिफ्तार न कराले।

अनुकूल हवा पाकर जहाजकी पालें मानो हवासे बातें करने लगी। एक दिन और एक रात योंहीं बीती इतनेमें दूरसे सोलह जहाज बडी तेजीसे आते दीख पडे। वालेसने तुरन्त साथियोंको कमर कसकर तय्यार हो जाने का हुक्म दिया। यह जहाज फ्रासके लारविल शहरके टामस नामक एक आदमीके थे। टामस किसी बडे आदमीकी हत्याके अपराधमें देशसे निकाल दिया गया था। तबसे वह समुद्री डाकू बन गयाथा। वालेस कोभी उसने अपना शिकार बनाना चाहा था लेकिन कामयाब न हुआ।

टामसने इस नये पेशेमें नया नाम पायाथा। समुद्री यात्री उसे लाल रोवर कहते। लाल रोवर जहाज दौडाकर वालेसके जहाज की बगलमें आ पहुचा। जहाज ज्योंहीं बगलमें आकर खडा हुआ त्योंही रोवर एक छलाग मारकर वालेसके जहाजपर कूद पडा। वालेस खडे होकर इसीकी बाट देखताथा ज्योंही रोवर कूदा वालेस ने उसका गला पकडकर ऐसा धक्का मारा कि उसके मुह और नाक से खून गिरने लगा। देखतेही देखते रोवरके सोलहो जहाजोंने

आकर वालेसका जहाज घेर लेनाचाहा। किन्तु वालेसका पोताध्यक्ष क्राफोर्ड फौरन पाल चढ़ाकर दूर निकलगया और उनको बहुत पीछे छोड़गया। अब रीवरने लाचर होकर वालेसने क्षमा मांगी। वालेस ने क्षमा तो की किन्तु उसके हाथमें जो तलवार और छुरी थी वह लेकर उसे निरस्त्र कर दिया और शपथ करवाई कि वह कभी उसका कुछ नुकसान नहीं करेगा। इधर रीवरके आदमी बराबर गोले गोलियां बरसा रहेथे। वालेसके आदेशसे रीवरने उनको मना कर दिया। दोनो दलमें शान्ति होगई। टामसने वालेसको रचेलतक पहुंचा आना चाहा। अङ्गरेजों के आक्रमणके भयसे वालेसने मंजूर किया। राहमें दोनोंमें परिचय हुआ। टामसने अपना हाल सुना कर कहा—'आजतक मुझे कोई परास्त नहीं कर सका था। मेरा विश्वास है कि स्काटलेन्डके उद्धारकर्त्ता वालेसके पास मैं हूं।' टामसने जब जाना कि उसका विश्वास ठीक है तब उसने घुटना टेक कर स्काटलेन्ड और वालेसके काममें जान देदेनेकी प्रतिज्ञा की। वालेसने उसका हाथ धरकर उठाया और फ्रासनरेशसे उसके लिये माफी मांगनेका वादा किया।

उन दिनो लालरीवरके नामसे लोग थरथर कांपते थे। जब जहाजोंका झुण्ड रचेलबन्दरके पास पहुंचा तब नगरनिवासी रीवर के जहाज पहचान कर बहुत डरे और आक्रमण रोकने या भागने को तय्यार होनेके लिये लड़ाईका बाजा बजाने लगे। यह देखकर वालेसने आज्ञा दी कि मेरे जहाजके सिवा और कोई जहाज बन्दर-गाहमें न जाय। वालेसके झण्डे पर स्काटलेन्डका लाल शेर बना हुआ था। वह चिन्ह देखकर सबने अनुमान किया कि स्काटलेन्ड के आदमी आये है। उन दिनों फ्रांससे स्काटलेन्डकी दोस्ती थी इसलिये उन्होंने जहाजके यात्रियोंको आदरसे ग्रहण किया। वह लोग नहीं जानते थे कि स्काटिश गवर्नर स्वयं वालेस उनका अतिथि है तो भी उसके आदर सत्कारमें कुछ कमी न हुई। वालेसने टामस और दूसरे साथियो सहित राजधानीकी यात्रा की। पेरिस नगरमें

राजा और रानीने उसका और उसकेसाथियोंका बडे आदरसे स्वागत किया। तब एकटक स्काटिश वीरकेसरीको देखने लगे। भोजनादि के बाद राजा और उनके सभासद वालेसके साथ दरबारमें गये। यहा वहांकी बहुतसीं बाते होनेके बाद राजाने ताज्जुबसे कहा कि वालेस लालरीवरसे क्योंकर बच गये है। वालेसने उनसे रीवरका पूरा हाल बयान किया और उसके लिये क्षमा मांगी। फ्रांसनरेशने वालेसकी खातिर रीवरको माफ किया और वहीं उसको नाइटका खिताब दिया। तबसे रीवर और उसके सब साथी डकैती छोडकर सच्चे नागरिककी तरह फ्रांसमें रहने लगे।

यों तीस दिन राजाकी मेहमानीमें बीते। वालेस बेकार बैठे बैठे उकता गया। अङ्गरेजोंका गाइन प्रदेशमें रहना सुनकर राजासे विदा हो वालेस उधरही चला। देखतेही देखते चारोंओरसे नौ सौ स्काच उसके झण्डेके नीचे आखडे हुए। अस्ट्रियाके अत्याचार से जैसे इटली निवासी एक समय पृथिवीके चारोंओर जाछिपे थे वैसेही इङ्गलैन्डके जुल्मसे उस समय स्काट अनेक देशोंमें फैल गये थे। गेरीबाल्डी जहां इटलीका तिरङ्गा झण्डा उडाता वहीं असङ्ख्य इटालियन उसके नीचे आखडे होते। गेरीबाल्डीकी तरह वालेसको कभी आदमीकी कमी न होती। गेरीबाल्डीकी तरह वह भी नाम मात्रकी सेना लेकर विराट शत्रुसेनाका सामना करता और प्रायः हरबारही जीतता। दोनो रणमें अजेय थे। आज वालेस वही नौसौ सेना लेकर बडी भारी अङ्गरेजी सेनाके सामने आया। मानो शेरोंका झुण्ड भेडोंके झुण्ड पर टूट पडा।

उन्होंने सुना कि सर आमेर डी वालेसने थोथवेल किलेमें शराब और रसदका ढेर लगा रखा है। यह सुनकर उन्होंने सिर्फ पचास सैनिक लेकर उस किले पर आक्रमण किया। किलेकी रक्षाके लिये सर आमेरके मातहत अस्सी आदमी थे। स्काट उनमेंसे ६० को मारकर किलेका माल लेकर चल दिये। उनके ५ आदमी उस लड़ाईमें मारे गये। उन्होंने अब वहां रहना उचित न समझकर रातके समय अर्ल मलकमकी तरफ कूच किया। मलकम उनकी सहायतासे लेनक्स किलेकी रक्षा करने लगे।

इधर और और जागीरदारोंने अपनेको लाचार देखकर वालेस को खोजमें दूत भेजा। दूत ढूंढता ढूंढता समुद्र पार फ्लान्डर्समें आपहुंचा। वहां सुना कि वालेस गाइन प्रदेशमें है। दूत उधर ही दौड़ा और उसने वालेसके पास जाकर अङ्गरेजोंका सब अत्याचार कहा। वालेस अङ्गरेजोंके विश्वासघातसे बहुत क्रुद्ध हुआ और विदा होनेके लिये फ्रांसनरेशके प्रासादमें गया। फ्रांसनरेशने उसे विदा देनेसे बहुत रोका मगर वालेसने जब फिर आनेका वादा किया तब लाचार उसे विदा दी; कहा कि वालेस अगर कभी स्वदेश छोड़कर फ्रांसमें रहना चाहेंगे तो फ्रांसनरेश उन्हें चाहे जिस स्थानके लार्ड बना सकेंगे।

वालेस उनसे विदा लेकर अपने सहचरों और सर टामस लांगविल सहित जहाज द्वारा मनरोज हेवेन नामक बन्दरगाहमें आकर उतरा। उसके आनेकी खबर स्काटलेण्डमें सर्वत्र फैल गई। चारों ओरसे उसके लड़ाकू साथी आकर उससे मिलने लगे। सर जान रामजे रथवेन वार्को आदि सेना सहित वर्नमवनमें जाकर उससे मिले। सब सेनाने वहीं छावनी डाली।

१२९८ ईस्वीके अगस्त महीनेमें यह मिलन हुआ। सबसे पहले सेन्ट जानस्टन किला दखल करनेका प्रस्ताव हुआ। रातको वह लोग टे नदीकी तरफ जाकर सड़कके किनारे जङ्गलमें छिप रहे। अङ्गरेज नौकर घास लानेके लिये ६ छकड़े लेकर जारहे थे वालेसने

कई साथियों सहित झट जङ्गलसे निकलकर छकाडे छीन लिये। वह लोग नौकरोंको कतल करके उनकी पोशाक पहनकर घास लाने चले और घास काटकर छकडोंके भीतर १५ हथियारबन्द आदमियोंको छिपा ऊपरसे घास रखकर किलेको लौटे। पहरे-दारोंने बेखटके उन्हें किलेमें जाने दिया समझा कि यह तो अपने ही घसियारे हैं। किलेमें घुसतेही मज़बूत जवान घासमेंसे निकलकर जमीन पर कूद पडे। वालेसने उन्हें साथ लेकर दरवाजेके पहरे-दारोंपर आक्रमण किया। उनलोगोंके मारेजानेपर द्वार उनके हाथमें आगया। इसी बीचमें सर जान रामजे बाकी स्काच सेना लेकर किलेमें घुस आये। बातकी बातमें किलेके सब सिपाही मारे गये या भाग गये। कुछ टे नदीमें कूदकर डूब मरे। दुर्गाध्यक्ष सर जान सिवार्डने बडी मुश्किलसे मेथवेन वनमें जाकर शरण ली। कोई चार सौ अङ्गरेज मारे गये। १४० ने भागकर प्राण बचाये। वालेसने सर जान रामजेको कप्तान और रुथवेनको शेरिफ बनाकर फाइफकी तरफ कूच किया, कह गया कि अगर इधर अङ्गरेज आक्रमण करें तो फौरन मुझे खबर दीजाय। स्काचोंको सेन्ट जान-स्टनमें बहुत माल असबाब मिला था इससे वह कुछ दिन आराम से रहे।

इधर वालेसके फाइफकी तरफ रवाना होनेकी खबर पाकर सिवार्ड डेढ हजार सेना सहित ब्लैक आयरन साइड नामक स्थानमें उसकी वाट देखने लगा। सेनाकी संख्या अधिक देखकर स्काट पहले तो बहुत डरे। वह सेन्टजानस्टनसे भी खबर न भेज सके क्योंकि अङ्गरेज रास्तेकी निगरानीमें थे। इस हालतमें वालेसने वहीं एक समरसभा की। सभामें बहुत कुछ वादाविवाद हुआ, बहुतोंने बहुत तरहकी रायदी किन्तु वालेसने कहा कि जान पर खेलकर लडनेके सिवा दूसरा उपाय नहीं है। बहुत कुछ वितण्डे के बाद वालेसकी राय मंजूर हुई। वालेसके उत्साहने जोशसे स्काटोंने युद्धमें जय लाभ करनेके लिये प्रतिज्ञा की। उन्होंने

वनमें घुसकर वृक्षोंकी ओटसे डालियां गाड़कर एक मजबूत किला बना लिया। किला अभी पूरा नहीं बना था कि सिवार्ड ससैन्य उन पर टूट पड़ा। अङ्गरेजसेनाने दो हिस्से होकर दो तरफसे किले पर हमला किया। एक हजार सेना सिवार्डके और पांच सौ सर आसेरडी वालेन्सके अधीन थी। दोनों तरफसे आक्रमण रोका गया इससे बेशुमार अङ्गरेज मारे गये। अन्तमें अङ्गरेज सेनापतिने किला घेरनेके इरादेसे आठ सौ सेना लेकर सारा जङ्गल घेर लिया और किले पर हमला जारी रखनेके लिये सात सौ सेना सहित वालेसको छोड़ गये। आज्ञा दी कि अगर आप वालेस को पकड़ेंगे तो एडवर्ड आपको फाइफका अर्ल बना देंगे।

दोनों अङ्गरेज सेनापतियोंका मतलब समझकर वालेस क्राफोर्ड और लांगविलको किला सौंपकर ४० आदमी किलेमें छोड़ बाकी ६० को लेकर सिवार्डका सामना करने चला। सिवार्डके पहुंचनेसे पहलेही वह लोग एक बान्धकी बगलमें बड़ी बड़ी घासोंके भीतर जाकर छिप रहे। अङ्गरेज आहट पाकर मार मार करते उन पर टूट पड़े। किन्तु स्वदेशके लिये प्राणसमर्पण किये हुए वीरोंकी देह ईश्वरके दिये हुए बखतरसे रक्षित थी। इसीसे वह थोड़ेसे वीर उस प्रचण्ड अङ्गरेजसेनाकी गति रोकनेमें समर्थ हुए। वज्रमुष्टिमें तलवार धारण करके स्काटोंने असंख्य अङ्गरेजोंको कालके हवाले किया। अङ्गरेजोंको और आगे बढ़नेकी हिम्मत न हुई वह भौचकसे होकर चित्रकी तरह वहीं खड़े रहे।

तो कल तुम्हें फांसी पर लटका दूंगा। सिवार्डके चले जाने पर वालेसने वालेससे मुलाकात करके कहा कि एडवर्डकी गुलामी छोड़कर जातीय दलमें आजाओ। वालेस सिवार्डका हुक्म पहले हीसे नहीं मानना चाहते थे और न माननेका नतीजा भी सुन चुके थे इसलिये उन्होंने सहजसेंही वालेसका कहना मान लिया।

दोनोंकी सेनाने मिलकर सिवार्डकी सेना पर धावा किया। इधर रामजे और रुथवेन वालेसकी विपद सुनकर सेना सहित झट-पट वालेससे आमिले। इन सबकी मिली हुई सेनासे अब भी सिवार्डकी सेना ज्यादा थी। संख्याकी ज्यादतीके भरोसे सिवार्डने अपनी सेनाके दो हिस्से किये। दोनों सेनाओंमें घोर युद्ध होने होने लगा। बड़ी देर तक संग्राम हुआ। रामजे और रुथवेन अपनी ताजा सेनासे शत्रुओंको मारनेमें गजब करने लगे। स्वयं सर जान सिवार्ड वालेसकी तलवारके शिकार हुए। अङ्गरेज सेना सेनापतिके मारे जानेसे तितर बितर होकर भाग गई।

लड़ाई जीतकर रुथवेन सेन्ट जानस्टनको लौट आये और रामजे ने कूपर किलेको कूच किया। कूपरका किला बेलड़ाई उनके हाथमें आगया। उधर वालेस, क्राफार्ड, गुथरी, रिचार्ड वालेस और लागविल लगातार लड़ाइयोंसे थककर वालेसके मकान पर आराम करने गये। वालेसने चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेयसे उनकी खातिरदारी की।

सवेरे स्काट सेन्ट एन्डरूकी तरफ चले। वहांका अङ्गरेज विशप भागकर समुद्रकी राह इङ्गलेन्ड चला गया। इसके बाद वह लोग कूपर किलेको रवाना हुए। वहां कुछ दिन रह किले का दरवाजा तोड़कर चले गये।

सन् १२९८ ईस्वीकी १२ जूनको यह युद्ध हुआ। इस युद्धमें सब मिलाकर १५८० अङ्गरेज मारे गये जिनमें सर मलडोमर और सर जान सिवार्ड प्रधान थे।

*क भायरन साइडके युद्धमें स्काटोंने बड़ीही बहादुरी

दिखाई थी। चौगुनी पचगुनी अङ्गरेज सेनाके सामने पडकर भी जरा न डरे न हटे। अगरेजोंने उन पर बार बार हमला किया उन्होंने वारम्बार उनका वार व्यर्थ किया। अन्तमें उनकी अलौकिक वीरता पर मुग्ध होकर जयलक्ष्मी उनकी गोदमें आई। दो स्काट-सेनानायक इस युद्धमें मारे गये। फाइफके शेरिफ सर डङ्कन बाल-फोर, सर क्राई स्टोफर, सीटन और सर जान ग्रेहम घायल हुए। इस युद्धमें रामजे, गुथरी और विसेटने असाधारण विक्रम दिखाया था।

यह एक मामूली जंगली लडाई थी किन्तु इससे स्काट वीरों का यश-सौरभ चारोंओर फैल गया। सिवार्डकी मृत्यु सुनकर फाइफ के सब अङ्गरेज वहांसे भाग गये। सिर्फ लकलेवेनकी छावनीमें थोडी सी अङ्गरेज सेना थी। उस छावनीके चारों तरफ पानी था इससे उसने समझा था कि कुछ डर नहीं है किन्तु बहुत जल्द उस की भूल दूर हुई। सब स्काट सेनाने कैंबेलमें एकत्र होकर वहांसे स्काटलेण्डमवेल नामक स्थानमें आकर छावनी डाली। रातको भोजनके पश्चात् वालेस सिर्फ १८ आदमी साथ लेकर चुपकेसे छावनीसे निकलकर लकलेवेनकी तरफ चला। इस पारके बन्दरगाह में पहुंच कर साथियोंको वहीं छोड उस पार से नाव लानेके लिये स्वयं जलमें कूदपडा। उस वक्त उसके बदन पर सिर्फ एक कमीज थी और गलेमें तलवार लटकती थी। वालेस बातकी बातमें तैरकर दूसरे किनारे जापहुंचा। नावपर कोई आदमी नहीं था इस लिये वह बेखटके नाव इस पार ले आया।

आठ दिनके उत्सवके बाद स्काट लिलिकी सब चीजें लूट कर उसी नावसे इस पार आये और नाव जलाकर चले गये। वालेस सेण्ट जानस्टनको गया। वहां विशप सिनक्लेयर उससे आकर मिले। वालेस उत्तरकी तरफ जानेके लिये बहुत अधीर हुआ। किन्तु विशपने उसे मना किया। क्योंकि उस समय शत्रु सेना स्काट-लैण्डको चारोंओरसे रौंदती फिरती थी। अंगरेज बीचका रास्ता इस गरजसे रोके बैठे थे कि उत्तरवाली जातीयसेनासे वालेस मिलने न पावे। इधर बूकनके अर्ल इस बातकी कोशिश कर रहे थे कि जिससे वालेसके पास किसी तरह रसद न पहुंचने पावे।

अङ्गरेजोंके हजार कोशिश करने पर भी चारोंओरसे कंगाल आदमी वालेसके झण्डेके नीचे आकर खड़े होने लगे। नवयुवक रेण्डलफने भरसे वालेसकी मददके लिये बहुतसे आदमी भेज दिये। इस बीचमें जाप और बूयर चुपकेसे शत्रुसेनाकी भीतरी हालत देख आये और वालेसको बता दी। वालेसने यह खबर पाकर जाप स्टिफन और कार्ले आदि ५० सहचरो सहित सेन्टजानस्टनसे दारिय किलेको कूच किया। राहमें एक विधवा स्त्रीने जातीय भावके जोशमें आकर उस छोटीसी सेनाके लायक सब खाना तय्यार रखा था। एक मछुआ पथप्रदर्शक बनकर रातको उन्हें उस खाईसे घिरे हुए किलेके पास लेगया। किलेके पीछे एक छोटासा गुप्त पुल था। स्काट उसी पुलसे किलेके भीतर घुसे। डेढ पहर रात चली गई थी। अङ्गरेज बेखटके होकर खाना पीना कर रहे थे इतनेमें वालेस उस दालानके दरवाजे पर दिखाई दिया। सब लोग चौंककर उस की ओर देखने लगे। देखतेही देखते वालेसकी तलवारने किले-दार टामसजीनका सिर काट डाला। मालिककी मौत देखकर अङ्गरेजोंकी अक्ल मारी गई। एक एक करके किलेकी रक्षा करने वाले १०० अङ्गरेज स्काटवीरोंकी तलवारोंके शिकार हुए। इसके बाद वालेसने अपने चाचाको कैदसे छुड़ाया। टामसजीनने वालेसको न पाकर उसके चाचाको पकड़वाकर कैद कर रखा था। दुष्टने

उस बूढ़ेके हाथ पैर लोहेकी जञ्जीरसे बांधकर पानीके गढ़ेमें डाल दिया था। बूढ़ा जञ्जीरसे छूटकर भतीजेको आशीर्वाद देने लगा। विजयी वीर आनन्दसे जयध्वनि करने लगे। उस रात वह वहां आरामसे सोये। दूसरे दिन भी वहीं रहे। बीच बीचमें सिर्फ अङ्गरेज आक्रमणकारी आकर उनके विश्राममें खलल डालते रहे। स्काट हरबार उनका हमला व्यर्थ कर देते थे। इस तरह उन्होंने वहां दूसरी रात भी बिताई।

तीसरे दिन तड़के उन्होंने वहांसे डम्बार्टनको कूच किया। वहांसे कुछ दूर टरवठ स्थानमें सारा दिन बिताकर रातको चुपके चुपके शहरमें पैठे। वहां जातीयभावका ख्याल रखनेवाली वालेसकी पुरानी जान पहचानकी एक विधवा औरत रहती थी। वालेस उसके मकान पर गया। उसने स्काटिश वीरोंको एक गोदाममें लेजाकर छिपा दिया और चर्व्य, चोष्य, लेह्य पेयसे उनकी खूब खातिर की। उसके ९ बेटे थे। उसने सबसे वालेस का संग ग्रहण करनेके लिये शपथ कराया। वह विधवा स्त्री अङ्गरेजोंको कर देकर सुख और आरामसे शहरमें रहती थी उसे किसी तरहकी तकलीफ न थी किन्तु जातीय दलके आनेसे उसने शान्तिको दूर भगाकर जातीय कार्य्यमें आत्मोत्सर्ग करदिया।

वालेसकी आज्ञासे वह विधवा जिन जिन मकानोंमें अङ्गरेज रहते थे उन पर कुछ निशान कर आई। इसके बाद वालेस अपने साथियों सहित अस्त्र शस्त्रसे सज घोड़े पर सवार होकर शहरसे निकला। वह लोग सबसे पहले एक होटलमें पहुंचे। कई अङ्गरेज वहां खाना पीना कर रहे थे। वालेस की तलवारने उनमें से अधिक काट डाले। उसके साथियोंने बाकी अङ्गरेजोंको भी मार डाला। होटलका मालिक यह देखकर बहुत खुश हुआ और झट मानसे उनकी खूब खातिरदारी की। उनको भर पेट खिला पिला कर होटल वाला पथ दर्शक होकर अङ्गरेजोंके स्थानमें लेगया। तीन सौ अङ्गरेज शहरकी रखवालीके लिये तैनात थे उसी

एकएक करके वहसब जातीयदलके हाथ मारेगये। सूर्योदयके पहले ही वालेस अपने दल सहित नगरसे कुछ दूर एक गुफामें जाकर दिन भर छिपा रहा। होटल वालेने सद मासमे वहांभी उनका पेट भरा।

रातको वह लोग रोजनीथके पहाडी किलेकी तरफ रवाना हुए। यहां बहुतसी अङ्गरेज सेना थी। एक छोटेसे पहाड पर किला बना था। स्काट जंगल भाडियोंमे होतेहुए चुपकेचुपके पहाड की चोटी पर पहुचे। किलेके निवासी उस समय किसी विवाहके लिये गिर्जेमें गये थे सिर्फ कई गुलाम किलेमें मौजूद थे। स्काट बेधडक किलेमें घुस गये कुछ देर बाद अङ्गरेज गिरजेसे लौट कर आये। वह गिन्तीमें ८०या इससे भी कुछ ज्यादा थे दरवाजेपर आते ही स्काट बडे वेगसे उनपर टूट पडे। पलभरमें सब अङ्गरेज जमीन पर लोटने लगे। स्काटोंने सात दिन तक वहां विजय का उत्सव मनाया। फिर किलेका माल लूटकर उसमें आग लगा चलते बने।

यहांसे वह फलसन नामक स्थानमें गये। वहा अर्ल मलकम रहते थे। ग्रेहम, बायड, लुन्डिनके रिचार्ड, एडम वालेस और वार्कले आदि वालेसके मित्र भी मलकमके मकान पर मौजूद थे। सबने बडी धूमधामसे वालेसका स्वागत किया। वालेस बडे दिन तक वहां रहा। यहीं उसे अपनी माताके मरनेकी खबर मिली। उसकी माताने एलरस्लीसे निकाली जाकर डनफर्लिन एबीमें शरण ली थी। वहीं वह मरी। माताके मरनेकी खबरसे वालेसको बडा शोक हुआ और आप उसके दफन करनेसे शामिल होनेके लिये जानेका साहस न करके जाप और ब्लेयरको धूमधामसे यह काम करनेके लिये भेजा। एक दिन गेरीबाल्डीको भी इसी तरह प्राणसे प्यारी स्त्री एनिटाको दफनानेका भार आश्रयदाता किसानके के हाथमें सौंपना और भागकर पीछा करनेवाले आष्ट्रियावालोंके हाथसे जान बचानी पडी थी।

डगलसडेलके सर विलियम डगलसने यह सुनकर कि वालेस फिर

लड़ाईके मैदानमें उतर आया है जातीय व्रत पालन करनेकी प्रतिज्ञा की। यद्यपि उन्होंने जवानीमें लाचार होकर एडवर्डकी अधीनता स्वीकार की थी, यद्यपि उन्होंने अङ्गरेज मेमसे विवाह किया था तथापि जातीय भाव उनके हृदयसे दूर नहीं हुआ था। उन दिनों उनकी स्त्री का कोई रिश्तेदार संक्लुहर नामक किलेका अफसर था। उसने उस किले और डगलस डेलके बीचके स्थानको अच्छी तरह बरबाद कर डाला था। डगलसने इस अत्याचारका बदला लेनेके लिये आज स्वयं उस किले पर धावा किया। उन्होंने टामडिक्सन नामक एक नौकरको पहले वहां भेजा। राहमें एन्डर्सन नामक एक किलेके आदमीसे उसकी भेंट हुई। डिक्सनने उससे अपनी पोशाक और घोड़ा बदल लिया और वही पोशाक पहन कर और लकड़ीका बोझ लेकर सवेरे किलेमें घुसनेका विचार किया। एन्डर्सनसे सुना कि किलेमें सिर्फ ४० हथियारबन्द आदमी हैं। टाम डिक्सन उसी पोशाकमें उसी घोड़े पर चढ़ कर किलेकी तरफ जाने लगा इधर एन्डर्सन भी पीछेसे डगलसको लेकर लौटा। डगलस और डिक्सनको पासही कहीं छिपाकर एन्डर्सन घरकेंने दरवाजे पर पहुंचा। इतना सवेरे दरवाजा खुलवानेके लिये दरवानने उसे बहुत डांटा। दरवाजा खुलतेही एन्डर्सनने कई डालियां काट कर द्वार पर इस ढङ्गसे डालदी कि फिर दरवाजा बन्द नहीं किया गया। इसी समय एन्डर्सनके इशारेसे डगलस दलबल सहित किलेमें घुस आया। सबसे पहले दरवान और फिर एक एक करके सब अङ्गरेज मारेगये। सिर्फ एक अङ्गरेजने जान बचाकर डूरिस डियरमें जा कर यह खबर दी।

था वह किसी कामसे दूसरी जगह गया था। किन्तु लार्ड किउसिन उनकी गैरहाजिरीमें वहां मौजूद था वालेसने किला घेरने का काम मलकम पर छोड कर डगलसकी सहायताके लिये कूच किया। राहमें अचानक रावॅस डेलसे उसकी मुलाकात होगई। रावॅसडेल पचास सिपाहियों सहित अपने किले को लौट रहा था। मतवाले हाथी पर जैसे शेर टूटता है वैसेही वालेस और उसके सैनिक उस छोटीसी अङ्गरेज सेनापर टूट पडे। अङ्गरेज एक सांस भागे और आकर किलमिथ किलेमें ढुकना चाहा किन्तु मलकमने दो सौ स्काटिश सेना सहित किला घेर रखा था। इस लिये अग-रेज वहां जातेही उसके शिकार हुए। वालेस लूट पाटमें मशगूल न होकर डगलसकी मददको रवाना हुआ।

राहमें लिनलिथगोपील और डनकीथ आदि किले उसके हस्त-गत हुए। इधर वालेस की लगातार विजयसे उत्साहित होकर बहुतसे स्काटिश वीर उसके झण्डेकी छायामें आकर खडे हुए। लोडर, सीटन, बास, ह्यू टी हे प्रभृति अपनी अपनी सेना सहित वालेससे आमिले। इस मिलनसे वालेस और सलवाम बहुतही प्रसन्न हुए। पीबल्स से आकर वालेसने घोषणाकी कि जो हम लोगोंके शामिल होंगे वह बहुत कुछ पुरस्कार पावेंगे। वालेसकी सेना धीरे धीरे ६०० होगई। उसने उसे लेकर क्लाइडस डेलकी ओर कूच किया। अङ्गरेजोंने सङ्कुहर किलेमें डगलसको घेर रखा था किन्तु वालेसका आना सुनतेहीकिलाछोडकर इङ्गलेन्डको भागे। वालेस क्राफोर्डमूरतक पहुंचा था। अङ्गरेजोंका भागना सुनकर उस ने मलकमको बाकी सेना सहित छोड सिर्फ २ सौ चुने हुए सवार लेकर शत्रुओंका पीछाकिया। क्वीजवरनमें जाकर शत्रुओंको धर पकडा। पीछे वाली एक टुकडी सेनासे लडाई होने लगी। पलक भरमें कोई डेढ सौ अङ्गरेज खेत हुए। आगेकी सेना यह सुन कर पीछे लौटी। इधर मलकमकी सेना भी वालेससे जामिली। दोनों मिलकर बडे जोरसे अङ्गरेज सेना पर टूट पडी। वह जोर

न सह कर अङ्गरेज फिर भागे। स्काटोंने फिर पीछा किया। डाल सुइन्टन पहुंचनेसे पहलेही पांच सौ अङ्गरेज मारे गये तोभी पीछा न छूटा। घोडोके थक जाने पर वालेस और ग्रेहम पैदल पीछा करने लगे। उसी समय सौभाग्यसे एडम कोरी जानस्टन, कर्कपेट्रिक और हालिडे नये जोशसे वालेससे आमिले। वालेस पहली सेना से आनेका भार ग्रेहमको सपुर्द करके आप इस नई सेनासे एकघोडा चुनकर उसपरसवारहो नयेवलसे पीछाकरताचला। रास्तेमें वह लोग अङ्गरेज-मेधयज्ञ करते जाते थे। डुरिसडर, इनाक और टाइवर सूरके किलेदार मारे गये। काकपूल नामक पुलके किनारे वेहिसाव अङ्गरेज मारेगये। कितनेहीं नदीमें कूद कर डूब गये। यहां कीयर लाविराकस्थानके अध्यक्ष माक्सवेल वालेस से आमिले। उस रात वहीं रहकर दूसरे दिन उन्होंने डमफ्रिज की यात्राकी। मार्गमें घोषणा करते गये कि स्काटलैन्ड फिर जातीय दलके हाथमें आगया है इसलिये अब डरकी कुछ वात नहीं है। अङ्गरेज जहा जहां थे जल या थलके रास्ते इङ्गलैन्ड भाग गये। सिर्फ एक अङ्गरेज अबभी स्काटलैन्डमें हुकूमत करता था। सिर्फ डन्डीका किला मार्टन नामी अङ्गरेजके अधीन था। इसके सिवा समस्त स्काटलेन्डमें फिर जातीय पताका उडने लगी।

किन्तु एक भी विदेशीका चरण स्काटलेन्डकी छाती पर रहते वालेसको कल न थी। इस लिये उसने डगलसको फिरसे पाये हुए प्रदेशोंकी रक्षाका भार देकर डन्डीको कूच किया। वहा पहुंच कर वह शहर घेरने लगा मार्टनने प्राणभिक्षा करके आत्मसमर्पण करना चाहा किन्तु वालेस इसपर राजी न हुआ। इस समय एडवर्ड सेना सहित फ्रासमें थे। स्काटलेन्डमें अङ्गरेज मेधयज्ञका हाल सुन कर उन्होंने भारी सेना सहित स्काटलेन्ड पर चढाई करने का विचार किया। वालेस डन्डीको घेरे हुए था इस बीचमें एक दिन उसके विश्वासी कर्मचारी जायने आकर खबरदी कि एडवर्ड एक लाख सेना लेकर आरहे हैं। यह समाचार पाकर वालेस दो

हजार सेना सहित स्तिरलिंग्गीरको डन्डी घेरे रखनेके काम पर नियुक्त करके आप ८ हजार सेना लेकर सेन्टजानस्टनको चला। यहां कई दिन अङ्गरेजोंकी बाट देखता रहा। इस बीचमें अङ्गरेज सेनापति डडस्टक दस हजार सेना सहित स्टर्लिंग ब्रिज नामक स्थानमें आपहुंचे। मानो एक काली घटाने आकर स्काटलेन्डके सौभाग्य सूर्य्यको छिपा लिया।

तेरहवां अध्याय।

स्टेरिफ म्यूयरका युद्ध—फलकार्कका युद्ध—सर जान ग्रेहमकी मृत्यु—ब्रूससे वालेसकी भेट—लिनलिथगाउमें अङ्गरेजों पर अचानक धेरा—डन्डी पर अधिकार—वालेस का इस्तेफा—उसका फ्रांस चलाजाना—लिंकेजानका मारा जाना—फ्रांस नरेशका बडे आदरसे वालेसका स्वागत।

डन्डीका घेरा उठवा देनाही डडस्टक चाहते थे। इस लिये टे नदीमें सब जङ्गी जहाज भी भेजे गये। वह बडी भारी सेना लेकर आये थे इससे उन्हें स्काटोंका कुछ डर न हुआ। विशेषकर उनके चतुर पथप्रदर्शक उन्हें सामनेकी उपत्यका छोडकर सेन्ट जानस्टन होकर लेजाना चाहते थे। उस उपत्यका प्रदेशमें वालेस साथियों सहित शत्रुकी बाट देखता था। डडस्टकने उधरसे जाते समय देखा कि स्काटोंकी संख्या उनकी सेनासे बहुत कम है। यह देख वह लडाईके लिये उतर पडे। अङ्गरेजी सेना ऐसी धीरतासे चलती थी कि सर जान ग्रामजैने पहले उसे देखकर समझा कि यह अमनअमनके आदमी हैं। किन्तु वालेसकी तेज दृष्टि झट समझ गई कि यह कौन हैं। उसने फौरन अपने सैनिकोंको तय्यार करके स्टेरिफ म्यूयरके मैदानमें कतार बांधकर खडे होजानेका हुक्म

दिया। अङ्गरेज बड़े जोरशोरसे उन पर टूट पड़े। दोनो ओरसे घमासान युद्ध होने लगा। पृथिवी खून खून होगई। स्काटवीरों की अलौकिक वीरतासे समूची अङ्गरेज सेना अपने सेनापति सहित लडाईमें मारी गई। बहुतसे बहुमूल्य पदार्थ स्काटोंके हाथ लगे।

वालेसने बड़ी फुर्तीसे स्टर्लिंग पुलकी ओर कूच किया। वहां जाकर पुल तोड़ दिया और नदीमें बहुतसे खूंटे गड़वा दिये जिससे सेना किसी तरह नदी पार न कर सके। थोड़ीही दूर पर नदीमें अङ्गरेजोंके जहाज, विपद पड़नेपर अङ्गरेजोंको चढ़ा लेजानेके लिये तय्यार थे। वालेसने लौडर नामक सहचरको उनमें आग लगा देनेके लिये भेजा। लौडर काम पूरा करके झट उससे आमिला। इधर मीटन अर्ल सलकास, सर जान ग्रेहम वगैरह भी अपने अपने सहचरों सहित वालेससे आमिले जिससे वालेसकी सेना बहुत बढ़ गई। पीछे खबर आई कि एडवर्ड अपार सेना लेकर टर्फीचेनमें आपहुचे हैं। एडवर्ड मस्त हाथीकी तरह चारोंओर सहार करते आते थे यहां तक कि सेन्ट जानस्टनके नाइट लोगोंकी सम्पत्ति भी उन्होंने नहीं छोड़ी। इधर बूटके स्टुआर्ट बारह हजार और किडमिन बीस हजार सेना लेकर फलकार्कके मैदानसे कुछ दूरपर लडाईका नतीजा देखनेके लिये ठहरेरहे। वालेस दस हजार सेना लेकर उन असंख्य अङ्गरेज अक्षौहिणीके सामने आया। उसकी तरफ अर्ल सलकास, सरजान ग्रेहम, रामजे, मीटन, लौडर, लुन्डिन और एडम वालेस सेनापति थे। एडवर्ड एक लाख सेना लेकर समुद्रगामिनी उत्तालतरङ्गिनी नदीकी भांति टर्फीचेनसे फालकर्कके मैदानको चले।

भाग्य फूटने पर तर्क नहीं रहता। स्काटलेन्डके दुर्भाग्य-का इस भयान अवस्थामें स्काटिश सेनामें फूट फैली। स्वजाति विश्वासघाती किडमिनने वालेससे डाह करके उसकी सेनामें फूट डाल दी। इस बातको लेकर भारी फसाद खड़ा हुआ कि सेना-पति कौन हो। किडमिनने प्रश्न उठाया कि स्टुआर्टके रहते

हजार सेना सहित स्लिमजिओरको डन्डी घेरे रहनेके काम पर नियुक्त करके आप ८ हजार सेना लेकर सेन्टजान्सटनको चला। यहां कई दिन अङ्गरेजोंकी बाट देखता रहा। इस बीचमें अङ्गरेज सेनापति डउस्टन दस हजार सेना सहित स्टर्लिङ्ग ब्रिज नामक स्थानमें प्राप्त हुवे। मानो एक काली घटाने आकर स्काटलेन्डके सौभाग्य सूर्य्यको छिपा लिया।

तेरहवां अध्याय।

स्टरलिङ्ग ब्रिजका युद्ध—फालकार्कका युद्ध—सर जान ग्रे हमकी मृत्यु—ब्रूससे वालेसकी भेंट—लिनलिथगाउमें अङ्गरेजों पर अचानक घेरा—डन्डी पर अधिकार—वालेस का इस्तेफा—उसका फ्रांस चलाजाना—लिन्के जानका मारा जाना—फ्रांस नरेशका बड़े आदरसे वालेसका स्वागत।

डन्डीका घेरा उठवा देनाही डउस्टन चाहते थे। इस लिये टेनडीमें सब जङ्गी जहाज भी भेजे गये। वह बड़ी भारी सेना लेकर आये थे इससे उन्हें स्काटोंका कुछ डर न हुआ। विशेषकर उनके चतुर पथप्रदर्शक उन्हें सामनेकी उपत्यका छोड़कर सेन्ट जान्सटन होकर लेजाना चाहते थे। उस उपत्यका प्रदेशमें वालेस साथियों सहित शत्रुकी बाट देखता था। डउस्टनने उधरसे जाते समय देखा कि स्काटोंकी संख्या उनकी सेनासे बहुत कम है। यह देख वह लड़ाईके लिये उतर पड़े। अङ्गरेजी सेना ऐसी धीरतासे चलती थी कि सर जान रामजेने पहले उसे देखकर समझा कि यह अमनचमनके आदमी हैं। किन्तु वालेसकी तेज दृष्टि झट समझ गई कि वह कौन हैं। उसने फौरन अपने सैनिकोंको तय्यार कर स्टरलिङ्ग ब्रिजके मैदानमें कतार बांधकर खड़े होजानेका हुक्म

दिया। अङ्गरेज बडे जोरशोरसे उन पर टूट पडे। दोनो ओरसे घमासान युद्ध होने लगा। पृथिवी खून खून होगई। स्काटवीरों की अलौकिक वीरतासे समूची अङ्गरेज सेना अपने सेनापति सहित लडाईमें मारी गई। बहुतसे बहुमूल्य पदार्थ स्काटोंके हाथ लगे।

वालेसने बडी फुर्तीसे स्टर्लिंग पुलकी ओर कूच किया। वहां जाकर पुल तोड दिया और नदीमें बहुतसे खूंटे गडवा दिये जिससे सेना किसी तरह नदी पार न कर सके। थोडीही दूर पर नदीमें अङ्गरेजोंके जहाज, विपद पडनेपर अङ्गरेजोंको चढा लेजानेके लिये तय्यार थे। वालेसने लोडर नामक सहचरको उनमें आग लगा देनेके लिये भेजा। लोडर काम पूरा करके झट उससे आमिला। इधर मौटन अर्ल सलकास, सर जान ग्रेहम वगैरह भी अपने अपने सहचरों सहित वालेससे आमिले जिससे वालेसकी सेना बहुत बढ गई। पीछे खबर आई कि एडवर्ड अपार सेना लेकर टर्फीचेनसे आपहुचे हैं। एडवर्ड मस्त हाथीकी तरह चारोंओर सहार करते आते थे यहां तक कि सेन्ट जानस्टनके नाइट लोगोंकी सम्पत्ति भी उन्होंने नहीं छोडी। इधर वूटके स्टुआर्ट बारह हजार और किडमिन वीस हजार सेना लेकर फलकार्कके मैदानसे कुछ दूरपर लडाईका नतीजा देखनेके लिये ठहरेरहे। वालेस दस हजार सेना लेकर उस अलख्य अङ्गरेज अक्षौहिणीके सामने आया। उसकी तरफ अर्ल सलकास, सरजान ग्रेहम, राम्जे, मौटन, लोडर, लुन्डिन और एडम वालेस सेनापति थे। एडवर्ड एक लाख सेना लेकर समुद्रगामिनी उत्तालतरङ्गिनी नदीकी भांति टर्फीचेनसे सामनमूरके मैदानको चले।

भाग्य फूटने पर गर ज्यों नहीं सुधरता। स्काटलेन्डके दुर्भाग्य-वश इस भयानक अवस्थामें स्काटिश सेनामें फूट फैली। स्वजाति विश्वासघाती किडमिनने वालेससे डाह करके उसकी सेनामें फूट डाल दी। इस बातको लेकर भारी फसाद खडा हुआ कि सेना-पति कौन हो। किडमिनने उज्र उठाया कि स्टुआर्ट रहते

वालेसको सेनापति बननेका कुछ अधिकार नहीं है और स्टूआर्टको भी यह बात हरगिज नहीं माननी चाहिये। किउमिनने जो चाहा था वही हुआ। वालेसने ऐसे संकटके समय सेनापतिका पद छोडने से अस्वीकार किया। जब समस्त जातिने एक वाक्यसे उसको जातीय शासनकर्त्ताके पद पर नियुक्त किया है तब उसने ऐसी हालतमें किसी खास आदमीके कहनेसे उक्त पद छोडनेसे अस्वीकार किया। विशेषकर जिस आदमीने जातीय स्वाधीनताके समरमें आजतक जरा भी सहायता नहीं की है उसको जातीय सेनापतित्व लेनेका क्या अधिकार है? वालेसने ऐसे प्रस्तावसे अपना अपमान समझा। खासकर स्टूआर्टके वाक्यसे उसे वडा गुस्सा आया। स्टूआर्टने दूसरी चिडियाका पर खोंसकर शोभा पानेवाले कव्वेसे उसकी उपमा दी और कहा कि यदि हम लोग अपनी अपनी सेना लेकर चले जायंगे तो वालेस कैसे जीतेंगे देखा जायगा।

वालेससे अब सहा नहीं गया। उसने समझ लिया कि स्काट-लेन्डका सुखसूर्य्य उदय होनेमें बहुत विलम्ब है, समझ लिया कि स्काटलेन्डके भाग्यमें बहुत दुःख बदा है, समझ लिया कि ऐसे घरके शत्रु मौजूद रहते विजयकी आशा कहीं दूर है। यह समझकर वह अपनी दस हजार सेना लेकर फलकार्क मैदानके पूर्ववाले जगलको चला गया। तब स्टूआर्टने अपनी भूल समझी। समझा कि मैंने विश्वासघातक किउमिनके जालमें फसकर स्वजातिका सत्यानाश किया, समझा कि इस भयङ्कर युद्धका योग्य नेता केवल वालेस है, समझा कि यह शौकका ताज मेरे सिर पर नहीं सजता है, समझा कि विधाताने मुझे जातीय सेनापति बनाकर नहीं भेजा है। समझकर वह घोर चिन्तामें डूब गये। समूची स्काटिश छावनी पर विषादकी घटा छागई।

चतुर एडवर्डने इस घरकी फूटकी खबर पाई। पातेही अर्ल ब्रियरफोर्डको तीस हजार सेना सहित स्टूआर्ट पर चढाई करनेको भेजा। स्टूआर्ट फौरन लडनेको तय्यार हुए। कुछ देरतक दोनों

में घमासान युद्ध होता रहा। अन्तमें अङ्गरेज पीठ दिखाकर अङ्ग-रेजी छावनीमें जाछिपे। बीस हजार अङ्गरेज इस लडाईमें मारे गये। वालेस दूरसे स्टुआर्टकी बहादुरी देखकर आनन्दमें मग्न होगया बार बार हाथ हिलाकर उसकी प्रशंसा करने लगा।

किन्तु एडवर्ड प्रणसे पीछे हटनेवाले नहीं थे। उन्होंने फिर ४० हजार सेना देकर ब्रूस और विशप बेकको भेजा। अबकी वालेस का मन घबराया—भावी जातीय अमङ्गलकी आशङ्कासे उसका चित्त चञ्चल हुआ। एक बार इरादा किया कि अभिमान छोड़ कर जातीय कार्य्यमें शामिल होजाऊं किन्तु इस बार अभिमानने स्वदेशानुरागको हरा दिया। वह गेरीबाल्डीकी तरह नहीं कह सका कि अगर एक मामूली प्यादा बनकर भी मैं जातीय कार्य्य करने पाऊं तो अपने जीवनको सफल समझूंगा। यहां गेरीबाल्डी से वालेसकी तुलना नहीं होती। वह किस हृदयसे जातीय स्वाधी-नताकी रक्षाका भार विलासमें पड़े हुए अदूरदर्शी स्टुआर्टके हाथमें देकर लापरवाहीसे अलग खड़े होकर जातीयवल का नाश देखने लगा? नहीं, वालेस! तुम्हारे जीवनके सब कामों से आजके इस बर्तावका मेल नहीं है। जिस जातीय स्वाधी-नताके लिये जन्मसे सुख चैन छोड़ चुके हो आज तुच्छ अभिमानके गुलाम होकर तुमने उस जातीयस्वाधीनतारत्नको हाथमें पाकर भी मस्त हाथीकी तरह पैर तले रौंद दिया? या तुम्हारा क्या दोष है। भाग्यका लेख कौन मिटा सकता है?

वालेसको सेनापति बननेका कुछ अधिकार नहीं है और स्टुआर्टको भी यह बात हरगिज नहीं माननी चाहिये। किउमिनने जो चाहा था वही हुआ। वालेसने ऐसे संकटके समय सेनापतिका पद छोड़ने से अस्वीकार किया। जब समस्त जातिने एक वाक्यसे उसको जातीय शासनकर्त्ताके पद पर नियुक्त किया है तब उसने ऐसी हालतमें किसी खास आदमीके कहनेसे उक्त पद छोड़नेसे अस्वीकार किया। विशेषकर जिस आदमीने जातीय स्वाधीनताके समरमें आजतक जरा भी सहायता नहीं की है उसको जातीय सेनापतित्व लेनेका क्या अधिकार है? वालेसने ऐसे प्रस्तावसे अपना अपमान समझा। खासकर स्टुआर्टके वाक्यसे उसे बड़ा गुस्सा आया। स्टुआर्टने दूसरी चिड़ियाका पर खोंसकर शोभा पानेवाले कव्वेसे उसकी उपमा दी और कहा कि यदि हम लोग अपनी अपनी सेना लेकर चले जायंगे तो वालेस कैसे जीतेंगे देखा जायगा।

वालेससे अब सहा नहीं गया। उसने समझ लिया कि स्काटलेन्डका सुखसूर्य्य उदय होनेमें बहुत विलम्ब है, समझ लिया कि स्काटलेन्डके भाग्यमें बहुत दुःख बदा है, समझ लिया कि ऐसे घरके शत्रु मौजूद रहते विजयकी आशा कहीं दूर है। यह समझकर वह अपनी दस हजार सेना लेकर फालकार्क मैदानके पूर्ववाले जगलको चला गया। तब स्टुआर्टने अपनी भूल समझी। समझा कि मैंने विश्वासघातक किउमिनके जालमें फसकर स्वजातिका सत्यानाश किया, समझा कि इस भयङ्कर युद्धका योग्य नेता केवल वालेस है, समझा कि यह शोकका ताज मेरे सिर पर नहीं सजता है, समझा कि विधाताने मुझे जातीय सेनापति बनाकर नहीं भेजा है। समझकर वह घोर चिन्तामें डूब गये। समूची स्काटिश छावनी पर विषादकी घटा छागई।

चतुर एडवर्डने इस घरकी फूटकी खबर पाई। पातेही अर्ल ब्रियरफोर्डको तीस हजार सेना सहित स्टुआर्ट पर चढ़ाई करनेको भेजा। स्टुआर्ट फौरन लड़नेको तय्यारहुए। कुछदेरतक दोनों

में घमासान युद्ध होता रहा। अन्तमें अङ्गरेज पीठ दिखाकर अङ्ग-रेजी छावनीमें जाछिपे। तीन हजार अङ्गरेज इस लड़ाईमें मारे गये। वारेन हूसे स्टुआर्टकी बहादुरी देखकर आनन्दसे मग्न होगया बार बार हाथ हिलाकर उसकी प्रशंसा करने लगा।

किन्तु एडवर्ड प्रणसे पीछे हटनेवाले नहीं थे। उन्होंने फिर ४० हजार सेना देकर ब्रूस और विशप वेकको भेजा। अबके वालेस का मन घबराया—भावी जातीय अमङ्गलकी आशङ्कासे उसका चित्त चञ्चल हुआ। एक बार इरादा किया कि अभिमान छोड़ कर जातीय कार्य्यमें शामिल होजाऊं किन्तु इस बार अभिमानने स्वदेशानुरागको हरा दिया। वह गेरीबाल्डीकी तरह नहीं कह सका कि अगर एक मामूली प्यादा बनकर भी मैं जातीय कार्य्य करने पाऊं तो अपने जीवनको सफल समझूंगा। यहां गेरीबाल्डी से वालेसकी तुलना नहीं होती। वह किस हृदयसे जातीय स्वाधी-नताकी रक्षाका भार विलासमें पड़े हुए अदूरदर्शी स्टुआर्टके हाथमें देकर लापरवाहीसे अलग खड़े होकर जातीयबल का नाश देखने लगा? नहीं, वालेस! तुम्हारे जीवनके सब कामों से आजके इस बर्तावका मेल नहीं है। जिस जातीय स्वाधी-नताके लिये जन्मसे सुख चैन छोड़ चुके थे आज तुच्छ अभिमानके गुलामहोकरतुमने उसजातीयस्वाधीनतारत्नको,हाथमेंपाकरभी मस्त हाथीकी तरह पैर तले रौंद दिया? या तुम्हारा क्या दोष है। अदृष्टका लेख कौन मिटा सकता है?

भाग कर पासके टरउड बनसे शरण लेनेके सिवा वालेस और उसकी सेनाके लिये और कोई उपाय न रहा। सोचने विचारने का भी समय नहीं। वालेस पलभरमें सेना सहित एडवर्डकी सेना के बीचसे हवाकी तरह टरउड बनको चला गया। इतनी जल्दीमें यह काम हुआ था कि वालेसके व्यूहभेद करके चले जानेके बाद एडवर्डको सब हाल मालूम हुआ। घोड़ोंकी टापोंसे धूल उड़कर चारों ओर इतना अंधेरा होगया था कि वालेसकी मजबूती सेना चलेजानेके पहले असली बातको कोई जान न सका। जैसे महा तूफान सामने की जड़ अजड़ सब चीजोंको उडा लेजाता है वैसेही वालेस और उसकी सेना सामनेकी विपक्षी सेनाको दल मल कर निकल गई। वालेस ग्रेहम और लोडर तीनसौ चुनी हुई सेनासे पीछा करनेवाले शत्रुओंका आक्रमण रोकते रोकते जंगलको चले गये। ब्रूसने बीस हजार सेना लेकर भागते हुए स्वदेशियोंका पीछा किया। वालेस अपनी चुनी हुई सेनाको प्रधान सेनासे मिल जानेका हुक्म देकर ग्रेहम और लोडरको मदद देता शत्रुओंका आक्रमण व्यर्थ करने लगा। जो उसकी प्रचण्ड तलवारकी परिधिमें आता वह कालके हवाले होता। अन्तमें ब्रूसने स्वयं वालेसका गला ताक कर बर्छा चलाया। वालेस जखममेंसे बर्छा निकालकर पट्टी बांधनेलगा। इधर ग्रेहम और लोडर बड़ी दिलेरीसे शत्रुओंका सामना करने लगे। वालेस फौरन तीन सौ सेना लेकर ग्रेहम और लोडरकी मददको पहुंचा। उधर विशपवेक अपनी सेना सहित ब्रूसकी मददको आ गये। ब्रूसने फिर वालेस पर बर्छा फेंका किन्तु अबके उसका निशाना खाली गया। वालेसने क्रोधसे अन्धे होकर कराल तलवारकी चोटसे ब्रूसको नीचे गिराया। ब्रूसकी सेनाने उसीवक्त उन्हें घोड़े पर चढा दिया। वालेस क्रुद्ध शेरकी तरह अकेले रणमें गर्जने लगा। बहुत जल्द ग्रेहम उसकी मददको पहुंच गया। पहुंचते ही उसने तलवारसे ब्रूसके सामनेके अङ्गरेजोंको काट डाला। यह कर एक दूसरे अङ्गरेज नाइटने पीछेसे उसकी पीठमें जोरसे

बर्छा मारा। ग्रेहमने पैरसे कुचले हुए सर्पकी तरह गुस्से में आकर एकही तलवारसे उसको काट डाला। किन्तु यही उसका आखिरी वार हुआ। मृत्यु सामने देखकर उसने प्रधान सेनासे मिलनेके लिये उधर घोडेकी बाग मोडी। किन्तु रास्तेमेंही घोडा मारा गया और क्षणभरमें ग्रेहमका प्राणपक्षी उड गया। स्काटलैन्डके पूर्ण चन्द्रमाको राहुने ग्रस लिया।

वालेस शोकसे पागल होगया। मतवाले हाथीकी तरह शत्रुओं को रौंदने लगा। जिसे सामने पाने लगा उसे मारने लगा। ग्रेहम की लाश पर उसकी आग बरसाने वाली आंखें पडती थीं और बिजलीकी तरह उसकी नसनसमें खून दौडता था। ब्रूसने वालेसको शोकान्ध देखकर अपने बर्छाधारी सैनिकोंको उसके घोडे पर बर्छा चलानेका हुक्म किया। उनके बर्छेसे उसका घोडा घायल हुआ। तब वालेसका होश ठिकाने आया। वह घोडेको दौडाकर अपनी सेनामें आगया। सेना कैरन नदीके किनारे खडी होकर उसका रास्ता देखती थी। वालेसने आतेही उसे नदी पार होनेका हुक्म दिया, स्वयं सबसे पीछे घोडे पर चढा नदीमें कूद पडा। स्वामिभक्त घोडा स्वामीको उस पार पहुंचाकर गिर पडा। गिरा और मरा। उसी दम कार्लेने उसके लिये एक दूसरा घोडा लादिया। वालेस उस पर सवार होकर झट अपनी सेनामें आगया। इस फलकार्क-युद्धक्षेत्रमें तीस हजार अङ्गरेजी सेना मारी गई। इधर सर जान ग्रेहम और सिर्फ पन्द्रह स्काट पैदल मारे गये। अङ्गरेजोंने लडाई तो जीती पर असंख्य अङ्गरेज परिवारोंमें हाहाकार पड गया।

कुल्हाडी मारी है, तब समझा कि अङ्गरेजोंसे मिलकर स्वदेशका सत्यानाश किया है। अब पश्चात्तापसे उनका कलेजा फटने लगा। तब नदीके उस पारसे वालेसको मित्रभावसे बुलाया। दोनो मिलने पर एक दूसरेको चूमने लगे। वालेसने शपथ खाकर कहा कि राजगद्दी लेनेकी मेरी लालसा नहीं है। मैं जातीय स्वाधीनताके लिये इतने दिनसे लड रहा हूं स्काटलेन्डके असली राजाकी अधीनता माननेको सब तरहसे तय्यार हू किन्तु राजा होकर प्रजा पर हथियार उठाना—ब्रूससे ऐसा अपराध हुआ है जो क्षमाके योग्य नहीं। यह बात वालेसने साफ साफ कहदी। ब्रूसका हृदय वालेस के वाक्यसे पिघल गया। अन्तमें दोनों दूसरे दिन सवेरे डूनिपेसके गिरजेमें मिलनेका वादा करके उस दिन अपने अपने डेरेको चले गये। यह भी वादा हुआ कि ब्रूस बारह स्काटों सहित और वालेस दस आदमियों सहित आवेंगे। ब्रूस वालेससे विदा होकर झटपट एडवर्डके खेमेमें चले गये। वहा हाथमें खून लगे हुएही सबके साथ खाना खाने बैठ गये। एक अङ्गरेजने उनकी दिल्लगी उडाई—"तुम स्काट लोग अपना खून आप पीते हो" यह बात उनके हृदय पर वज्रसी लगी। उन लोगोंने बारबार हाथ धोनेको कहा मगर उन्होंने उत्तर दिया—"यह अपना खून है धो देनेका नहीं है।" उस दिनसे ब्रूसकी तलवार फिर स्काटलेन्डके विरुद्ध नहीं उठी।

इधर वालेस टरउड जगलमें चला आया। वहां उसकी सेना खा पीकर सोने लगी वह भी बिस्तरे पर गया पर उसकी आंखोंमें नींद नहीं आई। उठ बैठा। प्यारे मित्र ग्रेहम और स्काटिश वीरोंकी लाशें फलकार्क मैदानमें पडी है अभीतक दफनाई नहीं गई—इस मर्मभेदी चिन्ताने उसे व्याकुल कर दिया। वह अर्ल मलकम, लुन्डिन, रामजे, लोडर, सीटन और रिकार्टनके एडमको साथ ले पाच हजार सुसज्जित सेना सहित उसी रातको लडाईके मैदानमें आया। लाशोंके ढेरमेंसे चुन चुनकर स्काटिश वीरोंकी

लागे निकाली। जब प्रियमित्र ग्रेहमको देह मिली तब वह घोड़े से उतरकर लाश गोदमें लेकर रोने और विलाप करने लगा। उनके रोने विलखनेसे सब रोने लगे। अन्तमें सबने उसकी गोदसे लाश लेकर फलकार्कके गिरजेमें दफन की।

प्यारे मित्रकी अन्तिम क्रिया होजाने पर वादेके अनुसार वालेस दस आदमियों सहित डुनिपेसके गिरजेमें ब्रूससे भेट करने गया। अपनी छोटीसी सेनाको फलकार्कके मैदानमेंही ठहरनेको कह गया। ब्रूस ठीक समय पर वहां पहुंच चुके थे। ग्रेहमके शोकसे वालिस ब्रूसके साथ मीठी बातें न कर सका। उसकी मर्मभेदी बातोंसे ब्रूसका हृदय विधगया। उन्होंने गिड़गिड़ाकर कहा "वालेस, अब अधिक मुझे मत धिक्कारो मैं अपनी करनीपर आप रोरहाहूं।" ब्रूसके अपना दोष स्वीकार करने पर वालेसके हृदयका भाव बदल गया। क्रोध दूर होकर शांतिभावका सञ्चार हुआ। वह हृदय के उच्छ्वाससे ब्रूसके चरणोंमें गिर पड़ा। ब्रूसने हाथ फैलाकर उसे गोदमें उठा लिया। ब्रूसने देवोंके सामने प्रतिज्ञा की कि मैं अब कभी स्कटेंडियो पर हथियार नहीं उठाऊंगा और एडवर्डसे जो प्रतिज्ञा कर रक्खी है उसका समय पूरा होतेही वादेसे अलग होजाऊंगा। दोनोंने एक दूसरेसे विदा ली। ब्रूस एडवर्डकी छावनीमें चले गये और वालेस अपनी सेनामें आगया। १२९८ ईस्वीकी १२ वीं जुलाईको फलकार्कका युद्ध हुआ।

स्थान से हट गया। एडवर्ड वीरोचित विक्रमसे संग्राम करने लगे। वालेसने उनके झण्डे वाले को एकाही वारमें मार गिराया। झण्डा गिरा देख कर अंगरेज सेना डर कर भागी। एडवर्डने स्वयं लाचार होकर भागती हुई सेनाका साथ दिया। लिनलिथगाउमें ११ हजार अङ्गरेजोंका सथराव होगया। स्काट तोभी न हटे। समूची स्काट सेनाने अङ्गरेजोंका पीछा किया। उनकी प्रचण्ड तलवारोंसे चालीस हजार अङ्गरेज भागते भागते मारे गये। वाकी सेना सहित एडवर्डने सालवे पार हो इगलेण्डमें जाकर प्राण बचाया।

वालेस लौट कर एनस प्रदेशसे होता हुआ एडिनवरामें आया, आकर क्राफोर्डको फिर उसका शासनकर्त्ता बनाया। अङ्गरेजी आक्रमणसे पहले जो जिस पदपर थे और जीतेथे उन्हें उन्ही पदोंपर नियुक्त किया। समस्त स्काटलेण्डमें फिर विश्वव्यापी शान्ति विराजने लगी। डन्डी किलेपर स्क्रिमजियो द्वारा फिर दखल होगया।

अवसर देखकर वालेसने सेन्ट जानस्टन शहरमें एक पार्लीमेन्ट बुलाई। जब पार्लीमेन्टके सभ्य अपने अपने स्थान पर बैठ गये तो वालेसने सबके सामने अपनी गवर्नरीसे इस्तेफा दिया। उसने साफ साफ कह दिया कि जब जमींदार लोग मुझसे डाह रखते है तब मै इस पद पर नही रहना चाहता। कहा कि मैं फलकार्कके मैदानमें पूरा फल पाचुकाहूं—देशके लिये जो आत्मोत्सर्ग किया था उसके बदले यथेष्ट अपमान और तिरस्कार पाया है। इस बार मैंने स्काटलेण्डको फिर शत्रुओंके पंजेसे निकाल दिया है अब मैं जन्मभूमिसे विदा लेकर फ्रांस चलाजाऊंगा। वहा जाकर जैसे बनेगा जिन्दगीके बाकी दिन बिताऊंगा।

पार्लीमेन्टने उसे ऐसा न करनेके लिये बार बार अनुरोध किया किन्तु वालेसका प्रण टूटनेवाला नहीं था। वालेसने देख लिया कि जबतक स्काटलेन्डकी गद्दीके लिये जागीरदारोंमें झगडा रहेगा, जब ... मतलबके अन्धे तंगख्याल जमींदार मुझसे डाह करेंगे, जबतक ... लेन्डके असली राजा ब्रूस अपना ख्याल न करेंगे तबतक

स्काटलेण्डको सदाकेलिये शत्रुओंकीमुट्ठीसे निकालदेना असम्भव है। इसलिये स्वदेशमें रहकर स्वदेशका वारवार अधःपतन नहीं देख सकता। जब कभी दिन आवेगा, फिर स्वदेशके उद्धारकेलिये हथियार उठाऊंगा। यह कहकर वह अठारह आदमीसे पार्लीमेन्टसे विदा लेकर सिर्फ अठारह सहचरो सहित फ्रान्सको चलागया। स्काटलेन्डका सुखसूर्य्य कुछ दिनके लिये अस्त होगया।

जो अठारह आदमी वालेसके साथ गये उनमें लांगविल, साइमन रिचार्ड वालेस, सर टामलघ, एडवर्ड लीटन जाप और बूयर मुख्य थे। अपनीइच्छासे देशत्यागनेवालायहवीरदल कुछ व्यापारियोंसहित डण्डीबन्दरमें जहाजपर सवार हुआ। जहाज इङ्गलेन्डके राज्यसे होकर जानेलगा। कुछही दूरपर लाल पालका शेर चिन्हित ध्वजावाला एक जहाज अचानक देखपडा। व्यापारियोंको मालूम था कि यह किसका जहाज है। उन्होंने वालेससे कहा कि यह लीनके जान का जहाज है। यह जालिम अङ्गरेज स्काटलेन्डवालियोंको मार डालना पुण्य समझता था। देखते देखते जान वालेसके जहाजके निकट पहुच गया। पहुचतेही उसने "युद्ध देहि" कहकर स्काटों को लडनेके लिये ललकारा। उस ललकारके उत्तरमें बूयरके धनुषसे तीन वाण छूटे। एक एक वाणसे एक एक अङ्गरेज मारा गया। अङ्गरेज क्रोधमें आकर एक घण्टे लगातार गोले और वाण बरसाते रहे। अन्तमें दोनों दलोंमें हाथापाई और तलवार की लडाई होने लगी। एक एक करके साठ अङ्गरेज स्काटोंके हाथ मारे गये। जानको भागनेका ढौल लगाते देखकर लागोर्डने उनके जहाजके मस्तूलमें आग लगादी और वालेस, लांगविल और बूयर उसे पकड कर अपने जहाज पर लेआये। वालेसकी तलवारकी एक ही दपटमें उस जालिम डाकूका सिर धडसे अलग होगया। उसके साथ युद्धकी आग भी बुझ गई। स्वदेशके लिये एक भी अङ्गरेज देशको नहीं लौटने पाया। तब स्काटोंने उस का रसदसे भरा जहाज लेकर फ्रांसको कूच किया। एक्लूज बन्दरमें

पहुंचकर वालेसने माल असबाब खुद लेलिया और जहाज व्यापारियो को देदिया। वालेस फ्लान्डर्स होकर फ्रान्स गया। पेरिस राजधानीमें फ्रास नरेशने बड़े आदरसे वालेसको उतारा।

चौदहवां अध्याय

वालेसका फ्रांसका सेनापति बनाया जाना—एडवर्डकी स्काटलेन्ड पर फिर चढाई—किउमिन और ब्रूनसे सन्धि—आमींसकी सन्धि—अंगरेजोंकी स्काटलेन्ड पर फिर चढाई—रसलिनका युद्ध—अङ्गरेजोंकी हार—एडवर्डकी फिर चढाई—फिलिपका विश्वासघात।

फ्रांसनरेशने वालेसका स्वागत करके उसको समूचे गाइन प्रदेश की हुकूमत सौपदी। उन्होने वालेसको ड्यूक बनाना चाहा। वालेस ने स्वीकार नहीं किया तो उसे नाइटकी उपाधि और फरासीसी सेनापतिका पद दिया। उन्होंने उसको अपनी वर्दी आप पसन्द कर लेनेको कहा। वालेस अपनी सदाकी लाल सिंहवाली पोशाक व्यवहार करने लगा। फिलिपने उसे बहुत जल्द रणभूमिमें उतरनेका अनुरोध किया। उस समय इङ्गलेन्डसे फ्रांसकी बडी भारी लडाई चलती थी। वालेसके मैदानमें आतेही चारोंओरसे स्काट उसके झण्डेके नीचे आकर जमा होने लगे। लागविलने भी उसके लिये बहुतसी फरासीसी सेना जमा की। थोडे समयमें दसहजार सेना उसके झण्डेके नीचे जमा हुई। इधरसे ड्यूक आफ अरलिन भी बारह हजार सेना सहित उसकी मददको आपहुंचे। मार्गा नयनरूनोने वालेस पर प्रसन्न होकर स्वयं उसके लिये सेना दी।

इधर स्काटलेन्ड-रविके पूर्व सागरमें छिपजाने पर घोर दुःखकी रात आकर मारे स्काटलेन्ड पर छागई। घरके शत्रुही स्काटलेन्ड के सत्यानाशकी जड थे। विश्वासघातक जातीय शत्रु सर आमेर डि वालेंसने लियन फौजकी अफसरीकी आशा देकर सर जान मान्टीथसे एडवर्डकी अधीनता स्वीकार कराई। इधर एडवर्डने भी भारी सेना लेकर इस सौके पर फिर स्काटलेन्ड पर चढाईकी। वालेसकी गैरहाजिरीमें जातीय सेनाका नायक होने लायक कोई आदमी उस वक्त न था। इससे एक एक करके सब स्काटिशकिले वेलडाई उनके अधिकारमें आगये। जिन्होंने एडवर्डकी अधीनता न मानी वह हाईलेन्डके पासकेटापुओंमें भागगये। विशप मिर्क यव बूट को भागगये। स्वाधीनताकी यादतक मिटादेनेकेलिये एडवर्डने रोस की दीवारें गिरवादीं और राजसम्बन्धी सब कागजात नष्ट करदिये। जिन्होंने उनकी अधीनतासे जमींदारी करनेसे इनकार किया उनको इङ्गलेन्डके कैदखानोंमें भेज दिया। सर विलयम डगलस इङ्गलेन्डके कैदखानेमेंही मरे। टामस रेन्डल्फ, लार्ड फ्रेजर और पिड दि हेको उन्होंने वालेसकी पहरेमें इङ्गलेन्ड भेजदिया। सोधम, लोडर और लन्डिन दासकी भाग गये। सलकास और कोरबल दूटसे विशप मिलीयरके यहां चले गये। रासर्ज और इयवेन लाइमेन नामके एक आदमीके साथ राघ शायरके अन्तर्गत स्ट्राकफोर्ड शहरमें एक किला बनाकर रहने लगे। एडेम वालेस, लिन्डसे और राबर्ट वायर्टने भागनेमें शरण ली। वालेसरूपी सूर्यके अन्तर्धान होनेसे मानो स्काटिश जातीय सर्वसफलदं ग्रह केन्द्रआकर्षण विना चारों ओर बिखर गये। कर्न्पट्रिक एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करके अपने किलेसे रोज उडाने लगे। एहरनेथी, सौल्सि, डिडल्सि, मोरन्हे शान, लार्ड हे चिन और दूसरे और बहुतसे रईस एडवर्डसे सन्धि करके अपनी अपनी जागीर भोगने लगे। मानो एक सूर्य मण्डलके ग्रह नक्षत्र अपने केन्द्रसे गिरकर दूसरे केन्द्रपर जालटके।

ऐसे गुलामोंकी जंजीरसे व्यथित होकर दूटदासी देशहितैषीदलने

एक जहाज सजाकर दूतके साथ वालेसके पास भेजा और कहला भेजा कि आप आकर स्काटलेन्डके सूने सिंहासन पर बैठिये इमसे एडवर्डका अत्याचार अब सहा नहीं जाता। वालेसके साथ फल-कार्कमें जो बुरा बर्ताव हुआ था उसे वह भूला न था इसलिये उसने प्रस्ताव अस्वीकार किया। जातीय दूत हताश होकर छूछा जहाज लेकर लौट आया। जातीय दलको बेहद अफसोस हुआ।

इधर स्काटलेन्डका बन्दोबस्त बेधडक होनेलगा। एडवर्ड समस्त स्काटलेन्ड पर फिर अधिकार करके अनुगत और आश्रित जागीर-दारोंको उनकी जमीन बांटने लगे। उन्होंने यार्कके अर्लको सेन्ट-जानस्टनकी मिलकीयत और टे और डी नदीके बीचके टुआबका सेनापतित्व दिया। लार्ड बौमन्डको हाईलेन्ड प्रदेशका सेनापति बनाकर भेजा, लार्ड क्लिफोर्डको डगलस डेलका अधिकार और दक्षिणस्काटलेन्डकी हुकूमत दी, विश्वासघातक किउमिनको समूचा गालवे प्रदेश सौंपा और लार्ड सोलिसको समूचे मार्स प्रदेशका मालिक और वारविकका सेनापति बनाया। एडवर्डने पवित्र आतिथ्यधर्मका नियम तोडकर शरण आये हुए विशप लेमर्टन और लार्ड ओलीफेन्टको बेडियां पहना कर इङ्गलेन्डके कैदखानेमें भेजा। इस तरह वह स्काटलेन्डमें शान्ति स्थापन करके इङ्गलेन्ड लौटआये।

पापका धन बहुत दिन नहीं रहता। एडवर्ड जातीय विश्वास-घात फैलाकर स्काटलेन्डकी छाती पर जो राजमहल बना गये थे उनके लन्दन लौटते लौटते विश्वासघातकी विप्राकर्षणी शक्तिसे उस आलीशान इमारतकी नीव धस गई। विश्वासघातक किउमिन ने ब्रूससे यह शर्त ठहराई कि अगर ब्रूस किउमिनकी सहायतासे स्काटलेन्डकी गद्दी पावें तो किउमिन जितनी जागीर मांगेगा ब्रूस उतनी देंगे।

इस बार समस्त स्काटलेन्ड एडवर्डके विरुद्ध खडा हुआ। एक एक करके सब किले फिर स्काटोंके हस्तगत होगये। केवल ंग किला और लकमेबेन तथा दूसरे मामूली शहर अब भी

अङ्गरेजोंके दखलमें रहे। १२९८—९९ ईस्वीमें स्काट धीरे धीरे अङ्गरेजोंके अधिकारमें गये हुए किलों पर हमले करने लगे। १२९९ में पोपसे एडवर्डकी एक सन्धि हुई। उसके अनुसार एडवर्डने स्काटिश सिंहासनके मुख्य दावेदार बैलियलको पोपके सुपुर्द किया।

वालेसके स्काटलेन्डके अभिभावकका पद त्याग करने पर क्रिडसिन, लार्ड सोलिस और सेन्ट एन्ड्रूजके बिशप लेम्बर्टन स्काटलेन्डके रिजेन्ट बनाये गये। रिजेन्ट लोगोंने एक स्वरसे शत्रुओंको निकाल बाहर करनेका प्रण किया। उन्होंने बड़ी मुस्तैदीसे स्टर्लिंगका किला घेर लिया। एडवर्डने इस खबरसे डरकर जागीरदारोंको ससैन्य स्काटलेन्ड चलनेका हुक्म दिया। किन्तु जागीरदार लोग लगातार लड़ाइयोंसे थक गये थे इसलिये उन्होंने एडवर्डसे कई तरहके उज्र और बहाने करके जाना न चाहा। किन्तु एडवर्ड चुप रहनेवाले आदमी नहीं थे उन्होंने अपनीही सेना लेकर स्टर्लिंगको कूच किया। स्काटलेन्डमें पहुंच कर देखा कि स्काट उनका सामना करनेको भलीभांति मुस्तैद हैं और स्काटिश सेना अबके उनकी सेनासे कम नहीं है। यह देख उन्होंने चुपचाप लौट जानाही अच्छा समझा। तब स्टर्लिंग किलेके निवासियोंको लाचार होकर लार्ड सोलिसके हाथमें आत्मसमर्पण करना पड़ा। स्काटिश रिजेन्टोंने सर विलियम ओलिफेन्टको स्टर्लिंग किलेका हाकिम बनाया।

क्रिडसिनने अब अपने पापका प्रायश्चित्त आरम्भ किया। अपार धन और असीम अधिकारसे उस समय स्काटिश जागीरदारोंमें कोई उसका सानी न था। उसने अपने धनके अनुसार दान देना शुरू किया। उसके दानसे प्रजा उसको बहुत मानने लगी। लाचार रिजेन्ट लोगोंने जब सुना कि वह लोग प्रजाके सौंपे हुए विश्वासका अपव्यवहार करेंगे तो वालेस स्वदेश लौटनेको तय्यार हैं तबसे वह बड़ाईसे शासनमें काम करने लगे

फिउसिन अपने अच्छे बर्तावसे प्रजाका विशेष प्रीतिभाजन होगया। वालेसके चाहनेसे फ्रांसनरेश फिलिप फ्रांससे बहुतसा अन्न और शराब स्काटलेन्डमें भेजने लगे। फिउसिन आधे दाम पर वह सब चीजें प्रजाके हाथ बेचने लगा। प्रजाने उसका नाम 'गुड स्काटिशमैन' यानी 'साधु स्काटश्मैन' रखा।

उधर एडवर्डने स्वदेश लौटकर जागीरदारोंके सब उद्य मिटा कर १३०० ईस्वीकी पहली जुलाईको बडी भारी सेना लेकर फिर स्काटलेन्ड पर चढाई की। इसबार ८७ जागीरदार अपनी अपनी सेना सहित एडवर्डके झण्डेके नीचे आखडे हुए। इस बारकी यात्रा समूचे स्काटलेन्डको सदाके लिये जीत लेनेके इरादेसे थी। जागीरदारोंमें ब्रिटेनके नाइट लोग, लोरेन, स्काट्शनरेश वेलियलके भाई अलकजेन्डर वेलियल, पेट्रिक, सपुत्र अर्ल उनवर सर साइमन फ्रेजर, ग्रेहमके हेनरी और रिचार्ड सिवार्ड प्रधान थे। इस विराट सेनाके चार भाग हुए। पहला भाग लिकनके अर्ल, दूसरा वारिनके अर्ल जान तीसरा स्वयं एडवर्ड और चौथा युवराज एडवर्ड के सेनापतित्वमें चढाई करने चला। एक रणबांकुरा सैनिक सेन्ट जान का जान—सत्रह वर्षकी अवस्थाके युवराज एडवर्डकी सहायतामें नियत हुआ।

इस महती सेनाको लेकर एडवर्डने प्रसिद्ध पहाडी किले केयार लावेरकको जाघेरा। उस समयके अनेक लडाईके यन्त्र लेकर एडवर्डने किला तोडनेकी चेष्टाकी मगर किसी तरह काम-याब न हुए। बार बार उनकी सेना किलेपर दखल जमानेकी कोशिश करने लगी मगर हर बार पीछे हटना पडा। इस तरह बहुत दिन बीत गये तो भी किला हाथ नआया। किलेवालेभी लगातार रोकनेकी चेष्टा करते करते थक गये और अन्तमें प्रस्ताव किया कि अगर हम लोग सकुशल किला छोड कर जाने पावें तो एडवर्डको किला सौंप कर चले जानेको तय्यार हैं। एडवर्डको यह प्रस्ताव मानना पडा। किले वाले अस्त्र शस्त्रसे सज्जित

होकर किलेसे निकल एडवर्डकी छावनीके सामनेसे चले गये। एडवर्ड देख कर दांतोंमें उंगली काटने लगे कि सिर्फ साठ बहादुर इतने दिन उनकी अपार सेना की सब चेष्टा व्यर्थ करके किलेकी रक्षा कर रहे थे। कोई कोई इतिहास लेखक कहते हैं कि एडवर्डने अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर उन वीर दलोंसे कईएकको फांसी पर लटका दिया था। खैर जोहो, एडवर्ड किलेपर अधिकार करके ष्टिरलिंग फोर्डके अर्लको उसका अफसर बनाकर ससैन्य उत्तरकी तरफ रवाना हुए।

इधर स्काटिश कमिश्नर फ्रान्स राज फिलिपसे सहायता न पाकर रोमनगरमें गये। उनकी दुःख कहानी सुनकर पोपने एडवर्डको स्काटलैन्डकी स्वाधीनता छीननेसे बाज रहनेका अनुरोध करके एक चिट्ठी लिखी। एडवर्ड यह आज्ञापत्र पाकर पहले तो बड़े नाराज हुए पीछे शान्त होकर पोपको इस किस्मकी चिट्ठी लिखी कि मैं आपका पत्र पार्लीमेन्टमें पेश करूंगा। चिट्ठी भेज कर झटपट उन्होंने लिंगकाशनमें एक पार्लीमेन्ट बुलाई। इस सभामें १०४ बैरन उपस्थित हुए। सबके दस्तखतसे इस किस्मकी एक चिट्ठी रोमके पोपको लिखी गई कि स्काटलैन्ड मुद्दतसे इंगलैन्डकी अधीनता स्वीकार किये आता है इससे इंगलैन्ड इतने दिनकी प्रभुता छोड़ना नहीं चाहता। चिट्ठी भेजकर एडवर्ड मस्त हाथीकी तरह समस्त स्काटलैन्डको रौंदने लगे। बीच बीचमें स्काटिश सेनासे उनको रैनाका खण्ड युद्ध होने लगा। असभ्य किले धीरे धीरे उनके अधिकारमें आने लगे।

एडवर्ड ने समझे दक्षिणी स्काटलेन्डको हमेशाके लिये इङ्गलेन्ड के राजसिंहासनके अधीन करना ठाना था। उन्होंने पुराने किलोंकी मरम्मत शुरू करा दी और सब किलोंको दीवार खाई आदिसे मजबूत कराने लगे। इस कामके लिये उन्हें इङ्गलेन्डसे बहुतसे मजदूर मंगाने पड़े थे। स्वदेशानुरागके कारण स्काटिश भूमिमें उन्हें एक भी मजदूर न मिला। धन्य स्काटलेन्ड। धन्य तुम्हारा स्वदेशानुराग। इतनाही नहीं अपनी अपार सेनाके लिये रसद तक उन्हें इङ्गलेन्डसे मगानी पडीथी क्योंकि स्काटोंने अङ्गरेजीसेनाको रसद न देनेकी इच्छासे बाजार बन्दकरदिये थे और अपने सब कलकारखाने इसलिये तोड दिये थे कि उनके देशकी बनी हुई चीज अङ्गरेज न पासकें। धन्य स्वदेशानुराग। धन्य स्वजातिप्रेम।

उन्नीसवी सदीके अन्तमें अङ्गरेज अफगानस्थान जीत कर जैसी झंझटमें पडे थे एडवर्ड दक्षिण स्काटलेन्ड जीत कर भी वैसेही सङ्कटमें पडे। उस प्रदेशको शासनमें रखनेके लिये जितना खर्च पडने लगा उतना कोई फायदा न हुआ। इधर फिलिपने भी उनसे कमसे कम सामयिक सन्धि करनेके लिये प्रस्ताव किया। एडवर्ड के दूतने पेरिसमें जाकर इस सामयिक सन्धिकी शर्तें तय कीं। १३०० ईस्वीकी ३० वीं अक्टोबरको डमफ्रीज शहरमें उस सन्धि पत्र पर स्वाक्षर किया। उस सन्धिमें स्काटलेन्डभी शामिल हुआ। उसके मुताबिक हेलोमस इष्टसन्डे तक इङ्गलेन्ड, स्काटलेन्ड और फ्रांसमें शान्ति रहेगी। कोई किसीपर हस्तक्षेप न कर सकेगा।

सामयिक सन्धिका समय पूरा होतेही एडवर्डने स्काटलेन्ड पर फिर चढाई शुरूकी। वहां एक किला बनानेके लिये तय्यारी होने लगी। इधर फ्रांसनरेश फिलिपके दरबारमें स्थायी सन्धिके नियम बनाये जाते थे। अर्ल बिउकन, स्काटलेन्डके स्टुआर्ट जेम्स और रिजेन्टमोलिस और इनजेल वामडो एम फ्रेविल स्काटलेन्डके प्रतिनिधिके तौर पर पेरिसमें मौजूद थे। एडवर्ड और फिलिप दोनों ... दिलसे शान्ति चाहते थे। एडवर्ड मनही मन यह इरादा करते ... फिलिपसे झगड़ा मिटतेही स्काटलेन्डका सब तरहसे शासन

कर लेंगे। इधर फिलिप भी लड़ाईके खर्चसे तंग आगये थे। किन्तु वह स्काटलेन्डको छोड़ कर सन्धि करनेको तय्यार न थे। एडवर्ड भी किसी तरह उससे राजी नहीं हुए। अनेक वाद-विवादके बाद एक फैसला हुआ। एडवर्डने आश्रित फ्लेमिंग्स लोगोंको छोड़ दिया, फिलिपने आश्रित स्काटोंको एडवर्डकी कृपा पर छोड़ दिया। इङ्गलेन्डके वाणिज्यको इससे बड़ी हानि होने पर भी एडवर्ड विराट राज्य लालसामें अन्धे होकर राजी होगये। इस सन्धिका नाम ग्रामीमकी सन्धि है।

इस बीचमें सर साइमन फ्रेजर एडवर्डका झण्डा छोड़ कर जातीय झण्डेके नीचे आकर खड़े हुए। वह बड़े प्रतिभाशाली और साहसी पुरुष थे। उनके आनेसे जातीय दलका बल बहुत बढ़ गया। उधर ग्लासगोके बिशपने एडवर्डकी अधीनता स्वीकार की। फ्रेजरके आनेसे यह घाटा पूरा हुआ बल्कि कुछ नफा रहा।

१३०२ ईस्वीकी ३० वीं नवम्बरको डनफ्रायरकी सन्धिका समय पूरा हुआ। उसी दिन जान डी सिग्रेवके अधीन २० हजार अङ्गरेजसेना स्काटलेन्ड पर भेजी गई।

उंगलियों पर गिनने योग्य थोड़ेसे स्काटोंके हाथसे मिथ्रेव जैसे सेनापतिके अधीन इतनी भारी अंगरेज सेनाकी हार सुनकर एडवर्ड क्रोधसे पागल होगये। युरोपमें अपनी सेनाकी इज्जत घट जानेसे वह बहुत डरे। गई इज्जतको फेर लाने पर मुस्तैद हुए। स्काट-लेन्डके लिये जो लोहेकी जञ्जीर बना रखी थी इस बार उन्होंने प्रण किया कि चाहे जैसे हो स्काटलेन्डके पैरमें वह बांधनी होगी। इस लिये उन्होंने स्वदेशविदेशमें जो जहां था सबसैनिकों और जागीरदारों को अपने झण्डेके नीचे आकर खड़े होनेका हुक्म दिया। बेशुमार जङ्गी जहाज रसद और पोशाक आदिसे भरकर तरीके रास्ते स्काट-लेन्डको रवाना हुए। उन्होंने स्वयं वह विराट सेना लेकर खुश्की के रास्ते उत्तरको कूच किया।

इधर फिलिपका विश्वासघात इस समय चरम सीमाको पहुंच गया। उन्होंने स्काटिशकमिश्नरोंको इस अन्तिम अवस्थामें कैद कर रखा। उन्हें फुसलाकर नजरबन्द रखा कि हम एडवर्डको स्काट-लेन्डसे अलग सन्धि करानेके लिये कोशिश कर रहे हैं। वैसे वीरों के उस समय स्वदेशमें रहनेकी बहुत जरूरत थी। तथापि फिलिप ने किसी तरह उन्हें आने नहीं दिया। ऐसा करके वह एक तरहसे एडवर्डकी मदद करने लगे।

एडवर्डके आगमनकी बात समस्त स्काटलेन्डमें फैलने नहीं पाई थी कि कमजोर दिलके स्काट अमीरोंने आगे बढ़कर एडवर्डसे माफी मांगी। जातीय विश्वासघातक सर जान मौन्टीथ उनमें अगुआ था। उसे इस विश्वासघातके बदले समूचे लेनक्स प्रदेशकी हुकूमत इनाममें मिली और अपने पहले पद (डम्बर्टनकी गवर्नरी) पर रहनेका हुक्म मिला।

पन्द्रहवां अध्याय।

वालेसकी सङ्कटावस्था।

जब एडवर्डने असंख्य सेना लेकर तीसरी बार स्काटलेण्ड पर चढ़ाई को तब भयभीत और चौकन्ने स्काटलेण्डने वालेसको इस भीषण विपत्सागरमें एक मात्र कर्णधार समझकर याद किया। समस्त स्काटलेण्डवासियोंने एक वाक्यसे उसको स्काटलेण्डके सूने सिंहासन पर बिठानेका विचार किया। यह विचार करके उन्होंने वालेसको राजी करनेके लिये फ्रांसनरेश फिलिपके पास दूत भेजा। किन्तु फिलिप वालेसको इसमें शामिल नहीं होने देना चाहते थे इससे उन्होंने उसको इसकी खबर न होने दी।

इधर फरासीसी भूमिमें रहना वालेसको बहुत बुरा मालूम होने लगा। फ्रांस नरेशने उसे शासन प्रदेश दिया था किन्तु उसका शासन करनेमें उसे शारीरिक और मानसिक दोनों शक्तियां खर्च करनापड़ी थी। अङ्गरेजोंने अब भी बोर्डो नगरपर दखल रक्खा था। अर्ल स्टाफर्ड उस किलेके अफसर थे। वालेस दो महीने लगातार उसको घेरे रहा मगर किलेके निवासी समुद्रके रास्तेसे रसद और लड़ाईका सामान पाया करते थे इससे उसकी सब चेष्टा विफल होने लगी।

बाट देखता था। वालेसके पहुचतेही नाइट हथियारबन्द जवानों सहित सामने आया। वालेस डरनेवाला नहीं था उसने झट तलवार निकालकर एकही चपेटमें नाइटको काट डाला। नाइटके मरनेसे युद्ध बन्द नहीं हुआ क्योंकि उसका भाई सेना लेकर लड़ने लगा।

अगर शेरके सामने भेडके बच्चेकी बहादुरी कबतक रहसकती है? बातकी बातमें वालेस और उसके साथियोंकी तलवारोंसे नाइटके भाई और उसकी छोटीसी सेना खतम होगई। सिर्फ सात आदमी भाग गये। वालेसके साथियोंमें घायल तो कई हुए पर मारा कोई नहीं गया। फ्रांसनरेश वालेसके प्रति इस आक्रमणका समाचार सुनकर बहुत दुःखित हुए और वालेसको अपने परिवारके शामिल रहनेका हुक्म दिया। कहा कि अब कोई तुम्हारा बाल नही छूएगा। राजा वालेसको बहुत मानते थे तोभी वालेसको बीच बीचमें अक्सर ऐसी आफतमे फसना पडता था।

मृत नाइट और उसके भाईके दो जाति भाइयोंने बदला लेनेके इरादेसे राजासे चुगली खाई कि वालेस शेरसे लडकर अपना पराक्रम दिखाना चाहता है। फ्रांसनरेशने उनका असली मतलब न समझकर इस बातका अनुमोदन किया। उन्होंने जरा भी नहीं समझा कि यह लोग इस बहाने वालेसकी मृत्यु देखना चाहते हैं। इससे उन्होंने कुश्तीकी तय्यारी करनेका हुक्म दिया। नियत दिनको राजा सभासदों सहित अखाडेमें आये। वीर चूडामणि वालेस भी निडर होकर अखाडेमे पहुचा। जानकी उसे जरा परवा न थी परन्तु इस बातका सोच हुआ था कि फ्रांसनरेशने उसकी मौतके मामलेमें कैसे हामी भरी। वह नहीं जानता था कि राजाको धोखा दिया गया है। सबने उसको बख्तर पहनकर कठघरेमें उतरनेका अनुरोध किया। उसने अभिमानपूर्वक कहा कि ईश्वर मेरी रक्षा करेगा। यह कहकर वह नृसिंहमूर्ति तलवार हाथमें कठघरेके भीतर गई। फौरन कठघरेका दरवाजा बन्द हो

गया। उसी वक्त शेर गर्जकर उस पर टूट पड़ा। किन्तु वीरकेसरी वालेस भी डरनेवाला नहीं था। उसने शेरका ख्याल पकड़कर इस जोरसे तलवार चलाई कि पलभरमें शेरके दो टुकड़े होगये।

अब वालेसके अभिमानकी आग भड़क उठी। उसने राजाकी तरफ लाल आंखें करके कहा—"महाराज! क्या स्काटिश स्काटको इस तरह मरवा डालनेका आपका इरादा था? अगर आपका यही दिली इरादा है तो मैं डरता नहीं। आपकी पशुशालामें जितने पशुराज हैं एक एक करके सबको लानेका हुक्म दीजिये मैं इसी कराल तलवारसे हरेकको काट डालूंगा उसके बाद नाज आपसे विदा लूंगा। इतने दिन आपने जो मुझे शरण दी थी उसके लिये आपका कृतज्ञ रहूंगा। किन्तु अब मेरे यहां रहनेकी जरूरत नहीं है। पशुओंसे लड़नेके लिये वालेसका जन्म नहीं हुआ है। स्काट-लैन्ड अभी शत्रुओंसे प्रवीन है। वहां वालेसको नाना शत्रुओं को मारनेके काम आवेगी। आज मैं आपसे और फ्रान्ससे इस जन्म के लिये विदा लेता हूं।" यह कहकर वालेस चुप हुआ। उसकी लाल आंखोंसे आग बरसने लगी। सबलोग सन्नाटेमें आगये।

है—इसकी याद फिर उसका कलेजा फाडने लगी। अबके प्रतिज्ञा की कि या तो जननीका उद्धार करूंगा नही तो प्राण दे दूंगा। अबके उसकी अन्तिम साधना है—अन्तिम आत्मवलि है।

फ्रासनरेश फिलिपने जब देखा कि वालेस स्वदेश लौट जानेका पक्का इरादा कर चुका है तब उन्होंने वालेसको स्वदेश भेजनेके लिये जितने पत्र पाये थे वह सब उसे दिखाये। वालेससे अब रहा नहीं गया। स्वदेश फिर उसकी सेवा ग्रहण करनेको व्याकुल है यह सुनकर फिर उसका चित्त उत्तरको उडा। वह राजासे विदा होकर एक मात्र विश्वासी मित्र लागविलको साथ ले स्काटलेन्डको रवाना हुआ। वह लोग स्लीस बन्दरमे जहाज पर सवार हुए और अर्ल माउथ बन्दरमें जाकर उतरे। वालेसने फलकार्क युद्धके बाद १२९८ ई०के अन्तमें स्काटलेन्ड छोडा था, फ्रासमे कुछ अधिक दो वर्ष रहकर १३१० में स्वदेश लौट आया। फ्रासनरेश फिलिपको उसके वियोगसे बहुत अफसोस हुआ। वह वालेसको दिलसे प्यार करते थे इसीसे स्काटलेन्डसे बारबार अनुरोध पाकर भी उसे भेजना नहीं चाहा और इस ख्यालसे कि खबर पाकर वालेस उन्हें छोडकर चला न जाय, उन्होंने वह सब चिट्ठिया छिपा रखी। किन्तु विधाताका लेख कौन मिटा सकता है? मातृभूमिके उद्धार के लिये वालेसकी आत्मवलिकी जरूरत पडी थी। इसीसे आज वालेसने प्रियवन्धु फिलिपका बहुत कुछ आग्रह टालकर भी स्वदेश की यात्रा की। भाल लिखि लिपि को सक टार?

अर्लमाउथमें उतर कर वालेसने एल्को नगरकी यात्रा की। वहा अपने जाति भाई क्राफोर्डके गोदाममें जाकर छिप रहा। गोदाम ऐसा बना था कि किसीको उसके आनेकी खबर न हुई। सिर्फ उसमे एक छेद था वही नदीमें आनेजानेका रास्ता था और उसी रास्तेसे उन लोगोंके पास खाना भेजा जाता था। वालेस और लागविल यो उन गुप्तस्थानमें चार पाच दिन रहे। क्राफोर्ड उनके लिये अधिक द सेन्ट जानस्टनसे लाते थे। अङ्गरेजोंने देखा कि वह अपनी

जरूरतसे ज्यादा रसद लेजाते है। उन्हें शक हुआ और उन्होंने उनको कैद कर लिया। पीछे जब सुना कि वालेस आया है तो उसका पता लगानेके लिये क्राफोर्डको छोड दिया। जिस रास्ते से क्राफोर्ड गये अङ्गरेज सेनापति बटलरने आठसौ सेना लेकर उन का पीछा किया। यह सुनकर वालेस क्राफोर्ड पर बहुत बिगडा— कहा कि तुमने अगरेजोके हाथमें हम लोगोंको सौपकर स्वजातिकी शत्रुता साधी? किन्तु क्राफोर्डने सब हाल बताकर उसको शान्त किया और उन लोगोंको दूसरी जगह भाग जानेकी सलाह दी। मगर वालेसने भागनेसे अस्वीकार किया। वह क्राफोर्ड सहित २० सहचर लेकर उस प्रकाण्ड अगरेज सेनाका मुकाबला करनेको मुस्तैद हुआ।

सोलहवां अध्याय।

वालेसकी गिरिफतारी।

लाचार वालेसको काठके किलेमें घुसना पड़ा। वालेसने चाहा था कि आज द्वन्द युद्धमें बटलरसे जोरआजमाई करेंगे किन्तु कापुरुष बटलरने द्वन्द युद्धका साहस न करके सेनाके सहारे असहाय वालेस को अभिमन्यु-वध करना चाहा। लेकिन उसका इरादा व्यर्थ हुआ। थोड़ेसे स्काट अलौकिक वीरतासे उस काठके किलेकी रक्षा करने लगे। किला तोड़नेकी कोशिश करनेमें १५ अङ्गरेज मारे गये। तब बटलर अपनी सेनाके तीन भाग करके तीन तरफसे किले पर आक्रमण करनेके इरादेसे अचानक मैदानसे गायब होगया। वालेसने उसका गूढ़ अभिप्राय समझ कर अपने छोटे दलके भी तीन भाग किये। लागविल और विलियमके अधीन छ, छः आदमी देकर और स्वयं सिर्फ ५ आदमी लेकर किलेकी रक्षा करने लगा। वह किलेके जिस तरफ था बटलर स्वयं उधर ही बढ़ा। कुछ देर घोर युद्धमें दोनो सेना अद्भुत वीरता दिखाती रही किन्तु मस्त हाथीके साथ मेंढकोंका दल कबतक लड़ सकता है? अङ्गरेज सेना लड़ाईमें शत्रुकी अजीब बहादुरीसे भौचक होकर भागी। इधर तारा नाथ ताराओं सहित गगनपट पर आकर विराजमान हुए। बटलर और उसकी सेना अपनी छावनीमें खाना पीना करने लगी। उधर स्काटोंने सिर्फ झरनेका पानी पीकर अपने काठके किलेमें रात बिताई।

प्रधान अङ्गरेज सेनापति अर्ल यार्कने बटलरको कहला भेजा कि हम तुम्हारी मददको जल्द आते हैं जब तक हम न पहुचें तब तक तुम अपने किलेसे न निकलना। किन्तु बटलर वालेसको पकड़नेकी बहादुरी लेनेके लिये इतना उतावला होरहा था कि उसने अर्लका वाहना न माना। उसने वालेससे एकान्तमें भेटकर उसे [illegible] कि मेरे सिवा और किसीके हाथ आत्मसमर्पण न करना। [illegible]—आपने मेरे पिता और दादाको मार डाला है अब मेरी [illegible] उनकी [illegible] उस पापका कुछ प्रायश्चित्त कीजिये। [illegible] आत्मसमर्पण कीजिये। आप

जब आत्मरक्षासे असमर्थ होकर आत्मसमर्पण करनेकी जरूरत समझें तब मेरे सिवा और किसीके हाथ आत्मसमर्पण न करें—मैं सिर्फ इतनाही चाहता हूं।" वालेस बटलरका यह निष्ठुर अभिप्राय सुनकर हंस पड़ा और बोला कि समूचा इङ्गलेन्ड जमा होकर भी मुझे नहीं हरा सकेगा।

वालेसको 'मन्त्र सिद्ध हो या प्राण जाय' की प्रतिज्ञापर दृढ़कटि देखकर बटलर रातभर उसका किला घेरे रहा। रात बीती किन्तु अन्धेरा दूर नहीं हुआ रातके अन्धेरेके बदले कुहासा छागया। उस अवसरमें स्काटिशवीर काठके किलेसे निकल कर अङ्गरेजी छावनी पर टूट पड़े। अङ्गरेजोंको कुछ दिखाई न पड़ा। असंख्य अङ्गरेज मारेगये। सेनापति बटलर वालेसकी तलवारके एकही वार से यमपुर पधारा। उसकी मृत्युसे अङ्गरेजसेना डरके मारे लड़ाई छोड़कर भाग गई। स्काट इस मौके पर मेथवे वनको चल दिये। यहां इफरातसे रसद मौजूद थी इससे उनको और कोई तकलीफ न रही। यहां वालेसके दो एक साथी दलबल सहित उससे आमिले। वहां एक रात रहकर जातीय दल बार्नेस वनको रवाना हुआ। इधर पकड़ कर प्राणदण्डकी आज्ञा पाये हुए स्क्वायर रथवेनसे मिल गया। यह सम्मिलित सेना वहांसे एथोल और एथोलसे लोरन गई। रास्तेमें उन लोगोंके कष्टकी सीमा न रही। रास्तेके दोनों तरफके निवासियोंकी, दुर्भिक्षके मारे हड्डी हड्डी हिलती थी। लगातार लड़ाइयोंसे खेती वाणिज्य आदि सब बन्द होगये थे। यहां खानेकी कोई चीज नहीं मिलती।

बांध कर नहीं रखूंगा, यह कह कर अपने लौटने तक उनको वहां ठहरा कर वह अन्तर्द्धान होगया।

वालेस पहाड़ी चोटियां लांघ कर एक खेतमें पहुंचा। उसकी यातनाकी सीमा न थी। वह सुस्त होकर एक पेड़के नीचे हाथपर गाल धर कर सोचने लगा। मन ही मन अपनेको धिक्कार देकर कहने लगा—'पामर। तेरेही दोषसे तेरे साथियोंको आज यह कष्ट है। स्काटलेन्डको स्वाधीन करनेकी चेष्टामें तू इस तरह आत्मोत्सर्ग करने वाले वीरोंकी आहुति देने चला है। किन्तु तेरी आशा वृथा है। विधाताने तेरे भाग्यमें यह सौभाग्य नहीं लिखा। शायद तुझसे किसी योग्य और अधिक सम्भ्रान्त मनुष्यके ललाटमें यह सौभाग्य लिखा है। भाइयो। मेरेही लिये तुम भूखों रह कर नींद छोड़ कर घास पात पर पड़ कर बड़े कष्टसे दिन काट रहे हो ईश्वरसे मैं मनसा वाचा कर्मणा प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा यह दुःख दूर हो। मैंही तुम्हारे इस दुःखका मूल हूं, इसलिये मैं इसका प्रायश्चित्त करूंगा। मैं अकेले सबका दुःख भोगूंगा।' ऐसी आत्मग्लानि पूर्ण चिन्तामें निमग्न होजाने पर शान्तिदायिनी निद्रा-देवीने आकर उसे गोदमें लेलिया। वह वीर देह पेड़के नीचे ढुलक गई।

तीन दिनसे तीन अङ्गरेज और दो स्काट वालेसके पीछे पीछे घूमते थे। वालेसको जागतेमें पकड़नेकी किसीको हिम्मत न हुई। एडवर्डने प्रकाश्य युद्धमें वालेसको हरानेसे असमर्थ होकर अन्तमें यह नारकी उपाय निकाला था। इनामका लोभ देकर उसको पकड़ने के लिये गुप्तचर नियत कियेथे। यही पांच आदमी एडवर्डके नियत किये गुप्तचर थे। इनपाचोंके साथ एक लड़का था वह उनके लिये भोजन जुटाया करताथा। यह पाचों पासकी एक झाड़ीमें छिपे थे। जब देखा कि वालेस नींदमें बेखबर सोगया है तब उन्होंने वहांसे ... र उसे पकड़ा। सोते शेरको जगानेसे वह जैसे गर्ज उठता सेही वालेस जागकर गर्जने लगा और एक पैतरेमें जो सबसे

जबरदस्त था उसके पास जापहुंचा और उसको पकड़ कर उसका सिर इस ज़ोरसे पेड़की डाली पर पटका कि उसकी खोपड़ी चूर चूर होगई। इसके बाद अपनी तलवार लेकर बाकी चारों पर हमला किया और दोको पलभरमें काट गिराया। बाकी दो प्राण लेकर भागने लगे किन्तु वालिसने दौड़कर उन्हें भी मारडाला। सिर्फ लड़का बचा। उसने कांपते कांपते वालिसके चरणोंमें गिर कर क्षमा मांगी। कहा कि मैं बेसमझे बूझे इन लोगोंके साथ आया था और सिर्फ खाना जुटानेके सिवा किसी काममें शामिल न था। वालेस उसे उसके सामान सहित अपने साथियोंके यहां ले गया और उनसे सारा हाल कह सुनाया। वह लोग चौंके और डरे और वालिसको इस तरह अकेले कहीं जानेके लिये दूसने लगे।

उन्होंने उस लड़केसे उस प्रदेशको हालत पूछ कर जाना कि रैनक शहरमें गये बिना कुछ रसद मिलनेकी उमेद नहीं। इस लिये वह लोग उसी रातको वहांसे कूच करके रात रहतेही रैनक में पहुंचे। उस थोड़ेसे सैनिकोंको लेकर ही वालेसने उसी रातको किले पर हमला किया। उसकी जबरदस्त ठोकरसे किलेका दरवाजा टूट गया जिसकी आवाजसे किलेके सब लोग जाग गये किलेके अध्यक्ष और दूसरे लोग स्काट थे—जानके डरसे अङ्गरेजों की शरण आये थे। अब खुशीसे वालेसके झण्डेके नीचे आगये।

इधर वालिस सेन्टजानस्टन किला घेरे हुआ था। अङ्गरेज बड़ी बहादुरीसे किलेकी रक्षा करते थे। एक दिन सवेरे पांचहजार अङ्गरेज किलेके दक्षिणी दरवाजेसे स्काटव्यूह तोड़कर निकले किन्तु स्काटिश वीरोंने पलभरमें उनके सामने आकर उन्हें किलेमें लौट जानेको मजबूर किया। स्काट अङ्गरेजोंको खदेड़ कर किलेमें लेगये। उडाल हमलेके जोरसे साथियोंको छोड़ कर किलेमें घुस गये। अङ्गरेज स्काट उन्हें पकड़ कर सेनापति अर्ल यार्कके पास लेगये। उन्होंने वालेसको कृतघ्न बनानेके लिये डन्डासको दूतके साथ उसके पास भेजा। सेनापतिने सोचा था कि वे इस बर्ताव पर खुश होकर वालेस एडवर्डकी अधीनता स्वीकार करेगा। किन्तु वालेस किसी तरह अपने उद्देश्यसे टलने वाला नहीं था। उसने इस तरहके बर्तावके बदलेमें अङ्गरेज सेनापतिके पास रन्दपाट भेज दिया।

रातको मैं चुपके वहां आकर तुमसे मिलूंगा। वालेसको भी अकेलेही छिपकर वहां आनेका अनुरोध किया।

वालेस डरको कोई चीज नहीं समझता था। वह उस नियत रातको सिर्फ कार्ले और मौन्टीथके भेजे हुए उस युवकके साथ ग्लासगोसूरमें गया। वह ब्रूसकी बाट देखते शहरके बाहर टहलने लगा। इधर विश्वासघातक मौन्टीथ साठ हथियार बन्द जवानों सहित उसी रातको ग्लासगोसूरमें जा पहुंचा। वह ग्लासगोगिर्जे के नजदीक किसी मकानमें आदमियों सहित छिपारहा। वालेस भी देर तक ब्रूसकारास्ता देख उसके आनेसे निराशहोकर प्रिय मित्र कार्लेके साथ किसी पान्थशालामें टिकने चला गया। आधीरात होगई, नींदमें अलसाकर वालेस औरकार्लेसोनेके लियेएक कोठरीके अन्दर गये। युवक नौकर बाहर पहरा देने लगा। जब वह दोनों नींदमें बेखबर सोगये तब उस विश्वासघातक नौकरने धीरे धीरे अन्दर जाकर उनके हथियार निकाल लिये। फिर मौन्टीथको जाकर खबर दी कि वह लोग अब काबूमें हैं। मौन्टीथने उसीवक्त आदमियों सहित आकर वह मकान घेर लिया। घरमें जाकर सोये हुए कार्लेको दरवाजे पर लाकर मार डाला। इसके बाद धूर्त्त सोयेहुए वीर सिंहको रस्सियोंसे बांधने लगे। वालेसकी नींद टूट गई। वह उछल कर अलग जा खड़ा हुआ और अन्धेरे में अस्त्र शस्त्र टटोलने लगा मगर कहीं कुछ नहीं पाया। तब

क लाइनमें दक्षिणको रवाना हुई। गाडी वडी तेजीसे दौड़ने लगी मानो स्काटिश सूर्य्य उस दिन दक्षिण भाग में अस्त होनेके लिये उधरको चला। अथवा मानो किसी दैवीशक्तिने स्काटलेन्डके वक्षःस्थलसे उसका कलेजा काढकर सुदूर दक्षिणके मार्गमें फेंक दिया। सहसा मानो स्काटिश गगन अन्धकारमय होगया। सहसा मानो स्काटिश शरीरका खून सूख होगया। -जिसने स्काटलेन्डका फिर उद्धार करनेके लिये छाती फाडकर खून दिया था, जन्मभूमिके पुनरुद्धारके लिये जिसने समरभूमिको सुखसेज माना था, आज वही स्काटिश वीर स्काटलेन्डको सूना करके स्काटलेण्डके जातिद्रोह और स्वार्थका प्रायश्चित्त करनेके लिये आत्मवलि देने इङ्गलेण्डको चला है इस समाचारसे स्काटलेण्डके स्त्री पुरुष बालक बूढ़े आज घर घर रोरहे हैं।

इस समाचारसे वालेसके प्रिय सहचर लांगविलके शोककी सीमा न रही। उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इसका बदला नहीं लूंगा तब तक स्वदेश न लौटूंगा स्काटलेण्डमें ही रहूंगा। यह लकमेवेन में गया वहां एडवर्ड ब्रूससे उसकी मुलाकात हुई। वहां दोनो स्काटलेण्डके राजा राबर्ट ब्रूसकी वाट देखने लगे। बैनक वरनके समरमें लांगविलने राबर्ट ब्रूसको दलमें खड़े होकर स्काटलेण्डकी स्वाधीनताके लिये बडीही बहादुरीसे लडाई की थी। ब्रूस आकर वालेसकी खबर सुनकर शोक सागरमें डूब गये। एडवर्ड ब्रूसने वालेसका अपार गुण बखान कर भाईको कुछ ढारस दिया और बदला लेनेके लिये जल्द तय्यार होने लगे।

उसने विश्वासकेलिये मौन्टीथसे शपथ कराया। मौन्टीथने बिना कुछ हिचके ईश्वरको साची दे शपथ किया मै कि कभी वालेसको शत्रुके हाथ नहीं सौंपूंगा। सीधे सादे वालेसने मौन्टीथके छलमें पड कर दोनो हाथ रस्सीसे बांधनेको कहा। आपसे गिरफतार हुए बिना उस शेरको कोई पकडने वाला न था। हाथ बंध जाने पर उसने प्रिय मित्र कार्लेको ढूंढा पर उसका कुछ पता न पाया। तब वह समझा कि मै विश्वासघातकके हाथमें पडगया हू। तब समझा कि मेरा भाग्य फूटा। किन्तु अपनी चिन्तासे स्काटलेन्डकी चिन्ता उसे अ धेक हुई। वह यह सोचकर बहुतही व्यथित हुआ कि मेरे बाद स्काटलेन्डकी क्या दशा होगी।

इधर वालेसके हित मित्रोंको इस बातकी कुछ खबर न थी। वालेस उनके हाथसे निकल गया तब उन्हें पूरा हाल मालूम हुआ। मौन्टीथ इतनी फुर्तीसे उसेलेगया कि वह लोग सवेरे कार्लाइलमें जा पहुचे और वहां जाकरही उसे लार्ड क्लिफोर्ड और वालेन्सके सपुर्द किया। उन्होने वालेसको शहरके कैदखानेमें कैद कर रक्खा तबीसे वह कारागार वालेस टावरके नामसे मशहूर है। बुरी घडीमें वालेस अकेले ब्रूसकी अगवानीको निकला था। बुरी घडीमें उसने विश्वासघातक मौन्टीथका विश्वास करके आत्म समर्पण किया था! हाय क्या हुआ। अब कौन स्काटलेन्डका उद्वार करेगा?

सत्रहवां अध्याय।

वालेसका विचार और प्राणदण्ड।

कार्लाइलके कारागारमे वालेसको लेकर मौन्टीथने इङ्गलेन्डकी ... की। वह और वालेस कार्लेरंगकी गाडीपर सवार है और दो ... र अङ्गरेज उनके पीछे है। इस तरह वह ... गाडी

क लोंइलसे दक्षिणको रवाना हुई। गाडी बडी तेजीसे दौडने लगी मानो स्काटिश सूर्य्य उस दिन दक्षिण भाग में अस्त होनेके लिये उधरही चला। अथवा मानो किसी दैवीशक्तिने स्काटलेन्डके वक्षस्थलसे उसका कलेजा काढकर सुदूर दक्षिणके मार्गमें फेंक दिया। सहसा मानो स्काटिश गगन अन्धकारमय होगया। सहसा मानो स्काटिश शरीरका खून सूख होगया। जिसने स्काटलेन्डका फिर उद्धार करनेके लिये छाती फाडकर खून दिया था, जन्मभूमिके पुनरुद्धारके लिये जिसने समरभूमिको सुखसेज माना था, आज वही स्काटिश वीर स्काटलेन्डको सूना करके स्काटलेण्डके जातिद्रोह और स्वार्थका प्रायश्चित्त करनेके लिये आत्मवलि देने इङ्गलेण्डको चला है इस समाचारसे स्काटलेण्डके स्त्री पुरुष बालक बूढे आज घर घर रोरहे हैं।

इस समाचारसे वालेसके प्रिय सहचर लांगविलके शोककी सीमा न रही। उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इसका बदला नहीं लूंगा तब तक स्वदेश न लौटूंगा स्काटलेण्डमें ही रहूंगा। वह लकमैवेन में गया वहां एडवर्ड ब्रूससे उसकी मुलाकात हुई। वहां दोनो स्काटलेण्डके राजा राबर्ट ब्रूसकी वाट देखने लगे। बैनक बरनके समरमें लांगविलने राबर्ट ब्रूसको बगलमें खडे होकर स्काटलेण्डकी स्वाधीनताके लिये बडीही बहादुरीसे लडाई की थी। ब्रूस आकर वालेसकी खबर सुनकर शोक सागरमें डूब गये। एडवर्ड ब्रूसने वालेसका अपार गुण वखान कर भाईको कुछ ढाढस दिया और बदला लेनेके लिये जल्द तय्यार होने लगे।

उसने विश्वासकेलिये मौन्टीयसे शपथ कराया। मौन्टीयने बिना कुछ हिचके ईश्वरको साची दे शपथ किया मै कि कभी वालेमको शत्रुके हाथ नहीं सौंपूंगा। सीधे सादे वालेमने मौन्टीथके छलमें पड कर दोनो हाथ रस्सीसे बांधनेको कहा। आपसे गिरफतार हुए बिना उस शेरको कोई पकडने वाला न था। हाथ बध जाने पर उसने प्रिय मित्र कार्लेको ढूढा पर उसका कुछ पता न पाया। तब वह समझा कि मै विश्वासघातकके हाथमे पडगया हू। तब समझा कि मेरा भाग्य फूटा। किन्तु अपनी चिन्तामे स्काटलेन्डकी चिन्ता उसे अ धिक हुई। वह यह सोचकर बहुतही व्यथित हुआ कि मेरे बाद स्काटलेन्डकी क्या दशा होगी।

इधर वालेसके हित मित्रोको इस बातकी कुछ खबर न थी। वालेस उनके हाथसे निकल गया तब उन्हें पूरा हाल मालूम हुआ। मौन्टीथ इतनी फुर्तीसे उसेलेगया कि वह लोग सवेरे कार्लाइलमें जा पहुचे और वहां जाकरही उसे लार्ड क्लिफोर्ड और वालेन्सके सपुर्द किया। उन्हो ने वालेमको शहरके कैदखानेमें कैद कर रखा तभीसे वह कारागार वालेस टावरके नामसे मशहूर है। बुरी घडीमें वालेम अकेले ब्रूसकी अगवानीको निकला था। बुरी घडीमे उसने विश्वासघातक मौन्टीथका विश्वास करके आत्म समर्पण किया था! हाय क्या हुआ। अब कौन स्काटलेन्डका उद्धार करेगा?

सत्तरहवां अध्याय।

वालेसका विचार और प्राणदण्ड।

कार्लाइलके कारागारमे वालेसको लेकर मौन्टीथने इङ्गलेन्डको की। वह और वालेस कालिरनकी गाडीपर सवार हे और दो ।। अङ्गरेज उनके पीछे है। इस तरह वह कैदीरी

क लाइलसे दक्षिणको रवाना हुई। गाडी बडी तेजीसे दौडने लगी मानो स्काटिश सूर्य्य उस दिन दक्षिण भाग में अस्त होनेके लिये उधरही चला। अथवा मानो किसी दैवीशक्तिने स्काटलेन्डके वक्ष-स्थलसे उसका कलेजा काढकर सुदूर दक्षिणके मार्गमें फेंक दिया। सहसा मानो स्काटिश गगन अन्धकारमय होगया। सहसा मानो स्काटिश शरीरका खून सूख होगया। -जिसने स्काटलेन्डका फिर उद्धार करनेके लिये छाती फाडकर खून दिया था, जन्मभूमिके पुन-रुद्धारके लिये जिसने समरभूमिको सुखसेज माना था, आज वही स्काटिश वीर स्काटलेन्डको सूना करके स्काटलेण्डके जातिद्रोह और स्वार्थका प्रायश्चित्त करनेके लिये आत्मबलि देने इङ्गलेण्डको चला है इस समाचारसे स्काटलेण्डके स्त्री पुरुष बालक बूढे आज घर घर रोरहे हैं।

इस समाचारसे वालेसके प्रिय सहचर लांगविलके शोककी सीमा न रही। उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक इसका बदला नहीं लूंगा तब तक स्वदेश न लौटूंगा स्काटलेण्डमें ही रहूंगा। वह लकमिवेन में गया वहां एडवर्ड ब्रूससे उसकी मुलाकात हुई। वहा दोनो स्काटलेण्डके राजा राबर्ट ब्रूसकी बाट देखने लगे। बैनक बरनके समरमें लांगविलने राबर्ट ब्रूसकी बगलमें खडे होकर स्काटलेण्डको स्वाधीनताके लिये बडीही बहादुरीसे लडाई की थी। ब्रूस आकर वालेसकी खबर सुनकर शोक सागरमें डूब गये। एडवर्ड ब्रूसने वालेसका अपार गुण बखान कर भाईको कुछ ढारस दिया और बदला लेनेके लिये जल्द तय्यार होने लगे।

इधर काली गाडी वालेसको लेकर यथासमय इगलेण्डमें पहुंची। एडवर्डको खुशीका पारावार न रहा। वालेस १३०५ ईस्वी की ५ मी अगस्तको गिरिफ्तार करके २२ वी अगस्तको लन्दन लाया गया। १७ दिन रास्ते में लगे। राहमें इङ्गलेण्डके स्त्री पुरुष बूढे बालक बकबका धकसवाकर स्काटिश वीरको देखते थे। वालेसके साथ बहुत आदमी लन्दनमें आये। उस दिन

फेनचर्चस्ट्रीटके किसी गृहस्थके मकानमें वह रखा गया। दूसरे दिन घोडे पर सवार कराके वेस्टमिनिस्टरहालमें लाया गया। इंगलेण्ड के ग्रैन्ड मार्शल सरजान डिग्रेव, लन्दनके रिकार्डर जिउफ्रे, मेयर शेरिफ, अल्डरमेन आदि बडे बडे आदमी उसके साथ गये। पीछे पीछे बेशुमार सवार और पैदल सेना गई। एडवर्डकी घबराहटका ठिकाना न था। जज लोग वालेसको दोषी ठहरावें इसके लिये वह उस दिन बारबार जजोंकी सख्या बदलने लगे। कभी स्थिर किया कि तीन जज विचारकरेंगे कभी चार और कभी पांच जजोंको चुना। कभी कहाकि दोसे कोरम होगा कभी तीनसे कोरम ठहराया। हालके दक्षिणी मंच पर वालेस बिठाया गया। वालेस घमण्डसे कहा करता कि मैं वेस्टमिनिस्टर हालमें बैठकर इङ्गलेण्डका राजमुकुट पहनूंगा। इसीसे आज व्यङ्गसे उसके सिर पर लोरेल मुकुट रखा गया। एडवर्ड ऐसे कठिन समयमें भी वालेसको इस तरह मर्मवेदना पहुंचानेसे जरा नहीं झिचके। अङ्गरेजकी यह आदत पुरानी है। एक दिन वेल्स पेट्रियट लियोलिनका भी इसी तरह मर्मन्तुदअपमान किया गया। उसका सिर काट कर लन्दन टावरके ऊपर लटका कर उसके ऊपर आइवी लताका मुकुट रखा गया। वालेसके वधके बाद सर साइमन फ्रेजरकी भी यही दुर्दशा की गई थी।

वालेसपर राजविद्रोहका अभियोग लगाया गया। मिग्रेव, मालुरी, सेनुविच; राकवेल और ब्लिन्ड नामके पांच जजेने विचार आरम्भ किया। विचारका फल पहलेहीसे तय होचुका था तोभी जजोंने दिखावेके लिये वालेससे पूछा कि तुम पर राजविद्रोहका अपराध लगाया गया है तुम दोषी हो या निर्दोष? वालेसने उत्तर दिया मैं निर्दोष हूं क्योंकि मैं कभी इङ्गलेन्ड नरेशकी प्रजा नहीं था इसलिये राजविद्रोहका अभियोग मेरे पर नहीं लग सकता। जजोंने वालेसके इस उचित उत्तरपर कान न दिया। अन्यजातीय नियमके अनुसार वह राजद्रोहके अपराधमें

दण्ड नहीं पासकता यह बात दुनिया समझ गई किन्तु जजोंने समझकर भी नहीं समझा। क्योंकि उन्होंने एडवर्डके पास अपना कर्तव्यज्ञान और धर्म्मबुद्धि बेच दी थी। इसीसे आज उन्होंने विचारककी मर्य्यादा और जिम्मेदारी पर लात मारकर विडम्बना पूर्ण लोकदिखाऊ विचार किया। इसीसे आज उन्होने नीचे लिखा युक्ति और न्यायरहित फैसला और दण्डाज्ञा सुनाई। उन्होंने विचारासन पर बैठकर एडवर्डने जो कुछ सिखाया था वही कहके विचारक की जवाबदिहीसे पीछा छुडाया। फैसलेका मतलब यह है—स्काटलेन्ड नरेश जान बेलियलके राज्यच्युत होने पर—एडवर्डने स्काटलेन्डको जीता और अपने अधिकारमें किया। स्काटलेन्डको पुरोहित मण्डली अर्ल और बैरन तथा दूसरी प्रजाने उनकी अधीनता मानली है। उन्होंने स्काटलेन्डमें शान्ति फैलाई है और यहांकी रीतिनीतिके अनुसार शासन प्रणाली जारी की है। यह सब होते हुए भी वालेसने बेशुमार फौज जमा करके अङ्गरेज कर्म्मचारियों पर हमला किया है, लानार्कके शेरिफ हेसिलरीगको मारकर उसकी लाशके टुकडे टुकडे किये हैं, स्काटलेन्डका अकेला मालिक बनकर वहां अपना हुक्म चलाया है, पार्लीमेन्ट बुलाई है, फ्रास नरेशसे सन्धि करनेकी कोशिश की है नरदम्बरलेन्ड केम्बरलेन्ड और वेस्टमोरलेन्डको तहसनहस करदिया है, फलकार्कके मैदानमें इसी लडाईमें इङ्गलेन्ड नरेशका सामना किया और हारने पर जब उससे कहा गया कि क्षमा मांगकर शान्तिले तो उसने शान्ति लेनेसे इनकार किया था।

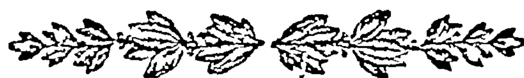
डर नहीं जानते, कर्तव्य पालनके लिये मौतको प्यारी पत्नीके समान गले लगाते हैं। इसीसे घातकोंको नगी तलवार देख कर भी वालेसका मुंह मलिन नहीं हुआ, वह जननी जन्मभूमिके लिये स्थूल शरीर छोडता है यह सोच कर आनन्दमें मग्न होगया। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग टुकडे टुकडे कराके चारों तरफ फेंकवा कर एडवर्डने केवल अपनी क्रूरता दिखाई। इससे वालेसकी कीर्ति सदाके लिये अमर होगई और एडवर्डके यशरूपी चन्द्रमामें सदाके लिये कलङ्क लग गया।

इति।



डर नहीं जानते, कर्तव्य पालनके लिये मौतको प्यारी पत्नीके समान गले लगाते हैं। इसीसे घातकोंकी नगी तलवार देख कर भी वालेसका मुंह मलिन नही हुआ, वह जननी जन्मभूमिके लिये स्थूल शरीर छोडता है यह सोच कर आनन्दमें मग्न होगया। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग टुकड़े टुकडे कराके चारों तरफ फेंकवा कर एडवर्डने केवल अपनी क्रूरता दिखाई। इससे वालेसकी कीर्ति सदाके लिये अमर होगई और एडवर्डके यशरूपी चन्द्रमामें सदाके लिये कलङ्क लग गया!

इति।



भारतमित्र हिन्दीभाषाका एक बहुत पुराना बड़ा और सस्ता साप्ताहिक पत्र है। ३१ सालसे कलकत्तेसे निकलता है। समय समय पर इसमें अच्छे अच्छे चित्र छपते हैं। राजनीति सम्बन्धी लेखोंकी इसमें प्रधानता रहती है पर मौके मौके पर धर्म, समाज और साहित्य सम्बन्धी लेख भी इसमें खूब निकलते हैं। जो लोग अंगरेजी नहीं जानते या कम जानते हैं वह यदि इस पत्रको बराबर पढ़े जाय तो किसी आवश्यक सामयिक घटनाके जाननेके लिये उनको और कोई अखबार पढ़नेकी जरूरत न रहेगी। जो अंगरेजी पढ़े हैं वह स्वयं जान सकते हैं कि क्योंकर सब अंगरेजी कागजोंको मथकर उनका निचोड़ इस पत्रमें भर दिया जाता है। इतने पर मूल्य केवल २) वार्षिक डाकमहसूल सहित है। नमूना मंगाकर देखनेसे ऊपर लिखी बातोंकी जांच हो सकती है।

मनेजर भारतमित्र
८७ मुक्तारामबाबूस्ट्रीट कलकत्ता।

॥ विचित्र-विचरण ॥

विचित्र-विचरण।

अर्थात्

गलीवर्स ट्रवल्सका

हिन्दी अनुवाद।

पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

कृत।

कलकत्ता।

विचित्र-विचरण।

अर्थात्

गलीवर्स ट्रैवल्सका

हिन्दी अनुवाद।

पण्डित जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

कृत।

कलकत्ता।

९७ मुक्ताराम बाबू ष्ट्रीट, भारतमित्र प्रेससे
पण्डित कृष्णानन्द शर्म्मा द्वारा मुद्रित और
प्रकाशित।

सन् १९०३ ई०।

समर्पण ।

यह पुस्तक अपने तीनो पूज्य मामा

पाण्डेय श्रीबलदेवलाल, श्रीगिरिधरलाल

और

श्रीजयकृष्णलालजीके

चरण कमलोंमें

श्रद्धा भक्ति पूर्वक अर्पण करता हूं, जो मेरे पालक, पोषक

और रक्षक हैं तथा जिनके अनुग्रहसे मैंने

लिखना पढना सीखा है ।



जन्माष्टमी संवत् १८६० ।

गलीवर्स ट्रवल्स।

अङ्गरेजी ग्रन्थकर्त्ताओंमें जोनाथन स्वीफ्टकी भांति किसी ग्रन्थकारका नाम प्रसिद्ध न हुआ। उसकी प्रसिद्धि "गलीवर्स ट्रवल्स" लिखनेसे हुई। जब सन् १७२७ ईस्वीमें यह पुस्तक छप कर निकली तो राजनीतिवाले और साहित्यसेवी दोनो दान्तोंमें उगली काटने लगे। चारोंओर इसीकी चर्चा थी। हर समालोचक सभामे इसकी आलोचना होती थी। स्वीफ्टके दो चार इष्ट मित्रोंके सिवा ग्रन्थकर्त्ताका नाम कोई न जानता था। ऐसा व्यङ्ग पूर्ण उपाख्यान इससे पहले कभी किसीने नही देखा था। लोग बहुत घबरा कर ग्रन्थकर्त्ताका पता लगाने लगे। ऐसा अद्भुत, अननुवादित, हृदयग्राही और सुन्दर ग्रन्थ किसने लिखा है इसकी तलाश होने लगी। राजनीति सम्बन्धी व्यङ्ग इसमें कैसा छिपा हुआ है रसिकता श्लेष और अन्योक्तिका यह कैसा खजाना है समाज और चीजो पर कैसे सुन्दर कटाक्ष इसमें किये गये है यह देख देख कर लोग मुग्ध होते थे। सर वाल्टर स्काट एक प्रसिद्ध कवि कहते है—"गलीवरका एक शब्दभी व्यर्थ नहीं। समस्त मानव जातिके पापोंका वर्णन जब वह एक घडीके लिये भी छोड देता है तो उसकी बातें इङ्गलैण्डकी राजनीति समाजनीति और वहाके दरबार पर आपडती है। जब वह इधरसे हटता है तो शौकीन दुनियाके पापोंका या फिलासफोंकी निष्फलताका खाका खैंचता है। पुराने यात्रियोंकी भी उसने अच्छी धूल उडाई है। मनुष्योंके पाप, मूर्खता, नीचता राजनीतिकी त्रुटियो और सामाजिक दोषोंको दूसरो पर ढाल कर खूब दिखाया है।"

सन् १७०२ ईस्वीसे १७१४ ईस्वी तक रानी एन, १७१४ से १७२७ ई० तक प्रथम जार्ज और १७२७ से १७६० ई० तक दूसरे

जार्जने इङ्गलेण्डका राज्यशासन किया। रानीएनके ओक्सफोर्ड और बोलिङ्गब्रोक मन्त्री थे। यह सब टोरी थे। प्रथम जार्जने गद्दी पर बैठ कर वालपोलको प्रधान मन्त्री बनाया। वह ह्वीग अर्थात् प्रजाहितैषी दलका था। वालपोलके समयमें रिशवतका बड़ा जोर था। हौस आफ कामन्सका वोट खूब बिकता था। स्वीफ्ट इन लोगोंसे प्रसन्न न था। विशेषकर जब रानी एनके ऊपर कहे हुए मन्त्रियों पर दूसरे जेम्स का अनुयायी कह कर अभियोग चलाया गया तो स्वीफ्ट और भी चिढ़ा। औरमण्ड बोलिङ्गब्रोक और ओक्स फोर्ड नामके तीन मन्त्रियोंमेंसे पहले दो तो फरासको भाग गये और शेष तीसरेको दो सालकी जेल हुई। दूसरे जार्ज के समयमें भी वालपोल मन्त्री था पर पीछे वह निकाला गया। वालपोल रूखा देहाती बुद्धिमान था। बहुत पढ़ा लिखा न था। अच्छे आदमी उससे प्रसन्न न थे। इन लोगों पर गलीवर्स ट्रवल्स में खूब नोक झोंक है।

विचित्रविचरणके पहले भाग लिलीपटमें प्रथम जार्ज और प्रधान मन्त्रीकी नीतिका वर्णन है। वालपोलको खजानची फ्लिम-नप बना कर खूब दिल्लगीकी है। ऊंची एड़ी और नीची एड़ी वालोंसे मतलब टोरी और ह्वीग दलके लोगोंसे हैं। अण्डेको छोटे सिरे और बड़े सिरेकी ओरसे तोड़नेका मतलब रोमन केथ-लिक और प्राटेष्टेण्ट दलोंका आपसमें मत भेद है। इङ्गलेण्डको लिलीपट और फरासको ब्लेफस्कू बनाया है। गलीवरका ब्लेफस्कू जाना बेलिङ्गब्रोकका फ्रांस भागना है। इसी प्रकार और सब बातें हैं।

लिलीपटमें व्यक्तिगत आक्रमण है और दूसरे भाग ब्रोबडिगनेगमें साधारण समाज पर कटाक्ष है। इन दोनोंमें ह्वीग यानी लिब-रल दलवालों पर, वालपोल और इङ्गलेण्डकी राजनीति पर चोटें हैं। तीसरे भाग लपूटामें उस समयके गणित और दर्शनवालोंकी छेड़ छाड़ है। विशेष कर रायल सोसाइटीवालों पर अधिक

कटाक्ष है जिनसे स्वीफ्टकी कुछ अनबन थी। बलनीबर्बीसे मतलब है इङ्गलेण्ड और लगाडोसे लण्डन।

तीनो यात्राओंमें उस समयके विशेष लोगों सभा समाज दार्श-निकों राजा राज दरबार मन्त्री और राजनीतिवालोंका खाका है। चौथे भागमें मानव जातिके दोषों पर बडा तीव्र कटाक्ष है। कुछ समझ दार लोग कहते हैं कि कटाक्ष अधिक तीव्र होगया। मनुष्यकी इतनी हीनता न दिखाना थी। कुछ हो विलायतमें यह पोथी अद्वितीय मानी गई है।





नं० १

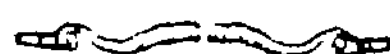
जोनाथन स्विफ्ट।

भूमिका।

यह "विचित्रविचरण" जोनाथन स्वीफ्टके बनाये "गलीवर्स ट्रवल्स" का अनुवाद है। स्वीफ्ट अङ्गरेजोंका एक नामी लेखकथा। राजनीति विशारदोंमें इसका बडा नाम था। उसका जन्म ३० नवम्बर १६६७ ईस्वीमें हुआ। वह १६८२ ईस्वीमें डबलिनके ट्रीनिटी कालिजमें दाखिल हुआ। उस समय उसके चेहरेसे उसकी भविष्य सुविख्यातिके कुछ भी चिन्ह नहीं दिखाई देते थे। गोल्डस्मिथकी भांति यह भी पढाईकी पुस्तकोंको छोड कर इधर उधरकी पुस्तकें पढा करता। लडकपनमें उसने खर्चकी भी बडी तङ्गी उठाई थी। बी० ए० पास करनेसे पहले उसका चचा गोडविन मर गया था जो उसे खर्च दिया करता। तब उसका दूसरा चचा ड्रायडन उस की सहायता करने लगा पर पूरी सहायता न कर सकता था। इस तङ्गीने उसे जन्म भरके लिये किफायतसे खर्च करनेकी आदत सिखाई। बहुत धन कमाने पर भी उसकी मुट्ठी ढीली नहीं होती थी। १६८५ ईस्वीमें बी० ए० की परीक्षा दी पर पास न हुआ। अन्तमें रियायती पास हुआ।

जान्सनकी अङ्गरेजी भाषामें बडी धाकहै। वह तीव्र समालोचनाके लिये प्रसिद्धहैं। वह इस ग्रन्थके विषयमें लिखतेहैं—"गलीवर्स ट्रवल्स ऐसी अनूठी और नई चीज है कि पाठक उसे पढते पढते आनन्द और आश्चर्यमें एक साथ डूब जाते है। छोटे बडे पण्डित मूर्ख सब इसे चावसे पढते है।" जब यह पुस्तक छप कर प्रकाशित हुई तो समालोचक समालोचना भूल कर एक स्वरसे इसकी प्रशंसा करने लगे। यहां तक कि बहुत जल्द इसका फ्रेञ्च भाषामें अनुवाद होगया।

स्वीफ्ट बडा उत्साही और सदाचारी था। जब वह गिर्जाका अधिकारी था उस समय उसने सदाचारी विद्वानोंकी बडी उन्नति की। मरते दम तक सदाचार फैलानेमें तत्पर रहा। १९ अक्टोबर १७४५ ईस्वीमें उसका देहान्त हुआ। वह बडा नामी लेखक था। हास्य और व्यङ्ग लिखनेमें अद्वितीय था। यशके लिये कभी कोई काम न करताथा।



धन्यवाद।

इस पुस्तकके अनुवाद करनेमें मुझे श्रीयुक्त पाण्डेय उमापति दत्त शर्म्मा बी० ए० से बहुत कुछ सहायता मिली है। आप कल-कत्तेके श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालयके प्रधान अध्यापक हैं। आपकी छुट्टी बहुत थोरी है तथापि जब जहांसे जो कठिन बात मैंने उनसे पूछी उन्होंने उसी समय बताई। केवल इतनाही नहीं वरञ्च जिन गूढ़ बातोंका ठीक तात्पर्य्य समझानेमें उन्हें कुछ शङ्का हुई उनको अच्छे अच्छे अङ्गरेज विद्वानोंसे निश्चय कर मुझे बताया। आपकी ऐसी कृपा बिना मैं यह पुस्तक ऐसी सुगमतासे कभी समाप्त न कर सकता।

२०, बागतला ष्ट्रीट
कलकत्ता।
१६—८—१९०३।

जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी।

॥ श्रीः ॥

विचित्र-विचरण ।

प्रथम खण्ड ।

लिलीपटकी यात्रा ।

प्रथम परिच्छेद ।

मेरा घर है विलायतके नटिङ्घाम शहरमें। वहां मेरे पिताकी कुछ जायदाद थी। बस उसीसे जीविका निर्वाह होती थी। मुझे लड़कपनहीसे समुद्र यात्राका बहुत शौक था। मेरे पिताके पांच लड़के—मैं उनमेंसे तीसरा हूं। जब मैं चौदह वर्षका हुआ तो पिताने केम्ब्रीज शहरके "इमेनुएल कालेज" में मेरा नाम लिखवा दिया। वहां मैंने तीन वर्ष खूब जी लगाकर पढ़ा। मैं बहुतही कम खर्चसे अपना गुजारा करता तथापि पिताकी आय थोड़ी होनेके कारण। खर्च चल न सका। लाचार पढ़नेकी इतिश्री कर लण्डन शहरके प्रसिद्ध डाक्टर मिष्टर जेम्स बेटस्के यहां काम सीखने पर नियत हुआ। यहां चार बरस रह कर मैंने डाक्टरी सीखी। पिता भी खर्च वर्चके लिये कभी कभी कुछ भेज देते थे। मैं उसे जहाज चलानेके काम तथा देशाटनके उपयोगी गणितोंके सीखनेमें खर्च करताथा क्योंकि मैं जानताथा कि मुझे देश देशान्तरकी यात्रा करनी पड़ेगी। मिष्टर बेटस्को छोड़ कर जब मैं घर आया तो पिताने चाचा जोन तथा और कई नातेदारोंकी सहायतासे मुझे चार सौ रुपये दिये और तीनसौ वार्षिक देनेकी प्रतिज्ञा की। मैं रुपयोंको ले "लिडन" गया और वहां वैद्यक पढ़ने लगा क्योंकि मुझे पहलेहीसे मालूम था कि ये सब विषय लम्बी समुद्र यात्राके

लिये बहुत उपयोगी है। "लिडन" से लौट कर मैं अपने पुराने स्वामी मिष्टर वेटसकी सुफारशसे "स्वालो" जहाजका डाक्टर मुकर्रर हुआ। इस जहाजके कप्तानका नाम अबराहाम पेनेल था। इनके साथ मैंने दो चार जल-यात्राएं भी कीं। साढे तीन वर्षके बाद नौकरी छोडकर लण्डन शहरमें डाक्टरी करनेकी इच्छा हुई। आखिर मैंने वही किया। मिष्टर वेट्सने केवल मेरा उत्साह ही नहीं बढ़ाया वरन् बहुत कुछ सहायता भी की। बल्कि यों कहना चाहिये कि उन्हींकी कृपासे मेरी डाक्टरी चल निकली। ओल्ड जूरी मुहल्लेमें एक छोटासा घर भाडे पर लेकर मैं रहने लगा। बन्धुबान्धवोंके बहुत समझाने बुझानेसे मैंने अपना व्याह किया। दहेजमें चार हजार रुपये नकद मिले।

दो वर्षके बाद मेरे परमहितैषी मिष्टर वेट्स परमधाम पधारे। फिर कोई सहाय मिला नहीं इससे मेरा काम भी ढीला पड गया। और डाक्टरोंकी तरह केवल आडम्बरसे पैसा पैदा करना मुझे पसन्द न था। अतएव फिर जल यात्राही की ठहराई। स्त्री और इष्ट मित्रोंने भी यही सम्मति दी। बस अपनी दुकान उठा कर मैंने नौकरी करली। लगातार छः वर्ष तक दो जहाजोंमें मैं डाक्टर रहा और अमेरिकाके टापुओंको तथा हिन्दुस्थानको भी देख आया। इन सफरोंमें मुझे रुपये भी खूब मिले। जब काम से छुट्टी मिलती तो मैं प्राचीन और आधुनिक ग्रन्थकारोंकी उत्तम उत्तम पोथियां पढता। जब जहाज किनारे लगता तो मैं उतर कर वहांके निवासियोंकी रीति नीति, रङ्ग ढङ्ग और चाल चलन ध्यान से देखता तथा उनकी भाषाएं सीखता था। मेरी स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी इसलिये इस कामको मैं सहजहीमें करलेता था।

पिछली यात्रामें विशेष कुछ लाभ नहीं हुआ। इसवास्ते इस काममें जी हट गया। बालबच्चोंके साथ घरही पर दिन बिताने की इच्छा हुई। ओल्डजूरीसे "फेटरलेन" में और वहांसे "वापिङ्ग" में अपना डेरा डन्डा उठा लाया। आशा थी कि जहाजियों

की मददसे कुछ काम मिल जायगा परन्तु पूरी नहीं हुई। तीन बरसके बाद "एण्टीलोप" जहाजके स्वामी कप्तान विलियम प्रीचर्डने जो दक्षिण सागरकी यात्रा करनेवाले थे मुझे अपने जहाजकी डाक्टरीका काम दिया। ता० ४ मई सन् १६९९ ई० को हम लोगोंने ब्रिष्टल बन्दरसे जहाजका लङ्गर उठाया। जहाज भी चल निकला। कुछ दिन तक हम लोगोंकी खूब चैनसे कटी।

एक दिन अकस्मात् ऋतु पलट गई। दक्षिण सागर होकर जब हम लोग भारतवर्षकी ओर जारहे थे एक भयानक तूफानने हम लोगोंको आघेरा। हम राह भूल कर "वानडायमन" द्वीपकी पश्चिमोत्तर दिशामें जापडे। विचारनेसे मालूम हुआ कि हम लोग विषुवत रेखासे ३० डिग्री २ मिनट दक्षिण हैं। हम लोगोंमेंसे बारह तो कड़ी मेहनत तथा सड़ा गला अन्न खाकर कालके गालमें समाये और शेषकी बुरी दशा थी—चेहरेसे सबके कमजोरी टपकती थी। पृथ्वीके जिस भागमें हम लोग पहुंचे वहां नवम्बरही में ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होता है। तीसरे पहर वहां सदा वायुका वेग बढ़ जाता है। पांचवीं नवम्बरको जहाजियोंने सामने एक पहाड़ देखा। आकाश भी बादलोंसे घिरा था। सबके प्राण सूख गये। बचनेके लिये बहुत चेष्टाकी गई पर फल कुछ नहीं हुआ। वायु ऐसे वेगसे चली कि जहाज चटपट पहाड़से टकराकर टुकड़े टुकड़े होगया। पांच जहाजी प्राण बचानेके लिये एक किश्ती पर चढ़के भागे। मैं भी उन्हीं लोगोंके साथ था। हम लोग जी जानसे डांड चलाने लगे पर तौ मीलसे भी ज्यादे न जासके, थक कर बिलकुल बेकाम होगये—आगे बढ़नेकी भी शक्ति न रही। जहाज परकी बहादुर मेहनतसे हम लोगोंका काम तमाम हो चुका था तिस पर इतनी और हुई। लाचार हो किश्तीको भाग्यके भरोसे छोड़ दिया। आधे घण्टेके बाद उत्तरसे आई हुई हवाके झोंकेने हमारी किश्तीको उलट दिया। मेरे साथियोंकी अथवा जहाजके सब आदमियोंकी क्या दशा हुई मुझे

सम्भवत: वह सब समुद्रके अतल जलमें सदा निद्राका सुख अनुभव करते होंगे। ईश्वरकी दयासे मेरी जान बच गई। मैं तैरने लगा। हवा और लहरें जिधर राह बतातीथीं मैं उधरही जाता था। जल अथाह था। तैरते तैरते थक गया। आखिर थाह मिली। पानी गले भर था। तूफानका भी जोर घट गया था। चढाव इतना कम था कि लग भग एक मील चलनेके बादही किनारे पर जा पहुंचा। उस समय रातके आठ बजे होंगे। एक मील फिर चला परन्तु बस्ती या आबादीका कोई चिन्ह दिखाई न पडा। कमजोरीके कारण शायद मुझेही न सूझा हो। एक तो थकावट दूसरे गर्मी तिस पर शराबका निशा पैर उठाना पहाड होगया फिर चलना कैसा? लाचार हो वही घास पर लेट गया। घास नन्हीं नन्ही और मुलायम थीं। लेटतेही नींदने धर दबाया। फिर क्या था लगा खर्राटे लेने। मैं खूब सोया। ऐसी गाढ निद्रा भला कभी काहेको आई होगी? नौघण्टेके बाद आखें खुलीं तो देखा दिन चढ आया है। उठना चाहा पर उठ न सका। मैं चित्त लेटा हुआ था। देखा मेरे हाथ पैर मजबूतीसे खूंटेके साथ बंधे हैं। सिरके बालभी जो घने और लम्बे थे उसी प्रकार जमीनसे जकडे हुए है। मतलब यह कि मेरा सारा शरीरही बधा हुआ था। हिलने डोलनेकी भी शक्ति मुझमें न थी। सिर्फ ऊपरको और देख सकता था। धूप तेज होगई थी। आखें भी झुलसने लगी। चारो तरफ पिनपिनीसी आवाजमें कुछ शोर गुल होरहा था जो मेरी समझमें न आया। मैं आकाशके सिवा और कुछ नही देख सकता था। कुछ देरके बाद मालूम हुआ कि कोई चीज बायें पेर पर रेंग रही है। जब वह छाती पर होती हुई ठोडीके पास आपहुची तो बडी कठिनाईसे नजर नीची करके मैंने देखा। ओफ! देखतेही बुद्धि चकरा गई। आश्चर्यका ठिकाना न रहा। जिसका कभी सपनेमें भी ख्याल नहीं हो सकता न उसे प्रत्यक्ष देखा। असम्भवको सम्भव होते देखा अधिक क्या

कहं मैं अपनी सुध बुध खो बैठा। मेरा अजब हाल था। मैं कुछ भी स्थिर न कर सका कि मैं जागता हूँ या सोता। आंखें बन्दकीं तो अन्धकार और खोलदी तो वही अनूठी वस्तु देखी। तब निश्चय हुआ कि सोता नही जागता हू—जो कुछ देखता हूँ वह झूठ नही सच है।

द्वितीय परिच्छेद।

पाठक मैंने क्या देखा सो बताऊं? अच्छा सुनिये, मैंने देखा आदमी—हा आदमी देखा जिसके आख नाक मुह सब हमारे जैसे थे पर ऊंचाई आधे फुटसे अधिक न थी और जिसके हाथमें धनुष बाण तथा पीठ पर तर्कश था। वह अकेला न था उसके पीछे चालीस और थे। वह सब भी ऐसेही थे। उनको देख कर मैं इतने जोरसे चीख उठा कि वे सबके सब मारे डरके पीछे भहरा पडे। पीछे मालूम हुआ कि मेरी देह परसे कूद कर भागनेमें बहुतों को चोट लगी—किसीके हाथ टटे, किसीके सिर फटे और कोई बिचारा तो वहीं ढेर होगया। लेकिन वह सब बड़े साहसी थे—दल बाधकर फिर चढ आए। उनमेंसे एक जो अधिक साहसी मालूम होता था मेरे मुंहको अच्छी तरह देख भाल कर आश्चर्य्यके साथ पिनपिनी किन्तु ऊंची आवाजमें बोला "हे कीनाह डीगल"। दूसरे लोगोंने भी इसी वाक्यको कई बार कहा। लेकिन इसका अर्थ क्या है सो उस समय मेरी समझमें न आया। मैं बराबर उसी प्रकार पडा रहा। पाठक समझ सकते है कि उस समय मुझे कितना कष्ट होगा। बहुत दुःखित होकर मैंने एक झटका दिया जिससे रस्सी टूट गई और खूटे उखड गये। बाया हाथ बन्धनसे मुक्त हुआ। कष्ट तो तनिक हुआही पर एक झटका और मैंने दिया। उससे बायीं ओरका बन्धन जिसमें बाल दबे हुए थे टूट गया। अब जरा सिर घुमानेका मौका मिला। मन में आई कि बायें हाथसे उन्हे पकड़ लू, पर वे सबके सब भाग गये

सम्भवत: वह सब समुद्रके अतल जलमें सदा निद्राका सुख अनुभव करते होंगे। ईश्वरकी दयासे मेरी जान बच गई। मैं तैरने लगा। हवा और लहरें जिधर राह बतातीथीं मैं उधरही जाता था। जल अथाह था। तैरते तैरते थक गया। आखिर थाह मिली। पानी गले भर था। तूफानका भी जोर घट गया था। चढाव इतना कम था कि लग भग एक मील चलनेके बादही किनारे पर जा पहुंचा। उस समय रातके आठ बजे होंगे। एक मील फिर चला परन्तु बस्ती या आबादीका कोई चिन्ह दिखाई न पडा। कमजोरीके कारण शायद मुझेही न सूझा हो। एक तो थकावट दूसरे गर्मी तिस पर शराबका निशा पैर उठाना पहाड होगया फिर चलना कैसा? लाचार हो वहीं घास पर लेट गया। घास नन्हीं नन्हीं और मुलायम थीं। लेटतेही नींदने धर दबाया। फिर क्या था लगा खर्राटे लेने। मैं खूब सोया। ऐसी गाढ निद्रा भला कभी काहेको आई होगी? नौघण्टेके बाद आंखें खुलीं तो देखा दिन चढ आया हैं। उठना चाहा पर उठ न सका। मैं चित्त लेटा हुआ था। देखा मेरे हाथ पैर मजबूतीसे खूंटेके साथ बंधे हैं। सिरके बालभी जो घने और लम्बे थे उसी प्रकार जमीनसे जकडे हुए है। मतलब यह कि मेरा सारा शरीरही बंधा हुआ था। हिलने डोलनेकी भी शक्ति मुझमें न थी। सिर्फ ऊपरकी ओर देख सकता था। धुप तेज होगई थी। आंखें भी झुलसने लगी। चारो तरफ भिनभिनीसी आवाजमें कुछ शोर गुल होरहा था जो मेरी समझमें न आया। मैं आकाशके सिवा और कुछ नही देख सकता था। कुछ देरके बाद मालूम हुआ कि कोई चीज बायें पैर पर रेंग रही है। जब वह छाती पर होती हुई ठोडीके पास आपहुची तो बडी कठिनाईसे नजर नीची करके मैंने देखा। ओफ! देखतेही बुद्धि चकरा गई। आश्चर्य्यका ठिकाना न रहा। जिसका कभी सपनेमें भी ख्याल नही हो सकता [illegible] उसे प्रत्यक्ष देखा। असम्भवको सम्भव होते देखा अधिक क्या।

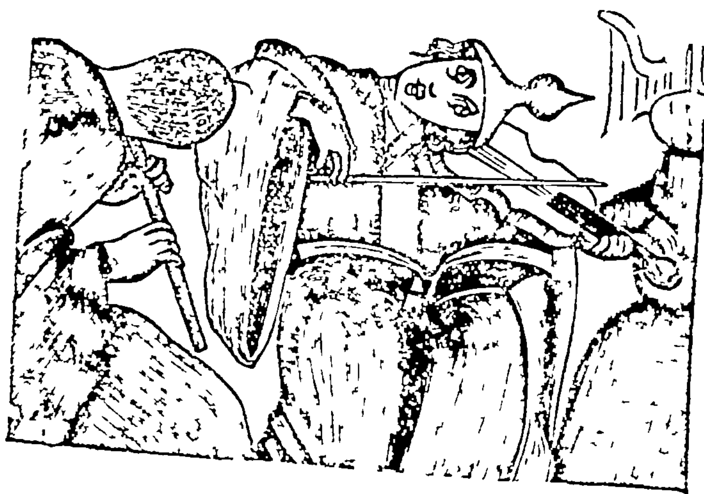
कह मैं अपनी सुध बुध खो बैठा। मेरा अजब हाल था। मैं कुछ भी स्थिर न कर सका कि मैं जागता हूं या सोता। आंखें बन्दकीं तो अन्धकार और खोलदी तो वही अनूठी वस्तु देखी। तब निश्चय हुआ कि सोता नहीं जागता हू—जो कुछ देखता हूं वह झूठ नहीं सच है।

द्वितीय परिच्छेद।



पाठक मैंने क्या देखा सो बताऊं? अच्छा सुनिये, मैंने देखा आदमी—हां आदमी देखा जिसके आंख नाक मुंह सब हमारे जैसे थे पर ऊंचाई आधे फुटसे अधिक न थी और जिसके हाथमें धनुष बाण तथा पीठ पर तर्कश था। वह अकेला न था उसके पीछे चालीस और थे। वह सब भी ऐसेही थे। उनको देख कर मैं इतने जोरसे चीख उठा कि वे सबके सब मारे डरके पीछे भहरा पडे। पीछे मालूम हुआ कि मेरी देह परसे कूद कर भागनेमें बहुतों को चोट लगी—किसीके हाथ टूटे, किसीके सिर फटे और कोई बिचारा तो वहीं ढेर होगया। लेकिन वह सब बड़े साहसी थे—दल बांधकर फिर चढ आए। उनमेंसे एक जो अधिक साहसी मालूम होता था मेरे मुंहको अच्छी तरह देख भाल कर आश्चर्यके साथ पिनपिनी किन्तु ऊंची आवाजमें बोला "हे कीनाह डीगल"। दूसरे लोगोंने भी इसी वाक्यको कई बार कहा। लेकिन इसका अर्थ क्या है सो उस समय मेरी समझमें न आया। मैं बराबर उसी प्रकार पडा रहा। पाठक समझ सकते हैं कि उस समय मुझे कितना कष्ट होगा। बहुत दुःखित होकर मैंने एक झटका दिया जिससे रस्सी टूट गई और खूंटे उखड गये। बाया हाथ बन्धनसे मुक्त हुआ। कष्ट तो तनिक हुआही पर एक झटका और मैंने दिया। इसकी बायीं ओरका बन्धन जिसमें बाल बंधे हुए थे टूट गया। अब जरा सिर घुमानेका मौका मिला। मन में आई कि बायें हाथसे उन्हे पकड लूं पर वे सबके सब भाग गये

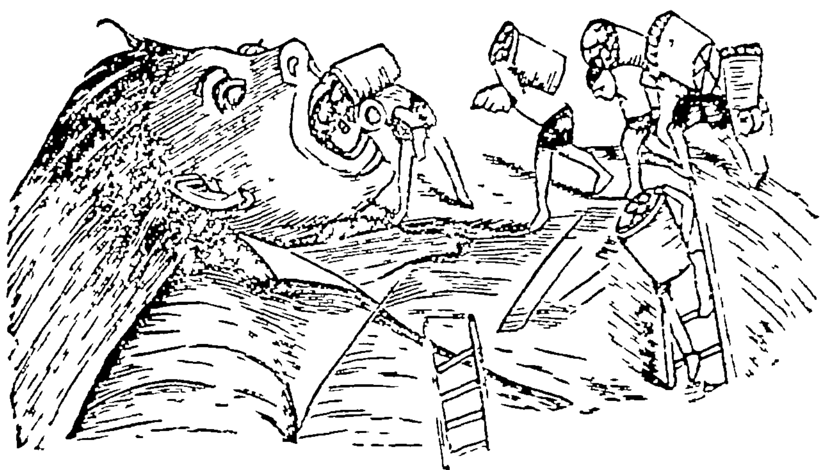
एकको भी न पकड सका। इस पर उन सबने बडी खुशी मनाई। उनमेसे एकने जोरसे चिल्ला कर कहा "टेलगोफोनेक"। बस मेरी बाह पर सैकडों तीर जो सूईके समान थे बरसने लगे। इसके सिवा आकाशकी ओर भी वे लोग बाण छोडने लगे। किन्तु इस बाण वृष्टिका असर मुझ पर कुछ भी नही हुआ। बहुतोंने मेरे मुंह की तरफ बाण मारे थे लेकिन वह सब सूईके बराबर थे। मैंने बायें हाथसे अपने मुंहको बचाको। बाण वृष्टि बन्द हुई। मै अपनी दशा पर रोता था। जब बन्धन तोडनेकी कोशिश करता तो तीरोंकी वर्षा होती। उन लोगोंने भाले भी चलाये पर भाग्यसे चमडेका कोट बदनमे था इसलिये कुछ हुआ नही। अगर मैं चाहता तो उठ भागता पर ऐसा किया नही। चुप चाप पडे रहना अच्छा समझा। सोचा बाया हाथ खुलही चुका है रातको सहजमें निकल भागूंगा। अगर यहाके सब आदमी इसी परिमाणके है तो डर क्या है ? मै सबको एक साथही खबर ले सकता हूं। बस यही सब सोच बिचार कर मै चुपचाप पडा रहा। पर जो सोचा सो हुआ नही। जब मै शान्त हुआ तो वह सब भी शान्त हुए किन्तु आवाजसे मालूम हुआ कि उनका दल बढ रहा है। मुझसे कोई चार गजकी दूरी पर दाहिने कानके पासही प्राय एक घण्टे तक ठक ठक शब्द होता रहा मानो कोई कुछ ठोका ठाको कर रहा है। सिर उठाया तो देखा वे सब मचान बना रहे हैं। मचान धरतीसे एक हाथ ऊंचा था। उसमे दो तीन सीढिया भी लगी हुई थीं और उस पर चार पाच आदमी—वही छ इञ्च वाले—मजेमे खडे हो सकते थे। मचान तैयार होजाने पर चार आदमी उसपर चढ गये। उनमेसे एकने जो सयाना और चतुर मालूम पडा मेरी ओर निहार कर एक लम्बी वक्तृता दी जिसका मतलब मैने कुछ भी नहीं समझा लेकिन उसके भाव भङ्गीसे प्रगट हुआ कि वह कभी मुझे डराता धमकाता, कभी समझाता बुझाता और कभी मुझसे विनय प्रार्थना करता था। व्याख्यान आ-



नं० १०

तीन घंटेतक लगातार सबने खूब गाया बजाया।

पृष्ठ १३४



नं० ४

हुक्म पातेही सैकडों आदमी टोकरीसे लदे
मेरी छाती पर आ पहुंचे।

पृष्ठ ७

रम्भ करनेके पहलेही वक्ताने तीन बार जोरसे कहा था "लङ्गरो डेवल सान"। इतना सुनकर पचास आदमी उसी परिमाणके आये और मेरे सिरका बन्धन काट कर चले गये। तब मैने वक्ता की ओर सिर घुमाया। उसकी उमर लग भग पचास वर्षकी होगी। अपने साथियोंसे वह कुछ लम्बा था मैने बहुत नम्रताके साथ बाया हाथ उठा कर उनकी बातोंका जवाब दिया। सूर्यकी तरफ इशारा करके कसम भी खाई कि मै बुरी नीयतसे यहा नही आया हू और न यहाके जीवोंकी कुछ बुराई करूगा। जहाज छोडनेके बादहीसे खानेके लिये कुछ नही मिला था—भूख के मारे तबीयत बेचैन थी—जङ्गल जानेकी हाजत थी। कातर होकर मैंने बार बार उंगलियोंको मुंहमें डालकर खानेका इशारा किया। उसने मेरी बातोंको तो नही समझा पर ईश्वरकी दयासे मेरे मनके भावको समझ लिया।

मचानसे उतर कर उस आदमीने जो सबका सरदार था अपने नौकरोंको खाने पीनेकी सामग्री लानेके लिये कहा। हुक्म पातेही सेकडो आदमी टोकरोंसे लदे मेरी छाती पर आ पहुंचे। मेरे पेट पर चढनेके लिये उन्हें सीढिया लगानी पडी थी। मेरे आनेकी खबर पातेही वहाके राजाने पहलेहीसे मेरे खाने पीनेका बन्दोबस्त कर दिया था। भोजन स्वादिष्ट था पर सबको मैं पहचान न सका। मास भी कई तरहके थे। भेडेका मांस लेकिन अधिक था। बन्दूककी गोलियोंकी बराबर पावरोटिया थी। मैं चार चार पांच पाच रोटियोंका एकही कौर करताथा। मेरा खाना देख कर वह सब दङ्ग होगए। अब आई शराबकी बारी। मेरे भोजन हीसे उनको मालूम होगया कि थोडी मदिरासे काम नही चलेगा। इसी लिये उन्होंने अपने यहाके सबसे बडे पीपेका मुंह खोल कर मेरे हवाले किया। मैं उसे एकही घूटमें साफ कर गया। उनके उस बडे पीपेमें डेढ दो छटाकसे ज्यादे शराब न होगी। लेकिन शराब थी बडी मजेदार। मैंने एक पीपा फिर खाली किया।

जब और मांगा तो कोरा जवाब पाया क्योंकि उधर तो भण्डारही खाली होगया था। इन सब अद्भुत कामोंको जब मैं कर चुका तब वह सब मारे खुशीके मेरे पेट पर कूदने लगे और बार बार पहले की भांति "हेकीनाह डीगल" कहने लगे। इसके बाद उन्होंने दोनों पीपोंको फेंक देनेके लिये इशारा किया और जो लोग जमीन पर खड़े थे उनसे गरज कर कहा "बोराकमिभोला"। इतना सुनतेही भीड़ एक तरफ हट गई। जब मैंने पीपोंको उठा कर फेंक दिया। तब वह लोग फिर बोले "हेकीनाहडीगल"। वह क्षुद्रजीव निडर होकर जब मेरी देह पर नाचने कूदने लगे तो उनकी ढिठाई देख मुझे बहुत क्रोध आया। जीमें तो आई कि इन्हें उठा कर जमीन पर पटक दूं परन्तु कुछ सोच विचार कर मन मारके रह गया। जब मैं खा पी कर निश्चिन्त हुआ तो एक उच्च राजकर्म्मचारी दाहिने पांव परसे धीरे धीरे मेरे मुंहके सामने आया। उसके चेहरे पर क्रोधकी झलक तक न थी। उसने शान्ति और गम्भीरता पूर्वक कोई दस मिनट तक बातें कीं किन्तु मैंने कुछ भी न समझा। वह आगेकी तरफ इशारेसे कुछ बताता भी था जिसका मतलब पीछे खुला। वहांसे आधी मील की दूरी पर राजधानी थी वहीं चलनेके लिये वह कहता था। राजाकी तरफसे वह मुझे बुलाने आया था। मैंने भी इशारेमें कहा कि मुझे छोड़ दो। पर उसने सिर हिला कर समझा दिया कि यह बात नहीं होनेकी। इशारेहीसे उसने यह भी जताया कि चाहे जैसे हो वह सब मुझे राजधानी जरूर ले जायंगे और वहां खूब खाने पीनेके लिये देंगे, खातिर करेंगे और किसी प्रकारकी तकलीफ नहीं होने देंगे। इन सब बातोंको पुष्ट करनेके लिये उसने राजाकी मुहर दिखाई पर मुझे एक न भाई, मनमें आई कि निकल भागूं लेकिन उनकी बाण दृष्टि याद कर मनकी बात मनहीमें भुलाई। उन लोगोंका दल भी बहुत कुछ घट चुका था। निदान सोच विचार कर वहीं चलनेकी बात ठहराई। वह राज

कर्म्मचारी मेरे मनका भाव समझ कर बडी खुशीके साथ वहांसे विदा हुआ। थोडी देरके बाद "पेपलस सेलम" की अवाजसे आकाश गूंज उठा। कई आदमियोंने आकर बाईं ओरके बन्धन को ढीला कर दिया। करवट बदलनेका मौका मिला। बहुत देरसे पेशाबकी हाजत थी—सो फुरसत पातेही पहले मैंने पेशाब किया—तबीयत हलकी हुई। लेकिन वह सब मेरे पेशाबको देख आश्चर्य मानने लगे बल्कि बहुतेरे तो डूब जानेके डरसे इधर उधर भाग गये। उन लोगोंने एक महा सुगन्धित मरहम मुंह और हाथोंमें लगा दिया जिससे तीरकी जलन जाती रही। सब पीडा दूर हुई। शरीरको आराम मिला मैं भी लगा खर्राटे लेने।

तृतीय परिच्छेद।

जब आंखे खुलीं तो अपनेको एक लम्बी गाडी पर बधा हुआ पाया। गाडी खडी थी और हजारों आदमी मुझे घेरे थे।

मैं आठ घण्टे खूब सोया या बेहोश रहा। राजाके डाक्टरोंने शराबमें बेहोशीकी दवा मिला दी थी बस उसीसे इतनी देर बेसुध पडा रहा। ये सब भेद पीछे खुले थे। जब मैं घास पर सोया हुआ था जासूसोंने जाकर महाराजको खबर दी। उन्होंने उसी समय अपने आदमियोंको समझा बुझा कर मेरे पास भेजा। उन लोगोंने आकर मेरे हाथ पैर बांध दिये जैसा कि ऊपर मैं कह आया हूं। उधर महाराजने मेरे भोजनादिकी सामग्री तथा एक बहुत लम्बी गाडी तैयार करनेके लिये आज्ञा दे दी। बहुत से लोग महाराजके इस कामको बुरा बता सकतेहैं—युरप वाले तो कदापि इसे पसन्द नही करेंगे—परन्तु मेरी रायसे ऐसे मौकों पर यही करना उचित है। अगर महाराजके आदमी आकर एका एक मुझ पर आक्रमण कर बैठते या मुझको जगा देते तो मैं गुस्से से उठ कर उनको पीस डालता। महा अनर्थ होता। आपसमें द्वेष बढता। अतएव महाराजने जो कुछ किया सो बहुत ठीक और उचित था। न सांप मरा न लाठी टूटी।

इस देशके निवासी गणित विद्याके पूरे पण्डित होनेके अलावे कारीगर बडे भारी है। कल काटेका बनाना तो इन सबके लिये महज काम है। यहांके महाराज विद्याके परमानुरागी है। आपके राज्यमें विद्या और शिल्पकी बहुत कुछ उन्नति हुई है। इसीसे लोग महाराजको "विद्यावन्धु" कहते है। बडे बडे पेडो तथा भारी भारी चीजोंके ढोनेके वास्ते यहां कलें तैयार है। लडाईके जहाज भी यहां बनते है। एक एक जहाजकी लम्बाई नौ नौ फुट होती है। ये सब जङ्गलहीमें तैयार होते और वहांसे कलोंके द्वारा समुद्रमें पहुंचाये जाते हैं। महाराजकी आज्ञा पातेही पाचसौ बढई और इञ्जीनियरोंने चार घण्टेके अन्दरही एक सुविशाल गाडी बना कर तैयार कर दी। यह गाडी जमीनसे तीन इञ्च ऊंची, प्रायः सात फुट लम्बी और चार फुट चौडी थी। देखनेमें बुरी न थी। इसमें बाईस पहिये लगे थे। इसी गाडीके पहुंचने पर सबने "पोपलेस सेलेम" से आकाश गुञ्जा दिया था। यह गाडी जहा मैं पडा हुआ था वही मेरे बराबर रक्खी गई। अब मुश्किल यह आपडी कि यह मेरा भारी शरीर गाडी पर कैसे चढाया जायगा। शेषमें उपाय निकल आया। एक एक फुट लम्बे खम्बे जमीनमें सीधे गाडे गये। इनके सिरे पर एक एक चरखी (छोटा पहिया) लगाई गई। मेरे हाथ, पैर, गर्दन आदि तमाम शरीरमें बन्द बाधे गये। मजबूत डोरियोंका एक छोर तो चरखियो पर रहा और दूसरा आकडों के द्वारा बन्दोंसे अटकाया गया। यह सब काम ठीक होजाने पर नौ सौ चुने हुए पहलवानोंने चरखियों परसे आई हुई डोरियोंको बडे जोरसे खैंचा। खैंचतेही मैं धरतीसे पाच इञ्च ऊपर उठ आया। गाडीको लोगोंने ठीक मेरे नीचे ठेल दिया। बस जरासी डोरी ढीली करतेही मैं गाडी पर आ पहुंचा। फिर मेरा सारा शरीर गाडीके साथ खूब मजबूतीसे बाध दिया गया। इस प्रकार कोई पौने तीन घण्टेमे मैं उस सुविशाल ~ पर लादा गया। ये सब बातें मुझे पीछे मालूम हुई क्योंकि

जिस समय वह सब काण्ड रचे जाते थे मैं बेहोशीकी पुडियाके कारण बिलकुल बेसुध था। महाराजके बडे दड़े डेढ हजार घोडे गाडीमें जुते थे जिनकी ऊंचाई साढे चार चार इञ्च थी। यह कही चुका हूं कि जहां मैं था वहांसे राजधानी आध मील थी। सब ठीक ठाक होजाने पर गाडी अग्रसर हुई। गाडी चलनेके चार घण्टे बाद अकस्मात् एक छींक आई और मैं चौंक पडा तो देखा कि बीच राहमें गाडी खडी है और मैं उस पर लदा हूं। इन आश्चर्यमयी बातोंको देख मेरी अजब दशा थी। कुछ कल काटा बिगड गया था इसीसे गाडी रुकीथी। मिस्तरी सब मरम्मतमें लगे थे। एक दिल्लगीकी बात सुनिये। जब गाडी रुकी तो दो तीन आदमियोंको यह देखनेका शौक हुआ कि मैं सोया हुआ कैसा मालूम होता हूं। वे लोग चुप चाप गाडी पर चढ आए और मेरे मुंहके सामने खडे होगये। इनमेंसे एक महाराजका चौकीदार भी था। वह अपने डण्डेका सिरा मेरी बाई नाकमें घुसेड कर भाग गया। मैं बडे जोरसे छींक कर जाग उठा। वह डण्डा नाकमें सींककी तरह जान पडा था। बस इसी सबबसे बीचहीमें मैं जाग पडा था। राजधानी पहुंचनेके तीन सप्ताह बाद यह भेद मुझे मालूम हुआथा। फिर गाडी चली। चलते चलते शाम होगई। रात भर रास्तेहीमें विश्राम किया। हिफाजतके लिये साथमें एक हजार सिपाही थे। पांचसौ हाथोंमें मशालें लिये और पांचसौ धनुष बाण चढाए दोनो तरफ डटे थे। सूरज उगने पर फिर कूचका डङ्का बजा। दोपहरको हम सब ऐसी जगह जा पहुंचे जहांसे नगर कोट (शहर पनाह) का फाटक दो सौ गज दूर था। बस यहीं गाडी खडी हुई। स्वयं महाराज परिवार सहित मुझे देखनेके लिये यहां आये थे। महाराजने तो मेरी देह पर चढके मुझे देखना चाहा परन्तु मन्त्रियोंने विपदकी आशङ्का कर महाराजको ऐसा करनेसे रोक दिया।

जहां गाडी रुकी थी वहां एक पुराना विशाल मन्दिर था।

उस देशमें इससे बडा मकान और नहीं है। कई वर्ष पहले इस मन्दिरमें एक नरहत्या होगई थी। इसी लिये नगरनिवासियोंने इसे अपवित्र समझ कर छोड दिया है। अब उनमें पूजा पाठ नहीं होता योंही खाली पडा रहता है। इस समय यह धर्मशालाका काम देता है। इसी मन्दिरमें मेरे टिकनेकी व्यवस्था हुई। उत्तर ओरका सदर दरवाजा चार फुट ऊंचा और प्रायः दो फुट चौडा था। इस दरवाजेसे मैं मजेमें रेंग कर भीतर जासकता था। दरवाजेके दोनों तरफ दो छोटी छोटी खिडकिया थीं जो धरतीसे छः इञ्चसे अधिक ऊंची न थी।

कारीगरोंने बाईं ओरवाली खिडकीके पास ८१ जञ्जीरें लगा रक्खी थी। इन जञ्जीरोंकी लम्बाई तथा मुटाई लेडियोंकी घडी की चेनके बराबर थीं। इन्हीं जञ्जीरोंको इकट्ठी कर मेरा बाया पैर बांधा गया और उनमें छत्तीस ताले जड दिये गये। बडी सडककी दूसरी तरफ मन्दिरसे बीस फुटके फासले पर एक गुम्बज था जिसकी ऊंचाई लग भग पांच फुटके होगी। महाराज पारिषद समेत उसी गुम्बज परसे मुझे देखने लगे। शहरके सिवा बाहरके लाखों आदमी तमाशा देखनेके लिये आये थे। एक हजार सिपाही हिफाजतके वास्ते मौजूद थे तिस पर भी सैकडों आदमी सीढी लगा कर मेरी देह पर चढते और कूदते थे। किसीकी कोई नहीं सुनता था। सब मेरे ऊपर गिरे पडते थे। लाचार हो महाराजको यह हुक्म जारी करना पडा कि जो कोई इस विराट पुरुष के पास जायगा उसे फांसी दी जायगी। जञ्जीरसे बांधनेके बाद और सब बन्धन काट दिये गये। यह जञ्जीर चार हाथ लम्बी थी। बस इसीसे मैं चार हाथ तक इधर उधर टहल सकता था। सिर्फ यही नहीं बल्कि टांग पसार कर मन्दिरके भीतर सो भी सकता था। क्योंकि दरवाजेसे चारही हाथ पर मैं था। मेरी तबीअत बहुत उदास थी। जी बहलानेके लिये जरा मैं खडा होगया।

और टहलने लगा। मेरा खडा होना और टहलना देख कर उन सबके आश्चर्य्यकी सीमा न थी।

चतुर्थ परिच्छेद।



खडा होकर मैं चारो ओर देखने लगा। अहा! क्या मनोहर दृश्य है! क्या रमणीय स्थान है! आखें तृप्त नही होतीं—जी चाहता है निहारताही रहूं। क्या अनोखी छटा है सारा देशही चमन सा खिला हुआ है। चौकोर खेतोकी बहार फलकी क्यारियोसे किसी तरह कम नहीं है। नाना प्रकारके वृक्षों की कुछ निरालीही शोभा है। सात फुटसे ऊचे वहां वृक्षही नही हैं। मेरी बाई तरफ राजधानी है—अहा कैसा सुन्दर नगर है। नगर क्या है—खासा थियेटरका परदा है। देखतेही मन मुग्ध हो जाता है।

शौचादिसे निबटनेके लिये तबीयत बेचैन थी। दो दिनसे निपटा नही। अब और रोक न सका। मन्दिरमें घुस गया और किवाड बन्द करके वहीं हलका हुआ। कहही चुका हू कि जंजीर चार हाथ लम्बी थी इसलिये भीतर जानेमें कुछ कष्ट नही हुआ। ऐसी मैली कार्रवाई बस मैने एकही दिनकी थी सो आशा है कि पाठकगण मेरी दशा विचार कर क्षमा करेंगे। फिर तो मै रोज तडके उठता और बाहरही निश्चिन्त होता। दो मेहतर उसी समय आकर साफ कर जाते थे। बस इस विषयको यहीं समाप्त करता हू। पाठक! बाबा भोर मत सिकोडिये तीव्र समालोचकों हीके लिये मैंने यह गीत गाया है।

शौचादिसे छुट्टी पाकर मै बाहर निकल आया। इधर महाराज भी गुम्बदसे उतर चुकेथे। घोडे पर चढके मेरी ओर आने लगे पर ईश्वरने बडी कुशलकी। यद्यपि घोडा सुशिक्षित था तथापि वह मेरे पर्व्वताकार शरीरको देख कर भडका और अपने पिछले पैरोसे खडा होगया। महाराज भी घोड़े पर चढना जानते

थे इसलिये गिरे नहीं अपनी जगह पर डटे रहे। इतनेमें भाईमी ने आकर घोडेकी बाग थामली। महाराज भी कुशलपूर्वक उतर पडे। फिर खडे होकर आश्चर्य्यकी दृष्टिसे मुझे देखने लगे लेकिन जहां तक जञ्जीरकी पहुंच थी महाराज उससे दूरही रहे। डरके मारे पास नही आए। महाराजने रसोईयोंसे भोजनादिकी सामग्री लानेके लिये कहा। वे लोग पहलेहीसे तय्यार थे हुक्म पातेही मद्य और मांससे लदे हुए छकडे मेरे सामने लेआए। तुरतही मैंने सबको खाहा कर डाला। बीस छकडे मांसके और दस शराबके थे। मास तो मैं दो तीन कोरहीमें चाट गया—बाकी रही शराब सो एकही घूंटमें साफ होगई। महारानी अपने छोटे छोटे राजकुमार और कुमारियोंको लिये कुर्सियों पर अलग बैठी थी। सङ्ग मे शहरके नामी नामी रईसोंकी स्त्रिया भी थी। घोडा भडकनेके बाद सब महाराजके निकट चली आई। महाराजका रङ्ग श्वेतून सा, चेहरा सुन्दर मगर रोबीला बदन चुस्त दुरुस्त और गठीला था। और लोगोंकी अपेक्षा महाराज कुछ लम्बे थे। नाक नोकीली और आंखें रसीली थीं। उमर उनतीस बरससे कुछही कम होगी। महाराजको राजसिंहासन पर बैठे अभी सातही वर्ष हुएहैं। इसी बीचमें आपने बहुत कुछ नाम और यश पैदा कर लिया है। महाराजको भली भाति देखनेके लिये मैं जमीनमें लेट गया—करवट लेनेसे मेरा मुंह श्रीमान्‌के मुंहके ठीक सामने होगया। वे मुझसे छः हाथके फासले पर थे। महाराजको कई बार हाथमे लेना पडा था। इस वास्ते आपका चित्र हृदयमें चित्रित है। महाराजकी पोशाक सादी और सुहावनी थी लेकिन मस्तक पर रत्न जडित स्वर्ण मुकुट और हाथमें तीन इञ्च लम्बी तलवार थी। म्यान और मूठ दोनों ही सोनेकी थीं। और उनमें हीरे जडे थे। जितने लोग वहांथे सब अर्कावर्क थे—एकसे एककी पोशाक बढ कर थी। उस समय वहांकी भूमि बनारसी कमखाब मालूम ती थी और महाराज अपने दलबल समेत उसके बेल बूटे।



नं० ५

एकाको हाथमें उठालिया और उसके सामने जोरसे मुँह बाया मानो उसे जीताही निगल जाउगा।

पृष्ठ १५

महाराज मुझसे बोलते और मैं महाराजसे किन्तु कोई किसीकी बात नही समझता था। महाराजके साथ वकील और पुरोहित भी थे जिन्हें मैंने उनके रङ्ग ढङ्गसे पहचान लिया था। महाराजने उन्हें भी मुझसे बात करनेके लिये आज्ञा दी। वह बिचारे बोले भी बहुत कुछ। मैंने भी कई देशकी भाषाओंमें जवाब दिया परन्तु फल कुछ हुआ नहीं। कोई किसीकी बोली समझ नहीं सकता था। दो घण्टेके अनन्तर महाराजने समाज समेत प्रस्थान किया। तमाशेके लिये अक्सर लोग मुझे छेडते और दिक करतेथे। महाराजकी आज्ञासे भीड भाड हटाने तथा हिफाजतके लिये कडा पहरा बैठा। वास्तवमें वहाके आदमी बडेही शैतान थे। एक दिन जब मैं द्वार पर बैठा था कई आदमी लगे मुझ पर तीर चलाने। एक तीर तो बांई आखके पाससे निकल गया। बडी कुशल हुई, नही तो आखही फूट जाती। सिपाहियोंने तीर चलानेवालोंमेंसे छ: को पकड लिया और उनकी कुछ सजा न कर उन्हे बांध कर मेरे हवाले कर दिया। मैंने पाचको जेबमें रख कर एकको हाथमें उठा लिया और उसके सामने जोरसे मुंह बाया मानो उसे जीताही निगल जाऊंगा। उस बिचारेके तो प्राण सूख ही गये लेकिन दर्शकोंका भी डरके मारे अजब हाल था। जब मैंने खल्तीसे छुरी निकाली तो सबके सब सन्नाटेमें आगये और वह बिचारा तो अपनी जानसे हाथ धोकर बडे जोरसे रो उठा। मैंने छुरीसे उसका बन्धन काट कर उसे जमीन पर रख दिया। वह जान लेकर भागा। शेष पाचके साथ भी मैंने यही वर्त्ताव किया। मेरे इस कार्य्यवाहीसे सब लोग बहुतही प्रसन्न हुए। महाराज तक यह खबर पहुंची। यहां मेरी बडी प्रशंसा हुई। इससे मुझे लाभ भी हुआ जिसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

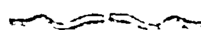
कः सौ बिछौने गाड़ी पर लद कर आपहुंचे। दर्जियोंने डेढ़सौ बिछौनेको एक साथ मिला कर सी डाला, इस तरहके चार बनाये गये। फिर इन चारोंको इकट्ठा करनेसे एक गद्दा तैयार हुआ। खैर, इस गद्देसे कुछ आराम मिला। चादर कम्बल, तकिये, मसहरी वगैरह भी इसी नापसे बनाई गई। इस प्रकारसे रातका कष्ट दूर हुआ।

मेरे यहां पहुंचनेकी खबर देश भरमें फैल गई। धनी, दरिद्र, छोटे बड़े, आलसी, शौकीन—सब प्रकारके लोग घर बार छोड़ कर मुझे देखनेके लिये चारों ओरसे आने लगे। आस पासके गांव सब खाली होगये। यदि महाराज नई नई कड़ी आज्ञायें जारी करके इस धेडियाधसानको न रोकते तो खेतीबारी तथा खेती बारीके काम बिलकुल बन्द होजाते। महाराजने यह नियम कर दिया कि जो लोग देख चुके हैं वे अपने अपने घर लौट जाय और बिना सरकारी हुक्मके मन्दिरके आस पास (एकसौ हाथ तक) फिर न आवे। अगर कोई आवेगा तो उसे प्राण दण्ड दिया जायगा। हुक्म लेनेमें रुपये लगते थे सो राज्यके सिकत्तर साहबको खूब रुपये मिलने लगे।

इस बीचमें महाराजके यहां कई सभायें बैठी। इन सब सभाओंका मुख्य उद्देश्य मैंही था। मेरे साथ अब कैसा व्यवहार करना चाहिये इत्यादि बातोंहीका विचार सभासद लोग आपसमें करते थे। वहांका एक भलामानस मुझे बहुत चाहता था। वह राज दरबारकी गुप्त बातें बहुधा मुझसे कह जाता था। न जाने वह कैसे इन सब गुप्त भेदोंका पता लगा लेता था। पीछे उसीसे मालूम हुआ कि सभावाले इस फिकरमें पड़े हैं कि अगर कहीं मैं जञ्जीर तोड़ कर निकल जाऊं तो बड़ा अनर्थ होगा। किसीको यही चिन्ता थी कि अगर मैं कुछ दिन वहां रह गया तो सारा देश दुर्भिक्षके चगुलमें जरूर फंस जायगा। मेरी खुराक जुटानेमें सर ...था। बहुत कुछ खर्च पड़ता है। थोड़ेही दिनोंमें खजाना खाली

होजायगा। इसलिये मुझ आफतको टालनेके लिये सभासदों ने नये नये ढङ्ग निकाले किसीने अन्न विना मारना बताया और किसीने विषैले तीरोंसे मेरा कामही तमाम करनेके लिये सलाहदी। परन्तु दूरदर्शी लोगोंने कहा नहीं, ऐसा करनेसे महा अनिष्ट होगा। जब इतनी बडी लाश सडेगी तो समूचा देश दुर्गन्धिसे मर जायगा—फिर महामारीको देशका सत्यानाश करनेमें कितनी देर लगेगी? जिस समय सभामें सब तर्क वितर्क होरहे थे दो सिपाहियोंने आकर महाराजसे मेरी बडी बडाईकी और उन छः आदमियोंकी कथा जिन्हें धमका कर मैंने छोड दिया था कही। महाराज तथा सभासदगण मेरी इस कार्यवाहीको सुन बहुतही खुश हुए। उसी समय सर्व सम्मतिसे निश्चय हुआ कि राजधानीके समीप नौ सौ गजके भीतर जितने ग्राम हैं वे सब 'नर पर्व्वत' (मेरे) के खाने पीनेकी सब चीजें नित्य सवेरे जुटाया करें और इन सब चीजोंका दाम खजानेसे मिला करेगा। 'नर पर्व्वत' के काम काजके लिये छः सौ नौकर चाकर रखे जांय। इन लोगों की तलब भी खजानेसे मिला करे तथा इनके रहनेके लिये मन्दिर के दरवाजेके निकटही घर बने। पोशाक तैयार करनेके वास्ते तीनसौ दर्जी तथा यहांकी भाषा सिखानेके लिये छः अच्छे पण्डित नियत हों। सरकारी घुडसवार तथा सिपाही सब अपनेको ढीठ बनानेके निमित्त सदा। "नर पर्व्वत" के निकट जाकर अपनी अपनी कसरत दिखाया करें।

पञ्चम परिच्छेद।



एक दिन महाराजने कहा "अगर मेरे कर्मचारी तुम्हारी तलाशी लें तो तुम्हें बुरा न मानना चाहिये। तुम्हारे जैसे विराट पुरुषके पास अगर कोई भयानक हथियार हो तो पलमें प्रलय हो सकती है। सो इस काममें किसी प्रकारका उजर मत करना और यह तुम्हारी सहायताके बिना हो भी नहीं सकता है। तुम्हारी दयालुताका बहुत कुछ नाम फैला है क्योंकि मैं अपने कर्मचारियों को जान तुम्हारे हाथ सौंपता हूं।" महाराजके मनका भाव समझ कर मैंने कहा "मुझे कुछ भी उजर नहीं है। आप अभी मेरी तलाशी ले लीजिये मैं तैयार हूं।" महाराज बोले "मैं नहीं ले सकता। इस राज्यके नियमानुसार मेरे दो कर्मचारी ही तलाशी लेंगे। जो जो वस्तु तुम्हारे पास मिलेगी वह सब जब तुम यहांसे जाओगे तब लौटा दी जायगी। अगर दाम चाहोगे तो उन सब चीजोंका उचित दाम तुम्हें मिलेगा।" आखिर दो राजकर्मचारी मेरे पास आए। मैं उन दोनोंको हाथमें लेकर क्रमसे जेबोंमें उतारता गया। उन दोनोंने भली भांति अन्वेषण किया। जब काम होगया तब उनको जमीन पर रख दिया। जितनी चीजें मिली थी सबकी सूची बना कर महाराजको रिपोर्ट सुनाई गई। उस रिपोर्टका अविकल अनुवाद यह है—

"हम लोगोंने 'नर पर्व्वत' के कपड़ोंका पूर्ण रूपसे अन्वेषण किया। दाहनी ओरकी पाकेटमें मोटे कपड़ेका एक टुकड़ा मिला जो आसानके दरबार हालकी जाजमके बराबर है। बाईं ओरकी पाकेटमें चान्दीका एक सन्दूक था। जिसका ढकना भी चान्दीही का है। यह बहुत भारी है। इसे हम उठा न सके। इसे खोल कर देखनेकी इच्छा हुई। जब खुला तो देखा इसमें कुछ गर्दसी भरी हुई है जिसके उड़तेही हम लोग छींकते छींकते बेदम हो गए। हममेंसे एक उस सन्दूकमें घुसा। वह घुटने तक उस गर्द

में डूब गया। वेष्टकोट की दाहिनी तरफवाले खलीतेमें उजली मगर पतली चीजका एक बड़ासा पुलन्दा देखा जो मजबूत रस्सीसे बंधा हुआ था। उसमें क्याहै सो मालूम नहीं। यह पुलन्दा तीन पुर्सा लम्बा है। इस पर हमारी हथेलीके समान काले काले दाग थे जो सम्भवतः अक्षर होंगे। बायें खलीतेमें एक प्रकार का एक यन्त्र पाया जिसके एक तरफ बीस बड़ी बड़ी खूटियां गड़ीं है। जान पड़ता है 'नर पर्व्वत' इस यन्त्रसे अपना सिर झाड़ता है। वह हमारी बोली जल्दी नहीं समझ सकता था इसलिये हम बहुत सी बातें पूछ न सके। पटलूनकी दक्षिण ओरवाली पाकेटमें लोहे की एक पोली लाट देखी जो एक पुर्सा लम्बी है। यह लकड़ीके एक बड़े कुन्देमें जड़ीहै। लाटके एक तरफ लोहेकी अनूठी मूर्तियां बनी हुई हैं। यह क्या है सो हम लोग नहीं जान सके। दूसरी जेबमें भी ऐसीही एक चीज है। दाहिनी ओरवाली छोटी पाकेट में बहुतसे गोल मगर चपटे, छोटे, बड़े, उजले और लाल धातुके टुकड़े थे। जो उजले थे सो चान्दीके मालूम पड़े लेकिन वे इतने भारी थे कि हम दोनों मिल कर भी उन्हें उठा न सके। बाईं जेबसे दो काले काले अनगढ खम्भे थे। जब जेबके भीतर खड़े थे तो बड़ी कठिनाईसे उनके सिरे तक पहुंच सकेथे। एक तो खोलमें बन्द है और दूसरेके ऊपरवाले छोर पर कुछ गोलसी उजली चीज मालूम पड़ी जो हमारे सिरसे दूनी है। इन दोनोंके भीतर इस्पात के बड़े बड़े मोटे पत्तर बन्द हैं। हमारे कहनेसे 'नर पर्व्वत' ने खोल कर उन दोनों चीजोंको दिखलाया और कहा कि एक तो बाल बनानेकी कल है और दूसरी मांस काटनेकी। दो खलीते और थे जिनमें हम लोग नहीं गये। बाहरहीसे देखा पतलूनके ऊपरी भागमें दाईं ओरके खीसेसे चान्दीकी एक जञ्जीर लटकती है। हमारे कहनेसे उसने जञ्जीरको बाहर निकाला। देखतेही हम लोग भौचक्के रह गये। देखा जञ्जीरके निचले सिरेसे एक गोल पदार्थ बंधा हुआ है। जिसके एक तरफ चान्दी है और दूसरी

तरफ है स्वच्छ पार दर्शक पदार्थ। जिधर स्वच्छ है उधरही अनूठे अनूठे अक्षर लिखे है। उन अक्षरोंको छूना चाहा पर छू न सके, स्वच्छ पदार्थसे उगली टकरा कर रह गई। नर पर्व्वतने उस अद्भुत पदार्थको हमारे कानोंसे लगाया तो हमारे अचरजका ठिकाना न रहा। उसमेंसे टक् टक् शब्द निकलता है। जैसे फुहारेसे जल बराबर गिरा करता है वैसेही उसमेंसे भी आवाज निकला करती है। हम लोग अनुमान करते है कि यह एक विचित्र जीव है अथवा नर पर्व्वतका इष्ट देवता। यह पिछली बातही मुझे सत्य प्रतीत होती है क्योंकि नर पर्व्वत इस यन्त्रकी आज्ञा बिना कोई कामही नहीं करता है। यह पदार्थ उसे दिन रातकी सूचना देता है। बायें खीसेसे एक जाल निकला। मछली पकडनेके जाल जैसे होते है यह भी वैसाही है। लेकिन यह बटुएकी तरह खुलता और बन्द होता है। इसमें सोनेके बडे बडे बहुतसे सिक्के है। यदि वास्तवमें यह सोना है तो इसका मूल्य अपरिमित होगा।

महाराजको आज्ञानुसार हमने नरपर्व्वतके खीसोंका भली भांति अनुसन्धान किया। जिन चीजोंका वर्णन ऊपर कर चुके हैं। उनके अतिरिक्त एक वस्तु और देखी। उसकी कमरसे चमडेकी एक पेटी लपटी हुई है जिससे एक लम्बी तलवार बाई ओर लटकती है। यह तलवार पचीस इञ्च लम्बी है। दाहिनी ओर दो खण्डका एक बेग है। इसके एक एक खण्डमें महाराजके तीन तीन आदमी मजेमें अट सकते हैं। एक खण्डमें भारी भारी बहुतसी गोलियां है और दूसरेमें एक तरहका काला अन्न। लेकिन यह भारी नहींहै। पचास दानोंको एक बारही मुट्ठीमें उठा लियाथा।

नर पर्व्वतके पास जो कुछ चीजें मिली या देखी उनकी यह पूरी सूची हैं। नर पर्व्वतने हमारे साथ अच्छा वर्ताव किया और महाराजके प्रति विशेष राजभक्ति दिखलाई है। महाराजके शुभ शासन समयके नवासिवें चन्द्रके चौथे दिन यह रिपोर्ट लिखी गई।

क्रेफलिन फ्रेलक
मार्सी फ्रेलक।"

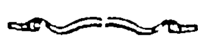
रिपोर्ट सुन कर महाराजने मुख्य चीजें दाखिल करनेके लिये मुझसे अनुरोध किया। जिन जिन पदार्थोंको देख कर वे चमत्कृत हुए थे पहले मैं उन्हीका वर्णन करता हूं। दरबार हालको जाजमसे जिसकी समताकी गई थी वह था मेरा रुमाल। मेरी पिस्तौलहीकी बराबरी लोहेकी पोली लाटसे कीगई थी। सुंघनी की डिबियाहीने सन्दूककी इज्जत पाईथी। बिचारी घडी तो साक्षात् देवताही बन बैठी थी।

महाराजने पहले तलवार दिखलानेके लिये कहा। मैंने स्यान समेत तलवार निकाली। महाराजकी आज्ञासे उसी समय चुनी हुई तीन हजार फौज धनुष बाण चढाये मेरे चारों तरफ मगर कुछ दूर हट गई। मेरी दृष्टि तो महाराजकी ओर लगी थी इस लिये इस सुविशाल सैन्यदलको न देख सका। इसकी खबर मुझे पीछे मिली, अस्तु। फिर महाराजने स्यानसे तलवार निकालनेके लिये कहा। मैंने वही किया। यद्यपि समुद्रके जलमें भीगने के कारण कहीं कहीं उस पर मोरचा लग गया था तथापि ज्यादे हिस्सा उसका साफ था। मैं हाथमें लेकर उसे इधर उधर घुमाने लगा। सूर्य्यकी किरण पडतेही वह बिजलीसी चमक गई। सब दर्शकोंकी आंखे बन्द होगई, डरके मारे होश उड गये। महाराजने स्यानमें रख कर जमीन पर धीरेसे धर देनेके लिये आज्ञा दी। मैंने वही किया। फिर पिस्तौलकी बारी आई। बारूद चमडेके तोशदानमें थी इस वास्ते वह भीगनेसे बच गई थी। मैंने पिस्तौलमें केवल बारूद भर कर एक आवाजकी। जिससे सैकडों बेहोश होगये। महाराज भी जरा चौंक उठे थे। फिर दोनों पिस्तौल और तोशदान तलवारके साथही रखदिये। महाराजसे यह भी निवेदन कर दिया कि यह बारूद बहुत जोखिमकी चीज है। इसे आगसे बहुत बचाना चाहिये नहीं तो सारा महल एक छनमें उड जायगा। महाराज घडी देखनेके वास्ते बहुत बेचैन थे। आखिर मैंने घडी निकाली। दो आदमी उसे उठा कर महाराज

दीपास लेगये। घडी देखते ही उनके आश्चर्य्यका वारापार न था। काटेकी चाल तथा लगातार टक् टक् शब्दने तो उन्हें आश्चर्य्यके समुद्रमें डुवा दिया। घडीके विषयमें पण्डितोंसे पूछा गया तो किसीने जानवर, किसीने देवता और किसीने क्या बताया सो मेरी समझमें न आया। इसके उपरान्त मैंने रुपये, पैसे, अशर्फियां, वटुआ, छुरी, छुरा, कंघी, सुंघनीकीडिबिया, रुमाल और रोज-नामचा महाराजके सामने रख दिया। तलवार, पिस्तौल और तोशदान महाराजने गाडी पर लदवा कर खजानेमें भेज दिये। बाकी चीजें मुझे वापस मिली।

एक गुप्त पाकिट और थी जिसको तल शी जान बूझ कर मैंने होने न दी। इस पाकिटमें एक जोडा चश्मा, जेबी दूरबीन तथा और भी बहुतसी कामकी चीजें थी। शायद लोग तोड फोड दें बस इसी ख्यालसे मैंने इन सब चीजोंको गुप्तही रक्खा।

षष्ट परिच्छेद।



मेरी नम्रता और सज्जनताके कारण महाराज मुझसे बहुतही प्रसन्न रहते थे। राज दरवारके जितने लोग थे सभी मुझसे सन्तुष्ट थे। प्रजागणका तो मैं खिलौनाही बन गया था। इन सब कारणोंसे मुझे अपने छुटकारेकी बहुत कुछ आशा होने लगी। मैं भी सबको खुश रखनेकी कोशिश करता था। धीरे धीरे क्रमश मेरा भय भागने लगा। सब ढीठ होचले। पांच पांच छ' छः आदमी टोली बांध कर आते और मेरी देह पर उछलते कूदते और नाचते। यहां तक सब निडर होगये कि छोटे छोटे लडके और लडकियां मेरे बालोंमें लुका चोरी खेलने लगे। मैं चुपचाप पडा पडा देखता था। अब मैं इनकी भाषा भी अच्छी तरह बो-लने और समझने लगा था। एक दिन महाराजने अपने यहांके खेल तमाशे दिखलाये। वस्तुत' ऐसी कुशलता—ऐसी निपुणता— ...ता मैंने कहीं नहीं देखी! ऐसे तो सभी तमाशे अच्छे

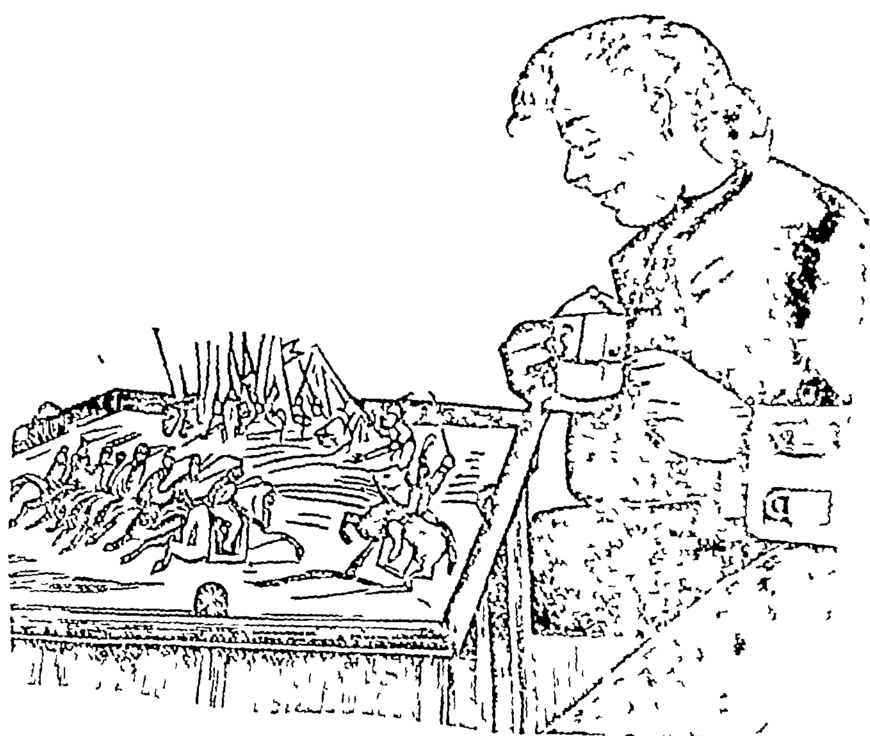
थे लेकिन "रज्जू-नृत्य" यानी डोरी परका नाच मुझे बहुतही भाया। एक फुट ऊंचे दो खम्भे (नहीं खूंटी) जमीनमें गाड़ कर उनमें दो फुट लम्बा उजला धागा बांध दिया जाता है। बस इसी धागे परके नाचका नाम है "रज्जू-नृत्य"। इस नाचका पूरा विवरण मैं सुनाता हूं आशा है पाठकगण ध्यानसे सुनेंगे।

जो भारी भारी कामोंके अभिलाषी हैं अथवा जो महाराजके कृपा पात्र बना चाहते हैं वही यह नाच नाचते हैं। उच्च पद पानेके लिये बस इसी रज्जू-नृत्यमें पटु होना चाहिये—विद्या या कुलीनताकी कुछ आवश्यकता नहीं है। यह नाच बालेपनहीसे सिखाया जाता है। किसी उच्च पदस्थ राजकर्मचारीके मरने वा पदच्युत होने पर पांच छः उम्मेदवार अपना अपना नाच दरबारको दिखाते हैं। जो बढ़िया नाचता या जो बिना गिरे पड़े खूब कूदता है वही उस पदको पाता है। राज्यके प्रधान प्रधान मन्त्री भी अकसर इसी प्रकार नृत्य कर महाराजको जता देते हैं कि अभी तक वह अपनी निपुणताको नहीं भूले हैं। खजानचीको सब अफसरोंसे कमसे कम एक इञ्च अधिक कूदना पड़ता है। मैंने अपनी आंखोंसे उसको डोरी पर तलवार रख कर कला-बाजी करते देखा है। इस नाचमें खजानचीके बाद महाराजके प्राइवेट सिक्रेटरी मेरे परममित्र रेलड्रेसलहीका नम्बर था। और बाकी सब समान थे।

गद्दी बिछी हुई थी इसीसे वचभी गये नही तो उसी चण उनका काम तमास होजाता।

एक खेल और है जो महाराज, महारानी और प्रधान मन्त्री के सिवाय दूसरा कोई नही देख सकता—सोभी बराबर नहीं कभी कभी किसी खास मौके पर होता है। महाराज छ. ड. इञ्चके तीन पतले रेशमी डोरे मेज पर रख देते है जिनमें एकतो नीला, दूसरा लाल, और तीसरा हरा होता है। जो बाजी मार लेता है उसी को महाराज सन्तुष्ट होकर ये डोरे इनामके बतौर देते हैं। राज-महलके बडे कमरेमे यह तमाशा होता है। खेलनेवालोंको अपना अपना कौशल दिखलाना पडता है। रज्जु-नृत्यसे इसका ढङ्ग निरालाही है। ऐसा कौशल्य तो पृथ्वी पर मैने कहीं नही देखा। महाराज छडीको सामने तान कर खडे होते है और खेलनेवाले सब एक एक करके उस छडीको उछल कर लाघ जाते है। कभी उसके नीचेसे निकल जाते और कभी इधर आते कभी उधर जाते है। महाराज भी छडीको कभी ऊपर उठाते और कभी नीचे गिरातेहै। बस इसी छडीके इशारे पर खेल होता है। कभी कभी छडीका एक सिरा महाराजके हाथसे और कभी दोनो ही मन्त्रीके हाथमें रहते है। जो इस उछल कूदसे अव्वल होता उसे नीला, दूसरा होता उसे लाल और तीसरा होता उसे हरा डोरा मिलता है। ये डोरे करधनीकी तरह कमरमें पहने जाते है। ऐसे वहा बहुत कम लोग है जिनकी कमरमे ऐसी एक भी करधनी न हो।

फौजी तथा महाराजके अस्तबलके घोडे रोज मेरे पास लाये जाते थे। आते आते वे सब ढीठ होगये। अब मुझे देख कर वे नहीं भडकते थे। अब वे मजेमे पैरके पास चले आते थे। मैं अपना हाथ धरती पर रख देता तो सवार लोग बडी फुर्तीसे घोडे समेत उसे फाद जाते। एक दफे एक शिकारी बडी चालाकीसे मेरे पैर को घोडे समेत फाद गया था। लेकिन ताज्जुव तो यह है कि उस समय मेरे पैरोमें जूते भी थे। एक दिन मैने एक अनूठे खेलसे



रूमाल पर हान्दिस युद्ध।

महाराजको खूब ही प्रसन्न किया था। मैंने बहुतसे खूटे मंगवाये। दो दो फुट लम्बे नौ खूटे जमीनमें गाड दिये। चौकोर जमीनके चारो ओर ये खूटे गाडे गये थे। इसका क्षेत्र फल था अढाई वर्ग फुट। फिर खूटोंके ऊपर चारो तरफ चार डण्डे मजबूतीसे बांध दिये गये। उन्ही खूटोंसे अपने रूमालको खूब कसकर बाध दिया फिर चारों ओर खींचनेसे रूमाल बिलकुल तन गया तनकभी सिकुडन न रही। जान लेना चाहिये कि वह रूमाल ऊपरवाले चारों डण्डोंसे पांच इञ्च नीचेकी ओर बांधा था तब इन्होंसे डण्डे मुंडेरेका काम देते थे। जब सब ठीक ठाक होगया तब मैंने महाराजसे आज्ञा लेकर चौबीस चुने हुए सवारोंको उनके अफसर सहित इस रूमाल पर डाल कर कवायद करनेके लिये वाह दिया। यह सब अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित थे। उस रूमाल पर दो हिस्से होकर वह सब अभ्यास युद्ध करने लगे। खूब घमसानकी लड़ाई हुई। महाराज इस खेलसे बहुत ही प्रसन्न हुए। कई रोज तक तमाशा हुआ था। ईश्वरकी कृपासे इस खेलमें कोई दुर्घटना नहीं हुई। केवल एक दिन एक सरदारके घोडेकी टापसे रूमालमें छेद होगया था परन्तु कुछ हानि नहीं हुई।

ला सकते हैं।" मैंने उसके मगवानेके लिये महाराजसे अनुरोध किया। उन्होंने भी आज्ञा देदी। आखिर वह अनूठी चीज आ पहुंची, सहजमें नहीं – पांच घोड़े उसे खिंचकर लाये थे। देखा तो मालूम हुआ कि मेरी टोपी है। समुद्रमें तैरनेके समय मैंने इसे डोरीसे बांध लिया था पर फिर यह कहां गिर पड़ी सो मालूम नहीं। टोपी आई सही लेकिन बिलकुल छिन्न भिन्न थी। क्योंकि एक तो घसीट कर लाई गई दूसरे छेद करके उससे डोरी बांधी गई थी।

इस घटनाके दो दिन बाद महाराजने एक और विचित्र तमाशा देखा। महाराज मुझसे बोले "तुमसे जहां तक होसके पांव फैला कर सीधे खड़े होजाव। मेरी कुछ फौज जो यहांहै कायदे के साथ तुम्हारे दोनों पैरोंके बीचसे निकल जायगी।" मैं पांव फैलाकर खड़ा हुआ। घुड़ सवार सोलह २ और पैदल चौबीस चौबीसकी पांती बांध कर ध्वजा पताका उड़ाते डङ्का पीटते मेरे पैरोंके बीचसे निकल गये। कुल पलटन चार हजार थी। महाराजका हुक्म था कि जानेके समय कोई ऊपर न देखे परन्तु दो एक मन चले और रसिक सिपाहियोंने इस हुक्मको ताक पर रखदिया था। पुराना होनेके कारण मेरा पतलून कुछ फट गया था। सो ज्योंहीं ये लोग पैरोंके बीचोंबीच पहुचे त्योंही ऊपर देख कर अचम्भेके साथ हंस पड़े।

एक बहुत जरूरी बात कहनेको भूलही गया था। वह यह कि जिस देशकी कथा मैं कह रहा हूं अथवा यों कहिये कि जहां मैं आ फंसा हूं उसका नाम "लिलीपट" है और वहांके निवासी मुझे "नर पर्व्वत" कहते हैं।

मैंने अपनी स्वाधीनताके लिये महाराजकी सेवामें इतने प्रार्थना पत्र भेजे कि उनका भी चित्त पिघल उठा। आखिर एक सभा करके सबकी राय लीगई। सबने मेरेही पक्षमें रायदी। केवल पादड़ी जिसका नाम "स्कायरेशबलगुलाम" था अकारणही

मेरा शत्रु, परम शत्रु, वज्र शत्रु बन बैठा। यह वल गुलाम समुद्री सेनापतिके सिवा राजमन्त्री भी था। महाराज इसे बहुत चाहते थे। इसीसे यह उनका विश्वास भाजन भी था। यह अपने कामों में बड़ा पक्का लेकिन चेहरा रूखा था। बस इसी दुष्ट वल गुलाम ने न जाने क्यों मेरे विरुद्ध राय देदी परन्तु कुछ हुआ नहीं क्योंकि इसे छोड़ कर सभी सभासद मेरे पक्षमें थे। अतएव महाराजने भी मेरे अनुकूलही सम्मति प्रगटकी। लाचार हो वलगुलामको भी सबकी रायमें राय मिलानी पड़ी परन्तु सभाके सन्तव्योंको स्वय लिखनेके लिये उसने बड़ा हठ किया। आखिर यह भार उसीके सिर सौंपा गया। वलगुलामने भी आज्ञा पत्र लिखकर तैयार किया। कई माननीय पुरुषोंके सङ्ग वह स्वय आज्ञापत्र लेकर मेरे पास आया। मैंने ध्यानसे आज्ञापत्रको सुना और उसकी शर्तों को मञ्जूर किया। फिर वलगुलामके आज्ञानुसार पहले तो अपने देशकी प्रणालीसे पुन उनकी देशप्रणालीसे मुझे शपथ करनी पड़ी कि मैं इन नियमोंको अवश्य पालूंगा। जरा इन लोगोंके कसम खानेकी रीति सुनिये। बायें हाथसे दायां पैर थाम कर दाहिने हाथकी बिचली उङ्गलीसे ब्रह्माण्ड और अंगूठेसे दाहिने कान का ऊपरी भाग कसम खानेके समय छूना पड़ता है। मुझे भी यह सब कसरत करनी पड़ी थी। पाठकोंके अवलोकनार्थ मैं उस आज्ञापत्रका अनुवाद दिये देता हूं।

लिलीपटके महाप्राक्रान्तशाली महाराज गलबटो ममारेन एभ-लेमगर्डिलोमिफिन मुली उली गुइने जिनके साम्राज्यकी परिधि प्राय बारह मील और विस्तृति भूमण्डलकी सीमा पर्य्यन्त है—जिनके युगल चरण पृथ्वीके केन्द्रको पवित्र करते हैं—जिनका मस्तक सूर्य्यमण्डलको स्पर्श करता है—जिनके सिर हिलातेही समारके समस्त राजा कांप जाते हैं—जो दुष्टोंका दमन और शिष्टोंका सत्कार करते—जो सब महाराजोंके महाराज जो मनुष्य कोटिमें सब से बड़े हैं—जो वसन्त ऋतुसे मनोहर, ग्रीष्मसे सुखदायी,

एकनायी और भीरपालने मनवाये। कि —नर पर्व्वतको जो हमारी स्वर्गीय भूमिमें बाहरसे आपड़ा है, शपथ लेकर निम्नलिखित नियमावलीका पालन करनेके लिये बाध्य किया है।

(१) 'नर पर्व्वत' को हमारी आज्ञाके बिना कदापि इस राज्यके बाहर कहीं नहीं जाना चाहिये।

(२) 'नर पर्व्वत' को हमारी प्रकाश्य अनुमतिके बिना कदापि राजधानीके भीतर आनेका साहस न करना चाहिये। यदि इसके आनेकी आवश्यकता समझी जायगी तो दो घण्टे पहले नगर निवासियोंको सूचना देदी जायगी कि आज नर पर्व्वत शहरमें आता है कोई आदमी घरसे बाहर न निकले।

(३) यह नर पर्व्वत केवल बड़ी बड़ी सड़कोंही पर घूम सकता है। मैदानमें जहां मवेशी चरते हैं या खेतोंमें, यह न टहल सकता न सो सकता है।

(४) नर पर्व्वतको बड़ी बड़ी सड़कों पर भी खूब सचेत होकर चलना चाहिये जिसमें हमारी प्यारी प्रजा या उनके घोड़े, गाड़िया-आदि पैरके नीचे न कुचल जाये। इनके अतिरिक्त हमारी प्रजाओंमेंसे किसीको भी उसकी मर्जीके बिना हाथमें उठाना न चाहिये।

(५) अगर कहीं कोई जरूरी खबर लेकर भेजनेकी दरकार हो तो नर पर्व्वत दूत और उसके घोड़ाको जेबमें रखकर एक चन्द्रमें एक बार छः दिनका सफर तय करेगा। और जरूरत हुई तो कुशल पूर्व्वक दूतको घोड़े समेत वापस भी लावेगा।

(६) हमारे शत्रु ब्लेफास्कूके राजासे युद्ध उपस्थित होने पर नर पर्व्वतको हमारी सहायता करनी पड़ेगी। शत्रु लोग हम पर आक्रमण करनेके लिये जङ्गी जहाज तैयार कर रहे हैं। अतएव नर पर्व्वतको उचित है कि उनको नष्ट भ्रष्ट करनेकी यथा साध्य चेष्टा करे।

(७) नर पर्व्वतको छुट्टीके समय भारी भारी पत्थर रखने तथा

गाड़ी इमारतोंकी दीवारों पर चढ़ा कर कुलियोंकी मदद करनी चाहिये।

(८) नर पर्वत दो चन्द्रमें हमारे राज्यकी परिधि अपने डगोंसे नाप कर ठीक करदे।

(६) नर पर्वत ऊपर कहे हुए नियमोंको पालन करनेके लिये यदि धर्मकी सौगन्द खायगा तो उसे खाने पीनेके लिये रोज १७२४ आदमियोंकी खुराक मिला करेगी, वह जब चाहेगा महाराजसे बिना रोक टोक मिल सकेगा और हम लोगभी सब तरहसे उसको अपना कृपा पात्र समझा करेंगे। हमारे राजत्वकालके ९१ वें चन्द्र के बारहवें दिन यह आज्ञापत्र 'बेल्फाबोराक' प्रासादमें लिखा गया।'

एव हिसाबियोंने हिसाब लगाया कि कमसे कम १७२४ * आदमी तो जरूरही मेरे बराबर होंगे। बस इसी लिये इतने आदमियोंकी खुराक मेरेवास्ते काफी समझी गई। पाठकगण! इतनेहीमें आप लोग वहांके निवासियोंकी विद्वता तथा महाराजकी बहुदर्शिता और सावधानता समझ सकते हैं।

स्वाधीनता पानेके बादही मुझे राजधानी देखनेकी लालसा हुई।

सप्तम परिच्छेद।

अब मैं स्वाधीन हूं। स्वाधीनता पानेके बादही मुझे राजधानी देखनेकी लालसा हुई। प्रार्थना करने पर महाराजने अनुमति भी दे दी पर चेता दिया कि खबरदार! पुरजनोंको अथवा उनके मकानोंको किसी प्रकारकी हानि न पहुंचाना। मेरे नगर भ्रमण का विज्ञापन सारे शहरमें ढिंढोरा पीट कर दिया गया। सबको घरसे बाहर निकलनेकी मनाही हुई। सब प्रबन्ध ठीक होजाने पर मैं नगर देखनेके लिये निकला। नगरकोटकी दीवार अढाई फुट ऊंची और करीब ग्यारह इञ्च चौडी है इस पर एक घोडा गाडी मजेसें चल सकती है दस दस फुट पर एक एक गुम्बज है। पश्चिम दरवाजेसे मैंने नगरमें प्रवेश किया। मैं सिर्फ फतूही पहने था। कोटके दामनके झटकेसे शायद छतों और छज्जोंको हानि पहुंचे इसी खयालसे मैंने कोट फोट कुछ नहीं पहना। यद्यपि महाराजकी कडी आज्ञाके कारण सब नगर निवासी अपने अपने घरोंमें घुसे थे तथापि मैं बडी सावधानीसे फूक फूक कर पाव रखता। छतों पर और छज्जों पर ठसा ठस भीड थी। मैं बहुत देश देशान्तरोंमें घूम चुका हूं पर ऐसी आबादी कहीं नहीं देखी। शहरकी बनावट चौकोर है। नगर कोटकी चारों दीवारें पाच पाचसौ फुट लम्बीहैं पाच पाच फुट चौडी दो बडी बडी सडकेंहै जो

---

* ठोस पदार्थका घेवफल निकालनेके लिये घन किया जाता है जैसे १२×१२×१२=१७२८।

सारे शहरको चार हिस्सोंमें बांटे हुए है। छोटी छोटी गलियोंमें मैं नहीं गया—बाहरहीसे देखा। उनकी चौड़ाई डेढ़ फुटसे ज्यादे न थी। पांच लाख आदमी इस शहरमें रह सकते है, मकान भी तीन मञ्जिलसे लेकर पांच मञ्जिले तक देखनेमें आये। बाजार बहुत सुन्दर और दुकाने खूब सजी थी।

राजधानीका नाम 'मिलडेण्डो' है। नगरके ठीक बीचमें महाराजका राजमहल है। यहीं पर दोनो सड़के आपसमें मिली है। राजमन्दिरसे बीस फुटकी दूरी पर चारों तरफ दो फुट ऊंची दीवार है इस दीवार पर चढ़नेकी मुझे आज्ञा थी। मै इस पर चढ़ गया। दीवारसे राजमन्दिर इतने फासले पर था कि मैं सब तरफकी चीजे देख सकता था। बाहरी चौक ४० फुटका था। दो चौक और थे फिर भीतर राजभवन था। इसको देखनेकी मुझे बहुत लालसा हुई पर देख न सका क्योंकि सदर फाटककी ऊंचाई डेढ़ फुट और चौड़ाई सातही इञ्च थी। बाहरका कोई मकान पाच फुटसे ज्यादे ऊंचा न था। अगरचे दीवारें पत्थरकी चार इञ्च चौड़ी थी तो भी उन पर कूद कर चढ़ जाना असम्भवही था क्योंकि ऐसा करनेसे वह जरूर टूट फूट जाती। महाराजकी भी आन्तरिक इच्छा थी कि मै राजमन्दिरकी शोभा देखता पर लाचारी थी। मै अपने डेरे पर लौट आया और उपाय सोचने लगा। सोचते सोचते उपाय निकल आया। सवेरा होतेही मै सरकारी जङ्गलमें जो हजार गज दूर था गया। यहां मैने चुन चुन कर बड़े बड़े पेड़ोंको छुरीसे काट गिराया। फिर उन्ही लकड़ियोंसे तीन तीन फुट ऊंचे दो मजबूत टूल बनाये। तीसरे दिन पुन: शहरमें टिंढोरा पीटा गया। मै दोनो टूलोंको हाथमें लटकाए पुन: राजमन्दिरकी ओर चला। जब पहले चौकके फाटकके पास पहुंचा तो एक टूल पर तो मैं खड़ा होगया और दूसरेको हल्के उपरसे उठाकर पहले और दूसरे चौककी बीचवाली जमीन पर जिसकी चौड़ाई आठ फुटकी आरिस्तेसे रख दिया। फिर इतनी लाघ कर दूसरे टूल पर

जारहा और पहलेको न कहींसे उठा कर आगे रख दिया। बस इसी प्रकारसे मैं अन्त पुरमें जा पहुंचा। खींचवाने खजानेकी खिड़कियोंके साम्हने सुरङ्ग खतम करके मैं लेट गया। खिड़कियां पहलेहीसे खुली थीं। अहा, भीतर कैसी अनिर्वचनीय सजावट थी। महारानी और महाराज कुमार अपने अपने कमरेमें सहेली और सहेलों के साथ विराजमान थे। महारानी दया कटाक्षसे मुझे हेर कर जरा मुस्कुरा उठी और फिर चूमनेके लिये अपना हाथ बाहर कर दिया। मैंने उसे चूमा। बस इस तरह सारा राज्य देख भाल कर मैं अपने डेरे पर वापस आया।

स्वाधीनता पानेके पन्द्रह दिन बाद एक रोज सवेरे महाराजका सिकत्तर 'रेलड्रेसल' मेरे पास आया। साथमें केवल एकही आदमी था। गाड़ी कुछ दूर अलग खड़ी हुई। उसने मेरे साथ कुछ बात चीत करनी चाही। एक तो वह भला मानस दूसरे मेरा परमहितैषी—गिरफ्तारीमें इसने मेरा बहुत कुछ उपकार किया था—इसलिये मैंने उसकी बात मानली। मैं लेट गया जिसमें वह आसानीसे मेरे कानों तक पहुंचे परन्तु उसने कहा "नहीं, मुझे आप हाथहीमें उठालें और कानके पास लेजाय।" मैंने वही किया। पहले तो उसने मेरे छुटकारे पर आनन्द मनाया फिर कहा "अब हम लोगोंका भी काम जल्द पूरा होना चाहिये। हमारे राज्य की आज काल जैसी दशा है अगर वैसी न होती तो आपका इतनी जल्दी छूटना असम्भवही था। बाहरवाले चाहे हम लोगोंको अच्छी दशामें समझें परन्तु वास्तवमें आज काल हम लोगोंकी दशा बहुत ही खराब है। दो बड़ी आफतोंके मारे हम लोगोंका नाकोंदम है। एक तो आपसका विरोध और दूसरे बाहरके एक प्रबल शत्रुके आक्रमणकी आशङ्का—बस इन्हीं दो बातोंसे आजकल हम लोग हैरान हैं—रात दिन नहीं है मारे चिन्ताके चित्त चञ्चल है। आपसके विरोधका कारण सुनिये। सत्तरचन्द्रसे भी ज्यादे हुए होंगे दो विरोधी दल खड़े हुए हैं। एकका नाम है 'ट्रामिक्सन'

अण्डेको उधरहीसे फोडते है जिधर उसका सिरा कुछ बडा होताहै। परन्तु वर्त्तमान महाराजके दादाने लडकपनमें अण्डा तोड नेके समय अपनी उगली धोखेसे काट डाली थी। इस पर उनके पिताने यानी हमारे महाराजके परदादाने हुक्म जारी किया कि सब कोई अण्डेको छोटे सिरेकी तरफसे फोडें। जो ऐसा नहीं करेगा उसको वडी कडी सजा होगी। वस इस आज्ञाके प्रचार होतेही तमाम राज्यमे विद्रोह फैल गया। प्रजा सब लडनेके लिये तैयार होगई। इतिहासोसे जाना गया है कि छः वार अरा-जकता फैली—राजा प्रजामे घनघोर युद्ध हुआ। एक राजा खेत रहे और दूसरे गद्दीसे उतारे गये। ब्लेफस्कूके महाराजों विद्रोह-शान्त होने पर जिन जिनको देशसे निकालनेकी सजा हुई उन्हें अपनी शरणमे लेगये। अण्डा छोटे सिरेकी तरफ नही फोडने के कारण करीब ग्यारह हजार आदमी समय समय पर शूली पर चढाये गये। इन्ही सब विषयोको लेकर सैकडो वडी वडी पोथियां वनी और छपीं। लेकिन विपक्षियोकी वनाई पुस्तकें बाजारोमें बिकने नही पाती। उनके छपनेकी भी सख्त मनाही है। विपक्षियोको नियमके अनुसार अब राज्यमे कोई नौकरी भी नही मिलती है। ब्लेफस्कूके महाराजने धर्मकी दुहाई देकर हमारे महाराजको पुरानी रीति उठानेका दोष लगाया और दूतके द्वारा बारम्बार कहला भेजा कि 'ब्लन्डिक्रल' नामक धर्मशास्त्रके चौव्वनवे अध्यायमें धर्म प्रचारक 'लष्टोग' ने जो कुछ लिखा है उसके विरुद्ध यह कार्य्य है।" परन्तु वास्तवमें यह वात नही है। धर्मशास्त्रमें केवल इतनाही लिखाहै "सत्यधर्ममें विश्वास करनेवाले जिधरसे सुवीता देखें उधरहीसे अण्डेको तोडें।" इसलिये प्रत्येक मनुष्य अपने सुवीतेके अनुसार अण्डा फोड सकता है। सुवीता किधरसे फोडनेमें है सो यह भी सब आदमी सहजमें समझ सकते हैं। और जिसकी समझमे न आवे सो प्रधान मजिष्ट्रेटसे पूछले।

आदमी यहांसे निकाले गये थे वह सब ब्लेफस्कूके महाराज

को शरण है। महाराजने उनकी बहुत खातिरकी है। जो यहां रह गये हे सो भीतरही भीतर उन दुष्टोंसे मिले हैं और गुप्त रीति से उनकी सहायता करते हैं। बस यही तो लड़ाईका कारण है। छत्तिस चन्द्रसे युद्ध चल रहा है। इन युद्धोंमें हमारे चालीस बड़े बड़े और छोटे न जाने कितने जहाज नष्ट हुए। तीस हजार सेना और मल्लाह काम आए। विपक्षियोंकी हमसे अधिक हानि हुई है। अब वह लोग फिर हम लोगों पर आक्रमण करने की तैयारियां कर रहे हैं। बहुतसे जङ्गी जहाज एकत्र हो चुके हैं। अब इस समय महाराजको आशा भरोसा आपहीके ऊपर है। अब आपकी मरजी हो सो कीजिये मुझे महाराजने जो कुछ कहा था सो आपसे कह दिया।"

मैंने कहा "महाराजसे निवेदन करदीजिये कि मैं विदेशी हूं इस घराऊ झगड़ेसे मुझे क्या मतलब? मैं किसीकी भी तरफदारी न करूंगा। मेरे लिये दोनों दलवाले समान हैं। लेकिन हां, अगर महाराज पर कोई आफत आवेगी तो मैं जान देनेको मुस्तैद हूं। जब तक दममें दम है महाराजका एक बाल भी बांका न होने दूंगा। जो जानसे महाराजकी और महाराजके राज्यकी रक्षा करूंगा।" इतना सुन रेलड्रेसल प्रसन्न हो चलता बना।

षष्ठम परिच्छेद।

कुछ लगाव पाया जाय तो उसे प्राण दण्ड दिया जाता है। जहां जोगी आवा जाई तक दस दस होजाती है।

गुप्तचरोंने आकर कहा कि दुश्मनोंके इन्हीं जहाज उस पार बन्दरगाहमें पापहुंचे हैं। सुतर हवा पानेही वह लोग लङ्गर उठा देंगे। यह खबर सुनकर मैंने लखाकाड़में अपने मनकी बात कही फिर होशियार मल्लाहोंसे समुद्रको गहराईकी बाबत पूछा तो मालूम हुआ कि बीचमें तो ज्वारके समय प्रायः ६ फुट जल होजाता है लेकिन बाकी तमाम चारही फुट जल रहता है। मल्लाह लोग अकसर समुद्रका जल नापा करते हैं इसी लिये यह बात उनसे पूछी गई थी। ये सब बातें पूछ ताछ कर मैं समुद्रके पूर्वोत्तर तटको ओर गया। वहां एक छोटीसी पहाड़ीके पीछे लेट कर दूरबीन लगाई तो देखा दुश्मनोंके पचास लड़ाकू तथा और कई असबाब ढोनेके जहाज लङ्गर गिराये पड़े हैं। ये सब देख भाल कर मैं लौट आया। फिर बड़े बड़े रस्से तथा लोहेके छड़ मंगवाये। रस्से तो सुतलीके समान और छड़ मोटा पिनोंकी सूईके बराबर थे। मैंने उन छड़को मजबूत बनानेके लिये तेहरा किया। फिर छड़ोंको मोड़ कर बर्छीसा बना लिया। पचास रस्सोंमें एक एक बर्छी बांध कर मैंने पूरा समुद्राभियान प्रारम्भ किया। वहां पहुंच कर कोट जूता और मोजे उतार दिये अपने चमड़ेवाले कोटको पहन कर समुद्रमें कूद पड़ा। ज्वार आनेको आधा घण्टा बाकी था। बहुत तेजीके साथ मैं जाने लगा। बीचमें लग भग तीन गज तैरना पड़ा। फिर जल कम था इससे पांव पांव गया। आधे घण्टेके भीतरही मैं जहाजोंके पास जा पहुंचा। जहाजवाले मुझे देखतेही डरके मारे समुद्रमें कूद पड़े। और जल्दी जल्दी तैर कर किनारे पर जा पहुंचे। वहां तीस हजारसे कम आदमी न होंगे जब जहाजवाले सब भागगये तो मैंने चटपट हर एक जहाजके पीछे छेदमें एक एक बर्छी लगादी और सब रस्सोंको इकट्ठा कर ... दी। इधर शत्रुगण दना दन मुझ पर बाण वृष्टि कर रहे

थे। पर मैं इनकी कुछ भी परवाह न कर अपना काम करता जाता था। जब वह सब मुंहमें तीर मारने लगे तब मैंने अपना चश्मा जो पाकिटमें था निकाल कर आंखों पर लगा लिया। अगर चश्मा न लगता तो काम भी न कर सकता और आंखे भी फूट जातीं। जब सब काम ठीक होगया तब मैंने रस्सोंको जोरसे खैंचा लेकिन एकभी जहाज अपने ठिकानेसे न हिला। क्योंकि सबके सब मजबूत लङ्गरोंसे बंधे थे। बस मैंने जेबसे छुरी निकाल कर सब लङ्गरोंको काट डाला। फिर क्या था? एकही झटकेमें सब जहाज चल पड़े बस आगे मैं और पीछे पीछे जहाज थे।

ब्लेफास्कूवाले पहले तो मेरा असल मतलब न समझ सके केवल आश्चर्यके मारे घबड़ासे गये थे। जब मैं लङ्गरोंको काटने लगा तो उन लोगोंने समझा कि मैं जहाजोंको केवल तितर बितर करना चाहता हूं परन्तु जब उन्होंने मुझे रस्सा खैंचते और जहाजोंको एक पांतीमें जाते देखा तबतो उनका माथा ठनका। अब वह करही क्या सकतेथे? हताश होकर दुःखसे डाढ़ें मार कर रोने लगे।

और भी घवराये। उन्होंने समझ लिया कि मैं डूब गया औ दुश्मन लोग लडनेके लिये आरहे हे। पर थोडीही देरमें उनकं सब चिन्तायें जाती रहीं। ज्यों ज्यों मे आगे डग उठाता था त्यों त्यं समुद्रकी गहराई भी घटती जाती थी। जब मैं बहुत निकट अ पहुंचा तब जोरसे कहा "महाराजकी जय।" अब आनन्दक क्या ठिकाना था? जब मैं ऊपर आया तो महाराज बडे आनन्दं साथ मुझसे मिले। मेरी बहुतसी प्रशंसाकी। उसी घडी मुझे "नर्डन" की उपाधि मिली। यह वहांकी सबसे बडी तथा सम्मान सूचक उपाधि है।

ये सब काम होजाने पर महाराजने मुझसे कहा "दुश्मनोंवि बाकी जहाज भी मौका पाकर लेआना" ओफ! महाराजोंके लोभ का कुछ ठिकाना है! इतने पर भी तृप्ति नहीं! ब्लेफस्कूका राज्य अपने अधीन करना विद्रोहियोंका दमन करना—समस्त प्रजासे छोटे सिरेकी ओर अण्डे फुडवाना और समस्त संसारको एक छत्र राज्य करनाही महाराजकी हार्दिक इच्छा है। बस इन्हीं इच्छाओंको पूर्ण करनेके लिये महाराज कमर कसे बैठे हे। अह-र्निश इसीकी चिन्ता है। महाराजकी इच्छा पलटनेके लिये मैंने बडी बडी चेष्टायेंकीं। न्यायसे, नीतिसे, युक्तिसे महाराजको बहुत समझाया पर वह न समझे। तब मैने खुलासा कह किया कि मैं एक स्वाधीन तथा वीर जातिको गुलाम बनानेका कारण नहीं हूंगा। जब राज-सभामें इसकी चर्चा चली तो जितने विज्ञ तथा चतुर पुरुष थे मेरीही बातोंका अनुमोदन करने लगे।

महाराजके विरुद्ध होतेही मेरे सिर आपातका टोकरा आपडा। जो कुछ मैने कहा वह महाराजकी नीति तथा इच्छाके बिलकुल विपरीत था। खुल्लम खुला महाराजकी बात काट कर मैने बडी भूलकी। महाराज मनमें मुझसे बहुतही रुष्ट हुए। उन्होंने मेरे कसूरको नहीं माफ करनेकी ठानली। लेकिन सभामें इस बातको ... ढङ्गसे कहा कि चतुरोंने तो चुप होकर मेरी तरफदारीकी

पर मेरे गुप्त शत्रुगण अनाप शनाप बकनेसे बाज न आये। नाना प्रकारके षड्यन्त्र रचे गये। जिनका परिणाम दो महीने के पश्चात् प्रकट हुआ। ये सब खबरें मुझे अपने मित्रोंसे मिली थी। महाराजकी मित्रताका यही फल है। पहलेकी भलाई तो भूलहीमें गई। जराना उचित कहनेहीके लिये अब प्राणो पर आन बनी। अहह। वास्तवमें संसारकी लीला विचित्र है।

प्राय. तीन सप्ताह बाद ब्लेफस्कूके महाराजने सन्धिके निमित्त दूत भेजे। हमारे महाराजने भी सन्धि करली लेकिन शर्ते सब अपनेही फायदेकी रक्खीं। छः दूत पांचसौ आदमियोके साथ बड़े ठाटसे सन्धि करने आए थे। जैसे भारी राजाके वह सब दूत थे और जैसा भारी काम लेकर वह आये थे ठाट बाठ भी उनके वैसेही भारी थे। सन्धिके समय जहां तक बना मैंने उन दूतोंकी बहुत सहायताकी। और लोगोंसे मेरी भलाईका हाल सुन कर वह मुझसे भेंट करनेके लिये आये। मेरी बहुतसी बड़ाई करनेके बाद उन्होंने अपने राज्य ब्लेफस्कू में चलनेके वास्ते मुझे न्योता दिया। फिर मेरे अद्भुत कार्य्योंको देखनेकी अभिलाषा प्रकटकी। मैंने उसी दम उनकी अभिलाषा पूरीकी। अब उनका पुन वर्णन करके पाठकोंका समय नष्ट नहीं करूंगा।

हाल भी उसने कह दिया है। इनसे मिलनेको उसने शत्रुताका लक्षण बताया है। पर जो हो. मैं वेकसूर हूं—मेरा दिल साफ है। यहांके दरबार और मन्त्रियोंकी कार्रवाइयोंसे अब मैं भी कुछ कुछ परिचित होचला।

यहां पर यह कह देना उचितही है कि ब्लेफस्कूके दूत जो कुछ बोलते थे उसका अर्थ एक दुभाषी मुझे समझाता जाता था। इन दोनो राज्योंकी भाषाएं भिन्न भिन्न हैं। दोनोंही अपनी अपनी भाषाको प्राचीन, सुन्दर और शक्ति पूर्ण बताते और दोनोंही एक दूसरेकी भाषाको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं। जहाजोंको छीन लेनेके कारण अभी हमारे महाराजका पल्ला भारी था अतएव उन्होने दूतोंको लिलीपटकीही भाषामें सन्धि पत्र लिखने तथा वक्तृता देनेके लिये लाचार किया था। बहुतसे लोग दोनो बोलिया मजेमें बोलते थे। दोनो राज्योंमें वाणिज्य व्यापार होता था। इससे व्यापारियोंकी आवा जाई जारी थी। वहांके भगोडे यहां और यहांके वहां आश्रय पातेथे। बडे बडे आदमियोंके लडके रीति, नीति, तजरवेकारी, दुनियादारी आदि सीखनेके लिये आया जाया करते थे। बस इसी घनिष्टताके कारण समुद्र तट निवासी नामी आदमियोंमें ऐसे बहुत कम लोग थे जो दोनों बोलियोंमें बात चीत न कर सकते हों। जब मैं वैरियोंकी चालबाजीसे दुखी होकर ब्लेफस्कू गया तब मुझे यह मालूम हुआ था। वहां जाना भी मेरे लिये अच्छाही हुआ इसका हाल आगे चल कर कहूंगा।

पाठकोंको याद होगा जिन जिन शर्तों पर मुझे स्वाधीनता मिली थी उनमेंसे दो तीन अत्यन्त निन्दनीय और कुत्सित थीं। इच्छा न रहने पर भी प्यारी स्वतन्त्रताके लोभसे उन्हें मैंने अङ्गीकार करलिया था। किन्तु अब मैं 'नर्डक' हूं—एक उपाधिधारी माननीय व्यक्ति हूं। उन सब निन्दनीय शर्तोंको पूरा करनेसे मेरी मानहानि होती—महाराजकी दी हुई उपाधिकी मानहानि होती। इन्हीं सब बातोंको सोच विचार कर शायद

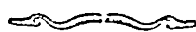
महाराजने एक दिन भी उन नीच कर्मोंको करनेके लिये मुझसे नहीं कहा, अस्तु। कुछ दिनके बादही मैंने महाराजका एक और बडा भारी उपकार किया। और कोई चाहे इसे कुछ कहे पर मैं तो उपकारही कहूंगा।

एक दिन आधीरातके समय जब मैं खर्राटे लेरहा था अचानक शोर गुल सुन कर चौंक पडा। आंखे खोली तो देखा दरवाजे पर सैकडों आदमी हल्ला कर रहे हैं। इस गुल गपाडेको सुन कर मैं डर गया। वह लोग "बरग्लम" की रट लगाये थे। इतनेमें कई राजकर्म्मचारी भीडको चीरते हुए मेरे पास आए और बोले "आप जल्द चलें—राजमहलमें आग लगी है। महारानीकी एक सखी उपन्यास पढते पढते सोगई और दियेको बलता हुआ छोड दिया था। उस उसी दियेसे आग लग गई है। यह उसकी गफलत है जो उसने दिया नहीं बुझाया। आप अब जल्द चलें नहीं तो सब स्वाहा होजायगा।" मैं सुनतेही उठ खडा हुआ।

मेहनतके सारे शराब अपना रङ्ग दिखाने लगी। बस मैंने पेशाब की धार वांध दी। फिर क्या था? तीनही मिनटमें सारी आग बुझ गई। ईश्वरकी अनुकम्पासे वह सुन्दर राजमहल जो न जाने कितने दिनोंमें बना होगा। जलनेसे बच गया।

भोर हो चुका था। महाराजसे बिना मिलेही मैं अपने डेरे पर वापस आया। इतनी बडी खैरख्वाही करने पर भी तबीयत खटकेमें थी। न जाने मेरे लिये क्या हुक्म हो। आईनमें है कि जो कोई राजमहलके अहातेके अन्दर पेशाब करेगा उसे चाहे वह कोई क्यों न हो फासी दी जायगी। देखें महाराज मेरे साथ कैसे पेश आते हैं। महाराजने मेरे पास एक चिट्ठी भेजी पढ कर कुछ खुशी हुई। उसमें लिखा था "तुम्हारा अपराध क्षमा करनेके लिये मै प्रधान विचारकसे कह दूंगा।" परन्तु भोंडे भाग्यके कारण आज तक अपराध क्षमा नही हुआ। मुझे यह भी टोह लगी कि महारानीको मेरी इस कार्रवाईसे बहुत घृणा होगई है। वह अपना डेरा डण्डा उठा कर दूसरे मकानमें चली गई है। जिस मकानमें आग लगी थी उसकी अगर मरम्मत भी हो तो भी वह उसमें अब नहीं रहेगी। उन्होने यह प्रतिज्ञा भी करली है कि जिसने इस घरको अपवित्र किया है उसे वह अवश्य मजा चखावेंगी।

नवम परिच्छेद।



यद्यपि मैं चाहता हूं कि इस देशका सविस्तर वर्णन किसी दूसरी पोथीके लिये उठा रक्खूं तथापि अपने मन चले पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ यहा पर कुछ साधारण बातें लिखता हूं। यहांके निवासी छः इञ्चसे कुछही कम ऊंचे होते हैं। बस इसी हिसाबसे अन्यान्य जीवजन्तु और पेड पत्तोंकी उंचाई समझ लीजिये। अगर न समझ सकते हो तो ये नमूने हाजिर है—बडे बडे घोडे और साढोंकी ऊंचाई पाच इञ्चके भीतर है। भेड डेढ इञ्चसे कुछ कम या ज्यादे ऊंची होती है। राजहस गौरैयाके बराबर होता है और छोटे छोटे कीडे मकोडे तो मेरे दृष्टिगोचरही नही होते थे। पर लिलीपटी तो

मजेमें देख सकते हैं। ईश्वरकी लीला अपरम्पार है। ये लोग निकटकी छोटीसे छोटी चीजको भी मजेमें देख सकते हैं पर दूरकी नहीं। एकबार मैंने अपनी आखोंसे एक रसोइये को लवा पक्षीकी खाल खैंचते देखा है। यह मक्खीके बराबर था। एक बालिकाको सुईमें रेशमका डोरा पिरोते देखा है। परन्तु मेरे लिये ये सुई डोरे दोनोंही अदृश्य थे। सबसे ऊंचे पेड सात फुटके होते हैं। सरकारी बागके ऊंचेसे ऊंचे वृक्षोंकी फुनगियां मैं योंही छू लेता था। बाकी शाकपात भी इसी परिमाणके थे। उनकी ऊंचाई आदिका अनुमान पाठक स्वय करलें।

बहुत थोडे शब्दोंमें मैं इनके लिखने पढने की बात अभी बाहूंगा। यहा बहुत दिनोंसे विद्याकी अच्छी चर्चा है। लेकिन इन लोगोके लिखनेका ढग निरालाही है। ये बाई ओरसे नहीं लिखते, न मुसलमानोंकी तरह दाई ओरसे लिखते और न चीना लोगोंकी तरह ऊपरसे नीचेकी तरफ लिखते है। ये लिखते हैं तिरछा-विलायती बीबियोंकी तरह कागजके एक कोनेसे दूसरे कोने तक।

मुकद्दमा की खबर देनेवाले अर्थात् सेदियोंके बारेमें है। मकारके विरुद्ध जितने अपराध हैं उनकी बडी कडी सजा है। लेकिन अगर अपराधी विचारालयमें उपस्थित होकर अपनेको निर्दोष सिद्ध कर दे तो भेदिये की जान बडे बुरे तौरसे ली जाती है। सिर्फ यही नहीं उसका सब मालमता और जमीन जायदाद बेच कर अपराधी को उसके खर्चका चौगुना रुपया उसके कष्ट और परिश्रमके बदले दिया जाता है। अगर कमी हुई तो सरकारी खजानेसे वह पूरी कर दी जाती है। महाराज उसकी बेकसूरीका ढिंढोरा सारे शहरमें पिटवादेते है और उसका बहुत आदर सम्मान करते है।

यहां चोरीकी अपेक्षा जुआचोरी भारी कसूर समझा जाता है। इसी लिये जुआचोरोंको फांसी देनेमें यहांवाले कभी नहीं चूकते। इनका कथन है कि जरा सावधान होनेहीसे चोरोंसे उबार हो सकता है किन्तु जुआचोरोंसे सच्चोंकी रक्षा नहीं। उधार और लेने देने बिना दुकानदारी चल नही सकती लेकिन जहा जुआचोरी जारी है और जहा जुआचोरीकी सजा कानूनमें नही है वहा बेचारे सच्चे दुकानदारोंहीका दिवाला निकलता है और जुआचोर, ठग मजेसे र[illegible]उडाते है। मुझे याद है, एक दिन जब मैंने महाजसे एक अपरा[illegible] जिसने अपने मालिक का बहुत साधन गबन किया था सिफारिश करके कहा कि यह तो केवल विश्वासघात है; इस साधारण अपराधके लिये फासी देना ठीक नहीं। इसपर महाराज बोले "आश्चर्य्य है। ऐसे बडे घृणित अपराधको आप साधारण बताते हैं।" महाराजकी इस बातका जवाब मुझे कुछ न सूझा। केवल इतना कहके मैं चुप होगया कि देसा चाल और कुला व्यवहार। पर सचमुच उस दिन मैं महाराजके सामने बहुतही लज्जित हुआ।

यद्यपि हम लोग बराबर कहा करते है कि इनाम और सजा यही दो चूल हैं जिनपर राजशासनके किवाड घूमते हैं। इस कहावतको पूरा कर दिखाने वाले लिलीपटके सिवा

दूसरा राज्य इस संसारमें नहीं है। यहां जो कोई तिहत्तर चन्द्र तक कानूनके अनुसार चलता है सो पूरा सबूत देने पर हैसियतके मुताबिक सरकारसे इनाम पाता है। इस कामके लिये अलग एक फण्ड खुला हुआ है इसके सिवाय उसे "राज्यव्यवस्थानुसारी" की पदवी मिलती है जिसे वह अपने नामके साथ जोड लेता है पर यह पीढी दर पीढी नही चलती। जब मैने कहा कि हमारे देशमें केवल सजाहीका कानून है इनामका नही तो वे सब हसने लगे और बोले कि आप लोगोंका कानून भद्दा है। लिलीपटके न्यायालयोंमें न्यायकी एक एक मूर्त्ति स्थापित है जिसके छ: नेत्र—दो आगे दो पीछे और दो दोनों बगलमें—और दो हाथ हैं—दहिने हाथमें अशर्फियोंका खुला हुआ तोडा और बायेंमें म्यान सहित तलवार। तात्पर्य्य यह कि न्याय सावधान है, सब ओर देखता है और वह दण्ड देनेकी अपेक्षा पारितोषिक देना श्रेय समझता है।

निपुणतासे बढ कर यहां सदाचरणका आदर है। इसीलिये राजकीय पद निर्व्वाचनके समय लोगोंका ध्यान निपुणताकी अपेक्षा सदाचारकी ओर अधिक रहता है। मनुष्य मात्रको राजाकी नितान्त आवश्यकता है। यहां वालोंका विश्वास है कि प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ काम करनेकी योग्यता रखता है।

में राजकाज नहीं सौंपना चाहिये। ऐसा करनेसे महा अनर्थ होगा। सदाचारी पुरुष अज्ञानतासे अगर कोई चूक कर भी बैठे तो उससे सर्वसाधारणको उतनी हानि नहीं होगी जितनी कि उस ऊंची बुद्धिवालेसे, जो जान बूझ कर पाप करता है और जो पाप करनेकी, पाप बढ़ानेकी और अपने पापोंको छिपानेकी अच्छी तरकीब जानता है।

इसी प्रकारसे जो नास्तिक है यानी जो ईश्वरको नहीं मानता वह भी राजकीय पद पानेके योग्य नहीं है। क्योंकि राजा परमेश्वरका प्रतिनिधि स्वरूप है और राजकर्मचारी राजाके प्रतिनिधि हैं। यहां वालोंका कथन है कि जो अपने स्वामीहीको नहीं मानता उसे राजकर्मचारी बनाना महाभूलही नहीं वरन् बड़ी मूर्खता है।

जो कुछ मैं कह चुका या अब जो कुछ कहूंगा सो सब पुराने जमानेकी बातें हैं। आजकलकी लज्जाजनक बातें मैं न कहूंगा। अधःपतित होना मनुष्य मात्रका स्वभाव है। लिलीपटवाले भी इसी स्वभावके फेरमें पड कर अपनी पुरानी चालढाल छोड बैठे हैं। रस्सों पर नाच कर भारी भारी ओहदे पाना—छड़ियों पर कूद कर विख्यात होना इत्यादि क्या अधःपतनका नमूना नहीं ? इन बुरी बातोंकी नींव डालनेवाले हमारे महाराजके दादाही थे। अब ईर्षा, द्वेष, विरोध और धड़ाबन्दीके प्रतापसे इन सब बुराइयोंकी पूरी उन्नति होचली है।

कृतघ्नताको यहां लोग बड़ा भारी अपराध समझते हैं। वह कहते हैं कि जो अपने भलाई करनेवालेकी बुराई करता है वह सब संसारका वैरी है क्योंकि जब वह भलाई करनेवालेके साथ बुराई करता है तब जिसने उसके साथ कुछ भी नेकी नहीं कीहै उसके साथ बुराई करनेसे वह दुष्ट कब बाज आने लगा। ? इस [illegible] कृतघ्नोंका जीवित रहना ठीक नहीं। चट पट उनकी इति चाहिये।

यहां माता पिता और पुत्रका परस्पर व्यवहार हम लोगोंके व्यवहारसे बिलकुल विलक्षण है। स्त्री पुरुषोंका परस्पर मिलन स्वाभाविक है। लिलीपट लोगोंका मत है कि और और जानवरों की तरह नर नारी भी कामाग्नि बुतानेके लिये सम्भोग करती है। इसी सम्भोगका नतीजा है सन्तान। सन्तानके प्रति माता पिता का स्नेह भी स्वाभाविक है। पिताने जन्म दिया है और माताने गर्भमें धारण किया है बस इतनेहीके लिये पुत्र सदा उनकी सेवकाई नही कर सकता और न जन्म भर उनके उपकारसे दबा रहेगा। इसी प्रकारकी युक्तिया दिखलाते हुए लिलीपटके लोग कहतेहै कि बालक बालिकाओंकी शिक्षा माता पिताके भरोसे न छोडना चाहिये। इसी हेतु हर एक शहरमें एक ऐसी जगह बनी है जहा लडके लडकिया पाली पोसी और सिखाई पढाई जाती है। बस योही दीन दरीद्र और मजूरोंके सिवा सब किसीको अपने छोटे छोटे बच्चे भेजने पडते हैं। यहा ऐसे स्कूल कई प्रकारके हैं जिनमे भाति भातिकी विद्यायें पढाई जाती हैं। लडके और लडकियोंके लिये अलग अलग स्कूल हैं। स्कूलोंमें ऐसे ऐसे मास्टर हैं जो लडके और लडकियोंको उनके माता पिताकी अवस्थाके उपयुक्त बना देते हैं तथा उनकी योग्यता और रुचिके अनुसार उन्हें पदा भी देते हैं।

ही कपडे पहनाते है लेकिन इसके बाद उन्हे (चाहे वह किसीके लडके हों) अपने हाथोंसे कपडे पहनने पडते है। सेवा टहलका काम बूढी बूढी दासियां करती है। लडके नौकरोंके साथ बात करने नही पाते पर खेलकी जगह जा सकते है। एक अध्यापक वा सहकारी अध्यापक साथमें जरूर रहते है। इसी लिये लडके उन कुसंस्कारों और बुरे व्यसनोंसे साफ बच जाते है जिनमें हमारे देशके लडके प्राय: लिप्त रहते है। मा बाप सालमे दोही बार उन्हें देखने पातेहे सो भी एक घण्टेसे ज्यादे ठहर नहीं सकते। आनेके समय वह लडकोंको चूम सकते हे परन्तु उनसे काना फूसी नहीं कर सकते, न कुछ प्यारकी बाते कह सकते और न खिलौना और मिठाई वगैरह दे सकते है। इन सबकी निगरानीके लिये एक माष्टर वहां बराबर खडा रहता है। अगर किसीने स्कूलकी फीस देनेमें गडबडीकी तो सरकारी कर्म्मचारी तुरत उसे वसूल कर लेते है।

मामूली गृहस्थ, कोठीवाल, सौदागर और कारीगरोंके बालकों के लिये अलग स्कूल हे। उनमें भी इसी ढङ्गसे शिक्षा दी जाती है और प्रबन्ध भी सब ऐसेही है तथापि कुछ अन्तर है। यह अन्तर केवल दरजेके ख्यालसे है। जो व्यापार सीखनेके वास्ते कच्ची उम्रो स्यार हुआ चाहते है सो ग्यारह वरसके होने पर छुट्टी पाते हैं लेकिन जो नहीं चाहते उन्हें पन्द्रहवें वरस तक रहना पडता है।

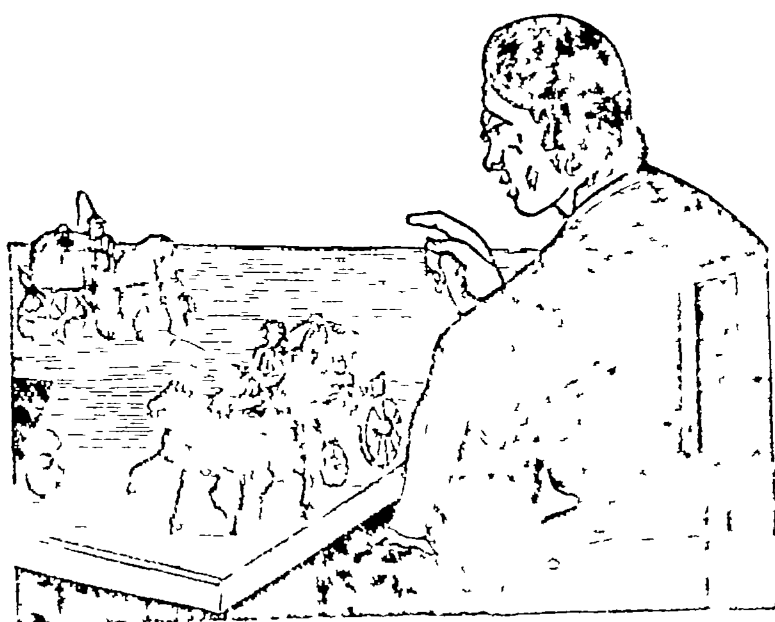
कन्या पाठशालाओंके भी यही सब नियम हैं। लडके जैसे पढते हैं बडे आदमियोंकी लडकियां भी वैसेही पढ़ती है। भेद केवल इतनाही है कि इन्हें दासिया माष्टरके सामने कपडे पहनाती हैं। पाच वर्षके पश्चात् वह आपही पहन लेती हैं। अगर किसी दासी का किसी कन्याके सामने किसी तरहकी भयानक कहानिया, भूतोंके किस्से या झूठी गप्पें कहना साबित होजाय तो चाबुक मार कर वह शहरमें तीन बार घुमाई जाती है। इसके बाद वह एक [illegible] कैदकी जाती है। फिर आजन्मके लिये नगरसे बाहर

बीमारीको अनाथालयमें खानेको मिले मिलता है। भीख मांगने का रोजगार यहां कोई जानताही नहीं है।

दशम परिच्छेद।

अब कुछ मेरा हाल सुनिये। लिलीपटमें मैं कुल नौ महीने तेरह दिन रहा था। सरकारी जङ्गलकी लकडी लाकर मैंने अपने आरामके लिये एक मेज और एक कुर्सी बनाली थी। ऐसा मत समझिये कि मैं यह सब काम भी खूब जानता हूं। दो सौ दर्जियोंने मिल कर मेरे लिये कमीज और बिछौने सिये थे। यहां तीन इञ्च चौडे और तीस फुट लम्बे कपडे होते हैं। मोटेसे मोटे कपडे मेरे वास्ते मगवाये गये। उनको कई तह करनेसे मेरा काम चला। दर्जी जब मेरा बदन नापता तब मैं लेट जाता। एक दर्जी तो गर्दनके पास और एक घुटनेके पास खडे होते। दोनोंके हाथमें रस्सीका एक एक सिरा रहता था। तीसरा एक इञ्च लम्बे औजार से उस रस्सीको नापता। फिर दाहिना अंगूठा नापा गया बस। बस इतनेहीसे सब अङ्गोंकी नाप होजाती है। जरा हिसाब सुनिये—अंगूठेका घेरा नाप कर दूना करनेसे कलाईका घेरा निकलता है। फिर इसी तरह कमर और गर्दनका भी जानिये। मैंने अपनी कमीज दिखलाई तो उन्होंने ठीक वैसीही एक बना दी। तीनसौ दर्जियोंने मेरी पोशाक तैयारकी थी। इनके नापने का ढङ्ग न्यारा था। मैं घुटनोंके बल बैठ गया। उन्होंने गर्दन तक सीढी लगाई। फिर उस पर चढके एकने मेरे पट्टेसे जमीन तक साहुलकी तरह एक डोरी गिराई। यही हुई मेरे कोटकी लम्बाई। मैंने कमर और बांह आपही नाप दिखाई। जब सब कपडे तैयार होगये तो वह जोड पर जोड लगानेसे कगुदडीकी तरह मालूम पडते थे। यह सब मेरेही डेरे पर बनेथे क्योंकि वहां इतनी बडी ठौर और कहीं न थी जहां वह सब समाते।

मेरी रसोई बनानेके लिये तीनसौ बावरचीथे मेरे डेरेके पासही



कोई आवे तो कह देना कि आज जी अच्छा नहीं है—भीतर सोते हैं फिर अपने कमरेकी किवाड़ी मून्द कुर्सी पर पा बैठा और पालकीको दस्तूरके मुताबिक मेज पर रख दिया। सलाम वन्दगी होनेके बाद उसने यों कहना शुरू किया "तुम्हें जान लेना चाहिये कि इधर कई कसौटिया तुम्हारे बारेमें बड़े गुप्त तौरसे हुई हैं। आखिर आज दो दिन हुए सर्कारने भी अपनी राय दे दी है तुम्हें यह मालूमही है कि जबसे तुम यहां आये बलगुलास तुम्हारा जानी दुश्मन बन बैठा है। उस दुश्मनीका असल सबब तो मैं कुछ नहीं जानता पर हां, जबसे तुम शत्रुओंके जहाजोंको छीन लाये हो तबसे वह तुमसे और भी कुढने लगा है। तुम्हारे इस कामसे उसने बहुत नीचा देखा है। खजानची भी अपनी स्त्रीके कारण तुम्हारा परम शत्रु बन गया है। इन दोनोंने मेल करके तुम्हारे ऊपर राज विद्रोह आदि बड़े बड़े दोष लगाये हैं। इसमें और भी कई आदमी शामिल हैं। सब दोषोंकी सूची भी बनकर तैयार होगई है।"

इस भूमिकाको सुनतेही मेरे होश उड़ गये। मैं कुछ कहनेके लिये मुंह खोलनाही चाहता था कि वह फिर कहने लगा "जरा चुप रहो—पहले मेरी बात पूरी होने दो। मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ हूं। तुमने मेरा बड़ा उपकार किया है। इसीसे अपनी जान जोखोंमें डाल कर सब बातोंका पता लगाता हुआ तुम्हारे पास आया हूं। उस सूचीकी नकल भी लाया हूं। मैं तुम्हारे लिये अपनी जान भी देनेको तैयार हूं।" इतना कहके उसने उसे पढ कर सुनाया। उसमें यह लिखा हुआ था।

नर पर्व्वतकी दोषावली।

दोष नं० १

महाराज कलीन डेफ्फर फ्लूनके समयमें कानून पास हुआ है कि जो कोई राजमहलकी अहातेके अन्दर पेशाब करेगा सो विद्रोहियोंकी भांति कड़ी सजा पावेगा। नरपर्व्वतने इस कानूनके बरखिलाफ आग बुझानेके बहानेसे महारानीके महलमें जान बूझ कर पेशाब किया है।

दोष नं० २

नर पर्व्वतके बुफस्कूसे जंगी जहाज छीन लाने पर महाराजने बाकी जहाजोंको लाने, उस राज्यको अपने राज्यमें मिलाने और विद्रोहियोंको नेस्तनाबूद करनेके लिये कहा तो नर पर्व्वतने विद्रोहियोंकी तरह महाराजकी आज्ञा उल्लङ्घन करके कहा कि स्वाधीन और निर्दोष मनुष्योंकी स्वाधीनता तथा प्राण नष्ट नहीं करूंगा ये सब उनकी चालबाजिया हैं।

दोष नं० ३

बुफस्कू राज्यसे दूतगण सन्धिके लिये आये तो नर पर्व्वत विश्वासघात करके उनसे मिला और उनका आदर सत्कार किया। यद्यपि इसको मालूम था कि बुफस्कूके महाराज कुछ दिन हुए हमारे प्रगट शत्रु थे और उनसे युद्ध भी ठन चुका है तथापि यह उन्हींकी तरफदारी करता था।

विषैले तीर मारे या तुम्हारे नौकरोंसे तुम्हारे कपड़े और बिछौने पर कोई जहरीला रस छिड़कवा दिया जाय जिसमें तुम जहरकी ज्वालासे अपने मांसोंको आपही काटो और तड़प तड़प कर मर जाओ। उन लोगोंने इन बातों पर बहुत जोर दिया था। सब तुम्हारे विरुद्ध थे। परन्तु महाराज तुम्हारी जान लिया नहीं चाहते हैं। ऐसेमें सिकत्तर साहब बुलाए गये।

रेलड्रे मल्ल वकीलातमें तुम्हारे पक्के दोस्त हैं। जब महाराजने उनकी राय पूछी तो उन्होंने कहा "बेशक नर पर्व्वतके कसूर बड़े भारी हैं। तोभी अभी दया करनेकी गुंजाइश है। दयालु होना महाराजोंका प्रधान गुण है और महाराजके इस गुणका सर्व्वत्र नाम भी है। नर पर्व्वतसे मुझे मित्रता है इस वास्ते चाहे मुझे कोई पक्षपाती कहले परन्तु जब श्रीमान्ने पूछा तो मैं भी दिल खोल कर वाजिबही कहूंगा। मगर श्रीमान् नर पर्व्वतके उपकारों की तरफ ख्याल करके—अपनी दयालुताकी ओर फेर करके उसकी जान छोड़दें तो अच्छा है। इसके बदले उसकी आंखें दोनों निक-लवा लेना चाहिये। ऐसा करनेसे न्याय भी होगा और सारे संसार में आपकी दयालुताका नाम भी होजायगा और श्रीमान्के मन्त्रियों का यश सर्व्वत्र फैल जायगा। आंख निकलवानेसे नर पर्व्वतकी ताकत ज्योंकी त्यों बनी रहेगी। समय पड़ने पर वह भी श्रीमान् की सेवा भी कर सकेगा। अन्धा होनेसे आदमी निडर और साहसी होजाता है क्योंकि वह कुछ देखता नहीं है। और वास्तवमें आंख एक बड़ी भारी बला है। ब्लेफस्कूसे जहाज लानेके समय आंखों ने उसे बहुत बाधा दी थी। मन्त्रियोंकी आंखोंहीसे वह देखेगा, बड़े बड़े राजा महाराज भी ऐसाही करते हैं।

"रेलड्रेसलके इस प्रस्तावको सारी सभाने नापसन्द किया। बल-गुलाम चुप न रह सका। वह लाल पीला होकर बोल उठा "आश्चर्य्य है कि सिकत्तर साहब राजविद्रोही और विश्वासघाती की सिफारिश करते हैं। उपकार! यह उपकारही तो उसके अप-

सुराका घटानेकी बात तो छिपाई गई लेकिन जन्मा कालेका टुका वहीं पर चढ गया है। बलगुनामने तुम्हारी जान लेनेके लिये बहुत दिन लड़ाया। महारानीका भी उनसे प्यारा था। जबसे तुमने पेशावरसे भाग बुझाई है तभी वह तुमसे बहुत नाराज है।

परसों मिजस्तर साहब हुक्म लेकर तुम्हारे पास आवेंगे और सब कागज पत्र पढ कर तुम्हें सुनावेंगे। महाराजकी दयाका वर्णन करके अन्तिम आज्ञा सुना देंगे। तुम्हें बेडर पलंगमें लेटना पड़ेगा तुम्हारी आंखोंकी पुतलियोंमें बहुत सुनोंसे तीर छोड़े जायगें। इसको देख भालके लिये तीन सरकारी डाक्टर मुस्तैद रहेंगे।

"मुझे जो कुछ कहना था सो कह दिया। अब तुम जो उचित समझो सो करो। देरी करनेसे शायद मुझ पर लोग शक करें इस लिये अब मैं जाता हूं।"

इतना कह वह चलता हुआ और मैं दुःख और चिन्ताके चक्र में पकड़ कर अपनी सुध बुध खो बैठा।

वर्त्तमान महाराज और इनके मन्त्रियोंने एक नई रीति चलाई थी कि जब विचारक महाराजका क्रोध शान्त करने अथवा किसी मुंह लगेकी द्वेषाग्नि बुझानेके लिये प्राण दण्डकी व्यवस्था कर देता है तो महाराज भरी सभामें स्वयं अपनी विश्वविदित दयालुता और उदारता पर एक व्याख्यान देते हैं। राज्य भरमें यह व्याख्यान छापकर बांट दिया जाता है। प्रजाको इतना और कोई चीज नहीं दहलाती है जितना महाराजकी दयाका कीर्तन। क्योंकि अक्सर देखा गया है कि जितनी ज्यादे बड़ाई की जाती है सजा भी उतनीही निठुरता और कड़ाईसे भरी होती है। तिस पर तुर्रा यह कि अपराधी बिलकुल निर्दोषही रहता है। लेकिन मैं जो कभी किसी राजदरबारमें रहा नहीं, [illegible]को पहचान नहीं कर सकता विशेष कर महाराजकी इस [illegible] तो दयालुता और उदारताका लेशमात्र मुझे दिखाई

एक रस्सी बांध दी। मैंने गाउं कपड़े सब खोल डाले और उस पर रख लिये। फिर जहाजको खींचता हुआ चला। तैरते और चलते चलते—ब्लेफस्कूके बन्दरमें जा पहुंचा। वहां बहुत दिनों से लोग मेरी बाट देख रहे थे। उन लोगोंने दो आदमी दिये जो राजधानीकी तरफ ले चले। वहांकी राजधानीका भी नाम ब्लेफस्कू है। मैंने उन दोनों आदमियोंको हाथमें उठा लिया था। जब राजधानी दो सौ गज दूर रही मैंने उन दोनोंको जमीन पर रखदिया और कहा जाओ मेरे आनेकी खबर महाराजके सिक्रेटरको दो। एक घण्टेहीमें मुझे समाचार मिला कि महाराज सपरिवार दल बल सहित अगवानीके लिये आते हैं। मैं सौ गज और बढ़ गया। मुझे देखतेही वह लोग सब अपनी अपनी सवारियों परसे उतर पड़े। वह सब मुझे देख जरा भी अचम्भेमें न आये। मैं महाराज और महारानीके हाथोंको चूमनेके लिये धरतीमें लेट गया। फिर मैंने महाराजसे निवेदन किया "मैं अपनी प्रतिज्ञानुसार श्रीमान्‌के दर्शनार्थ आया हूं। अब जो कुछ मेरे योग्य सेवा हो सो आज्ञा कीजिये।" मैंने अपने अपमानकी कुछ बातें नहीं कहीं क्योंकि खुल्लमखुल्ला खबर इसकी मुझे न थी। अब मैं उनके राज्यसे निकल आया हूं अब चाहे वह इसकी चर्चा न करें। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

मेरी खातिर कैसी हुई या रहनेके लिये घर कैसा मिला आदि का पूरा वर्णन कर पाठकोंको दिक करना नहीं चाहता। मतलब यह कि जैसी चाहिये वैसी सब बातें हुईं। बिछौना लिलीपट से अपने साथ लाया था उसको बिछा कर सो रहता था।

द्वादश परिच्छेद।

तीन दिनके बाद मैं योंहीं टहलता हुआ सागरके पूर्वोत्तर तट की ओर जा निकला तो देखा कि समुद्रमें कुछ दूर पर नावकी एक चीज औंधी पड़ी है। मैं जूते और मोजे उतार कर

मरम्मत करवादें और मुझे स्वदेश जानेकी अनुमति दे।" महाराज ने सोच विचार कर मेरी प्रार्थना स्वीकार की।

कई दिन बीत गये लेकिन लिलीपटसे कुछ खबर नहीं आई। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। पीछे गुप्त रीतिसे खबर मिली कि लिलीपटेश्वरको मुझ पर या मेरी कार्रवाई पर कुछ भी शक नहीं हुआ क्योंकि वह जानते थे कि उन्हींसे आज्ञा लेकर मैं यहां आया हूं और सभाकी बिलकुल बातें अभी प्रकाशित नहीं हुई है। उन्होंने समझा कि मैं केवल सैरके लिये ब्लेफस्कू आया हूं थोड़ेही दिनोंमें लौट जाऊंगा। लेकिन जब मेरे लौटनेमें देर हुई तो उन लोगोंका माथा ठनका। निदान खजानची और मन्त्रियोंकी रायसे एक होशियार आदमी मेरे अभियोगपत्रकी नकल तथा ब्लेफस्कू नरेशके नामसे चिट्ठी लेकर आया। चिट्ठीमें लिलीपटेश्वरकी दयालुताकी प्रशंसा करनेके बाद लिखा था "नरपर्व्वत नामका एक आदमी यहांसे भाग कर आपकी शरणमें गया है। इसके ऊपर बडे बडे दोष लगाये गये है। वह दण्ड पानेके डरसे भाग गया है। इसके अपराध तो भारी है तथापि दया करके केवल आंखे निकलवा लेने की व्यवस्थाकी गई है। आप उसकी मुश्कें बांध कर जल्द यहां भेज दीजिये। अगर दो घण्टेके अन्दर वह हाजिर नहीं होगा तो इसको 'नर्डक' की उपाधि छीन लीजादगी और वह राजविद्रोही समझा जायगा। अगर आप भी सन्धि और मित्रता रखना चाहते हैं तो जल्द उसे हाथ पैर बांध कर भेज दीजिये।"

ब्लेफस्कू नरेशने तीन दिनके बाद सोच विचार कर बहुतसे उजर दिखलाते हुए यों जवाब लिखा "यद्यपि नरपर्व्वत मेरे जहाजोंको लेगया है तथापि इसको हम भेज नहीं सकते है। सन्धि के समय उसने हमारा बहुत कुछ उपकार किया है। और अब भेजनेकी दरकार भी नहीं है क्योंकि अब वह यहासे अपने देशको जानेवाला है। समुद्रमें एक बडीसी नाव मिल गई है। उसकी मरम्मत होरहीहै। मरम्मत होतेही वह यहासे जल्द चला जायगा।

आशा है कि चन्द हफतेमें यह दोनों राज्य इस असह्य भारसे मुक्त होजायगे।'

इस उत्तरको लेकर दूतराम लिलीपट गये। ब्लेफस्कू नरेशने यह सब बातें कहनेके बाद मुझसे कहा "अगर तुम यहां रहो तो तुम्हें में रख सकता हूं।' लेकिन मैं अब राजा महाराजोंका विश्वास क्यों करने लगा? मैंने महाराजको कृपाका धन्यवाद करके कहा "जब परमात्माने मेरे लिये एक नौका भेज ही दी है तो अब यहां रहके क्या करना है? भाग्यके भरोसे नौका समुद्रमें छोड़ दूंगा परमात्मा बेड़ा पार लगा देगा। यहां रहके आप दो बड़े बड़े महाराजोंमें बैर कराटेना मुझे पसन्द नहीं है। अब कृपा करके मुझे जानेकी आज्ञा होजाय।" महाराजने भी प्रसन्न होकर आज्ञा देदी।

बहुतसी बातोंको सोच विचार कर मैंने भी जल्द प्रस्थान करना विचारा। पांचसौ कारीगर पाल बनानेमें लगे। सबसे मोटे कपड़ेको तेरह तह करके दो पाल बने। मैंने अपने हाथोंसे रस्से तय्यार किये। एक भारी पत्थर ढूंढ कर लङ्गर बनाया। कई बड़े बड़े पेड़ काट कर डाड और पतवार बनाये। महाराजके बढ़इयोंसे इन कामोंमें बहुत कुछ मदद मिली।

है, तो मालसे एक दर्जन जवानोंके निजातियोंको भी धर लेता पर क्या करता ? महाराजने कह दिया था कि नगर कोई जाना चाहे तोभी किसीको नष्ट मत लेजाना। इसी लिये चलनेके समय मेरी जेवोंकी तलाशी भी हुई थी।

इसी तरह सब सामान लेस होकर १७०१ ईस्वीकी २४ वीं सितम्बरको छः बजे सवेरे मैंने तुरन्त बन्दरसे कूच किया। हवा दक्खिन पूरब कोनसे बहती थी। मैं सीधा उत्तर मुंह चला। करीब बारह मील जानेके बाद शामके छः बज गये। पश्चिमोत्तर कोनकी तरफ डेढ मीलके फासले पर एक टापू नजर आया। मैंने किश्तीको उधरही घुमाया। वहां पहुंच कर मैंने टापूके उस हिस्से मे जिधर हवाका जोर कम था अपनी किश्तीका लङ्गर गिराया। टापू आवाद नही था। कुछ खा पीकर आराम किया। खूब सोया। उठनेके दो घण्टे वाद सवेरा हुआ। रात साफ और स्वच्छ थी। उठ कर कलेवा किया हवा अच्छी थी। फिर लङ्गर उठाया। कलकी तरह फिर उत्तर मुंह जाने लगा। दिगदर्शक यन्त्रसे दिशाका निर्णय कर लेता था। उस दिन कोई बात लिखने लायक हुई नही। तीसरे दिन तीसरे पहरको एक जहाज दिखाई पडा दक्षिण पूर्वकी ओर जारहा था। मैंने भी किश्ती उसी तरफ घुमाई। पुकारा पर कोई जवाव नही मिला। हवाका जोर घट चला था। मैंने सब पाल तान दिये आध घण्टेके वाद जहाजवालोंने मुझे देखा। उन्होंने अपना फरहरा उडाया और बन्दूक छोडी। उस समय मेरे आनन्दका न ठिकाना था। फिर देश पहुंच कर अपने प्यारे बच्चोंके मुंह देखने की उम्मीदसे तबीयत हरीभरी होगई। जहाजके पास उतर गये। २६ वीं सेप्टेम्बरको शामको मैं जहाजके पास जा पहुंचा अङ्गरेजी फरहरा देखनेके लिये मेरा दिल उछल रहा था। गाय और भेडोंको जेवसे धर लिया। वाकी चीजोंको ले जहाज पर चढ गया। जहाज अङ्गरेजी सौदागरका था, जापान

वापिस आरहा था। इसका कप्तान था जौन विड़। यह बडा नेक तथा अपने काममे पक्का था। कोई पचास आदमी जहाज पर थे। उनमे मेरा एक पुराना दोस्त भी था। उसीने कप्तानसे मेरी जान पहचान कराई। कप्तानने मेरी बहुत खातिर की। उनके पूछने पर मैंने अपनी रामकहानी सुनाई तो वह मुझे पागल समझने लगा। जब मैंने पाकेटसे अपने पशुओंको निकाल कर सामने रख दिया तब मेरी बातोंको सत्य माना। फिर मैंने ब्लेफस्कू नरेशकी तसवीर तथा अशर्फिया दिखलाईं। मैंने कप्तानको दोसौ अशर्फियां दी और कहा कि इङ्गलैण्ड पहुंच कर एक गाय और गाभिन भेड दूँगा।

आखिर १७०२ ईस्वीकी १३ वी अप्रैलकी डाउन्सके बन्दरमें पहुंचे। एक बडी मुशकिल यह हुई कि एक भेडको एक चूहा पकड कर लेगया। बाकी ढोर कुशलसे पहुंचे। ग्रिनविच पहुंच कर उन्हें चरनेके लिये मैदानमे छोड दिया। वह सब चर कर मस्त होगये। अगर कप्तान कृपा कर घोडीसी बढिया जगह जहाज पर न देता तो यह सब जानवर जीते जागते न पहुंचते। जब चारा घट गया तो बिसकुट तोड कर पानीके साथ खिलाता था।

रुपये दिये बाकी पूंजी अपने पास रक्खी। चाचाजॉन मरनेके समय तीनसौ चालीस सालाना आमदनीकी सम्पत्ति मेरे नाम लिख गये थे। इतनीही आमदकी एक जगह और थी। इसवास्ते अन्न वस्त्रका अब टोटा नहीं रहा। मेरा लड़का जॉनी पाठशालामें पढ़ता है। मेरी बेटी जिसका नाम बेटी है, अब बेटे बेटीवाली हुई। वह सूईका काम करती है। बालबच्चोंसे बिदा होकर मैं फिर सफरसे चला। बिदाके समय सबकी आंखें डबडबा आई थीं। खैर किसी तरह बाहर हुआ। कप्तान जोन निकोलसका जहाज सूरतको जाता था। अबके मैं इसी जहाज पर सवार हुआ। इस यात्राका वृत्तान्त दूसरे खण्डमें लिखूंगा। यह यात्रा बड़ी मजेदार हुई। इसका वृत्तान्त आश्चर्य घटनाओंसे परिपूर्ण है।

इति प्रथम खण्ड समाप्त।



विचित्र-विचरण ।

द्वितीय भाग ।

श्रीवडिगनेराकी यात्रा ।

विचित्र-विचरण ।

द्वितीय भाग ।

ब्रौवडिंगनेगकी यात्रा ।

प्रथम परिच्छेद ।

सुखसे घरमें रहना मेरे भाग्यमें लिखाही न था। दो महीने बाद फिर खदेश त्यागना पडा। ता० २० वीं जून १७०२ ई०को सूरतके लिये जहाज खुला। जहाजमें सौदागरीकी चीजें भरी थीं। यह कह चुका हूं कि इस जहाजके कप्तानका नाम जौननिकोलस था। उत्तमाशा अन्तरीप तक वायु बहुत अनुकूल रही। यहां ताजा पानीके लिये हम लोग ठहर गये। पीछे जहाजकी पेंदीमें एक छेद दिखाई पडा। लाचार जहाज खाली किया गया। इधर कप्तानको शीत ज्वरने आघेरा। इसलिये मार्च तक हम लोग यहीं डेरा जमाए रहे। सब ठीक ठाक होजाने पर हम लोगोंने फिर लङ्गर उठाया। मैडेगास्करके मुहाने तक हम लोग निर्विघ्न चले गये। लेकिन इस द्वीपसे उत्तर मुंह होतेही वायुने अपना प्रचण्ड रूप धारण किया। इस प्रान्तमें दिसम्बरके प्रारम्भसे मईके आरम्भ तक सदैव समान गतिसे वायु सञ्चालित होती है। किन्तु १९ वीं अप्रैलको इसका वेग बहुतही बढ गया। लगातार बीस दिन तक यही दशा रही। इतनेमें हम लोग मुलक्काद्वीपसे कुछ पूरब जा पहुंचे। २ मईको हवाका जोर कुछ घट गया। मैं हर्षित हुआ परन्तु बहुदर्शी कप्तानने कहा "होशियार रहो—बडा भारी तूफान आनेवाला है।" आखिर वही हुआ। दूसरेही दिन भीषण तूफान

आपहुंचा। परमात्माकी दयासे जहाज डूबा तो नहीं पर राहसे भटक गया। हम लोग कहा जा पहुंचे कह नही सकते। बडे बडे पुराने जहाजी भी कुछ निर्णय न कर सके। हम सब हट्टे कट्टे थे, जहाज भी दुरुस्त था, खानेकी सब सामग्री थी लेकिन पीनेके लिये जल न था। बहुत कष्ट हुआ। जहाज जिधर जाता था उधरही जाने दिया। दिगदर्शन यन्त्रसे मालूम हुआ कि हम लोग ठीक पूरब जारहे है।

१६ वी जून १७०३ ईस्वीको दूरसे कुछ भूमि दिखलाई पडी। जहाज उधरही घुमाया गया। १७ वी को उस भूमिके पास जा पहुंचे। तो देखा एक टापू है। लङ्गर गिराया गया। कप्तानने कई हथियारबन्द आदमियोंको पानी ढूँढनेके लिये कहा। वह लोग किश्ती पर सवार हो किनारेकी ओर गये। कप्तानकी आज्ञा ले मैं भी उनके साथ चला गया था। किनारे पर आए लेकिन कोई जलाशय नही मिला और न आबादी वगैरा के कुछ चिन्ह दिखाई पडे। और लोग तो जलकी टोहमें इधर उधर घूमने लगे पर मै एक ओर सीधा एक मील तक योंही चला गया। जमीन बिलकुल पहाडी तथा ऊसर थी। थकावट मालूम हुई और दूसरे कोई मनोहर दृश्य दिखाई न दिया इससे मै किनारेकी ओर धीरे धीरे लौटने लगा। दूरसे मैंने देखा कि मेरे साथी सब किश्ती पर चढे जहाजकी तरफ जारहे है। मैंने बहुतेरा पुकारा पर कुछ लाभ नहीं हुआ। इतनेमें मेरी दृष्टि एक विशाल जन्तु पर जा पडी जो किश्तीके पीछे पीछे बडी तेजीके साथ जारहा था। उसके डग भी बडे बडे पडते तथा जल घुटनोंही तक था। डोंगी बहुत आगे निकल गई थी और जलमें जरा पत्थर भी बहुत थे इससे वह जीव उन लोगोंको दौड कर पकड न सका। उस भयानक जन्तुको देखतेही मेरे तो देवता कूच कर गये। डरके मारे फिर पीछे भाग चला। कुछ दूर जाकर एक पहाडी पर चढ गया। वहांसे आस पासकी छटा दिखाई पडी। जमीन आबाद थी। पर घासकी

लम्बाई देख कर पहले मुझे बहुतही अचरज हुआ। बीस फुट लम्बी घास मैंने तब तक कभी नहीं देखी थी।

आगे बढ़ा तो एक बड़ी चौड़ी सड़क मिली जो जौके खेतमें हो कर निकलती थी। पीछे मालूम हुआ कि वह सड़क नहीं मामूली पगडण्डी थी। उसकी चौड़ाई देख करही मुझे यह धोखा हुआ था। कुछ देर तक मैं योंही चला किया। सलेय फसलका था। नाजके पेड़ ४०।४० फुट ऊंचे देखनेमें आये। इन सब चीजोंको देख कर मेरी अक्ल गुम थी। लगातार एक घण्टा चलनेके बाद मैं खेतके दूसरे छोर पर जा पहुंचा। यह १२० फुट ऊंची टट्टी से घिरा हुआ था। और पेड़ सब तो इतने ऊंचे थे कि देखनेसे टोपी गिर पड़ती थी। एक खेतसे दूसरे खेतमें जानेके लिये चार सीढ़ियां बनी थीं। ऊपर एक पत्थर रक्खा था उसी परसे नीचे उतरना पड़ता था। इन सीढ़ियोंसे उस पार जाना मेरे लिये असम्भव था। क्योंकि एक एक सीढ़ी छः छः फुटके फासले पर और ऊपरवाला पत्थर २० फुटसे भी अधिक ऊंचे परथा। मैं इस विचार में था कि टट्टीमें कोई छेदबेद मिल जाय तो उस पार चला जाऊं इतनेमें बाड़के उस पारसे एक राक्षस सीढ़ीकी तरफ आता हुआ दिखलाई पड़ा। इसका भी डील डौल उसी जन्तुके जैसा था जो मेरे साथियोंके पीछे समुद्रमें दौड़ा जाताथा। यह साधारण गिरजाके समान ऊंचा था और एक एक डग दस दस गजका करता था। आश्चर्य्य और भयसे मेरी अजब दशा होगई। मैं एक झुरमटमें छिप

या काटने लगे। मुझने जहां तक बना दूर भाग चला। कहीं कहीं पौधे इतने घने थे कि चलनेमें बड़ी तकलीफ हुई। जौके नुकीले कांटे बदनमें चुभते थे पर क्या करता—प्राण लेकर भागा जाता था। पीछेसे जो काटनेवालोंकी आहट सुनाई पड़ी। थका-वट, भय और निराशासे मेरी घबड़ाहटका ठिकाना न रहा। लाचार हो वहीं लेट गया। सोचा अब प्राण देनेहीमें सुख है। स्त्री और पुत्रका स्मरण कर गला भर आया। अपनी मूर्खता पर बहुत पछताया। हाय। क्यों घर बार छोड़ा? न घरसे निकलता न जान जाती। हाय मैं बेमौत मरा। इस दुःखमें भी लिलीपटको याद आगई। वहां मैंही एक राक्षस समझा गया था। वहां मैं जङ्गी जहाजोंको खेंच लाया था और वहां न जाने मैंने कितने और अद्भुत कर्म्म किये थे। हाय! जैसा मैं लिलीपटी लोगोंको समझता था वैसेही यह राक्षस मुझे समझेंगे। सबसे दुःखकी बात तो यह है यह जङ्गली असभ्य जीव देखतेही मुझे खा जायगे क्योंकि आकार के सदृशही मनुष्यमें जङ्गलीपन और असभ्यता होती है। विद्वानों ने, बहुत ठीक कहा है कि मुकाबला किये बिना किसी वस्तुको छोटी बड़ी नहीं कहना चाहिये। लिलीपटी लोगोंसे भी छोटे और इन राक्षसोंसे भी बड़े जीव संसारमें हो सकते हैं।

इस बीचमें एक मजदूर मेरे बहुत निकट आगयाथा। मैंने सोचा अगर कहीं धोखेसे इसके पांव मुझ पर पड़ गये तो यहीं ढेर हो जाऊंगा या एक हाथ हसवेहीका चल गया तो मेरा काम तमाम है। डरके मारे प्राण सूख गये। जब वह मजदूर फिर आगे पैर बढाने लगा मैं खूब जोरसे चिल्ला उठा। मेरी आवाज सुनकर वह चौकन्ना हुआ और इधर उधर देखने लगा। आखिर उसकी दृष्टि मुझ पर पड़ी। जैसे कोई किसी विषैले छोटे जीव जन्तुको देख कर होशियारीसे उसे उठानेकी तरकीब सोचता है वैसेही वह भी खड़ा खड़ा सोचने लगा। निदान साहस करके उसने अगूठे तर्जनीसे मेरी कमर पकड़ कर उठा लिया और आंखोंसेतोल

गज दूर रख कर गौरसे देखना शुरू किया। जब उसने मुझे जमीन से साठ फुट ऊपर उठाया तो मैं कुछ न बोला। जिसमे मैं गिर न पड इस ख्यालसे उसने खूब जोरसे मुझे दबाया था। उसके दबानेसे बहुतही कष्ट हुआ। मैं सूर्य्यकी ओर निहार कर अति दीनतासे विनती करने लगा। मुझे यही मालूम होता था कि अब इसने मुझे जमीन पर पटका क्योंकि हम लोग भी छोटे मोटे कीडे मकोडेको योंही फेंक देते है। लेकिन परमात्माकी दयासे मेरे ग्रह अच्छे थे। वह मेरी बोली और हाव भावसे बहुतही प्रसन्न हुआ। आदमियोंकी भाति बोलते देख कर उसे और भी अचम्भा हुआ। परन्तु मेरी बाते उसकी समझमें नही आई। आखिर आखे डबडबा कर मैं रोने लगा और कमरकी ओर देखने लगा। वह मेरा भाव समझ गया। चटपट कोटके दामनमें मुझे लपेट कर अपने मालिकके पास लेआया। यह मालिकराम वही थे जिनको खेत में पहले मैंने देखा था।

द्वितीय परिच्छेद।



किसानने अपने मजदूरसे सब बातें सुन कर एक तिनका जो छडीके समान लम्बाथा उठा लिया और मेरे कोटके दामनको उलट पलट कर देखा। उसने शायद समझा कि यह खाल है। फिर बाल हटा कर मेरे मुहको भली भात देखा। सब मजदूरोंको बुला कर उसने पूछा कि ऐसा जानवर तुम लोगोने और कभी यहा देखा है।

फिर्योंका बटुआ निकाल कर उसके आगे रक्खा। उसने ले तो लिया पर खोल न सका। तब मैंने इशारेसे कहा कि आपनी हथेली भूमि पर रख दो। उसने वही किया। मैंने बटुआ खोल कर सब सिक्के उसके हाथ पर उलट दिये। उसने थूकसे अपनी अंगुली तर के उन सिक्कोंको उठा उठा कर देखा लेकिन कुछ समझ न सका। फिर उसने मुझे बटुआमें और बटुएको जेबमें रखनेका इशारा किया। मैंने तुरत उसकी आज्ञा सादर चढ़ाई।

अब किसानको पूरा विश्वास होगया कि मैं कोई सज्ञान जीव हूं। वह मुझसे बारम्बार बोलता था। यद्यपि उच्चारण स्पष्ट था तथापि उसकी बोलीसे मेरे कानके परदे फटते थे। मैं भी गरज गरज कर कई बोलियोंमें उत्तर देता पर कोई भी किसीकी बात नहीं समझता था। उसने मजदूरोंको काम पर जानेके लिये कह कर पाकटसे अपना रूमाल निकाला। यह एक फुटसे ज्यादे मोटा नहीं था। उसी रूमालमें बांध कर वह मुझे अपने घर ले गया। विलायतमें बीबियां जिस प्रकार मकड़े और मेढक देखकर डर जाती हैं उसी प्रकार उसकी स्त्री भी मुझे देखतेही चौंक उठी और चिल्ला कर भाग गई। निदान वह मेरी चेष्टाओंको देख ढीठ हुई और फिर तो मुझे बहुत प्यार करने लगी।

बारह बजे दिनको खानसामा खाना लेकर हाजिर हुआ। जिस रकाबीमें खाना आया था उसका व्यास २४ फुट था। किसान के परिवारमें केवल उसकी स्त्री तीन लड़के और उसकी बुढ़िया दादी थी। जब सब भोजन करनेके लिये बैठे तब किसानने कुछ दूर फासले मेज पर मुझे बिठाया। मेज तीस फुट ऊंची थी। मैं गिरने के डरसे किनारा छोड़ बीचमें जा बैठा। किसानकी स्त्रीने मांस के तथा रोटीके कुछ टुकड़े थालमें रख कर मेरी ओर सरका दिये। मैं सलाम करके चबाने लगा। मेरा खाना देख कर वह सब बहुत ही प्रसन्न हुए। फिर एक छोटासा प्याला मंगवा कर मुझे शराब पीनेके लिये दी। यहाशय। इस छोटेसे प्यालेमें छः बोतल शराब

चटती थी। मैंने बडी कठिनतासे दोनों हाथोंसे प्यालेको उठाया और अदबके साथ गृहिणीका स्वास्थ्य पान किया। फिर अङ्गरेजी में कृतज्ञता प्रकाशकी। इस पर वह सब खिलखिला उठे। उनके विकट हास्यसे मैं तो वधिर होगया। मदिराका स्वाद कुछ बुरा नहीं था। किसानने सङ्केतसे मुझे अपनी तरफ बुलाया। मैं चला लेकिन रोटीके टुकडेको ठोकर खाकर मेज पर पट गिर पडा। ईश्वरकी दयासे चोट नहीं लगी। खैर, उठा और फिर चलने लगा। इतनेमें किसानके बेटेने जिसकी उमर दस वर्षसे अधिक न थी टांग पकड कर मुझे उठा लिया और फिर इतना ऊंचा उठाया कि मेरा कलेजा कांप गया। किसानने लडकेके हाथसे मुझे छीन लिया और एक तमाचा उसके बायें गाल पर जमा कर वहांसे चले जानेके लिये कहा। मैंने हाथ जोड कर कसूर माफ करनेके लिये इशारा किया। उसने भी मेरी बात मानली। बालक फिर बैठ गया। मैंने पास जाकर उसके हाथको चूमा और किसानने मेरी देह पर बालकका हाथ फिरवा दिया।

किसीके सामने बराबर डटा रहा। दो चार बार मालूम करके उसकी बगलसे निकल भी गया। आखिर वही बिचारी डर कर चम्पत होगई। इतनेमें तीन चार कुत्ते आपहुंचे। यह सब बहुत बडे थे—इनमेंसे एक तो हाथीके समान था। मैं इन सबको देख कर तनक भी न डरा।

जब भोजन समाप्त होने पर था दाई एक वर्षका बालक गोदमें लिये आ उपस्थित हुई। वह बालक खिलौना समझ कर मुझसे लेनेके लिये रोने लगा। उसकी माता उसका मचलना देख कर मुझे उसके पास लेगई। उस लडके नादानने मेरी कमर पकडली और मेरा सिर अपने मुंहमें डाल लिया। मैं इतने जोरसे चिल्ला उठा कि उसने डर कर मुझे फेंक दिया। अगर गृहिणी अपने अंचलमें मुझे न लेलेती तो मैं अवश्य चकनाचूर हो जाता। बालक फिर रोने और मचलने लगा। दाईने चुप करानेके वास्ते झुनझुना जो बालककी कमरसे बधा था बजाया पर वह क्यो चुप होने लगा था ? इस झुनझुनेका शब्द बहुत कर्कश था। जब किसी तरहसे भी वह शान्त न हुआ तब उसने अन्तिम उपाय किया अर्थात् उसे दूध पिलाने लगी। उस दाईके स्तनद्वयको देख कर मुझे जितनी घृणा हुई उतनी आज तक कभी नही हुई। इन स्तनोंके रूप रङ्ग और आकारकी तुलना किससे करू सो समझमें नहीं आता है। यह कुच छ फुट ऊचे तथा इनका घेरा १६ फुट से कदापि कम न था। स्तनका मुंह मेरे सिरसे आधा था। इनके रङ्ग विचित्र थे। इन पर नाना प्रकारके दाग थे। इन कुचों को देख कर मेरा तो जी घबडा उठा। उस समय मुझे विलायती बीबियोंकी याद आगई। यह बीबिया हमारे समान होनेहीके कारण इतनी सुन्दर मालूम होती हैं। इनके दोष हम लोग इन आखोंसे नहीं देख सकते हैं। यदि सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से इनके शरीर देखे जाय तो इनका यह गोरा चमडा भी रूखा मोटा और बदरङ्ग ।॰म पड़ेगा।

जब मैं लिलीपटमें था तो वहांके लोग मुझे संसार भरसे अधिक गोरे मालूम होते थे। मुझे स्मरण है एक दिन जब इसी बातकी चर्चा चली तो वहांके एक पण्डितने कहा था "हां जब तुम्हें मैं नीचेसे देखता हूं तो तुम्हारा चेहरा साफ सुथरा चिकना और गोरा मालूम पड़ता है लेकिन जब तुम अपने हाथमें मुझे उठा लेते हो तब तुम्हारा चेहरा भयङ्कर मालूम देता है—बदनमें बड़े बड़े छेद दिखाई पड़ते हैं। दाढ़ीकी खूंटियां सूअरके बालसे दस गुना बड़ी सिखाई देती हैं और रङ्ग बिलकुल फीका जचने लगता है।" जब वह लिलीपटकी स्त्रियोंकी बाबत कहता कि फलानीके मुंह पर दाग है—फलानीका मुंह चपटा है और फलानीकी नाक बड़ी है तो मुझे कुछ भी नहीं मालूम होता था। यह बात बहुत ठीक है कि छोटी छोटी वस्तुओंका गुण दोष इन नेत्रोंसे प्रगट नहीं होताहै परन्तु बड़े बड़े पदार्थोंका होजाताहै। पाठकगण! कहीं आप यह न समझ बैठे हों कि यह विराट जीव कुरूप होते हैं। नहीं ऐसा मत समझिये—यह बड़े सुन्दर और रुपवान होतेहैं। विशेष कर मेरे किसानकी आकृति पृथ्वी परसे अति कमनीय मालूम होती थी।

खैर भोजन समाप्त हुआ। किसान फिर अपने खेत पर गया किन्तु उसके भावसे प्रगट हुआ कि वह जानेके समय अपनी स्त्रीसे मेरी हिफाजत करनेके वास्ते कह गया था। मैं थकावटके मारे ऊंघता था। स्त्रियोंने मेरी दशा समझ अपने बिस्तरे पर मुझे सुलाकर एक साफ रुमाल उढ़ा दिया। यह रुमाल काहेको बड़ी जहाज का पाल नहीं नहीं उसका भी लकड़दादा था।

थी इसलिये नीचे उतरना चाहता था। पुकारनेकी हिम्मत न पडी और पुकारही कर क्या होता—मेरी आवाज तो वहीं गूंजकर रह जाती। जब मैं पड़ा पड़ा सोच रहा था दो चूहे पलङ्ग पर आधमके और लगे इधर उधर सूंघा साघी करने। एक सूंघते सूंघते मेरे मुंहके पास आपहुंचा। मैं डरके मारे उठ बैठा और अपना खञ्जर निकाल लिया। यह लगे दोनो तरफसे मुझ पर आक्रमण करने। एकने तो झपट कर मेरा गलाही पकड़ लिया। ईश्वर की दयासे मैंने भी तुरत खञ्जरका एक हाथ ऐसा मारा कि वह वहीं एकसे दो होगया। अपने साथीकी यह दशा देखकर दूसरा चलता बना लेकिन मैंने बड़ी फुरतीके साथ उस पर भी एक हाथ चलाही दिया था। इसके बाद दम लेनेके लिये मैं चारपाई पर पर टहलने लगा। यह चूहे पहाड़ी कुत्तेके समान बड़े तथा अति भयङ्कर थे। यदि मेरे पास खञ्जर न होता तो यह जरुर मुझे खा जाते। इसकी दुम मैंने नापी तो एक इञ्च कम दो गज हुई। लोहूसे बिछौना तर बतर होगया। मैंने बड़ी कठिनतासे मरे हुए चूहेको नीचे फेंक दिया।

इतनेमें गृहिणी आगई। मुझे लहूमें भरा देख कर चट गोद में उठा लिया। मैंने चूहेकी ओर सकेत किया और बता दिया कि मैं निरापद हूं। यह देख वह बहुत प्रसन्न हुई। फिर दाईको बुलाया दाईने आकर चिमससे मरे चूहेको खिड़की की राहसे फेंक दिया। गृहिणीने मुझे मेज पर खड़ा किया। मैंने अपना खञ्जर दिखलाया और पोंछ पाछ कर रखलिया। अब मुझे उस कामकी हाजत थी जिसको दूसरा कोई मेरे बदले नहीं कर सकता था। मैंने संकेतमें कहा कि मुझे जमीन पर बिठला दो। बडी कठिनतासे उसने मेरा अभिप्राय समझा। मुझे गोदमें लिये बगीचे पहुंची। वहा जमीन पर बिठा दिया। मैं उसे वहीं रहनेके लिये कह कर दोसौ गज आगे निकल गया। एक ‑सटमें बैठ कर मैंने हाजत रफाकी।

ऐसी ऐसी बातें लिखनेसे बहुतेरे पाठक नाक भौंह चढ़ावेंगे परन्तु उन्हें जान लेना चाहिये कि तत्वज्ञानियोंकी कल्पनाशक्ति बढ़ानेमें यह बातें बहुत कुछ सहायता करेंगी। इन्हीं लोगोंके उपकारके लिये मैंने अपनी यात्राका रत्ती रत्ती वृत्तान्त लिख डाला है। नाजुक मिजाज पाठक क्षमा करें।

तृतीय परिच्छेद।



किसानकी नौ बरसकी एक कन्या थी। वह सूईके काममें तथा बच्चोंको कपड़े पहरानेमें बड़ी पक्की थी। इसकी मा और इसने मिल कर मेरे सोनेके लिये एक पालना तय्यार किया था। चूहोंके डरसे रातको यह पालना ऊंची जगह पर लटकाया जाता था। जब तक इन लोगोंके साथ रहा मैं इसी पर सोता था। ज्यों ज्यों इनकी भाषा मैं सीखने लगा त्यों त्यों मेरा सुख बढ़ चला—जब जिस वस्तुकी दरकार होती मांग लेता था। यह बालिका ऐसी बुद्धिमती थी कि दोही चार बार उसके सामने कपड़े उतारनेसे वह मुझको कपड़ा पहनाना सीख गई। मैं नहीं चाहता था कि वह मुझको कपड़े पहरावे तथापि वह पहना देती थी। उसने मेरे वास्ते सात कमीजें तथा और कई कपड़े तैयार किये थे। यह कपड़े बहुत मोटे थे। यह मुझको अपनी भाषा भी सिखाती थी। जब मैं कोई चीज देखकर पूछता यह क्या है तो वह अपनी भाषामें उसका नाम बता देती थी। बस इसी ढङ्गसे उस देशकी भाषा मैं बहुत जल्द सीख गया। इस बालिकाका स्वभाव बहुत अच्छा था। यह नाटी थी तथापि चालीस फुटसे कहीं लम्बी थी। इसीने मेरा नाम ग्रोल्‌ड्रिग (बचूड़ा) रक्खा। फिर सब इसी नामसे मुझको पुकारने लगे। उसीकी कृपासे उस देशमें मेरी जान बचीथी। जब तक वहां मैं रहा उससे कभी अलग नहीं हुआ। वह मुझको खिलाती पिलाती थी इससे मैं उसको "दाया" कहता। मैं उसका अहसान मानता हूं। वह मेरा बहुत लाड प्यार करती थी।

आस पासके गावोंमें मेरी खबर बिजलीकी तरह फैल गई। जहां सुनो वहां मेरीही चर्चा होती थी। आपसमें लोग कहते थे "अमुक किसानके खेतमें एक विचित्र जीव मिला है। वह बहुत ही छोटा है लेकिन सूरत शकल आदमी कीसी है। सब कामभी आदमीकी तरह करता है। उसकी बोली अजब ढङ्गकी है। लेकिन यहांकी भी दो चार बोलियां वह सीख गया है। दो पैरसे सीधा चलता है—वह पालतू और सीधा है—बुलानेसे आता और कहनेसे सब काम करता है। देखनेमें बहुत सुन्दर और रङ्ग भी गोरा है।" इस बातकी जांचके लिये एक मनुष्य जो किसानका दोस्त और पडोसी था आया। किसानने मुझको लाकर मेज पर खडा कर दिया। उनके कहनेसे दो चार कदम चला, खञ्जर निकाल कर घुमाया और फिर रख लिया। उन्हींकी भाषामें उनका स्वागत किया। यह सब मैंने अपनी दायासे सीखा था। इसके बाद वह चश्मा लगाकर मुझको भली भांति देखने लगा। उसके दोनों नयन दो चन्द्रमाओंके समान दो झरोखोंमेंसे चमकते मालूम हुए। मैं इस दृश्यको देख कर हंसी रोक न सका। मुझको हंसते देख सब कोई हंस पडे। इस पर बूढा बहुत नाराज हुआ और बन गया। यह परले सिरेका कञ्जूस और लोभी था। मेरे लिये तो साक्षात् साढे साती शनिश्चर था। उसने किसानको मेरे द्वारा धन उपार्ज्जन करनेकी सम्मति दी। जब यह दोनों मेरी ओर निहार निहार कर आपसमें बातचीत करने लगे तो मेरा माथा ठनका। मैंने समझ लिया कि कोई भारी विपद आनेवालीहै। दूसरे दिन सवेरे दायाने सब वृत्तान्त अपनी मातासे सुन कर मुझको बता दिया। वह बिचारी मुझको गले लगा कर रोने लगी और बोली "मैंने तो समझा था कि तू मेरे पास रहेगा सो नहीं हुआ। पारसाल मैंने एक मेम्ना पाला था जब बडा हुआ तो बाबाने उसे कसाईके हाथ बेच दिया। बाबा कभी कोई चीज मेरे पास नहीं रहने देते हैं। न जाने हाटमें तेरी क्या दुर्दशा होगी।" पर मुझको किसी बात

की चिन्ता न थी। मुझको पूरा भरोसा था कि कभी न कभी इस फन्देसे मैं अवश्य छूट जाऊगा। मैंने सोचा अगर इङ्गलंडेश्वर भी यहा आते तो उनकी भी यही दशा होती फिर मेरी क्या,गिनतीहै ?

किसानने अपने मित्रकी सम्मतिके अनुसार हाटके दिन नगराभिमुख प्रस्थान किया। मुझको एक पिञ्जडेमें, बन्द करके आगे रख लिया और दायाको अपने पीछे घोडे पर बिठा लिया। पिञ्जडेकी बनावट सन्दूक कीसी थी। इसमें हवा आने जानेके लिये दो चार छेद तथा एक द्वार बना हुआ था। दायाने मेरे लिये एक छोटीसी गद्दी भी बिछा दी थी। अस्तु, हम लोग ठिकाने पर पहुंचे। आधेही घण्टेमें बाईस कोसकी मञ्जिल पूरी हुई। हरारतसे मेरे तो बन्द बन्द टूटतेथे क्योंकि घोडा बराबर सरपट दौडता आया था। इसके एक एक कदम चालीस चालीस फुट पर पडते थे। किसानने एक सरायमें डेरा जमाया। वह प्राय: यहीं उतरा करता था। सरायवालेसे सब ठीक ठाक करके उन्होंने विज्ञापन निकलवाया कि एक अजीब जानवर आया है जो छ: फुट लम्बा और बहुत सुन्दर है। सूरत आदमीकी है। बोलता है और बहुत से अद्भुत काम करता है जिसको देखना हो सरायमें आवे।

सरायके एक बडे कमरेमें जो तीनसौ वर्ग फुटका था एक मेज पर मैं खडा किया गया दाया पासही एक तिपाई पर निगरानी तथा तमाशा दिखानेके निमित्त बैठी। किसान दरवाजे पर खडा हुआ। जिसमें गोलमाल न हो इसलिये तीस तीस आदमियोंको बारी बारीसे भीतर भेज देता था। दायाके कहनेसे मैं मेज पर चलता था। जो कुछ वह पूछती उसका मैं जवाब देताथा। आने वालोंका स्वागत तथा स्वास्थ्यपान करता था। तलवार निकाल कर तालाबाजी दिखाता और न जाने क्या क्या दिखाता था। दाया उतनेही प्रश्न करती थी जितने मैं समझता था। इसी तरह उस दिन मैंने १२ झुण्डके सामने अपना तमाशा दिखाया। मैं थक कर अधमुआ होगया। जिन लोगोंने देखा उन्होंने इतनी प्रशंसाकी

कि सारा शहर सरायमें टूट पड़ा और सब दरवाजा तोड़ कर भीतर घुसनेके लिये तैयार होगये। दायाको छोड़ कोई दूसरा मुझे छू नहीं सकता था। दर्शकगण भी इतनी दूर रहते थे कि उनके हाथ मुझ तक नहीं पहुंच सकते थे। यह सब प्रबन्ध किसान ने केवल अपने लाभके निमित्त कर रक्खे थे। इतने पर भी स्कूल का एक शैतान छोकड़ा बादाम खेंच कर मुझको मारही बैठाथा। कुशल हुई नहीं तो मेरी खोपड़ी फट जाती। यह बादाम लौकी के बराबर था। आखिर वह छोकड़ा खूब पीटा गया और निकाल दिया गया।

हाट बन्द हुई। हम लोग भी घर वापिस आये। अबके किसान ने मेरे आरामके लिये बढ़िया सवारीका प्रबन्ध किया। इस आठघण्टेकी कड़ाचूर मेहनतसे मुझको ज्वर हो आया। उठने बैठनेकी ताब न रही। तीन दिन तक बेसुध पड़ा रहा। चौथे दिन होश हुआ पर हाय! घर पर भी मुझको चैन नहीं। देखने वाले झुण्डके झुण्ड घर परही आने लगे। एक दिन तीससे अधिक सज्जन सपरिवार पधारे। किसानने सबसे पूरा दाम वसूल किया था। आस पासके अर्थात् सौ मील तकके लोग मुझको देखने आये। किसानके घर रुपयोंकी वर्षा होने लगी। मुझको बुधवार के सिवा कभी मरनेकी भी छुट्टी नहीं मिलती थी। बुधवारही इन लोगोंका रविवार अर्थात् विश्रामका दिन था।

किसानको अब रुपयेकी चाट लगी। उसने मुझको बड़े बड़े शहरोंमें घुमानेका सङ्कल्प किया। आखिर सब सामानसे लैस होकर वह १७ वीं अगस्त १७०३ ईस्वीको राजधानीके लिये उठ खड़ा हुआ। यह राजधानी वहांसे तीन हजार मील दूर थी। दाया भी साथ चली। सवारीमें वही घोड़ा था। मैं अपने पिञ्जड़ेमें था और दाया इसे लिये हुए थी। मेरे आरामकी सब सामग्री पिञ्जड़े में मौजूद थी। चीज वस्तुकी देख भालके लिये साथमें एक [illegible] भी था।

किसानने रास्तेके निकटके प्रत्येक शहर और गांवमें तमाशा दिखा कर रुपया बटोरना विचारा था परन्तु दायाकी राय न हुई। उसने कहा "ऐसा करनेसे ग्रिलड्रिग बीमार होजायगा और मैं भी घोड़े पर चलनेसे थक जाती हूं—बहुत भारी मञ्जिल करना ठीक नही।" मञ्जिल हलकी होने लगी। एकसौ चालीस पचास मील परही पड़ाव पड़ने लगा। हवा खिलाने तथा देशकी सैर करानेके लिये दाया अकसर मुझको बाहर निकालती परन्तु बराबर बाकसके पासमें रहती थी। छः सात नदियां हम लोगोंने लांघी। सब गङ्गा और नील नदीसे गहरी तथा बड़ी थी। टेम्ससी छोटी नदी वहां एक भी नहीं मिली। रास्तेमें दस सप्ताह लगे थे। दाया के मना करने पर भी मैं कोई अठारह बड़े बड़े शहरों तथा कई छोटे छोटे गांवोंमें दिखाया गया था।

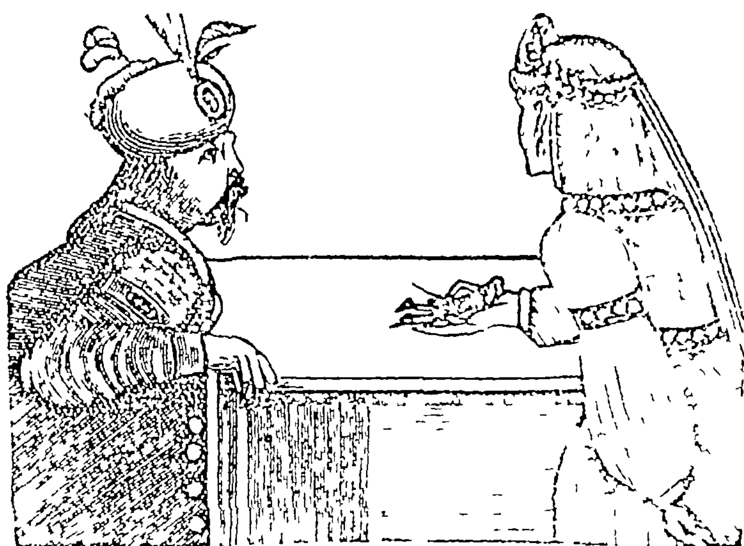
२६ वीं अक्तूबरको हम लोग राजधानीमें जा पहुंचे। इसका नाम "लर बरलग्रड" है। इस नामका अर्थ है "विश्वगौरव"। किसानने राजभवनके समीपही नगरके प्रधान मुहल्लेमें एक मकान किराये पर लिया। फिर विज्ञापन निकाला गया। इसमें मेरा पूरा वर्णन था। चारसौ फुट लम्बे चौड़े कमरेमें एक बड़ी मेज रक्खी गई। इसका व्यास ६० फुट था और इसके चारों ओर लोहे का कटहरा तीन फुट ऊंचा लगा हुआ था। इसी मेज पर मुझको तमाशा करना पड़ता था। मैं दस बार दिनमें दिखाया जाता था। दर्शकगण भी देखकर आश्चर्य तथा आनन्द प्रगट करते थे। किसान का हाथ गरम होताथा। अब मैं उस देशकी भाषाको भी भली भांत बोलने तथा समझने लग गया था। दाया जेबमें छोटीसी एक पोथी धर लाई थी उसीको मैं पढ़ता था। यह सेमसन साहबके एटलासके बराबर थी।

चतुर्थ परिच्छेद।



फल यह हुआ कि थोड़ेही दिनोंमें मेरा स्वास्थ्य बिगड़ गया भूख मन्दी पड़ गई और शरीर सूख कर काटा होगया। किसानने मेरी मौत निकट समझ और भी हाथ साफ करना चाहा। उसने विचारा अब जो कुछ मिल जाय वही नफा है। इसी बीचमें महारानीके यहांसे बुलाहट आगई। किसान भी लालचके मारे उठ खड़ा हुआ। महारानी मेरी आकृति तथा खेल तमाशा देख कर बहुतही प्रसन्न हुई। महारानीने हाथ बढ़ा दिया मैंने सादर उसका चुम्बन किया। फिर उन्होंने मेरे देशका वृत्तान्त तथा सफर का हाल वगैरः पूछा। मैंने जहां तक बना स्पष्ट रूपसे सब कह सुनाया। महारानीने पूछा "क्या तुम मेरे पास रह सकतेहो?" मैंने सलाम करके जवाब दिया "मैं इस समय किसानका गुलाम हूं। अगर स्वाधीन होता तो श्रीमतीकी सेवामें रहना अपना सौभाग्य समझता।" महारानीने तब किसानसे पूछा। किसानने तो जानलिया था कि मैं दो चार दस दिनमें मर जाऊंगा इससे उसने मुझको बेचनाही उचित समझा अन्तको उसने मुझे हजार अशर्फियोंमें महारानीके हाथ बेच डाला। जब किसान अशर्फियां लेकर जाने लगा तब मैंने महारानीसे दायाके रखनेके लिये प्रार्थना की और कहा इसके रहनेसे मुझे बहुत आराम मिलेगा। महारानीने मेरी बात मानली। तब किसानही क्यों उजर करने लगा था? राजदरबारकी नौकरी बड़े भाग्यसे मिलती है। बिचारी दाया भी खुशीके मारे फूल कर कुप्पा होगई। किसान सलाम करके मुझसे बोला "लो तुम्हें अच्छी जगह पहुंचा कर मैं जाता हूं।" मैंने सलामके बदले सिर्फ सलाम किया पर कुछ कहा नहीं। किसान भी अशर्फियोंकी गठरी ले चलता हुआ।

किसानके चले जाने पर महारानीने मेरी रुखाईका कारण पूछा। मैंने कहा "किसानने जब मुझे खेतमें पाया तो मेरी खोपड़ी चूर चूर नहीं करदी बस इतनाही उपकार इसने मेरा किया है। उपकारके बदले वह बहुत धन उपार्जन कर चुकाहै। अभी



नं० ८

मैं महारानीकी दाहिनी हथेली पर पट पड़ाया।

पृष्ठ ८३

यहांसे भी हजार मुहरे लेगयाहै। अब मैं उससे उऋण हूं। जितना परिश्रम वह मुझसे करवाता था उतना परिश्रम करके मुझसे दस गुने बलवाले जीव भी नही जी सकते है मै अब तक जीवित हूं यही आश्चर्य है। मेरी सारी देह गल गई है। यदि वह मेरी मृत्यु निकट न समझता तो इतने सस्ते दाममें श्रीमती मुझे कदापि न पाती। अब मै श्रीमती जैसी दयाशील, सृष्टि भूषण, विश्वप्रिया, आयुष्मती सम्हिषीकी शरणमें आया हूं पूर्ण आशा है कि अब मै सुखसे आनन्द पूर्वक अपना समय विताऊंगा।"

मेरी बाते सुन कर महारानीको हर्ष तथा आश्चर्य हुआ। वह हाथमें उठा कर मुझे महाराजके निकट लेगई। महाराज शयनागारमें थे। महाराजका चेहरा दृढ और गम्भीर था। मैं महारानीकी दाहिनी हथेली पर पट पडा था। महाराज मुझे भली भाति न देख सके थे—पूछा "यह चिडिया कबसे पालीहै?" महारानी बडी बुद्धिमती थी उन्होने चट मुझको मेज पर खडा करदिया और सारा वृत्तान्त महाराजसे निवेदन करनेके निमित्त कहा। मैने बहुत थोडे शब्दोमें अपनी राम कहानी कह सुनाई। दाया द्वार पर खडी थी। वह भी भीतर बुलाई गई। उसने पूरा हाल कह सुनाया। उस बेचारीको मेरे देखे बिना चैन कहा?

महाराजकी विद्याका वहा बहुत कुछ नाम था। आप गणित और विज्ञानमें पारगत थे किन्तु मेरा ढङ्ग देख कर आपकी भी बुद्धि चकरा गई। आपने अपनी विद्या और बुद्धिके प्रतापसे मुझे कलका पुतला या किसी घडीका पुरजा समझा परन्तु जब मेरी बोली मेरा उच्चारण प्रभृति सुना तो आपको बहुतही अचम्भा हुआ। मेरी बातोका विश्वास आपको नही हुआ। श्रीमान्‌ने फिर कई प्रश्न किये मैने सबका सार्थक और स्पष्ट उत्तर दिया। इन वाक्योंमे वही दोष थे जो विदेशीसे उच्चारण वा मुहाविरेमें होसकते हैं। पर एक बात और है—भाषा मेरी गवारी थी क्योंकि किसानहीके घर मैने शिक्षा पाई थी।

महाराजने तीन पण्डित बुलवाये। इन लोगोंने मुझको खूब अच्छी तरह देख भाल कर अपनी जुदी रायदी। यह तो सबोंने माना कि मैं स्वाभाविक नियमसे उत्पन्न नहीं हुआ हूं और न मेरी बनावटही ऐसी है कि मैं तेज चल कर, वृक्ष पर चढ कर और बिलमें रह कर अपने प्राणको बचा सकूं। दांतोंकी परीक्षा कर उन लोगोंने मुझको मास खानेवाला जानवर ठहराया पर इसमें यह असमंजस आपड़ा कि चौपाये सबही मुझसे बहुत बड़े हैं उनका मास खाना मेरे लिये असम्भव है। पीछे यह सिद्धान्त हुआ कि मैं कीडे मकोडे खाता हूं। एक पण्डितने मुझको अकाल प्रसूत बताया पर दूसरेने उसका खण्डन किया। कहा "ऐसा हो नहीं सकता क्योंकि इसके अङ्ग सब पूरे है। जो असमय उत्पन्न होता है उसके अङ्ग अधूरे होते है और वह जी नहीं सकताहै।" इन बुद्धिमानोंकी रायसे मैं बौना भी नहींथा क्योंकि मैं बहुतही छोटा हूं। महारानीका प्यारा बौना अत्यन्त ठिङ्गना होने पर भी ३० फुट लम्बा था। शेषमें मैं एक अद्भुत जीव समझा गया।

यह सब होजाने पर मैं हाथ जोड कर बोला "महाराज। मै जिस देशका हूं उस देशमें करोडो स्त्री पुरुष इसी डील डौलके है। जीव जन्तु, पेड पत्ते, घर द्वार प्रभृति भी इसी परिमाणके है। मौका पडने पर हम लोग अपनी रक्षा कर सकते है। जैसे यहाके लोग सब काम कर सकते हैं वैसे हम लोग भी वहा करते है? मेरी बात सुन कर सब मुंह बिचकाके हस पडे और बोले "किसानने इसको अच्छा सबक पढाया है।" महाराज सबसे बुद्धिमान थे। पण्डितो को बिदा करके उन्होंने किसानको बुलाया। भाग्यसे किसान उस समय तक शहरहीमें था। वह हाजिर किया गया। महाराजने एकान्तमें उससे कुछ पूछा फिर इकट्ठा कर सबका इजहार लिया। अब उन्हें मेरी बातोंका कुछ कुछ विश्वास होने लगा। महाराजने मुझे महारानीके सपुर्द किया और यत्नपूर्वक रखनेके लिये कहा।

मेरा प्रेम दायासे देख कर दायाको भी रहनेके वास्ते हुक्म दिया। एक कमरा उसके रहनेके लिये दिया गया। उसके लिखाने पढाने के वास्ते एक गुरुआनी नियतकी गई। सेवा टहलके लिये दासिया मिली। लेकिन मेरे लालन पालनका भार दायाहीके सिर रक्खा गया। महारानीने अपने खास बढईको पिंजरा बनानेकी आज्ञा दी। यह बडा सुघड कारीगर था। इसने मेरे कहनेके अनुसार तीन सप्ताहमें लकडीका एक सुन्दर पिंजरा बना दिया। यह सोलह फुट लम्बा, सोलह फुट चौडा तथा बारह फुट ऊंचा था। इसमें खिडकिया, दरवाजे और अगल बगल दो छोटी छोटी कोठरिया थी। ऊपर तख्तेबन्दी थी। इसमें एक द्वार भी था जो चूलके सहारे खुलता और बन्द होता था। दिनमें बिछौने आदिको धूप खिलानेके लिये दाया दरवाजा खोल देती और रात को बन्द कर देती थी। कहनेके लिये तो पिञ्जरा था पर वास्तवमें यह खासा कमरा था, एक चतुर बढईने जिसका छोटी छोटी चीजें बनानेमें बडा नाम था। दो कुर्सिया तथा मेज बना दी थी। चीज वस्तु रखनेके वास्ते एक सन्दूक भी बना दिया था। यह सब ठीक हाथीदांतकेसे मालूम पडते थे। जिसमें मुझे कष्ट न हो इस लिये मेरे घरके चारों ओर ऊपर नीचे तमाम रूईकी मोटी गद्दी मढदी गई। दरवाजेमें छोटासा एक ताला लगाया गया। यह फरमाइश देकर बनवाया गया था। इतना छोटा ताला वहां पहले और कभी किसीने नहीं देखा था। लेकिन मेरे लिये तो वह महाताला था। दायासे शायद खोजाय इसलिये मैंहो चाभीको अपने पास रखता था। सबसे महीन रेशमी कपडेकी पोशाक मेरे लिये बनी। यह कपडा विलायती कम्बलके समान मोटा था। यह पोशाक इसी देशके ढङ्गकी थी। इन लोगोंका पहरावा कुछ पारसियोंसे और चीना लोगोंसे मिलताथा परन्तु देखनेमें सुन्दरथा।

महारानी अब मुझे इतना चाहने लगी कि बिना मेरे वह भोजन नहीं करती उनकी बाईं ओर मेरी मेज कुर्सी लगती थी और पासही

तिपाई पर दाया हिफाजतके लिये बैठती थी। मेरे लिये चान्दीके छोटे छोटे वर्त्तन मगाये गयेथे। दाया इन्हे अपनी जेबमे रखतीथी। जब मैं मागता तो साफ करके देती। महारानीके पात्रोंके आगे यह लडकोंके खिलौनेसे मालूम होते थे। महारानीके सङ्ग दोनों राजकुमारियोंके सिवा और कोई नही खाता था। इनमेसे एक तो सोलह और दूसरी तेरह बरसकी थी। महारानी मांसका एक टुकडा मेरी रकाबीमें डाल देती मै उसे काट काट कर खाता और वह तमाशा देखती थी। महारानी बहुत कम खाती थी पर हमारे यहाके दस बारह कुली मजूरोंकी पूरी खुराक आपका एकही निवाला था। इस अन्धाधुन्ध खानेको देख मेरा जी घबरा उठा था। वह समूचे लवापक्षीको चबा जाती थी। लवाको महज मत समझना—यह हमारे देशके पेरूसे नौगुने बडे होते थे। सोनेके प्याले मे वह एक पीपा शराब एकही घूटमे सोख जाती थी। महारानीकी छुरी तीन हाथ लम्बीथी। चमच, काटे प्रभृतिका अनुमान इसीसे कर लीजिये। मुझे याद है एक दिन मैं दायाके साथ बादशाही कमरेमें जहां स्वय महाराज भोजन करते थे योही चला गया वहा ऐसी ऐसी दस बारह छुरियोंको एक साथही उठते देखा था। ऐसा भयानक दृश्य फिर कभी देखनेमें नही आया।

मैं कही चुका हू कि बुधवार इन लोगोंका विश्राम दिन है। इस दिन महाराज सपरिवार बैठ कर भोजन करते है। अब मेरी भी छोटी छोटी मेज तथा कुर्सिया महाराजकी बाई तरफ लगने लगी। महाराज मुझे बहुत चाहते था तथा मेरी बात सुनकर बहुत प्रसन्न होते थे। आप युरोपके आचार व्यवहार, धर्म्म कर्म्म, रीति नीति, विद्या बुद्धि और आईन कानूनके बारेमें बराबर पूछते थे। मैं सबका यथोचित उत्तर देता था। महाराजकी समझ बहुत अच्छी थी। कभी कभी वह अपनी भी राय प्रगट करते थे। मैं अपने प्यारे देशके व्यापार, युद्ध, धर्म्मानुराग, इत्यादिकी बातें खूब चढा बढा कर गौरवके साथ कहता था। ह्विग (प्रजाहितैषी)



नं ९

जब महारानी हाथमें उठाकर मुझे आईनेके सामने कर देती तो मैं मारे ग्लानिके मरजाता। हाय! मैं इतना छोटा क्यों हुआ।

पृष्ठ ८७

और टोरी (राजानुयायी) दलोंका जब मैं वर्णन करता तो महाराज मुझे हाथमें उठा लेते और मुसकुरा कर पूछते "अरे तू किस दलका है?" फिर प्रधान मन्त्रीसे जो वहीं पीछे खडा रहता था कहते "देखो! मनुष्यके सब ठाठ बाट कैसे घृणित हैं। एक इतना कीडा भी इनकी हंसी उडा सकता है। इसके देशमें भी पदवियां बटती हैं तथा मान सम्मान होता है। इसके देशवाले भी कपडे पहनते हैं तथा सवारियों पर चढते हैं! यह छोटे छोटे घोंसले और बिलको अपना शहर बतलाता है। यह सब भी प्यार करना जानते हैं यह भी लडते हैं, ठगते हैं और दूसरेके भेदोंको प्रकाश करते हैं।" जब महाराज इस प्रकार बोलते तो मारे गुस्सेके मेरा चेहरा लाल होजाता। हमारे उस देशकी जो आज कल शिल्प, विज्ञान और अस्त्र शस्त्रका आकर है—फरासका भय स्थान है—जो सारे युरोपका मध्यस्थ है—जो सत्य, धर्म्म, दया, और सम्मानका स्थल है और जो सम्पूर्ण जगत्‌का गौरव माननीय है,—निन्दा इस तरह हो!

खैर, मैं अपनी अवस्था विचार कर चुप होरहा लेकिन मनमें बहुत बुरी लगी। कुछ दिन उन लोगोंके साथ रहने तथा वहांकी विलक्षण वस्तुएं देखनेसे मेरा डर भय सब जाता रहा। उन दिनों मेरा मन ऐसा होगया था कि अगर कहीं आप लोगोंको देख पाता तो मैं आप लोगोंकी छुटाई पर बहुत हंसता और उतनाही अचरज करता जितना कि इन विराट पुरुषोंने मुझे देख कर कियाथा। जब महारानी हाथमें उठा कर मुझे आइनेके सामने कर देती तो मैं मारे ग्लानिके मर जाता। हाय मैं इतना छोटा क्यों हुआ!

मैं कह चुका हूं कि महारानीके एक बौना भी था। यह बौना होने पर भी तीस फुट लम्बा था। इसे देख कर न जाने क्यों मेरा जी कुढ जाता था। वह भी मेरे जैसे तुच्छ जीवको देखकर घमण्ड करता था। जब वह मेरे सामने आता तो अकड कर चलता। मेज पर खडे होकर जब मैं राव उमराओंसे बोलता तब दुष्ट मेरी

छुटाई पर ताने मारता। मैं उन्हें भाई पुकारता और कभी कभी झगड़ने लड़नेके लिये उसीसे ललकारता भी था। एक दिन भोजन के समय बातकी बातसे वह बिगड़ बैठा और मुझे रानाईमें भरे हुए कटोरेमें पटक कर लम्बा हुआ। मैं सिरके बल गिर पड़ा। अगर तैरना न जानता होता तो बड़ी मुश्किल होती। दाया भी संयोगसे वहां मौजूद न थी। महारानी डरके मारे घबरा गई थी। आखिर दायाने दौड़ कर मुझे निकाल लिया। उतनेहीमें बहुतसी मलाई मैं खागया था। चोट मोट तो कुछ लगी नहीं पर कपड़े सब खराब होगये थे। वामनजी पकड़ कर लाये गये और कोड़ेसे उनकी खूब खबर लीगई। वही मलाई जिसमें मैं पटका गया था सजाके बतौर उन्हें खिलाई गई। महारानी उनसे बहुत अप्रसन्न होगई। उसी समय वह दरबारसे निकाले गये। मैं बड़ा खुश हुआ। अगर वह रहता तो न जाने फिर क्या आफत मचाता।

एक बार पहले उसने एक और भद्दी दिल्लगी कीथी। महारानो बहुत हंसी पर साथही बहुत गुस्से भी हुई। अगर मैं सुफारिश न करता तो वह उसी दिन निकाल दिया जाता। महारानी ने चरबी निकाल कर हड्डीको खड़ा कर दिया था। वामनजी महाराजने मौका पा मुझे उस हड्डीके भीतर कमर तक घुसेड़ दिया। मैं एक घड़ी तक उसी तरह खड़ा रहा। शरमके मारे किसीको पुकारा भी नहीं। आखिर मैं निकाला गया। वामनजी को उस दिन भी कोड़े लगे थे।

मेरी भीरुता पर महारानी प्रायः ताना मारती और कहती "क्या तुम्हारे देशमें सभी ऐसेही बुजदिल और डरपोक हैं?" इसका कारण सुनिये। गर्मीसे मक्खियां वहां बहुत सताती हैं। यह मक्खियां ऐसी वैसी नहीं अगन चिड़ियाके बराबर होती हैं। जब मैं खानेको बैठता तो ये कानके पास आकर भन भन करती और बहुत तङ्ग करती थी। कभी कभी खानेकी चीजों पर बैठ कर हग देती। वहांके लोगोंको वह बीट दिखाई नहीं पड़ती क्योंकि

उनकी आंखें वडी थीं लेकिन मेरे रामको तो सब साफ मालूम होता था। कभी नाक या माथे पर बैठ कर ऐसा डङ्क मारती कि मैं वेताब होजाता। इसीसे इन मक्खियोसे मैं बहुत डरता था। जब यह भिनभिनाती तो मैं चौकन्ना होजाताथा। वामनजी मक्खियां पकड कर अकसर मेरे मुंहके आगे छोड दिया करते थे। मैं बडी फुर्तीसे उनके दो टुकडे कर डालता था। मेरी इस फुर्तीकी बहुत तारीफ होती थी।

एक दिन सवेरे दायाने पिञ्जरेको झरोखे पर रख दिया। मैं भी आफतका मारा पिञ्जरेका किवाड खोल कर मिठाई कलेवा करने लगा। मीठेकी गन्धसे वीसियो भिडें घुस आईं। कुछ तो मेरी मिठाई उठा लेचली और कुछ मुंहके सामने भिनभिनाने लगीं। मैं मारे डरके घबरा गया। लाचार होकर मैंने कटारी निकाली। चारको उसी दम काट गिराया बाकी भाग गईं। फिर मैंने द्वार बन्द कर दिया। यह भिडे तीतरके समान थी। फिर मैंने इनके डङ्क निकाले। यह डेढ डेढ इञ्च लम्बे थे तथा सूईसे पैने थे। उन्हे मैंने बडी हिफाजतसे रख लिया। विलायत लौट कर सबको दिखलाया। तीन तो एक स्कूलमें दे दिये और एक अपने पास रक्खा।

पञ्चम परिच्छेद।

अब मैं इस देशका कुछ संक्षेप वर्णन पाठकोंको सुनाया चाहता हूं। राजधानीके आस पास कोई दो हजार मील तक मैं घूम आया हूं। महाराज तो सीमा प्रान्त तक जाते थे परन्तु महारानी इससे आगे कभी गई नहीं और मैं बराबर महारानीहीके सङ्ग रहताथा। इस देशका नाम ब्रोवडिंगनेग है तथा इसकी राजधानीका नाम है लर ब्रलग्रड। यह राज्य लग भग ६००० हजार मील लम्बा तथा चार पांच हजार मील चौडा है। अतएव मैं कहता हूं कि हमारे भूगोल वेत्तागण बहुत भूलते है। वह कहते है कि

और

क्यालीफोर्नियाके बीचमें समुद्रके सिवा और कुछ नहीं है। पर मेरी राय सदासे इसके विरुद्ध थी। परमात्माके अनुग्रहसे मेराही विचार ठीक निकला। अब इस महादेशको अमेरिकाके पश्चिमोत्तर भागसे संयुक्त कर भूचित्र इत्यादिका पुनः संशोधन करना चाहिये। मैं इस विषयमें बहुत कुछ सहायता दे सकता हूं।

यह देश एक प्रायद्वीप है। इसकी पूर्वोत्तर सीमा पर तीस मील ऊंची पर्वत माला है। यह सब ज्वालामुखी पर्वत है और यह स्थान भी ऐसा विकट है कि कोई उसपार जा नहीं सकता बड़े बड़े पण्डित भी नहीं बतला सकते कि पर्वतोंके परलेपार क्या है। शेष तीन दिशाओंमें महासागर लहरें मारताहै। इस देशमें नावके लिये भी कोई बन्दरगाह नहीं है। समुद्रके किनारे जहां नदियां गिरती हैं इतने नुकीले ढोंके बिखरे हुए हैं तथा समुद्रमें तूफानका इतना जोर रहता है कि वहां किश्ती चलाना बहुतही कठिन है। इसी हेतु यहांके निवासी अन्यान्य देशोंसे वाणिज्य व्यापार करनेमें पूरे असमर्थ हैं। बड़ी बड़ी नदियोंमें जहाज देखे जाते हैं। इन नदियोंमें बहुत बढ़िया मछलियां होती हैं। यहांवाले इन मछलियोंको बहुत पसन्द करते हैं क्योंकि समुद्रकी मछलियां वैसीही होती हैं जैसे हमारे देशकी। इसलिये छोटी समझकर यह लोग समुद्रकी मछलियोंको नहीं पकड़ते। इससे प्रकट होता है कि प्रकृतिने यह सब विलक्षण बड़ी बड़ी चीजें इसी देशके वास्ते सिरजी हैं। दूसरी जगह ऐसी चीजें क्यों नहीं होतीं इसका विचार विज्ञानी लोग करेंगे।

यह देश खूब आबाद है। इसमें ५१ बड़े बड़े नगर तथा सौके लग भग नगर कोटवाले शहर हैं। छोटे छोटे गावोंकी तो गिनती नहीं। अब "लर ब्रलग्रड" का वर्णन सुनिये। बीचसे एक नदी बह गई है इसीके दोनों तीर पर राजधानी बसी हुई है। इसमें प्राय अस्सी हजार घर तथा छः लाख मनुष्य बास करते हैं। यह चौअन मील लम्बा तथा ४५ मील चौड़ा है।

राजाका महल ठीक महलके कायदेका तो था नहीं पर एक मीलके घेरेमें बहुतसे मकानोंका ढेर मालूम होता था। बड़े बड़े कमरेकी ऊंचाई डेढ़सौ चालीस फुट थी। बस इसी अन्दाजसे लम्बाई और चौड़ाई भी समझ जाइये। हम लोगोंको एक गाड़ी मिली थी। इसी पर नगर देखनेको हम लोग जाया करते थे। मैं तो पिञ्जरेमें रहता था—हां पिञ्जरा अलबत्ते गाड़ी पर रख लिया जाता था। कहनेसे दाया कभी कभी हाथ पर भी ले लेती थी। तभी बाजारकी सब चीजें मजेमें दिखलाई पड़ती थीं। एक दिन एक दूकानके सामने गाड़ी खड़ी हुई। वहां बहुतसे भिखमङ्गे जमा थे। वह सब मौका अच्छा देख गाड़ीको घेर कर खड़े होगये। वैसा भयानक दृश्य युरोपवालोंने कभी काहेको देखा होगा। उस भीड़में एक स्त्रीको देखा जिसकी छातीमें नासूर था जो फूल कर बहुत बड़ा होगया था। उसमें कई छेद थे। दो तीन छेद तो इतने बड़े थे कि उनमें घुसकर मैं मजेमें छिप जा सकता था। एक आदमीकी गर्दन पर एक फुन्सी देखी। यह पांच बस्ता ऊन (पशम) से भी बड़ी थी। एक आदमीके पैर दोनों कटे थे। लकड़ीके पाव लगे थे सो बीस बीस फुट लम्बे थे। सब से अधिक घृणा तो उन लोगोंके कपड़ों पर चीलड़ोंको रेंगते हुए देख कर हुई। इन चीलड़ोंके थुथने सूअर कैसे थे। इस घृणित दृश्यको देख कर मेरा जी घबरा गया था।

जिस पिञ्जरेमें अब तक मैं बाहर लेजाया जाता था वह बहुत बड़ा था। दायाको इसके धरने उठानेमें बड़ी तकलीफ होती थी इसके सिवा गाड़ी पर भी रखनेमें बड़ी अड़चल पड़ती थी इससे महारानीने एक दूसरा छोटा सफरी पिञ्जरा बनवाया। यह दस फुट ऊंचा, बारह फुट लम्बा तथा इतनाही चौड़ा था। इसके तीन ओर बीचमें तीन खिड़कियां थीं जिनमें बाहरसे लोहेके तार की जाली मढ़ी हुई थी। चौथी तरफ जिधर खिड़की न थी दो मज़बूत कोंढ़े लगे हुए थे। इन्हींमें कमरबन्द पिरो कर सवार लोग

कमरसे पिञ्जरेको बांध लेते और सामने घोडे पर रख लेते थे। एक झूला छतसे लटकाता था। एक मेज और दो कुर्सियां पेचसे कसी हुई थी। इस पिञ्जरेसे मुझे बहुत आराम मिला। जब कभी दायाको अवकाश नहीं मिलता तो कोई विश्वासी आदमी पिञ्जरे समेत मुझे घोडे पर अपने आगे रख लेता और शहरकी सैर करा देता था। जिधरसे मेरी सवारी निकलती थी उधर एक मेलासा लग जाता था।

यहां एक बहुत सुन्दर मन्दिर है। इसका गुम्बज इस देशके सब मन्दिरोंसे ऊंचा है। इसके देखनेकी मुझे बहुत लालसा हुई। आखिर दायाके साथ एक रोज वहां मैं गया। जितना ऊंचा इसे मैंने समझा था उतनाही पाया। यह तीन हजार फुटसे ज्यादा ऊंचा न था। यहांके मनुष्य जितने लम्बे होते हैं उस हिसाबसे तो यह कुछ भी ऊंचा न था। हम लोगोंके डीलके ख्यालसे विलायतमें इससे ऊंचे ऊंचे मकान हैं। जो हो, मन्दिर बहुत सुन्दर और मजबूत बना हुआ था। इसकी दीवार सौ फुट चौडी थी। यह पत्थरका था। चालीस चालीस फुटके पत्थर इसमें लगे थे। देवी देवता तथा महाराजाओंकी बडी बडी मूर्त्तियां लगीथी जो सब सङ्गमरमरकी थी। एक मूर्त्तिकी एक उंगली टूट कर गिर पडी थी। मैंने उठाकर नापी तो चार फुट हुई। दाया मेरे खेलने के लिये उसे घर उठा लाई थी।

महाराजकी पाकशाला सचमुच सुन्दरथी। इसका चूडा करीब छ सौ फुट ऊंचा था। चूल्हे भी बहुत बडे बडे थे। रसोई घरके वर्त्तन भाडेका पूर्ण वर्णन करनेके लिये यदि मैं बडी बडी वस्तुओंकी उपमा दूंगा तो पाठक मुझे झूठा समझेंगे और उधर कहीं यह पुस्तक ब्रौवडिगनैगकी भाषामें अनुवादित होगई तो महाराज तथा वहांके निवासीगण अपनी वस्तुओंकी हीन उपमा देख कर बुरा मानेंगे। इसलिये इस विषयको मैं यहीं समाप्त कर देता हूं।

महाराज अपनी घुडसालमें कभी कभी छः सौसे अधिक घोडे रखते थे। यह सब घोडे ५४ से ६० फुट तक ऊंचे थे महाराज की सवारी पर्व्व त्योहारसे जब निकलती ५०० सुन्दर सवार साथ चलते। पहले मैंने इसी दृश्यको अनिर्वचनीय समझा था पर जब सैन्य व्यूह देखा तो मेरे छक्के छूट गये। इस व्यूहका वर्णन आगे होगा।

षष्ठ परिच्छेद।

अगर मैं इतना छोटा न होता तो मैं सानन्द उस देशमें वास करता। मेरी छुटाई देख वहांवाले ताना मारते और हंसते थे। इस छुटाईके कारण मुझे बहुत कष्ट उठाना पडा तथा नीचा देखना पडा। अपने अपमानका हाल अब मैं कुछ सुनाता हूं दाया मुझे छोटे पिञ्जरेमें अकसर बगीचे ले जाती थी। कभी पिञ्जरेसे निकाल कर हाथ पर ले लेती और कभी टहलनेके लिये मुझको रविशों पर छोड देती थी। एक दिन वामन राम भी हमारे साथ बगीचे गये थे। यह घटना उसके निकाले जानेके पहलेकी है। दायाने टहलनेके लिये मुझे छोड दिया। मैं टहलते टहलते सेवके पेडोंके नीचे जा पहुंचा। यह पेड भी ठुमके थे। मैंने जो बहलानेके लिये वामनसे जरा छेड छाडकी। वामनचन्द्रने भी मौका अच्छा देख सेवकी डालियोंको पकड कर जोरसे हिला दिया। फिर क्या था—लगे सेव मेरे सिर पर टपाटप गिरने। सेव भी ऐसे वैसे न थे। बडे बडे पीपेकी बराबर एक एक सेवथा। मैं उन फलोंकी चोटसे जमीनमें लेट गया। पर विशेष कुछ हानि नहीं हुई थी। वामनका कुसूर मैंने माफ कर दिया क्योंकि छेड छाड़ पहले मैंने की थी।

दूसरे दिन दायाने मुझे हरी हरी दूब पर टहलनेको छोड दिया और आप टहलती हुई कुछ दूर निकल गई। इतनेमें ओले गिरने लगे। ओलोंकी चोटने से दस दिन तक उदास रहा। यह ओले अपने यहांके ओलोंसे १८०० गुना बडे थे।

इस बगीचेमें रातसे भयानक घटना हुई सो सुनिये। मैं खेल रहा था और दाया दूसरी तरफ चली गई थी। इतनेमें मालीका एक उजला कुत्ता आया और मुझे मुंहमें उठा ले भागा अपने मालिकके सामने उसने आहिस्तेसे जमीन पर रख दिया। माली मुझे अच्छी तरह पहचानता था। वह महारानीके डरसे चटपट मुझको उठा कर दायाके पास ले आया। उधर दाया जब लौट कर आई तो मुझको न पाकर पुकारने और रोने लगी। मुझको सही सलामत पाया तो प्रसन्न हुई। मैं उस समय बेसुध सा था। महारानी सुन कर खफा होंगी इसलिये यह खबर वहीं दबादी गई। मैंने भी इस लज्जाजनक घटनाको प्रकाशित करना उचित नहीं समझा। एक दिन ऐसेही चील मुझ पर झपटी पर मैंने साहस करके तलवार निकाल ली फिर उसको घुमाता हुआ एक झुरमटमें जा छिपा। अगर मैं तलवार न निकालता तो चील जरूर उठा ले जाती। अब दाया मुझको अकेला नहीं छोडती थी। एक दिन मैं छछून्दरके बिलमें अकस्मात् गिर पडा। गले तक गडप होगया। चोट तो विशेष नहीं लगी लेकिन कपडे सब खराब होगये। एक बार एक घोंघेकी ठोकरसे मेरी पिण्डलीकी हड्डी टूट गई थी।

और ज्यादे मैं क्या कहूं छोटी छोटी चिडिया भी मेरा अपमान करती थीं। वह सब निडर हो लापरवाहीके साथ मेरे आस पास फुदकती फिरती थी। एक बार एक चिडियाने तो हाथसे रोटी छीन लीथी। मैं इनमेंसे किसीको पकडनेके वास्ते हाथ बढाता तो वह सब चोंच चलाती थीं। एक दफे मैं बडी वीरताके साथ एक चिडियाको लाठीसे मार कर दायाके पास ले चला। परन्तु अफसोस। लेनेके देने पड गये। वास्तवमें वह मरी नहीं थी लाठी की चोटसे बेहोश होगई थी। जब होशमें आई तो लगी पङ्ख फटफटा कर मेरी खबर लेने। अगर एक आदमी दौड कर मेरी मदद न करता तो वह जरूर उड जाती। यद्यपि यह उस

देशकी छोटीसे छोटी चिड़िया थी तथापि हमारे यहांके राजहंससे कहीं बड़ी थी।

महारानीकी सखियां देखने तथा छूनेके लिये मुझको अकसर अपने कमरोंमें बुलातीं। मैं दायाके सङ्ग तमाम जगह जाता था। स्त्रियां सब नङ्गा करके मुझको अपने अपने पेट पर सुलातीथीं। इन सबकी देहसे एक ऐसी गन्ध निकलती थी कि जिससे मेरी नाक फटती थी। यह कहनेसे मेरी श्रद्धा उन स्त्रियों पर जिन्हें मैं आदर की दृष्टिसे देखता हूं कम न समझना चाहिये। अस्तु देहकी गन्ध भला जैसे तैसे सह भी लेता था पर जब वह सुगन्ध द्रव्य लगाती तो मैं बेहोश होजाता था। मैं समझता हूं मेरी छुटाईकी अपेक्षा मेरी इन्द्रियां बहुत तीक्ष्ण हैं। जैसे इन विराट जीवोंकी गन्ध मुझको सह्य नहीं वैसेही लिलीपटवालोंको मेरी नहीं थी। मैं बहुत सफाईसे रहता था तौ भी उनकी नाकमें बदबू पहुंचही जाती थी। जो हो, महारानी तथा दायाकी देहसे विलायती बीबियोंकी तरह सुगन्ध निकलती थी।

सबसे दुःख मुझको इस बातका है कि यह औरतें मुझको नितान्त तुच्छ समझती थीं। मेरा लेहाज ख्याल परदा कुछ भी नहीं करती थीं। मेरे सामने नङ्गी देख कर कामोद्दीपनके बदले घृणा होती थी। मतली आती थी और डर लगता था। इनके चमड़े मोटे और रूखे तथा बाल मोटे और लम्बे थे। अधिक क्या कहूं इनके अङ्ग प्रत्यङ्ग देख मैं घबरा जाता था। यह जो कुछ पीती थीं उसको मेरे सामने त्यागनेमें भी तनक नहीं लजाती थीं। इनमेंसे एक जो सबसे सुन्दर तथा जिसकी उमर १६ वर्षकी थी मुझको बहुत तङ्ग करती। कभी पकड़ कर मुझको अपनी छाती पर बिठा देती और कभी न जाने क्या क्या करती। उन बातोंको दुहराना मैं अनुचित समझता हूं। उनके छिछोरेपनसे ऊब कर मैंने उनके पास जानाही छोड़ दिया।

एक दिन हम लोग एक फांसीका तमाशा देखने गये। यद्यपि

यह दृश्य देखना पसन्द न था तथापि कौतूहल वश चलेही गये। वह मनुष्य जिसका वध होनेवाला था एक कुर्सी पर बैठा था। हत्यारेने एकही हाथसे उसकी गर्दन धडसे अलग करदी। फिर क्या था लगा रक्तका फुहारा छूटने लगा। सिर भी विकट शब्दके साथ भूमि पर गिर पडा। मैं आधा मील दूर रहने पर भी गरज सुन कर चौंक उठा था। एक बात कहनेको भूलही गया था वह यह कि हत्यारेकी तलवार चालीस फुट लम्बी थी।

घर बारको याद कर जब मैं उदास होता तो महारानी मेरे जी बहलानेकी चेष्टा करती समुद्र यात्राका प्रसङ्ग छेड कर उनकी सब बाते सुनती थी। मेरे खेलनेके लिये एक छोटीसी नाव बनने की आज्ञा हुई। कारीगरने मेरे कहनेके अनुसार नाव बना कर तैयार करदी। पाल पतवार इत्यादि भी बन कर ठीक होगये। उसमें मेरे जैसे आठ आदमी मजेमे बैठ सकते थे। महारानी उसे देख कर इतना प्रसन्न हुई कि हाथमें उठाये महाराजके पास दौड गई। महाराज भी नावकी छुटाई पर बहुतही खुश हुए। उसी समय उसको चलानेकी आज्ञा मुझको हुई। मैं किश्ती समेत पानीमें भरे हुए एक चहबच्चेमें छोड दिया गया। जगह कमथी इससे अपना पूरा हुनर दिखला न सका। आखिर महारानीने काठका एक कठौता बनवाया। वह तीनसौ फुट लम्बा, पचास फुट चौडा और आठ फुट गहरा था। वह खूब मजबूत बना हुआ था। वह पानीसे भर कर दीवारके सहारे भीतर कमरेमे रख दिया गया। मैला पानी निकाल देनेके लिये नीचे एक सूराख भी था। दो आदमी आसानीसे उसको पानीसे भर देते थे। बस इसीमें किश्तीको चला कर महारानीका तथा उनकी सहेलियोंका मनो-रञ्जन करता क्योंकि मुझमें इतनी सामर्थ्य न थी कि वहाकी नदियो में नाव चला लेता। जब मैं पाल तानता तो स्त्रिया अपने पङ्खोसे उसमें हवा पहुचाती। जब वह थक जाती तो उनके छोकडे फूकसे पाल उडा देते थे। और मैं कभी दायें कभी बायें इच्छानुसार

किश्तीको घुमाता था। जब खेल खतम होजाता तो दाया सूखने के लिये उसे खूँटीसे लटका देती थी।

एक दिन मैं मरते मरते बच गया। छोकडेने नौकाको जब कठौते में रख दिया तो दायाकी सखीने मुझे उसमें रखना चाहा। ज्योंही उसने उठाया मैं उसके हाथसे छूट गया। कुशल हुई मै उसकी मालासे उलझ कर बच गया नहीं तो वहीं ढेर होजाता। इतनेमें दायाने आकर मुझे उबार लिया।

कठौतेका जल तीसरे दिन बदला जाता था। एक दिन नौकरी की असावधानीसे एक बडा मेडक कठौतेमें घुस आया। फिर उछल कर नाव पर आरहा और एक ओर छिप गया। मुझे यह मालूम न था। ज्योंहीं मैं पहुचा किश्ती डगमगाने लगी। मै इधर उधर देख रहा था कि वह मेडकानन्द कूद कर बीचमें आपहुंचे और फिर मेरे ऊपर नीचे चारो ओर कूदने लगे। स्वभावानुसार मेरे मुंह पर उसने मूत दिया। तमाम कपडे भीग गये। लाचार होकर डाड उठाया और उसे मार भगाया। इतना बडा मेडक मैने कभी नही देखा था।

सबसे भारी विपद मेरे ऊपर जो आईथी जरा उसका हाल सुनिये। उसदार मेरे प्राण बचनेकी कोई आशा न थी परन्तु ईश्वरेच्छासे बचही गये। बात यों है—बावर्चीखानेके एक मुन्शी के पास एक बन्दर था। दाया मुझे अपनी कोठरीमें बन्द करके कार्य्यवश कही चली गई थी। दिन गर्म्मीका था इससे खिडकिया सब खुली छोड गई थी। इसके सिवा पिञ्जरेका द्वार तथा खिड-किया भी खुली थी। मैं बैठा बैठा कुछ सोच रहा था। यकायक आहट सुन कर चौक पडा। इधर उधर निगाह दौडाई तो देखा एक बन्दर कुलाचें मार रहा है। मै बहुत डरा—उठनेकी हिम्मत न पडी। इस बीचमें बन्दर भगवान उछलते कूदते पिञ्जरेके निकट आपहुचे। आप बडे प्रेमसे पिञ्जरेको देखने लगे। हर एक खिडकी में ताक झाक करने लगे। मै डरसे एक कोनेमें दब गया पर आप

काज सानेवाले थे ? आप खिलखारी मारते दांत निकालते इधर उधर ताक रहे थे। मैने चाहा कि खिलौनेके भीतर छिप जाऊ लेकिन इतना समय कहां। ज्योंही उस बन्दरकी दृष्टि मुझ पर पडी उसने लपक कर कोटका दामन पकड लिया। मैंने भी जरा अपना जोर दिखाया पर कुछ लाभ न देख चुप होगया। आखिर वह मुझे बाहर खेंच लाया। मा जैसे लडकेको दूध पिलाती है ठीक वैसेही उसने अपने दायें हाथसे मुझे पकड लिया। मैने फिर जोर किया तो उसने ऐसा दबाया कि मैं एक दम बेकाबू होगया। शेषमें मैंने कुछ छेडछाड न करनाही उचित और उत्तम समझा। शायद उसने बन्दरका बच्चाही समझ कर मुझे गोदमें लिया था क्योंकि वह दूसरे हाथसे मेरा मुंह धीरे धीरे ससलता था। उसी समय दरवाजा खुलनेकी आहट हुई। बस वह उछल कर खिडकी पर जा धमका। वहांसे एकही छलांगमें शीशेके छप्पर पर और फिर वहांसे परनाले परसे होता हुआ पडोसकी छतपर जा पहुचा। एक हाथसे मुझे बराबर पकडे था। मैंने दायाको चिल्लाते हुए सुना। वह बिचारी चिल्लाते चिल्लाते परेशान होगई थी। फिर तो तमाम महलमें कुहराम मच गया। नौकर चाकर अस्तव्यस्त हो इधर उधर दौडने लगे। इधर मुडेरेके ऊपर बैठ कर बन्दरराम मुझे खिला रहे थे। मै नही खाता तो वह चपत लगाता था। बहुतोंने पत्थर मार कर वन्दरको भगाना चाहा। परन्तु वह सब रोके गये नही तो मेरी खोपडी जरूर उड जाती।

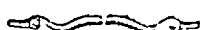
आखिर सीढिया लगाई गई। कई आदमी ऊपर चढने लगे। बन्दरने यह सब मामला देख कर मुझे वहीं छोडा और आप नौ दो ग्यारह हुआ। मै पाचसौ गज ऊ ची छत पर कुछ देर तक बैठा रहा। और भला क्या करता डरके मारे कलेजा कांप रहा था। यही मालूम होता था कि अब हवाने नीचे धकेला अब मैं गिरा। इतनेमें एक छोकरा मेरे पास पहुँचा। वह अपने पतलूनकी जेबमें रख कर कुशल पूर्वक नीचे ले आया।

बन्दरने न जाने क्या क्या मेरे मुँहमें भर दिया था इससे कण्ठ बन्द था—बोलनेकी सामर्थ्य न थी। दायाने सूईकी नोकसे मेरा मुँह साफ कर दिया। वमन होनेसे चित्त ठिकाने हुआ। कम-जोरी इतनी थी कि दो सप्ताह चारपाई पर पड़ा रहा। उस कपिने इतने जोरसे दवाया था कि दर्दसे हड्डिया टूटती थीं। महाराज महारानी मुझे देखनेके लिये बारम्बार आते थे। वह बन्दर जो मुझे लेभागा था मारा गया। महाराजने आज्ञादी कि अबसे ऐसे जानवर महलमें कोई न रक्खे।

मैं चङ्गा होकर जब महाराजको उनकी कृपाका धन्यवाद देने के लिये दरबारमें गया तो श्रीमान्‌ने पूछा "जब तुम बन्दरके हाथ में थे तब क्या सोचतेथे? उसका खिलाना तुम्हें कैसा मालूम हुआ? वह खाना तुम्हें पसन्द आया या नहीं? छत परकी ठंढी हवाने तुम्हारी भूख बढ़ाई या नहीं? तुम्हारे देशमें अगर बन्दर तुम्हें पकड़ लेता तो तुम क्या करते?" मैंने कहा "श्रीमान्! अव्वल तो हमारे देशमें बन्दर नही है जो है भी सो दूसरे देशसे तमा-शेके लिये आये है। दूसरे यह इतने छोटे होते है कि एक दर्जन बन्दरसे मै मजेमें मुकाबला कर सकता हूं। और यह बन्दर तो जो मुझे पकड़ लेगया था हमारे देशके हाथीके बराबर था। इसको देखतेही मेरे देवता कूच कर गये थे। अगर मैं होशमें रहता तो जरूर अपने खञ्जरसे उसे मार भगाता।" यह सब बातें मैंने बड़ी वीरतासे कही। मेरी बात सुन कर सब कहकहा मार कर हस पड़े। मै अपनी मूर्खता पर बहुत लज्जित हुआ। वास्तव में जो अपनेसे बहुत बड़े है उनसे घमण्ड क्या! लेकिन विलायतमें यह बात नही है। वहा मैंने देखा है कि अदनासे अदना भी बड़ोंके साथ टागे अड़ाता है।

एक दिन गोबरके ढेरको देख कर उसके फादनेकी इच्छा हुई। ज्योंही फादने लगा गड़ापसे घुटने तक उसमें डूब गया। यह दिल्लगी सुन कर भी सब कोई खूब हंसतेथे। मतलब यह कि कुछ दिन तक मैंही दरबारका विदूषक हो पड़ा था।

सप्तम परिच्छेद।



मै राजदरवारमें हफ्तेमें दो वार जाता था। महाराजको अकसर वाल वनवातेहो पाता था। छुरा मामूली तलवारसे दूना लम्बा था। देशकी परिपाटीके अनुसार महाराज सप्ताहमें दो वार वाल बनवाते थे। मैंने नाईसे वडे वडे चालीस पचास वाल चुनवा कर ले लिये। इन वालोंकी मैंने एक कंघी वनाई मेरी कघी टूट गई थी। इसीसे काम निकालता था। महारानी जब वाल झाडती तो उनके वाल टूटते थे। मैंने सब को बीन बीन कर जमा किया। फिर दो कुर्सिया इन्हीवालोंसे वना डालीं। यह दोनो कुर्सिया महारानीको अर्पण कीं। महारानीने उन्हें अपने कमरेमें रक्खा उन्होंने कई बार मुझे उन पर वैठनेके लिये कहा पर मैं नही वैठा। मैंने सोचा जो वाल एक समय महारानीके सिरकी शोभा बढातेथे उन पर बैठना उचित नहीं। महारानीके वालसे मैंने एक बटुआ भी बनाया था। इस पर महारानीका नाम सुनहले अक्षरोंमें लिखा था। यह बटुआ महारानीकी इच्छानुसार मैंने दायाको दिया। यह बटुआ केवल देखनेहीका था। इसी लिये वह इसमें छोटे छोटे हलके सिक्कोको छोड और कुछ नही रखती थी।

महाराज गाने बजानेके अच्छे प्रेमी थे। वहा प्रायः गाने वजाने की चर्चा होती थी। मैं भी कभी कभी वुलाया जाता था। मैं मेज पर पिञ्जरेमें बैठ कर गाना सुनता था। उस गानेमें इतना शोर गुल होता कि सुर ताल कुछ भी समझ न पडती थी। अगर हमारे यहांके वहुतसे ढोल और भोंपो इकट्ठे करके वजाये जावें तो भी उस गुल गपाडेके बराबर न हों। पिञ्जरेको गानेवालोंसे दूर रखवाता और सब किवाड वन्द कर लेता तब उनका गाना कुछ वुरा मालूम नही होता था।

मैंने सितार वजाना भी लडकपनमें कुछ सीख लियाथा। दाया के पास भी एक वाजा था। इसकी बनावट ठीक सितारसी थी

इस लिये मैं उससे भी सितारही कहता। एक उस्ताद हफ्तेमें दो बार आकर दायाको सितार सिखला जाता था। मैंने सोचा मैं भी एक दिन सितार बजाकर महाराज और महारानीको प्रसन्न करूं। पर मेरे योग्य सितार कहा? दायाका था सो ६० फुट लम्बा और उसकी सुन्दरिया एक एक गजके फासले पर थीं। ऐसा सितार मैं क्या मेरे लडकदादा भी बजा सकते नहीं। निदान मैंने महाराजके कारीगरोंसे एक सितार नहीं सितारी बनवाई। उसीको दरबारमें मैंने बजाया। सब सुन कर बहुतही प्रसन्न हुए।

मैं पहलेही लिख चुका हूं कि महाराजकी समझ अच्छी थी। वह प्रायः मुझे पिञ्जरे समेत बुलवाते थे। पिञ्जरा मेज पर रक्खा जाता था। मैं श्रीमान्‌के आज्ञानुसार कुर्सी निकाल कर श्रीमान्‌से तीन गजके फासले पर पिञ्जरेके ऊपर बैठताथा। बैठनेसे श्रीमान्‌के श्रीमुखके कुछ कुछ बराबर होजाता था। एक दिन साहस करके मैंने कहा "महाराज! उस दिन श्रीमानने युरोपके तथा अन्यान्य देशके राजाओं पर जैसी घृणा प्रकटकी थी वह श्रीमान् जैसे गुणवान पुरुषको शोभा नही देती। शरीर बडा होनेसे बुद्धि भी बडी होगी यह सोचना ठीक नहीं। हमारे देशमें तो जो अधिक लम्बा होता है वही मूर्ख कहलाता है। पशु पक्षी कीड़े मकौडोंसे भी यही बात है—चिउंटी मधु मक्खिया प्रभृति और कीडोंकी अपेक्षा अधिक परिश्रमी शिल्पी तथा सुघड होती है। श्रीमान् चाहे मुझे जितनाही क्षुद्र क्यों न समझते हों परन्तु मेरी इच्छा यही है कि मैं श्रीमान्‌की किसी विशेष सेनामें आऊं और कुछ उपकार विशेष करूं। महाराजने बडे ध्यानसे मेरी बातें सुनी और उसी दिनसे वह मुझे पहलेकी अपेक्षा अच्छी दृष्टिसे देखने लगे। महाराज बोले "अच्छा तुम अपने देशकी सच्ची सच्ची सब बातें कह सुनाओ। अन्यान्य राजाओंकी रीति नीति भी सुन लेना चाहिये। अगर कोई अच्छी बात सुननेमें आवेगी तो उसे ग्रहण कर अपने राज्यका उपकार करूंगा।"

प्रिय पाठकगण! प्यारी जन्मभूमिकी प्रकृति प्रशंसा करनेके समय डिमस्थिनीज या सिसिरो (प्रसिद्धवक्ता) की वाग्शक्ति मेरी जिह्वामें आजाय यह इच्छा मेरे मनमें कितनी बार हुई थी सो आपही विचार कर देखें।

मैंने यों कहना आरम्भ किया "हमारा देश दो टापुओंके मेलसे बना है। इसके तीन बड़े बड़े हिस्से हैं। यह समस्त एक राजा के अधिकारमें है। इसके अतिरिक्त अमेरिकामें भी हम लोगोंके उपनिवेश है। हमारे देशकी भूमि उपजाऊ तथा जल वायु सुन्दर है। पार्लियामेण्ट नामकी वहां एक बड़ी सभा है। इस सभामें दो दल हैं। एकका नाम है "हाउस आफ लार्ड्स" और दूसरेका "हाउस आफ कामन्स" पहले दलमें पुराने घरानेके प्रतिष्ठित कुलीन लोग है। युद्ध विद्या और कला कुशलताकी असाधारण परीक्षा देकर यह लोग राजा और राज्यके मन्त्री, व्यवस्थापकसभा के सभ्य तथा उस उच्च न्यायालयके विचारकर्त्ता नियुक्त होते है जिसकी फिर अपील नहीं। सचाई, सदाचार और साहसके साथ स्वदेश तथा राजाकी रक्षाके निमित्त सदा प्रस्तुत रहते हैं। यही लोग देशके सच्चे गौरव और रक्षक हैं। यह लकीरके फकीर हैं। इनमें कितनेही पवित्रात्मा भी है जो विषय यानी धर्म्माध्यक्ष कहलाते है। धर्म्म और धर्म्मोपदेष्टाओंका तत्वावधान करनाही इनका कर्त्तव्य है। पादरियोंमें जो सबसे पवित्रात्मा और विद्वान होता है वही विशप बनाया जाता है। वास्तवमें यही सबके गुरु हैं।

"दूसरे दलमें देशके मुख्य मुख्य भलेमानस हैं। यह स्वेच्छा पूर्वक अथवा देशवसियोंके द्वारा मनोनीत होकर सभ्य होते हैं। सुयोग्य और देशानुरागी लोगही सबकी ओरसे प्रतिनिधि बनाये जाते हैं। यही दोनों दल इङ्गलेण्डकी स्वाधीनता और शासन प्रणालीके मुख्य अङ्ग है। यही दोनों दलवाले राजाके सङ्ग बैठकर ॰न कानून भी बनाते हैं।

इसके उपरान्त मैंने कहा कि प्रजागणके स्वत्व तथा शान्ति रक्षा के निमित्त विचारालय हैं। आईन कानूनके जाननेवाले लोग इन सब विचारालयोंमें विचारपतिका आसन ग्रहणकर लडाई झगडेका निबटेरा करते तथा भले आदमियोंकी रक्षाके लिये अत्याचारियोंको दण्ड देते हैं। हमारे राजकोषका प्रबन्ध दूरदर्शितासे पूर्ण है। जल और थल दोनोंही राहसे शत्रुओंके दांत खट्टे करनेमें हमारी सेनाका खूब लाभ है। हमारे यहा लाखों मनुष्य स्वच्छन्दता पूर्वक वास करते हैं और सब न्यारे न्यारे मतके हैं। राजनीति जानने वालोंका भी एक दल अलग है।

इसके सिवा मैंने उन खेल तमाशोंका भी वखान किया जिनसे हमारे प्यारे देशकी नामवरी बढ सकती थी। सौ वर्ष पहलेका इतिहास भी मैंने संक्षेपसे कह सुनाया।

पांच दिनमें मैंने इस कथाको पूरा किया था। प्रति दिन कई घण्टे तक कथा होती थी। महाराज बडे ध्यानसे सुनते थे। जो विषय अच्छे जान पडते थे अथवा जिनके बारेमें कुछ पूछना था उन सबको महाराज एक पोथीमें लिखते जाते थे। पाठकगण! मैंने अपने व्याख्यानका केवल साराश यहा लिखा है वहा तो खूब लम्बी चौडी वक्तृता दी थी।

जब मैं अपनी बात पूरी कर चुका तब छठे दिन महाराजने पोथी देख कर कई प्रश्न किये और अपना सन्देह मिटाया। आपने पूछा "तुम्हारे देशके बडे आदमियोंके लडकोंकी मानसिक और शारीरिक उन्नतिके लिये कौन कौन उपाय किये जाते हैं? लडके अपनी पहली तथा पढनेवाली उमरमें किस प्रकार समय बिताते हैं? जब कोई सदस्य विलुप्त होजाता है तब उस अभावको पूर्ण करनेके लिये क्या किया जाता है? नये लौर्ड बननेके लिये किन गुणोंकी आवश्यकता है? लौर्ड बननेके लिये राजाकी खुशामद तो नही करनी पडती है—रानीकी सखियोंको या प्रधान मन्त्रीको रुपये तो देने नही पडते हैं अथवा सर्वसाधारणकी बुराई चाहने

वाले किसी दलकी वृद्धिकी आवश्यकता तो नहीं पडती है? इन लोर्डोंको अपने देशके कानूनका कितना ज्ञान रहता है? अडोसी पडोसीकी जमीन जायदादका झगडा निवटानेके लिये जितने ज्ञान का प्रयोजन होता है उतना यह किस प्रकार अर्ज्जन करते हैं। क्या यह लोग सदा निर्लोभ रहते और कभी पक्षपात नही करते हैं? क्या आवश्यकता होने पर भी कभी कोई घूस वगैर: नहीं लेता है? जिन पादडियोंकी वात तुमने कही क्या वह सब केवल धर्म्म ज्ञान और सद्व्यवहारही के कारण पार्लियामेण्टके मेम्बर होते है? क्या मेम्बर होनेके पहले इन पादरियोंको समयके अनुसार व्यवस्था देनेकी आदत नही रहती है? और जब यह साधारण पादरी थे उस समय भी क्या किसी वडे आदमीके टुकडे तोड कर उसकी हा में हा नहीं मिलाते थे? अगर मिलाते थे तो मेम्बर होने पर फिर उस वडे आदमीकी खुशामद करते है या नही?

"हाउस आफ कामन्सके सभ्य चुने जानेका क्या नियम है? रुपयेवाले विदेशी रुपयोंके जोरसे धनहीन गंवारोंसे "वोट" संग्रह कर सभ्य होजाते है या वुद्धिमान देशवासीही चुने जाते हैं? जिस काममें कुछ तलव तनखाह नही उसके लिये लोग इतना ललचाते क्यों है? इस वेगारके लिये इतनी हाय हाय क्यों? अपना सर्वस्व नष्ट करके इस सभामें घुसनेके वास्ते लोग इतना क्यों मरते है? ऐसे परोपकारमें सत्यका अभाव प्रतीत होता है। क्या इन महो-त्साही महात्माओंको घूंसखोर मन्त्रीके मेलसे मन्द वुद्धि और अत्या-चारी राजाकी ठकुरसुहातीके लिये प्रजामात्रकी वुराई करके अपने खर्च और मेहनतके वदलेमें धन मूसनेका कुछ ख्याल तो नही रहता है?" और भी बहुतसे प्रश्न महाराजने किये थे जिनका उल्लेख मैं यहा उचित नहीं समझता हू।

फिर महाराजने अदालतोंका प्रसङ्ग छेडा। इस विषयकी मै अच्छी तरह समझा सकताहू क्योंकि एक वार मैं भी मुकद्दमा लड चुका हू। पहले अपना सव खाहा किया पीछे खर्च समेत डिग्री

मिली। महाराजने कहा "न्यायान्याय विचारनेमें कितना समय तथा कितने रुपये लगते है? झूठे बनावटी मुकद्दमेमें वकील बारिष्टर स्वाधीनता पूर्वक बहस कर सकते है या नहीं? न्यायकी तराजू में धर्म्म या राजनीति सम्प्रदायके लोगोंका कुछ बोझ है या नहीं? इन वकील बारिष्टरोंको न्यायका साधारण ज्ञान है या केवल प्रादेशिक, जातीय और स्थानीय व्यवहारोंहीका? वकील या जज जिस कानूनके अनुसार बहस या विचार करते है उसके बनानेका उन्हें कुछ अधिकार है या नही? वकील वारिष्टरगण एक बार जिस विषयको बहस करके मण्डन कर चुके है मौका पडने पर फिर उसीको खण्डन करनेके लिये नजीर पेश करते है या नहीं? विशेषतः यह कभी हाउस आफ कमन्सके मिम्बर होतेहै या नहीं?"

अब खजानेकी बारी आई। मैंने कहा था कि हमारे यहां प्रायः पचास लाख पाउण्ड सालमें टेक्सके आते हैं। परन्तु महाराज को मेरी बातका विश्वास नही हुआ। जब मैंने टेक्सोंके नाम गिनाये तो पचासके दूने सौ लाखकी नौबत पहुंची। तब आपसे चुप न रहा गया। आप बोल उठे "तुम्हारी रीति नीतसे हमारे राज्यको लाभ पहुंच सकता है इसमें सन्देह नहीं परन्तु इतनी आमदनी होने पर भी तुम्हारे राजा मामूली आदमियोंकी तरह ऋण ग्रस्त क्यों होजाते हैं? तुम लोगोंके महाजन कौन हैं? देना चुकानेके लिये तुम लोग कहांसे रुपये पाते हो? तुम्हारे यहा अकसर युद्ध होताहै और उसमें बहुत खर्च पडताहै। इससे मालूम होता है कि तुम लोग बडे झगडालू हो। सेनापति तो राजासे अधिक धनवान होते होंगे? व्यापार, सन्धि अथवा सीमा रक्षाके सिवा तुम्हें अपने टापूसे बाहर जानेका क्या काम है? शान्तिके समय भी सेना रखके व्यर्थ खर्च बढानेसे क्या लाभ? जहांके मनुष्य स्वाधीन हैं वहा तलब देकर सेना रखनेकी क्या दरकार है? अगर तुम लोगोंकी मरजीके मुताबिक राजा शासन करता है तो फिर डर किसका? किससे लडनेके लिये फौज रखते हो? क्या गृहस्थ लोग

अपने अपने घरकी रक्षा बालबच्चोंके साथ मिल कर उन लुच्चोंसे जो दूसरोंके गले पर छुरी चला कर रुपया पैदा करते हैं अच्छी तरह नहीं कर सकते हैं? बाजारू चौकीदारोंकी अपेक्षा अपनी रक्षा आप कहीं अच्छी होगी।"

हमारे यहांके गणितको सुन कर महाराज बहुत हंसे। हमारे गणितको वह अनूठा बतलाते थे। सबसे अचरज तो उन्हें यह सुन कर हुआ कि विलायतमें मनुष्य गणना राजनैतिक धार्म्मिक आदि सम्प्रदायोंको गिन कर पूरी होजाती है। आपने यह भी कथन किया कि जिन लोगोंकी राय सबको हानि पहुंचानेवाली है वह लोग अपनी अपनी राय बदलनेके बदले उसे छिपाके क्यों नहीं रखते हैं? विष बाजारमें बेचनेसे हानि है कुछ घरमें छिपा कर रखनेसे नहीं। अगर राजा राय बदलनेके लिये लोगोंको लाचार करेगा, तो उसका अन्याय और यदि छिपानेके लिये नहीं कहेगा तो निर्बलता प्रगट होगी। अतएव सबको अपनी अपनी राय छिपा कर रखना चाहिये।

मैंने कहा था कि हमारे देशमें बड़े आदमी आमोद प्रमोदके लिये जुआ खेलते हैं। इस पर महाराजने पूछा "किस उमरके लोग जुआ खेलते हैं और कब छोड़ देते हैं? कितना समय इस काममें लगाया जाता है? क्या जुएमें कभी कोई अपना सारा धन नष्ट नहीं कर देता है? नीच जातिके जुआरी धन पैदा करके बड़ आदमियोंको अधीन कर लेते हैं या नहीं? बुरी सङ्गतमें उन्हे खेंच लाते हैं या नहीं—मानसिक उन्नतिसे उन्हें विमुख कर देते हैं या नहीं? जो बड़े आदमी जुआ खेल कर दरिद्र होजाते हैं क्या वह फिर दूसरों पर हाथ साफ नहीं करते हैं?"

गत सौ वर्षका इतिहास मैंने कह सुनाया तो महाराजको बहुतही आश्चर्य्य हुआ। उन्होंने कहा "क्या तुम्हारे देशमें केवल षड़यन्त्र, विद्रोह, खून खराबी, नरबलि, समाजविप्लव, देशनिकाला, इत्यादि भरा हुआहै? यह सब तो लोभ, विवाद, कपटता,

विश्वासघात, नृशंसता, क्रोध, पागलपन, घृणा, ईर्षा, द्रोह, विषय वासना, और उच्चभिलाषाओंके फल हैं।"

दूसरे दिन महाराजने बडे श्रमसे मेरे व्याख्यानके सार भागको कह सुनाया और अपने प्रश्नोको मेरे उत्तरसे मिलाया। फिर हाथमें मुझे लेकर धीरे धीरे पीठ ठोकते हुए श्रीमान्‌ने प्यारसे जो कुछ कहा था सो आज तक मैं नही भूला हूं। आपने कहा "ऐ मेरे नन्हे मित्र! तूने अपने देशकी बहुत सुन्दर प्रशसा सुनाई। तेरे कहनेसे मुझे अब अच्छी तरह मालूम होगया कि व्यवस्थापक होनेके लिये मूर्खता, सुस्ती और पापाचरणकी बहुत जरूरत है। जो कानूनको उलट पलट करने, बिगाडने और बालकी खाल निकालनेमें निपुण होते हैं वही तुम्हारे यहा आईनकी व्याख्या. वक्तृता तथा उसके अनुकूल काम भली भाति कर सकतेहै यह मुझे अब मालूम हुआ। तुम्हारे यहांकी कोई कोई बातें पहले तो अच्छी थी पर अत्याचारके कारण धीरे धीरे मिटती जाती है और बहुतसी तो एक दम लुप्त होगई। जो कुछ तूने कहा उससे प्रगट होता है कि विलायतवाले किसी विषयमें पूर्णता प्राप्त करना नहीं जानते और यह तो जानतेही नही कि मनुष्य अपने गुणोंके प्रतापसे बडे होते, पादरी दया और ज्ञानसे बढते, सिपाही आचरण और साहससे विख्यात होते, जज न्यायसे यशके भागी होते. व्यवस्थापक देशानुरागसे तथा राजमन्त्री बुद्धिमानीसे प्रख्यात होते है। तूने अपना सारा समय देशाटनहीमें बितायाहै इसलिये शायद तू अपने देशके बहुतसे पापोंसे बचा होगा। जो कुछ तूने कहा और जो कुछ मैंने सुना उससे मुझे मालूम होगया कि तुम लोग बडे भयानक विषैले कीडे हो। ससारमें ऐसे कीडे और नही होंगे।

अष्टम परिच्छेद।

मैं नितान्त सच्चा हूं इसीसे यह सब बाते लिखी है अन्यथा कदापि न लिखता। मेरी "स्वर्गादपि गरीयसी" जन्मभूमिकी

निन्दा होती थी और मैं खडा खडा सुनता था। पर मैं कर ही क्या सकता? अगर कुछ कहता तो लोग हंसीमें उडा देते। इसीसे मैं चुप रहा। मैं बडे फेरमें पड गया था। महाराज इतना खोद खोद कर सब बातोंको पूछते थे कि मैं कुछ छिपा न सका। तथापि जहां तक बना मैंने छिपानेकी चेष्टा की। महाराजके सब प्रश्नोंका उत्तर मैंने बहुत थोडे शब्दोंमें गडबड सडबड दे दिया। अपने जानते मैंने बहुतसी कुरतियों और कुचालोंको ढांपना चाहा पर हुआ नहीं।

महाराज विचारेका इसमें क्या दोष है? वह दुनियाके एक छोरमें रहते हैं। भिन्न भिन्न जातियोंकी रीति नीति वह क्या जानें? इस वास्ते नई नई बातें सुन कर उनका अचरज या असम्भव मानना कुछ विचित्र नहीं है। कूएके मेडक बननेसे बुद्धिमें पक्ष-पात और विचारमें ओछापन आही जाताहै। परन्तु हम और यूरपके सभ्य देश इस दोषसे बचे हैं। ऐसे दूर देशके राजाके पाप पुण्यके विचारोंको मनुष्य मात्रके लिये आदर्श बनाना जरा टेढी खीर है।

जो कुछ मैंने कहा है उसको दृढ करने तथा परिमित शिक्षाका जघन्य फल दिखलानेके लिये एक बात सुनाता हू। पर बहुत कम लोग इसका विश्वास करेंगे। चाहे कोई विश्वास करे या न करे मैं बात सच्ची कहूंगा। मैंने महाराजको प्रसन्न करनेकी आकांक्षा से बारूद और तोपकी प्रशंसा करके कहा "तीन चार सौ वर्षसे यहां बारूद नामकी एक बुकनी चली है। इस बारूदके बडे भारी ढेरको एक छोटीसी चिनगारी पल भरमें स्वाहा कर देती है और यह बिजलीसी कडक कर आकाशमें उड जाती है। लोहे या पीतल के चोंगेमें अन्दाजसे बारूद और लोहे या शीशेकी गोलियां भर कर पलीता दागतेही गोलियोंकी शक्ति अपार होजाती है। फिर किसकी सामर्थ्य जो इनकी गतिको रोके? इन्हीं चोंगोंका नाम बन्दूक है। जिनमें बडे बडे गोले भरे जाते हैं उनका नाम तोप है।

तोपसे केवल मनुष्यही नहीं मरतेहै, बडे बडे किलोंकी दीवारे भी रसातलमें पहुंच जाती है और आदमियोसे भरे भराये जहाज जहांके तहां विलीन होजाते है। हम लोग प्राय: इन्हीं तोपोंकी मददसे किले तोड फोड कर दखल कर लेते है और शत्रुओंकी सेना सहार कर विजय प्राप्त करते है। इसके बनानेकी तरकीब मै जानता हूं। इसके मसाले सहज और सस्ते है। मैं महाराज के कारीगरोंको तोप, बन्दूक, बारूद वगैरा बनानेका उपाय बता सकता हू। यहाके सौ फुटसे ज्यादे लम्बी तोप न होनी चाहिये। इस तोपके द्वारा मजबूतसे मजबूत नगरकोट पलभरमें उड सकता है और समूची राजधानी पलक मारते मत्यानाश होसकती है।"

मेरी बात सुन कर महाराजके होश हवास उड गये। वह साश्चर्यसे बोल उठे "क्या कहा तोप और बारूद। ताज्जुब है कि तुम्हारे जैसे कीडे मकोडे भी ऐसी ऐसी अमानुषिक बातें सोचते है। मालूम होता है कि किसी पिशाचने मनुष्य जातिकी जड काटनेके लिये यह सब यन्त्र पहले पहल निकाले है। खून खराबीकी बातें कहनेमें तेरा मन जरा भी न डरा। वेधडक बोलता चला गया। तेरी छाती बडी कडी है। मैं शिल्प या सृष्टिके नूतन आविष्कार से जितना प्रसन्न होता हू उतना और किसीसे नही। मेरा आधा राज्य चाहे चला जाय पर मैं इस निगोडी तोपको अपने यहा घुसने न दूंगा। और तुझे भी अगर जान प्यारी हो तो फिर इसकी चर्चा मत चलाना।"

अहह। चित्तकी संकीर्णता और ओछे विचारोंका भी कैसा अद्भुत प्रभावहै। परम बुद्धिमान, सकल विद्यानिधान नीति कुशल, प्रजा प्रिय महाराजने जो अपने सद्गुणोंसे प्रतिष्ठित, सम्मानित और सर्वपूजित है उस प्रयोगको जिसके द्वारा वह अपनी प्रजाके धन और प्राणके पूरे अधिकारी हो सकते थे योंही हाथसे निकल जाने दिया। यूरपवालोंको ऐसा सयोग कभी सपनेमें भी नहीं मिलता है। अगर मिल जाय तो वह कदापि उसे न छोडें। मैंने शुद्ध

सुयोग्य महाराजकी निन्दा करनेकी इच्छासे यह नहीं कहा है परन्तु मैं जानता हूँ कि महाराज अपनी इस कार्रवाईसे हमारे पाठकोंकी दृष्टिमें बहुत हलके हो जायगे। लेकिन एक बात है— यूरोपके विज्ञ पुरुषोंने जैसे राजनीति (Politics) का भी एक शास्त्र बना डाला है वैसा इन लोगोंने अब तक नहीं बनाया है क्योंकि यहां विद्याका प्रचार अभी अच्छी तरहसे नहीं हुआ है। बस इसीसे यहांवालोंमें यह दोष है। मुझे याद है एक दिन बातही बातमें जब मैंने महाराजसे कहा कि हमारे यहा तो शासन विषयक बहुतसी छपी हुई पोथिया हैं तो वह हम लोगोंकी समझको बहुत भद्दी कहने लगे। राजा या मन्त्रीके रहस्य, सस्कार और षडयन्त्रको वह घृणित समझतेथे। जिस राज्यमें कोई शत्रु वा प्रतिद्वन्दी नहीं है। वहां "राज्यके रहस्य" (Secrets of State) से क्या तात्पर्य्य है सो वह समझ न सके। वह राज्य शासनका अभिप्राय केवल साधारण ज्ञान, न्याय और दया तथा दीवानी और फौजदारी मुकद्दमेंको जल्दी फैसल करना आदि बतलाते थे। उनकी रायसे जिस भूमिमें एक सेर अन्न पैदा होता है उसीमें दोसरे उपजानेवाला एक किसान देशका जितना उपकार करता है उतना राजनीति जाननेवाले सब मिल कर भी नहीं कर सकते है। अन्न पैदा करने वाले कृषकही देशके सच्चे गौरव है।

इन लोगोंकी विद्या बहुत दोषयुक्त है। यह केवल धर्म्मनीति, इतिहास, काव्य तथा गणितमें पारङ्गत होते है। परन्तु गणित उतनाही सीखते हैं जितना कि नित्यप्रतिके व्यवहारमें, कृषि तथा शिल्पकी उन्नतिमें काम आता है। हम लोगोंमें तो ऐसी विद्याका कुछ आदर नहीं है। विचार, पदार्थ, विज्ञान और वेदान्तकी बातें तो उनके मस्तिष्कमें किसी तरह भी मैं घुसा न सका।

यहाकी वर्णमाला केवल २२ अक्षरोंकी है। बस कानून भी यहा इतनेसे अधिक शब्दोंके नहीं होते है। परन्तु वास्तवमें विरले ही कानून इतने शब्दोंके होते है। कानूनकी भाषा अत्यन्त सरल

और स्पष्ट होती है। कानूनका दो तरहसे अर्थ लगाना यहांके लोग जानते है। आईन कानूनकी टिप्पणी करनेसे प्राण दण्ड होता है। दीवानी फौजदारी मुकद्दमोंकी नजीरें इतनी कम पाई जाती है कि यहांके लोग इस विषयके चातुर्य्यका अभिमान करही नही सकते है।

चीनियोंकी तरह इनके यहां भी छापेका प्रचार बहुत दिनोंसे है। यहा बहुत बडे बडे पुस्तकालय नहीहै। सबसे बडा पुस्तकालय महाराजका कहा जाताहै उसमें भी हजारसे अधिक पोथियां नही है। यह सब पुस्तकें बारह सौ फुट लम्बी गैलेरीमें सजाई हुई है। मुझे महाराजकी आज्ञा थी मैं जो किताब चाहताथा लेकर पढता था। महारानीके कारीगरोंने लकडीकी पचीस फुट ऊंची एक सीढी बनादी थी जो दायाके कमरेमें रखी रहती थी। इसके डन्डे पचास पचास फुट लम्बे थे। यह एक ठौरसे दूसरी ठौर उठाकर रक्खी जा सकती थी। सीढीका निचला हिस्सा दीवारकी जडसे दस फुट दूर रहता था। जो पोथी मैं पढना चाहता था उसे दीवार के सहारे खडी कर देता था। फिर मैं सीढीके ऊपरसे पढना शुरू करता—पंक्तिकी लम्बाईके अनुसार आठ दस कदम दायें बायें सरकता हुआ नीचे उतरता था। इस प्रकार पढ कर एक पृष्ठ समाप्त करता और पुन ऊपर चढ कर दूसरे पन्नोंमें हाथ लगाता। पन्ने पलटनेके निमित्त दोनों हाथोंसे मदद लेनी पडती थी क्योंकि पन्नों की लम्बाई पन्द्रह बीस फुट और मुटाई दफ्तीके समान थी।

इन लोगोंकी रचना स्पष्ट, ओजस्विनी और कोमल होती है पर अलङ्कार युक्त नही। यह लोग बहुतसे अनावश्यक शब्दोंका प्रयोग और विविध प्रकारका वर्णन नही करते है। मैंने इनकी बहुतसी पोथिया पढी है। विशेष कर इतिहास और नीति ग्रन्थही अधिक देखे हैं। दायाके सोनेके कमरेमें एक छोटीसी पोथी धरी रहती थी मैं प्राय इसीको पढता था। यह दायाकी गुरुआनीकी पोथी थी जो नीति और उपासनाकी पुस्तकोंका सार

बार करती थी। इस पुस्तकमें मनुष्य जातिकी निर्ब्बलताका वर्णन था। स्त्रियों और गवारोंके सिवा कोई पण्डित इसका आदर नहीं करता था। जो हो, इस पुस्तकके पढनेका मुझे बहुत चाव हुआ। इसलिये इसको मैंने पढा। पढ कर देखा कि ग्रन्थकारने यूरोपके नीति विशारदोंके समस्त साधारण विषयोंका उल्लेख करके लिखा है कि मनुष्य स्वभावहीसे कैसा क्षुद्र, कैसा घृणित और कैसा असहाय है। इतना असमर्थ है कि जङ्गली जानवरोंसे क्या हवासे भी अपनी रक्षा नहीं कर सकता है। बलवान जीवोंसे मनुष्य कितना निर्बल, द्रुतगामियोंसे कितना सुस्त, दूरदर्शियोंसे कितना अदूरदर्शी तथा परिश्रमियोंसे कितना आलसीहै। ग्रन्थकारने आगे चलके फिर कहाहै "प्राचीनकालकी अपेक्षा आजकल स्वय प्रकृति देवीकी अवस्था बिगड़ गईहै। अब छोटे छोटे जीव पैदा होने लगेहैं। पुराने जमानेमें केवल मनुष्यही बडे डीलडौलवाले नहीं होते थे। वरञ्च दैत्य दानव भी होतेथे। अब भी जहां तहां जमीन खोदनेसे पुराने समयके बडे बडे अञ्जर पञ्जर और हड्डियां पाई जातीहै। इतिहास और दादा परदादोंसे सुनी हुई बातें इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यह हड्डियां आजकलके छोटे आदमियोंकी हड्डियोंसे कहीं बडी हैं। इससे यह सिद्धान्त निकलता है कि आरम्भमें प्रकृतिका यही नियम था कि मनुष्य बहुत बडे और बलवान हो—खपडेके गिरनेसे या लडकेके कङ्कडी मारनेसे या छोटी छोटी नदियोंमें डूबने इत्यादि छोटी मोटी घटनाओंसे न मरें।" इसी तरहकी युक्तिया दिखला कर ग्रन्थकर्त्ताने कई सुन्दर नैतिक-सिद्धान्त निकालेहै जिनका यहां उल्लेख करना मैं वृथा समझता हूँ पर इतना जरूर कहूंगा कि प्रकृतिसे लडाई ठानकर नीतिके व्याख्यान करनेकी, नहीं नहीं, असन्तोष तथा दुःख प्रकाश करनेकी परिपाटी सारे संसारमें कैसी फैल गईहै! मुझे विश्वास है कि अच्छी तरह खोज करने पर इन विराट् पुरुषों के समान हम लोगोंमें भी इस असन्तोषका कुछ कारण न ठहरेगा।

अब कुछ सेनाके विषयमें लिखता हूं। यहांके निवासी गर्वके साथ बोल उठते हैं "हमारे राजाके तो दो लाख आठ हजार सेना है - एक लाख छिहत्तर हजार पैदल और बत्तीस हजार घुड-सवार।" सौदागरों और किसानोंहीकी जहां फौज है और शहरके रईसही जहां फौजमें अफसर हैं वहां इतनी फौज होनी कौन मुश्किल है? तिस पर तुर्रा यह कि इन सबको तलब तनखाह या इनाम इकराम कुछ नहीं दिया जाता है। यह लोग युद्ध विद्यामें बड़े निपुण और दक्ष होते हैं। पर इससे इनको कुछ नामवरी नहीं क्योंकि हर एक किसान अपने अपने जमींदारके और नगर निवासी अपने अपने नगरके प्रधान रईसके आज्ञाधीन रहते हैं। फिर युद्धविद्यामें यह सुदक्ष क्यों न होंगे?

मैं कवाइद देखनेको अकसर जाता था। राजधानीके पासही बीस मीलका एक चौकोर मैदान था वहीं कवाइद होती थी। पचीस हजार पैदल और छ हजार घुड़सवारसे अधिक सेना एकत्र नहीं होतीथी। पर जितनी दूरमें वह खड़ी होती थी उसको ख्याल कर गिनती करना मेरे लिये असम्भव था। सवार सब घोड़े सहित लग भग नव्वे फुट तो जरूर ऊंचे होंगे। सेनापतिका सङ्केत पातेही सब सवार एक साथही तलवार निकाल कर आसमानमें घुमाने लग जाते थे। यह दृश्य इतना विराट् इतना अद्भुत और इतना आश्चर्यजनक होता था कि जिसका वर्णन क्या अनुमान भी नहीं होसकता है। उस समय यही मालूम होताथा कि आकाशमण्डलमें चारों ओरसे बिजली चमक रहीहै। आकाश विद्युन्मय हो गयाहै।

यहां किसी दूसरे मुल्कसे कोई आया नहीं फिर महाराजको सेना रखनेका या उसे कवाइद सिखानेका विचार कैसे हुआ सो जाननेके लिये मेरी बहुत इच्छा हुई। पीछे इतिहास पढ़नेसे तथा लोगोंके कहनेसे सब हाल मालूम होगया। संसारकी समग्र मानव-जाति जिस रोगसे पीड़ित है यहां वाले भी उसी महारोगसे बहुत दिनों तक पीड़ित रह चुके हैं। प्रधान पुरुष प्राय प्रभुत्वके लिये,

सोच कर दाया इतनी दु:खित हुई थी। होनेवाली बात मानो उसे पहलेहीसे मालूम होगई थी। पिञ्जरा हाथमें ले छोकरा समुद्र की ओर चल पडा। आधे घण्टेमें ठिकाने पर जा पहुंचा। यह जमीन पहाडी थी। मेरे कहनेसे उसने पिञ्जरा जमीन पर रख दिया। मैं खिडकी खोल कातर होकर उत्सुक दृष्टिसे सागरकी तरफ निहारने लगा। निहारते निहारते जी घबरा गया तब झूले पर जाकर लेट रहा। छोकरा खिडकियां मूंद कर चिड़ियों के अण्डोंकी खोजमें घूमता हुआ दूर निकल गया। मैं भी अपने को निरापद समझ, लगा खर्राटे लेने। पिञ्जरेके बेतरह हिल उठनेसे आंखे खुली तो देखा कि पिञ्जरा बडी तेजीके साथ ऊपर को उठ रहा है। मैं गला फाड फाड कर पुकारने और चिल्लाने लगा पर कुछ जवाब नहीं। मैंने खिडकी खोली तो आकाश और बादलोंके सिवा और कुछ दिखाई न दिया। इतनेमें पङ्खकी फटफटाहट सुन पडी जिससे मैं अपनी दुरवस्थाको अच्छी तरह समझ गया। मालूम होगया कि कोई गिद्ध पिञ्जरेको चोंचमें लिये उडा जा रहाहै। किसी चट्टान पर पटक कर मुझे जीता निगल जायगा। हाय! इतने पीछे रहने पर भी गिद्धको मेरी गन्ध पहुँच गई। यह सब बातें सोच कर मेरे होश हवास जाते रहे। आखोंके आगे अन्धियारी छागई। परमात्माका स्मरण कर मैंने नेत्र बन्द करलिये

गिद्ध और भी फर्राटे भरने लगा। पङ्खकी फटफटाहट भी बढने लगी। पिञ्जरा भी दायें बायें हिलने लगा। चोंचकी खटा खट सुनाई पडी। इतनेमें किसी चीजके टूटनेकी फटसे आवाज आई और पिञ्जरा बडे वेगसे नीचे गिरने लगा। यह इस तेजीसे गिरा कि मेरा दम घुटने लगा। एक मिनटके बाद इतने जोरका धमाका हुआ कि कानके परदे फट गये। तमाम अन्धेरा छागया। फिर पिञ्जरा ऊपर उठा और खिडकियोंकी सन्धिसे उजाला आने लगा। अब मालूम होगया कि मैं समुद्रमें गिर पडा हूं। पिञ्जरेमें मैं था कुछ मेरा असबाब। मजबूतीके लिये उसके ऊपर नीचे और

चारो कोनोमें लोहेके पत्तर जडे थे। अतः वह पांच फुट तो पानी के भीतर और बाकी बाहर रहा। वह उतराता हुआ बहने लगा।

मैं समझता हूँ जब गिद्ध पिञ्जरा लिये उडा जाता था तब और भी दो चार गिद्ध आपहुचे और आपसमें शिकारके लिये लडने लगे। इसी लडाई भिडाईमें पिञ्जरा चोंचसे छूट कर समुद्रमे गिर पडा। और बात भी यही मालूम होती है। पिञ्जरेके नीचे लोहेका मजबूत पत्तर लगा था इसीसे जलकी चोटसे वह नहीं टूटा। हर एक जोड इसका खूब कसा हुआ था और किवाड भी इसमें कलेदार न थे बल्कि ऊपर नीचे उठनेवाले। सो वह भी खूब कसे थे। पानी घुसनेका दाव किसी तरहसे भी न था। मैं बडी कठिनाईसे झूले परसे उतरा। हिम्मत करके ऊपरकी दरीची हवा आनेके लिये खोलदी क्योंकि हवा विना मेरे प्राण निकले जाते थे।

दायाकी याद मुझे बराबर आती थी। हाय! जन्म भरके लिये मैं उससे अलग होगया। वह मेरा कितना लाड प्यार करती थी! मेरे विना वह कितना रोती होगी। महारानी न जाने उस पर कितना गुस्सा होती होगी। उसके दुःखको सोच कर मैं अपना सब दुःख भूल गया। जैसी विपदमें मैं फसा था वैसी और किसी पर काहेको आई होगी! यही मालूम होता था कि अब पिञ्जरा किसी पहाडसे टकराया अब उलटा—अब मरा, मौत सिरपर नाच ही रही थी सिर्फ शीशेकी किवाडियोंके फूटनेकी देर थी। दरीचियोंमें जाली मढी हुई थी इसीसे जान बची। अब पानी भी जरा जरा घुसने लगा। मैं भी उसके बन्द करनेकी यथा साध्य चेष्टा करता जाता था। मैं अपनी जिन्दगीसे हाथ धो बैठा क्योंकि चारो ओर मृत्यु दिखाई पडती थी। और कोई आफत चाहे न आवे पर अन्न जलके विना तो जरूर मरना पडेगा। चार घण्टे तक मैं इन्ही सब विचारोंमें मग्न रहा।

मैं पहले कह चुकाहूं कि पिञ्जरेके उस तरफ जिधर खिडकिया

न थीं दो कडे लगे हुए थे। इन्हींमें रस्सी पिरो कर सवार लोग पिञ्जरेको कमरसे बांध लेते और घोडे पर ले चलते थे। अच्छा सुनिये। जब मैं मृत्युका सपना देख रहा था मुझे उस तरफ जिधर कोढे थे कुछ आहटसी मालूम हुई। फिर जान पडा जैसे पिञ्जरे को कोई खैंच रहा है। अब बचनेकी कुछ कुछ आशा होने लगी क्यों होने लगी सो मालूम नहीं। मैंने चट एक कुर्सीको जो पेच से कसी हुई थी उखाड कर ऊपरवाली खिडकीके ठीक नीचे ला रखा जिसे हवा आनेके लिये अभी खोल दिया था। मै कुर्सी पर खडा होगया और खिडकीके पास मुंह लेजाकर जोरसे पुकारने लगा। जितनी भाषायें जानता था एक एक कर सबमें मदद मांग गया। फिर छडीको जो बराबर साथ रहती थी रूमाल बांध कर ऊपर उठाया और कई बार हिलाया। समझा था कि आस पास कोई जहाज होगा तो आकर मुझे उबार लेगा।

यह सब मैंने किया पर लाभ कुछ न हुआ। पिञ्जरा आगे बढताही जाता था। एक घण्टेके बाद यह किसी कडी चीजसे टक्कर खागया। मैंने समझा कि टक्कर पहाडसे लगी है और अब मामला खतम है। इतनेमें ऊपर रस्सेकी खरखराहट सुनाई पडी और पिञ्जरा भी धीरे धीरे जलसे तीन फुट ऊंचा उठ गया। मैंने फिर रूमाल हिलाया गला फाड फाडके पुकारा। अबके तीनबार जयध्वनि सुन पडी। मारे खुशीके मै फूल कर कुप्पा होगया छत पर आदमियोंके चलनेकी धमधमाहट मालूम हुई। खिडको की राहसे अङ्गरेजीमें किसीने पूछा "भीतर कौन है ?" मैंने जवाब दिया "एक अङ्गरेज। बडी भारी विपदमें फंस गया हूं। ऐसी विपदमें कभी कोई नहीं पडा होगा। दया कर इस कैदसे मुझे निकालो मै बडा उपकार मानूंगा।" ऊपरसे आवाज आई "कुछ परवाह नहीं—अब मत डरो। पिञ्जरा जहाजसे बांध दिया गया है। बढई आता है राह बन जाय तो तुम्हें निकाल लूंगा।" मैंने कहा "इतने बखेडेकी क्या दरकारहै ? इसमें तो बहुत देर लगेगी।

किसी मल्लाहसे कह दीजिये वह इसको उठा कर जहाज पर रख देगा।" मेरी बात सुन कर कोई तो हस पडा और कोई मुझे पागल समझने लगा। सचमुच उस समय मुझे याद न था कि मैं अपने जैसे आदमियोंके बीचमें आगया हूँ। आखिर बढई आया और छेद बनाया गया। सीढीके सहारे मैं जहाज पर जा पहुँचा। उस समय मैं बहुत कमजोर था।

जहाजवाले सब अचम्भेमें थे। प्रश्नोंकी भरमार मुझ पर होने लगी पर उस समय मुंह खोलना मुझे पसन्द न था। इन नन्हे नन्हे जीवोंको देख कर मैं घबरा सा गयाथा। उन विराट पुरुषोंके आगे यह तुच्छ मालूम पडते थे। कप्तान जो बडा भलामानस था अपने कमरेमें लेगया और वहां उसने मुझे शराब पिलाई फिर अपने बिस्तरे पर सुला दिया। मैंने कहा "मेरे पिञ्जरेमें बडी बडी बेशकीमत चीजें हैं—एक सुन्दर झूला, एक सफरी पलङ्ग, दो कुर्सियां, एक मेज वगैरः है। पिञ्जरेके चारो ओर रेशमी गद्दियां और परदे लगे हुए हैं। अगर उसको अपने किसी आदमीसे यहां मगवाइये तो अभी सब खोलकर दिखा दूं।" मेरी इन बेसहूल बातोंको सुनकर कप्तान शायद मुझे पागल समझने लगा। तथापि वह समझाकर बोला "आप आराम कीजिये मैं अभी मगवाताहूं।" इतना कह वह बाहर चला गया और मैं निद्रादेवीसे प्रेमालाप करने लगा।

मैं कई घण्टे तक सोया लेकिन बराबर उन्हीं सब पिछली बातों को सपनेमें देखता रहा। जब नींद टूटी तो जी बहुत अच्छाथा। उस समय रातके आठ बज गये थे। कप्तानने फिर मुझे खिलाया और बडा सम्मान किया।

मेरे पिञ्जरेकी बडी दीकालेदर हुई। उसकी दशा देख मुझे बडा दुःख हुआ। बेवकूफ मल्लाहोंने तोड फोड नोच खसोट कर उसके तख्ते निकाल लिये थे। रेशमी गद्दियोंको फाड फूड कर चौपट कर दिया और पेंचसे जडी हुई मेज वगैर को भी तोड ताड कर सत्यानाश कर डाला था।

जब सन्नाटा होगया और मेरा जीभी ठिकाने हुआ तब कप्तान ने मेरे सफरका हाल पूछा और कहा "आज दिनको करीब बारह बजे जब मैं दूरबीन लगा कर इधर उधर देख रहा था मेरी नजर आपके पिञ्जरे पर जापडी। मैंने पहले इसे कोई नाव समझा था। नजदीक आने पर यह कुछ औरही मालूम पडा। तब मैंने किश्ती पर अपने आदमियोंको इसका पता लगानेके लिये भेजा। वह सब आकर आश्चर्यके साथ बोले कि यह तो तैरता हुआ एक घर है। पर मुझे विश्वास न हुआ। उन लोगोंने कसम खाके कहा तो भी मै हंसने लगा। शेषमें मैं स्वयं वहां गया और एक बडा रस्सा भी साथ लिवाता गया। मौसम अच्छा था। कई मरतबे आप की पिञ्जरेकी प्रदक्षिणाकी द्वार और किवाडोंको अच्छी तरह देखा। अंकडों पर दृष्टि पडी तो उनमें रस्सा बाध दिया और खेंच कर जहाजकी ओर लेचलनेको मल्लाहोंसे कहा। जब जहाजके पास आये तो एक दूसरा रस्सा ऊपरवाली आकडीसे बाध कर ऊपर उठानेके वास्ते हुक्म दिया। सब जहाजियोंने मिल कर चरखी पर खेंचा परन्तु तीन फुटसे ज्यादे ऊंचा न उठा सके बाद आपका रूमाल फहराता हुआ उनको दिखलाई पडा तब समझा कि इसके भीतर कोई अभागा बन्द है। फिर जो कुछ हुआ सो आप जानते ही है।" इतना सुन कर मैंने अपना वृत्तान्त कह सुनाया और पूछा "जिस समय आप लोगोंने पहले मुझे देखा उस समय आकाश में कोई बडा पक्षी दिखाई पडा था?" उसने जहाजियोंसे पूछ कर जवाब दिया "मैंने तो नहीं देखा लेकिन एक मल्लाह कहता है कि उसने उस समय तीन गिद्ध उत्तरकी तरफ उडते हुए देखेहै पर वह बहुत बडे न थे। मामूली जैसे होते है वैसेही थे।" मैं समझता हू बहुत ऊ चे पर होनेहीके कारण वह छोटे मालूम पडे होंगे।

मैं—अच्छा यहासे जमीन कितनी दूर पर होगी?

कप्तान—कमसे कम तीनसौ मील पर।

मैं—नहीं, इतना नहीं। समुद्रमें गिरनेसे करीब दो घण्टे पहले तो मै उसी देशमें था जहासे चला आता हू।

इतना सुनतेही वह फिर मुझे बौडस समझने लगा और पुनः सोनेके लिये कहा। मैंने बहुत तरहसे समझाया और कहा कि मैं कभी पागल न था और न हूं। मेरे होश हवास सब ठीक है। पर वह क्यों मानने लगा? बोला "तुम जरूर कोई भारी अपराधी हो। किसी भारी अपराधके कारण तुम्हें यह सजा मिली थी। मैंने बडी भूल की जो तुम्हारे प्राण बचाए। खैर चलो दूसरे बन्दर पर तुम्हें उतार कर जहाज हलका कर लूंगा। तुमने जैसी तैसी असम्भव बातें जिस भाव भङ्गीसे कही है उनसे तुम पर पूरा सन्देह होता है।

मैंने हाथ जोड कर कहा "आप धीरज धरें और मेरी सब कहानी सुनलें तब आपके मनमें जो आवे सो कीजिये।" मैं पुनः आदिसे अन्त तक अपनी सब बातें एक एक कर सुना गया। सत्य की तामस जय है। और कप्तान भी कुछ पढा लिखा था। अतएव मेरी सच्ची बातोंने उसके चित्त पर कुछ प्रभाव डाला। मैंने बक्स मंगवा कर वहांकी अनूठी अनूठी चीजें दिखलाई। महाराजकी दाढीके बालकी कङ्घी (जो मैंने बनाई थी) एक फुटसे लेकर गज गज भर लम्बी सूई और पिन, भिडके डङ्क जो सूएके बराबर थे, महारानीके बाल और एक अंगूठी जो महारानीने प्रसन्न होकर छगुनियासे उतार कर मेरे गलेमें पहना दी थी दिखाई तो कप्तानको विश्वास हुआ। मैं कप्तानको उसकी खातिरदारीके बदले अंगूठी देने लगा पर उसने नहीली। फिर मैंने एक गट्टा दिखाया जो महारानीकी एक सहेलीके अंगूठेसे काट लिया था। यह सूख कर इतना कडा होगया कि लण्डन पहुंच कर इसका एक कटोरा बनवाया और फिर चान्दीसे मढवा दिया। चूहेके चामका एक पाजामा भी मैंने दिखाया।

दांत देख कर कप्तानको बहुत आश्चर्य हुआ। यह दांत दाया के एक नौकरका था उसके दांतमें खूब दर्द हुआ तो एक नीम हकीमने उसका दांतही उखाड़ डाला था। मैंने उसे धो धाकर

अपने सन्दूकके हवाले किया। यह अन्दाज एक फुट लम्बा था और इसका व्यास था चार इञ्च। कप्तानने और कुछ तो लिया नहीं पर इस दांतको बडी मुश्किलसे लिया। इसके लिये मुझे विपुल धन्यवाद भी दिया।

इन सब चीजोंको देख कर कप्तान बहुत खुश हुआ और बोला "इङ्गलेण्ड पहुंचने पर इस यात्राका वृत्तान्त पुस्तकाकार आप छपवादें तो बहुत अच्छा हो।" मैंने कहा "आज कल बहुतेरी यात्राएं छप गई हैं। आजकल सब बात आश्चर्य्यजनक है। ग्रन्थकार लोग भी आजकल शायद अपनी डींग हांकने, स्वार्थ सिद्ध करने और मूर्ख पाठकोंका मनोरञ्जन करनेकी अपेक्षा सत्यकी ओर बहुत कम ध्यान देते हैं। और मेरी पोथीमें तो अद्भुत पेड पत्ते जीव जन्तु वगैराके वर्णनके बदले साधारण बातें होगी अथवा जङ्गली जातियों की पुरानी असभ्य चाल ढाल और मूर्त्ति पूजा रहेगी सो इन बातों को प्रायः सभी ग्रन्थकर्त्ता लिख चुके हैं। तथापि आपको इस कृपाका धन्यवाद है। मैं अवश्य आपकी आज्ञा पालन करूंगा।"

मैं सब बातें गर्ज कर कहता था। इस पर कप्तानने पूछा "क्या वहाके लोग कुछ ऊंचा सुनते थे?" मैं बोला "नही—मेरीही आवाज इतनी धीमी थी कि उनको सुनाई नहीं पडती थी। मैं जब वहां था तो मुझे इतने जोरसे बोलना पडता था जितना कि छत परके आदमीको आगनवालेसे बोलनेमें चिल्लाना पडता है। दो बरससे यही अभ्यास पड रहा है। जब तक वह मुझे हाथमें न उठा लेते थे उनको मेरी आवाज सुनाई नहीं पडती थी। उन लोगों की विकट ध्वनि सुनते आप लोगोंकी आवाज मुझे फुसफुसाहट सी मालूम होती है। एक बात और सुनिये। जब मैं पहले आपके जहाज पर आया। तो आप लोग मुझको अत्यन्त छोटे मालूम पडते थे। इसी छुटाईके मारे जब वहा मै था आईना कभी नहीं देखता था। आईना देखनेसे मुझको अपने ऊपर अत्यन्त घृणाहो जातीथी। उनकी वह विराट् मूर्त्तिं देख कर मुझको अपना शरीर

बहुतही छोटा और घृणित मालूम होता था।" कप्तान बोल उठा इसीसे भोजनके समय आप अचरजके साथ इधर उधर देखते और हंसतेथे। यह ढङ्ग देखकर हम लोगोंने आपको पागल समझाया।"

मैं—हां आप सच कहते हैं। जब आपने छोटी छोटी रिकाबी और प्याले रख दिये तो मुझको बडा आश्चर्य्य हुआ था। यद्यपि रानीने मेरे लिये छोटे छोटे वर्त्तन बनवा दिये थे तथापि वहां की बडे बडे वर्त्तन रात दिन देखते देखते मेरी आंखें बिगड़ गई हैं। आदमी जैसे अपनी भूल आप नहीं देखता है वैसेही मैं भी अपनी छुटाई नही देख सकता था।

कप्तान—ठीक है आपके पेटसे आपकी आंखेंही बडी हैं। दिन भर उपास करने पर भी आपने कुछ ज्यादे भोजन न किया।

इसी प्रकार और बहुतसी बातें हुई जिनका लिखना फजूल है। नौ महीनेके बाद जहाज इङ्गलैण्ड पहुंचा। तीसरी जून १७०६ ईस्वीको डाउनमें जहाजने लङ्गर गिराया। मैं कप्तानको भाडा देने लगा पर उसने फूटी कौडी भी न ली। आखिर मैं एक टट्टू किराया करके घरकी तरफ रवाना हुआ।

रास्तेमें छोटे छोटे घर, पेड, मवेशी, आदमी वगैराको देखकर मैं अपनेको फिर लिलीपटमें समझने लगा। मुझको बराबर यही डर लग रहा कि कहीं कोई पैरसे न कुचल जाय। मैं अकसर बोल उठता था—"हटो बचो नही तो कुचल जाओगे।" इस पर लोग मेरा मुंह देखने लग जाते थे।

जब मैं घर पहुंचा तो भीतर घुसनेके समय ठोकर लगनेके डर से सिर झुका लिया था। स्त्री मुझको देख कर खुशीके मारे मिलने को दौडी तो मैं झुक गया। मैंने समझा अगर न झुकूंगा तो वह मेरे गले तक न पहुंच सकेगी। मेरी लडकीने पैर छुए पर मैं उसे देखही न सका क्योंकि मुझको तो साठ फुट ऊंची चीज देखनेकी बान थी। जब वह उठ कर खडी हुई तो देखा और उसको गोदमें उठानेके लिये एकही हाथ बढाया था। अपनेको तो विराट् पुरुष

और दूसरोंको निपट बौना मैं समझने लग गया था। मैंने स्त्रीसे कहा—"प्यारी। तुम सबको खानेके लिये नहीं मिलता था क्या? तुम सबतो सूख कर काटा बन गई हो।" मतलब यह कि जब मैं घर पहुंचा तो सभी मुझको कप्तानकी तरह मिडी समझने लगे। इसमें आश्चर्यही क्या? यह तो पक्षपात और अभ्यासका नमूना है।

थोडे दिनोंके बाद सब बात माफिक दस्तूर होगई। मैं अपने आपेमें आगया और घरवाले भी मुझको होश हवासमें समझने लगे। स्त्रीने बहुत कहा सुना कि अब समुद्रकी यात्रा मत करो पर विधनाको यह मञ्जूर न था।

इति द्वितीय भाग समाप्त



विचित्र-विचरण।

तृतीय भाग।

लपूटाकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

पाठकगण! मैं दस बारह दिन भी घरमें न रहा था कि 'होपवेल' नामक जहाजका सरदार विलियम रविनसन् मेरे पास पहुंचा। इसके साथ पहले कुछ दिन तक मैं काम कर चुका था। यह जहाजका मालिक था और मैं जर्राह। यह मुझको भाईसे भी बढ़ कर मानता था। इसीसे मेरे आनेका हाल सुन कर मुझसे मिलनेके लिये दौड़ा आया। मेरे खुशी राजीसे घर लौट आने पर इसने बहुत आनन्द प्रगट किया। बहुत देर तक इधर उधर की बातें होती रहीं। फिर इसने कहा—"मैं दो महीनेमें हिन्दुस्थानका सफर करनेवाला हूं। मैं कुछ कह तो नहीं सकता लेकिन अगर आप चाहें तो चल सकते हैं। दो सहकारीके अलावे एक जर्राह भी आपके नीचे रहेगा। मामूली तनखाहसे आपको दूनी मिलेगी। आप बहुत सफर कर चुके हैं सो आपका तजरबा मुझसे कुछ कम नहीं है। इसलिये मैं वादा करता हूं कि जहाजका सब काम आपकी सलाहसे हुआ करेगा।" और भी शिष्टाचारकी बहुतसी बातें इसने कही थीं। मैं इस अनुरोधको टाल न सका। देशदेशान्तरोंमें घूमनेकी कुछ ऐसी चाट लग गई थी कि पिछले कष्टोंका कुछ भी ख्याल न कर मैंने फिर चलनेकी ठहराई। प्यारी ने बहुत जरा भुना पर इसे भी समझा बुझाके राजी करलिय

ता० ५ वीं अगस्त १७०६ ईस्वीको जहाज खुला और ११ वी अप्रैल १७०७ को फोर्टसेंगट जौर्ज जापहुंचा। कई आदमी बीमार पड गये थे इसलिये तीन हफ्ते तक जहाज यहां रुका रहा। यहांसे हम लोग टौनक्वीन गये। जो कुछ माल यहां खरीदना था वह सब तैयार न था अतएव कप्तानने यहां भी कुछ दिन ठहरनेकी आज्ञा दी। चुपचाप बैठे रहनेसे सिवाय खर्चके कुछ लाभ नहीं। इसलिये कप्तानने कुछ सोच समझ कर छोटीसी एक नाव खरीदी और उसमें वही सब चीजें भरीं जिनसे टौनक्वीनवाले आस पासके टापुओंमें तिजारत करते हैं। नाव पर चौदह मनुष्य थे जिनमें तीन उसी देशके थे। मैं सबका सरदार हुआ। कप्तान तो टौनक्वीन मे रहा और मैं नाव लेकर टापुओंकी तरफ रवाना हुआ।

तीसरे दिन बडे जोरकी आंधी आई। नाव राह छोड कर उत्तर पूर्व दिशाको जाने लगी। पांच रोज तक यही दशा रही। फिर पूर्वको मुडी। आंधी बन्द होगई थी लेकिन पच्छिमी हवा का वेग अधिक था। दसवें दिन डाकुओंके दो जहाजोंने पीछा किया। नाव बोझके मारे तेजीसे चल नहीं सकती थी। आखिर डाकुओंने हमारी नावको पकड लिया। हम लोगोंके पास अस्त्र शस्त्र कुछ नहीं था। हम लोग सब तरहसे निरुपाय थे।

दोनो जहाजके डाकुओंने एकही समय आक्रमण करके तेजीके साथ नावमें प्रवेश किया। मैंने अपने आदमियोंको पहलेसे पट पड रहनेकी आज्ञा दे रक्खी थी। सब मुंह छिपाये पडे थे। मैं भी पडा था। डाकुओंने आतेही हम लोगोंकी मुश्कें बांध कर अपने आदमियोंके हवाले किया फिर वह लोग लगे नावको रत्ती रत्ती ढूढने।

इन लुटेरोंमें एक दिनामार भी था। वह सबका मालिक तो नहीं पर सरदार सा मालूम होता था। वह सूरत शकलसे पहचान गया कि हम सब अङ्गरेज हैं। हम लोगोंको सुना कर वह अपनी बोलीमें बकने लगा—"तुम लोगोंको पीठसे पीठ बांध

कर समुद्रमें डुबा दूँगा।" मै दीनामारोंकी भाषा मजेमें बोल लेता था। मैंने उससे कहा—"साहब! हम लोग भी प्रोटेष्टेण्ट क्रस्तान हैं। हम आप सब एकही देशके हैं। कृपा कर कप्तानसे सिफारिश कर दीजिये जिससे हम लोगोंकी जान बचे।" इतना सुनतेही वह आग बगूला होगया। लाल लाल आंखे करके अपने साथियों से जापानी भाषासे न जाने क्या क्या बोलने और मुझको धमकाने लगा।

इन डाकुओंके दो जहाज थे। बड़े जहाजका सरदार एक जापानी था। वह टूटी फूटी डिनमार भाषा बोल लेता था। उसने मेरे पास आकर कई प्रश्न किये। मैंने नम्रतासे सबका उत्तर दिया। तब वह बोला—"अच्छा धीरज धरो तुम्हारी जान नहीं जायगी।" मैंने तब खूब झुककर जापानीको सलाम किया और उस दिनामार से कहा - "देखो! तुम क्रस्तानोंसे अधिक दया इस विधर्मीमें है।" पर इस ढिठाईका मजा मुझको खूब मिल गया। वह दुष्ट नीच मेरी जान लेनेकी चेष्टा करने लगा पर उसकी कुछ पेश न गई। उसका यही मन था कि मैं समुद्रमें फेंक दिया जाऊं पर जापानी बड़े दयालु थे उन्होंने इसकी एक न सुनी। आखिर उसने मुझको एक भारी सजा दिलाई जो मौतसे भी बढ कर थी।

मेरे आदमियोंको लुटेरोने आपसमें बराबर बाट लिया। नाव पर नये मल्लाह बहाल किये गये। मेरे लिये डांड पालसे दुरुस्त एक डोंगी आई। इसमें चार दिनकी खुराक रक्खी गई लेकिन दयावान् जापानीके कहनेसे दूनी करदी गई। मैं परमात्माका ध्यान कर डोंगी पर चढ बैठा और वह समुद्रमें छोडदी गई। जिस समय मैं चला उस नराधम दिनामारने खूब कोसा और गालियां दी। पर मैंने उधर देखा तक नहीं। हां एक बात कहनेको भूलही गया था कि जापानीने मेरे कपडोंकी तलाशी किसीको नहीं लेने दी थी।

डाकुओंसे कुछ दूर निकल जाने पर दूरबीनके सहारे दक्खिन

पूर्वकी ओर कुछ टापू नजर आए। हवा ठीक थी। सबसे पास-वाले टापूमें पहुंचनेकी इच्छासे पाल तान कर डोंगीको उधरको घुमाया। लगभग तीन घण्टेमें वहां जा पहुंचा। यह स्थान बिल-कुल पथरीला था। खैर, मैं उतरा। अण्डे जमा कर पत्थरसे आग निकाली और उन्हें भून कर खूब खाया। साथमें भोजनकी जो कुछ सामग्री थी उसे आगेके लिये बचा रक्खा। रातको वहीं एक गुफामें सो रहा। नींद खूब मजेकी आगई थी।

सवेरे उठ कर मैं दूसरे टापूमें गया। वहांसे तीसरे और फिर चौथेमें पहुंचा। कभी डाडसे और कभी पालसे काम निकालता था। अपने दुःखकी गथासे पाठकोंको दिक न कर खुलासा कह देता हूं कि पांचवें दिन मैं अन्तिम द्वीपमें पहुंच गया। इसके बाद फिर कोई द्वीप दृष्टि गत नहीं होता था। यह पहले टापूसे दक्षिण पूर्वकी ओर झुकता हुआ था।

मैंने समझा था कि यह निकट होगा मगर दूर निकला। कोई पांच घण्टे वहां तक पहुंचनेमें लगे थे। वहां पहुंचने पर द्वीपकी प्रदक्षिणा करने लगा। इसी बीचमें एक खाडी नजर पडी। जो मेरी डोंगीसे तिगुनी चौडी थी। डोंगी रखनेकी यह अच्छी जगह मिल गई। यह भी भूमि पथरीली थी किन्तु कहीं कहीं हरी हरी घास और भीनी भीनी बासवाली बेलें दिखाई पडी। मेरे साथ भोजनकी जो कुछ थोडीसी सामग्री थी उसीमेंसे कुछ खाया और कुछ एक गुफामें हिफाजतसे रख दिया। वहां गुफा की बहुतायत थी। रात भर उसी गुफामें जिसमें भोजनकी सामग्री रक्खी थी मैं पडा रहा। सूखी सूखी घास चुन कर बिस्तर बनाया। सोया पर नींद नहीं आई। इसी सोचमें सवेरा होगया कि हाय इस वीरानमें अब कैसे प्राण बचेंगे—न जाने मैं कौन मौत मरूंगा। अपनी दशा विचार कर मैं नितान्त कातर होगया। उठनेकी सामर्थ्य न रही। जब कुछ दिन चढ़ आया तब मैं गुफासे बाहर हुआ। कुछ देर तक इधर उधर घूमा किया। आकाश अति

स्वच्छ था सूरज इतना तेज था कि उधर निहारना कठिन हुआ। लाचार मुंह फेर लिया। इतनेहीमें यकायक सूर्य्य छिप गया। अन्धेरा होगया लेकिन बादलसे सूर्य्यके छिप जानेसे जैसा अन्धेरा होता है वैसा नही था। यह एक दम विलक्षण था। मैंने मुंह फेरा तो देखा कि मेरी और भगवान् भास्करके बीचमें एक विशाल धुन्धला पदार्थ आपडा है जो टापूकी तरफ बढा आता है। यह दो मीलके लग भग ऊंचा मालूम होता था। कोई छः सात मिनट तक सूर्य्यदेव इसके ओझलमें रहे पर हवा बहुत ठंढी नही हुई और न आकाशहीमें अन्धेरा था। ज्यो ज्यों वह निकट आता जाता था त्यों त्यों उसके सब भाग साफ मालूम होते थे। वह कुछ ठोस पदार्थसा था। इसकी पेंदी चिपटी, चिकनी और चमकीली थी। समुद्रकी परछांहीसे वह और भी चमदार मालूम पडता था। मैं किनारेसे करीब दो सौ गज ऊंचे पर खडा था। मैंने देखा कि वह पदार्थ जो मेरे और सूर्य्यके बीचमें आगया था ठीक मेरे सामने एक मीलसे भी कम दूरी पर उतर रहा है। मैंने दूरबीन लगाई तो मालूम हुआ कि अनेक मनुष्य उसके दोनों ओर चढ और उतर रहे हैं परन्तु वह सब क्या कर रहे हैं सो कुछ जान न पडा।

प्राण खसादत स्नेहीको प्रिय है। मैं मनही मन बहुत प्रसन्न हुआ। सोचा इस दैवघटनासे शायद मेरा निकास यहांसे होजाय पर साथही हूलर्स आकाशमें उडता हुआ टापू देख कर मेरे आश्चर्य्य का ठिकाना न रहा। तिस पर तुर्रा यह कि उसमें मनुष्य भी वास करते थे जो इच्छानुसार इस द्वीपको चला और ठहरा सकते थे सिर्फ यही नही ऊपर उठा सकते, नीचे उतार सकते और जिधर मन चाहता उधर ले जाते थे। उस समय उस अद्भुत पदार्थ पर दार्शनिक विचार करनेका अवसर न था इसलिये सब छोड छाड कर मैं यह देखने लगा कि वह किस तरफ जाता है क्योंकि थोडी देरके लिये वह ठहर गया था।

थोडी देरके बाद वह कुछ और समीप आया। अब उसमें

दिखाई पड़ने लगा कि एकसे दूसरे पर जानेके लिये दोनों बगलों में छज्जे और सीढ़ियोंका सिलसिला बना हुआ है। सबसे नीचे यानी छज्जे पर कुछ लोग बड़ी बड़ी बन्सियां लिये मछलिया पकड़ रहे हैं और कुछ लोग खड़े तमाशा देख रहे हैं। मैंने अपनी टोपी तथा रूमालको हिलाना शुरू किया। जब वह और भी निकट आया तो मैं गला फाड़के चिल्लाने लगा। इतनेमें जिधर मैं था उधरहीको बहुतसे मनुष्य एकत्र होगये। मेरे सवालका तो कुछ जवाब मिला नहीं पर देखा कि वह सब मेरी तरफ उंगलीसे कुछ इशारे कर आपसमें कुछ बात चीत करने लगे। फिर पांच छः आदमी दौड़ते हुए ऊपरके महल पर चढ़ कर गायब होगये। मैंने समझा कि वह सब अपने सरदारके पास खबर देने गये हैं और बात भी पीछे वही ठहरी।

दर्शकोंकी भीड़ बढ़ गई। आधही घण्टेमें वह टापू चल कर इतना ऊपर उठा कि उसका निचला छज्जा ठीक मेरे सामने सौ गजसे भी कमती फासले पर आपहुंचा। मैंने हाथ जोड़ कर दीनतासे बड़ी बिनती की पर उत्तर मिला नहीं। जो लोग नीचेवाले छज्जे पर खड़े थे ठाट बाटसे भलेमानस रईस जान पड़े। वह लोग मेरी ओर निहार निहार कर आपसमें परामर्श कर रहे थे। आखिर उनमेंसे एकने स्पष्ट, मीठे और सरल शब्दोंमें मुझको पुकारा। इसका उच्चारण ठीक इटली देशकी भाषाके सदृश था। इसीसे मैंने भी उसी भाषामें उत्तर दिया। किन्तु किसीने किसीकी बात नहीं समझी। बात चाहे न समझी हो पर मैं कैसे दुःखमें था सो जरूर उन लोगोंने समझ लिया था।

उन लोगोंने मुझको पहाड़ी परसे उतरकर समुद्र तटकी तरफ जानेका सङ्केत किया। मैंने भी चट पट वही किया। जब मैं उड्डीयमान् द्वीपके नीचे जा पहुंचा तो जञ्जीरसे बधी हुई छोटीसी एक चौकी लटकाई गई। मैं उस पर जा बैठा और वह फिर चर-खीके सहारे ऊपर खिंचली गई।

द्वितीय परिच्छेद।



जब मैं ऊपर पहुंचा तो बहुतसे आदमी मुझे घेर कर खड़े हो गये। जो सब पास खड़े थे भलेमानस मालूम पड़े। मैं उन्हें और वह मुझे आश्चर्य्यके साथ देख रहे थे। मैंने अब तक ऐसे विचित्र आकार, आचरण और रूपके मनुष्य कभी नहीं देखेथे। इन सबकी गर्दने बायें या दायेंको झुकी हुई, आखें एक भीतरको धसी और दूसरी ऊपरको उठी हुई थी। कपड़ों पर चन्द्र सूर्य्य नक्षत्र तारों की मूर्तियां तथा सारङ्गी, बांसुरी, बीन, तुर्ही, सितार इत्यादि बाजोंकी तसवीरें बनी हुई थीं जिन्हें युरोपवाले जानते भी नहीं हैं। इधर उधर खड़े हुए कई खानसामा नजर आए जिनके हाथमें एक एक छोटा डण्डा था। इन डण्डोंके एक ओरमें हवासे फूली हुई एक एक थैली लगी हुई थी। इन थैलियोंमें सूखी मटर अथवा कङ्कड़ियां भरी हुई थी। इन्ही डण्डोंसे वह खानसामा उन लोगोंके मुंह और कानोंमें जो वहां खड़ेथे मारते थे। मैं इसका मतलब कुछ भी समझ न सका। मालूम होता है कि उन लोगों का मन विचारमें ऐसा निमग्न रहता कि चेत कराये बिना वह सब न कुछ सुन सकते हैं और न कुछ बोल सकते हैं। इसी वास्ते बड़े आदमी लोग चिताये जानेके लिये एक एक कमची बरदार नौकर रखते हैं। जहां वह जाते हैं कमची बरदारोंको साथ ले जाते हैं। जब दो चार आदमी इकट्ठे होते हैं तो कमची बरदार लोग बोलने वालेके मुंह पर, सुननेवालेके कानों पर और देखनेवालोंकी आखों पर कमची जमा कर उनका ध्यान भङ्ग करा देते हैं तब वह लोग आपसमें बातचीत करते हैं अन्यथा नहीं कर सकते। जब बाबू साहब लोग रास्तेमें चलते हैं तब भी ध्यानमें नेत्र बन्द रहते हैं अगर नौकरों पर तड़ातड़ कमचियां पड़ती न चलें तो वह ज़रूर खम्भोंसे टकरा जायँगे और गलियोंमें दूसरोंको धक्का देकर गिरा देंगे आपही धक्का खाकर नालियोंमें गिर पड़ेंगे।

जीनेकी राह लोग मुझे धुर ऊपर लेगये। वहां राजमहलकी तरफ लेचले। मार्गमें वह लोग कई बार मुझे भूल गये—किस कामके लिये जातेहैं सो सब भूल गये थे। जब कमचिया पडतीं तो होशमें आकर फिर आगे बढते थे। बस इसीसे पाठक समझलें कि वह सब कैसे ध्यानी थे।

आखिर हम लोग राजमन्दिरमें पहुंचे। दरबार लगा हुआ था। महाराज सिंहासन पर विराजमान और अगल बगलमें सुनीतज्ञ मन्त्रीगण डटे हुए थे। सामने बडीसी एक मेज थी जिस पर भूगोलक (ग्लोव), चक्र (स्फीअर) तथा गणित सम्बन्धी सर्व प्रकारके यन्त्र रक्खे थे। हम लोगोंका पहुंचना महाराजको कुछ भी मालूम नहीं हुआ क्योंकि वह उस समय एक कठिन प्रश्न हल कर रहेथे। एक घण्टेमें उनका ध्यान टूटा। हम लोग अब तक चुपचाप खडे थे। महाराजके दोनों ओर दो छोकरे कमचिया लिये खडे थे। जब महाराज प्रश्न हल कर चुके तब एकने मुंह पर और दूसरेने दाये कानपर धीरेसे कमचिया जमाई। जैसे कोई नींदसे अचानक उठता है वैसेही आप चौक उठे। मुझे तथा और सब लोगोंको देखकर उन्हें स्मरण हुआ क्योंकि मेरे आनेकी सूचना पहलेही देदी गईथी। महाराज कुछ बोले इतनेमें एक छोकरेने आकर मेरे दाहिने कान पर कामची फटकारी। मैंने इशारेसे कह दिया कि मेरे लिये इसकी कुछ आवश्यकता नहीं है। बस महाराज तथा दरबारियोंकी नजरों में उसी घडीसे मैं बहुत हलका होगया। महाराजने बहुतसे प्रश्न किये। मैंने भी जितनी भाषाएं जानता था सबमें जवाब दिया। जब कोई किसीकी बात न समझ सका तो महाराजकी आज्ञासे मैं एक कमरेमें भेजा गया जहां दो नौकर पहलेहीसे सेवा टहलके लिये हाजिर थे। महाराजका अतिथि अभ्यागतका आदर सत्कार करने में अपने पुरुषोंसे अधिक नाम है। भोजनकी सब चीजें लाई गईं। उन चार मन्त्रियोंने जिन्हें महाराजके बहुत निकट खडे देखा था मेरे साथ भोजन करके मेरा सम्मान किया। सामग्रिया दो प्रकार

की थी। हर एकमें तीन तीन रकाबियां थीं। एकमें तो चौपायों के साम थे जो रेखागणितके चित्रोंकेसे बने थे और दूसरेमें पक्षियों के, जो बाजोंके आकारके थे। खानसामा लोग जो रोटियां काट काटकर देते थे सो भी गणित सम्बन्धी चित्रोंके रूपमें थी।

भोजनके समय मैंने नक्कीतसे कई चीजोंके नाम पूछे। उन्होंने महर्ज अपनी भाषामें सबके नाम बताये। मैंने चट सबको याद कर लिया। फिर रोटी वगैरह जो दरकार होती सो मांग लेता था। पर एक बात यहां यह भी समझ लेना चाहिये कि भोजन करनेके समय भी उन्हें कमचियां खानी पड़ती थीं।

खाने पीनेके बाद सब अपने अपने ठिकाने चले गये। महाराजकी आज्ञानुसार एक मनुष्य कामचो बरदार समेत आया। वह अपने संग कलम दावात, कागज और दो चार किताबें भी लाया था। इशारेसे उसने जो कुछ समझाया उससे यही प्रगट हुआ कि वह मुझे वहांकी भाषा सिखानेके लिये आया है। चार घंटे तक मैं उसके साथ बैठा—इसी बीचमें मैंने बहुतसे शब्द और उनके अर्थ अङ्गरेजीमें लिख लिये थे। छोटे छोटे कई वाक्य भी फुर्तीसे याद करलिये थे। शिक्षक महाशय नौकरसे कभी कुछ लानेके लिये, कभी बैठने, कभी सलाम करने कभी घूमने और कभी खड़े होनेके लिये कहते थे और वह वही करता जाता था। उन सब वाक्योंको अर्थ सहित मैं कागज पर लिखता जाता था।

एक यन्त्रसे पहले उसने मेरी ऊंचाई नापी फिर कागज पर मेरे शरीरका नक्शा बनाया। छटे दिन कपड़े तय्यारकर लेआया जो हिसाबसें भूल होजानेके कारण निपट कुढङ्ग, और बदकताथे। ऐसी गलतियां दर्जियोंसे बहुधा हुआ करती थी और वह सब (कपड़े सिलानेवाले) भी इन भूलोंकी उतनी परवाह नहीं करते थे बस इसीसे मुझे भी कुछ अफसोस नहीं हुआ।

कपड़े फटे थे और तबीयत भी कुछ खराब होगई थी इससे मैं कई दिन तक घरसे बाहर नहीं निकला। इन छ: दिनोंमें शब्दकोषको बहुत बड़ा कर लिया था। इसी हेतु फिर जो दरबारमें गया तो महाराजकी बहुतसी बातोंको मैंने समझा और टूटफूटे कुछ जवाब भी दिया था। महाराजने आज्ञा दी कि अब यह द्वीप इशानकोनसे होता हुआ शहर "लगाडो" के ठीक ऊपर पहुचे। महाराजके पृथ्वीस्थित राज्यकी राजधानीका नाम "लगाडो" है। वह यहांसे २७० मील दूर था। वहां तक पहुचनेमें साढे चार दिन लगे। आकाशमें इसका चलना कुछ भी मालूम नहीं होता था। लगाडो पहुँचनेके दूसरे दिन सवेरे ग्यारह बजे स्वय महाराज और उनके परिजन, राजसभासद, राजकर्म्मचारी प्रभृति सब साज बाज मिला कर लगे गाने और बजाने। तीन घटे तक लगातार सबने खूब गाया बजाया। उन लोगोंने क्या गाया बजाया सो मेरी समझमें कुछ न आया। लेकिन कान जरूर बहरे होगये थे। शिक्षक महाशयसे पूछा तो उन्होने सब बातें समझा दीं।

रास्तेमें कई शहर और गावोंके ऊपर प्रजाकी दरखास्त लेनेके वास्ते यह द्वीप खड़ा हुआ। रस्सियां नीचे लटका दी जाती थीं उन्हींमें प्रजागण अपनी अपनी दरखास्तें बांध देते थे और वह ऊपर खेंचली जाती थी। कभी कभी खाने पीनेकी चीजें भी चरखीके द्वारा ऊपर खेंचली जाती थीं।

वहांकी भाषाको गणित और सङ्गीत शास्त्रोंसे बहुत कुछ सम्बन्ध

है बल्कि यों कहना चाहिये कि यह गान्धी भाषाके प्राण है। गणित तो वे जानताही था और सङ्गीतसे भी अनभिज्ञ न था अत एव अनायासही वहाकी भाषा मैं सीख गया था।

वहाके मकान बड़े कुढ़ङ्गे होते हैं। न दीवारें समान होती और न कोठियां दुरुस्त होती हैं। इसका कारण यह है कि वह लोग कार्य्यकर ज्यामितिको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं और उसे अत्यन्त तुच्छ समझते हैं। गणित और सङ्गीतमें वह लोग बड़े पर और कामोंमें निरे अनाड़ी, और बेहुनर होते हैं। बकवादी अव्वल दरजेके हैं पर कभी मानतेही नहीं। कल्पना विवेचना और आविष्क्रिया तो जानतेही नहीं अथवा यों कहिये कि यह सब शब्द उनकी भाषाहीमें नहीं है। बस जो कुछ पण्डिताई है सो गाने बजाने और हिसाब बनानेमें। ज्योतिष पर बहुतों का विश्वास है पर सबके सामने उसे स्वीकार नहीं करते हैं।

यह वक्रग्रीव सदैव चिन्तामें मग्न रहते हैं। एक छिनका भी विराम इनके चित्तको नहीं होता। कुछ न कुछ यह लोग सदा विचाराही करते हैं। पर इनके इस विचारसे शेष जीवोंका कुछ बनता बिगड़ता नहीं। आकाशस्थ ग्रह नक्षत्रोंका परिवर्त्तन होना भी इनकी चिन्ताका मूल है। इसी परिवर्त्तनसे यह भयकी आशङ्का करते हैं।

एक लाख मील दूरीके अन्दर भी पृथ्वी आगई तो इसके जलबलके खाक होजानेमें कुछ भी देर नही लगेगी। सूर्य्यदेव भी रोज अपनी किरणें खर्च किये जातेहैं बढानेकी कुछ चेष्टा करते नही। आखिर सब किरणें खर्च हो जायगी तो विचारे तेजहीन हो जायंगे और किसी कामके न रहेंगे। फिर पृथ्वी प्रभृति जितने ग्रह नक्षत्र दिनकरकी कृपासे देदीप्यमान होते हैं वह सभी नष्ट भ्रष्ट होजायगे।

इन सब विपदोको विचार कर वह सब ऐसे व्याकुल होगये है कि रातको अच्छी तरह सोते भी नही और न रङ्गरसोका कुछ सुखही अनुभव कर सकते है। चिन्ताहीमें सारा समय व्यतीत होता है। प्रातःकाल जब किसी मित्रसे भेट होती है तो वह पहले आपसमे भास्कर भगवानहीकी राजी खुशी पूछते है। उगते डूबते के समय उनकी कैसी दशा थी। इस आनेवाली विपद अर्थात् धूमकेतुकी टक्करसे बचनेकी कुछ आशा है या नही। अगर है तो किस उपायसे इत्यादि बातेही परस्पर होती हैं। हमारे यहा लडके रातको जिस प्रकार चावसे मगर डरते हुए भूत प्रेत पिशाचोंकी कहानिया सुन कर प्रसन्न होते हैं पर डरके मारे सोनेके लिये नहीं जाते है सूर्य्यादिकी बातें सुन कर वहावालोंकी भी ठीक यही दशा होजाती है।

इस द्वीपकी स्त्रिया बडीही चञ्चल होती हैं। पतिसे तो घृणा पर विदेशी जारोंसे प्रेम अत्यन्त प्रसन्नतासे करती है। अनेक विदेशी नीचे पृथ्वीसे सरकारी कामसे अथवा अपने कामसे आया करते हैं। इन्हींको स्त्रिया जार बनाती है। क्या नीच क्या ऊंच सबके घरकी यही दशा है। पतिराम सदा विचारमें मग्न रहते है और यह सब मजेमें माल उडाती हैं। अगर कहीं बगलमें कमचिया न हुई और हाथमें कागज पेनसिल मिल गई तो फिर क्या है? स्त्रिया जारके साथ अटखेलियां करती हाथसे हाथ मिलाये सामनेसे निकल जाय तो भी पुरुषोको कुछ खबर नही। इसीसे यह सब बहुत निर्भय और स्वच्छन्द होकर व्यभिचार करती है।

यद्यपि यह द्वीप मैं समझता हूं संसार भरके सब स्थानोंसे मनोहर और रम्य है—घर द्वार भी सुन्दर और बढ़िया है स्त्रिया मन माने ढङ्गसे यहा आनन्द पूर्वक रह सकती है—इनको बडी स्वाधीनता रहती है जो चाहे सो करे तथापि इनका मन यहां नहीं लगता है। दुनियाकी सैर करने तथा राजधानीकी बहार देखने के वास्ते तरसा करती है। इसका एक कारण है। वह सब यहा लाकर कैद करदी जाती है। फिर महाराजकी विशेष आज्ञाके बिना नीचे नही जासकतीं और यह आज्ञा भी बडी बडी कठिनाइयो से प्राप्त होती है क्योंकि प्राय देखा गया है कि जब कभी किसी भले घरकी स्त्रिया नीचे भूमि पर जाती है तो फिर लौटनेका नाम नही लेती। समझाने बुझानेसे भी कुछ फल नही निकलता है। उहांवाले कहते थे कि बडे घरकी एक स्त्रीने जिसके कई लडके भी थे प्रधान मन्त्रीका व्याह हुआ। वह बीमारीके मिससे एक बार नीचे उतर गई। प्रधान मन्त्री बहुत सुन्दर और शौकीन थे। उन का बहुत लाड प्यार करते थे। उनका घर भी बहुत बढ़िया था। मजेमें राजसी ठाठसे वह रहते थे।

लगभग एक महीनेमें उनकी भाषा मैं अच्छी तरह सीख गया। अब जब कभी दरबार जाता तो इसी भाषामें बोलता और महाराज जो कुछ कहते सो समझता भी था। जिन सब देशोंमें घूम आया उन सबकी राजनीति, इतिहास, धर्म या आचार व्यवहार के बारेमें महाराजने कभी कुछ नहीं पूछा और जो कुछ पूछा भी सो केवल गणितके विषयमें। मैंने इस विषयमें जो कुछ कहा सो आपने कमचिया खा खा कर सुना था।

तृतीय परिच्छेद।

महाराजकी आज्ञा ले मैंने द्वीपकी खूब सैर की। साथमें शिक्षक महाशय भी थे। असलमें मैं यही जानना चाहता था कि इस द्वीपकी बहुरङ्गी गति किस प्रकारसे होती है सो मैंने जान लिया अब पाठकोंको इसका भेद बताता हूं।

इस उड्डीयमान द्वीपका आकार ठीक गोल है। व्यास ७८३७ गज अर्थात् करीब साढे चार मील और क्षेत्रफल तीस हजार बीघेहैं। यह तीनसौ गज मोटाहै। नीचेसे इसकी पेंदी चौरस तथा हीरे जैसे कठिन पत्थरकी बनी हुई मालूम होती है और ऊंचाई भी दोसौ गजके लगभग है। इसके ऊपर कई धातुओंके पत्तर सिल-सिलेसे चढे हुए हैं। सबके ऊपर बढिया मट्टीका दस बारह फुट गहरा अस्तर है। परिधिसे केन्द्र पर्य्यन्त ऊपरका तल ढालुआ था इसीसे बरसातका सब पानी सिमट कर नालोंकी राहसे बीचमें आता है वहासे चार बडे बडे हौजोंमें बट जाता है जिनका घेरा आधी आधी मील और जो केन्द्रसे दोसौ गजके फासले पर है। हौजोंके पानीको दिनमें सूर्य्य सोख लेताहै इसीसे उनमें पानी बढने नहीं पाता है। इसके सिवा महाराज अपने द्वीपको बादलोंसे भी ऊपर लेजा सकते है। ऊपर लेजानेसे फिर पानी बुन्दीका कुछ डर नहीं रहताहै। प्राकृततत्व वेत्तागण कहतेहै कि बरसाऊ बादल दो मीलसे ऊपर नहो जाता है सो वहा दो मीलसे ऊपर कभी बादल नही देखा गया है।

इस द्वीपके केन्द्रस्थलमें एक गुफा है जिसका व्यास कोई पचास गजहै। इसी राहसे ज्योतिषीगण एक बडे गुम्बजमें जातेहैं। अतएव इसका नाम ज्योतिषी कन्दरा पडाहै। यह गुम्बज पत्थरवाले तलसे सौगज नीचेहै। यहा बैठकर ज्योतिषी लोग ग्रहोंका विचार करतेहै। इसमें बीस लेम्प बराबर जला करतेहै जो हीरेके प्रतिविम्ब पडनेसे हर एक तरफ खूब तेज रोशनी डालते है। यहां दूरवीक्षण प्रभृति बहुतसे ज्योतिष सम्बन्धी यन्त्र रखे हुएहै। सबसे अद्भुत वस्तु तो एक बडा भारी चुम्बक पत्थरथा जिसके जोरसे यह द्वीप चलताथा। इस की बनावट कपडे बुननेके करगहकी सी थी। यह लम्बा छः गज और मोटा कमसे कम तीन गजथा। यह चुम्बक हीरेके एक धुरेके सहारे घूमता था। इसके एक ओर खैंचनेकी और दूसरी ओर हटानेकी शक्ति थी। जब इस चुम्बकका वह सिरा जिसमें खेंचनेकी शक्ति थी पृथ्वीकी तरफ कर दिया जाता तो द्वीप नीचे उतरता था और जब हटानेवाली शक्तिका सिरा नीचेकी ओर किया जाता तो वह ऊपर चढता था। चार मीलसे अधिक ऊंचा वह नहीं चढता था। पण्डितोंने निश्चय किया है कि चार मीलसे ऊपर चुम्बककी शक्तियां काम नहीं करती हैं। जब यह चुम्बक तिरछा किया जाता था तो इसकी गतिभी तिरछी होजाती थी। इसी तिरछी गतिके द्वारा यह एक जगहसे दूसरी जगह पहुंच जाता। जिस समय चुम्बक दायें बायें लम्बा पडा रहता उस समय द्वीपकी भी गति रुक जाती थी। मतलब यह कि चुम्बकके सहारेही यह चढ उतर ठहर और एक ठौरसे दूसरी ठौर जा सकता था। भूमिस्थ राज्य के बाहर यह द्वीप नहीं जा सकता था क्योंकि पृथ्वीके भीतर जो सब धातु चुम्बक पर असर डालते हैं सो इन राज्यको छोड और कहीं नहीं हैं। उन देशोंको जो चुम्बककी शक्तियोंके अन्तर्गत है महाराज सहजमें अधिकृत कर सकते हैं।

यह चुम्बक कई ज्योतिषियोंके अधिकारमें रहता है जो महा-राजके आज्ञानुसार इसको इधर उधर घुमाया करते हैं। इन लोगों

के जीवनका अधिक भाग दूरबीनमें नक्षत्रोंके देखनेहीमें व्यतीत होता है। हम लोगोंकी दूरबीनसे इनकी दूरबीन कही बढ चढ के है। इनकी बडीसे बडी दूरबीन तीन फुटसे अधिक लम्बी नही होती लेकिन कामसे सौ फुट लम्बीके कान काटती है। इसीलिये यह युरोपीय ज्योतिषियोंकी अपेक्षा आविष्कार करनेमें बहुत आगे बढे है। यह लोग दस हजार अचल ताराओंकी सूची बना चुके है लेकिन हमारे यहा इसकी तिहाई सख्या भी नही है। इन्होंने दो उपग्रह और निकाले है जो मङ्गलके आस पास घूमते है।

इन लोगोंने तिरानवे पुच्छल तारे और निकाले है और उनकी चालें भी शोध कर बहुत ठीक करली है। अगर यह बात सत्य है जैसा कि वह लोग कहते है तो सर्वसाधारणमें इसका प्रचार हो जाना चाहिये। धूमकेतुका पूर्ण ज्ञान किसीके है भी नही। इसके प्रचार होजानेसे ज्योतिषका यह अङ्ग भी पूरा होजायगा।

महाराज यदि अपनी मन्त्रिसभासे मिलकर नीतिके अनुसार राज्य करते तो जगतमें सबसे बढ कर राजा होजाते पर इनमें दो अडचलें आपडी हैं। एक तो महाराज रहते आकाशमें और प्रजा भूमि पर। दूसरे मन्त्रियोंका पद अनिश्चित है इसीलिये देशकी सेव करना कोई नहीं चाहता है।

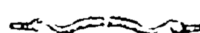
अगर किसी शहरमें अराजकता वा विरोध फैले अथवा लोग मामूली कर देना बन्द करदें तो महाराज दोही प्रकारसे उन्हे अपने अधीन करलेते हैं। पहला और सहज उपाय तो यह है कि जो शहर विद्रोही होता झट द्वीप उस पर मडलाने लगता सूर्यके प्रकाशको रोक देता है। फिर क्या है दुर्भिक्ष और रोगादि उस शहर पर चढ दौडते है। और यदि कहीं भारी अपराध हुआ तो ऊपरसे पत्थरोंकी वृष्टि होती है। लोग तो खैर किसी तरह खोह कान्दरामें लुक छिप कर प्राण बचा लेते है पर घर बार तो एक दमही चौपट होजाते हैं। इस पर भी यदि २ . शान्त न हुआ तो अन्तिम उपाय किया जाता है अर्थात्

द्वीप गिर कर गांवोंको नष्ट भ्रष्ट कर देता है। परन्तु यह दण्ड बहुत कम काममें लाया जाता है क्योंकि इससे राज्यका बहुत नुकसान होता है।

अत्यन्त आवश्यकता हुए विना यह दण्ड काममें नहीं लाया जाता है। सब्लोगन्त भी जल्दी इस दण्डकी व्यवस्था नहीं करते क्योंकि इन सबकी सब भूमि सम्पत्तिया नीचेही रहती है। सो इस दण्डसे इनकी भी बहुत हानि होती है। इसके अतिरिक्त नीचे भूमि पर बड़े बड़े पत्थर हैं। उनमें ठोकर लगनेसे द्वीपकी पेंदीके फटने और उसमें आग लगनेकी पूरी सम्भावना है। लोहे और पत्थरके संघर्षणसे अग्नि उत्पन्न होती है। यह सब कोई जानता है। इसीलिये महाराज भी जल्दी यह दण्ड किसीको नहीं देते। अगर देते भी हैं तो बहुत चौकसीके साथ धीरे धीरे द्वीप नीचे गिराया जाता है।

इस राज्यके नियमके अनुसार राजा तथा बड़े और मझले राजकुमार द्वीपके बाहर नहीं जाने पाते हैं और महारानी भी बालिग हुए विना नहीं जा सकती है।

चतुर्थ परिच्छेद।



कभी नहीं मिली थी। मैं वहां दो महीने रहा। केवल औरतोंसे, व्यापारियोंसे, कसची वरदारोंसे और दामन वरदारोंसेही बात चीत कर जी बहलाता था क्योंकि इन विचारोंको विचारकी बीमारी न थी। जो कुछ मैं पूछता उसका यथोचित उत्तर इन्ही लोगोंसे मुझे मिलता था।

दरबारमें एक सरदार था। महाराजसे उसको कुछ नातेदारी भी थी और यही सबब था कि लोग उसका आदर करते थे। पर साथही इसके सारा समाज उसे मूर्ख और बेवकूफ समझता था। उसने राज्यकी बडी बडी सेवाएकी थी, उनकी समझ बूझ भी अच्छी थी और आदमी भी सच्चा ईमानदार था। लेकिन एक बड़ी भारी कसर उसमें यह थी कि वह ताल सुर कुछ भी नही जानता था। उसके बेतालेपनकी कई बार शिकायत भी हो चुकी है। अध्यापकगण भी उससे तङ्ग आगये। सहजसे सहज गणितका प्रश्न भी वह कठिनाईसे समझ सकता। जो कुछ हो मुझ पर बडी दया करता था। अकसर मेरे यहां आता और युरोप तथा इन देशोंकी जहां जहां मैं गया हूँ रीति व्यवहार, विद्या बुद्धि, राजनीतिके विषयमें पूछता था। जो कुछ मैं कहता उसे ध्यानसे सुनता और कहीं कही उचित राय भी देता था। उसके साथ भी दो कमचीवाले थे जिनसे वह राज दरबार या भारी भारी जगहोंके सिवा और कहीं काम नही लेताथा। जब मुझसे बात चीत करता तब उन्हें दूर भगा देताथा। इसी भलेमानसकी कृपासे मेरा छुटकारा हुआ। इसीने कह सुनके महाराजसे अनुमति दिलाई थी।

१६ वी फरवरीको मैं महाराजसे विदा हुआ। आपने दो सौ पौण्डकी चीजें विदाईमें दी थी तथा मेरे मित्रने इतनीही बल्कि इससे अधिक दी। इसके अतिरिक्त उन्होंने लगाडो (राजधानी) निवासी अपने दोस्तके नामका एक चिट्ठी भी मुझे दी थी। जब उडन टापू राजधानीसे दो मीलके फासले पर एक पहाडीके पर ठहरा तो मैं उसी प्रकारसे जैसे चढा था उतार दिया गया।

उस देशका नाम जो उड्डीयमान द्वीपके नरेशके आधीन है—"बलनीवरवी" है और राजधानीका लगाडो है सो मैं लिख ही चुका हूँ। जब मैं पुन: पृथ्वी पर पहुंचा तो जीमें जी आया। मैं वे पर-वाईके साथ राजधानीकी ओर चल पडा। मेरी पोशाक उसी देशकी सी थी और बोली भी वहांकी सीख ही गया था अतएव निडर होकर जाने लगा। जिस भलेमानसके नामकी चिट्ठी थी उसके मकानका पता बहुत जल्द लग गया। उसको चिट्ठी दी। चिट्ठी पढ कर उसने मेरा आगत स्वागत किया। उसका नाम सुनोडी था मेरे रहनेके लिये उसने एक कमरा अलग खाली कर दिया और मेरी बडी खातिरदारी की।

दूसरे दिन सवेरे सुनोडी रथ पर बिठा कर शहरकी सैर कराने को ले चला। यह शहर लण्डनका आधा था। मकान सब विचित्र रुगर बेतरतीत थे। तमाम उदासी छाई थी। सडकों पर आदमी बडी तेजीसे चलते थे जो देखनेसे बहशी मालूम पडते थे। नेत्र स्थिर थे, मुख विषन्न थे। और कपडे फटे चिटे थे। हम लोग शहरका फाटक पार करके गांवमें घुसे। लग भग तीन मीलकी चले गये। वहां देखा कि बहुतसे मजदूर रङ्ग बिरङ्ग हथियार लिये जमीन पर कुछ कर रहे हैं पर क्या कर रहे हैं सो समझमें न आया। खेतोंमें नाज या घासके चिन्ह भी दिखाई न पडे लेकिन मट्टी बहुत बढिया नजर आई।

यह लगाडोका गवर्नर था। लेकिन मन्त्रियोंके षड्यन्त्रसे अयोग्य समझा जाकर यह पदच्युत हुआ। जो हो महाराज अब भी इस पर कृपा रखते हैं और इसे अपना शुभचिन्तक अथच बुद्धिहीन समझते हैं।

लार्ड मुनोडीने मेरे प्रश्नोंका कुछ उत्तर न देकर केवल यही कहा "अभी तो आपको आये थोडेही दिन हुए हैं कुछ दिन रहिये सहिये तब सब आपही मालूम होजायगा। यह आप जानतेही हैं कि जाति जातिकी जुदी जुदी चाल है।" मैं भी सुन कर चुप रहा। जब डेरे पर लौट कर आए तो उसने पूछा—"कहिये यह मेरे मकान सब कैसे हैं? इनमें क्या बेहूदापन है? मेरे आदमियोंकी पोशाकें या सूरत शकलें कैसी हैं?" मैंने जवाब दिया 'दरिद्रता और मूर्खताके कारण यहांवालोंमें जो दोष हैं उनसे आप अपनी दूरदर्शिता, गुणशीलता तथा लक्ष्मीके प्रभावसे बचे हैं।" सचमुच इसके मकान वगैरः सभी चीजें सुन्दर, ठीक और सुढङ्ग थीं। इस पर वह बोला—"यहांसे बीस मील दूर मेरी जमीदारी है अगर आप वहां चलें तो इस विषयकी बातें अच्छी तरह हो सकती हैं।" मैंने वहां जाना मञ्जूर किया। बस दूसरेही दिन हम लोग उधर को रवाने हुए।

किसान सब अपनी अपनी भूमिको किस प्रकार जोतते बोते हैं सो सब रास्ते भर वह दिखलाता जाता था पर दो एक जगहको छोड कहीं भी नाजकी बालें या घासकी पत्तियां नजर नहीं आईं। तीन घण्टे चलनेके बाद बिलकुल परदाही बदल गया। हम लोग एक परमसुहावने रमणीय स्थानमें जा पहुंचे। पासही पास किसानोंके सुन्दर सुन्दर घर बने हुए थे। कहीं अंगूरकी टट्टियां, कहीं नाजकी क्यारियां और कहीं पशुओंके चरनेके हरे भरे मैदान की अनोखी छटा दृष्टिगोचर होती थी। इससे बढ कर रम्यस्थान कभी देखा होगा सो स्मरण नहीं। मुनोडीने कहा—"बस यहींसे मेरा इलाका शुरू है और बराबर मेरे महल तक चला गया है।

मेरे इस प्रबन्धको देख यहावाले हसते और ठट्ठा मारते हे और मुझे नितान्त दुर्ब्बल चित्त तथा विलासी समझते है।"

आखिर हम लोग मुनोडीके महलमे पहुंचे। सचमुच यह महल अत्यन्त सुन्दर और प्राचीन कालकी शिल्पविद्याके अनुसार बना हुआ था। फौआरे, बगीचे, सडके, रविशे और कुञ्जे आदि बहुत सुन्दर बनी हुई थीं। मै यह सब देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। व्यालूके बाद जब हम दोनोके सिवा और कोई न रहा तब मुनोडी बोला—"अफसोस है। अब यह सब मकान तोड कर मुझे नये ढङ्गसे बनाना पडेगा। बाग बगीचोको फिरसे लगाना पडेगा। और अपनी प्रजाओको भी यही आज्ञा देनी पडेगी क्योकि मेरे घमण्डको, अनोखेपनको, मूर्खताको और ओछेपनको तमाम निन्दा है। और इसके अलावे महाराज भी कुछ अनसन्तुष्ट है। अगर सबको फिरसे न बनाऊ गा तो महाराज मुझसे अधिक रुष्ट हो जायगे।"

यह लगाडोका गवर्नर था। लेकिन मन्त्रियोंके प्रयत्नसे नयोग्य समझा जाकर यह पदच्युत हुआ। जो हो महाराज अब भी इस पर कृपा रखते हैं और इसे अपना शुभचिन्तक अथच बुद्धिहीन समझते हैं।

लार्ड मुनोडीने मेरे प्रश्नोंका कुछ उत्तर न देकर केवल यही कहा "अभी तो आपको आये थोडेही दिन हुए हैं कुछ दिन रहिये सहिये तब सब आपही मालूम होजायगा। यह आप जानतेही हैं कि जाति जातिकी जुदी जुदी चालहै।" मैं भी सुन कर चुप रहा। जब डेरे पर लौट कर आए तो उसने पूछा—"कहिये यह मेरे मकान सब कैसे हैं? इनमें क्या बेहूदापन है? मेरे आदमियोंकी पोशाके या सूरत शकलें कैसी हैं?" मैंने जवाब दिया "दरिद्रता और मूर्खताके कारण यहावालोंमें जो दोष हैं उनसे आप अपनी दूरदर्शिता, गुणशीलता तथा लक्ष्मीके प्रभावसे बचे हैं।" सचमुच इसके मकान वगैरः सभी चीजें सुन्दर, ठीक और सुढङ्ग थी। इस पर वह बोला—"यहासे बीस मील दूर मेरी जमीदारी है अगर आप वहां चलें तो इस विषयकी बातें अच्छी तरह हो सकती है।" मैंने वहा जाना मञ्जूर किया। बस दूसरेही दिन हम लोग उधर को रवाने हुए।

किसान सब अपनी अपनी भूमिको जिस प्रकार जोतते बोते हैं सो सब रास्ते भर वह दिखलाता जाता था पर दो एक जगहको छोड कहीं भी नाजकी बालें या घासकी पत्तिया नजर नही आई। तीन घण्टे चलनेके बाद बिलकुल परदाही बदल गया। हम लोग एक परमसुहावने रमणीय स्थानमें जा पहुंचे। पासही पास किसानोंके सुन्दर सुन्दर घर बने हुए थे। कही अगूरकी टट्टिया, कही नाजकी क्यारिया और कही पशुओंके चरनेके हरे भरे मैदान को अनोखी छटा दृष्टिगोचर होती थी। इससे बढ कर रम्यस्थान कभी देखा होगा सो स्मरण नही। मुनोडीने कहा—"बस यहीसे मेरा इलाका शुरू है और बराबर मेरे महल तक चला गया है।

मेरे इस प्रबन्धको देख यहांवाले हंसते और ठठा मारते हैं और मुझे नितान्त दुर्ब्बल चित्त तथा विलासी समझते हैं।"

आखिर हम लोग मुनोडीके महलमें पहुंचे। सचमुच यह महल अत्यन्त सुन्दर और प्राचीन कालकी शिल्पविद्याके अनुसार बना हुआ था। फौआरे, बगीचे, सडकें, रविशें और कुञ्जें आदि बहुत सुन्दर बनी हुई थीं। मैं यह सब देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। ब्यालूके बाद जब हम दोनोंके सिवा और कोई न रहा तब मुनोडी बोला—"अफसोस है। अब यह सब मकान तोड कर मुझे नये ढङ्गसे बनाना पडेगा। बाग बगीचोंको फिरसे लगाना पडेगा। और अपनी प्रजाओंको भी यही आज्ञा देनी पडेगी क्योंकि मेरे घमण्डकी, अनोखेपनकी, मूर्खताकी और ओछेपनकी तमाम निन्दा है। और इसके अलावे महाराज भी कुछ अनखुट हैं। अगर सबको फिरसे न बनाऊंगा तो महाराज मुझपर अधिक रुष्ट हो जायंगे।"

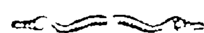
निकालनेकी चेष्टा करते हैं, सौदागरोंने लिये नये नये औज़ार ईजाद करते हैं जिनसे दस मनुष्यका काम एकही करते और बडीसे बडी इमारत भी एकही हफ्तेमें तय्यार होजाय और बिना मरम्मत किये सदा बनी रहे। हर मौसममें फल फला करे तथा उनकी गिनती भी सौगुनी बढ जाय इत्यादि इत्यादि। पर कोई भी बात आज तक पूरी नहीं हुई। नतीजा यह निकला कि सारा देश उजाड होगया, मकान खण्डहर होगये, और मनुष्य सब दरिद्र अन्न वस्त्रहीन होगये। इतने पर भी सुधारकगण निराश नहीं हुए हैं। और भी पचास गुने साहस और उत्साहसे अपने उद्देश्य साधनमें लगे हैं। लेकिन मुनोडीको यह सब पसन्द नहीं है। वह वही अपनी पुरानी चाल पसन्द करता है। जिस तरहसे उसके पुरखा लोग रहते आये हैं उसीमें वह अपना दिन काटता है। और सौ दो चार बडे आदमी इसके मतके हैं। यह सभी देश शत्रु और मूर्ख समझे जाते हैं। यह लोग अपनी अपनी भलाई और आराम देखते हैं देशकी उन्नति नहीं चाहते हैं यही इन पर दोष लगाया जाता है।

शेषमें लार्ड मुनोडी फिर यों कहने लगा—यहांसे तीन मील दूर एक पहाडकी बगलमें पनचक्कीका पुराना खण्डहर अब तक मौजूद है। यह नदीकी धारसे चलाई जाती थी। इससे मेरा और मेरी अनेक प्रजाका मजेमें गुजारा होता था। सात साल की बात है कि इन सुधारकोंने इस पुरानी पनचक्कीको तोड कर एक नई बनवानेका तथा पानीके लिये एक नहर खुदवानेका प्रस्ताव किया। उस समय उन लोगोंने इस काममें मुझे बहुतसे फायदे दिखलाये। कहा नल और इञ्जिनके द्वारा नहरसे पानी ऊपर चढाया जायगा। हवा ऊंची जगह पर जलको कम्पायमान कर नीचेकी अपेक्षा उसमें अधिक शक्ति उत्पादन कर सकती है। उस समय दरबारसे मेरा कुछ ऐसा मेल मिलाप भी न था और मित्रोंने भी इधर बहुत कहा सुना लाचार मैंने सुधारकोंके प्रस्तावको अङ्गी-

काम करलिया। पुरानी पनचक्की उठवा दीगई और नईसे काम लगाया गया। कोई सौ आदमी दो बरस तक काम करते रहे पर हुआ वही ढाकके तीन पात। सुधारकगण सिरही सबे दोषका ठिकरा फोड़ कर छुटकार हुए। तबसे वह लोग बात बातमें सुधारही मटाक करते हैं। अब दूसरोंको बातें बना कर फसाते हैं पर एक कार्य्य अभी तक नही हुए हैं।"

कुछ दिनोंके बाद हम लोग शहर वापिस आये। सुधारकों की पाठशालाएं देखनेकी अभिलाषा हुई पर पाठशालावालोंसे मुनोडीका मेल जोल नही था अतएव उन्होंने अपने एक मित्रको मेरे साथ कर दिया। मैं सहर्ष विद्यालय अवलोकनको चला क्योंकि लड़काईमें मैं भी एक तरहका सुधारक था।

पञ्चम परिच्छेद।



यह विद्यालय एक बड़ी भारी इमारत नही है। सड़कके दोनो ओर जो जो घर पुराने पड़ते जाते हैं वही सब खरीद कर विद्यालय मे मिला लिये जाते हैं। इसीसे विद्यालयके घरोंका एक सिलसिला चला गया है।

हवा गर्म करनाही उसका उद्देश्य था। उसने मुझसे कहा— "आठ बरसके बाद मैं जरूर लाट साहबके बगीचेमें सूर्य्यकी किरणें पहुँचानेके योग्य हो जाऊंगा लेकिन फिकर यह है कि मेरे पास पूँजी नहीं है। आप जानते हैं कि रुपयेके बिना कोई काम नहीं होता। ककड़ीकी फसल भी अच्छी नहीं होती उससे दरभी बहुत चढ गई है सो आप कुछ मदद करें तो बहुत उपकार होगा।" मुनीडी पहलेहीसे जानता था कि विद्यालयवाले सबसे भीख मांगते हैं। इसी लिये उसने चलनेके समय कुछ रुपया मेरे हवाले कर दिया था। वही मैंने उसे दे दिया।

दूसरे कमरेमें घुसतेही ऐसी दुर्गन्धि आई कि मैं घबरा कर लौटने लगा। पर मेरे साथीने ऐसा करनेसे मना किया। आखिर बिना नाक मूंदेही भीतर घस पडा। यहांके सुधारकजी सबसे पुराने तथा बूढ़े थे। आपका मुंह तथा दाढ़ी पीली थी। हाथ और कपडे गलीजसे भरे हुए थे। जब उनके निकट पहुंचा तो उन्होंने गले लगाया। अगर मैं जानता कि वह मुझे गले लगावेंगे तो कदापि वहां न जाता। ऐसे आदर सम्मानको दूरहीसे नमस्ते है। यह महाला मनुष्यकी विष्ठाका पुन अन्न बनानेके लिये सिर मार रहे है। इन्हें सुधारक-समाजसे हफ्तेमें एक मटका गुह मिला करता है।

तीसरेको बर्फका बारूद बनानेमें व्यस्त देखा। अग्निको तरल बनानेके विषयमें एक पोथी भी इसने लिखी थी जिसे वह छाप छपाना चाहता था। मैंने उस पोथीको देखा भी था।

चौथे कमरेमें एक असाधारण कारीगर था। उसने मकान बनानेकी नई प्रणाली निकाली थी कि पहले छत बना कर तब दीवार और नीव इत्यादि बनाना चाहिये। मकड़ी और मधु-मक्खियोंका उदाहरण बतला कर उसने कहा कि यह कुछ कठिन कार्य्य नहीं है।

पाचवें घरमें एक जन्मका अन्धा था। उसके कई चेले थे। वह सब भी जन्मान्ध थे। चित्रकारोंके लिये रङ्ग बनानेकी

इनका काम था कूद कर और सूंघ कर वह रङ्गोंको चुन लेते थे। भाग्यका दोष है कि चेलोंकी तो क्या गुरु भी अपना करतब भली भांति सुफल न दिखला सके। चित्रकारोंने इन लोगोंका खूबही उत्साह बढ़ाया है।

छठे आविष्कर्त्तासे मैं बहुतही प्रसन्न हुआ। इसने हल. बैल तथा मजूरोंका खर्च बचानेके वास्ते सूअरोंसे जमीन जुतवानेका एक नया ढङ्ग निकाला है। वह यह है कि तीन बीघे जमीनमें छ छ इञ्च पर आठ इञ्च खोद कर बलूत, खिजूर, अखरोट तथा उन चीजोंको जिन्हें सूअर पसन्द करते हैं गाड़ देना फिर छ. सौ या अधिक सूअर उस खेतमें छोड़ देना चाहिये। सूअर सब उन चीजोंके लालचसे सारे खेतको थोड़ेही दिनोंमें खोद डालेंगे। सिर्फ यही नहीं अपने मैलेकी खाद भी उसमें डालते रहेंगे। फिर उसमें खेती करो। यह बात सत्य है कि परीक्षा करने पर खर्च और मिहनत तो ज्यादह हुई परन्तु फसल कुछ नहीं। जो हो, इसकी उन्नति करनी चाहिये।

लायक हो जायगी। गोंद, तेल आदि लसलस पदार्थही मक्खियों का उपयुक्त आहार है।

मेरे वायुगोलेकी कुछ शिकायत थी। मेरा साथी मुझे डाक्टर साहबके पास लेगया। आप इस रोगकी चिकित्सामें अच्छे नामवर पुरुष थे। आपके पास एक फुकनी जिसमें आर्थोदानका पतला लम्बा मुँह लगा था। इसी फुंकनीके मुँहको रोगीके मल द्वारमें आठ इञ्च घुसेड़ कर आप भीतरकी दूषित वायु खैंच लेते थे। अगर वायुगोलेका वेग प्रबल हुआ तो आप उलटी क्रिया करते अर्थात् मल द्वारकी राह बाहरकी हवा पेटमें खूब भर देते थे बस यह नई हवा दूषित वायुके सङ्ग बड़े जोरसे निकल पड़ती थी और रोगी चङ्गा होजाता था। इन दोनों तरहसे एक कुत्ते का इलाज करते डाक्टर साहबको देखा था। पहले उपायसे तो कुछ नतीजा निकला नहीं पर दूसरेसे कुत्तेका कामही तमाम हो गया। डाक्टर साहब उसके जिलानेके उद्योगमें लगे और हम दोनों वहांसे नौ दो ग्यारह हुए क्योंकि कुत्तेकी हवासे जी बहुत घबरा गया था।

और भी अनेक कमरे मैंने देखे जिनका वर्णन कर पाठकोंको दिक करना मैं नहीं चाहता। अब तक मैंने विद्यालयका एकही भाग देखा था। दूसरे भागमें आध्यात्मिक और वैषयिक उन्नतिके चाहनेवाले लोग थे। पहले मैं एक मुख्य व्यक्तिका जो विश्व शिल्पी कहलाता था, हाल सुनाता हूं। वह मानव जातिकी आयु बढ़ानेके लिये तीस सालसे सिर खपा रहा था। उसके इलाके दो बड़े बड़े कमरे विचित्र पदार्थोंसे भरे हुए तथा पचीस मनुष्य काम करनेवाले थे। कुछ लोग हवाको जमाकर भूनेके योग्य बनानेमें कुछ सङ्गमरमरको तकियेके लिये मुलायम करनेमें और कुछ लोग घोड़ोंको लगड़ानेसे बचानेके लिये उनके सुमको पत्थर बनानेमें लगे हुए थे स्वय उस्तादजी उस समय दो कामोंमें माथा लड़ा रहे थे। एक तो यह था कि भूमिमें भूसीही बोना चाहिये क्योंकि बीजत्व

भूमीहीमें है। इसे उन्होंने कई प्रकारसे सिद्ध भी किया पर मेरी समझमें कुछ न आया। दूसरा यह कि गोंद, धातु और जड़ी बूटी मिला कर एक ऐसा मरहम बने जिसके लगानेसे भेड़ोंकी देह पर ऊन न निकले। वह कहता था कि थोड़ेही दिनोंमें राज्य भरमें ऊनहीन भेड़ें हो जायगी।

अब हम लोग पाठशालाके उस भागमें जा पहुँचे जहां काल्पनिक विद्याके पढ़नेवाले रहते थे। जिस अध्यापकसे पहले भेंट हुई वह चालीस विद्यार्थियोंको लिये एक बड़ी कोठरीमें बैठा था। दण्ड प्रणामके बाद मेरी दृष्टि एक चौखट पर जा पड़ी जो बड़ी लम्बी चौड़ी थी बल्कि यों कहना चाहिये कि वो कोठरीका ज्यादा हिस्सा घेरे हुए थी।

बालकोंसे चोखट पर लिखने हुए अक्षरोंको धीरे धीरे पढ़नेके लिये तथा जहां दो चार शब्द इकट्ठे मिले उन्हें लिखनेके लिये शेष चार विद्यार्थियोंसे कहा। दो चार बार इसी प्रकार कल घुमाई गई हर एक चक्करमें शब्दावलीका स्थान बदलता जाता था।

लड़के छ घण्टे रोज इस तरह परिश्रम करते थे। अध्यापकने कई बड़ी बड़ी पोथियां दिखलाईं जो भग्न वाक्योंका सग्रह थी। उनको पूरा करके विज्ञान और शिल्पका एक पूरा भण्डार बनाने की उसकी इच्छा थी।अगर सब कोई चन्दा करके ऐसे ऐसे पांचसौ यन्त्र लगाडोमें स्थापित करदें तो बहुत कुछ उन्नति हो सकती है।

फिर मैं भाषा विद्यालयमें गया। वहां तीन जन बैठे स्वदेश भाषाको उन्नत करनेका परामर्श कर रहे थे। पहला प्रस्ताव यह था कि अनेकाक्षर शब्दके बदले एकाक्षर शब्दका प्रयोग तथा क्रिया को निकाल कर भाषाको संक्षेप करना। वस्तुत: संसारमें जो कुछ विचारा जा सकता है सो सब सञ्ज्ञाके सिवा और कुछ नहीं है।

दूसरा प्रस्ताव था शब्द मात्रको दूर करनेका। इससे स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और भाषा भी अत्यन्त संक्षेप हो जायगी। यह साफ प्रगट है कि जितने शब्द हम बोलते हैं उनसे हमारे फेफड़े को आघात पहुंचता है। बस इसीसे आयु भी क्षीण होती जातीहै। जब सब वस्तुओंकी सञ्ज्ञाही शब्द है तो सब कोई उन वस्तुओंही को अपने अपने साथ क्यों न लिये फिरे जिनके बारेमे बात चीत करना हो। अगर स्त्रियां गवार और मूर्खोंके साथ मिल कर विद्रोह का भय न दिखाती तो अब तक यह रीति चल गई होती और प्रजाको भी लाभ पहुंचता। जो हो, बहुतसे पण्डित और ज्ञानी इस नई रीतिसे चलते हैं अर्थात् बोलनेके बदले चीजोंहीसे काम निकालते हैं। लेकिन इसमें एक बड़ी भारी कठिनाई है। वह यह कि किसीके बहुत तरहकी बातें करनी हुई तो उसे अपनी पीठ पर सब चीजोंका गट्ठर लादना पड़ेगा या दो मजदूर करने पड़ेंगे। मैंने इनमेंसे दो अध्यापकोंको फेरीवालोंकी तरह बोझसे

लटे हुए अक्सर देखा था। अगर कहीं रास्तेमें दोनोंको आपसमें भेंट होगई तो गठरिया खोल कर घण्टों बात चीत करते पर मुंह दोनोंहीके बन्द रहते थे। बातें पूरी होजाने पर अपने अपने सामानको बोरेमें रख कर चलते बनते थे। दोनो दोनोंकी मदद गठरिया उठानेमें करते थे।

मामूली बातचीतके लिये हरएक आदमी जेबमें और बगलमें थोड़े मजेमें लेजा सकता है। और घरमें तो कोई वस्तु कम होना ही न चाहिये। बैठकमें भी इस कलित सम्भाषणके निमित्त समस्त वस्तुएं प्रस्तुत रहना अवश्यक है।

इस तरहके सम्भाषणमें सबसे बड़ा लाभ तो यह होगा कि सब देशवाले जो एकही तरहकी वस्तु व्यवहार करते हैं इस भाषाको समझेंगे और फिर यह जगत्‌भाषा हो जायगी। बस राजदूतगण सहजमें विदेशी राजा या मन्त्रियोंकी बोलिया समझने लग जायगे।

गणित पढ़ानेकी परिपाटी ऐसी विलक्षण देखी कि यूरोपवाले उसका अनुभव भी नहीं कर सकते हैं। गणित सम्बन्धी प्रतिज्ञा और प्रमाणादि पतली रोटी पर लिख कर बालकोंको भूखे पेटमें खिलाये जाते हैं और फिर तीन दिन तक रोटी और पानीके सिवा और कुछ खानेको नहीं दिया जाता है। रोटीके परिपाक होजाने पर उसका प्रभाव मस्तिष्क पर पहुंच जाता है। यही उन लोगोंकी धारणा है। परन्तु अभी तक यह ढंग ठीक नहीं उतरा है इसके भी कारण हैं। एक तो स्याही गड़बड़ करती है दूसरे लड़के परहेजसे रहते नहीं।

षष्ठ परिच्छेद।



करते थे कि राजा महाराजगण पण्डित, योग्य और धार्मिक लोगों होका अपना कृपापात्र बनाना पसन्द करें—मन्त्रीगण सबकी भलाईका विचार करें—योग्य, गुणी और उत्तम कार्य्य करने वालोंको पुरस्कार मिला करे—राजकुमारोंको ऐसी शिक्षादी जाय जिससे वह अपने तथा प्रजाके स्वार्थको समझें—राज्यके लिये वही लोग चुने जाय जो इन रीतियोंको बरते इत्यादि बहुतसी बाते थी जो कभी किसीने सोची भी न होंगी। इन बातोंका पूरा होना मुझे असम्भवही दीखता है।

परन्तु जो हो इतना मैं अवश्य कहूंगा कि सब प्रस्तावही ऐसे न थे। एक बडा बुद्धिमान डाक्टरथा जो राजनीतिके तत्वको अच्छी तरह समझता था। उसने सब प्रकारके रोग और कलङ्की अव्यर्थ महौषधि ढूंढनेमें जो राजाके दोष और कर्मचारियोंकी लम्पटता से प्राय होते हैं, अच्छा परिश्रम किया था। यह कहा जाता है कि सभासमितिवाले बहुधा चित्तकी तीव्रता तथा उत्तेजनादिसे प्रायः दुःखित रहते हैं। उनके सिरकी विशेष कर हृदयकी बीमारियां होती है। तिल्ली, घुमटा मूर्छादि रोगोंसे वह पीडित होते है। गलगण्ड तीक्ष्ण तथा मन्दक्षुधा प्रभृति नाना प्रकारके रोग उन्हें घेरे रहते है जिनके नाम अनन्त है। इसलिये डाक्टर साहब की राय है कि अधिवेशनके पहले तीन दिन कुछ डाक्टर हाजिर रहा करें जो सभा भङ्ग होनेके समय प्रत्येक सभासदकी नाडी देखें। फिर चौथे दिन औषधिकी व्यवस्था करे।

यह भी लोकापवाद है कि राजाके प्रिय मन्त्रियोंको भूलनेको बीमारी होती है। डाक्टर साहबकी राय थी कि प्रधान मन्त्रीका चिकित्सक बहुत संक्षेप और स्पष्ट रूपसे कामकाजके विषयमें जो कुछ कहना हो सो उनसे कहे और चलनेके समय उनकी नाक मलदे या पेट पर एक घूसा जमावे या घट्टाको कुचलदे या दोनो कानोंको खेंचे या सूई चुभोदे या बांहमें जोरसे चुटकिया काटे

जिनसे फिर वह भूल न जायं। दरबारके दिनोंमें जब तक काम पूरा न होजाय रोज मन्त्रीको इसी तरह चिताना चाहिये।

अगर सभाओंमें लोग लड़ पड़े तो उनके मेल मिलाप करा देने का बहुत अच्छा यत्न डाक्टर बतलाता था। वह कहता था कि दोनों दलोंमेंसे सौ सौ मुखियोंको चुन कर दो दोका ऐसा जोड़ा लगावे कि जिनके सिर आकारसे प्राय समान हों। इन जोड़ोंको एक पातमें बिठादे।' दो अच्छे जर्राह ठीक एकही साथ एक जोड़े के सिरका पिछला हिस्सा ऐसे ढङ्गसे काटलें कि दोनोंके मस्तिष्क आधे आधे होजाय। फिर एकका मस्तिष्क दूसरेके सिरमें लगादे। तब आपसमें मेल हो जायगा। मगर यह काम जरा कठिन है। पर वह कहता था कि तनक होशियारी करनेहीसे ठीक ठीक हो जायगी क्योंकि जब दो तरहके मस्तिष्क एकही सांचेमें आजायगे तो बहुत जल्दी विवाद मिट जायगा।

स्त्रियां सुन्दरता और कपडे पहननेकी सुघडाई पर टेक्स दें। पुरुषोंकी तरह यह सब भी अपने अपने सौन्दर्य और वेशविन्यास का विचार करेंगी। परन्तु दृढता, सतीत्व, सुशील और सुन्दर स्वभाव पर टेक्स नहीं लगना चाहिये क्योंकि इससे ज्यादे खर्चा बैठेगा।

और एक सज्जनने एक कागज दिखाया जिसमें राजा महाराज के विरुद्ध जो कुछ षडयन्त्र या विद्रोह होते हों उनके प्रगट करने के उपदेश सब लिखे थे। वह कहता था कि जितने बडे बडे राज नीतिज्ञ लोग हैं वह जिन पर सन्देह हो उनके भोजनकी, भोजनके समयकी, किस करवट सोते हैं, किस हाथसे आबदस्त लेते हैं इत्यादि बातोंकी परीक्षा किया करें। उनकी विष्ठाकी भली भांति जांच करें तथा उसकी रङ्गत, गन्ध, स्वाद गाढेपन आदिकी देख भाल रक्खें। तजरबेसे देखा गयाहै कि मनुष्य पखानेमें जैसा गम्भीर अभिनिविष्ट और तत्पर होता है वैसा और कभी नहीं होता। ऐसी अवस्थामें उसने स्वयं परीक्षा करके दिखाया कि राजाको मार- नेका विचार करनेसे विष्ठाका रङ्ग हरा होजाता है। लेकिन जब विद्रोहकी अथवा राजधानीको भस्मकर देनेकी इच्छा मनमें होती है तो उसका कुछ औरही रङ्ग हो जाता है।

बिलकुल बातें विशदरूपसे लिखी हुई थी। कई बाते राज- नीतिज्ञोंके लिये अद्भुत तथा लाभकी भी थी। लेकिन मेरी समझ से विषय अपूर्ण था। मैंने साहस करके कह दिया कि अगर आप चाहें तो मैं भी कुछ नये उपाय बता सकता हूं। उसने सादर मेरे प्रस्तावको स्वीकार किया और जो कुछ मैंने बताया सो ग्रहण किया। बहुत कम ग्रन्थकार दूसरेकी बताई बातें मानते हैं।

मैंने कहा—"त्रिवनियाके राज्यमें जिसे वहांवाले 'लग्डन' कहते हैं मैं कुछ दिन रह आया हूं। वहांके अधिकांश निवासी षड्यन्त्रोंको प्रकाश करनेवाले, शपथ खानेवाले, अभियोग चलाने वाले, जासूसी करनेवाले तथा गवाही देनेवाले इत्यादि हैं। यह लोग अपने साथ नाना प्रकारके यन्त्रादि रखते हैं और राज्यसे वेतन

प्रशान्त महासागरके उत्तर विस्तृत है जो लगाडोसे डेढ़सौ मीलसे अधिक दूर नहीहै। वहां मलडो नाडो नामका एक सुन्दर बन्दरहै। लगनग द्वीपके रहनेवाले यहा आकर तिजारत करतेहैं। यह जापानसे पूरब तीनसौ मील पर बसा हुआ है। जापानके महाराज और लगनगके राजामें खूब मेल मिलापहै इसीसे दोनो टापुओंमें जहाजों की आवा जाई अकसर बनी रहती है। मैंने इसी राहसे युरोप पहुंचनेका मनसूबा किया। मैने दो खच्चर भाडे किये तथा एक बेगार राह बताने और माल टाल ढोनेके लिये। सुनोडोसे मै बिदा हुआ। चलनेके समय उसने खूब दिया लिया था।

रास्तेमें कोई घटना लिखनेके योग्य नहीं हुई। खुशी राजी मलडो नाडो पहुंचा। यहा लगनग जानेके लिये कोई जहाज तैयार न था और न जल्दी जानेकी सम्भावनाही थी। लाचार वहां टिकना पडा। बाजार छोटा मोटा अच्छा था। एक आदमी से जान पहचान होगई। उसने बडी खातिर की। वह बडा भला मानस था। उसने कहा कि लगनगके लिये जहाज एक महीनेमें कममें नहीं छूटेगा। तब तक चलिये पासहीके गलबडब ड्रिब नामक छोटेसे टापूकी सैर कर आवे। मै भी राजी होगया। एक छोटीसी ष्टीमर किराये कीगई। उस पर सवार होकर हम लोग चलते हुए।

गलबडब ड्रिब शब्दका अर्थ है जादूगरीका द्वीप। यह छोटासा मझेला टापू है। यहाकी जमीन उपजाऊ है। यहा एक तरह की जाति निवास करती है जो सबके सब जादूगर है। राजा भी इसी जातिका है। यह आपसहीमें व्याह करते है। जो सबमें बडा होता है वही राजगद्दी पर बैठता है। राजाका मकान सुन्दर और बगीचा मनोहर था। चारों ओर पत्थरकी बीस फुट ऊंची दीवार थी। भीतर गोशाला, गोदाम आदि अलग अलग बनी हुई थीं।

राजाके नौकर चाकर जो थे सो सब विचित्रही थे। राजा

जादूके बलसे चाहे जिस मुर्देको बुलाता और पके चौबीस घण्टे उससे काम लेता। इससे ज्यादे नहीं ले सकता और न फिर उसी मुर्देका बिना भारी जरूरतके तीन महीनेके अन्दर बुला सकता था।

जब हम लोग वहां पहुंचे तो दिनके ग्यारह बजे थे। मेरे साथियोंमें से एकने जाकर मेरे आनेकी खबर राजाको दी। आज्ञा पाकर मैं भी भीतर गया। दोनो ओर सिपाही खडे थे जिनकी पोशाक और सजावट अनोखी थी। उनके चेहरे देख कर मैं इतना डर गया था कि लिख नहीं सकता। वह सभी भूत थे। दालान वगैरहको लांघ कर दीवानखासमें जापहुंचा। मेरे साथ दो आदमी और थे—एक तो मित्र और एक मित्रका सहचर। राजा सिंहा-सन पर बैठा था। तीन तीन बार हम लोगोंने सलाम किया। कई प्रश्नके बाद राजाने बैठनेकी आज्ञा दी। सिंहासनकी निचली सीढी के पास तीन तिपाइयां रखी थीं उन्हीं पर हम तीनों बैठ गये। यद्यपि बलनी बरबीकी भाषा वहांकी भाषासे बिलकुल जुदी थी। तथापि राजा उसे समझता था। उसने उसी भाषामें मेरे सफरका हाल पूछा और उंगलीके इशारेसे अपने पारिषदोंको हट जानेके लिये कहा। वह सब इशारा पातेही ऐसे दफन होगये जैसे जाग-उठने पर सपना होजाता है।

को सत्रमें रहनेके लिये कहा गया पर हम लोग न रहे। इसके लिये जग प्रार्थना करनी पडी थी। हम लोग राजमहलके बाहर एक घरमें सोये और सवेरे उठ कर फिर राजाके पास गये।

इस प्रकार वहां हम लोग दस दिन रहे। दिनको महलमें और रातको बाहर रहते थे। फिर तो मैं भूतोंसे ऐसा ढीठ होगया कि क्या लिखूं। सब डर भय जाता रहा। अगर कुछ रह भी गया होगा तो उसे कौतूहलने दबा दिया था। राजाने मुझसे कहा— "कहो जिस भूतको बुलाऊं। सृष्टिकी आदिसे आज तक जितने मनुष्य मरे हैं सब आसकते हैं। तुम जो चाहो सो पूछ सकते हो पर एक बात याद रक्खो कि जो जिस समय जीवित था उससे उसी समयकी बातें पूछना आगे पीछेकी नहीं क्योंकि वह लोग कभी झूठ नहीं बोलते सदा सच बोलते हैं।" मैंने सब स्वीकार किया। हम लोग जिस कमरेमें थे वहासे बगीचा साफ दिखाई पडता था। सबसे पहले मैंने "अगर बेला" की लडाईके बाद बडे सिकन्दरको ससैन्य देखना चाहा। बस राजाके उसली हिलातेही खिडकीके नीचे एक बडे लम्बे चौडे मैदानमें सब प्रत्यक्ष होगया। सिकन्दर भीतर बुलाया गया। बडी मुश्किलसे उसको ग्रीक भाषा समझमें आई थी। उसने कसम खाके कहा—"मुझे विष नहीं दिया गया। बहुत शराब पी जानेके कारण ज्वरसे मैं मरा था।"

फिर अल्पस पर्व्वत लांघते हुए हनीबलको देखा। उसने कहा कि अंगूरी शराबकी एक बून्द भी मेरे कम्पमें न थी।

सीजर और पोम्पे ससैन्य दिखलाई पडे जो लडनेको तैयार थे। सीजरको अपनी पिछली बडी जीतके कारण जुलूसमें सज धजके निकलते देखा। फिर रोमकी सिनेट सभाको एक बडे हालमें और आजकलके प्रतिनिधियोंको दूसरेमें अवलोकन किया। पहलेमें मालूम होताथा कि वीर और देवता विराजित हैं और दूसरेमें ठग, जेबकतरे डाकू, फेरीवाले, हरमुष्टक और हुडदङ्गे भरे हुए हैं।

राजाने मेरे कहनेसे सीजर और ब्रूटसको बुलाया। ब्रूटसको

देख कर चित्तमें भक्तिका सञ्चार होआया। उसके चेहरेसे वीरता, पूर्ण धर्म प्रियता, दृढ़ प्रतिज्ञता, निर्भीकता, सच्ची देशहितैषिता, उदारता टपकी पड़ती थी। मीजर और ब्रूटसमें खूब मेल मिलाप देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मीजरने मेरे सामने स्वयं मुक्तकण्ठसे स्वीकार किया था—"मेरे जीवनके बड़े बड़े कार्य्य भी अखिल अंशसे मेरे मारे जानेके तुल्य गौरव युक्त नहीं है।" ब्रूटससे मेरी बहुत बात चीत हुई। वह कहता था—"मेरे पुरखे जूनियस, सुकरात, एपामिराडस, कानिष्टकेटो, म्स्टोमस मोर और मैं सदा एक सङ्ग रहते हैं इनके जोड़का सातवां न कोई हुआ न होगा।"

और कितने महात्माओंका दर्शन मैंने किया सो सविस्तर लिख कर पाठकोंको कष्ट देना नहीं चाहता। सारांश यह कि सब युगों की सब बातें आखोंके सामने आगई थी। मैं विशेष कर उन्हीं लोगोंको देख कर सन्तुष्ट हुआ जो दुष्टों और पराये राज्यके छीनने वालोंका दमन कर पीडित दुःखित जातियोंको स्वाधीनता प्रदान कर गये हैं। इन सब व्यापारोंको अवलोकन कर मैं कितना प्रसन्न हुआ सो लिख कर बतलाना असम्भव ही है।

अष्टम परिच्छेद।

जानना तो दूर रहा कोई उनके नाम भी न जानता था। एक भूत ने जिसका नाम मालूम नहीं चुपकेसे मेरे कानमें कहा कि यह टीकाकार लोग प्रेतलोकमें कवियोंके पास मारे लज्जाके कभी फटकते भी नहीं क्योंकि इन सबने अशुद्ध टीका लिख लिखकर सबको बहकाया है। मैंने डिडीमस और युष्टाथियस दो टीकाकारोंको होमरके सामने पेश किया तो आपने उनको योग्यतासे बढ कर आदर किया और कहा कि कवियोंके कर्मको समझनेके लिये बुद्धिकी आवश्यकता है। स्कोटस और रेमसके आने पर जब मैंने उनका वृत्तान्त कह सुनाया तो अरिष्टोटसका धीरज जाता रहा। उसने छूटतेही उनसे पूछा—क्या बाकी लोग भी तुम्हारे ऐसे मूर्ख हैं।

पांच दिन तक मै प्राचीन विद्वानोंसे सम्भाषण करता रहा। रोमके पहले बादशाहोंमेंसे बहुतोंको देखा। एक विख्यात रसोइयेको बुलाया जो सब सामग्री प्रस्तुत न रहनेके कारण अपनी पाक चातुरी न दिखा सका।

मेरे दोनो साथी किसी जरूरी कामके सबब ज्यादे ठहरना नहीं चाहते थे। लाचार मुझे तीनही दिनमें सबको देखना पडा। दो चारसौ बरसके अन्दर युरोप या विलायतमें जो अच्छे अच्छे नामवर होगये है उनके दर्शनकी अभिलाषा हुई। मैं पुराने घराने के नामी पुरुषोंका बडा भक्त हूं इसीलिये मैंने दो चार दर्जन राजाओंको तथा उनके आठ दस पुरुषोंको क्रमसे बुलवाया। पर पीछे मुझे बडा अफसोस हुआ क्योंकि राजकुलमें राजपुरुषोके बदले मसखरे, ओछे, इटलीके पादरी, हजाम वगैरह ही नजर आये। मैं और भी कुछ पतेकी कहता पर राजाओंको आदरकी दृष्टिसे देखता हूं इससे कुछ कह नही सकता। जब इनकी यह दशा है तो राव, उमराव और बाबू लोगोंके बारेमें कहाही क्या जाय? किसी किसी बंशके लोगोंकी एक आकृति विशेष होती है। जिससे वह पहचाने जाते है। यह बात किस कुलमें कबसे चली सो पता लग- . मुझे कुछ कम आनन्द नहीं हुआ था। क्यों

किसी कुलमें लम्बी ठुड्डिया, क्यों दो पीढ़ियों तक दुष्ट, दो तक बेवकूफ और ठग आदि होने लगे सो मुझे अच्छी तरह मालूम होगया। कैसे कोई कोई खानदान निठुरता, अनल्पता और भीरुता के लिये विख्यात होगया और किसने पहले दुष्ट रोगका बीजारोपण अपने कुलमें किया इत्यादि बातोंका भी पता मुझे लगगया। साराश यह कि एक भी विशुद्ध वंश दृष्टिगोचर न हुआ।

आधुनिक इतिहासोंसे मैं बहुत घबरा गया। क्योंकि सौवर्ष पहलेके राजघरानेके नामवर पुरुषोंकी अच्छी तरह खोज करनेसे भली भाति प्रगट होगया कि बेईमान लेखकोंने दुनियाको बोसा धोखा देरखा है। सब लोग नितान्त डरपोक भीरुको युद्ध विद्यामें पटु मूर्खोंको चतुर, खुशामदियोंको सच्चा, नास्तिकोंको धर्मात्मा, व्यभिचारियोंको सदाचारी और जासूसोंको सत्यवादी समझने लगे हैं। जबोंकि घूसखोर होने और आपसके ईर्षाद्वेषसे कितनेको विचारे निरपराध और सज्जनोंको देशनिकाला तथा फासी हुई कितनेही दुष्ट अत्याचारियोंको ऊचे ऊचे पद मिले और कितनेही पेटार्थी, कुटने, भाड और रण्डियोंकी खूब चली बनी। और भी बहुतसी बातोंका गुप्त भेद सुन कर मनुष्य जाति की विद्या बुद्धि पर घृणा होने लगी थी।

जल सेनापतिने कहा—"एक तो मै युद्ध करना नहीं जानता दूसरे शत्रुसे भी मिल गया था तो भी मेरीही जीत हुई।" तीन राजोंने भी कहा—"हम लोगोंने भी कभी किसी गुणीको ऊंचे पद पर नियत नही किया। भूलसे या मन्त्रियोंके विश्वासघातसे जिनका हम सदैव विश्वास करते थे भलेही कोई होगया हो तो हम कह नहीं सकते। अगर हम लोग फिर जी उठें तो ऐसा कभी न करें।" इसके सिवा अच्छी अच्छी युक्तियां दिखलाकर वह यह भी बोले कि अत्याचारके बिना राजसिंहासन ठहर भी नहीं सकता है क्योंकि स्थिरता दृढता, एकाग्रतादि गुण सर्वसाधारणके कार्य्यके बाधक हैं।

किस प्रकारसे बहुतेरे मनुष्य बडी बडी उपाधिया तथा ऐश्वर्य्य पाजाते है सो जाननेके लिये मुझे अत्यन्त लालसा हुई। राजासे कहने पर उपाधि तथा ऐश्वर्य्य पाये हुये आधुनिक समयके अनेक भूत बुलाये गये। इन लोगोंने अपने अपने धन वा मान पानेके जो कुछ कारण बताये सो सुन कर बडी ग्लानि हुई। झूठ बोलना झूठी गङ्गाजली उठाना, जुआचोरी तथा कुटनापन करना आदि पापकर्म्महीसे प्रायः लोग बडे हुए थे। सबने स्वीकार किया कि कोई स्त्री और कन्याके व्यभिचारसे—कोई स्वदेश वा राजाकी बुराई करनेसे—कोई विष प्रयोगसे और बहुतेरे अन्यायसे निर-पराधोंको विनष्ट करके धनवान हुए थे। हम गरीबोंको छोटा बडे आदमियोंका अदब करना चाहिये परन्तु इन विचित्र बातोंके मारे चुप न रह सका। पाठक क्षमा करेंगे।

मैं इतिहासोंमें अकसर पढता था कि बहुतोंने राजा और राज्य दोनोंहीको बडी बडी सेवाएंकी है। इन सेवा करनेवालोंको मैंने देखना चाहा। पीछे खोज करनेसे मालूम हुआ कि उनके नाम इतिहासोंमें नहीं हैं और जो दो चार है भी सो नराधम, दुष्ट और राजद्रोही बनाये गये हैं। और शेषको कहीं चर्चा भी सुननेमें न आई। सब नीची नजर किये बुरी दशामें मेरे पास आये थे। यह भी प्रगट हुआ कि किसीने अन्न कष्टसे और किसीने आत्मग्लानिसे प्राण दिये थे और शेष सूली पर चढ़ाये गये।

एक प्रेतात्माकी कहानी सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके साथ अठारह वर्षका एक बालक भी था। वह रोमनगरके एक जङ्गी जहाजका कप्तान था। उसने एक जल युद्धमें जय प्राप्त कर शत्रुके तीन जहाजोंको समुद्रमें डुबो दिया और एक छीन लिया। एण्टनीके भागनेका यही सबब था। कप्तानकी जीत हुई जहां पर उसका एकलौता पुत्र युद्धहीमें काम आया। वही पुत्र उसके साथ था। रोम आकर उसने एक दूसरे बड़े जहाजको कप्तानीके लिये जिसका कप्तान लड़ाईमें मारा गयाथा, सम्राट अगष्टससे प्रार्थना की। परन्तु अगष्टसने वह पद एक छोकरेको देदिया जिसने समुद्र कभी देखा न था। और वह उसकी बेगमकी एक दाईका लड़का था। बिचारा कप्तान निराश होकर अपने जहाज पर लौट आया पर नमाजको गये गले पड़े रोजाकी बात हुई। कप्तान असावधानीके दोषमें पदच्युत हुआ और कप्तानके सहकारीका एक दामन बरदार उस ओहदे पर बहाल किया गया। कप्तान बिचारा रोमनगर छोड़ कर बहुत दूर एक गांवमें किसानोंके साथ रहने लगा। वहीं उसकी मृत्यु हुई। मुझे इस कहानीका विश्वास नहीं हुआ तो एग्रीपाको जो उस जहाजका सेनापति था

विगाड दिया, आकार कैसा छोटा कर दिया और ... तक कहें सब तरहसे कमजोर करके कैसा कुरूप कर दिया है।

इन सबके बाद मैंने इङ्गलैण्डके पुराने ढङ्गके ...का दर्शन किया जो एक समय सादा भोजन, सादी पोशाक ... की चाल चलनके लिये, अपने व्यवहारमें सचाईके लिये, सच्ची स्वतन्त्रता साहस और देशानुरागके लिये विख्यात थे। तबके और अबके लोगों को देख कर कलेजा कांप गया। इन महात्माओंको ... रुपये के लोभमें पडकर कैसी अधःपतित होगई है। ... पार्लमेण्टके चुनावके समय वोट (Vote) वेच वेच कर इन ... दरबार के पापोंको खूब बटोरा है। हा हन्त!

नवम परिच्छेद।



गलवडवड्रिवके राजासे विदा होकर हम लोग मान्डोनाडा पहुँचे। वहां पन्द्रह दिन ठहरनेके बाद एक जहाज मिला जो लग नग जाता था। मैं उसी पर सवार हुआ। दोनों सज्जनोंने मेरा वडा आदर सत्कार किया यहां तक कि रास्तेके लिये कलेवा भी मेरे साथ बाध दिया था। विचारे जहाज तक मुझे पहुंचा भी गयेथे। इस सफरमें एक महीना लगा। रास्तेमें एक बार तूफान भी आया था। खैर जहाज क्लामेगनिगके बन्दरमें पहुचा। यह लगनगसे दक्खिन पूरब बसा हुआ है।

जब मै उतरा तो किसी खलासीने दुष्टतासे अथवा भूलसे मेरी खबर कष्टम हाउसवालोंको करदी। फिर क्या था मेरी लङ्काझारी होगई। मैंने अपनेको हालेण्डवासी बताया क्योंकि मुझे जापान तक जाना था और वहा डचके सिवा दूसरे युरोपियन घुसने नही पाते थे। मैंने कष्टम हाउसके अफसरसे कहा कि मेरा जहाज वलनीवरवीके किनारे तवाह होगया। मैं किसी तरह लपूटा (उडन टापू) जापहुचा। अब मैं जापान जाया चाहता हूं। वहासे ...ने देशको चला जाऊंगा। इस पर उसने जवाब दिया—“विना

सरकारी हुक्म पाये मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता। अभी तुम्हारे आनेकी ख़बर सरकारमें भेजता हूं। पन्द्रह दिनमें वहांसे जवाब आजायगा तब तुम्हारी छुट्टी होजायगी।" लीजिये मैं विना अपराध कैदी होगया। मैं एक सुन्दर मकानमें पहुंचाया गया। मेरे खाने पीनेका भी सब प्रबन्ध सरकारकी तरफसे कर दिया गया। द्वार पर पहरेके लिये एक सन्तरी भी बैठाया गया। मेरे आनेकी चर्चा तमाम फैल गई। दूर देशका आदमी समझ कर सभी लोग मुझे देखने के वास्ते आते थे।

एक छोकरा मेरे साथही जहाज पर आया था। वह लगनग और मालडो नाडा दोनो जगहोंकी बोलियां जानता था। मैंने उसे अपना द्विभाषी नियत किया। उससे वहांकी भाषा भी सीखता था।

आता है तो जान बूझ कर सारी गच धूलसे शरदी जाती है। मैंने एक सज्जनको जमीन चाटते चाटते बेदम हो जाते देखा है। यहां तक कि जब वह रेंग कर खड़ा हुआ तो मुंहसे आवाज नहीं निकल सकती थी। इसकी कोई दवा भी नहीं क्योंकि जो लोग राजासे मुलाकात करने जाते हैं उनके लिये राजाके सामने थूकना या मुंह पोछना बड़ा भारी कसूर है। इसकी सजा केवल फांसी है। एक रीति और है जो मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। जब राजा की इच्छा किसी दरबारीकी जान साधारण तौरसे लेनेकी होती है तो सारे सहन पर एक तरहकी विषैली बुकनी फैलादी जाती है। बस चाटनेवाला चौबीस घण्टेके अन्दरही यमपुर पहुंच जाता है। लेकिन यह बातहै कि राजाको अपनी प्रजाकी जान बहुत प्यारीहै और इस विषयमें वह बहुत सावधान भी रहते हैं। हमारे युरोप के राजे महाराजे भी ऐसेही हों यही मेरी वाञ्छा है। इसी लिये जब किसीकी जान बुकनीके द्वारा लीजाती है तो श्रीमान् गचको खूब साफ करके धो डालनेकी कड़ी आज्ञा देते हैं। अगर नौकर चाकर इसमें असावधानी करते तो राजा साहब बहुत नाराज होते हैं। मेरे सामनेकी बात है कि एक छोकरेकी गलतीसे एक होन हार नवयुवककी जान चली गई। उस छोकरेने जान बूझ कर डाहसे विषकी बुकनीको साफ नहीं किया था। इस अपराधके लिये उसे कोड़े लगनेवाले थे पर राजाने कृपा करके उसे छोड़ दिया और कहा—"मेरी आज्ञाके बिना फिर ऐसा मत करना।"

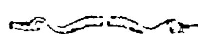
अच्छा अब आगे सुनिये। रेंगते रेंगते सिंहासनसे चार गजके फासले पर पहुंचा तो धीरेसे घुटना टेक मैं खड़ा हुआ। फिर सात बार जमीनसे माथा टकरा कर उस भाषाका एक वाक्य मुझे कहना पड़ा। यह पहलेहीसे मुझे रटाया गया था। इसका मतलब यह है—"श्रीमान् सूर्य्य और साढे ग्यारह चन्द्रमाओंसे भी अधिक जीवें।" इसका आपने क्या जवाब दिया सो मेरी समझमें न आया। तौभी मुझे जो कुछ रटाया गया था सो मैंने कह दिया। वह

यह है—"मेरी जिह्वा मेरे सिवर्जे मुहमे है।" अर्थात् मैं अपने दुभाषियेको बुलानेकी आज्ञा चाहता हूँ। फिर दुभाषिया आया। एक घण्टेमें ज्यादे बात चीत होती रही। राजाने जो कुछ पूछा उसका जवाब दुभाषियेके द्वारा बराबर मैं देता जाता था। मैं तो बलनीबरबी भाषामें बोलता था और वह लगनगकी भाषामें उलटा तर्जुमा करता जाता था।

राजा मेरी मुलाकातसे बहुत प्रसन्न हुए। आपने अपने कर्म्म-चारीको मेरे डेरे डण्डे तथा भोजन आदिके प्रबन्धके लिये आज्ञा दी उसने सब ठीक ठाक कर दिया।

राजाके अनुरोधसे मैं वहां तीन महीने रह गया। आप मुझ पर बहुत स्नेह रखते थे। आप मुझे एक अच्छा पद भी राजसभामें देते थे पर मैंने अङ्गीकार नहीं किया क्योंकि बुढ़ापेमें बालबच्चोंके साथही रहना उचित जान पड़ा।

दशम परिच्छेद।



आता है तो जान बूझ कर मारी गच धूलसे शरढी जाती है। मैंने एक सज्जनको जमीन चाटते चाटते बेदम हो जाते देखा है। यहां तक कि जब वह रेंग कर खडा हुआ तो मुंहसे आवाज नही निकल सकती थी। इसकी कोई दवा भी नहीं क्योंकि जो लोग राजासे मुलाकात करने जाते हैं उनके लिये राजाके सामने थूकना या मुंह पोंछना बडा भारी कसूर है। इसकी सजा केवल फांसी है। एक रीति और है जो मुझे बिलकुल पसन्द नही। जब राजा की इच्छा किसी दरबारीकी जान साधारण तौरसे लेनेकी होती है तो सारे सहन पर एक तरहकी विषैली बुकनी फैलादी जाती है। बस चाटनेवाला चौबीस घण्टेके अन्दरही यमपुर पहुंच जाता है। लेकिन यह बातहै कि राजाको अपनी प्रजाकी जान बहुत प्यारीहै और इस विषयमें वह बहुत सावधान भी रहते हैं। हमारे युरोप के राजे महाराजे भी ऐसेही हों यही मेरी वाञ्छा है। इसी लिये जब किसीकी जान बुकनीके द्वारा लीजाती है तो श्रीमान् गचको खूब साफ करके धो डालनेकी कडी आज्ञा देते हैं। अगर नौकर चाकर इसमें असावधानी करते तो राजा साहब बहुत नाराज होते हैं। मेरे सामनेकी बात है कि एक छोकरेकी गलतीसे एक होनहार नवयुवककी जान चली गई। उस छोकरेने जान बूझ कर डाहसे विषकी बुकनीको साफ नहीं किया था। इस अपराधके लिये उसे कोडे लगनेवाले थे पर राजाने कृपा करके उसे छोड दिया और कहा—"मेरी आज्ञाके बिना फिर ऐसा मत करना।"

अच्छा अब आगे सुनिये। रेंगते रेंगते सिंहासनसे चार गजके फासले पर पहुंचा तो धीरेसे घुटना टेक मैं खडा हुआ। फिर सात बार जमीनसे माथा टकरा कर उस भाषाका एक वाक्य मुझे कहना पडा। यह पहलेहीसे मुझे रटाया गया था। इसका मतलब यह है—श्रीमान् सूर्य और साढे ग्यारह चन्द्रमाओंसे भी अधिक [illegible]।" इसका आपने क्या जवाब दिया सो मेरी समझमें न आया। [illegible] मुझे जो कुछ रटाया गया था सो मैंने कह दिया। वह

यह है—"मेरी जिह्वा मेरे मित्रके मुहमें है।" अर्थात् मै अपने दुभापियेको बुलानेकी आज्ञा चाहता हूं। फिर दुभापिया आया। एक घण्टेसे ज्यादे बात चीत होती रही। राजाने जो कुछ पूछा उसका जवाब दुभापियेके द्वारा बराबर मैं देता जाता था। मै तो वलनीवरवी भाषामें बोलता था और वह लगनगकी भाषामें उसका तर्जमा करता जाता था।

राजा मेरी मुलाकातसे बहुत प्रसन्न हुए। आपने अपने कर्म्मचारीको मेरे डेरे डण्डे तथा भोजन आदिके प्रबन्धके लिये आज्ञा दी उसने सब ठीक ठाक कर दिया।

राजाके अनुरोधसे मैं वहा तीन महीने रह गया। आप मुझ पर बहुत कृपा रखते थे। आप मुझे एक अच्छा पद भी राजसभा में देते थे पर मैंने अङ्गीकार नहीं किया क्योंकि बुढापेमें बालबच्चों के साथही रहना उचित जान पडा।

दशम परिच्छेद।



लगनगके रहनेवाले सुशील और उदार हैं। पूर्व देशके लोगो को जो एक तरहका अभिमान होता है उसका यद्यपि एक छींटा इन लोगों पर भी पडा है तथापि यह विदेशियोके साथ शिष्टाचार करतेहै विशेषत: जिनका राजसभामें आदर होता है उनका अधिक सम्मान करते हैं। वहा कई बडे बडे आदमियोंसे मेरी जान पहचान होगई। मेरा दुभापिया हरदम साथ रहताथा इससे बात चीत में कोई अन्तर नही पडता था।

एक दिन मजेका जमघट था। एक मित्रने मुझसे पूछा—"हमारे किसी अमरको आपने देखाहै ?" मै बोला—नहीं। लेकिन यह तो बताइये कि मतलब क्या है। यह सारी सृष्टिही मरनहार है फिर आपके इस अमरका क्या अर्थहै ?" वह बोला अच्छा सुनिये। यहां सयोगसे कभी कभी किसीके यहा एकाध बालक ऐसा उत्पन्न हो होजाता है जिसके माथेमें बाई भौहके ठीक ऊपर एक गोल लाल

दाग रहता है। लोग कहते हैं कि जिसको यह चिन्ह होता है वह कभी मरता नहीं।" उसके कहनेसे यह भी मालूम हुआ कि यह दाग पहले चवन्नीसे कुछ छोटा रहता है लेकिन पीछे बढ जाता है और रङ्ग भी बदल जाता है। बारह वर्षके बाद यह हरा हो जाता है और पचीस तक वैसाही रहता है। बाद बीर नीला फिर पैतालिसवें सालमें खूब काला होता है और आकार भी बढ कर अठन्नीसे कुछ छोटा बन जाता है। फिर कोई परिवर्त्तन नहीं होता। ऐसे लडके बहुत कम पैदा होते हैं। सारे राज्यके अमर लडके लडकी मिलाकर अधिकसे अधिक ग्यारह सौ होंगे। राजधानीमें कुल पचासही हैं। और शेषमें एक बालिका तीन साल की है। अमर किसी एकही खानदानमें पैदा नहीं होता। संयोग से सर्वत्रही होता है। इन अमरोंकी सन्तान भी अमर नहीं होती। सब लोगोंकी तरह वह भी मरती है।

यह वृत्तान्त सुन कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। जिसने यह बात कही थी वह बलनीबरबी भाषा समझताथा और मैं वह भाषा खूब सप्पाटेसे बोल सकता था सो मारे आनन्दके मेरे जीमें जो कुछ आया सो बक गया। मैं झोंकमें बोल उठा—अहा! वह जाति धन्य है जिसमें लडकोंको अमरत्व प्राप्त करनेका भी सौभाग्य है! वह मनुष्य धन्य हैं जो प्राचीन कालके गुणोंकी जीवन्त मूर्ति दर्शन करते हैं और जिन्हें प्राचीनकालकी विद्या पढानेको गुरु तय्यार हैं। परन्तु सबसे बढ कर धन्य वह अमरगण है जो मानव जातिकी विश्वव्यापक विपदसे बचे हुए है और जिनके चित्तमें मृत्युका कुछ भी भय नहीं है। परन्तु आश्चर्य है कि राजसभामें एक भी अमर दृष्टि गोचर नहीं हुआ! काला दाग ऐसा चिन्ह है जो कभी छिप नहीं सकता। महाराजसे न्यायी राजा अपने दरबारमें ऐसे चतुर सुयोग्य मन्त्रियोंको न रक्खें यह भी विचित्रही है। कदाचित अमरगणही राजसभासे दूर भागते हों क्योंकि यह सब पापोंकी है। अथवा नवयुवक लोगही अपनी तीक्ष्ण बुद्धिके सामने

इर्डोंको सुन्दर सम्मतियोंको तुच्छ समझते हों। प्रायः देखा भी गया है कि यह लोग अपनी बातके बडे पक्के होते हैं इसीसे अमरों को अपने समाजमें घुसने नहीं देते! अस्तु, जब महाराज तक मेरी घुस पैठ है तो अवश्य उन्हें उचित परामर्श दूंगा। दुभाषियेके द्वारा उन्हें समझाऊंगा कि अमरगणको अपना मन्त्री बनाइये। वह मेरी सम्मति मानें चाहे न मानें मैं अब यहां अवश्य रहूंगा। महाराज यहां रखनेके लिये आग्रह करतेही हैं और अच्छा पद देने को कहही चुकेहैं तो अब जरूर रहूंगा और यदि अमरगण स्वीकार करें तो उन्हींके सङ्ग अपना जीवन शेष करूंगा।"

वह मनुष्य जिससे मैंने यह सब कहा था बलनीबरबी भाषा जानता था यह मै पहलेही लिख चुका हूं। वह मेरी बातें सुन कर हंसा। फिर अपनी मण्डलीवालोंको मेरे व्याख्यानका सारांश सुनाया। इस पर उनमें खूब गहरी बात चीत हुई जिसका एक अक्षर भी मैं समझ न सका और न भाव भङ्गीहीसे कुछ समझमें आया कि मेरी बातोंका कैसा प्रभाव उन पर पडा। थोडी देर चुप रहकर उसी व्यक्तिने जो बात करता था कहा—"आपकी बातें सुन कर हम लोग बहुत प्रसन्न हुए। अच्छा यह तो बताइये कि अगर आपही अमर होते तो किस प्रकार जीवन व्यतीत करते।"

मैंने जवाब दिया—"ऐसे सुन्दर विषयपर व्याख्यान देना विशेष कर मेरे लिये सहज है। मैं सदैव सोचा करता हूं कि अगर राजा होता तो यह करता, सेनापति होता तो यह करता और लाट होता तो यह करता। और इस अमर होनेके बारेमें तो सब सोचे बैठा हूं कि कैसे रहूंगा और क्या क्या करूंगा।

"अगर परमात्माकी दयासे मैं अमर होता और ज्योंही जीवन मृत्युका अन्तर मुझे मालूम होजाता त्योंही सबसे पहले चाहे जैसे होता धन बटोरनेकी चेष्टा करता। कम खर्च और सुन्दर बन्दोबस्तसे बहुत जल्द धनवान होजाता। बस कोई दो सौ वर्षमें कुबेर का भण्डार मेरे पास आजाता। लडकाईसे शिल्प और विज्ञना

पढनेमें मन लगाता वस विद्यामें भी साक्षात् वृहस्पति बन जाता। फिर जो कुछ वडे वडे कार्य्य या घटनाए होती सो सावधानीसे लिखता और निष्पक्ष भावसे प्रत्येक राजा और मन्त्रीके कार्य्योंको आलोचना करता तथा अपनी टिप्पणिया उनके साथ जोड देता। रीति, व्यवहार, भाषा, वेष, भोजन और खेलोंके रदल बदलको भी लिख कर दिखलाता। इस प्रकार मैं विद्या बुद्धिका जीवित खजाना होता और अपनी जातिका तो एक पूज्य देवता होजाता।

"साठ वर्षके बाद मैं कदापि व्याह न करता। खर्च कमती करता तो भी अतिथि सेवासे मुंह न मोडता। होनहार युवकोंको धर्म्मके लाभ तथा तत्व बताता। लेकिन मैं नये पुराने अमरोंमें से बारह चुन कर उन्हींके साथ रहता। जिनको रुपयेकी दरकार होती उन्हें रुपये और जिनको स्थान न होता उन्हें अपने गृहमें स्थान देता। किसी किसीको अपने साथ भी खिलाता। और तुममें से बहुत कमको सो भी दोचार पण्डितोंहीको अपने साथ बिठाता और जब वह मर जाते तो बिना दुःख किये उनके पुत्रोंको ग्रहण करता। जिस तरह वाटिकामें सालके साल फूल फूलते हैं और गिरते हैं पर उसका किसीको कुछ ख्याल भी नही होता। उसी प्रकार मैं भी अपने नश्वर साथियोंके लिये कुछ दुःख न करता।

"यह अमरगण और मैं अपने अपने विचारोंको आपसमें प्रगट करते—किस तरह भ्रष्टाचार जगतमें घुस आया इसकी आलोचना करते और सब किसीको डरा धमका समझा बुझाकर इस पापाचार को बन्द करनेकी चेष्टा करते। हमारे आदर्शका अनुकरण करने से मनुष्य जातिके स्वभावकी वह नीचता जिसकी निन्दा सब युगों से होती आई है दूर होजाती।

"राज्यों और सलतनतोंके न्यारे न्यारे उलट पोर तथा इह लोक और परलोकके परिवर्त्तनको देखता। पुराने नगरोंको उजडते, छोटे छोटे देहातोंको राजधानी बनते, बडी बडी मशहूर नदियों सूख कर सोते बनते, समुद्रको एक किनारा सुखाते और दूसरा

उद्योते, सभ्य देशोमे असभ्यता फैलते और असभ्योंको सभ्य बनते अपनी आखोसे देखता और देख कर प्रसन्न होता। न जाने और कितनी नई चीजें देखता।

"धूमकेतुके उदय अस्तको तथा सूर्य, चन्द्र और तारोकी गतियोके परिवर्त्तनको अवलोकन कर ज्योतिष विद्यामे बडी बडी अद्भुत वस्तुओका आविष्कार करता।"

और भी बहुतसी बातें मैने कही थीं। जब मै अपनी वक्तृता पूरी कर चुका तब उसी सज्जनने पुन. मेरे कथनका सार भाग सब को कह सुनाया। उन लोगोने अपनी भाषामें बहुत देर तक न जाने क्या क्या बाते की जो मेरी समझमें न आई। लोग मेरी ओर देख देख कर हसते जरूर थे। उसने फिर यो कहना शुरू किया—आप भूलते है। आपने इस विषयको भली भाति समझा नही। अमर केवल यही पैदा होतेहै और कही नही होते। जापान या बलनीबरबी राज्यके रहनेवालोको अमरका विश्वास नही है। वह लोग इन बातोको झूठ समझते है मै दोनों राज्योमे कुछ कुछ दिन रह कर व्हाके पण्डितोंसे बात चीत कर चुका हूँ। सब कोई अधिक दिन जीना चाहता है। मरना कोई पसन्द नहीं करता। जिनका एक पैर कब्रमें लटका चुका है वह भी दूसरेको बाहर खेंचनेके लिये पूरी कोशिश करते है। अत्यन्त बूढा भी एक दिन और जीनेकी इच्छा करता है। मरना सब कोई बुरा समझता है। मृत्युसे भागना सबका स्वाभाविक है। केवल हम लोग लगनगके रहनेवाले जीनेकी कुछ परवा नहीं करते क्योंकि हम लोग बराबर अमरोंको देखा करते है। इससे हम लोगोंको अधिक दिन जीनेकी इच्छा नही होती है।

"आपने जो कुछ कहा सो ठीक नहीहै और न युक्ति सङ्गतही है। सदा हट्टा कट्टा और जवान बना रहना कौन पसन्द नहीं करता? यह प्रश्न न था कि सब सुखोंके साथ कोई सदा जवान बना रहना चाहता है या नहीं। बल्कि यह था कि बुढापेके सब दुःखोंको झेलते हुए कोई सब दिन कैसे जी सकेगा। इन दुःखोंके साथ अमर

होना शायद कोईही पसन्द करे। लेकिन जापान और बलनीबरबी वाले अधिक दिन जीना चाहते हैं। बिना दुःख और क्लेश पाये कोई मरना नहीं चाहता है। आपही कहिये आप तो बहुत जगह घूम आये हैं। यह बात क्या झूठ है ?"

इस भूमिकाके बाद वह अमरोंके बारेमें यों कहने लगा—"अमर लोग तीस बरस तक हमारी तरह सब काम करते हैं पीछे सन्दे पड़ने लगते हैं। अस्सी वर्ष तक यही हालत रहती है। यहांके साधारण लोगोंकी परमायु अस्सी वर्षकी है। अमरगण जब अस्सी वर्षके होते हैं तो वह साधारण बुढ़ोंकी अपेक्षा अधिक सुस्त और बलहीन होजाते हैं। सदा जीना पड़ेगा इसी भयसे उनकी सुध बुध चली जाती है। हठ, चिड़चिड़ाहट, लालच, गुस्सा, पाखण्ड और बहुत बोलना बढ़ जाता है। प्रीति निबाहना, मोह ममता सब छूट जाती है। पोते पोतियोंके सिवा दूसरोंका प्यार करना भूल जाता है। ईर्षा, द्वेष और बुरी बासना बढ़ जाती है युवकों को विलास करते तथा बुढ़ोंको मरते देख कर उन्हें ईर्षा होती है। जवानीकी बातें याद कर बहुत मलाल उनके जीमें होता है। किसी को मरते देख कर वह बहुत रोते और कहते हैं हाय यह पुण्यधाम को विश्राम करने चले और हम यहां दुःख भोगनेको पड़े हैं। कब हमरा उद्धार होगा। हाय हम काहेको कभी उस लोकमें जायगे, इत्यादि। उनकी स्मरण शक्ति कम हो जाती है। जो कुछ लड़कपनमें पढ़ते हैं सो सब भूल जाते हैं। उनके आगे जो जो घटनाएं हो चुकी हैं वह सब भी उन्हें याद नहीं रहती इसलिये उनसे किसी घटना या विषयका पक्का भेद नहीं मिल सकताहै। कहां तक कहें अमरोंको दुसह दुःख सहना पड़ता है। उनके कष्टका ठिकाना नहीं। लेकिन जो अमर बुढ़ापेमें निरे बच्चेकी तरह हो जातेहैं, और जिनकी स्मरणशक्ति एकदम लुप्त होजातीहै उनको कुछ कम कष्ट होता है। उन पर सब कोई दया भी करता है। क्योंकि ... ने जो दोष होते हैं सो इनमें नहीं होते।

"अगर किसी अमर पुरुषका व्याह अमर स्त्रीसे होगया तो राज्यके नियमसे दो में से किसीकी उमर अस्सी सालकी होने पर वह सम्बन्ध तोड दिया जाता है। क्योंकि नियम बनानेवालोंने विचारा है कि जो लोग बिना अपराधके यहां मर्त्यलोकमें सदा वास करनेका दण्ड पाचुके हैं उनके ऊपर बुढापेमें स्त्रियोंके भरण पोषणका भार डालना उनके दण्डको दूना करना है।

"अस्सी वर्षके उपरान्त अमर लोग नियमानुसार मृतवत् समझे जाते हैं और उनके पुत्र सब सम्पत्तियोंके अधिकारी होजाते हैं। उनके खाने पीनेके लिये कुछ अंश अलग निकाल दिया जाता है। और गरीबोंको अनाथालयसे खानेको मिलता है। फिर अमरोंको किसी प्रकारका भारी काम नहीं मिलता और न उनका कोई विश्वास करता है। वह जमीन जायदाद न खरीद सकते और न बेच सकते हैं। दिवानी या फौजदारीके मुकद्दमेमें गवाही भी नहीं दे सकते हैं।

"नब्बे वर्षमें उनके दांत गिर पडते, और बाल उड जाते हैं। फिर उनको किसी प्रकारका स्वाद नही मिलता। भूख प्यास बन्द होजाती है। जो कुछ मिलता है उसे खा लेते हैं लेकिन किसी वस्तु पर रुचि नहीं होती। जो सब रोग पहले हो चुकाते हैं वह न घटते हैं न बढते हैं ज्योंके त्यों बने रहते हैं। स्मरण शक्ति एक दम चौपट होजाती है। चीज वस्तुकी कौन पूछे अपने बाल बच्चोंके नाम तक भूल जाते हैं। इसी हेतु वह पोथियां भी नहीं पढ सकते हैं।

"यहांकी भाषा भी सदा बदला करती है। एक शताब्दीका अमर दूसरी शताब्दीकी भाषा नहीं समझता है। दोसौ वर्षके बाद अमर लोग अपने पडोसीसे भी बात चीत नहीं कर सकते। स्वदेश में रह कर भी वह सब विदेशीकी तरह होजाते हैं।"

जहां तक मुझे याद है अमरोंकी यही एक कहानी मैंने सुनी थी। मैंने नये पुराने पांच छः अमरोंके दर्शन भी किये थे। सबसे नया अमर दोसौ वर्षसे अधिकका न था। कई मित्रोंके कहने पर

भी कि मैं बडा भारी भ्रमणकारी हूं, सारे जगत्को छान आया हूं, अमरोंने मुझसे कुछ न पूछा और न कान फट फटाए। इतना जरूर कहा—"कुछ निशानी देते जाइये।" अर्थात् कुछ भिक्षा दीजिये। वहां भीख मांगना आईनके विरुद्ध है। इन सबको अनाथालयमें भोजन मिलता है पर उससे पेट नहीं भरता इसीलिये बेचारे अमर लोग आईनके भयसे इस घुमावसे भीख मांगते हैं।

सब आदमी अमरोंसे घृणा करते हैं। अमरका उत्पन्न होना लोग असङ्गल समझते हैं। जब कोई अमर पैदा होता है तो उसका सब विवरण रजिष्टरमें लिख लिया जाता है। उसी रजिष्टरसे अमरोंकी उमरका पता लगता है। हजार वर्षसे अधिकका रजिष्टर रक्खा नहीं जाता पुराना होनेसे सड गल जाता है। या विद्रोहादि होनेसे नष्ट भ्रष्ट कर दिया जाता है। अमरोंकी उमरका पता लगानेका मामूली कायदा यह है। उनसे पूछा जाता है कि किस राजा या बडे आदमीका नाम तुम्हें याद है। नाम बताने पर इतिहास देखनेसे उमर मालूम हो जाती है। अस्सी वर्षके हो चुकने पर जिस राजाका राज्य आरम्भ होता है उसका नाम अमर लोग नहीं बता सकते हैं।

अमरोंके चेहरे बडे भयङ्कर होते है। मैंने ऐसे भयानक चेहरे कभी नहीं देखे। औरतोंकी तो कुछ मत पूछो उनकी सूरतें और भी डरावनी होजाती है। अवस्थाके सङ्ग सङ्ग आकृति भी बदलती जाती है। जिसकी जितनी अवस्था अधिक होगी उसकी आकृति भी उतनीही भयङ्कर होगी। छः अमरोंको देखतेही मैंने पहचान लिया था कि इनमें सबसे बडा कौन है। यद्यपि एक या दो सौ सालसे अधिकका उनमें कोई न था॥

पाठकगण! अब निश्चय जानलें कि जो कुछ मैंने देखा सुना उससे अमर होनेकी इच्छा एक दम दब जाती रही। अपने कहे पर मैं खूब पछताया और लज्जित हुआ। इस जीनेसे मरनाही मैंने समझा। राजा भी मेरी इन सब बातोंको पीछे सुन कर

खूब हसा और बोला—"अपने देशवालोंको मृत्युसे ढीठ करनेके लिये एक जोडा अमर लेजाइये न।" यह आईनके विरुद्ध था नही तो चाहे जो खर्च होता मैं जरूर एक जोडा अमर विलायत भेज देता पर क्या करता लाचारी थी।

जो हो अमर लोगोंके बारेमें जो सब नियम थे सो खूब सोच समझके बनाये गये थे। मैं उन्हे पसन्द करता हूं। दूसरे देशवाले भी ऐसे ऐसे मौके पर ऐसाही करते है। यदि यह नियम न होते तो अमर लोग बुढापेमें तृष्णाके मारे सारी जातिके कर्त्ता धर्त्ता तथा राज पाटके भी अधिकारी बन बैठते क्योंकि बुढापेमें तृष्णा अधिक बढ जाती है। पर पीछे अयोग्यताके कारण सारे देशको बण्टा ढार कर देते।

एकादश परिच्छेद।

मैं समझता हूं अमरोंके वृत्तान्तसे पाठकोंका मनोरञ्जन हुआ होगा क्योंकि यह मामूली ढङ्गसे कुछ निरालाहै। अबतक यात्राकी जितनी पोथियां हाथ लगीं किसीमें ऐसी बात पढी है सो याद नहीं पडती। अगर मैं भूलता हूं तो कहना यह है कि अगर एकही देशका वर्णन कई यात्री करते है तो वह प्राय' एकसा मालूम होता है। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि पिछले यात्रीने पहले की चोरीकी है।

लगनग और जापानवालोंमें खूब तिजारत होती है। सम्भव है जापानी लेखकोंने अपनी पोथियोंमें अमरोका कुछ वृत्तान्त लिखा हो। एक तो मैं जापानी भाषा नहीं जानता दूसरे मैं वहा बहुत कम ठहरा इससे इस बातकी कुछ छानबीन न कर सका। लेकिन आशा है कि डच लोग जरूर इसकी टोह लगावेंगे।

लगनग नरेशने वहा रहनेके लिये बहुत आग्रह किया पर मैं राजी नही हुआ क्योंकि मन बालबच्चो पर लगा हुआ था। पीछे राजाने भी अपनी अनुमति दी और जापानेश्वरके नामकी चिट्ठी मुहर करके मेरे हवालेकी। चारसौ चव्वालीस बड़ी बडी अशर्फियां

तथा एक लाल डोरा बिदाईमें दिया। विलायत आकर वह डोरा ग्यारहसौ पौण्डमें बेचा था।

ता० ६ मई सन् १७०८ ईस्वीको मैं राजा तथा अन्यान्य मित्रों से बिदा हुआ। राजाने हिफाजतके लिये अपने सिपाहियोंको साथ कर दिया था जो समुद्र तक पहुंचा गये। छ दिनके बाद जहाज मिला। उसी पर मैं सवार हुआ। पन्द्रहवें दिन जापान पहुँचा। कष्टम हाउसवालोंको महाराजके नामकी चिट्ठी दिखाई। यह लोग लगनम नरेशकी मुहरको खूब अच्छी तरह पहचानते थे। यह मुहर हथेली जैसी चौड़ी थी और उसमें एक राजाकी तसवीर खुदी हुई थी जो एक लंगड़े भिखारीको जमीनसे उठा रहा था। चिट्ठी देख कर वहांके मजिष्ट्रेटने मेरी बड़ी खातिरकी। तुरत गाडी भाडा करके अपने आदमियोंके साथ मुझे येडो भेज दिया। मुझे माहौला भाडा भी न देना पड़ा। जापानकी राजधानीका नाम येडो है। वहां पहुँच कर महाराजको चिट्ठी दी। बड़े ठाटसे चिट्ठी खोली और पढी गई। फिर दुभाषियेके द्वारा मैंने अपनी रामकहानी सुनाई और कहा कि अब यहांसे अपने देश जाया चाहता हूं। महाराजसे मैंने यह भी निवेदन किया कि मैं भाग्य के फेरसे यहां आपड़ा हूं कुछ सौदागरी करने नहीं आया इसलिये जैसे और युरोपीय लोगोंसे क्रूसविद्ध ईसामसीहकी मूर्त्ति कुचलवाई जाती है मुझसे न कुचलवाई जाय। मैं श्रीमान्का बड़ा उपकार मानूंगा। इतना सुन कर महाराजको मेरे डच होने पर सन्देह हुआ क्योंकि मैंने अपनेको डचही बताया था। इसका कारण आगे लिख आया हूं। महाराज बोले—"आश्चर्य है कि आज तुम यह बात कहते हो। अब तक तुम्हारे देशके किसीने यह बात नहीं कही थी। पहले पहल तुम्हारेही मुंहसे यह बात सुननेमें आई है। सच मुच तुम्हारे हौलेण्डर होनेमें मुझे सन्देह है। तुम जरूर क्रिस्तान हो। खैर, तुम मेरे मित्रकी चिट्ठी लाये हो इससे तुम्हें करता हूं। पर इसमें एक बालाकी करनी पड़ेगी नहीं तो

तुम्हारी जान नहीं बच सकती। अगर हौलेण्डर लोग सुन पावेंगे तो जरूर तुम्हें मार डालेंगे। इसलिये तुम चुपचाप चले जाओ। मेरे आदमी तुमसे कुछ न कहेंगे मानो वह भूल गये हैं।" मैंने इस ह्रपाके लिये महाराजको अनेक धन्यवाद दिया। उस समय कुछ सेना नङ्गासककी जानेवाली थी महाराजने सेनापतिको समझा बुझाके प्रतिमा कुचलनेकी बात गुप्त रखनेको कह दिया। मैं सेना के साथ जापानसे रवाना हुआ।

ता० ९ वीं जून १७०९ ईस्वीको मैं नङ्गासक पहुंचा। रास्तेमें बड़ी तकलीफ हुई। वहां तुरत अम्बोयना नामक एक जहाज मिल गया। वह हालेण्डकी राजधानी अमष्टरडामको जाताथा। इस पर मल्लाह सब हालेण्डरही थे। मैं हालेण्ड-केलिडन शहरमें पहले बहुत दिन रह चुका हूं। वहां मैं पढता था इससे वहांकी बोली मैं अच्छी तरह बोल सकता था। कहांसे मैं आता हूं सो सो जहाजियोंको मालूम होगया। अब वह सब मेरा हाल अह-वाल पूछने लगे। मैंने बहुतही मुख्तसरमें अपना हाल कह सुनाया पर बहुतसी बातें छिपा रखी थी। अपनेको मैंने हालेण्डवासीही बताया था। हालेण्डके बहुतसे आदमियोंके नाम मैं जानता था। इससे मा बापके नाम भी गढ लिये। कहा वह ग्वेलडरलेण्डके इलाकेमें रहते थे उन्हें कोई नहीं जानता है। कप्तान जो भाड़ा मांगता सोई मैं देता पर वह जान गया कि मै डाक्टर हूँ इससे उसने मुझसे आधाही भाड़ा लिया पर शर्त यह हुई कि रास्तेमें मैं डाक्टरी करता चलू। जहाज पर चढनेके पहले कई जहाजी मुझसे आकर लगे पूछने कि आपने ईसामसीहकी प्रतिमाको कुचला या नहीं। हां सब तरहसे महाराजका मन भर दिया, कह कर मै उनकी बातोंको उड़ाने लगा पर तिजारती जहाजके एक दुष्ट मल्लाहने मेरी तरफ इशारा करके एक अफसरसे कह दिया कि इसने प्रतिमाको नहीं कुचला है। इस पर उस सेनापतिने जो मुझे जहाज पर चढाने आया था इस दुष्टको खूबही पीटा। फिर मुझसे किसीने कुछ नहीं पूछा।

रास्तेमें लिखनेके लायक कोई बात नहीं हुई। उत्तमाशा अन्तरीप तक जहाज मजेमें चला आया। वायु बराबर अनुकूल मिलती गई। वहां केवल स्वच्छ जल लेनेके वास्ते जहाज ठहर गया था। १० वीं अप्रेल १७१० ईस्वीको हम लोग कुशल पूर्वक अमष्टरडाम पहुंच गये। सिर्फ तीन आदमी बीमार होकर मरगये और एक समुद्रमें गिर पड़ा था। अमष्टरडामसे बहुत जल्द एक छोटे जहाज पर मैं इङ्गलेण्डको रवाना हुआ।

१६ वीं अप्रेलको डाउन्स पहुंचा। दूसरे दिन जहाजसे उतरा पूरे पांच वर्ष छ: महीनेके बाद पुन: जन्मभूमिका दर्शन प्राप्त हुआ। मैं सीधे रेडरिफकी तरफ चल पड़ा। उसी दिन दो बजे घर जा पहुँचा। घरमें सबको राजी खुशी पाया। बड़ा आनन्द हुआ।

इति तृतीय भाग समाप्त।



विचित्र-विचरण।

चतुर्थ भाग।

हिनहिन देशकी यात्रा।

प्रथम परिच्छेद।

मैं लडके वालोंके साथ लग भग पांच महीने घरमें रहा। अगर मुझे सुखका ज्ञान होता तो मैं जरूर कहता कि यह मेरे पांच महीने अत्यन्त सुखसे कटे। इतनेमें—"एडवेनचर" नामक एक बडे तिजारती जहाजकी कप्तानी मुझे मिल गई। फिर किससे घरमें रहा जाता? प्यारोंका पाव भारी था पर मैंने इसकी भी कुछ परवा न की। घर बार छोड मैं चटपट निकल खडा हुआ। डाक्टरीसे जी ऊब गया था इसीसे अबके कप्तानी स्वीकारकी इन। कामको मैं अच्छी तरह जानता था और यह नौकरी भी अच्छी थी। डाक्टरीके काम पर एक नवयुवक रक्खा गया। ता. ७ वीं सितम्बर १७१० ईस्वीको पोर्टस्माउथसे हम लोगोंने कूच किया। १४ वीं को ब्रिष्टल जहाजके कप्तान पोकोपसे टेनेरिफमें भेंट हुई जो वडस काटनेके लिये कम्पीचोकी खाडीको जारहा था। १६ वीं को एक तूफानने हम दोनोंको अलग कर दिया। लौटने पर मुझे मालूम हुआ कि उसका जहाज डूब गया और एक छोकडेके सिवा और कोई न बचा। वह बिचारा कप्तान बडा सच्चा और अपने फनका पूरा उस्ताद मगर जरा जिद्दी था। इसी जिदने उसे चौपट किया। मेरा कहना मान लेता तो वह भी मेरी तरह लौट कर अपने लडके वालोंसे मिलता।

मेरे साथके कई आदमी ज्वरके प्रकोपसे पञ्चत्वको प्राप्त हुए। आदमीके विना काम चलना कठिन था अतएव उन व्यापारियोंकी आज्ञासे जिन्होंने मुझे वहाल किया था वारवेडोज और लीवार्ड द्वीपोंमें जहाज रोककर कुछ नये आदमी भर्ती किये। पर पीछे इसके लिये मुझे पछताना पड़ा क्योंकि उनमें प्रायः डाकूही थे। हम लोग जहाज पर पचास आदमी थे। मैंने प्रशान्त महासागर में अमेरिकावालोंसे वाणिज्य करने तथा जो कुछ बन जाय सो आविष्कार करनेका मनसूबा बांधा था। इन दुष्टोंने जो नये भर्ती हुए थे मेरे साथियोंको मिला लिया और मुझे गिरफ्तार करके जहाजको दखल करनेका विचार किया। षड्यन्त्र करके एक दिन सवेरे ये लोग मेरे कमरेमें घुस आये और मेरी मुश्कें बांध कर बोले—"अगर जरा भी हिलेगा तो समुद्रमें डबो देंगे। खबरदार जो मुँह खोला।" मैंने शपथ करके कहा—"मैं कुछ न करूंगा जो तुम कहोगे वही करूंगा। मैं तुम्हारा कैदी हूं।" इतना सुन कर उन्होंने मुश्कें खोलदीं। केवल एक पैर जञ्जीरसे बांध दिया। पहरे पर एक सन्तरी बैठा। अगर मैं बन्धन खोलनेकी जरा भी कोशिश करता तो वह जरूर गोली मार देता क्योंकि उसे यही हुक्म था। मेरे खाने पीनेके लिये वहीं पहुंच जाता था। वह लोग जहाजके कर्त्ता धर्ता बन बैठे। उन लोगोंका इरादा स्पेनके जहाजों को लूटनेका था पर यह काम बहुत आदमियोंके विना हो नहीं सकता था। इसलिये उन्होंने जहाजके मालको पहले बेचनेका फिर मेडेगास्कर जाकर कुछ डाकू बटोरनेका पक्का विचार किया। मेरे कैद होजानेके बाद भी जहाजके कई आदमी मरे थे। कई हफ्ते तक जहाज चलता रहा। अमेरिकावालोंसे उन लोगोंने व्यापार भी किया। मैं अपने कमरेमें बन्द था। जहाज किधरसे कहां जाता था सो मुझे कुछ खबर न थी। मैं बराबर मृत्युके ध्यान में निमग्न था।

९ वीं मई १७११ ई० को जेम्सवेल्श मेरे पास आया और

बोला—"कप्तानने तुमको किनारे पर छोड देनेके लिये हुक्म दिया है।" मैंने उससे बहुत कहा सुना पर सब व्यर्थ हुआ। जहाजका कप्तान कौन था सो भी उसने नही बताया। जबरदस्ती सबने मुझे एक किश्ती पर बिठा दिया। अच्छीसे अच्छी पोशाक मुझे पहर लेने दी जो बिलकुल नई थी। कटारके सिवा और कोई हथियार मेरे साथ न छोडा। इतनी कृपा और कीथी कि मेरी जङ्गाझोरी नहीं ली। इसीसे पाकिटमें कुछ रुपये और कुछ जरूरी चीजें रह गई थीं। करीब तीन मील दूर लेजाकर मुझे किनारे पर छोड दिया। मैंने पूछा कि इस देशका क्या नाम है पर किसी ने कुछ न बताया। कहा—"कप्तानके हुक्मसे हम लोग यहां छोड देते है और कुछ नही जानते। जल्दी भागो नहीं तो ज्वार आती है।" इतना कह वह सबके सब चलते बने।

मैं कातर होकर आगे बढने लगा। जाते जाते तीर पर जा पहुचा। वहां सुस्तानेके लिये बैठ गया और अब क्या करना चाहिये सो सोचने लगा। थोडी देरके बाद फिर उठ कर चला। जहाजी लोग जब सफर करते है तो कडे, काचकी अँगूठियां खिलौने वगैरा साथमें ले लेते है। मैंने भी कुछ लेलिये थे। जो कोई जङ्गली असभ्य मिलेगा उसे यह सब देकर अपने जीवनकी रक्षा करूंगा। यही सब सोचता विचारता मैं आगे बढा जाता था। वृक्षोंकी लम्बी पन्तियोंसे सारी भूमि बटी हुई थी। यह किसीके लगाये न थे स्वभावत: उत्पन्न थे। घासकी बहुतायत थी। जईके भी कई खेत दिखाई पडे। मैं चौकन्ना हो इधर उधर देखता चला जाता था। मनमें यह डर था कि कहीं पीछे या अगल बगलसे कोई हमला न करे या अचानक कोई तीरही न चला बैठे। इतनेमें एक सडक दिखाई पडी जिस पर मनुष्योंके, पशुओंके विशेष कर घोडोंके पद चिन्ह थे। आखिर मैदानमें कई जानवर देखे—दो चार पेड पर बैठे हुए थे। उनकी सूरतें अजीब और भद्दी थीं। देख कर जी घबरा उठा। उन्हें भली भांति देखनेके इरादेसे मैं एक

गुरसटसे लेट रहा। उनमेसे कुछ जानवर जरा नजदीक आपहुंचे। अब मैंने उन्हे अच्छी तरह देख लिया। उनके सिरोमें तथा छातियो मे घने घूघरवाले बाल थे। दाढिया बकरेकी सी थी। पीठके नीचे तथा पैरोमें आगेकी तरफ लम्बे लम्बे बाल लटकते थे मगर बाकी शरीर साफ था। रङ्ग हलका पीला था। दुम नही थी पर पीछे बाल जरूर थे। वह अकसर पिछले पैरोसे खडे होते थे। पञ्जो के नख लंबे, तेज और टेढे थे इसीसे वह गिलहरियोंकी तरह ऊंचे पेडो पर चढ सकते थे। वह बडी फुर्तीसे उछलते, कूदते और फांदते थे। स्त्रियां पुरुषोंकी तरह बडी न थी। सिर पर लंबे पतले बाल थे पर मुंह सफाचट थे। आगे पीछे तथा तमाम देहमें छोटे छोटे बाल थे। स्तन पैर तक लटकते थे और चलनेमे भूमिको चूमते थे। इनके बाल भूरे, लाल, काले और पीले थे। सारांश यह कि ऐसे कुरूप जानवर मैंने और कभी नहीं देखे। न जाने क्यों उन्हें देख कर बडी घृणा होती थी। जितना देखा उतनेही मे जी घबरा गया। उठ कर फिर सडकसे जाने लगा। बहुत दूर नहीं गया थी कि इन्हीं जानवरोंमेंसे एकको देखा जो बीच रास्तेमें खडा था। वह मेरी ओर बढने लगा। वह मुझे ऐसे ढङ्ग से देखता था मानो पहले कभी देखा नहीं। उसका मुंह बनाना भी विचित्रही था। जरा और पास आकर उसने पञ्जोको उठाया। क्यो उठाया सो राम जाने। लेकिन मैंने कटार निकाल कर उलटी तरफसे एक भरपूर हाथ जमाया। सीधी तरफसे मारने की हिम्मत न पडी। कही कुछ होजाय तो गाववाले गुस्से होगे यही समझ कर मैंने उलटी ओरसे मारा था। चोट लगतेही वह पीछे हटा और बडे जोरसे चिल्लाया। उसकी चिल्लाहट सुनकर बीसियो जानवर गुर्राते और मुंह बनाते दौड आए। मै दौड कर एक पेडसे पीठ लगा कर खडा होगया और कटार घुमा कर उन सबको भगाता रहा। कुछ दुष्ट पीछेकी तरफसे डालियोंके द्वारे पेड पर चढ गये और वहासे मेरे सिर पर मल मूत्र त्यागने

लगी। पेडके नीचे आश्रय लेकर मैं बहुत बचा लेकिन तो भी कपडे सब खराब होगये।

इतनेमें अचानक सबके सब भाग गये। मुझे बडा अचरज हुआ कि वह सब इतनी जल्दी क्यों भागे। मैं फिर सडक पर आया। बाईं ओर एक घोडेको धीरे धीरे घूमते देखा। अब मैं समझ गया कि वह सब इसी घोडेको देख कर भागे थे। घोडा जब पास आया तो मुझे देख कर जरा ठठक गया। फिर सम्हल कर ताज्जुबसे मेरी तरफ निहारने लगा। उसने चारों ओर घूम घूम कर मेरे हाथ पैरोंको देखा। मैं आगे बढ जाता लेकिन वह रास्ता रोके बीचमें खडा था कुछ देर तक हम दोनों परस्पर देखा देखी करते रहे। आखिर मैंने साहस करके सवारीको तरह ठोंकने और पुचकारनेके लिये उसकी गर्दनकी तरफ हाथ बढाया। किन्तु घोड को मेरा पुचकारना नहीं भाया। उसने गर्दन हिला भौंह चढा और दाहिना पैर धीरे धीरे उठा कर मेरा हाथ हटा दिया। फिर दो चार बार हिनहिनाया। उसका हिनहिनाना भी अजब था। मालूम हुआ जैसे वह अपनी भाषामें आपही आप कुछ बोल रहाहै।

जब मैं और वह इस प्रकार खडे थे एक घोडा और आपहुँचा। दोनों घोडोंने कायदेसे खुर मिलाए। बारीबारीसे हिन हिनाये। स्वर ऊंचा नीचा तथा उच्चारण स्पष्ट था। कुछ दूर हट कर दोनो घोडे आपसमें कुछ सलाहसी करने लगे। कोई भारी विषय विचारनेके समय जैसे लोग टहलते हैं उसी प्रकार वह दोनों भी टहलते थे कि कहीं मैं भाग न जाऊं। अज्ञान पशुओंमें ऐसी ऐसी बातें देख कर मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। मैंने विचारा कि जब इन पशुओंमें इतनी बुद्धि है तो यहाके मनुष्यमें न जाने कितनी बुद्धि होगी? वह विश्व भरके मनुष्योसे अवश्य बुद्धिमान होंगे। यह विचार कर मुझे बडा आनन्द हुआ। मैंने दोनों घोडोको सलाह करते हुए छोड कर वहाके निवासियोंसे चटपट मिलनेका सङ्कल्प मनमें किया। ज्योंही मैं चला पहले घोड़ेने जो अबलकथा देखलिया।

वह इतने जोर और इस ढङ्गसे हिनहिना उठा कि से जनाका तहा रुक गया और उसके पास चला गया। लेकिन अपने डरको जहा तक बना छिपाया। इस आफतसे अब कैसे पिण्ड छूटेगा इमीका मुझे भय तथा चिन्ता हुई थी। पाठक महाशय समझ सकते है कि इस हालतमें रहना मुझे बहुत पसन्द न था।

दोनो घोडे मेरे निकट आए और बडे भावसे मेरे हाथ और मुँहको देखने लगे। अबलक घोडेने अपने दाये अगले सुमसे मेरी टोपीको खूब रगडा। इतना रगडा कि वह अपनी जगहसे हिल गई। मैने उसको उतार कर फिर सिर पर दे लिया। इस पर उसने और उसके साथीने जो समन्द रङ्गका था बडा आश्चर्य माना। पिछले सुमसे मेरे कोटके दामनको छुआ उसे देहसे अलग लट-कता देख उनके आश्चर्यकी मात्रा और भी बढ गई। दायें हाथ को सुमसे ठोका मानो उसके रङ्ग और कोमलताकी वह प्रशसा करता था। लेकिन उसने मेरे हाथको ऐसे जोरसे दबाया कि मै चिल्ला उठा। फिर तो दोनो आहिस्ते आहिस्ते मुझे छूने लगे। जूते और मोजे देख कर शायद उन्हें बहुत ताज्जुब हुआ था वह दोनो उन्हें प्राय छूते और आपसमें हिनहिनाते थे। उस समय उनकी भाव भङ्गी ठीक वैसीही होती थी जैसी विज्ञानवाजो की किसी नई बातके हल करनेमे होती है।

घोडोंकी बुद्धिमानी तथा मनुष्यके सदृश आचार व्यवहार देख कर मैने विचारा कि यह जरूर कोई जादूगर है। किसी कार्य्य विशेषके कारण रूप बदल कर यहा विचरण करते है और विदेशी समझ कर मुझसे खेल करते है अथवा यहाके आदमियोसे मेरी रूप रङ्ग पोशाक नही मिलती है इससे यह विस्मित है। पहलीही बातको युक्ति युक्त समझ कर घोडोंसे मै यो कहने लगा—"सज्जनो। अगर आप जादूगर है जैसा कि मै समझता हू तो आप अवश्य सब भाषायें समझते होगे। इस लिये मैं साहस करके निवेदन करता हू कि मै एक दरिद्र दुखी अग्रेज हू। भाग्यके फेरसे यहा



आपड़ा हूं। कृपा कर आप दोनों में से कोई एक सज्जन अपनी पीठ पर बिठा कर मुझे किसी गांवमें पहुंचा दें। मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगा और यह काडा और छुरी (पाकेटसे निकाल कर) आपकी भेंट करूंगा।" मैं जब बोलता था तो दोनों जानवर बड़े ध्यानसे खड़े खड़े सुनते थे। मेरी बात पूरी होजाने पर वह दोनों पुन. हिनहिनाने लगे। उनकी भाषा मनका भाव अच्छी तरह प्रगट करती थी। चीनी भाषाकी अपेक्षा इन घोड़ोंके शब्दोंकी वर्णमाला सहजमें बन सकती है।

उनके मुंहसे "याहू" निकलता था। इसका अर्थ मैं क्या मेरे पुरखे भी न जानते होंगे। परन्तु इस शब्दको सीखनेके वास्ते मैं चेष्टा करने लगा। ज्योंही घोड़े चुप हुए मैं जोरसे—"याहू याहू" कहके चिल्ला उठा। जहां तक बना उनके हिनहिनानेकी भी नकल देने को। इस पर तो वह दोनो और भी चकराए। अबलकने दो बार—"याहू याहू" कहा मानो वह उसका ठीक उच्चारण बतलाता था। मैं भी उसके साथ साथ बोलता गया। हर बार कुछ न कुछ उन्नति करता जाताथा। परन्तु शुद्ध उच्चारण भला तुरतही कैसे होता? समन्दने तब दूसरा शब्द सिखानेकी चेष्टा की। लेकिन इसका उच्चारण करना जरा टेढ़ी खीर था—"हौय्हन्हम्स।" पाठकों के सुबीतेके लिये इसी शब्दको—"हिन हिन" बना डाला है। "याहू" की तरह अनायास इसमें सफलता प्राप्त न कर सका। पीछे मेरी योग्यता देख उन्हें बड़ा अचरज हुआ।

कुछ देर तक और दोनोंमें बात चीत होती रही जो मैं समझता हूं मेरेही बारेमें थी। फिर दोनों घोड़े थुम मिलाकर बिदा हुए। अबलकने आगे आगे चलनेके लिये मुझे इशारा किया। जब तक और कोई राह बतानेवाला न मिल जाय तब तक उसीका कहना मानना मैंने उत्तम समझा। जब मैं धीरे धीरे चलता तो वह—"हुन हुन" करता। मैंने उसका अभिप्राय समझ कर उस

को सङ्केतसे यथा शक्ति समझानेकी चेष्टाकी कि मैं थक गया हूं तेज़ीसे नहीं चल सकता। इस पर वह ठहर जाता और मैं उतनी देर विश्राम कर लेता था।

द्वितीय परिच्छेद।

करीब तीन मील चलनेके बाद हम एक बड़े मकानके पास पहुंचे जो लकड़ीके खम्भों पर बना हुआ था और जिसका छप्पर नीचा तथा फुसका था। अब मेरा चित्त ज़रा ठिकाने हुआ। जेब से कुछ खिलौने निकाले। सोचा घरवालेको देकर मित्रता करूंगा। यात्री लोग अक्सर इसी प्रकार खिलौने देकर अमेरिका आदिके असभ्य जङ्गलियोंसे मेल मिलाप बढ़ाते हैं। घोड़ेने मुझको पहले भीतर घुसनेके लिये सङ्केतसे कहा। मैं भीतर घुसा। यह एक बड़ा कमरा था। ज़मीन कच्ची और चिकनी थी। एक ओर दूर तक नांदें गड़ी हुई थीं। तीन बछेरे और दो घोड़ियां वहां दिखाई पड़ीं जो खाती नहीं थी। किसी किसीको पीछे बल बैठे देख कर आश्चर्य्य हुआ। सबसे अधिक आश्चर्य्य तो हुआ उनको गृहस्थीका काम काज करते देख कर। यह मामूली दरजेके मवेशी थे। यह चरित्र देख कर मेरा पहला भाव दृढ़ होगया कि जो मनुष्य अज्ञान पशुओं को इतना सभ्य बना सकते हैं वह न जाने कैसे बुद्धिमान होंगे। वह अवश्य बुद्धिमें सबसे आगे होंगे। पीछे अबलक भी तुरत आ पहुंचा। शायद कोई कुछ छेड़ छाड़ करता परन्तु उसके आजाने से किसीने कुछ नहीं कहा। घरका मालिक जैसे हुकूमत करता है वैसेही वह कई बार हिनहिनाया। उन सबने भी अदबके साथ हिनहिना कर जवाब दिया।

इस कमरेके बाद तीन बड़े बड़े कमरे और थे जिनमें आमने सामने तीन दरवाजे थे। हम दूसरेसे होकर तीसरेकी तरफ चले। अबके घोड़ारामही पहले भीतर घुसे और मुझे ठहरनेके लिये कर गये। मैं दूसरे कमरेमें खड़ा रहा। इतनी देरमें मैंने

घरके मालिक मलकिनोंके वास्ते सौगात ठीक करली। दो छुरियां, झूठे मोतियोंके तीन कडे, एक छोटासा आईना और एक माला जेबसे बाहर निकाली। घोडेने दो चार बार छिनछिनाके कुछ कहा। मैं बदलेमें किसी मनुष्यके शब्दकी अपेक्षा करने लगा। लेकिन सिवाय छिनछिनाहटके और कोई शब्द सुनाई न पडा लेकिन पहलीसे यह कुछ तीक्ष्ण अवश्य थी। मैं सोचने लगा कि यह किसी बडे रईसका मकान है इसीसे भीतर जाने देनेके लिये इतना बन्दोबस्त और इतनी तैयारिया है। पर इस बडे आदमीके सब काम घोडोंहीसे चलते हैं सो मेरे ध्यानमें न आया। मैंने समझा आफत और दुःख झेलते झेलते मै पागल होगया हूं। मै अपने को सम्हाल कर चारो ओर देखने लगा, यह भी पहलेकी भांति मगर सुन्दरताके साथ सुसज्जित था। मैंने बार बार आखें मली पर वही सब चीजें देखनेमे आई। देहमें चुटकिया काटी तो भी अपनेको जागताही पाया। तब मैंने निश्चय करलिया कि यह सब जादू या इन्द्रजालके खेलके सिवा और कुछ नही है। अधिक विचारनेका अवसर भी न मिला क्योंकि अश्व प्रभु द्वार पर खडे थे और तीसरे घरमें जानेके लिये बुला रहे थे। मैं आपके साथ भीतर गया। वहा एक साफ सुथरी चटाई पर एक परम कमनीय घोडी को दो बच्चोंके साथ जिनमें एक बछेरा और एक बछेरी थी पीछें के सहारे बैठे देखा।

मेरे पहुंचतेही घोडी उठी और मेरे पास आई। मेरे हाथ मुंहको भली भाति देखा कर नाक भौंह चढाली और दो चार बार—"याहू" शब्दका उच्चारण किया। यद्यपि मैंने पहले पहल इसी शब्दको सीखा था तथापि उसका कुछ अर्थ नहीं जानता था। पीछे जान गया मगर जान कर जन्म भर दुःख हुआ। घोडेने फिर सिर हिलाया और—"हुन हुन" शब्द किया। मैं समझ गया कि फिर कही चलनेको कहता है क्योंकि सडक पर भी एक बार इसने ऐसाही किया था। अबकी मुझको यह एक दूसरे घरमें ले

गया जो यहांसे कुछ दूर था। वहां पहुंच कर मैंने उन्हीं तीन घृणित जीवोंको जो समुद्र तटमें चलनेके बादही रास्तेमें मिले थे कुत्तों और गदहोंका मास खाते हुए देखा। रस्सियोंके द्वारा यह मजबूतीसे बंधे हुए थे। अगले दोनों पञ्जोंसे पकडते और दांतोंसे काट कर खाते थे।

अब प्रभुने एक बछेरेसे जिसका रङ्ग लाल था तीनों जानवरों मेंसे बडेको खोल कर आगनमें लेचलनेको कहा। मैं और वह जानवर पास पास खडे किये गये। मालिक नौकर दोनोंने मिल कर हमारे चेहरोंको खूब मिला कर देखा। उनके मुंहसे बराबर— "याहू याहू" ही निकलता था। इस जघन्य जानवरकी सूरत ठीक आदमीसी देख कर मेरे आश्चर्य्य और भयको कुछ सीमा न रही। चेहरा सचमुच चिपटा और चौडा था, नाक बैठी हुई ओठ बडे मुंह लम्बा था। सब जङ्गली जातियोंसे तो इतना भेद होता ही है क्योंकि यह लोग अपने अपने बच्चोंको जमीनमें पट सोने देते हैं या पीठ पर लादे फिरते हैं। बच्चे भी अपने मुंहको माकी पीठसे रगडा करते हैं इसीसे इनकी सूरत शकल बिगड जाती है। मेरे हाथों और उसके अगले दोनों पैरोंसे केवल इतनाही भेद था कि उसके नख बडे बडे थे, हथेली खुरदरी और पिङ्गल वर्ण थी तथा पीछे बाल थे। पैरोंमें भी बस इतनाही भेद था। मैं तो समझ गया परन्तु मेरे जूते और मोजेके कारण घोडे इस भेदको न समझ सके। देहमें भी रङ्ग और बालहीका अन्तर था जैसा कि मैं लिख चुका हूं।

याहूके शेष अङ्गोंसे मेरे अङ्गोंमें इतना अन्तर देख कर दोनों घोडे बडे कठिनाईमें पडे। इस अन्तरका कारण मेरे कपडे थे जिनका घोडोंको कुछ भी ज्ञान न था। लाल घोडेने मुजम्मेसे उठा कर एक सडा टुकडा मेरे हाथमें दिया। मैंने लेलिया और सूंघ कर सभ्यताके साथ लौटा दिया। उसने याहूओंके घरमेंसे गदहे मास लाकर दिया लेकिन उससे ऐसी सडी गन्ध आती थी कि

मैंने नाक सिकोड कर मुँह फेर लिया। उसने उस मासके टुकडे को याहूके आगे फेंक दिया। याहूरास सब भकोस गये। फिर उसने एक पूला घास तथा जई दिखाई। लेकिन मैंने तब भी सिर हिला दिया और बता दिया कि यह सब मेरा अहार नहीं है। मैंने विचारा कि अगर किसी मनुष्यका दर्शन न होगा तो मैं भूखों मर जाऊंगा। यद्यपि मानव जातिके प्रेमी मुझसे अधिक बहुत ही कम होंगे तथापि मैं सत्य कहता हूं कि इन याहूओंकी तरह सब प्रकारसे जघन्य नीच घृणित जीव मैंने नहीं देखे। जितना मैं उनसे सटता उतनेही वह और भी घृणित मालूम होते थे मेरी यह दशा देख कर अश्व प्रभुने याहूको थान पर लेजानेका हुक्म दिया और अगले सुमको अपने मुंह पर आसानीसे रख कर कुछ इशारा किया जिसका मतलब यही था कि मेरा आहार क्या है। घोडेकी इस कार्रवाईसे मुझको बडा अचरज हुआ। पर मैं ऐसा जवाब न देसका कि वह मेरा भाव समझ जाता। अगर समझ भी गया हो तो क्या वह मेरे खाने पीनेका बन्दोबस्त कर सकता था? जब हम लोग इस प्रकार इशारावाजीमें लगे हुए थे मैंने एक गायको बगलसे जाते हुए देखा। मैंने चट पट उसकी तरफ बता कर उसको दूहनेका इशारा किया। अबकी काम बन गया। वह मुझे घर लौटा लाया। दाई घोडीको एक कोठरी खोलनेका हुक्म दिया। किवाड खुलतेही देखा कि मट्टी और लकडीके साफ सुथरे वर्त्तनोंमें दूधका ढेर लगा हुआ है। उसने एक कटोरा लबालब भरके दिया। मैं सब पीगया तब जी ठिकाने हुआ।

दोपहरको घरकी तरफ एक गाडी जिसमें चार याहू जुते हुए थे आती हुई दिखाई दी। इस गाडीमें एक भी पहिया न था और इसकी बनावट विमानसी थी। इस पर एक वृद्ध घोडा चढा हुआ था जो ऊंचे पदका मालूम होता था। गाडी घरके पास आकर खडी हुई। वह पिछले पावोंको बढा कर उतरा क्योंकि अचानक कहीं उसके अगले बायें पैरमें चोट लग गई थी। वह हमारे

घोड़ेके यहां न्योता खाने आया था। गृहस्वामीने खूब आदर सत्कार किया। सबसे अच्छे कमरेमें पाति बैठी। घासके सिवा जई की खीर भी परसी गई। और सबने तो ठंडी परन्तु बूढ़ेने गर्म गर्म खीर उड़ाई। बीच कमरेमें नांदें मण्डलाकार सजाई गई थी जिनके चारों ओर घोड़े सब फूसके मोटे आसनों पर पुट्ठे टेक कर बैठे थे। नांदें कई हिस्सोंमें बटी हुई थी। बीचमें सूखी घाससे भरा पहलदार एक कठौता था जो नांदोंसे मिला हुआ था। प्रत्येक घोड़ा और घोड़ी मजेसे खूबसूरतीके साथ अपनी अपनी घास और खीर खाती थी। बछेरे बछेरिया बहुत शान्त थी। घरके मालिक तथा मलकिनी बहुत प्रसन्न तथा पाहुनेको आराम पहुंचानेके लिये सब तरहसे मुस्तैद थी। अबलकने अपने पास खड़े रहनेको मुझे हुक्म दिया। दोनोंमें बहुत देर तक बात चीत होती रही। बूढ़ा घोड़ा अकसर मेरी तरफ देखता तथा—याह याह" कहता था इस से मैं अनुभव करता हूं कि मेरेही विषयमें वह दोनो बोलते थे।

मैं उस समय दस्ताने चढ़ाये हुए था। अबलक मेरे हाथकी दशा देख कर घबड़ा गया। उसने दो चार बार अपना खुर मेरे हाथसे छुलाया मानो हाथोंको फिर पहली अवस्थामें लानेके लिये कहता था। मैंने तुरत दस्ताने उतार जेबमें रख लिये। यह देख वह सब प्रसन्न हुए और इसका सुन्दर फल भी मुझको जल्दी मिल गया। जो दस पांच शब्द मैंने सीखे थे सो बोलनेकी आज्ञा हुई। जब तक यह सब उधर खाते थे तब तक इधर अश्व प्रभुने जई, दूध, आग, पानी वगैरहके नाम सिखा दिये थे। मैं उनका उच्चारण अच्छी तरह कर सकता था क्योंकि लड़कपनहीसे बोलिया सीखनेकी मुझको अच्छी योग्यता थी।

पांति उठ जाने पर अश्व प्रभुने एक ओर लेजाकर मेरे भोजन के लिये संकेत द्वारा चिन्ता प्रगट की। उनकी भाषामें जईका नाम—"ह्लन्ह" है। मैंने इस शब्दका उच्चारण दो चार बार किया। पहले तो मैंने जईसे इनकार किया था पर पीछे सोचा कि जब तक

यहांसे निकास न हो तब तक जईकी रोटियां और दूध प्राण बचाने के लिये बहुत है। इसीसे मैंने जई मांगीथी। उसने इतना सुनतेही उसने रङ्गकी घोडोसे जो घरकी दाई थी जई लानेके वास्ते आज्ञा दी। वह कोठीतेसें ढेरसी जई लेआई। मैंने उसे आगसे गर्म किया और हाथोंसे मसल कर उसकी भूसी निकाल दी। दो पत्थरोंसे कूट काट कर उसका आटा बनाया। पानी लाकर आटा गून्धा फिर रोटिया पकाईं। गर्म गर्म रोटियां दूधके साथ खाईं। यद्यपि युरोपके प्राय' बहुतेरे आदमियोंकी यह खूराक है तथापि मुझको पहले बिलकुल फीकी मालूम पडी पर पीछे अभ्यास पड गया। रूखा सूखा अकसर खाना पडा है अतएव इस तरह पेट भर लेना मेरे लिये कोई नई बात न थी। जब तक मैं वहां रहा एक घडीके लिये भी मेरे सिरमें कभी दर्द न हुआ। मैं कभी कभी याहुओंके बालके फन्दोंसे खरगोश और चिडियोंका शिकार जरूर करता था। पुष्ट जडी बूटिया इकट्ठी करता और साग बना कर रोटियोंके साथ अकसर खाता और जायका बदलनेके लिये कभी कभी मक्खन निकालता और छाछ पीता था। पहले तो नोन बिना कष्ट हुआ पर जब अनोना खाते खाते अभ्यास पड गया तो उसकी याद भी नहीं आतीथी। मुझे विश्वास है कि हमारे देशोंमें लवणका इतना प्रचार होना बस भोग बिलास ही का फल है। बडी बडी लम्बी समुद्र यात्राओंमें अथवा बडे बडे बाजारोंसे दूर जगहोंमें मांस लेजानेके लिये उसमें नोन डालनेकी जरूरत पडती है क्योंकि नोन पडनेसे मांस सडता नहीं। इसके सिवा केवल सुरापानकी रुचि बढानेहीके लिये पहले पहल हम लोगोंमें लवणका व्यवहार हुआ था। क्योंकि देखा जाता है कि आदमीके सिवा और किसी जीवको नोन नहीं भाता। और मैं अपनी कहता हूँ कि हिमहिमदेशसे लौट आने पर बहुत दिनों तक किसी वस्तुमें भी मुझसे नोन नहीं खाया जाता था।

मैं अपने खाने पीनेके विषयमें बस इतनाही लिखना अलम्

समझता हूं पर और भ्रमणकारी लोग तो इसी विषयसे अपनी किताबें भर देते हैं मानो उनके खाने पीनेसे पाठकोंको बड़ा भारी मनोकार है। जो कुछ हो, इतना लिखना भी मैंने इसलिये जरूरी समझा कि शायद कोई पीछे यह न कह बैठे कि तीन वर्ष तक ऐसे देशमें और ऐसे निवासियोंके बीचमें आहार मिलना असम्भवहीथा।

जब सांझ हुई तो अश्व प्रभुने मेरे रहनेके लिये अलग बन्दोबस्त कर दिया। मेरा डेरा अश्वालयसे कुल छः गजके फासले पर था और याहुओंके तबेलेसे एक दम जुदा था। फूसका बिस्तर और फूसहीका सिरहाना बनाया। अपने कपड़ोंसे देह ढांक कर खूब सोया। थोड़ेही दिनके बाद सुखकी सब सामग्रियां इकट्ठी होगई और मैं सुखसे रहने लगा जिसका हाल आगे चल कर विस्तार पूर्वक सुनाऊंगा।

तृतीय परिच्छेद।



मैं घोड़ोंकी भाषा सीखनेके लिये पूर्ण चेष्टा करने लगा। अब मैं अश्व प्रभुको केवल प्रभु लिखा करूंगा। प्रभु, प्रभुके लड़के तथा नौकर चाकर सबही मेरे गुरु बनना चाहते थे। वह मुझसे अज्ञान जानवरको ऐसा बर्त्ताव करते देख कर बड़ा अचम्भा मानते थे। जो कुछ मैं देखता सबका नाम इशारेसे पूछता और जब एकान्त होता तो डायरीमें लिख लेता था। जब भूलता तो उच्चारण पूछ लेता। लाल बछेरेसे जो घरका नौकर था बहुत मदद मिलती थी।

घोड़े कण्ठ और नाकसे बोलते थे। उनकी बोली हौलेण्ड या जरमनी भाषासे बहुत मिलती थी परन्तु अश्व भाषा उनसे अधिक ललित और सार्थक थी। सम्राट पञ्चम चार्ल्सकी भी यही राय थी। वह कहते थे—"अगर मैं घोड़ोंसे बोलता तो हौलेण्डही की भाषामें बोलता।"

प्रभुको इतना अचम्भा हुआ कि वह धीरज न धर सके। जो

जानसे मुझे अपनी बोली सिखानेमें लग ए। अपनी छुट्टीका प्रायः सब समय मेरे साथही व्यतीत करते थे न्हें विश्वास होगया था कि मैं जरूर याहू हूँ। लेकिन मेरे रहनेकी योग्यता, सभ्यता और सफाईसे उन्हें बड़ा आश्चर्य होता था क्योंकि यह सब लक्षण याहुओंमें नहीं होते। प्रभुने यह सब पीछे बतलाया था कि मेरे कपड़ोंको देख कर उनकी अकल कुछ काम नहीं करती थी। कभी कभी वह यही समझ लेते कि यह भी मेरे शरीरका एक अङ्गही है क्योंकि जब वह सब रातको सोजाते तब मै कपड़े उतारता और सवेरे उनके उठनेके प्रथमही पहन लेता था। कहांसे मै आपड़ा और क्योंकर सब कामोंमें बुद्धिमानी प्रगट करता हूँ इत्यादि बातें जाननेके लिये प्रभु नितान्त उत्सुक थे। वह मेरेही मुंहसे मेरी कहानी सुनना चाहते थे। जिस फुर्तीसे उनकी भाषामें मै व्युत्पन्न होता जाताथा उससे उन्हें पूरी आशा थी कि मै बहुत जल्द उनकी अभिलाषा पूरी करूंगा। जो कुछ मैं सीखता सब अर्थ सहित अंग्रेजीमें लिख लेता था। पहले तो मैं छिपा कर लिखता था पर कुछ दिनके बाद उनके सामनेही लिखने और तर्जमा करने लगा। मैं क्या करता हूं सो समझानेमें मुझे बड़ी कठिनता हुई। क्योंकि पोथियां या साहित्य किस पक्षीका नाम है सो वहांवाले बिलकुल नहीं जानते।

मै उनके बहुतसे प्रश्न करीब दस इशारेमें समझने लगा और तीन महीनेमें कुछ कुछ जवाब देनेके लायक भी होगया। अब प्रभुसे न रहा गया। वह चटपट मेरे सफरका हाल पूछ बैठे। और सब मेरे अङ्ग तो कपड़ेके भीतर थे केवल हाथ, मुंह और सिर दिखाई पड़ते थे। इन अङ्गोंको याहुओं कैसे देख कर प्रभुने मुझे भी याहूही समझा। याहू बड़ेही धूर्त और दुष्ट होते तथा कभी सीख नहीं मानते थे। मगर मेरा बर्ताव कुछ निरालाही था। यह देख प्रभु और भी हैरान थे। इसीसे उन्होंने पूछा था—"तुम कहां से आये और समझदारोंकी तरह काम करना तुमने कहां सीखा?"

मैने जवाब दिया—"मैं सात समुद्र तेरह नदी पारमें लकडीके एक पोले बडे पात्र पर चढके यहां तक आया हूं। मेरी जातिके और कई लोग मेरे साथ थे। मेरे साथियोंने जबरदस्ती मुझको तीर पर उतार दिया और आप चलते बने।" वृक्ष बोल कर कुछ बतला कर बडी मुश्किलसे इतनी बातें प्रभुको समझाई थी। प्रभुने कहा—"तुम भूलते हो। तुमने जो कहा सो नहीं है।' अर्थात् झूठ है। झूठका प्रति शब्द उनकी भाषामें नही है। समुद्रके बाद कोई देश होना या जानवरोंका जहाजके द्वारा समुद्रमें जहां चाहे तहां चला जाना प्रभुकी समझमें असम्भवही था। उन्हें निश्चय था कि कोई ह्वीय्ह्न्ह्न्म जहाज नहीं बना सकता है और न कोई इसके चलानेका काम याहुओंके सपुर्द कर सकता है।

ह्वीय्ह्न्ह्न्म अर्थात् हिनहिन उनको भाषामें घोडेको कहते हैं। इसकी व्युत्पत्ति है—"प्रकृतिकी पूर्णता।" मैंने प्रभुसे कहा कि अभी मै आपकी बोली अच्छी तरह बोल नहीं सकता। लेकिन जहां तक बनेगा जल्दी इसके बोलनेकी कोशिश करूंगा। आशा है कि थोडेही दिनोंमें मैं आपको आश्चर्यमें डालनेवाली बातें सुनानेके योग्य हो जाऊंगा। इतना सुनतेही उसने अपनी घोडी, बछेरे, बछेरी तथा नौकरोंको मेरे पढानेके लिये हुक्म दे दिया। जिसको मौका लगता था वही मुझको पढाता था। इसके सिवा प्रभु स्वयं प्रतिदिन दो चार घण्टे मेरे साथ माथा खाली करते थे। आस पासके सब गावोंमें बात फैल गई कि एक विचित्र याहू आया है जो हिनहिनकी तरह बोलता तथा अपने चाल चलनसे चतुर मालूम होता है। फिर क्या था लगी अच्छे अच्छे घरकी घोडियां सब मेरे यहां आने। वह सब आकर मुझसे बात चीत करतीं और प्रसन्न होती थी। जो कुछ पूछती उसका जवाब उन्हीं की बोलीमें यथाशक्ति दे देताथा। इससे फल यह हुआ कि पांचही महीनेमें मै वहाकी भाषा अच्छी तरह समझने लगा तथा एक [illegible]रसे बोलने भी लगा।

यह हिनहिन जो देखने तथा मुझसे बोलने आया था मुझको ठीक याहू नहीं कहता था क्योंकि मेरे शरीर पर एक जुदा ढङ्गकी खाल थी। इसके सिवा याहुओंकेसे मेरे बाल नहीं थे। लेकिन यह भेद पन्द्रह दिनके बाद प्रभुको अकस्मात् मालूम होगया।

पाठकोंसे मैं पहलेही निवेदन कर चुका हूं कि रातको जब सब सो जाते थे तब मैं कपडे उतारता और सवेरे सबके उठनेके पहलेही पहन लेता था। एक दिन बडे तडके प्रभुने मेरे बुलानेके लिये अपने नौकर लाल बछेरेको भेजा था। जब वह आया मैं खर्राटे लेरहा था, कपडे अलग एक तरफ रखे थे और कमीज कमरके ऊपर पडी थी। उसकी आवाज सुन कर मै चौंक उठा तो देखा कि वह घबडानासा कुछ कह रहा है। सन्देसा सुना कर वह तुरत नौ दो ग्यारह हुआ। जो कुछ उसने देखा था उसका न जाने क्या गडबड सडबड हाल प्रभुसे जाकर कह दिया। कोट पटलून डाट कर जब मैं वहां पहुंचा तो प्रभुने देखतेही पूछा—"क्या सोने पर तुम कुछ औरही तरहके मालूम होते हो ? बछेरा कहता था कि तुम्हारा कोई अङ्ग उजला, कोई पीला और कोई भूरा है।"

याहू बनाये जानेके डरसे अबतक मैंने लिबासके भेदको छिपाया था पर सब वृथा हुआ। अब और छिपाना उचित नहीं समझा। अगर छिपाता भी तो अब छिप नहीं सकता क्योंकि मेरे कपडे जूते सब पुराने होगये थे। थोडेही दिनके बाद बेकाम होजाते। फिर याहुओंकी अथवा और किसी जानवरोंकी खालसे देह ढाकनेका कुछ न कुछ उपाय करनाही पडता जिससे सब बातें पीछे आपही खुल जातीं। इस लिये प्रभुवरसे मैंने स्पष्ट कह दिया कि उस देशमें जहांसे मैं आया हूं मेरी जातिवाले सब सर्दी गर्मीसे बचने तथा लज्जा निवारणके लिये अपने अङ्गोंको किसी किसी जीवके बालोंसे बने हुए कपडोंके द्वारा सदा ढाके रहते हैं। अगर आप आज्ञा दें तो मैं सबूतके लिये अपना बदन खोल कर दिखला सकता हूं परन्तु

एक प्रार्थना है कि प्रकृतिने जिन अङ्गोंको छिपानेके लिये बताया है उन्हें न खोलूगा। इतना सुन कर प्रभु बोले—"तुम्हारी बिलकुल बातेंही अनूठी हैं विशेष कर पिछली तो अत्यन्त है। मेरी समझ मे यह नहीं आया कि प्रकृतिने जो कुछ दिया है उसके छिपानेके लिये वही क्यों बताने लगी। मैं और मेरे घरवाले तो किसी अङ्ग की लाज नहीं करते हैं। खैर, जो तुम्हे भावे सो करो।" इस पर मैंने पहले बटन खोले फिर कोट उतार डाला। पीछे फतुही, पटलून, मोजे और जूते भी उतार दिये। परदेके लिये कमीजको सरका कर कमरसे लपेट लिया।

प्रभुने बडे आश्चर्य और कौतूहलसे मेरे इस कामको अवलोकन किया। मुजमोसे लेकर हर एक कपडेको गौरसे देखा, मेरी देह को धीरे धीरे सहलाया और घूम घूम कर खूब देखा भाला। बहुत सोच विचार कर आप बोले—यह तो निश्चयही है कि तुम याहू हो मगर इन याहुओंसे और तुमसे बडा फर्क हैं। तुम्हारा चमडा साफ, चिकना और मुलायम है। तुम्हारे शरीरके बहुतेरे हिस्सोंमे बाल नहीं है पञ्जे भी तुम्हारे छोटे और दूसरे ढङ्गके है। तुम सदा पिछले पैरोंसे चलते हो इत्यादि।" इसके बाद आपने कपडे पहनने का हुक्म दिया। मैं भी सर्दीसे काप रहा था इससे चटपट आप का हुक्म तामील किया।

मैंने कहा—"आप बार बार याहू कहते है तो मेरी आत्माको बडी व्यथा पहुंचती है क्योंकि यह कुत्सित जीव मुझको फूटी आंख भी नहीं सुहाते। इन्हें देख कर न जाने क्यों मुझको घृणा होती है। इसलिये हाथ जोडता हू मुझको याहू न कहा कीजिये और अपने घरवालो तथा इष्ट मित्रोंसे भी कह दीजिये कि कोई मुझको याहू न कहा करे। एक प्रार्थना और है कि मेरे कपडेका हाल आपके सिवा और कोई जानने न पावे। अन्तत' जब तक यह कपडे फट न जाय तब तक किसीसे कुछ मत कहिये और बाल बछेरेसे भी कह दीजिये कि किसीसे कुछ न कहे।"

प्रभुने सानुग्रह प्रार्थनाको स्वीकार किया। जब तक वस्त्र फटे नही किसीने इस रहस्यको नही जाना। फिर मैंने क्या प्रबन्ध किया सो आगे चल कर लिखूंगा। प्रभुकी आज्ञासे मैं फिर जी जान लगा कर उनकी बोली सीखने लगा। मेरे यत्नोंकी बातें सुननेके लिये वह बहुत व्यग्र थे। मेरी योग्यता देख वह बहुत विस्मित होते थे।

अब वह और भी दूनी मिहनतसे मुझको वहाकी भाषा सिखाने लगे। सब अपने सङ्ग मुझको लेजाते थे। कोई मुझसे छेड छाड नही करता था। छेडछाडके लिये उन्होंने सबको मना कर दिया था। मेरी अनूठी बातें सुननेहीके लिये यह सब सुप्रबन्ध किया गया था।

पढानेमें वह कडाचूर परिश्रम करतेही थे। इसके सिवा जब मैं उनसे मिलता तो रोज वह मेरा अहवाल पूछते थे। मैं भी यथासाध्य उनके प्रश्नोंका उत्तर देता था। इससे सब बातो का साधारण मगर अधूरा ज्ञान उनको होगया था। कब कैसे कौन बात हुई सो लिख कर पाठकोंको कष्ट पहुंचाना मैं नहीं चाहता लेकिन मैंने अपने बारेमें यों कहा था'—

"मेरा देश यहासे बहुत दूर है जैसा कि मैं कह चुका हू। देशसे हम लोग पचास आदमी जहाजमें जो आपके घरसे बडा था बैठ कर चले। वह लकडीका बना हुआ था और जल पर तैरता था। आपसमें लडाई होजानेके कारण साथियोंने मुझको जहाज मे निकाल दिया। मैं बिना समझे बूझे एक ओर चल पडा। चलते चलते यहा तक आपहुंचा। रास्तेमें याहुओंने रोका तो आपहीने जाकर छुडाया था।" जहा तक बना मैंने अच्छी तरह जहाजका खाका खिंचा। पालसे वह कैसे चलता है सो रुमालसे बतलाया। मतलब यह कि जहाज क्या वस्तु है सो मैंने उन्हें भली भाति समझा दिया था। यह सुन कर प्रभुने पूछा—"अच्छा यह

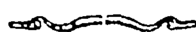
तो कहो जहाज बनाता कौन है? भला यह कब सम्भव है कि तुम्हारे यहाके हिनहिन इसका प्रबन्ध पशुओंके हाथ सौपेंगे?"

मैं—अब कुछ कहनेकी हिम्मत नही पडती। अगर बुरा न मानें तो मैं जवाब देसकता हूं और अपने यहांकी अनूठी बातें भी सुना सकता हूं।

प्रभु—नहीं मानूंगा। मैं कसम खाके कहता हूं कि बुरा न मानूंगा। तुम्हें जो कुछ कहना है सो निडर होके कहो। मै तुम्हारी बातें सुननेको बहुत बेचैन हूं।

मैं—जहाज तो मेरे जैसे जीवही बनाते हैं। केवल यही जीव मेरे यहां और उन देशोंमें जहांसे मैं हो आया हूं राज्य करते तथा बुद्धिमान गिने जाते हैं। यहां हिनहिनोंको आदमियोंकी तरह काम करते देख कर मुझे उतनाही विस्मय हुआ जितना आप लोगोंको मुझे देख कर हुआ। इन याहुओंकी सूरत शकलें मुझसे मिलती हैं पर मैं नही कह सकता यह इतने जङ्गली तथा नीच क्यों होगये। अगर मैं भाग्यके जोर से अपने देशमें पहुंच कर यहाकी बातें कहूंगा तो लोग यही कहेंगे कि "तुमने कहा सो नहीं है।"। कोई भी इसको सम्भव न मानेगा कि. हिनहिनका आधिपत्य याहुओंके ऊपर है। घोडे आदमियो पर हुकूमत करते हैं यह कौन विश्वास करेगा?

चतुर्थ परिच्छेद।



मेरी बातें सुनकर प्रभुकी सुधबुध काफूर होगई। चेहरेसे बेचैनी टपकने लगी। सन्देह और अविश्वास करनेकी चाल वहां इतनी कम थी कि ऐसे ऐसे मौकों पर क्या करना चाहिये सो वहां वाले नही जानते। ऐसे तो प्रभुकी समझ बहुत चोखी थी परन्तु मुझे याद है कि जब कभी मनुष्यके स्वभावकी चर्चा चलती और मैं प्रसङ्ग वश मिथ्या भाषण तथा असत्य वर्णनके बारेमे कुछ कहता तो वह बडी कठिनतासे मेरे भावोंको समझते थे। वह कहा करते थे—

"एक दूसरेके मनके भावोंको समझाना और सच्ची बातें सुनानाही बोलनेके उद्देश्यहैं। अगर किसीने वह बात कही जो नहींहै अर्थात् झूठ तो बोलनेके उद्देश्य सिद्ध नहीं हुए। क्योंकि असल बातोंका जानना तो दूर रहा मैं कहनेवालेके तात्पर्य्यको समझता हूँ यह भी नही कहा जासकता। फल यह होगा कि मैं ज्योंका त्यों रहूंगा या उससे भी खराब होजाऊंगा क्योंकि तब उजलेको काला और बड़े को छोटा समझने लगूंगा।" उस झूठके बारेमें जिसे मनुष्य लोग पूरे तौरसे समझते और बोलते है घोड़ोंका बस यही ख्याल है।

अच्छा अब मैं अपने किस्सेकी तरफ झुकताहूँ। जब मैंने कहा कि हमारे यहां याहूही राज्य करते हैं तो यह उनके ध्यानहीमें न आया। प्रभुने पूछा—"क्या तुम्हारे देशमें ह्निनह्निन है? अगर है तो वह क्या करते हैं?" मैने कहा- "हां हैं। गर्मीमें तो वह सब मैदानमें चरते, जाड़ेमें तबेलेमें रहते और सूखी घास तथा जई खाते हैं। याहू लोग ह्निनह्निनोंको मलने, खरहरा करने, सुम साफ करने, दाना खिलाने आदिके लिये रक्खे जाते है।"

प्रभु—बस बस मैं समझ गया। याहू चाहे कितनेही बुद्धिमान बनें लेकिन तुम्हारे राजा ह्निनह्निनही हैं। मैं जैसे चाहता हूँ कि मेरे याहू भी ऐसेही अकलमन्द होजायं।

मैं—माफ कीजिये अब आगे और कुछ मैं न कहूंगा क्योंकि मुझको विश्वास है कि अगर कुछ कहूँगा तो आप जरूर रुष्ट हो जायगे।

प्रभु—नहीं नही मैं कभी रुष्ट न हूंगा। तुम अच्छा बुरा जो जानते हो सो निर्भय होकर कह जाओ। मैं वादा करता हूं मैं कभी रुष्ट न हूंगा।

मैं—अच्छा तो सुनिये। हमारे यहां ह्निनह्निनको घोड़ा कहते है। घोड़े सब जानवरोंसे सुन्दर और भले होते हैं। इनसे बल तेजोमें कोई पशु बढ़ कर नहीं है। बड़े आदमियोंके घोड़े सवारी या घुड़दौड़के काममें आते अथवा गाड़ियोंमें जोते जाते हैं। जब

तक वह चढ़े रहते हैं उनकी खूब खातिर और हिफाजत होती है लेकिन बीमार या लंगडे होजानेसे बेच दिये जाते हैं। फिर बिचारोंको अन्त समय तक सब तरहके कठिन परिश्रम करने पडते हैं। मरने पर खाल खेंच कर बेच दी जाती हैं और लाशोंको कुत्ते और गिद्ध खाजाते हैं। लेकिन मामूली दरजेके घोडोंका ऐसा सौभाग्य कहां! इन्हें किसान और कुली वगैरह नीच लोग रखते हैं जो मेहनत तो खूब लेते पर खानेको कम देते हैं।

इसके सिवा मैंने घोडों पर चढनेका ढङ्ग वर्णन किया। लगाम, जीन, कांटे, चाबुक साज वगैरह की सूरत शकल बताई। मैंने यह भी कह दिया कि पथरीली राहमें चलनेमें घोडोंके सुम अकसर टूट जाते है। इसके बचावके लिये घोडोंके पैरोंमें एक कडे पदार्थका पत्तर जड दिया जाता है।

यह सुन कर प्रभु बहुत खिन्न हुए। फिर आप बोले—"तुम लोगोंको हिनहिनकी पीठ पर चढनेकी हिम्मत कैसे पडती है? यहांका कमजोरसे कमजोर हिनहिन याहूको मजेमें दबोच सकता है और पीठपर चढनेसे तो उसका कामही तमाम कर सकताहै।"

मैं—आपका कहना ठीक है मगर हमारे देशमें घोडे बचपनही से सिखाये जाते हैं लेकिन जो जरा बदमाश होते वह गाडियोंमें जोते जाते हैं। शैतानी करनेसे खूब पीटे भी जाते हैं। जो घोडे सवारी या गाडीके काममें आते हैं वह दो वर्षके होने पर आखता कर दिये जाते हैं। इससे वह सीधे और शान्त हो जाते हैं। वह सजा और इनामको खूब समझते हैं। पर आप यह निश्चय जान लें कि उनको जरा भी ज्ञान नहीं होता। उन्हें निरे याहूही समझिये।

ऊपर कही हुई बातें प्रभुको समझानेमें मुझे बडा कष्ट उठाना पडा। क्योंकि उनकी भाषामें शब्दोंका बहुत तोडा था। हम लोगों से उनकी आवश्यकता और विषयवासना भी थोडी है फिर शब्द ... ? इसी लिये बोलनेके समय हाथोंसे, आखोंसे और

पैरोंसे मदद लेनी पडी थी। घूम कर नाक छूनी पडी थी। ह्विन ह्विन जातिके साथ हम लोगोंका यह जङ्गली व्यवहार सुन कर उन्होंने किस उत्तम रीतिसे अपना कोप प्रकाश कियाथा सो बताना असम्भव है। उन्हें आखता करनेकी चाल विशेष कर बहुत बुरी लगी क्योंकि इससे घोड़ोंकी स्वाधीनता तथा बंश नास होजाता है। उन्होंने कहा कि अगर कोई देश ऐसा हो जहां केवल याहूकी बुद्धिमान हों तो वह जरूर राज्य कर सकते है क्योंकि अन्तमे सदा बुद्धिहीकी जय और पशुबलकी पराजय होती है। संसारके कामों के लिये तुम्हारे जैसा कृतघ्न और कोई सज्ञान जीव नही है। इसके बाद आप बोले—"अच्छा यह तो कहो कि तुम जिन लोगोंके साथ रहते हो वह रूप रङ्गमें तुमसे है या हमारे याहुओंसे ?"

मैं—मेरी उमरवाले तो मेरेहीसे हैं पर बच्चे और औरतें बहुत सुन्दर और कोमल होती है। उनकी देह तो दूधसी उजली होती है।

प्रभु—हा ठीक है। तुमसे और याहुओंसे बडा भेद है। तुम बहुत साफ सुथरे तथा एक दम बदसूरत नहीं हो। पर असल फायदेके ख्यालसे तुम याहुओंसे भी गये बीते हो। तुम्हारे अगले या पिछले पैरोके नख किसी कामके नहीं। तुम्हारे अगले पैरोको मैं पैर नही कह सकता क्योंकि मैंने कभी तुम्हें इनसे चलते देखा नही और वह मुलायम भी इतने हैं कि जमीनमें टेके नही जा सकते। तुम उन्हें बराबर खुला रखते हो और कभी कभी जो बेठन चढा लेते हो सो पिछले पांवोके वेठन जैसे मजबूत नही हैं। तुम्हारी चाल भी ठीक नहीं क्योंकि हरवक्त गिरनेका डर बना रहता है। अगर पीछेवाले पैरोमेसे एक भी फिसला तो धडामसे गिर पडोगे। तुम्हारा मुंह चपटा है, नाक निकली हुई है, आखें दोनो ठीक सामने हैं इससे अगल बगलकी चीजें बिना सिर घुमाए तुम देख नही सकते। अगला पाव मुंह तक बिना उठाए खा नही सकते। इसी लिये हाथोंमें गाठें बनी हुई है। पिछले पैर

टुकडे टुकडे क्यों हैं? यह इतने कोमल हैं कि चमड़ेके कठिन चढाए बिना तुम तेज पत्थरोंपर चल नहीं सकते। सर्दी गर्मीमे बचनेके लिये तुम्हें अपनी देह पर खोल चढानी और उतारनी पडती है। यह भी रोजका एक झंझटही ठहरा। यहाके जितने जानवर है सब याहुओंसे घृणा करते हैं। कमजोर तो उनसे किनारा खेंचते और जबरजस्त उन्हें अपने पास फटकने नहीं देते हैं। माना कि तुम बुद्धिमान हो मगर तुमसे सब जानवरोंका जो स्वाभाविक विरोध है सो दूर होना कब सम्भव है और याहुओंका सुधार भी फिर कैसे हो सकता है? इन्हें घरमें रख कर कामके लायक बनाना हमारे बूते हो नहीं सकता। जोहो इस विषयको अब मैं तूल नही दिया चाहता। क्योंकि मुझको तुम्हारी कहानी सुननेकी अत्यन्त लालसा लग रही है। तुम्हारा जन्म किस देशमें हुआ और यहा आनेके पहले तुम पर क्या क्या बीती सो कह सुनाओ।

मैं---मैंभी आपको सब तरहसे सन्तुष्ट किया चाहता हू पर एक बातका बहुत सन्देह है कि जिन विषयोको आप बिलकुल जानते नहीं उनको भली भांति समझाना सम्भव है या नही क्योंकि उपमा देनेके लिये भी यहां वैसी कोई वस्तु नजर नही आती है। खैर, मैं कोई बात उठा न रखूँगा। लेकिन आपसे एक प्रार्थना है कि जब आवश्यकता हो तो उचित शब्दोंसे मेरी सहायता करते जाइ-येगा।

प्रभुके प्रार्थना स्वीकार करने पर मैंने यों कहना शुरू किया— "मेरा जन्म अच्छे कुलमें हुआ है। मेरी जन्मभूमि इङ्गलेण्ड नामका एक टापू है जो यहांसे उतनीही दिनकी राहहै कि जितने दिनमें आपका सबसे जबरदस्त नौकर (घोडा) सूर्य्यके वार्षिक मार्गको तै कर सके। मैने लडकाईसे जर्राही सीखी शरीरके फोडे फुनसिया घाव वगैरहको आराम करनाही जर्राहोका रोजगार है। मेरे देशका राज्य पाट एक औरत चलाती है। जिसको हम लोग रानी कहते है। रुपयेके

लिये मैंने घरवार छोडा है। रुपये लेजा कर बालवच्चोंका पालन करूं गा। इस पिछले सफरमें मै एक जहाजका कप्तान था और मेरे नीचे पचास याहू काम करते थे। उनमेंसे बहुतेरे मर गये तो और और देशोंके कुछ लोग उनकी जगहो पर रखने पडे। दो बार हमारा जहाज डूबते डूबते बच गया। एक बार तो एक बडे तूफान की चपेटमें आगया और दूसरी बार एक पहाडसे टकरा गया था।

प्रभु—जब तुम्हारे साथी मर गये और तुम पर विपद आई तो औरोंको तुम्हारे साथ आनेकी कैसे हिम्मत पडी अथवा तुमनेही उनको कैसे बहकाया ?

मैं—जो लोग मेरे साथ आये थे उनको कहीं ठिकाना न था। दाने दानेको वह मुहताज थे। दरिद्रता या भारी अपराधके कारण उन सबने अपनी अपनी जन्मभूमि त्यागदी थी। कोई मुक-दमेके मारे तवाह होगया था, कोई शराब, रण्डी और जुएमें अपना सब खाहा कर चुका था। कोई राजविद्रोह या विश्वास घात करके देशसे भागा था—कोई हत्या, चोरी, विष प्रयोग, डकैती, जालसाजी, नकली सिक्के बना और झूठी गङ्गाजली उठा कर चम्पत हुआ था। किसीने घृणित व्यभिचार करके काला मुंह किया और कोई अपना सङ्ग छोड कर शत्रुसे जा मिला था। बहुतों ने जेलकी वेडिया काटी थी। फांसी पडने या जेलमें भूखो मरनेके डरसे किसीको भी स्वदेश लौटनेकी हिम्मत नही पडतीथी। इसीसे वेचारे पेट भरनेकी फिकरमें इधरसे उधर डोलते थे।*

जब मै बोलता था तो प्रभु बराबर टोकते जाते थे। जो बात उनकी समझमें नही आती थी उसको वह खोद खोदकर पूछतेथे। मैंने भी उन पापोंका रङ्ग ढङ्ग जिनके सबब हमारी समाजके बहुत से लोग देश छोड छोडके भागे है प्रभुको बडे शब्दाडम्बरसे समझाया। कई दिनके परिश्रमके बाद उनकी समझमें यह सब बातें आई पर तो भी वह पूछते थे कि लोग पाप क्यो करते है। इसके करनेकी जरूरतही क्या है। मैंने तब शक्ति और धनकी

चाहना तथा डाह, द्रोह, मदिरापान और कारिन्दादि भयानक फलकी तरफ उनका ध्यान दिलाया। इन सबका वर्णन करनेके समय मुझको अनुमान और घटना दोनोंकी सहायता लेनी पड़ी थी। जो बात पहले कभी देखी सुनी नहीं उसका ख्याल अचानक आजानेसे जो दशा होजाती है मेरी बातें सुन कर वही दशा घोड़ेरामकी हुई। वह आश्चर्यके साथ भौंहे तानके ताकने लगे। शक्ति, शासन, युद्ध, कानून दण्ड आदि हजारों शब्दोंका टोटा अश्व भाषामें था अतएव इनका यथार्थ अभिप्राय समझानेमें बड़ी कठिनाई हुई। पर उनकी समझ अच्छी थी और इधर वार्तालाप होने होते विचारनेकी शक्ति भी बढ़ गई थी इससे शेषमें उन्हें पूरे तौरसे मालूम होगया कि हमारे देशके मनुष्य क्या क्या करनेके योग्य हैं। इसके उपरान्त उन्होंने युरोपकी खास कर इङ्गलैण्डकी मुख्य मुख्य बातें कहनेके लिये अनुरोध किया।

पञ्चम परिच्छेद।

दो ढाई सालमें मेरे और प्रभुके जो वार्तालाप हुआ था उसका सार खेंच कर पाठकोंको मैं सुनाता हूं। मैं ज्यों ज्यों उनकी भाषा में व्युत्पन्न होता जाता था त्यों त्यों सविस्तर वृत्तान्त सुननेके लिये उनकी भी तृष्णा बढ़ती जाती थी। मैंने भी कोई बात उठा नहीं रक्खी। युरोपका अच्छी तरहसे पेट फाड़ कर उनके सामने धर दिया। वाणिज्य व्यापार शिल्प विज्ञानको भी मैंने नहीं छोड़ा। विविध विषयों पर जो प्रश्नोत्तर चलते सो कभी घटतेही न थे। पर मैं तो यहां उन्हीं बातोंका सारांश लिखूंगा जो अपने देशके विषयमें हुई थीं। मैंने बातोंका सिलसिला यथा शक्ति दुरुस्त कर दिया है। समयादिकी कुछ परवाह न कर सत्यताकी तरफ ध्यान दिया है। मगर अफसोस सिर्फ यही है कि प्रभुकी दलीलें और महाविरे ठीक ठीक प्रकाश न कर सकूंगा क्योंकि एक तो मुझमें इतनी योग्यता नहीं और दूसरे हमारी अंगरेजी भाषा भी गवारी है।

प्रभुके आज्ञानुसार मैंने कहा—"तीसरे विलियमके समय राज्य

में बहुत उलट पलट हुआ था। उसीने फरांसके साथ महायुद्ध ठाना जिसको उसके उत्तराधिकारीने भी चलाया था। इसमें सब बड़े बड़े ईसाई राजा शामिल हुए थे। इस युद्धमें कोई दस लाख याह्न (मनुष्य) खेत रहे, शायद एकसौसे अधिक नगर लिये गये और सैकड़ो जहाज डबोये या जला दिये गये होंगे।"

प्रभु—अच्छा राजा आपसमें एक दूसरेसे लड़तेहै इसका मामूली सबब क्या है?

मै—सबब तो बहुत है पर दो चार भारी भारी सुनाता हू। एक तो राजोंकी राज तृष्णा कभी अघाती नहीं है। दूसरे मन्त्रियों की बदमाशी जो राजोंको युद्धमें लगा कर आप हाथ मारते है और प्रजाकी पुकार राजा तक पहुंचने नही देते। सच पूछिये तो मन्त्री लोग अपना ऐब ढाकनेहीके लिये राजोंको युद्धादिमें फंसा देते है। मतभेदसे भी लाखोंकी जान गई है। मास रोटी है या रोटी मास है—किसी फलका रस लहू है या शराब——बांसुरी बजाना पुण्य है या पाप—डण्डेको अर्थात् क्रूसको चूमना अच्छा है या आगमे जलाना—कोटके लिये बढ़िया रङ्ग कौनहै काला, उजला, लाल या भूरा—कोट लम्बा हो या छोटा, चौड़ा हो या सकड़ साफ हो या मैला—इत्यादि इत्यादि बातोंही पर युद्ध चलता है। सो युद्ध भी कैसा कि जो बरसो चले और जिसमे लाखोंकी जान जाय।

कभी कभी दो राजा तीसरेका राज्य दखल करनेके लिये आपस में लड़ मरते हैं जहा उनका कुछ भी हक नही है। कभी कभी कोई राजा एकके भयसे दूसरेके साथ लड़ जाता है। कभी शत्रुके बहुत जबरदस्त होनेसे और कभी बहुत कमजोर होनेसे भी संग्राम होता है। जो चीज पड़ोसीके पास है उसको हम लेना चाहते है या हमारे पास है उसे पड़ोसी लिया चाहते है, कभी ऐसी बात के लिये लड़ाई होती है। जब तक उससे उस चीजको ले न लें या दे न दें लड़ाई बन्द नही होती। अकाल और महामारीने जिस देशको तबाह कर दिया है और जहा आपसमें फूट फैल गईहै उस

देश पर चढाई करना तो युद्धका एक उचित कारणहै। उस निकट वर्ती मित्रसे भी जिसका राज्य लेलेनेसे हमारा राज्य दृढ और रक्षित हो लडाई करना उचित समझा जाता है। जहां मनुष्य दरिद्र और मूर्ख हैं वहां सेना भेजकर आधोंको मरवा डालना और बाकी को सुसभ्य बनानेके लिये गुलाम बनाना भी न्याय सङ्गत है। किसी राजाने शत्रुके आक्रमणसे बचनेके लिये दूसरे किसी राजाकी सहायता मांगी। उसने आकर सहायताकी पर पीछे शत्रुको भगा कर आपही उसका शत्रु बन बैठा। जिसकी रक्षाके लिये आना उसी को मार डालने, कैद करने, या निकाल बाहर करनेमें बडा नाम और इज्जत होती है। राजाओंमें रक्त वा विवाहसे सम्बन्ध होना भी युद्धका एक कारणहै। नाता जितना निकट होगा लडाई भी उतनीही ज्यादे होगी। गरीब बेचारे भूखों मरते है और अमीर घमण्ड करते हैं। घमण्ड और दरिद्रतासे सदा वैर है। इन कारणोंसे फौजके सिपाहीका काम सबसे इज्जतदार समझा जाता है क्योंकि यह सिपाही अपने निर्दोष जाति भाइयोंके मारनेके लिये रक्खे जाते हैं। उनके जाति भाइयोंने चाहे उनका कुछ न बिगाडा हो पर वह मनमाने तौरसे उनकी हत्या करेंगे।

युरोपमें ऐसे भी बहुतसे गरीब राजा हैं जो आप तो किसीसे लड नहीं सकते परन्तु अपनी फौज दूसरे धनवान् राजाओंको भाडे पर देते हैं। जो रुपये मिलते हैं उनमेंसे चार आने तो सिपाहियो को देते और बारह आने आप लेलेते है। इसीसे उनका गुजारा मजेमें होता है युरोपके उत्तर भागमें ऐसे राजा अनेक है।

प्रभु—तुमने जो कुछ कहा उससे तुम्हारी बुद्धिमानीका विलक्षण पता लगता है। खैर, आनन्दकी बात है कि लज्जा भयसे बडी है और परमेश्वरने भी तुमको ज्यादे दुष्टता करनेके योग्य नहीं बनाया है। तुम्हारा मुंह ऐसा चपटा है कि तुम जबरदस्ती किसी को काट नहीं सकते। तुम्हारे पञ्जे ऐसे छोटे और मुलायम है कि ारा एक याहू तुम्हारे जैसे दर्जन भरके दांत खट्टे कर सकता है।

इस वास्ते तुमने युद्धमें मारे जानेवालोंकी जो गिनती बताई है सो मुझे—"वह चीज जो नहीं है" (झूठ) मालूम पडती है।

प्रभुकी अज्ञानता देख मैं मुस्कराहट रोक न सका। मैं युद्ध विद्यासे अनभिज्ञ न था। मैंने तोप, बन्दूक, काडाबीन, पिस्तौल, गोली, छर्रा, बारूद, तलवार, सङ्गीन, युद्ध, किला घेरना हटाना, चढाई करना, सुरङ्ग खोदना, तोपसे उडाना, जल समास हजार मनुष्य समेत जहाज डबोना, हरएक तरफ बीस बीस हजार आदमियोंका मारा जाना, मरनेके समयका कराहना, अङ्गो का हवामें उडना, धूआ धक्कड, गुलगपाडा, गोलमाल, घोडोंकी टापोंके नीचे कुचल जाना, रनखेतमें कुत्तों भेड़ियों और गिद्धोंका मास खाना, लूटना, छीनना, मूसना, जलाना, उजाडना आदि बातोंका पूरा हाल प्रभुको कह सुनाया। अपने प्यारे देशवासियो के साहसको प्रकाश करनेके लिये कहा था कि मैंने आंखोंसे सैकडो दुश्मनोंको तोपोंके द्वारा उडते तथा उनके अङ्गोंको टुकड़े टुकड़े होकर आकाशसे गिरते देखा है।

मैं और कुछ कहनेको था पर प्रभुने मना किया और कहा— "जो कोई याहुओंका स्वभाव जानता है सो सहजमें विश्वास कर सकता है कि ऐसे निकृष्ट जीवको कहीं ईर्षाके समान धूर्तता और शक्ति होती तो उसके लिये सब काम जो तुमने कहा सम्भव थे। लेकिन तुम्हारी बातोंसे सारी जाति पर मेरी घृणा और भी बढ गई है। ऐसी बातें मैंने पहले कभी नहीं सुनी थीं। पीछे चाहे सुनते सुनते अभ्यास पड जाय लेकिन आज तो सुन कर सिर घूम गया। मैं याहुओंसे घिन करता हूं पर उनके दोषोंको शिकारी पक्षीकी क्रूरतासे और मेरे सुम तोडनेवाले पत्थरोंकी तीक्ष्णतासे अधिक नही समझता हू। लेकिन जो जीव बुद्धिमान बननेका दावा करता है सो अगर ऐसे ऐसे महापापोंको कर सकता हो तो वह अज्ञान पशुओंसे भी गया बीता है। इससे मुझको विश्वास होता है कि तुम लोगोंको अकल फकल कुछ नही है केवल एक

शक्ति है जिससे तुम्हारे स्वाभाविक पाप बढ़ा करते हैं। नदियोंके हिलते हुए जलमें कुढङ्ग वस्तुओंकी परछांही केवल बड़ोंही नहीं वरन् और भी कुरूप मालूम पड़ती है।"

युद्धका विषय समाप्त हुआ। अब दूसरा प्रसङ्ग छिड़ा। मैंने कहा था कि कानूनसे तबाह होजानेके डरसे बहुतसे आदमी देश छोड़ कर चले गये हैं। इस पर वह बोले थे—"तुमने तो पहले कहा था कि कानून प्रजाकी भलाईके लिये बनता है फिर उससे तबाह होनेका डर क्यों? यह बात मेरी समझमें नहीं आई। कानून या कानूनके चलानेवालोंसे तुम्हारा क्या अभिप्राय है सो खुलासा कह जाओ। मैं समझता हूं प्रकृति और ज्ञानही सज्ञान जीवोंको कुपथसे बचा कर सुपथ पर चलानेवाले हैं। तुम भी तो सज्ञान बनते हो कहो आजकल तुम्हारे यहां आईन कानूनका क्या रङ्ग ढङ्ग है?"

मैं बोला—"साहब! आईन कानून भी एक विद्या है जिसमें मेरा पूरा दखल नहीं है पर हां एक बार मुझ पर कुछ अन्याय हुआ तब मैंने एक वकील मुकर्रर किया था पर कुछ लाभ नहीं हुआ। खैर, जहां तक बनेगा मैं आपको सब कह सुनाऊंगा।

"मेरे यहां बहुतसे लोग बने हुए लम्बे चौड़े शब्दोंके द्वारा उजलेको काला और कालेको उजला सिद्ध करनेकी विद्या बचपनसे सीखतेहैं। जो जैसा दाम देताहै उसका काम भी यह लोग वैसाही करते हैं। इन लोगोंकी एक मण्डलीही अलग है। और जितने लोग हैं सो इस मण्डलीके गुलामहैं। इसका एक उदाहरण सुनिये। मान लीजिये किसी पड़ोसीकी आंख मेरी गाय पर लगी। वह लेनेके लिये एक वकील भाड़े करेगा। मुझे भी तब अपना हक दिखलानेके वास्ते एक दूसरा वकील करना पड़ेगा क्योंकि किसीका अपने लिये आप बोलना आईनके विरुद्ध है। इस मामलेमें सच्चा अधिकारी होने पर भी मैं दुहरे नुकसानमें रहूंगा। एक तो मेरे वकील साहबने जन्महीसे झूठकी तरफदारी करनेका

अभ्यास किया है फिर सच्ची बातमे इनकी अकल क्यों काम करने लगी? यह तो उनके लिये अस्वाभाविक कार्य्य है। इच्छा चाहे उनकी बुरी न हो पर वह काम जरूर बुरा कर डालेंगे। दूसरे मेरे वकीलको बहुत सावधानीसे चलना होगा नहीं तो कानूनकी चाल घटानेवालोंकी तरह जजोंकी झिड़किया तथा और और वकीलोंकी फटकार सुननी पड़ेगी। इसलिये गाय बचानेके बस दोही उपाय हैं। एक तो विपक्षीके वकीलको डबल फीस देकर मिला लेना। फिर वह अपने मवक्किलको यह कह कर धोखा देगा कि दावा तुम्हाराही पक्का है। दूसरा यह कि मेरा वकील मेरे दावेको झूठा और शत्रुके दावेको सच्चा यथाशक्ति सिद्ध करे। अगर यह काम तनिक चतुराईसे किया जाय तो मेरे पौ बारह है। आप यह भी जानलें कि यह जज लोग दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकारके मुकद्दमे करते हैं। अच्छे अच्छे वकीलोंमें जो बूढे और आलसी होते है वही जज बनाये जाते है। जन्मभर सत्य और न्यायके विरुद्ध रहनेके कारण जज लोग छल कपट, मिथ्या शपथ और अत्याचारके पक्के पक्षी होजाते है। यहां तक कि सच्चे मुकद्दमोंमें घूस लेना भी पसन्द नहीं करते। सच्चेकी तरफदारी करना वह अपमान समझते है। मैं ऐसे कई जजोंको जानता हू जिन्होंने सच्चे आदमियोंसे भारी घूस न लेकर झूठोंसे हलकी घूस ली है।

वकीलोंमें एक दस्तूर यह है कि जो बात पहले होचुकी है उस कानूनसे फिर कर सकते है। इसलिये यह लोग उन फैसलो को बड़ी सावधानीसे लिख रखते है जो एक बार साधारण न्याय और युक्तिके विरुद्ध होचुके हैं। बुरेसे बुरे मुकद्दमोंके सबूतमें यह लोग इन्हीं फैसलोंको नजीरके बतौर पेश करते है। फिर जजोंकी क्या मजाल जो इनके विरुद्ध कुछ करें।

वकील लोग बहसके समय मुकद्दमेकी असल बातोंको छोड़कर फालतू बातें बड़े जोर शोर और नोक झोकसे बकते हैं। इसी मामलेमें वह कभी नहीं पूछेंगे कि मेरी गाय पर शत्रुका किस

तरह अधिकार पहुँचता है। लेकिन यह जरूर पूछेंगे कि मेरी गऊ लाल है या काली—उसके सींग छोटे है या बड़े – मैं जिस खेत में उसे चराता हूं वह गोल है या चौकोर—वह घरमें दूही जाती है या बाहर—उसके कोई रोग है या नहीं इत्यादि। इसके बाद नजीरें निकलेंगी। फिर मुलतवीकी बारी आवेगी सो बरसों चलेगी। दस बीस तीस सालके बाद नतीजा निकलेगा।

इन वकीलोंकी एक खास गलब्रल भाषा है जो किसीकी समझमें नहीं आती। इसी भाषामें आईन कानून लिखे जाते है यह लोग सबका ऐसा गड़बड़ झाला कर देते हैं कि झूठ सच और न्याय अन्याय कुछ मालूमही नहीं पड़ता है। इसीसे मामलोंमें इतनी देर होती है। जो जमीन छः पीढियोंसे मेरे दखलमें चली आती है वह मेरी है या तीनसौ मील दूर रहनेवाले एक विदेशी की, ऐसे फैसलेके लिये भी तीस साल दरकार है।

उन मुकद्दमोंकी कार्रवाई बहुतही मुख्तसिर और तारीफके लायक है जिनमें सरकार मुद्दई होती है। जज लोग बड़े बड़े शक्तिशाली राजकर्मचारियोंका रङ्ग ढङ्ग देखकर अपराधीको फांसी दे देते या छोड़ देते है पर दिखानेके लिये कानूनकी शरण अवश्य ले लेते हैं।"

प्रभु बीचहीमें बोल उठे—"तुम्हारे कहनेसे मालूम होता है कि तुम्हारे वकील सब बड़े योग्य और गुणवान होते है मगर अफसोस यही है कि दूसरोंको शिक्षा देनेके लिये उन्हें कोई उत्साहित नहीं करता है।" मैंने कहा—"आपका कहना ठीक है लेकिन यह वकील सब अपने पेशेको छोड कर दूसरे कामोंमे निरे जत और लण्ठ होते है। इनसे बोलनेमें जी घिनाता है। यह महानीच और सब विद्याओंके परम बैरी होते हैं। अपने पेशेमें लोगोंको जैसे बहकाते है वैसेही हर वक्त हर बातमें सबको बहकानेके लिये तैयार रहते हैं।

षष्ठ परिच्छेद।



यह प्रभुने ध्यानमें बिलकुल नही आया कि वकील लोग अपने जाति भाइयोको हानि पहुंचानेके लिये क्यों इतने परेशान रहते है। मैंने कहा था कि वह भाडा लेकर ऐसा करते है पर यह भी उनको समझमें नही आया कि भाडा क्या वस्तु है। इसके समझानेमें मुझको अपार कष्ट उठाना पडा था। रुपया क्या है, रुपयेसे क्या होता, रुपया किन धातुओंसे बनता है और रुपयेकी कीमत क्या है सो सब समझा कर मैंने कहा—"जब याहुओं (मनुष्य) के पास खूब रुपये पैसे होते है तब वह बढियासे बढिया पोशाक, अच्छेसे अच्छा घर उत्तमसे उत्तम खान पान, सुन्दरसे सुन्दर स्त्रियां, अधिकसे अधिक भूमि सम्पत्ति आदि जो चाहें खरीद सकते है। मतलब यह कि रुपयेहीसे सब कुछ होता है। पर रुपयेसे कभी किसीका पेट भरता नही। जो लोभी है सो धन बटोरनेके लिये और जो खर्चीले है सो उडानेके लिये हाय हाय करते रहते हैं। गरीब बेचारे मेहनत करते है और अमीर मजा उडाते हैं। हजार पीछे एकही बडा आदमी निकलता है नहीं तो सब दु:खी। जो रोज मजूरी करके और रूखा सूखा खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं कुछ बडे आदमियोको आराम पहुंचानेहीके लिये यह बिचारे परिश्रम करते है।

इस विषयमें मैंने और भी बहुत कुछ कहा पर उनकी समझमें कुछ न आया। वह बोले—"जो कुछ जमीनमें उपजता है उस पर सबका दावा है और विशेष कर उनका है जो सबके सिरताज होते हैं। अच्छा यह बताओ कि उत्तमसे उत्तम खान पान क्या है? सबको इसका टोटा क्यों होता है?" यह सुन कर मैंने सब खानों के नाम तथा उनके बनानेकी तरकीबें जो याद थी कह सुनाई। यह भी मैंने कहा कि दुनियाके हर एक हिस्सेमें जहाज भेजे बिना खाने पीनेकी सामग्रियां जुट नही सकती है। स्त्रियां जब तक

सारी दुनियाके तीन चक्कर न लगा आवे तब तक उनके मनकी चीजकी नहीं मिलती है। प्रभु बोल उठे—"वह देश बडा सत्यानाशी है जहा खानेके लिये कुछ नही मिलता है। खाना तो एक ओर रहा जहा पानीका भी ठिकाना नही है।"

मै—नहीं साहब यह बात नहीं है इङ्गलैण्डवाले जितना खा सकते है उससे तिगुनी उपज वहां होती है। इसके सिवा अन्नकी और फलकी सुन्दर शरावे बहुतायतसे बनती हैं। और भी जरूरत की सब चीजें वहा मिलतीहै। पर मर्दोंके ऐशो अशरत तथा औरतों की नाज बरदारीके लिये अपने यहाकी जरूरतकी बहुतेरी चोजे दूसरे देशको भेजनी पडतीहै और वहांसे बदलेमें रोग, मूर्खता और पापकी जड लेनी पडती है। इसीसे हमारे बहुतेरे भाई लाचार होकर पेटके लिये भीख मागते, डकैती करते, चोरी करते, ठगते, कुटनापन करते, खुशामद करते, झूठी कसम खाते, जाल करते, जूआ खेलते, झूठ बोलते, चापलूसी करते, गुण्डई करते, वोट बेचते, कलम घसीटते, नचवोंकी तरफ निहारते, विष देते, निन्दा करते, दम्भ करते, व्यभिचार करते और न जाने क्या क्या करते है।

कुछ पानीके बदले हम लोग शराब नहीं पीते है जीको खुश करनेके लिये पीते हैं। यह पानीकी तरह एक पतली चीज है। इसके पीनेसे आदमी मस्त होजाता है, चिन्ता फिकर दूर होजाती है, अच्छी अच्छी तरङ्गे मनमें उठती हैं, भय भाग जाता है, बडी बडी आशाये होती है, शरीर निश्चल होजाता है, ज्ञान लुप्त हो जाता है और गाढ निद्रा आती है। यह सब कुछ होता है पर पीछे रोग धर दबाते है और शक्ति चली जाती है। फिर जीवन भार होजाता है।

बहुत लोग बडे आदमियोंको और आपसमें एक दूसरेको नित्य के सुखकी सामग्री या जरूरी चीजें देकर अपना गुजारा करते है। अपनी कहता हूँ सुनिये जब मैं अपने देशमें कपडोंसे लैस होकर ा हू तो मेरी देह पर सैकडों सौदागरोंकी चीजें रहती है।

इमारत और घरके असबावोंमें हजारों रुपयेकी और प्राणप्यारीके शृङ्गारमें तो न जाने कितनेकी रहती है।

मैं आपसे निवेदन कर चुका हूँ कि मेरे देशमें बहुतसे लोग बीमारियोंसे मरते है। कुछ लोग इन्हीं बीमारियोंको चङ्गा करके अपनी जीविका चलाते है।

प्रभु- यह बात मेरे ध्यानमें नहीं आई। हमारे हिनहिन सब तो मरनेसे सिर्फ दो चार दिन पहले कमजोर और सुस्त होजाते हैं। सयोगसे कभी कोई अङ्ग भङ्ग भी होजाता है। यह बात तो बिलकुल असम्भवसी मालूम होती है कि प्रकृति देवी तुम्हारी देहमें रोग पैदा होने देगी क्योंकि उसके सब कार्य्य पूर्ण होते है अपूर्ण नही। तुम लोग इतने रोगी क्यो होते हो? इसका कारण क्या है?

मैं—हम लोग हजारो तरहकी चीजे खाते है जो पेटमें जाकर अपना जुदा जुदा असर डालती है। इसके सिवा जब भूख नहीं तब हम लोग खा लेते है। जब प्यास नही तब पानी पी लेते है। बिना कुछ खाये खाली पेटमें रात रातभर तेज शराब पीते रहतेहैं। इससे शरीर शिथिल होजाता है, भूख मर जाती है और देह गर्म हो आती है। वेश्याओंसे एक प्रकारका रोग होता है जिससे हम लोगोंकी हड्डिया तक गल जाती है।

यह और बहुतसी दूसरी बीमारिया बापसे बेटेको मिलती है। इसलिये बहुतेरे आदमी रोगकी गठरी लादे जन्म लेते हैं। कहा तक कोई नाम बतावेगा रोग अनन्त है। मनुष्यका शरीरही अगर सच पूछिये तो रोगका घर है। बीमारोंको चङ्गा करनेके लिये एक प्रकारके लोग है जो लडकपनहीसे यह काम सीखते है।

सच्चे रोगोंके सिवा बहुतसे मनगढन्त भी है। वैद्यगण इनकी मनगढन्त दवा भी तैयार करते है। इन रोगों और औषधोंके अलग अलग नाम है। इन रोगोंसे प्राय औरतेंही बीमार होती है।

वैद्यगण भविष्य कहनेमें बडे पटु है। इनके वचन शायदही झूठ निकलते है अगर वैद्यराजके मनमें कुछ बोना हुआ तो

मस्त्री बीमारियोंमें आप मृत्युहीकी बात पहले कहते है क्योंकि यह उनके इख्तियारकी बात है। आराम करनेके बाद कहीं रोगीके अच्छे लक्षण दैव संयोगसे दिखाई पडे तो आप झूठे बननेके डरसे एकाध पुडिया ऐसी छोड देते है कि काम पूरा हो जाता है।

जिन स्त्री पुरुषोंमें अनबन होजाती है उनके लिये वैद्य विशेष कर लाभकारी है। ज्येष्ठ पुत्र, प्रधान मन्त्री और राजकुमारीको भी इनसे लाभ पहुंचता है।

मैंने पहले किसी मौके पर अपने देशकी शासन प्रणालीके विषयमें जिसकी धाक सारे संसारमें है कुछ कहा था। उस समय प्रधना मन्त्रीका भी जिकर आया था। आज फिर प्रधान मन्त्री का नाम सुन कर प्रभु पूछ बैठे कि यह लोग किस तरहके याहू (आदमी) होते है।

मैं पुन: यों कहने लगा—"राज्यके प्रधान मन्त्री भी एक प्रकार के जीवही है जिनके न हर्ष है न शोक, न दया न मया, न काम न क्रोध, न प्रेम न घृणा और न कोई विषय वासनाही है। है केवल धन, प्रभुता और उपाधि पानेकी उत्कट अभिलाषा। वह बोलते सब कुछ है पर उससे उनके मनका भाव प्रगट नहीं होता है। वह इस इरादेसे कभी सत्य नहीं बोलते कि कोई उसे सत्य समझले और न इस इरादेसे झूठही बोलते है, कि कोई उसे झूठ जानले। पीठ पीछे जिनकी वह शिकायत करते है समझलो उनके पौ बारह है और जिनकी मुंह पर तारीफ करें बस जानलो कि उनके दिन खोटे आये है। जब मन्त्रीगण वादा करें—विशेष कर जब कसम खाकर वादा करें तो समझ लेना चाहिये कि लक्षण बुरे है। फिर बुद्धिमान लोग ठहरते नहीं आशा छोड कर चल देते हैं।

प्रधान मन्त्रीके पद पर पहुंचनेके बस तीनही उपाय है। पहला जोड़, बेटी या बहनको चालाकीके साथ दूसरेके हवाले करना, [दू]सरा आगेके मन्त्रियोंका दोष निकालना और तीसरा सभा-समाज

में राज दरबारके कलङ्को पर उत्साह पूर्वक लेकचर फटकारना। लेकिन चतुर राजा उन्हींको अधिक पसन्द करतेहैं जो पिछले उपाय का अभ्यास करते है। क्योंकि ऐसेही परमोत्साही लोग उनकी नाले हां मिला कर सदासे ठकुरसुहाती कहते आये है। मन्त्रीही सब कामोंके कर्त्ता धर्त्ता और विधाता होते है। वह सीनेटवालोंको रिशवत देकर अपनी शक्ति बनाये रखते है। वह सब लोगोंसे रुपये भी खूब लूटते है। पर अन्तमें—"* एक्ट आफ इण्डेमनिटी" की दुहाई देकर वह लोग निकल जाते है। हिसाब किताव पूछना-तो दूर रहा कोई उनके सामने चू तक नहीं करता है।

प्रधान मन्त्रीका महल भी एक कारखानाही समझिये जहां नित्य नये मन्त्री गढे जाते हैं। नौकर, चाकर और दरबान लोग भी अपने मालिककी नकल करके जुदा जुदा महकमोंके मन्त्री हो जाते हैं। सिर्फ यही नहीं बलक झूठ और घूसमें उनसे भी आगे बढ जाना सीखते है। इससे फल यह होता है कि वह ऊंचे दर्जे के लोगोंको चेला बना कर अपना मतलब गाठते और कभी कभी चालाकी और बेशर्मीसे धीरे धीरे अपने स्वामीहोंके उत्तराधिकारी बन जाते है।

प्रधान मन्त्रीके यहां वृद्ध वेश्या या मुंहलगे चपरासीकी खूब चलती बनती है। इन्हीं लोगोंके द्वारा आपकी कृपा सर्वत्र बिकती फिरती है। राजकाजके चलानेवाले अगर यही लोग कहे जायं तो कुछ अत्युक्ति नहीं है।

एक दिन मैंने अपने यहांके बडे आदमियोंकी कुछ चर्चा की थी। प्रभु प्रसन्न होकर बोले—"तुम भी जरूर किसी बडे आदमी के बेटे हो क्योंकि तुम हमारे याहुओंसे रङ्ग, रूप और सफाईमें बहुत बढे बढे हो। उतनी फुर्ती और बल तो तुममें नहीं है क्योंकि

---

* Act of indemnity (क्षति पूर्णकी धारा)। द्वितीय चार्लस ने अमलमें यह कानून प्रथम चार्लसके विरोधियोंको क्षमा प्रदान करनेके लिये बनाया।

तुम्हारी रहन सहन दूसरे ढङ्गकी है। लेकिन तुम बोलना जानते हो। सिर्फ यही नहीं तुम्हें अक्लसे भी कुछ सरोकार है। इसीसे छिनछिन लोग तुम्हें अद्भुत याद्द करते हे।"

इस पर मैंने कहा—"आपने कृपा कर अपने श्रीमुखसे मेरी प्रशंसाकी इसके लिये आपको धन्यवाद है परन्तु मैं यह कह देना उचित समझता हूं कि मै बडे आदमीका लडका नहीं हूं। मेरे मा बाप सीधे सादे सच्चे भलेमानस थे। अवस्था औडनकी कुछ ऐसी अच्छी न थी। धनके बिना मेरी शिक्षा भी पूरे तौरसे न होसकी। योंही टुटरूं टूं कुछ थोडासा पढ लिया हे। हमारे यहाके बडे आदमी कैसे होते हैं सो आप अभी नही जानते है। उनका ढङ्गही निराला है। बडे आदमियोंके लडके बचपनहीसे सुस्ती और ऐयाशीकी तालीम पाते है और बडे होने पर पुरुषार्थको नष्ट कर कुल-टाओंसे विकट रोग मोल लेते हे। अपना घर फूंक तमाशा देख कर वह लोग केवल रुपयेके लोभसे नीच, कुरूप, रोगी स्त्रियोंके साथ व्याह करते है पर उनसे सन्तुष्ट कदापि नहीं होते। इसीसे उनकी सन्तान भी रोगी, दुर्वल और अपोगण्ड प्राय उत्पन्न होती है। अगर स्त्रियोने पडोस पडोस या नौकर चाकरोंमेसे किसी हट्टे कट्टे तन्दुरुस्तको चुनलिया तो खैर है नहीं तो तीसरीही पीढीमें वसबोल जाती है। कमजोरी, बीमारी, दुबलापन और पीलापनही बडे आदमियोंकी सच्ची पहचान है। हट्टा कट्टा और मजबूत होना उनके लिये बेइज्जती है क्योंकि सब कोई उन्हें साईस या गाडीवानसे पैदा हुआ बताने लगेंगे। वह लोग तिल्ली, ढिलाई, मूर्खता, सनक, कामासक्ति और घमण्डके मारे जैसे शरीरसे हीन होते हैं वैसेही बुद्धिसे भी।

इन्ही लोगोंकी सलाहके बिना आईन कानून न बनता है, न बदलता है और न उठता है। यही लोग हमारी भूमि सम्पत्तिके विषयमें जो कुछ निर्णय कर देतेहै सो अचल होजाता है। उसका खण्डन फिर कोई नहीं कर सकता है।

सप्तम परिच्छेद।

पाठकगण! आप आश्चर्य करेंगे कि जो मुझे, याहू समझ कर समस्त मानव जातिके प्रति घृणा प्रकाश करे उसके सामने मैंने अपने यहांकी सब बातें खोलकर कैसे कह दीं। पर इसका कारण है। मैं स्पष्ट कहता हूं कि उन भले चारपायोंके सद्गुणोंने मेरी आंखें खोल दी। उनकी सङ्गतसे मेरी समझ ऐसी होगई कि मैं मनुष्यके कार्य्य और वासना सावको दूसरीही दृष्टिसे देखने लगा। मैंने मनुष्य मर्य्यादाकी रक्षा करनेके योग्य नहीं समझा। और समझहीके भला क्या करता? प्रभु तो ऐसे ढङ्गसे सब बातें पूछते थे कि उनका छिपाना मेरे लिये असम्भवही था। इसके अतिरिक्त वह हजारों दोष मुझमें नित्य निकाला करते थे जिनकी खबर पहले मुझको कुछ भी न थी। हम लोगोंमेंसे कोई भी उन दोषों को दोष करके नहीं मानेगा। प्रभुका अनुकरण कर मैं भी असत्य भाषण और कपटाचारसे बहुत भागने लगा। सत्य ऐसा प्रिय मालूम हुआ कि मैं उस पर सब कुछ वार बैठा।

एक वर्षके भीतरही वहांवालों पर मेरी इतनी श्रद्धाभक्ति होगई कि मैंने जीमें ठान लिया कि अब कभी स्वदेशको न लौटूंगा। यहीं हिनहिनोंके साथ जहां पापका नाम तक नहींहै जीवनका शेष भाग बिताऊंगा। पर मेरे भोंडे भाग्यमें उस पुण्यभूमिका निवास लिखा नहीं। हाय मनकी मनहीमें रही। जो हो, प्रभु जैसे खोद खोद कर पूछनेवालेके आगे भी मैंने अपने देशवासियोंके दोषोंको जहां तक बना न्यून करके तथा सभालके कथन किया था। ऐसा कौन है जो अपनी जन्मभूमिका पक्षपात नहीं करता है?

जब मैंने सब प्रश्नोंका उत्तर दिया तो प्रभु कुछ सन्तुष्टसे मालूम हुए। एक दिन बड़े तड़के आपने बुला भेजा। जब मैं पहुंचा तो पासही बैठनेकी आज्ञा मिली। मैं वहीं बैठ गया। इतना आदर मेरा और कभी नहीं हुआ था। आप बोले—"तुम्हारी और तुम्हारे

देशकी बात मैं सोच रहा हूं। बहुत सोचने विचारनेसे मालूम होता है कि तुम भी एक प्रकारके जानवरही हो लेकिन न जाने कैसे तुम पर मनुष्यका जरासा छींटा पड गया है। पर तुम लोग उस अक्लसे और कुछ काम न लेकर केवल अपने स्वभाविक दोषोंको बढाते हो और सृष्टिके विरुद्ध नये नये पाप मनमें गढते हो। परमात्माने जो कुछ शक्ति तुम्हें प्रदानकी थी सो तुम जान बूझ कर खो बैठे हो। पहले तुमको इतना अभाव न था पर तुमने अपने अभावोंको बहुत बढा लिया है। अब उन्हीके पूर्ण करनेमें तुम अपना सारा जीवन नष्ट कर देते हो। अभाव पूर्ण करनेके लिये नित्य नई बात गढते हो। साधारण याहूके समान भी बल या फुर्ती तुममें नहीं है। तुम पिछले पैरोंसे डगमगाते हुए चलते हो। अपने पञ्जोंको तुमने न जाने कैसे निकम्मा कर दिया है अब उनसे तुम अपनी रक्षा भी नहीं कर सकते हो। धूपसे बचनेके लिये ठुड्डी पर बाल थे सो भी सफाचट है। याहुओंकी तरह तुम तेजी से न दौड सकते और न पेडों पर चढ सकते हो।

आईन कानून भी तुम्हारी बुद्धि तथा धर्मकी अपूर्णता होके फल हैं। क्योंकि सज्ञान जीवोंका शासन करनेके लिये केवल बुद्धिहीकी आवश्यकता है। तुमने अपने देशके लोगोंके विषयमें जितना कहा है उससे भी तुम अपनी बुद्धिमानीका दावा नहीं कर सकते। भाई बन्दोंके मुलाहिजेसे तुमने बहुतसी बातें छिपाई तथा जो नहीं हैं सो प्रायः कही हैं।

"तुम्हारा रङ्ग रूप तो याहुओंकासा है पर तेजी, फुर्ती, शक्ति तथा पञ्जे वैसे नहीं हैं। तुमने अपने आहार, विहार, चाल चलन, काम काजके बारेमें जो कुछ कहा है उससे साफ तुम्हारे मनकी वृत्तियां मालूम होती हैं। याहू लोग आपसमें एक दूसरेसे जितनी घृणा करते हैं उतनी दूसरे जानवरोंसे नहीं करते। इसका सबब भी उनकी सूरतका भद्दापनही है। अपना मुँह तो आप कोई देखता नहीं पर दूसरोंके देख कर सबही नाक सिकोडते हैं। तुम लोग

अपने शरीरको ढांके रहते हो सो बुरा नहीं है। इससे तुम्हारे बहुतेरे ऐब छिपे रहतेहैं। कोई किसीके ऐबोंको नही देख सकता है। अगर तुम लोग अपने अङ्गोंको नहीं छिपाते तो बडी मुश्किल होती। जिन कारणोंसे तुम लोग आपसमें लडते हो उन्हीं कारणों से याहू भी लडते हैं। अगर पचास याहुओंकी खुराक पांचके आगे फेंक दी जाय तो वह शान्त होकर खानेके बदले आपसमें लड मरेंगे। हर एक चाहेगा कि मैंही सब हडप जाऊं। इसी लिये इन सबको मैदानमें चरानेके लिये एक चरवाहा रक्खा जाता है और जो घरमें रहते हैं सो अलग अलग फासले पर बाध दिये जाते हैं। जब कोई सवेशी उमर पाकर या किसी घटनासे मर जाता है तो कोई हिनहिन अपने याहुओंके मारे उसे उठाने भी नहीं पाता है। आस पासके गांवोंके याहू उस लाशको लेनेके लिये दल बांध कर चढ दौडते हैं। उन दलोंमे वैसाही युद्ध होता है जैसा तुमने अपने यहां कहा है। पञ्जोंसे आपसमें वह सब खूब नोच खसोट करते हैं पर मुश्किलसे कोई किसीको मार सकता है क्योंकि तुम लोगोंकी तरह उनके पास कोई हथियार नही है। कभी कभी आस पासके याहुओंमें खूब घनघोर सग्राम होता है पर उसका कुछ कारण दिखाई नही पडता। एक दलवाले दूसरे दलवालों पर चढाई करनेका मौका ढूढा करते है। मौका पातेही अचानक उन पर टूट पडते हैं। पर जब मामला टेढ़ देखते हैं तो लौट आते है। जब लडनेके लिये कोई शत्रु नहीं मिलता है तो यह आपसहीमें घमसान मचा देते हैं। इसीको तुम्हारी भाषामें—'सिविलवार' (अन्तर्युद्ध) कहते है।

यहां कई स्थानोंमें एक प्रकारके चमकीले पत्थर होते है जो कई रङ्गके है। याहू इन पत्थरोंको बहुतही पसन्द करते हैं यहां तक कि अगर कोई पत्थर भूमिमें भी गडा हो तो उसे नहीं छोडते हैं। दिन भर पञ्जोंसे मट्टी खोद कर पत्थर निकालही लेते है। फिर छिपा कर मान्दमें जमा करते हैं। तो भी उनको चैन नहीं

होता। उसे यही खटका लगा रहता है कि कोई उन पत्थरों को चुरा न ले। इसीसे वह अपने खजानेकी रखवाली जी जानसे करते हैं। मैं नही कह सकता कि क्यों याहू लोग इन पत्थरोंके लिये जान देते हैं और उनका क्या काम इनसे निकलता है। शायद हम लोगोंकी तरह याहूभी लालची होते हैं। एक बार मैंने परीक्षाके लिये एक याहूके पत्थरोंको चुपचाप उसकी मान्दसे उठवा मंगाया। जब उसने अपने खजानेको खाली पाया तो लगा बड़े जोरसे डाढ़े मार कर रोने। उसके रोनेकी आवाज सुन कर सब याहू इकट्ठे होगये। वह झुंझला कर सबको नोचने खसोटने लगा। खाना पीना सोना सब छोड़कर चुप चाप मन मलीन तनछीन होकर बैठा रहता था। जब मैंने फिर चुपकेसे उसके पत्थर जहाँके तहाँ रखवा दिये तब वह तुरत अच्छा होगया। अब वह मजेमें सब काम काज करता है लेकिन पत्थरोंको कहीं दूसरी जगह छिपा आया है।

"जहां यह चमकीले पत्थर बहुतायतसे होते हैं वहां अड़ोस पड़ोसके याहू अकसर जबरदस्ती घुस कर लूट पाट मचाते हैं बस भयङ्कर युद्ध ठन जाता है और खूब मार काट होती है।

और यह तो साधारण बात है कि जब दो याहुओंको खेतमें एक पत्थर मिल जाता है तब वह परस्पर लड़ने लगते हैं। इतनेमें एक तीसरा उसे लेकर रफू चक्कर होता है। तुम्हारे यहांके मुकद्दमोंकी भी बस यही गति है।" अपने लोगोंकी मान रक्षाके लिये यहां पर प्रभुकी हांमें हां मिलानाही मैंने उचित समझा पर वास्तवमें यह बात नही है। क्योंकि वहां तो मुद्दई मुद्दालेह उस पत्थरके सिवा और कुछ नहीं खोते परन्तु यहां जब तक मुद्दई या मुद्दालेहके पास एक कौड़ी भी बचती है अदालत मुकद्दमेकी फैसल नही करती। जब दोनों कङ्गाल होजाते हैं तब डिग्री या डिसमिस करती है।

प्रभु पुन कहने लगे—"याहू बड़ेही पेटू होते है न जाने इनकी कैसी भूख है। घास पात, फल मूल, सड़ा गला मास जो

कुछ इनके सामने आता है सबको सकोस जाते हैं। पेटहीके कारण याहू ऐसे घृणित होगये हैं। इन लोगोंकी प्रकृति भी विलक्षण है। यह घरकी बढ़ियासे बढ़िया चीजको पसन्द नहीं करते पर बाहरसे जो कुछ चुरा कर या लूट कर लाते हैं उसे बड़े प्रेमके साथ खाते हैं। अगर कहीं बड़ा शिकार हाथ लगा तो फिर क्या पूछना है? इतना खायगे कि पेट फटने लगेगा। पर यह लोग एक जड़ी भी ऐसी जानते हैं कि जिसके खातेही सब चीजें आपही निकल जाती हैं।

एक तरहकी जड़ी और है जो बहुत मुश्किलसे मिलती है। इन जड़ीमें खूब रस होता है। याहू बड़े चावसे इसको पीते हैं। शराबसे जो दशा तुम लोगोंकी होतीहै वही इन सबकी उस रससे। रस पान कर याहू गण आपसमें लिपटते हैं, बकोटते हैं, भूँकते हैं, दांत निकालते हैं, किलकारी मारते हैं, झूमते हैं, चलते हैं, गिरते हैं, पड़ते हैं और फिर टांग फैलाकर कीचड़में सो जातेहैं।"

सचमुच वहां याहुओंके सिवा और कोई बीमार नहीं पड़ता है सो वह भी अपने यहांके घोड़ोंसे बहुत कम। एक बड़े मैले और पेटू होते हैं बस इसीसे इनके बीमारियां भी होती है। इन बीमारियोंका कोई खास नाम नहीं है। साधारणत' यह 'याहूके रोग' के नामसे प्रसिद्ध हैं। इनकी दवा यही है कि इनके मलमूत्रको मिला कर जबरदस्ती इनके मुंहमें डाल दिया। इससे फायदा भी खूब होता है। सर्वसाधारणके उपकारके निमित्त मैं चाहता हूँ कि इस दवाका प्रचार मेरे देशमें भी होजाय।

प्रभुने पुन कहना आरम्भ किया—"लिखने पढ़ने, राजकाज चलाने, कारीगरी और दस्तकारीमें तो हमारे और तुम्हारे यहांके याहू बराबर नहीं मालूम होते। जिन विषयोंमें तुम्हारा उनका स्वभाव मिलता है आज उन्हींकी कुछ बातें कहता हूं। मैंने सुना है कि याहुओंके गरोहोंमें एक एक सरदार होता है। सबसे बदसूरत और शैतान याहूको सरदार बनाया जाता है। हर एक

सरदारके पास एक एक मुसाहिव रहता है जो सब बातोंमें सरदार ही के समान होता है। सरदारके तलवे चाटना और याहू स्त्रिया उसको मान्दमें पहुंचानाही मुसाहिवका काम है। सरदार प्रसन्न होकर इनाममें गदहेके मांसका एकाध टुकड़ा कभी कभी दे देता है। शेष याहूगण मुसाहिबसे अत्यन्त घृणा करतेहैं। इसीसे विचारा डरके मारे सदा सरदारकी देहसे चिपटा रहताहै। जव तक अधिक दुष्ट याहू नहीं मिलता तव तक पुराना मुसाहिव बना रहता है। उसके मिलतेही पुरानेको धता बताई जाती है। फिर वेचारे पर बडी कडी पडती है। उस गरीबके सब छोटे बड़े, और मर्द, बूढे जवान याहू दल बांध कर नये मुसाहिबके साथ आते हैं और पुराने मुसाहिबको सिरसे पैर तक मलमूत्रसे भर देते हैं। अब तुम्हीं वता सकते हो कि तुम्हारे यहांके मुसाहिवों और प्रधान मन्त्रियोंसे यह बात कहा तक मिलती जुलती है।"

इस विद्वेष पूर्ण आक्षेपके उत्तर देनेका साहस मुझे नहीं हुआ। एक साधारण कुत्तेकी बुद्धिसे भी जो अपने झुण्डके सरदार कुत्तेकी आवाज पहचान कर धावा करता है और कभी चूकता नहीं आदमियोंकी बुद्धिको प्रभुने हेय समझ लिया। हा हन्त।।

प्रभु फिर बोले—"याहुओंकी कुछ बातें बडी विचित्र हे पर तुमने तो अपने देशका हाल कहते समय इस विषयमें कुछ कहाही नहीं। अच्छा सुनो। और जानवरोंकी तरह याहू नारियों पर सब याहू नरोंका समान अधिकार है। पर अन्तर यही है कि याहू स्त्रिया पैर भारी होने पर भी नरोंको बुलाती है और पुरुष लोग आपसमें जिस प्रकार लडते भगडते हैं उसी प्रकार स्त्रियोंसे भी। यह दोनों चालें ऐसी गन्दी है कि कोई इन्हें पसन्द नही करता है। सब जीव जन्तु साफ सुथरा रहना चाहते हैं पर हमारे याहूओंको गन्दगीही पसन्द है। दुष्ट भी आप परले सिरेके होते हैं।"

इन दोनों बातोंका अगर कोई मुहतोड जवाब होता तो मैं जरूर देतापर क्या करू कुछ जवाब मिला नहीं इससे चुप होरहा।

अगर एक सूअर भी वहां मिल जाता तो मैं जरूर आदमियोंको हिमायत करता पर भाग्यके दोषसे वह भी वहां न मिला। वाराह याहुओंसे चाहे सुन्दर हो पर स्वच्छतामें तद्रूपही है। प्रभु उसका मैला खाना और कीचमें लोटना पोटना देख लेते तो वह भी इस बातको अवश्य स्वीकार करते।

प्रभुने अपने नौकरोंसे यह भी सुनाथा कि कभी कभी कोई याहु एक कानेमें लेट कर भूंकता है, कराहता है और जब कोई पास जाता है तब गुर्राता है वह देखनेमें खूब मोटा ताना मालूम होता है पर कुछ खाता पीता नहीं। नौकरोंको भी मालूम न हुआ कि वह क्यों ऐसा करता है। इसके आराम करनेको बस एकही दवा है वह यह कि उससे खूब कड़ी मिहनत लेना। मेहनतके बाद वह आपही होशमें आजाता है। मैं प्रभु की यह बात सुन कर चुपका होरहा। बोलनेसे शायद अपने लोगोंकी कुछ बुराई हो बस इसी ख्यालसे मैं कुछ न बोला। आलसी, विलासी और धनिकोंके रोगका कारण अब मुझे मालूम होगया। इन लोगोंसे भी खूब परिश्रम कराना चाहिये, परिश्रमके द्वारा इनको आराम करनेका भार मैं लेता हूं।

प्रभुने यह भी कहाथा कि याहु स्त्रियां अकसर नदीके तीर या झाड़ियोंके पीछे खड़ी होकर आने जानेवाले जवान याहुओंसे आंखे लड़ाती हैं। चोंचलेके साथ कभी प्रगट होती हैं और कभी छिप जाती है। उस समय उनकी देहसे बड़ी गन्दी बू निकलती है। और जब कोई मर्द पीछा करता है तो धीरे धीरे आगे बढ़ जाती हैं मगर पीछे फिर फिर ताकती भी जाती हैं। नखरेसे अपने डर जानेका भी स्वांग लाती हैं। इन ढकोसलोंके बाद वह सब सुबीते की उन जगहोंमें पहुंच जाती हैं जहां वह जानती है कि वह पीछा करनेवाला भी आपहुंचेगा।

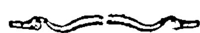
इन सबके बीचमें अगर कोई ऊपरी औरत आ पड़ती है तो चार पांच जनी उसे घेर कर खूब दिक करती हैं। कोई घूरती है

कोई किचकिचाती है, कोई मुँह बनाती है और कोई उसकी सारी देहको सूँघती है। फिर नाक भौंह सिकोड कर सब चल देती हैं।

प्रभुने देखी या सुनी हुई जो बातें कहीं उनमें शायद कुछ नोन मिर्च उन्होंने जरूर लगाया होगा। जो हो मुझे यह जानकर बडाही आश्चर्य और दु:ख हुआ कि कामेच्छा, कुलटापन, निन्दा और चवाव करना स्त्रियोंका स्वाभाविक धर्म है।

जिन दिनों बात चीत होती थी मेरे मनमें बराबर यही खटका लगा रहता था कि प्रभु उन अस्वाभाविक दोषोंका कलङ्क कहीं याहुओं पर न लगा बैठें जिनमें हमारे स्त्री पुरुष साधारणतः लिप्त रहते हैं। पर प्रभुने इस विषयमें कुछ नहीं कहा इससे मालूम होता है कि प्रकृतिदेवीने यह सब नही सिखाया है यह सब हमारे शिल्प और ज्ञान विज्ञानहीका फल है।

अष्टम परिच्छेद।



पाठकगण। मेरे प्रभुजी आखिर घोडेही तो ठहरे उन्हें हम मनुष्यों के चाल व्यवहारसे क्या मतलब? पर याहुओंकी बाबत उन्होंने जो कुछ कथन किया सो मुझ पर या मेरे देशवालों पर मजेमें घटता था। मैंने सोचा चलो मैं भी याहुओंसे मिल कर कुछ नई नई बातें निकालूं। इसलिये मैं प्रभुसे पूछ कर अकसर आस पासके याहुओंकी जमातमें जाता था। इन जघन्य जीवों पर मेरी अपार घृणा देख कर ही प्रभुको विश्वास था कि इनकी सङ्गत मेरा कुछ बिगाड नही सकती है। इसीसे जब मैं पूछता तब वह आज्ञा दे देते थे। सिर्फ यही नही हिफाजतके लिये एक नौकर घोडेको भी साथ कर देते थे जो बडा सच्चा और स्वभावका अच्छा था। अगर यह न होता तो मैं ऐसी जोखमकी जगहमें जानेकी हिम्मत भी नही करता। क्योंकि इन दुष्टोंने वहां पहुंचने पर पहले बैसा सताया था सो मैं पाठकोंसे आगे निवेदन कर चुका हूं। इससे

बाद भी दो चार बार मैं इनके चङ्गुलमें फंसते फंसते बच गया हूं। उस समय मेरे पास कटार भी न था पर परमात्माने कुशल की। पीछे इन सबने यह समझ लिया कि मैं भी उन्हीकी जातिका हूं। मैं अपने रक्षकके सामने अकसर बाहें तथा छाती खोल कर उन्हें दिखलाता था। वह सबके सब हिम्मत करके मेरे कुछ पास आते और बन्दरोंकी भांति मेरी नकल करते थे। वनके कव्वे किसी पालतू कव्वेको टोपी और मोजे डाटे देख कर जैसे का का करते हैं वैसेही मुझे देख कर वह करते थे।

याहू लड़कपनहीसे बड़े तेज होते हैं। एक बार मैंने याहूका एक बच्चा जो तीन वर्षकाथा पकड़ लिया। मैंने पुचकार कर उसको बहुतेरा चुप करना चाहा पर वह क्यों चुप होने लगा ? वह लगा बड़े जोरसे चीख मारकर रोने और हबकने। आखिर मैंने आजिज होकर उसे छोड़ दिया। इतनेमें उसकी रुलाई सुन कर बहुतसे बूढ़े याहू जमा होगये। बच्चा भागही गया था और रक्षक घोड़ा वहीं खड़ा था इससे मेरे पास आनेका साहस किसीको नहीं हुआ। उस बच्चेके बदनसे नेवले और लोमड़ीसे भी बदतर गन्ध निकलती थी। उस दुर्गन्धको नाक सह नहीं सकती थी। हां एक बात कहना मैं भूलही गया वह यह कि जब मैं उस दुष्ट बच्चे को हाथमें लिये था उसने मेरी सारी पोशाक मूतसे खराब करदी। उसके पेशाबका रङ्ग पीला था। भाग्यसे निकटही एक सोता बह रहा था। उसमें जाकर मैंने कपड़ोंको खूब अच्छी तरहसे धो डाला जब तक कपड़े सब सूखे नहीं प्रभुके सामने जानेकी मेरी हिम्मत नहीं पड़ी थी।

जो कुछ मैंने देखा भाला, उससे मालूम होता है कि याहूगण शिक्षा ग्रहण करनेमें सब जानवरोंसे गये बीते हैं। बोझ ढोने या गाड़ी खींचनेके सिवा यह और कुछ नहीं कर सकते हैं। इसका कारण इनका दुराग्रहही है। यह अत्यन्त धूर्त्त, दुष्ट, विश्वासघातक तथा प्रतिहिंसक होनेके अतिरिक्त बड़ेही बली, परिश्रमी मगर

डरपोक होते है। उउत भी पल्ले सिरेके हैं। नीचता और निष्ठु-रता तो इनमे कूट कूट कर भरी हुई है। लाल बालवाले औरों की अपेक्षा अधिक कामी और दुष्ट होते हैं पर बल और फुर्तीमे भी सबसे चढे बढे होते हैं।

छिनछिन लोग उपस्थित कामोंके लिये कुछ याहुओंको घरके पासही झोंपडोंमें रखते हैं। बाकी चरनेके वास्ते मैदानमें भेज दिये जाते है। वहा वह सब जडे खोट कर खाते तथा घास चरते हैं। कभी कभी मुर्दों और चूहोंको भी ढूढ कर बडे चावसे खाते हैं। नखूसे बडे बडे बिल खोद कर सोते है। औरते अपने बच्चो को लेकर सोतीहैं इससे उनके बिल मर्दोंकी अपेचा बडे होते हैं।

मेडकोंकी तरह वह लोग बचपनहीसे तैरना जानते है और जलमें बहुत देर तक डुबकियां मार कर रह सकते है। मर्द मछ-लिया पकडते और औरते बच्चोंके लिये घर लेआती है इस समयकी एक अनोखी कहानी सुनाता हूँ आशा है पाठक चमा करेंगे।

एक दिन मैं टहलनेके लिये घरसे निकला। साथमें रचक भी था। उस दिन गर्मी भी बहुत जोरकी पडी थी। मैं रचकसे पूछ कर निकटहीकी एक नदीमे नहाने गया। मै एक दम नग्न हो कर नदीमे धीरे धीरे उतर गया। रचक राम भी मुझे निरापद समझ कर कुछ दूर पर हरी हरी घास चरने लगे। संयोगसे एक याहु नारी तीर पर खडी यह सब देख रही थी। वह न जाने क्यों मस्त होकर धमसे पानीमे कूद पडी और दौड कर बेतरह मुझसे चिपट गई। मै तो हका बक्कासा होगया। ऐसी दशा मेरी कभी नही हुई थी। आखिर मैं बडे जोरसे चीख उठा। मेरी आवाज सुन कर रचक सरपट दौड आया। इतनेमें वह चाण्डालिन मुझे छोड कर दूसरे किनारे पर जा धमकी। अगर रचक न आता तो मेरा पिण्ड वह कदापि न छोडती। जब तक मै कपडे बदलताथा वह बराबर मेरी ओर देख कर भूकती रही।

मेरी यह दुर्दशा सुन कर प्रभु और प्रभुके घरवालोंको तो एक

दिल्लगी होगई और मैं लाजके मारे मरा जाता था। अब मैं याहू होनेसे इनकार नही कर सकता था। जब याहुनी याहू समझ कर मुझसे चिमट गई तो मैं याहू नही तो क्या हू? उसके बाल भी लाल नही थे कि मुझे कुछ कहनेकी जगह मिलती क्योंकि लाल बाल कामुकताका चिन्ह है यह मैं पहलेही कह आया हूं। उसके बाल तो जूतेकी तरह काले थे और सूरत भी ऐसी कुछ भद्दी न थी जैसी और याहुनियोंकी होतीहै। जहां तक मैं समझता हूँ उसकी उमर ग्यारह सालसे ऊंची नही थी।

मैं छिनछिनके देशमें तीन साल रहा। पाठक चाहते होंगे कि मैं भी अन्यान्य यात्रियोंके सदृश वहावालोंके रहन सहन तथा चाल चलनका कुछ वर्णन करू। सो मैं अवश्य करूंगा क्योंकि जब मैं वहा था तब इन विषयोंके जाननेके लिये विशेष ध्यान दिया था।

छिनछिन लोग स्वभावहीसे धर्मपरायण होते है। सज्ञान जीवोंमें पापाचार क्या है इतना तक वह नहीं जानते। बुद्धिको उन्नत करना तथा उसके अनुसार चलनाही उनका मुख्य उद्देश्य है। वह सब हम लोगोंकी तरह बुद्धिके द्वारा किसी विषयके दोनों पक्षों पर विवाद करनेमें चतुराई नही दिखाते और न बुद्धिको तर्क वितर्क करनेकी वस्तुही समझते है। बुद्धि यदि स्वार्थादिसे मिश्रित दूषित और कलुषित हुई तो तुरतही सबका निर्णय होजाता है। "अपनी अपनी सम्मति" का क्या अर्थ है या कोई विषय विवादके योग्य कैसे हो सकता है सो समझानेमें प्रभुको कितनी कठिनाई पडी वह मुझे याद है। जिन बातोंको हम निश्चय जानते है केवल उन्हीको हम बुद्धिके द्वारा ग्रहण या परित्याग कर सकते है। बुद्धिके बाहर हम कुछ नही कर सकते। इस कारण सन्दिग्ध विषयोंमें वितण्डावाद, वाग्युद्ध विवाद और हठ करना छिनछिन नही जानते है। जब मैं अपने प्रकृति विज्ञानकी भिन्न भिन्न प्रणालियों समझाता तो वह हस कर कहतेथे कि जो प्राणी ज्ञानी बनता है वह दूसरोंके कल्पित ज्ञानके भरोसेही कूदता है और वह ज्ञान

यथार्थ होने पर भी इन विपर्योसे कुछ काम नहीं कर सकता है। वह सुकरातके उन विचारोंको जो अफलातूं लिख गया है अच्छी तरह मानते थे। यह सुकरातके लिये गौरवकी बात है। तबसे मुझे यही चिन्ता लग रही है कि ऐसे सिद्धान्तसे युरोपके पुस्त-कालयोंको न जाने कितनी हानि पहुंची और न जाने कितने पण्डितोंके लिये यशका मार्ग बन्द हो जायगा।

मित्रता और कृपालुताही ह्विनह्विनोंके प्रधान गुण हैं। इनके यह दोनों गुण सङ्कीर्ण नहीं विश्वव्यापक हैं। यह दूर देशके पाहुनेसे भी वही बर्ताव करते हैं जो पड़ोसीसे। यह जहां जाते हैं तमाम अपना घरही समझते हैं। शिष्टाचार और सभ्यताके तो यह घर है। आडम्बर जानतेही नहीं। बछेरे बछेरियोंको प्यार नहीं करते पर उनकी शिक्षाकी तरफ विशेष ध्यान देते हैं। यह भी उनकी बुद्धिका फल है। मैंने देखा है कि प्रभु पड़ोसके बालकोंको जितना प्यार करते थे अपनोंका भी उतनाही। उनका जाति प्रेम स्वाभाविक है। यह केवल बुद्धिहीका प्रभाव है कि वह लोग उच्च कोटिके धर्म्मात्माओंको श्रेष्ट मानते हैं।

ह्विनह्विनिया एक बछेरा और एक बछेरी जन कर ह्विनह्विनोंसे मिलना छोड़ देती है। अगर कहीं सयोगसे किसीका एक बच्चा मरगया तो वह फिर मिल लेतीहै। यह आफत कहीं उस ह्विनह्विन पर आपड़ी जिसकी ह्विनह्विनी ठण्ठ होचुकी है तो कोई दूसरा ह्विनह्विन अपना एक बच्चा उसे दे देता है और अपने लिये एक और पैदा कर लेता है। देशमें अश्व संख्या अधिक बढ़ने न पावे इस बातका वह सब खूब ख्याल रखतेहैं। नीचे दरजेके ह्विनह्विन जो नौकर चाकर बनाये जाते है इन नियमोंके उतने अधीन नहीहै। यह सब छः छः बच्चे तक पैदा कर सकते है।

ह्विनह्विन लोग व्याहके कामको बड़ी सावधानीसे करते है। बेमेल व्याह करके सारी जातिको वर्णसङ्कर बनाना नहीं चाहते। व्याहके समय ह्विनह्विनोंमें बल तथा ह्विनह्विनियोंमें सुन्दरता

मुख्य करके देखी जाती है। प्रेमके लिये नहीं वंश रक्षाके लिये व्याह होता है। अगर ह्विनह्विनी बलमें अधिक हुई तो ह्विनह्विनही सुन्दर ढूढा जाता है।

कोर्टशिप, प्रेम, प्रेमका उपहार, स्त्रीधन आदि वह कुछ नहीं जानते यहा तक कि उनकी भाषामें इनके लिये कोई शब्द नहीं है। युवक ह्विनह्विन और ह्विनह्विनी भेंट होतेही आपसमें मिल जाते है। इसमें किसी प्रकारकी रोक टोक नहीं है। सन्तान जीवोंके लिये इस तरह मिलना वह आवश्यकीय समझते है। विवाह भङ्ग तथा व्यभिचार वहा कभी सुननेमें नहीं आया। ह्विनह्विन और ह्विनह्विनी ईर्षाद्वेष, अनुराग, कलह और असन्तोष रहित होकर जीवन व्यतीत करते है। जो मित्रता और कृपालुता जाति के अन्यान्य लोगो पर प्रकाशित करतेहै वही आपसमें भी करते है।

बच्चोंको शिक्षा देनेकी परिपाटी बहुत सुन्दर है। हम लोगोको उसका अनुकरण करना चाहिये। अठारह वर्ष तक बच्चे जई और दूब खाने नहीं पाते है। ऐसेही कभी कभी खा लेते हैं। गर्म्मीके दिनोंमें दो घण्टे सवेरे तथा दो घण्टे सांझको मैदानमें चरते है। उनके मा बाप भी इसी तरह चरते हैं। नौकर सब दोनों वेला एक एक घण्टा चरने पाते हैं। वह लोग अपनी अपनी घास घरही उठा लाते है। जब कामसे छुट्टी पाते तब सुबीतेसे खाते हैं।

बछेरे बछेरियोंको संयम, परिश्रम, व्यायाम और पवित्रताकी समान शिक्षा दी जाती है घरके कामोंके सिवा हमारे बालक बालिकाओंको भिन्न भिन्न प्रकारकी शिक्षा दी जाती यह बुरा समझते थे। वह कहते कि इसीसे तुम्हारे देशके आधे निकम्मे सन्तान उत्पादन करनेके अतिरिक्त और किसी कामके नहीं है। ऐसे निकम्मे लोगोंके भरोसे बच्चोंको छोडना बहुतही बडी पशुता है।

लेकिन ह्विनह्विन अपने बच्चोको ऊंचे खडे पहाडो पर तथा पथरीली भूमिमें दौडा कर जोरमन्दी, मजबूती और तेज चलना सिखाते है। और जब वह पसीने पसीने होजाते है तब दला

खिचा या तालाब या नदीसे कुदाये जातेहैं। उछलने कूदने दौडने आदिकी योग्यता के सालमें चार दफे दिखलानी पडती है। जो सबमें आगे होता है उसे पारितोषिकमें एक गीत मिलता है। उस गीतमें उसीकी प्रशंसा रहती है। उस उत्सवके समय खान-सामा याहुओंकी पीठ पर दाना घास दूध लाद कर परीक्षास्थलमें लेजाते है। ह्विनह्विन आनन्दसे सबको खाते है। पीछे किसीकी तबीयत न घबराय इसलिये याहू विचारे वहांसे भगा दिये जातेहै।

चार चार वर्षमें बसन्त ऋतुके समय ह्विनह्विनोंकी एक जातीय महासभा होती है। इसका अधिवेशन चार पांच दिन तक एक लम्बे चौडे मैदानमें होता है जो प्रभुके घरसे बीस मीलकी दूरी पर है। प्रत्येक प्रदेशकी क्या दशा है—जई या घास कहा कैसी उपजीहै याहू या गायें भरपूर है या नहीं इत्यादि बातोंका वहां विचार और छानबीन होती है। जहां किसी बातका टोटा हुआ वह सर्व सम्मतिसे चन्दा करके तुरत दूर कर दिया जाता है पर ऐसी नौबत बहुत कम पहुँचती है। बालक बदलव्वलकी व्यवस्था भी यहीं होती है अर्थात् जिस ह्विनह्विनके दो बछेरेही होते है वह दूसरेको जिसके दो बछेरिया है अपना एक बछेरा देकर बदलेमें उससे एक बछेरी ले लेता है। किसीका एक बच्चा किसी कारण से मर गया और ह्विनह्विनी भी ठण्ठ हो चुकी है तो यहां यह भी निश्चय होजाता है कि कौन ह्विनह्विन एक बच्चा और पैदा करके हानिको पूरी कर देगा।

नवम परिच्छेद।

उस देशसे विदा होनेके लग भग तीन मास पहले घोडोंकी जातीय महासभाका एक अधिवेशन मेरे सामनेही हुआ था जिसमें प्रभु भी अपने प्रान्तसे प्रतिनिधि बन कर पधारे थे। आपहीने लौट कर वहांका सब पूरा हाल मुझे बताया था। उसी पुराने विषयको लेकर खूब वादानुवाद चला था। कहते थे कि ऐसा तर्क वितर्क और कभी नहीं हुआ था।

प्रश्न यही था कि याहुओंको पृथ्वीसे निर्मूल करना चाहिये या नहीं। एक सज्जनने तो बडी नोक झोकसे उठ कर कहा—मित्रो। याहू बडेही मैले गन्दे और भद्दे जीव हैं। हठता, शठता, दुष्टतादि की तो यह खान हैं। सिखानेसे भी कुछ सीखते नही पर शैतानी जरूर करते हैं। चुप चाप हमारी गौओंका दूध पी लेते हैं—बिल्लियोंको मार कर खा जाते हैं—जई तथा घासोंको रौंद डालते हैं और अगर पूरे तौरसे रखवाली न कीजाय तो बडा ऊधम मचाते हैं। हम लोग बाप दादाओंसे सुनते आतेहैं कि याहू यहांके निवासी नही हैं। बहुत दिन हुए जब इनका एक जोडा पहाड पर दिखलाई पडा था। सूर्य्यकी गर्मी कीचमें पडनेसे यह जोडा उत्पन्न हुआ या समुद्रके फेनसे सो कुछ मालूम नहीं हुआ। पीछे इन दोनोंके सन्तान हुई। थोडेही दिनोंमें इनकी इतनी वंश वृद्धि हुई कि सारा देश याहुओंसे भर गया और हिनहिनोंको कष्ट होने लगा तब सबने याहुओंको निकाल बाहर करनेका मनसूबा बान्धा। आखिर एक दिन याहुओंका कतलआम करके उनको चारों तरफसे घेर लिया। बडे बडे तो काम आये और बच्चोंको हिनहिन घर उठा लाये। हर एकके दो दो बच्चे हाथ लगे थे। याहू बडे उदण्ड और जङ्गली थे पर हिनहिनोंने उन बच्चोंको ठीक पीट कर इस योग्य कर दिया है कि अब यह बोझ ढोने और गाडी खिंचने लगे हैं। यह बात भी बहुत ठीक मालूम होती है कि याहू इस देशके आदिम निवासी नही है। अगर होते तो हिनहिन तथा अन्यान्य जीव क्यों इनसे घृणा करते? इसलिये मैं चाहता हूं कि याहुओंका अवश्य मूलोच्छेद होना चाहिये। सज्जनो। एक बात मुझे और कहना है। आप लोग याहुओंको पाकर गदहोंको एक दम भूल गये यह आप लोगोंने अच्छा नही किया। गदहे याहुओंसे सुन्दर सीधे और शान्त हैं। इनकी देहसे दुर्गन्धि नही निकलती। यह वैसे फुर्तीले तो नही मगर मेहनती और मजबूत उनसे कहीं बढके होते हैं। गदहोंका रेंकना चाहे खराब हो परन्तु याहुओंके भया-

नक भूकनेसे वह लाख दरजे अच्छा है। अतएव मै प्रस्ताव करता हूं कि याहुओंका अवश्य विध्वंस करना चाहिये।

बहुतोने तो इस प्रस्तावका समर्थन किया परन्तु प्रभुने उन बातों को याद कर जो मैने कही थी एक दूसराही उपाय निकाला। आप बोले—सज्जनो! हमारे माननीय पूर्ववक्ता महोदयने जो कुछ कहा है सो बहुत ठीक है। वह दोनों याहू जो पहले पहल पहाड पर देखे गयेथे मै समझता हूं समुद्रके उस पारसे आयेथे। उन्हे उनके भाइयोने निकाल दिया होगा। जाति भाइयोंसे अलग पर्वत पर रहनेके कारण उनका चाल व्यवहार बिगडने लगा। बिगडते बिगडते एक दम बिगड गया। यहा तक कि वह वर्तमान दशाको पहुंच गये। पर उनके देशवाले ऐसे नही है। इसके सबूतके लिये मेरे पास एक "अद्भुत याहू" मौजूद है जिसे आप लोगो मेसे बहुतों ने देखा नही तो सुना जरूर होगा। वह भी अपने सङ्गियोंसे निकाला जाकर यहा तक आपहुंचा है। उसके शरीर पर दूसरे जानवरोंके बाल तथा खालकी बेठन चढी हुई है। वह अपनी बोली बोलता है और हम लोगोंकी भी बोली अच्छी तरहसे सीख गया है। उसने यहा तक आनेका अपना पूरा वृत्तान्त मुझे कह सुनाया है। जब वह बेठन उतार देता है तो ठीक याहू मालूम पडता है। अन्तर केवल इतनाही हैं कि उसका रङ्ग गोरा, पञ्जे छोटे तथा देहमें बाल कमती है। उसके कहनेसे मालूम हुआ कि उसके देशमें याहू राजा और ह्विनह्विन गुलाम है। उसमें सब लक्षण तो याहूके हैं किन्तु बुद्धिका तनिक लेश होनेके कारण वह कुछ सभ्य मालूम होता है। जो हो, हम सबसे वह बुद्धिमें उतना ही कम है जितना उसके हमारे याहू है। उसे देशके लोग ह्विन-ह्विनोको वशमें लानेके लिये उन्हे आखता करते है। आखता करनेकी तरकीब बडी सहज और बेजोखो है। श्रम करना चिवटियोंसे और घर बनाना अबाबीलोंसे हम लोग सीखते है। इसलिये पशुओंसे ज्ञान सीखनेमें कुछ लज्जा नही है। मै चाहता

हूं कि सब जवान याहू आखता कर दिये जाय। बस इससे वह अच्छी तरह काम भी करेगी और थोडे दिनोंमें अनायासही उनका वंश नाश होजायगा। इधर तब तक हम लोगोंको गदहोंका वंश बढानेमें दत्तचित्त होना चाहिये क्योंकि यह बडे कामकी चीजहै। और सबतो बारह बरसके होने पर कामके लायक होते है पर गदहा बिचारा पांचही मालसे काम करने लगता है।

प्रभुने जातीय महासभाका बस इतनाही हाल उस समय मुझसे कहना उचित समझा। मेरे विषयमें जो कुछ बात चीत वहां हुई थी उसे आपने छिपा रक्खा पर इसका फल मुझे बहुत जल्दी मिल गया। पाठकोंको आगे चल कर सब मालूम होजायगा। मेरे दुर्भाग्यका उदय उसी दिनसे समझना चाहिये।

छिनछिनोंकी कोई वर्णमाला नहीं है। जो कुछ अपने बाप दादाओंसे वह सुनते आते है वही लडकोंको बता देते है। इसीसे उनकी विद्या पुराने ढङ्गकी है। जिन लोगोंमें इतना मेल मिलाप है—जो स्वभावहीसे धर्म्मानुरागी हैं—जो बुद्धिके भरोसेही सब काम करते है और जो दूसरी जातियोंसे कुछ सम्बन्धही नहीं रखते है उनके यहां कोई घटना क्यों होने लगी ? फिर इतिहासके लिये माथाही क्यों खपाना पडेगा ? यह मैं पहलेही लिख चुका हूं कि छिनछिन कभी बीमार नहीं पडते इस वास्ते उन्हें वैद्यकी भी जरूरत नहीं होती। तो भी वह अच्छी अच्छी जडी बूटियां जानते हैं। पैरोंमें या कहीं किसी तरह कुछ चोट लग जाती है तो वह उन्ही जडी बूटियोंसे तुरत आराम कर लेते है।

चन्द्र सूर्य्यकी गतियोंके द्वारा वह वर्षकी गणना कर लेते है किन्तु महाहादिको काममें नहीं लाते हैं। इन दोनोंकी चालोंको वह भली भांति जानते है तथा ग्रहणके भेदको समझते है। ज्योतिष में उनके ज्ञानकी बस यही पराकाष्टा है।

काव्यमें छिनछिन सबसे बढे हुए है। उनके काव्योंमें पूर्णोपमा तथा यथार्थ वर्णनका आधिक्य रहता है। यह दोनों बातें हम लोगों

के अनुकरणके योग्य है। मित्रता और कृपालुता अथवा जो हिन-हिन घुडदौड या कसरतमें बाजी मार लेता है उसकी प्रशंसा अश्व-काव्यका साधारण विषय है। उनके घर यद्यपि अनगढ़ हैं तथापि गर्मी सर्दीके बचावके लिये वह चोखे हैं। वहां एक तरहके पेड होते हैं जिनकी जडें चालीस बरसके बाद ढीली पड जाती हैं। बस तूफान आतेही वह सब गिर जाते हैं। इन पेडोंकी लकडियां बहुत सीधी तथा नोकीली होती हैं। हिनहिन इन्हीं लकडियोंके खंभे तेज पत्थरसे जमीनमें दस दस इञ्चकी दूरी पर गाड कर उनके बीचमें जईकी डाटें और पत्ते लगा देते हैं बस यही उनकी दीवारें हुईं। छतें भी इसी रीतिसे पाटी जाती हैं तथा किवाड भी ऐसेही बनते हैं। हिनहिन लोहेका व्यवहार नहीं जानते।

हाथका काम हिनहिन अपने अगले सुमोंसे निकालते हैं और बडी सफाईसे सब काम करते हैं। मैंने एक उजली घोडीको सूई डोरा दिया तो उसने चटपट पिरो दिया। वह सब गाय दुहते हैं, जई काटते हैं—मतलब यह कि हाथोंसे जो काम होते हैं सो सब वह करते हैं। एक प्रकारके चकमक पत्थरको रगड कुल्हाडी आदि हथियार बनाते हैं। उन्हींसे घास तथा जई काटते हैं और याहू लोग ढोकर लाते हैं। घरमें नौकर खाली कुचल कर अन्न निकालते हैं और भण्डारमें बन्द करके रख देते हैं। यह अन्न और घास वहां आपही पैदा होती है। वह काठ और मट्टीके वर्त्तन भी एक तरहके बनाते हैं। मट्टीके वर्त्तनोंको धूपहीमें सुखा कर पका डालते हैं।

यदि कोई दैव दुर्घटना न हुई तो हिनहिन बूढ़े होकर मरते हैं। जो स्थान सबसे अप्रसिद्ध होता है वहीं वह गाडे जाते हैं जब कोई मर जाता है तो इष्ट मित्र और बन्धु बान्धव न शोक करते हैं और न हर्ष। मरनेवाला भी जरा दुःख नहीं करता। वह मरने को अपने घर जाना समझता है। किसी मित्रके यहांसे घर आने में जो दशा होती है मृत्युके समय हिनहिनकी भी वही दशा होती

है। मुझे याद है प्रभुने एक बार एक अश्वको दरमियादार किसी जरूरी कामसे बुलाया। जिस समय आनेकी बात थी उससे बहुत पीछे घोडी अपने दो बच्चोंको लिये पहुँची। विलम्बका कारण पूछने पर उसने कहा—"आज सबेरे मेरे स्वामी अपनी पहली माता के पास गये" अर्थात् मर गये है। उसके चेहरे पर कुछ भी शोक या उदासी नहीं मालूम होती थी। जैसे सब प्रसन्न बदन थे वैसे वह भी थी। तीन महीनेके बाद वह बिचारी भी अपनी पहली माके पास चली गई।

छिनछिनकी आयु सत्तर पचत्तर वर्षकी होती है। कोई कोई अस्सी तक भी पहुँच जाते है पर बहुत कम। मरनेके कुछ हफ्ते पहलेसे वह चीण होने लगते है परन्तु उन्हें किसी प्रकारका कष्ट नहीं होता है। इस समय वह असानीसे कहीं जा आ नहीं सकते इससे बन्धु बान्धवगण मिलनेके लिये घरही पर बहुत आते हैं। मरनेके दस दिन पहले वह याहूगाडी पर सबसे बदलेकी भेंट कर आते है। केवल इसी कामके लिये यह गाडी नहीं है। इस पर लगडे, बूढे तथा दूरके सफर करनेवाले चढते है। जब वह मिलने के लिये जाते है तो इष्ट मित्र और बन्धु बान्धवोंसे बडी गम्भीरतासे विदा होते हैं मानो जीवनका शेष भाग वितानेके लिये किसी दूर देशान्तरको जाते है। रा एक बात कहनेको छूटही गई थी कि छिनछिन अपनी मृत्युका समय हिसाब करके निकाल लेते है। इसमें बहुत कम भूल होती है।

मैं घोडोंकी रीति व्यवहार तथा धर्म्म कर्म्मके बारेमें और भी कुछ कहता परन्तु इन विषयोंकी एक स्वतन्त्र पोथी अलग लिखा चाहता हूं अतएव इस प्रसङ्गको यही समाप्त कर अब कुछ अपनी दुर्घटना सुनाता हूँ।

दशम परिच्छेद।

मैंने अपने मनके मुआफिक रहने सहनेका एक मुख्तसर सा बन्दोबस्त करलिया था। प्रभुने अपने घरसे करीब छः गजके फासले पर मेरे लिये एक छोटीसी कोठरी बनवादीथी जिसकी बनावट उसी

टेगकी सीथी। मैंने उसे लीप पोत कर दुरुस्त करलियाथा। सन तथा पत्तियोंके परोंका एक गद्दा बनाया जिस पर मैं पैर फैला कर सोता था। याहुओंके बालके जालसे अकसर चिड़ियोंका शिकार करता। इनका मांस बड़ा स्वादिष्ट होता था। अपनी छुरीसे दो कुर्सियां बना ली थीं। इनके बनानेमें लाल घोड़ेसे भी कुछ मदद मिली थी। कपड़े सब फट गये तो खरहोंकी खालहोंसे काम चलाया। खरहे के आकारके वहां एक प्रकारके सुन्दर जानवर होते हैं। जिनके रोएं बड़े बारीक होते हैं। इन्हींकी खालके काम चलाऊ मोजे भी बनाये थे। जूतोंके तले घिस गये तो काठके लगाये। जब ऊपर के हिस्से भी बेकाम होगये तो याहूके चमड़ेहोंको धूपमें सुखा कर काममें लाया। वृक्षोंमेंसे अकसर मधु निकाल लाता और उसे रोटियोंके साथ खाता या शरबत बना कर पीता था। "मनको मनाना कुछ बड़ी बात नहीं है" तथा—"आवश्यकता पड़ने पर उपाय सूझता है" इन दोनों सिद्धान्तोंकी सत्यता मुझसे बढ़ कर कोई नहीं जान सकता है। वहां मेरा शरीर निरोग तथा चित्त शान्त रहता था। वहां न मेरे कपटी और विश्वासघाती मित्रही थे और न गुप्त वा प्रकट शत्रु। बड़े आदमियोंको या उनके मुसाहिबोंको प्रसन्न करनेके लिये घूस देने, खुशामद करने अथवा कुटना पन करनेकी कभी वहां नौबतही नहीं आती थी। छल वा उपद्रवकी वहां कुछ आशङ्का न थी। मेरे शरीरका सत्यानाश करनेके लिये वकील वहां न थे। मेरे चाल चलनकी देख भालके वास्ते वहां कोई जासूस न था और न रुपयेके हेतु कोई झूठे झूठे मुकद्दमे गढ़ता था। वहां निन्दा, उपहास, चबाव, बलात्कार, मूर्खता, काम, क्रोध, लोभ, मोह, दम्भ, पाखण्ड, अभिमानादि कुछ न था। चोर, जुआचोर, उचक्के, उठाईगीरे, जेबकाट, डाकू, लुटेरे इत्यादि वहां न थे और न सिफले, धूर्त्त, कुटने, भडुए, भाड़, शराबी, जुआरी तथा बकवादीही थे। न दल था न पार्टी थी और न कोई अगुआ था। वहां न कारागार, न शूली न फांसी और न कोड़े

की मारही थी। पाप करनेकी वहा कोई सामग्री न थी। बेईमान दूकानदार भी वहा न थे। कर्कसा खर्चीली और कुलटा स्त्रिया नही थीं। लण्ठ मगर अभिमानी पण्डित न थे विवादी, छली, स्वार्थी, शपथ खानेवाले, नीच साथी भी वहा न थे। नीच अपनी नीचताहीके कारण न सिंहासन पर बिठाये जाते और न सज्जन सज्जनता हेतु सिंहासनसे उतारेही जाते थे। वहा न लाट थे न जज थे न सारङ्गी बजानेवाले थे। और न नृत्याचार्य्यही थे—मतलब यह कि रोग शोक, पाप ताप वहा कुछ भी न था। बडे आनन्दसे दिन कटते थे।

प्रभुके यहा भोजन करने या मिलनेके लिये अनेक छिनछिन आते थे। वह लोगजिस कोठरीमें बैठ कर बात चीत करते थे वहा मैं भी जाने पाता था। प्रभु तथा प्रभुके साथी लोग अकसर मुझसे भी वार्तालाप करनेकी कृपा दिखाते थे। जो कुछ वह पूछते उस का जवाब मैं देता या खडा खडा उनकी बातेंही सुनता था। जब प्रभु किसीके यहा जाते तो मुझे भी कभी कभी अपने साथ ले लेते थे। प्रश्नका उत्तर देनेके अतिरिक्त और कुछ बोलनेका साहस मुझे कभी नही हुआ। हाय! बोलनेके लिये मैंने इतना परिश्रम किया सो हथाही गया। परन्तु मैं उन विषयोंको जो संक्षिप्त अथच उपयोगी थे—जो आडम्बर रहित शिष्टता पूर्णथे—जो शुष्क और नीरस न थे और जो बाधा, कठिनाई, उत्तेजना वा मत भेदसे शून्य थे, श्रवण करनेहीमें परमानन्द प्राप्त करता था। उन लोगोंका ख्याल है कि भेंट होने पर थोडी देर चुप रहनेसे बात चीतमें बहुत उत्तमता आजाती है। और यह सच भी है क्योंकि जरा चुप रहनेसे नये नये विचार मनमें उठते हैं बस वह और भी मनोहर होजाती है। मित्रता, परोपकारिता, मितव्यय तथा सुरीतिही उनके सम्भाषणके साधारण विषयहैं। प्रकृतिकी छटा, पुरानी दन्त कथा, धर्मकी मर्य्यादा, ज्ञानके अभ्रान्त नियम या जातीय महात्मामें उठानेके योग्य किसी प्रस्ताव पर तो कभी कभी किन्तु वाक्यके उच्च भावों पर

वादाविवाद होताथा। मैं कुछ अभिमान नहीं करता सत्य कहता हूं कि मेरे उपस्थित रहनेसे खूब तर्क वितर्क चलता था। क्योंकि प्रभु जब मेरा तथा मेरे देशका इतिहास अपने मित्रोंको सुनाते तब सब सब लोग बडी प्रसन्नतासे कथोपकथन करतेथे। वह सब का कहते थे सो मैं न लिखूंगा क्योंकि इससे कुछ विशेष उपकार न होगा। केवल इतनाही मैं कहा चाहता हूं कि मेरी अपेक्षा प्रभु याहुओंके स्वभावको अच्छी तरह समझते थे। वह अपने यहाके याहुओंकी योग्यता तथा कामोंको देख कर हमारे यहाके पापाचारका चित्र भली भांति खिंचते थे। वह याहुओको अत्यन्त नीच और हेय समझते थे।

मैं मुक्तकण्ठसे स्वीकार करता हूं कि जो कुछ थोडासा ज्ञानका लेश मुझमें है सो प्रभुके उपदेश तथा उनके मित्रोंके सत्सङ्गहीका फल है। मैं ह्विन्हिनोंकी दृढता, सुन्दरता और द्रुतगतिकी प्रशंसा करता हूं। उनके सद्गुणोंको देख कर उन पर मेरी अपार श्रद्धा भक्ति होगई है। पहले तो उनका कुछ प्रभाव मुझ पर पडा नहीं पर पीछे मेरा हृदय भक्ति भावसे क्रमशः बहुत शीघ्र पूर्ण होगया।

जब मैं अपने बाल बच्चोंकी, इष्ट मित्रोंकी, देशवासियोंको अथवा मनुष्य मात्रको याद करता तो वह भी सूरत शकल और स्वभावसे निरे याहूही मालूम होते थे अन्तर इतनाही था कि वह इन याहुओंसे शायद कुछ सभ्य मालूम पडते थे, उनमें बोलनेकी शक्ति कुछ विशेष थी और वह नित्य नये पाप गढनेके सिवा और कुछ काम बुद्धिसे नहीं लेते थे। जब कभी मैं अपना मुंह किसी गढहे या झरनेमें देख लेता तो चीख मार कर पीछे हट जाता था। अपने चेहरे पर आपही मुझे घृणा होने लगती थी। मैं अपना मुंह आप नहीं देख सकता था। ह्विनहिनो को देख कर आत्मा ठंढी होती थी। उनसे बोल कर चित्त प्रसन्न होताथा। रात दिन उनके सङ्ग रहते रहते मैं भी उनकी चाल ढाल की नकल करने लगा। नकल करते करते अब उसी तरह चलनेका

बहुधा अभ्यास पड गयाहै। मित्रगण अवसर ठट्ठा मारकर कहते हैं वाह! अब तो तुम घोडेकी तरह खूब दुलकी चलने लगे। पर अपनी बड़ाई इसीमें समझता हूं। चाहे कोई हसे या दूसे पर मैं यह कहनेसे कभी इनकार न करूंगा कि मैं घोडोंकी तरह बोलने को तैयार हूं।

बडे सुख चैनसे समय बीतने लगा। किसी प्रकारका कष्ट या अभाव वहां नहीं था। मैंने सोचा चलो अब जीवनके शेष भागको यहीं व्यतीत करूं पर—"निज सोची होती नहो।" एक दिन बडे सवेरे प्रभुने बुला भेजा। मै भी चट पट उठ दौडा। वहां पहुंच कर प्रभुको घोर चिन्तामें मग्न पाया। उनके चेहरेसे उदासी टपक रही थी। वह कुछ कहा चाहते थे पर कह नहीं सकते थे, किस तरह बात उठनी चाहिये शायद इसी सोच विचारमें पडे थे। थोडी देर चुप रहनेके बाद प्रभुने कहा—"मै नहीं जानता मेरे कहनेका तुम क्या अर्थ लगाओगे पर मुझे विवश होकर कहना पडता है कि पिछली महासभामें जब याहुओंकी चर्चा चली तो कई प्रतिनिधि मुझ पर बहुत बिगडे और बोले कि तुम याहू को अपने घरमें हिनहिनकी तरह रखते हो यह बडी खराब बात है। सुना है तुम बराबर उसके साथ रहते सहते तथा बात चीत करके प्रसन्न होते हो। यह काम प्रकृति और ज्ञानके विरुद्ध है। ऐसा कभी किसीने नहीं किया है और न ऐसी घटना पहले कभी सुननेमें आई है। इस लिये उस याहूको चाहे अन्यान्य याहुओंके साथ रक्खो या उससे कह दो कि वह अपने देशको चला जाय। इस पर बहुतोंने कहा नहीं, उसका यहासे चला जानाही ठीकहै। वह रहेगा तो बडा उत्पात मचावेगा। उसमें कुछ बुद्धिका लेश भी है। इससे वह सब याहुओंको बहकाकर जङ्गल पहाडोंमें लेजायगा और रातको दल बांधकर हमारे मवेशियों पर चोट करेगा क्योंकि यह सब बडेही पेटार्थी होते हैं और मेहनतसे जी चुराते है। इस वास्ते उसको यहासे धता बतानाही अच्छा है।"

प्रभुकी बातें सुन कर मेरा माथा ठनका पर मैं कुछ न बोला।

वह फिर कहने लगी—"अब मैं क्या करूं ? महासभाके परामर्शको पालन करनेके लिये ह्विनह्विन लोग मुझे नित्य दबातेहैं अब अधिक टाल मटोल नहीं कर सकता। मैं जानता हूं समुद्रको तैरकर पार करना असम्भव है इसलिये मेरी राय है कि एक छोटीसी नाव बना लो उसी पर अपने देशको चले जाओ। इसमें मेरे नौकर तथा पड़ोसी लोग भी तुम्हारी मदद करेंगे। मैं तुमसे बड़ा प्रसन्न हूं तुमने जहां तक बना खोटी लतोंको छोड़कर ह्विनह्विनकी नकल की है। मेरी इच्छा तो यहीथी कि जन्मभर तुमको अपने साथ रक्खूं पर क्या करू लाचारीहै। यहां समझानेके सिवा किसीको लाचार करनेका दस्तूर नहीं है पर जो ज्ञानी हैं सो ज्ञानके विरुद्ध कोई काम क्यों करेंगे?"

इतना सुन कर मेरे सिर पर मानो वज्र गिर पड़ा। नेत्रों के आगे अन्धकार छा गया। मैं मूर्छित होकर प्रभुके चरणों पर गिर पड़ा। जब मूर्छा गई तो प्रभु बोले—"तुम जी उठे। मैंने तो जाना तुम मर गये।" ह्विनह्विन मूर्छित होना नही जानते क्योंकि उनके चित्तमें इतनी दुर्बलता नही है। मैंने धीमे स्वरसे कहा—"मरना तो इससे लाख दर्जे अच्छा था। मैं आपकी सभाका या मित्रोंको कुछ दोष नहीं दे सकता पर अपनी तुच्छ बुद्धिके अनुसार कहता हूं कि इस जीनेसे मरनेहीमें सुख है। मैं एक मील भी तैर नहीं सकता और समुद्रका पहला किनारा भी यहांसे सैकडों मील दूर होगा। नाव बनानेके लिये जिन जिन चीजोंकी दरकार है सो यहां मिलती नहीं पर तो भी आपकी आज्ञा पालनेकी चेष्टा करूंगा। यह काम सहज नहीं है इसके वास्ते मुझे उचित समय मिलना चाहिये। यदि मैं अपने देश पहुंच जाऊंगा तो आप लोगोंके सद्गुणों का कीर्त्तन कर अपनी जातिका बहुत कुछ उपकार करूंगा।"

वहांका रङ्ग ढङ्ग देख कर मेरा जी उदास होगया। पीछे न जाने और क्या आफत आवे यह विचार कर मैंने वहासे नौ दो ग्यारह होनाही उचित समझा। प्रभुने कृपा कर नाव बनानेके ☐ दो महीनेका समय दिया। मददके लिये मैंने लाल घोड़ेको

मांग लिया क्योंकि वह मुझ पर बहुत दया करता था। उसके मिल जानेसे फिर और किसीकी सहायता दरकार न रही।

लाल घोड़ेको लेकर मैं समुद्र तटके उस स्थानमें पहले गया जहा मेरे साथियोंने मुझे छोड दिया था। मैं एक टीले पर चढ़ गया और चारों ओर देखने लगा। ईशान कोणमें एक छोटासा टापू दिखाई पडा। जेबसे दूरबीन निकाल कर देखा तो साफ मालूम हुआ कि वह लग भग पन्द्रह मीलके फाससे पर है। लेकिन घोडारामको केवल नील आकाशही दिखाई दिया क्योंकि वह यही जानता था कि हमारे देशके सिवा और कोई देशही नहीं है। इसीसे समुद्र स्थित दूरवर्त्ती वस्तुओंके देखनेमें उसकी दृष्टि काम नहीं कर सकती थी। खैर, उस टापूको देख कर मैंने विचारा कि पहला मुकाम तो यहीं होगा आगे भगवानका भरोसा।

हम लोग घर लौट आये। पासहीके एक जङ्गलसे देवदारकी डालिया काट लाये जो कुछ मोटी और कुछ छडीकी भाति पतली थीं। मैंने तो अपने चाकूसे और लाल घोडेने पत्थरके औजारसे लकडियां काटीं थीं। अब बहुत विस्तार न कर मैं खुलासा कहता हूं कि छः हफ्तेमें लाल घोडेकी मददसे डोंगी बन कर तैयार होगई। इसके ऊपर याहुओंके चमडेकी खोल सीकर चढाई। पाल भी उन्हीकी खालकी बनाई। जहातक बना जवान याहुओंकी खालसे काम लिया क्योंकि बुड्ढोंकी खाल बहुत मोटी और चिमडी होतीहै। चार डाड भी मैंने बना लिये थे। खानेके लिये मांस पकाकर धर लिया था तथा पीनेके लिये एक मटकी जल और एक मटकी दूध।

कूच करनेके पहले डोंगीकी परीक्षा एक बडे तालावमें हुई। जहा जो कसर दिखाई पडी सो सब दुरुस्त करली। जब सब तरहसे वह ठीक होगई तो याहुओंने उसे गाडी पर लाद कर समुद्र के किनारे पहुचा दिया। हिफाजतके लिये साथ लाल घोडा भी गया था।

जब सब सामानसे लैस होगया तब प्रभुको तथा और सब लोगोंसे विदा होकर मैंने निष्ठगणेश किया। उस समय मेरी

आंखे डबडबाई हुई तथा गला भरा हुआ था। तमाशा देखनेके लिये या शायद मुझ पर कुछ कृपा करके प्रभु भी समुद्र तट पर्यन्त पधारे थे। आपके साथ और भी कई हिनहिन थे। ज्वारके लिये मुझे एक घण्टेसे ज्यादे बैठना पडा। जब ज्वार आगई तब फिर मैंने प्रभुको प्रणाम किया। मैं उनके खुरारविन्द चुम्बन करनेके लिये जब झुकने लगा तो प्रभुने स्वयं उसे उठा कर मेरे मुहके सामने कर दिया। इस बातके लिख देनेसे मैं जानता हू मेरी बडी छीछा लेदर होगी। लोग इसको असम्भव मानेंगे। वह यही कहेंगे कि इतना बडा आदमी गलीवर जैसे तुच्छ जीवकी इतनी खातिर नहीं कर सकता है। लेकिन जो हिनहिनोंकी सज्जनता और सभ्यता भली भांति जानता होगा, वह ऐसा कभी न कहेगा। कुछ यात्री विशेष सम्मान पाते हैं तो उसकी शेखी बघारनेके लिये कैसे तैयार रहते हैं सो भी मैं जानता हू।

शेषमें हिनहिनोंको नमस्कार प्रणाम करके मै डोंगी पर जा बैठा। वायु भी अनुकूल थी। मैंने भगवानका ध्यान कर डोंगी को भाग्यके भरोसे छोड़ दिया।

एकादश परिच्छेद।

सन् १७१४-१५ ईस्वीकी १५ वीं फरवरीके सवेरे नौबजे मैं वहां से रवाना हुआ था। वायु बहुतही अनुकूल थी। पहले तो मैंने केवल डाडोंसे काम लिया पर पीछे पालको भी तान दिया। ज्वार का जोर थाही डोंगी घण्टेमें साढे चार मीलके हिसाबसे जाने लगी। जब तक मै एकदम ओझल न होगया प्रभु अपने सङ्गियों समेत तीर पर बराबर खडे रहे। लाल घोडा जो मुझे बहुत चाहता था, बारम्बार पुकारकर कहता था—"ह्नु इल्ला नीहा मजाह याहु" अर्थात् होशियारीसे जाना सुन्दर याहू।

पाठको! क्या सोचते २ क्या होगया। मैंने तो सोचाथा कि अब फिर इङ्गलेण्डका मुह न देखूगा और न किसीसे कुछ सम्पर्क रक्खूंगा पवित्रात्मा हिनहिनोंके पवित्र धाममें जीवन शेष करूगा पर

मनकी मनमें रही। प्रभुके आगे मैं बहुत रोया गाया पर सब वृथा हुआ अन्तमें हताश होकर वह पुण्य भूमि त्यागनीही पडी। अब क्या करूं ? स्वदेश जाकर याहुओंके समाज तथा राज्यमें रहनेकी तो तनिक भी इच्छा नहीं होती थी। यदि इङ्गलेण्डके प्रधान मन्त्री का पद मिलता तो भी वहां जाना मुझे स्वीकार न था। मैं किसी छोटे मोटे उजाड टापूमें जहां याहुओंकी गन्ध भी न हो वास करना चाहता था। यदि ऐसा निर्जन स्थान मिल जाता तो उसे प्रधान मन्त्रीके पदसे बहुत बडा समझता क्योंकि वहां सांसारिक पाप तापोंसे मुक्त होकर एकान्तमें पुण्यात्मा हिनहिनोंके सद्गुणोंका सानन्द ध्यान करता तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने विचारोंमें निमग्न रहता।

जब मेरे साथियोंने मुझे बाध कर मुझे कैद कर लियाथा तो मैं कई हफ्ते तक अपने कमरेमें बन्द रहा था यह मैं लिख आया हूं पाठकोंको शायद याद होगा। उस समय जहाज किस राहसे कहां जाता था मुझे कुछ भी मालूम न था। जिस समय मैं जहाजसे निकाला गया उस समय भी किसीने कुछ नहीं बताया। परन्तु उन लोगोंकी आपसकी बातें सुन कर मैंने अनुमान किया था कि जहाज उत्तमाशा अन्तरीपके दक्षिण या अग्निकोणकी ओर है। तथा मैडेगास्कर द्वीपको जाता है।

जहां मै उतरा वहां कोई मनुष्य दिखाई न पडा। मेरे पास कोई हथियार नही था इससे आगे बढनेकी हिम्मत न पडी। वही किनारे पर जो घोंघे सीप मिल गई वह कच्चीही चबा गया। शायद कोई देखले इस डरसे मैने आग भी नहीं जलाई। वहां मै तीन दिन रहा। साथमें खाने पीनेका जो सामान था सो आगेके लिये बचा रक्खा। केवल घोंघों और सीपोंसे काम चलाया था। भाग्यसे मीठे पानीका एक सोता भी मिल गयाथा जिसका जल पीकर जी हरा होजाता था।

चौथे दिन प्रात:काल साहस करके मैं पैदलही कुछ दूर निकल गया तो क्या देखता हूं कि कोई पाचसौ गज दूर एक टीले पर आग जल रही है और उसके चारों ओर औरत मर्द तथा लडके बैठे है जो गिनतीमें दसबीस होगे। वह सब बिलकुल नङ्गे थे। उनमेंसे एककी दृष्टि मुझ पर पड गई। उसने अपने साथियोंको भी दिखा दिया। बस पाच जने लडके वालोंको वही आगके पास छोड कर मेरी ओर बढे। मै प्राण लेकर किनारेकी तरफ आया और डोंगी पर चढके लम्बा हुआ। मुझको भागते देख कर वह सब भी मेरे पीछे दौडे। मै बहुत दूर न गया हुगा कि एक तीर दनसे मेरे घुटनेको छेद कर पार होगया। मैं और भी तेजीसे आगे बढ गया। तीरमें कदाचित विष हो यह विचार कर मैने चट घावको चूस लिया फिर धो धा कर पट्टी चढा दी।

अब क्या करू ? उस जगह जहा आश्रय लिया था लौट जाने की हिम्मत नही पडती थी। मै खडा होकर देखने लगा कि अब किधर जाऊं इतनेमें ईशान कोणकी तरफसे एक जहाज आता हुआ दिखाई दिया। अब मैं यह सोचने लगा कि ठहरू' या चल दूं। अन्तमें यह निश्चय किया कि युरोपीय यात्रुओंका मुंह देखनेसे असभ्य जङ्गलियोंके साथ रहनाही अच्छा है। बस मैने डोंगीको चट पट दक्षिणकी ओर घुमाया। पाल तान कर डाड चलाने ‌। फिर वहीं जा पहुंचा जहासे सबेरे चला था। डोंगीको

किनारे बांध कर मैं उस सोतेके पास जिसका पानी मीठा था एक ढोंकेके पीछे छिप रहा।

इतनेमें जहाज भी मील डेढ मील पर आकर खडा होगया। मीठे पानीके लिये कुछ लोग किश्ती पर सवार होकर सोतेकी तरफ चले। मालूम होता है इस सोतेको लोग पहलेसे जानते थे। जब किश्ती एक दम पास आपहुंची तब मैंने उसको देखा। अगर पहलेसे देखता तो कहीं दूसरी जगह लुक जाता पर अब इतना समय कहा? वह सब सिर पर आ पहुंचे अब भागू कैसे? खैर सास रोक कर मैं वहीं दबक गया। इतनेमें वह सब किश्तीसे उतर पडे। सामने मेरी डोंगीको देख कर चौंके। उसको अच्छी तरह देख भाल कर उन्होंने निश्चय कर लिया कि इसका मालिक कहीं पासही है। उनमेंसे चार जने जो हथियार बन्द थे लगे वहाकी खोह कन्दराओंको रत्ती रत्ती ढूढने। ढूढते ढूढते वह चारों वहां पहुंचे जहा मैं पट पडा हुआ था। चमडेका कोट पटलून, काठके तलेके जूते, बालदार मोजे आदि मेरी अनोखी भद्दी पोशाक देख कर आश्चर्य्यके मारे उनकी टकटकी लग गई। उस देशवाले सदा नङ्गे रहते हैं इससे उन्होंने मुझे वहांका निवासी नहीं समझा। उनमेंसे एकने पुर्त्तगाली भाषामें कहा—"उठ! तू कौन है?" मैं इस भाषाको खूब जानता। मैंने उठ कर जवाब दिया—"मै एक दीन याहू हूं हिनहिनोंने मुझे निकाल दिया है। कृपा कर मुझे छोड दीजिये।" मुझे पुर्त्तगाली भाषा बोलते देख कर वह और भी दङ्ग होगये। मेरा रङ्ग देख कर उन्होंने मुझको युरोपियन समझा पर 'याहू' और 'हिनहिन' उनकी समझमें न आये। सायही इसके मेरे बोलनेमे घोडे कीसी हिनहिनाहट सुन कर वह लोग हस पडे। मैं भय और घृणासे काप रहा था। मैंने फिर विनय पूर्वक कहा मुझे छोड दीजिये लेकिन किसीने कुछ ध्यान नहीं दिया। ज्योंही मैं डोंगीकी तरफ बढने लगा उन लोगोंने पकडके पूछा—"तू किस देशका है और कहासे आता है?" मैंने

कहा—"मैं इङ्गलेण्डका हूं। वहांसे आये मुझे पांच साल हुए। उस समय इङ्गलेण्ड और पुर्त्तगालमें मेलही था। इस लिये मैं आशा करता हूं कि आप लोग मुझे अपना शत्रु न समझें। मैंने आप लोगोंका कुछ बिगाड़ा भी नहीं है। मैं एक गरीब यात्री हूं। इस दु:ख भरे जीवनके बचे खुचे दिनोंको टेर करनेके लिये एकान्त स्थान ढूंढता फिरता हूं। कृपा कर मुझे जाने दीजिये।"

इतना सुन कर जब वह आपसमें बोलने लगे तो उनका बोलना नितान्त अपूर्व और अस्वाभाविक प्रतीत होता था। यही जान पडता था मानो इङ्गलेण्डमें कुत्ता या गाय बोल रही है या हिनहिन देशमें यात्री। उधर वह लोग मेरी विचित्र पोशाक और विचित्र बोल चाल पर आश्चर्य्य मान रहे थे। वह बडी नम्रता पूर्वक कहने लगे—"आप किसी बातकी चिन्ता न करें। कप्तान मुफ्तमें आपको लिसबन तक ले चलेगा। वहांसे आप अपने मुल्ककी मर्जीमें जा सकते हैं। कप्तानसे पूछनेके लिये हम आदमी भेजते हैं तब तक आप यहीं ठहरें। अगर आप भागना चाहेंगे तो भागने न देंगे।" लाचार उनका कहना मानना पडा। वह सब मेरी कहानी सुननेके लिये व्यग्र थे पर मैंने कुछ न बताया। वह मुझे पागल समझने लगे। मीठा पानी पहुंचा कर किश्ती दो घण्टे में वापस आई। मैंने बहुतेरा काम चुना पर सब व्यर्थ हुआ। कप्तान की आज्ञानुसार उन्होंने मुझको बांध कर किश्ती पर धर लिया। थोड़ी देरमें किश्ती जहाजके निकट जा पहुंची। वहांसे मैं कप्तान के पास ले जाया गया।

कप्तानका नाम था पिडरोडी मण्डिज। वह बडा सज्जन और उदार पुरुष था। उसने मेरा बडा आदर सत्कार किया और हाल अहवाल पूछा। कहने लगा आप किसी बातकी फिकर मत कीजिये आपको कोई तकलीफ न होगी। आपके खाने पीनेका क्या बन्दो-बस्त किया जाय इत्यादि। यात्रीमें इतनी सभ्यता देख मुझको ... होता था। मैं कुछ न बोला चुपचाप बैठा रहा। उन लोगों

की गन्धसे मेरी नाक फटी जाती थी। मैंने अपने साथकी चीजों को खाना चाहा पर उसने खाने न दिया अपने पाससे कुछ मांस तथा कुछ बढिया शराब दी। इच्छा न रहने पर भी मैंने उसीको खाया। सोनेके लिये साफ सुथरा कमरा बता दिया। मैं बिना कपडे उतारेही वहा जाकर सोरहा। आधे घण्टेके बाद जब सब खाने पीनेमें लगे तो मैं सन्नाटा देख कर चुप चाप बाहर निकल आया। याहुओंके साथ रहनेसे समुद्रमें कूद कर निकल जानाही अच्छा समझ कर ज्योंही मैं कूदने लगा एक जहाजीने आकर पकड लिया। कप्तानने यह सुनकर मेरे पैरोंमें फिर बेडिया डलवा दीं।

खापीकर वह मेरे पास आया और कहने लगा क्यों आप जान देते हैं? जो कहिये मैं करनेको तैयार हूँ। और भी बहुतसी बातें उसने ऐसे ढङ्गसे कहीं कि जिसमें मुझे मालूम होगया कि उसको भी अक्लसे कुछ सरोकार है। फिर मैं भी उसके साथ वैसाही वर्त्ताव करने लगा। अपना सक्षिप्त वृत्तान्त उसे कह सुनाया। वह उसको झूठ मानने लगा। तब मुझे बहुत गुस्सा आया क्योंकि मेरी झूठ बोलनेकी लत एक दम छूट गई थी। सब देशोंमें जहां याहुओं की चलती बनती है वह झूठ बोलनेमें एकही होतेहैं इसीसे दूसरों के सत्यमें भी उन्हें असत्यही दिखाई पडता है। मैंने कप्तानसे पूछा "क्या जो बात नही है सो कहनेकी चाल तुम्हारे देशमें है? असत्य क्या है यह मैं एक दम भूल गया हू। अगर मैं हजार साल भी हिनहिन देशमें रहता तो वहा किसी नौकरके भी मुंहसे असत्य न सुनता। आप मेरा विश्वास करें चाहे न करें मैं इसकी कुछ परवाह नही करता। पर आपने मेरी बहुत खातिर की है इससे कहता हूँ कि आपको जहा शङ्का हो पूछिये मैं उत्तर दूंगा फिर सहजहीमें सब झगडेका पता लग जायगा।"

जब आप इतना सच बोलते हैं तो इकरार कीजिये कि अब मैं न भागूँगा और न जान देनेकी कोशिश करूंगा। अगर आप इकरार न करेंगे तो इसी तरह कैदसे रखना पड़ेगा।" मैंने उसके कथनानुसार प्रतिज्ञा करनी पर माफ कह दिया था कि सब कष्ट सह लूँगा याहुओंके साथ कभी न रहूँगा। आखिर मेरी बेड़ियां काटदी गईं।

जहाज वहांसे फिर चला। रास्तेमें कोई भारी घटना नहीं हुई। कप्तान जब बहुत कहता तो उसके उपकारोंको याद कर मैं कभी कभी उसके पास आ बैठता था। मनुष्य जाति पर जो मेरी आन्तरिक घृणा थी सो प्रगट नहीं होने देता था। अगर हो भी जाती तो बेचारा कप्तान उसका कुछ ख्याल नहीं करता था। मैं किसीका मुंह देखना नहीं चाहता था दिन रात अपने कमरेमें रहता था। वह कपड़े बदलनेके लिये रोज कहता पर मुझे याहूका उतरा हुआ कपड़ा पहनना मञ्जूर न था। बहुत कहने सुनने पर मैंने धोई हुई दो कमीज उससे लीं जिन्हें दूसरे तीसरे दिन अपनेही हाथोंसे धो लेता था।

ता० ५ नवम्बर सन् १७१५ ईस्वीको हम लोग पुर्त्तगालकी राजधानी लिसबनमें पहुंचे। मेरा विचित्र वेष देख कर बहुत भीड़ इकट्ठी न होजाय इसलिये जहाजसे उतरनेके समय कप्तानने अपना लबादा मुझे जबरदस्ती पहना दिया था। वह मुझे अपने घर ले गया। मेरे कहनेसे उसने मुझे अपने घरके पिछवाड़ेके सबके ऊपर वाले कमरेमें उतारा था। मैंने हाथ जोड़ कर उसको मना कर दिया था कि ह्निनह्निने के बारेमें किसीसे कुछ मत कहना। अगर जरा भी इसकी भनक किसीके कानमें पड़ जायगी तो मेरे प्राण नहीं बचेंगे। मैं तुरत नास्तिकोंकी तरह बड़े घर भेजा जाऊंगा या आगमें फूंक दिया जाऊंगा। कप्तानने बहुत हठ करके एक जोड़ा नया कपड़ा बनवा दिया था परन्तु दर्जीको मैंने अपनी देह छूने दी थी। उसका डौल डौल प्रायः मेरेही सा था इससे

उसके कपड़े मेरे बहुत ठीक होते थे। और भी बहुतसी जरूरत की चीजें उसने बनवादी थीं जिन्हें चौबीस घण्टे हवामें सुखा कर मैं काममें लाता था।

कप्तानके स्त्री नहीं थी और न तीनसे अधिक नौकर। भोजन के समय यह लोग मेरे पास नही आने पाते थे। उसका आचरण तथा विचार ऐसा सुन्दर था कि धीरे धीरे उस पर मेरी श्रद्धा होने लगी। उसके साथ रहनेमें मुझे कोई कष्ट नहीं होता था। अब मैं पीछेकी खिड़कियोंमें भी झांकने लगा। और दूसरे कमरे में आया। गलीमें झांकता पर डरके मारे तुरत मुंह फेर लेता। एक सप्ताहमें वह मुझे द्वार तक ले आया। मेरा भय क्रमशः भागने किन्तु घृणा बढ़ने लगी। शेषमें उसके साथ मैं बाजार हाटमें भी घूमने लगा। पर नाकमें काला दाना और तम्बाकू ठूंस लेता था क्योंकि याहुओंकी गन्ध मुझसे सही नहीं जाती थी।

कप्तान पिडरूको मैंने अपने घरका कुछ हाल कह दिया था। इससे उसने बहुत समझा बुझा कर मुझको घर जानेकी सलाह दी और कहा—"एक जहाज इङ्गलेण्ड जानेको तैयार है तुमको जरूर जाना चाहिये। खर्च वर्चका बन्दोबस्त मैं कर दूंगा। जैसा एकान्त स्थान तुम ढूंढते हो वैसा स्थान मिलना तो असम्भव है। घरहीमें तुम इच्छानुसार एकान्त वास कर सकते हो। घरसे बढ़ कर निराली जगह और कोई नहीं है।"

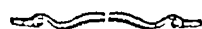
जब और कुछ करते धरते न बना तो कप्तानकी बात मानली। ता० २४ नवम्बरको एक अङ्गरेजी तिजारती जहाज पर मैं लिसबनसे बिदा हुआ। बिचारा कप्तान जहाज तक मुझे पहुंचा गया था। चलनेके समय हम दोनों खूब गले गले मिले थे। उसने मुझे दोसौ रुपये उधार दिये थे। मैं बीमारीका बहाना कर अपने कमरे में बैठा रहता था। जहाजके आदमियोंसे कभी कुछ न बोलता था। यहां तक कि जहाजके मालिकका क्या नाम था सो भी मैंने नहीं पूछा। ता० ५ दिसम्बर १७१५ ई० के सबेरे नौबजे जहाज

डाउन्सकी वन्दरमें जा पहुंचा। तीन बजे शामको मैं कुशल पूर्वक अपने घर पहुंच गया।

घरवालोंको मेरे पहुंचनेसे बड़ी खुशी और ताज्जुब हुआ क्योंकि वह सब मुझसे निराश होचुके थे। लेकिन मैं सत्य कहता हूं कि उन सबको देख कर मुझे बड़ी घृणा हुई थी। उनकी ओर देखने की भी इच्छा नहीं होती थी। यद्यपि कप्तान पिडरूके साथ रहते रहते याहुओंसे बोलनेका अभ्यास पड़ गयाथा तथापि मैं उन महात्मा ह्निनह्निनोंके सद्गुणोंको नहीं भूला था। याहुनोंसे समागम करके मैंने भी दो चार याहुओंको उत्पादन किया है यह सोच कर मैं बहुतही लज्जित, सन्तापित और भयभीत होजाता था।

गृहमें प्रवेश करतेही मेरी भार्याने दौड़ कर मेरा आलिङ्गन तथा चुम्बन किया। मैं उसी समय चक्कर खाकर गिर पड़ा क्योंकि याहुओंको स्पर्श करनेका अभ्यास बिलकुल छूट गया था। प्राय एक घण्टेके बाद मैं होशमें आया था। इङ्गलेण्ड पहुंचनेके पांच वर्षके पश्चात् मैंने इस पोथीके लिखनेमें हाथ लगाया। पहले वर्ष में तो मैं अपने बालबच्चोंको नहीं देख सकता था। उनके साथ बैठ कर एक जगह खाना तो दूर रहा उनकी गन्ध भी सह्य नहीं होती थी। मैं अब तक भी अपनी थाली या प्याली किसीको छूने नहीं देता हूं। मैंने दो जवान घोड़े खरीद लिये हैं जो अखता नहीं है। इनको एक अच्छे तवेलेमें रक्खा है। इनकी पीठ पर न जीन धरता हूँ और न मुंहमें लगाम लगाता हूं। यह मेरे बड़े प्यारे है। कमसे कम चार घण्टे रोज मैं इनसे बात चीत करता हूँ। यह मेरी बोली मजेमें समझ लेते हैं। दोनों घोड़े आपसमें खूब मेल जोल रखते हैं और मुझको अपना मित्र समझते है। अश्वसेवकको भी मैं प्रेमकी दृष्टिसे देखता हूँ क्योंकि अश्वशालाकी सुगन्धसे सुवासित होकर जब वह मेरे निकट आता है तो मैं फूले अङ्ग नहीं समाता हूं।

द्वादश परिच्छेद।



प्रिय पाठकगण। मैं अपने सोलह वर्ष सात महीने कई दिनके विचित्रविचरणका पूरा वृत्तान्त आप लोगोंसे निवेदन कर चुका। मैंने इसमें अपनी तरफसे कुछ नोन मिर्च न लगा कर ज्योंकी त्यों सब बातें लिखनेकी चेष्टाकी है। यदि चाहता तो मैं भी अन्यान्य ग्रन्थकारोंके सदृश अद्भुत असम्भव बातें लिखकर आप लोगोंको चमत्कृत कर सकता परन्तु मैंने सत्य घटनाओंको सरल सीधी भाषामें लिखनाही उचित समझा क्योंकि नये नये विषय बतानाही मेरा मुख्य उद्देश्य है, मनोरञ्जन करना नहीं।

पृथ्वीके जिन दूर देशोंमें इङ्गलेण्ड वा युरोपका कोई विरलाही मनुष्य पहुंचता है वहाके जल और स्थलके अद्भुत जीवोंका वर्णन करना इस विचरणकारियोंके लिये कुछ बडी बात नहीं है। मेरी समझसे भिन्न भिन्न देशोंकी भली बुरी रीति व्यवहारका दृष्टान्त दिखा कर लोगोंको श्रेष्ठ कुशल और विज्ञ बनाना यात्रियोंका प्रधान लक्ष्य होना चाहिये।

मेरी हार्दिक इच्छा थी कि एक ऐसा नियम बन जाता जिससे प्रत्येक भ्रमणकारीको अपने अपने भ्रमणका वृत्तान्त प्रकाशित करनेसे पहले लार्ड हाइचान्सलर (प्रधान राजकर्मचारी जिसके पास राजाकी मुहर रहती है) के समक्ष शपथ पूर्वक कहना पडे कि मेरी पुस्तक मेरे जानते नितान्त सत्यता पूर्ण है। ऐसा नियम होजानेसे पाठकोंको आजकलकी तरह प्रतारित होना न पडेगा। बहुतसे ग्रन्थकार ऐसे हैं जो वाहवाही लूटनेके लिये अपनी पोथियोंमें झूठका पहाड खडा करते हैं और भोले भाले पाठक भी उन्हीको पढ कर प्रसन्न होतेहैं। मैं भी भ्रमणविषयक अनेक पुस्तकें पढकर बाल्यावस्थामें आनन्दित होता था परन्तु जबसे मैं स्वय पृथ्वी के बहुतेरे भागोंमे विचरण करने लगा हूं उनकी पोल खुल गई है। अब उन पोथियोंके पढनेकी तनक भी रुचि नहीं होती है। सरल

पाठकोंका इस प्रकार ठगा जाना देख कर मेरी क्रोधाग्नि कुछ भभक उठती है। मेरे मित्रोंकी कामना थी कि यह पोथी उपयोगी अथच मनोरञ्जक हो, इसी लिये मैंने सत्यसे विचलित न होनेका दृढ सङ्कल्प करके इसे लिख डाला है और जब तक महात्मा ह्निनह्निनोंके सदुपदेश मेरे चित्तमें अङ्कित रहेंगे मैं इस पवित्र सङ्कल्प को त्याग भी नहीं सकता हूं।

जिस पुस्तककी रचनामें उत्कृष्ट स्मरणशक्ति या यथार्थ दिन चर्याके अतिरिक्त विद्या, प्रतिभा अथवा और किसी गुणका प्रयोजन नहीं है उससे कितना नाम होता है सो मैं भली भांति जानता हूं। मैं यह भी जानता हूं कि जब कोई नूतन सुविशाल कोष बन कर तैयार होता है तब प्राचीन कोषकारोंको लोग भूल जाते हैं। ठीक यही दशा भ्रमण वृत्तान्त लेखकोंकी भी है। सम्भव है कि मेरे बाद कोई यात्री उन देशोंमें जाकर जिनका वर्णन इस पोथीमें है नई नई बातें देखे और मेरी भूल (यदि कोई हो) निकाल कर मेरी जगह छीनले तथा पाठकगण भी मुझे भूल जाय। यदि मैं केवल नामहीके लिये लिखता तो सचमुच मुझे बडा दुःख होता परन्तु मैंने तो लोकोपकारके हेतु लिखा है अतएव हताश होनेकी कोई बात नहीं है। ऐसा कौन है जो अपनेको सज्ञान और प्रधान जीव समझ कर भी अपने पापों पर लज्जित हुए बिना ह्निनह्निनों के सद्गुणोंको पढ सकता है? याहू-प्रधान दूरस्थ जातियोंमें ब्रोव डिगनेगवाले सबसे कम दूषित हैं। इन लोगोंके सुन्दर नैतिक और राजकीय सिद्धान्तका अनुकरण करना हमारे लिये लाभकारी है। इस विषयको अधिकविस्तार न कर इसके निर्णयका भार विवेकवान पाठकोंके ऊपरही छोडता हूं।

मैं इस बातसे बहुत प्रसन्न हूं कि मेरी पुस्तकमें सम्भवत कोई दोष किसीको नहीं मिल सकताहै। जिन दूर देशोंसे हम लोगोंको कुछ भी लाभ नहीं उनकी सच्ची घटनायें सरल स्पष्ट शब्दोंमें लिखने से भला कोई क्या आपत्ति कर सकता है? भ्रमण वृत्तान्तके साधा-

रण लेखकोंमें जो दोष प्राय: हुआ करते है उनको मैं बहुत सावधानीसे बचा गया हूँ। इसके अतिरिक्त, किसी दल वा समाज वा व्यक्ति विशेष पर आक्रमण न कर शुद्ध भावसे इस पोथीको लिखा है। परमगुणान्वित छिनछिनोंके सत्सङ्गमें इतने दिनो तक वास करनेके कारण मैं कुछ श्रेष्ठ बन गया हूँ इसीसे मनुष्य समाजको सुशिक्षित बनाना मेरा अभीष्ट है कुछ लाभ करना या यश पाना नही। एक शब्द भी इसमें कल्पित नहीं है। जो सदा सबसे चिढे रहते है उनके चिढानेके लिये भी इसमे कुछ नही है। अतएव मैं अपनेको पूर्ण निर्दोष ग्रन्थकार कह सकता हूं। आलोचक, समालोचक, पर्य्यालोचक प्रभृति मेरा बाल बांका नहीं कर सकते है।

चुपकेसे आकर लोग मेरे कानोंमे कह जातेहै "तू इङ्गलैण्डकी प्रजा है तेरा कर्त्तव्य था कि पहुँचनेके साथही "सेक्रेटरी आफ ष्टेट" को जिन देशोंको तैने देखा है उनकी सूचना देता क्योंकि प्रजा जो भूमि या देश प्रगट करती है सो राजाहीका होता है। पर तैने अपना कर्त्तव्य पालन न करके बडा अन्यान्य किया है।" कहने वालोका कहना बहुत ठीक है। पर शङ्का यह होती है कि फरदीनन्दकोर्टेने असभ्य अमेरिकावालोंको अनायासही जिस प्रकार जीत लिया था उसी प्रकार लिलीपट आदिको जीतना क्या सहज है? मैं समझता हूं लिलीपट पर चढाई करनेसे वगुलामारिपखना हाथकी कहावत चरितार्थ होगी। ब्रोवडिंगनेग पर आक्रमण करना निरी मूर्खता तथा कालको बुलाना है। आकाशमें उडनेवाले द्वीप का अङ्गरेजी सेना भला करही क्या सकती है? बाकी रहे छिनछिन सो लडनेके लिये तैयार नही है क्योंकि वह लडना, विशेष कर अस्त्र चलाना बिलकुल नही जानते है। यदि मैं आमात्यके पद पर होता तो इनपर आक्रमण करनेकी सम्मति कदापि न देता। इनकी सावधानता, एकता निर्भीकता और देशानुरागही युद्ध विद्या के अभावको पूर्णरूपसे दूर कर देते है। यदि दस हजार छिनछिन युरोपीय सेनाके बीच घुस पडें तो सारी सैन्य रचना नष्ट भ्रष्ट हो

जायगी। छिनछिनगण गाडियोंको उलट देंगे और मारे दुलत्तियों के योद्धाओंके मुंहका छलवा बना डालेंगे। मेरी आकांक्षा है कि ऐसी उदार जातिको जीतनेके बदले उससे शिक्षा प्राप्त करना चाहिये। अगर कुछ छिनछिन यहां आजाते तो वह आदर सम्मान, न्याय सत्य, संयम, देशहितैषिता, सहिष्णुता, जितेन्द्रियता, मित्रता, परोपकारिता, कर्त्तव्य परायणता आदि जिन सद्गुणोंके नाम हमारे यहा केवल पुस्तकोंहीमें पाये जातेहैं उनको शिक्षा देकर हम लोगों को सुसभ्य बना देते।

मैंने अपने देशोंकी सूचना सेक्रेटरी आफ ष्टेट (राजमन्त्री) को न दी इसका एक और कारण है। सच पूछो तो महाराजीके न्यायकी विचित्रता देख करही मुझे कुछ खटकासा होगया है इसी से महाराजके राज्यको बढानेसे जी हिचकिचाता है। अच्छा। विचित्र न्यायका उदाहरण सुनिये। डाकुओंका एक जहाज तूफान के मारे भटक कर एक ओर जापडा है। कहा जापडा सो किसी को मालूम नहीं है। आखिर मस्तूल परसे एक छोकरेको कुछ भूमि दिखाई पडतीहै। लूट पाट करनेके लिये डाकू लोग वहीं जा पहुंचते हैं। किसी भलेमानससे भेट होगई तो वह आदर सत्कार करताहै। वह लोग उस देशका एक नया नाम रखकर अपने राजा की तरफसे उसे चट दखल कर लेते है। स्मारक चिन्हके बदले एक पत्थर या सडा तखता गाड देते है। वहांके दो चार दरजन आदमियोंको मारकर दो चारको नमूनेके बतौर जबरदस्ती स्वदेश घसीट लातेहैं। बस राजा भी प्रसन्न होकर उनके पिछले अपराधोंको क्षमाकर देता और ऐश्वरिक स्वत्व (Divine right) की दुहाई दे उस देश पर अपना अधिकार जमा लेता है। फिर मौका मिलतेही वहां जहाज भेजे जातेहैं। वहाके निवासी मारे या निकाले जाते है। खजानेका पता लगानेके लिये वहाके राजाओंको बहुत सतातेहैं और मनमाना अत्याचार करते है। देशवासियोंके रक्तसे भूमि लाल होजातीहै। ऐसेही नीच हत्यारे असभ्योंको सभ्य बनाने तथा मूर्त्ति

पूजकोंको धर्मकी दीक्षा देनेके लिये भेजे जाते हैं। यही है आधुनिक उपनिवेशोंकी स्थापना।

परन्तु अङ्गरेजों पर यह उदाहरण किसी प्रकार भी नहीं घट सकता है। यह लोग उपनिवेश स्थापित करनेमें अपने सुविचार, यत्न और न्यायके कारण संसारके आदर्श स्वरूप हैं। यह धर्म और विद्याकी उन्नतिके लिये बहुतसा धन दान करते, क्रस्तानी धर्म विस्तृत करनेके लिये योग्य और गम्भीर पादड़ियोंको चुनते, बड़ी सावधानीसे मातृ भूमिके सदाचारी और संयमी पुरुषोंको अपने इलाकेमें इकट्ठे करते न्यायकी तरफ विशेष ध्यान रखते और राज काज चलानेके लिये उपनिवेशोंमें अच्छे अच्छे सुयोग्य कर्मचारी नियत करते हैं जो घूस लेना बिलकुल नहीं जानते। सबके ऊपर लाट ऐसा भेजते हैं जो बड़ाही धार्मिक और सतर्क होता है और जो प्रजाके सुख और राजाके गौरवके सिवा और किसी ओर ध्यान ही नहीं देता है।

किन्तु मैंने जिन देशोंका वर्णन किया है वहांके रहनेवाले पराधीन होना, प्राण देना या देशवहिष्कृत होना किसी तरह भी नहीं चाहते हैं और न वहां सोना, चांदी, चीनी या तम्बाकूही बहुतायत से होता है। सचमुच वह सब देश हमारे उत्साह और साहस दिखानेके योग्य नहीं हैं और न उनसे हमारा कुछ लाभही हो सकता है। खैर, जो इन बातोंसे ज्यादे सरोकार रखते हैं वह मेरी बातें यदि न मानें तो मैं अदालतमें भी कहनेको तैयार हूं कि जो दोनों यारू प्राचीनकालमें छिनछिन देशके किसी पहाड़ पर देखे गये थे उनके सिवा और कोई युरोप निवासी मुझसे पहले वहां नहीं गया है।

अगर सच पूछिये तो महाराजके लिये उन मुल्कोंको दखल करनेकी बात मुझे यादही न पड़ी। अगर पड़ती भी तो मैं क्या कर सकता था? उस समय अपनी जान बचाता या मुल्क दखल करता?

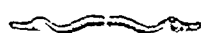
के घृणित पापोंको वर्णन करनेके लिये। हिनहिन मनुष्योंके स्वभाव को अच्छी तरह नहीं समझते हैं इसीसे याहुओंके स्वभावमें उन्हे अभिमानकी झलक नहीं मालूम होती है। किन्तु मुझे बहुदर्शिता के कारण जङ्गली याहुओंमें अभिमानकी कुछ रमक मालूम पड़ती है। हम लोगोंको अपने हाथ पावोंका जैसे कुछ घमण्ड नहीं है वैसेही ज्ञानी हिनहिनोंको अपने अच्छे गुणोंका। अङ्गरेज याहुओंको सुधारनेहीके लिये मैंने इस विषयको इतना तूल दिया है।

अन्तमें निवेदन है कि जो अपने मनमें तनिक भी अभिमान रखते हो वह मेरे सामने न आवें और न अपना मुंह मुझे दिखावें।

इति चतुर्थभाग समाप्त।



शुद्धाशुद्धपत्र।



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	१०	जङ्गल जानेकी हाजतथी। कातर होकर .... किया।	भूखने इतना सताया कि मैंने लाज शरम छोडके वार वार उग-लियोंको .. किया।
१३	७	फलकी	फूलकी
२२	१८	चिन्तासे	सबके चित्तसे
२५	१३	अन्तिम युद्ध	कृत्रिम युद्ध
२७	१०	वलगुलासने भी	वलगुलासहीने
३४	१०	व्लूफस्कूके महाराजों विद्रोह शान्त होने पर	व्लूफस्कूके महाराजोंने विद्रोहियोंका साथ दिया।
३४	१२	विद्रोह शान्त होने पर लेगये।	विद्रोह शान्त होनेपर जिन जिनको देश निकालेकी सजा हुई थी वह सब व्लूफस्कूके महाराजकी शरण में गये।
३४	२१	धर्मशाला	धर्मशास्त्र
३८	८	नर्डन	नर्डक
४१	१७	लोग वागडोर	लोग वहां डोल
४२	१	पेशाश	पेशाब
४४	१	सकार	सरकार
४४	१४	उधार और लेने देने	उधार लेने देने
४५	२४	सदाशयतका	सदाशयता

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७	३	निलीपट	निर्लीपटी
४७	१३	यींही	यही
४८	२१	पोपगका	पोपगका भार
५०	६	जानता हूँ	नही जानता हूँ
५५	२७	जिमसे	जिममें
५७	२५	उसकी स्मरण चिन्ह	उसका अस्थियज्ञ स्मरण चिन्ह
५८	१५	पकड कर	पड़ कर
७४	८	मुझसे	मुझको
७६	२०	चिमससे	चिमटेसे।
८२	१३	किमानने	किमानने
८६	२४	चाहते या तथा	चाहते तथा
६२	११	उतनाही पाया	उतना नही पाया।
६५	१८	मेरे सामने नहीं देख कर	मेरे सामने नहीं च कर कपडे बदल थी।
६५	१८	नहीं देख कर	इन्हें नहीं देख कर
६६	१७	पानीमें भरे	पानीसे भरे
१०१	२२	सेनामें	सेवामें
१०३	७	खूब लाभ है	खूब नाम है
१०५	५	आदेशिक	प्रादेशिक
११४	३	तोनो	टोनो
११६	१७	पीछे रहने	छिपे रहने
१२५	८	जरीह	जर्राह
१३०	१३	आथही	आधही
१३२	१	वहा	वहासे
३५	५	कोठियां दुरुस्त होतीं	कोने दुरुस्त होते

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३५	७	बडे पर	बडे निपुण पर
१५०	१	लस लस	लसलसे
१५०	२४	धूनेके	छूनेके
१५१	८	दृष्ट	दृष्टि
१५५	७	जरीर	जरीह
१५५	१६	पापियोंको	पापियों और
१५६	२४	लण्डन	लेङ्गडन
१५७	१६	टोपी मौर	टोपी और
१५७	१६	हगरा	गहरा
१६०	१४	अगरवेला	अरवेला
१६१	८	एपामिराडस	एपामिननडस
१६५	२७	मध्यम	अधम
१७५	२६	यही एक कहानी	यही रामकहानी
१८१	१५	पोकीप	पोकीक
१८३	२०	पत्तियोंसे	पातियोंसे
१८५	२२	टहलतेथे कि कहीं मैं	टहलते थे मगर निरक्षी नजरसे मुझे भी देखते जाते थे कि कहीं मैं
१८६	६	बडे भावसे	बडे चावसे
१८८	१४	पीछे बल	पुट्ठोंके बल
१९०	२६	एक मडा टुकडा	एक लडका टुकडा
१९९	८	सब अपने सङ्ग	सब जगह अपने सङ्ग
२३०	५	पहुचो	पहुंचेगो।
२३१	२२	दीजाती	दीजानी
२३६	८	खेसे	खस्वे
२४०	११	घोघामा	घोडामा
२४२	१९	पहला किनारा	परला किनारा